Dynamic

हस्तरेखा शास्त्र का वैज्ञानिक विवेचन

(The Laws of Scientific Hand Reading)

का सचित्र एवं प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद

विलियम जी. बैनहम्

कृष्णा समूह

भारत भर में शैक्षिक उन्नयन व विकास के लिए कृष्णा की भूमिका को अत्यंत सम्मान के साथ देखा जाता है। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से देश के शीर्षस्थ पदों पर अधिकारी अपनी कामयाबी का संपूर्ण श्रेय कृष्णा प्र उत्कृष्ट पुस्तकों को देते हैं। भारत के कोने-कोने में इ समूह की उच्चस्तरीय कृतियों की अनुगूंज है। कृष्णा समूह एक ऐसा समूह है जिससे आज प्रत्येक प्रतिष्ठि जुड़ने को उत्सुक है जबकि प्रत्येक मेधावी युवा इस को अंगीकार करना चाहता है।
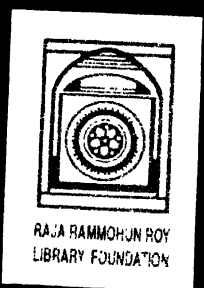
इस समूह की संपूर्ण सफलता का श्रेय समूह के चेयरमैन श्री सत्येन्द्र कुमार रस्तोगी को जाता है, जिनकी अद्वितीय प्रतिभा, विलक्षण अनुभव, दूरदर्शिता, सटीक निर्णय तथा रचनात्मक व सृजनात्मक व्यक्तित्व के कुशल मार्गदर्शन की छत्र-छाया में कृष्णा रूपी पौधा अत्यधिक पुष्पित-पल्लवित हो रहा है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री रस्तोगी भारत में एक नई सृजनात्मक क्रांति को फलीभूत होते देखने के इच्छुक हैं। वे कागज तथा कलम की रचनात्मक उपलब्धियों के पूर्ण पोषक हैं।

हस्तरेखाशास्त्र का वैज्ञानिक विवेचन

(The Laws of Scientific Hand Reading)

सचित्र एवं प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद

Read Dynamic !

To Be Dynamic !!

DYNAMIC Astrology Series

हस्तरेखाशास्त्र का वैज्ञानिक विवेचन

(The Laws of Scientific Hand Reading)

सचित्र एवं प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद

लेखक

विलियम जी. बैनहम्

अनुवादक

आचार्य वादरायण

डायनेमिक पब्लिकेशंस (इंडिया) लि०

11, शिवाजी रोड, मेरठ-250001

DYNAMIC Astrology Series

हस्तरेखाशास्त्र का वैज्ञानिक विवेचन

Book Code No. : G 7 – 1

I.S.B.N. No. : 81–7933–038–9

मूल्य : रूपए **180.00** मात्र

Published by : S. K. Rastogi for KRISHNA Prakashan Media (P) Ltd.,
11, Shivaji Road, Meerut - 250001
Tel. : 0121–642946, 644766; FAX : 0121-645855;
email : sk_kpm@yahoo.com

Cover Designed by : ZIUS Graphic Art, Meerut. Tel. : 0121-510493

Cover Printed at : Dharmesh Art Process, Delhi.
Tel. : 011-5708762, 5708662

Printed at : Chawla Offset Printers, Meerut. Tel. : 0121-650274 , 661646

विषय-सूची

भाग दो

पुस्तक-परिचय

मानव-हाथ के समान उपयोगी और विविधतापूर्ण दूसरा कोई यन्त्र-तन्त्र अथवा उपकरण आज तक नहीं बना। यह मानव-हाथ अनन्त आवश्यकताओं की पूर्ति करने में तथा उच्चतम स्तर पर अपने को ढालने में पूर्ण समर्थ है। सत्य तो यह है कि मानव-मस्तिष्क प्रयन्त करने पर भी ऐसा सर्वथा निर्दोष यन्त्र कभी बना नहीं सकता। मनुष्य का हाथ मनुष्य की भावी जीवन–उत्थान-पतन, विकास-ह्रास तथा उन्नति-अवनति–को दर्शाने वाला एक ऐसा सजीव दर्पण है, जिसकी तुलना विश्व का कोई भी मानव-निर्मित उपकरण नहीं कर सकता।

मनुष्य के हाथ की कोमलता और कठोरता से भावी जीवन में उसके द्वारा अपनाये जाने वाले उत्कृष्ट अथवा निकृष्ट व्यवसाय-धन्धे का संकेत किया जा सकता है। एक तन्वंगी महिला के कोमल हाथों से किसी मोची के लम्बे, सुदृढ़ और कठोर हाथों द्वारा किये जाने वाले कार्य के निर्वहण की अपेक्षा नहीं की जा सकती। इसी प्रकार एक मोची द्वारा भी कसीदाकारी अथवा अन्य किसी कलात्मक कार्य को सम्पन्न करना सम्भव नहीं। एक का मस्तिष्क कलात्मक रुचि का होता है, तो दूसरे का कठोर श्रम का। उन दोनों के मस्तिष्क के अनुरूप ही उनके हाथ भी कोमल व कठोर तथा छोटे व लम्बे होते हैं। वस्तुतः विश्व में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता, जहां हाथों की स्थिति प्रेरणा देने वाले मस्तिष्क से भिन्न हो। यही हस्तरेखाओं के अध्ययन का प्रारम्भिक आधार है और यही इस अध्ययन को वैज्ञानिक स्वरूप देने वाला तत्त्व है। इससे स्पष्ट है कि व्यक्ति का हाथ उसकी मानसिकता का प्रतिबिम्ब है, जिनके द्वारा बिम्ब का विश्लेषण सम्भव है। प्रस्तुत पुस्तक इसी प्रकल्पना पर आधारित है।

प्रेरणा-स्रोत

जब मैं तेरह वर्ष का था और संयोगवश हस्तरेखा का अध्ययन करने वाले एक (जिप्सी) घुमक्कड़ वृद्ध के सम्पर्क में आया, तो इस विषय के अध्ययन के प्रति मेरी रुचि जाग्रत हुई, परन्तु उस समय इस विषय पर किसी प्रकार की कोई

लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं थी। अतः मुझे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। मेरे लिए केवल परम्परा को अपनाने और उसे सैकड़ों हाथों पर आज़माने के सिवा और कोई दूसरा विकल्प नहीं था। इस प्रथम पद्धति से किसी परिणाम पर पहुंचने में वर्षों की अवधि लग जाती थी और फिर सहसा प्राप्त निष्कर्ष अविश्वसनीय लगने के कारण छोड़ देने पड़ते थे। दुःख की बात तो यह थी कि इस व्यवसाय से जुड़े लोगों से किसी भी सहायता की अपेक्षा सम्भव ही नहीं थी; क्योंकि वे अधिकांश निरक्षर, दम्भी और धन-लोलुप थे। वे किसी वैज्ञानिक अध्ययन को आधार न बनाकर भोले-भाले लोगों को उल्लू बनाने में लगे थे। यही कारण था कि उन दिनों जनता हस्तरेखा-विज्ञान को ढोंग समझने लगी थी और कोई भी प्रतिष्ठित व्यक्ति इसे अपना व्यवसाय बनाने की सोच ही नहीं सकता था, जबकि मुझे यह एक विशुद्ध विज्ञान लगा। मेरे गहन अध्ययन, विश्लेषण और विवेचन ने मेरे इस विश्वास को सत्य सिद्ध कर दिया। मेरी यह निश्चित धारणा है कि इस विषय के मन्थन में अधिक सम्भावनाएं निहित हैं।

मुझे शीघ्र ही इस तथ्य का भी आभास हो गया कि शरीर-विज्ञान का अध्ययन भी हस्तरेखा-विज्ञान के अध्ययन में पूरक का कार्य करता है। जिस प्रकार रुग्णता तथा स्वास्थ्य व्यक्ति के स्वभाव को प्रभावित करते हैं, इसी प्रकार उसकी हस्तरेखाओं को भी प्रभावित करते हैं। अतः शरीर की रचना, उसके गठन और उसमें आने वाले विकारों-परिवर्तनों को भली प्रकार से समझने के लिए मैंने न केवल आयुर्विज्ञान का अध्ययन किया, अपितु विभिन्न रोगों से ग्रस्त आतुरों, अन्धों, बहरों, लंगड़ों तथा कुबड़ों तक से मिलने के लिए मैं अनेक चिकित्सालयों, पुनर्वासघरों, परिचर्चागृहों तथा आश्रमों व यहां तक कि जेलों में भी गया। इन स्थानों पर रहने वाले लोगों की शारीरिक दशा तथा मनःस्थिति का अध्ययन करने पर मुझे हस्तरेखा से सम्बन्धित बहुमूल्य जानकारी प्राप्त हुई।

मैंने विश्व के सभी देशों के सुप्रसिद्ध हस्तरेखाविदों से सम्पर्क स्थापित कर उनके ज्ञान से भी लाभ उठाने का प्रयास किया, परन्तु मुझे निराशा ही हाथ लगी; क्योंकि ज्ञान के नाम पर उनके पास कुछ था ही नहीं। कुछ भले लोगों ने तो यह स्वीकार भी किया कि वे इस धन्धे से जुड़े होने पर भी इसके सम्बन्ध से कुछ नहीं

जानते। वे तो केवल अपने कौशल (धूर्तता) से अपना धन्धा चला रहे हैं। अब मैंने विभिन्न व्यवसायियों–चिकित्सक, वकील, मन्त्री, प्रवक्ता, अभिनेता, गायक, वादक, साहित्यकार, जादूगर, अध्यात्मवादी, हत्यारे तथा धोखेबाज़ (मक्कार)–के हाथों का अध्ययन किया, तो मुझे अच्छे परिणाम प्राप्त हुए, जिससे मेरे पिछले अध्ययन को गति मिली। इतना ही नहीं, मुझे एक सुदृढ़ आधार मिल गया, जिस पर मैं सुन्दर भवन खड़ा कर सकता था।

मेरी यह निश्चित धारणा है कि हाथ की रेखाओं में आश्चर्यजनक, परन्तु सुनिश्चित, प्रामाणिक और विश्वसनीय जानकारी निहित है। हस्तरेखाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने से मिलने वाली जानकारी को प्रस्तुत करने का मेरा उद्देश्य जन-साधारण को इस योग्य बनाना है कि वे स्वयं अपनी और अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों की हस्तरेखाओं को पढ़ सकें और सत्य से परिचित हो सकें। मैं हस्तरेखा-विज्ञान को सस्ते मनोरंजन व चुहलबाजी का साधन न मानकर उत्कृष्ट पुरुषों के परिष्कृत चिन्तन-मनन का विषय मानता हूं।

यदि हम अपनी सन्तानों की हस्तरेखाओं का अध्ययन करके उन्हें व्यवसाय चुनने के लिए उपयुक्त मार्गदर्शन करेंगे, तो निश्चित है कि उन्हें असफलता का मुंह कभी नहीं देखना पड़ेगा। इसी प्रकार यदि हम आपस में स्वभाव न मिलने वाले लड़के-लड़कियों को विवाह-सूत्र में न बंधने का परामर्श देंगे, तो तलाक़ तथा विवाहित जीवन में कलह के लिए कोई स्थान ही नहीं रहेगा। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हमारा अध्ययन सही और परिपक्व होना चाहिए। यदि मेरी यह पुस्तक इस उद्देश्य की पूर्ति में किसी भी रूप में सहायक सिद्ध हुई, तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूंगा।

विश्लेषण व निदर्शन

आगे के पृष्ठों में अमेरिकावासी उन स्त्री-पुरुषों के हाथों को निदर्शन के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो अपने-अपने क्षेत्र में सफलता और प्रसिद्धि के चरम शिखर पर पहुंचे हैं, जिनका इतिहास के निर्माण में विशेष योगदान रहा है, जिन्होंने राष्ट्रों पर शासन किया है तथा जीवन के सभी क्षेत्रों और व्यवसायों–राजनीति, सेना,

व्यापार, कला, विज्ञान और यहां तक कि अपराध जगत्–में सिरमौर रहे हैं। विषय की आवश्यकता और अपेक्षा के अनुरूप ही हाथों के चित्र, चिह्न तथा छाप लिये गये हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस सबके लिए वर्षों तक श्रम करना पड़ा है। सत्य तो यह है कि विशिष्ट अध्ययन के लिए विभिन्न स्थितियों और क्षेत्रों के अत्यन्त विशिष्ट व्यक्तियों के अतिविशिष्ट हाथों की छाप व चित्र आदि लेना कोई सरल कार्य नहीं है। कुछ कारणों से हमें उनके नामों के उल्लेख करने से भी बचना पड़ रहा है। वस्तुतः एक तो अपने हाथों की छाप देने वालों को आश्वस्त किया गया था कि उनके व्यक्तित्व के साथ खिलवाड़ नहीं किया जायेगा, दूसरे छाप देने वालों में उत्तम प्रकृति के लोगों के साथ कुछ अवाञ्छित व्यक्ति भी हैं, जिन्हें प्रकाश में लाने का अर्थ उन्हें अपमानित करना होगा, परन्तु फिर भी हमें विश्वास है कि विशिष्ट महानुभावों के अतिविशिष्ट एवं सर्वजनविदित गुण उन्हें प्रकाश में आने से रोक नहीं पायेंगे।

निवेदन एवं परामर्श

हस्तरेखा-विज्ञान को अपना व्यवसाय बनाने वालों के लिए इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में निर्दिष्ट सुनिश्चित रूपरेखा तथा सिद्धान्तों की सम्यक् जानकारी रखना एवं निरन्तर अभ्यास करते रहना अत्यावश्यक है। उन्हें कभी अपने आपको पूर्ण समझने का भ्रम नहीं पालना चाहिए।

हस्तरेखा-विज्ञान को व्यवसाय के रूप में अपनाने वाले व्यक्तियों को मैं निम्नोक्त सुझाव देना चाहूंगा--

उन्हें कभी किसी व्यक्ति की मृत्यु की तिथि की भविष्यवाणी करके व्यक्ति को अर्धमृत नहीं करना चाहिए। उन्हें भीड़ में किसी का हाथ नहीं पढ़ना चाहिए। ऐसा करना इस विज्ञान को आस-पास खड़े लोगों के मनोरंजन का विषय बनाना होगा।

उन्हें अपने ग्राहक के हाथ को पढ़ते हुए उसे अपनी दुर्बलताओं और त्रुटियों पर क़ाबू पाने में समर्थ बनाना चाहिए। कभी किसी को लज्जित, अपमानित अथ्वा निरुत्साहित नहीं करना चाहिए।

उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि उनका अध्ययन ग़लत सिद्ध होने का अर्थ विज्ञान की त्रुटि नहीं, अपितु उनके ज्ञान की न्यूनता अथवा सीमा है। अतः उन्हें इस स्थिति से बचने के लिए ख़ूब सोच-समझकर ही भविष्यकथन करना चाहिए।

उन्हें इस तथ्य को नहीं भूलना चाहिए कि इस विज्ञान की प्रामाणिकता तथा विश्वसनीयता उनकी सफलता-असफलता पर ही निर्भर करती है; क्योंकि ग्राहक के पास इसकी परख का दूसरा कोई मानदण्ड नहीं। अतः उन्हें सदैव गम्भीरता का ही परिचय देना चाहिए।

उन्हें मानव-जीवन के विभिन्न स्वरूपों और क्षेत्रों का अधिकृत ज्ञान होना चाहिए; क्योंकि प्रायः सभी विज्ञान अन्तःसम्बद्ध हैं। बहुमुखी प्रतिभा का धनी हस्तरेखाविद् ही इस क्षेत्र में ऊंचा उठ सकता है

विशेष : मैंने इस पुस्तक की विषयसूची तैयार नहीं की; क्योंकि वस्तुतः यह पुस्तक मेरे हस्तलिखित लेखों का संग्रह है, जिसके लिए मुझे विषयसूची की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं हुई।

--विलियम जी. बैनहम्

भाग एक

1

अध्ययन का आधार

हाथों की बनावट (सात पर्वतों के सन्दर्भ में)

"मानव-बुद्धि ने अपने भवन का निर्माण किया और सातों स्तम्भों को उखाड़ फेंका।"—**लोकोक्ति**

अर्थात् रहस्यों की सृष्टि और उनका विश्लेषण बुद्धि के ही विषय हैं।

हस्तरेखा-विज्ञान का आधार हाथ की बनावट है। हाथ पर उभरे हुए चिह्नों का नाम पर्वत है, जिनकी संख्या सात है और जो अंगुलियों के मूल में तथा हाथों के किनारों पर अवस्थित हैं। इन उभारों (पर्वतों) के विभिन्न रूपों, स्थितियों और संयोजनों की जानकारी के आधार पर ही सम्बद्ध व्यक्ति के चरित्र का सही ज्ञान रखने का दावा किया जा सकता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस जानकारी में कुछ अन्य विभाजक तत्त्वों—चलते-फिरते समय हाथों का सहज रूप से हिलना-डुलना, सामान्य अवस्था (खड़े बैठे) में हाथों की स्थिति—स्थिरता अथवा चपलता, हाथ की चमड़ी की प्रकृति, हाथ का, हाथ पर उगे बालों का और नाख़ूनों का रंग तथा तीन लोक कहे जाने वाले हाथ के तीनों खण्डों—(1) अंगुलियों की बनावट तथा उनका एक दूसरे से जुड़ना, (2) अंगुलियों के सिरों की बनावट—गांठदार, कोमल, कठोर-लम्बी व छोटी होना तथा (3) अंगूठे—का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। इनके गहन और समग्र ज्ञान की अनिवार्यता के कारण अगले अध्यायों में इनका पृथक्-पृथक् और विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। ये सभी विषय हस्तरेखा विज्ञान का पूर्वार्द्ध हैं और इनका समग्र अध्ययन ही मिल कर 'हस्तरेखाशास्त्र' कहलाता है। इस विज्ञान का मूल विषय व्यक्ति के चरित्र की जानकारी माना जाता है, परन्तु इसकी उपयोगिता अत्यधिक और क्षेत्र व सीमा अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक है।

मानव के अस्तित्त्व में आने के समय से ही सृष्टि-रचना में एक व्यवस्था देखने को मिलती है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत ही मनुष्य के हाथ को पढ़कर उसका भविष्यकथन सम्भव हुआ है। अब यह सुनिश्चित हो गया है कि हस्तरेखा विज्ञान

एक विशुद्ध विज्ञान है, जो कारण, कार्य व नियम पर आधारित है। इस तथ्य की उपेक्षा करके अनुमान, कल्पना और अटकल के आधार पर भविष्यकथन करने वालों ने इस शास्त्र का अवमूल्यन ही नहीं, अपितु बहुत बड़ा अहित भी किया है।

सृष्टि-रचना की योजना और उसके उद्देश्य को समझने के समान ही हस्तरेखा-विज्ञान के रहस्यों को समझना भी अत्यन्त सरल है। इसके लिए केवल रुचि, प्रवृत्ति और थोड़े-बहुत श्रम की आवश्यकता है। सत्य तो यह है कि हाथ में विद्यमान पर्वत सृष्टि-योजना की जानकारी पाने में सहायक हैं। इनकी वास्तविक स्थिति और सीमा की प्रामाणिकता को जानने के लिए रेखाचित्र-क देखिये।

यहां यह स्पष्ट करना अनुचित न होगा कि हाथ के इन सात उभारों को पर्वत नाम देने के पीछे कोई आधार अथवा फलित ज्योतिष सम्बन्धी कोई मान्यता नहीं है। वस्तुतः इन नामों के सुदीर्घकाल से प्रचलन में रहने के कारण ही इन्हें स्मरण रख पाना सहज-सरल हो गया है, अन्यथा इनकी न तो कोई भूमिका है और न ही इनसे किसी प्रकार की ग्रह-सम्बन्धी कोई जानकारी मिलती है।

विश्व के सभी मनुष्यों को सात वर्गों में विभाजित करने की प्राचीन परम्परा के पीछे कदाचित् यह धारणा ही कार्य कर रही है कि विधाता ने एक सुनिश्चित योजना के अन्तर्गत ही सृष्टि की रचना की है, परन्तु फिर भी कुछ ऐसे भ्रमजाल हैं, जिन्हें मानव आज तक सुलझा नहीं पाया। इतना तो निश्चित है कि जब कुछ सुलझ जाता है, तो मानव के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। वह यह जानकर ठगा रह जाता है कि इस उलझन का हल तो पहले से उसी के भीतर छिपा हुआ था।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि विधाता ने सभी मनुष्यों को स्पष्ट रूप से सात श्रेणियों में विभाजित किया है। प्रत्येक श्रेणी का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति कुछ सुनिश्चित एवं स्थायी विशेषताएं, रुचियां, गुण-दोष तथा स्वास्थ्य एवं चरित्र सम्बन्धी भिन्नताएं रखते हैं। इस योजना—मानव-जाति का सात वर्गों में विभाजन—का उद्देश्य सृष्टि-सञ्चालन में सामञ्जस्य लाना प्रतीत होता है। यह विभाजन ही विभिन्न क्षेत्रों—प्रतिभा का विकास, शरीर-गठन, स्वास्थ्य की स्थिति, अभिव्यक्ति की क्षमता तथा व्यवहारकुशलता आदि—में विविधता और विभिन्नता का आधार है। सभी मनुष्यों को एक वर्ग में रखने का अर्थ होता—मनुष्य-जाति को उजड्ड बनाना व उसके विकास को अवरुद्ध करना। सत्य तो यह है कि इन सात श्रेणियों में से किसी एक श्रेणी को निकालना भी घड़ी के किसी एक चक्के को निकालकर उसे गतिहीन बना देने के समान ही होगा। अतः स्पष्ट है कि प्रत्येक श्रेणी किसी विशेष तत्त्व का प्रतिनिधित्व करती है और सृष्टि के कार्य-व्यापार के सञ्चालन में प्रत्येक श्रेणी का अपना पृथक् महत्त्व एवं योगदान है।

इन सातों श्रेणियों के व्यक्तियों से मिलने पर उनके चरित्र व उनकी विशेषताओं

प्रथम पर्व
द्वितीय पर्व
तृतीय पर्व
पहली गांठ
दूसरी गांठ
मान-सिक जगत
व्याव-हारिक जगत
भौतिक जगत
पहला पर्व
दूसरा पर्व
तीसरा पर्व
इच्छा शक्ति
तर्क
बृहस्पति पर्वत
इच्छा, नेतृत्व
धर्म, सम्मान
प्राकृतिक प्रेम
शनि पर्वत
गम्भीरता
ज्ञान
उदासीनता
अन्धविश्वास
सन्तुलन
सूर्य पर्वत
दीप्ति
कलात्मकता
उत्साह
प्रसन्नता
सफलता
बुध पर्वत
बुद्धिमत्ता
विज्ञान
व्यापार
त्वरित बुद्धि
मंगल का क्षेत्र
स्वभाव
उर्ध्व मंगल
प्रतिरोध
साहस
शान्ति
लड़ाकू
आक्रमण
मंगल का निम्न पर्वत
शुक्र पर्वत
स्नेह
सहानुभूति
संगीत
लावण्य
वासना
चन्द्र पर्वत
कल्पना
रहस्यवाद
स्वार्थ
हाथ का किनारा

हस्तचित्र 'क'

के आधार पर उन्हें पहचानना कोई समस्या नहीं; क्योंकि प्रत्येक वर्ग के पिचासी प्रतिशत व्यक्ति एक ही प्रकार के व्यवसाय-धन्धे में दक्ष होते हैं, एक ही प्रकार के गुण-दोष, एक ही प्रकार ही चिन्तनशैली तथा एक ही प्रकार की रुचि-अरुचि वाले होते हैं। यहां तक कि उनके रहन-सहन में भी एकरूपता पायी जाती है। प्राचीनकाल से आज तक उनकी चरित्रगत विशेषताओं में कोई अन्तर नहीं आया है। इस प्रकार, यदि हम यह मान कर चलें कि सृष्टि के सभी मनुष्यों के केवल सात वर्ग हैं और फिर यदि हम उन सात वर्गों की विशेषताओं—उनके विभाजक तत्त्वों—को भी जान लें, तो हमारे लिए इन सातों वर्गों के व्यक्तियों को पृथक् रूप में पहचानना कठिन नहीं होगा। हमें यह भी ज्ञात हो जायेगा कि मानव-जाति अपने अस्तित्त्व में आने के समय से आज तक पूर्ववत् एकरूप बनी हुई है, उसमें किसी प्रकार का कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं आया, जिसका अर्थ है कि सृष्टि के नियम अनादिकाल से आज तक अपने अपरिवर्तित रूप में अटल चले आ रहे हैं। इस आधार पर हम इन सात श्रेणियों के पूर्वजों की जीवन-शैली, कार्य-पद्धति एवं चिन्तन-परम्परा के अन्तर्गत इतिहास की जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं तथा भूत और वर्तमान को आधार बनाकर भविष्य के सम्बन्ध में अपनी धारणा को भी स्थिर बना सकते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति के हाथ के उभारों (पर्वतों) का सचमुच ही अत्यधिक महत्त्व है। उदाहरणार्थ, उभरे हुए बृहस्पति पर्वत वाला व्यक्ति महत्त्वाकांक्षी और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्वगुण प्रदान करने वाला होता है। उसके स्वास्थ्य, आहार-विहार, घरेलू जीवन, धार्मिक विश्वास, व्यापार, प्राकृतिक योग्यता, गुण-अवगुण, संवेग, चिन्तन, विवाह सम्बन्धी दृष्टिकोण—विवाह करना अथवा ब्रह्मचर्य पालन करना, जीवनसाथी का चुनाव आदि—के सम्बन्ध में इस प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इस श्रेणी के सभी व्यक्तियों में प्राय: उपर्युक्त सभी विशेषताएं एक समान ही पायी जाती हैं। अन्य सभी श्रेणियों के लोगों में भी अपनी-अपनी श्रेणी की विशेषताएं मिलती हैं। इस प्रकार व्यक्ति की श्रेणी का पता चल जाने पर—उसके पूर्वजों की विशेषताओं के अनुरूप ही उसकी विशेषताओं को समझना और बनाना सरल हो जाता है। एक वर्ग का व्यक्ति छोटी आयु में, तो दूसरे वर्ग का बड़ी आयु में और अपने से अधिक आयु के साथी से विवाह करता है, तीसरे प्रकार का व्यक्ति विवाह को पसन्द ही नहीं करता। इसी प्रकार एक वर्ग के व्यक्ति दीर्घायु होते हैं, तो दूसरे वर्ग के मध्यमायु और तीसरे वर्ग के अल्पायु होते हैं। वर्ग की पहचान से व्यक्ति के सम्बन्ध में सही भविष्यवाणी की जा सकती है। अत: हस्तरेखाविद् के लिए प्रथम आवश्यकता इन सातों श्रेणियों की गहन और सूक्ष्म जानकारी प्राप्त करना है। उसे यह विदित होना चाहिए कि नियति अथवा भाग्य और कुछ नहीं, केवल इन श्रेणियों के लोगों की परम्परागत एवं चरित्रगत विशेषताएं हैं। जब तक किसी श्रेणी

में किसी प्रकार का व्यतिक्रम नहीं आता, तब तक व्यक्ति के कार्य, स्वास्थ्य, शरीर-गठन तथा जीवन-मृत्यु आदि परम्परागत रूप में उसकी श्रेणी के पूर्वजों के अनुरूप ही मिलेंगे।

खेद का विषय यह है कि आज का मानव अपनी श्रेणी का शुद्ध प्रतीक नहीं। किसी भी एक श्रेणी के मनुष्यों में दूसरी श्रेणी के मनुष्यों के गुण-दोष आंशिक रूप में अवश्य ही मिल जायेंगे। इस मिश्रण के फलस्वरूप ही निम्न वर्ग के व्यक्ति के हाथ पर भी महत्त्वाकांक्षा और नेतृत्व प्रदान करने के गुण आदि अंकित रहते हैं। इस तथ्य की जानकारी रखने वाला हस्तरेखाविद् ही अपने यजमान को उसके सही रूप में पहचान सकता है, उसे उसकी न्यूनताओं तथा उन पर क़ाबू पाने की उसकी इच्छा और क्षमता के सन्दर्भ में उसे यथोचित निर्णय लेने का परामर्श दे सकता है।

ऐसे व्यक्ति में प्रबल इच्छा और दृढ़ संकल्पशक्ति को अपवाद मान लें, तो भी हमें यह समझना होगा कि प्राय: लोग अपनी परम्परागत विशेषताओं को बदलना नहीं चाहते। इसके साथ यह भी नितान्त सत्य है कि बदलाव असम्भव नहीं। इस प्रकार सातों श्रेणियों के व्यक्तियों में विद्यमान लक्षण भले ही उपलब्ध हो जायें, परन्तु फिर भी परिवर्तन को सर्वथा नकारा नहीं जा सकता। तभी तो उक्ति प्रचलित है— 'जहां चाह वहां राह' के समान ईश्वर उनकी सहायता अवश्य करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं।

विधाता द्वारा सृष्टि के लोगों की सातों श्रेणियों में विभाजन की योजना पर आक्रेश प्रकट न करके हमारे लिए उसका परीक्षण करना उचित होगा। एस्कीमो जाति के लोग खान-पान तथा लोकव्यवहार में पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक समान रहे हैं और वे अपने इस जीवन से सन्तुष्ट हैं। प्रत्येक व्यक्ति के आनन्द का रूप एक-समान होता है। सातों श्रेणियों के लोग अपने-अपने ढंग से सोचते-विचारते और काम करते हैं। वे सभी अपने ढंग को सर्वोत्तम मानते हैं और उसी में आनन्द का अनुभव करते हैं। दीखने में भले ही एस्कीमो जाति के लोग एक ही मिले-जुले समूह के लगते हैं, पर वास्तव में वे भी सात अलग-अलग प्रकारों में विभक्त हैं।

अत: प्रत्येक श्रेणी के लोगों से सम्बन्धित जानकारी—सोच-विचार का ढंग, रहन-सहन, खेल-कूद सम्बन्धी रुचि-प्रवृत्ति, विवाह सम्बन्धी दृष्टिकोण, साथियों के साथ व्यवहार, व्यवसाय का चुनाव तथा धार्मिक विश्वास आदि—के आधार पर सम्बद्ध व्यक्ति के चरित्र का विश्लेषण सहज व सरल हो जाता है।

प्रत्येक पर्वत—बृहस्पति, शनि, सूर्य, बुध, मंगल, शुक्र तथा चन्द्र—स्थान उनके प्रकार अथवा प्रतीक हैं। पर्वतों से प्रतीकों का परिचय पाने के पीछे कोई स्पष्ट कारण तो नहीं है, फिर भी कतिपय उपलब्ध संकेत इस तथ्य का असन्दिग्ध रूप से समर्थन करते हैं। यह एक निश्चित सत्य है कि सभी कार्यों को सम्पन्न करने वाले

हाथ का निर्देशक मानव-मस्तिष्क है। हमारा हाथ तो मस्तिष्क के आदेशों का पालन करने वाला एक सेवक है। हाथ और मस्तिष्क के बीच सन्देशों का सम्प्रेषण करने वाली जटिल तन्त्रिका-प्रणाली के विच्छिन्न होने पर हम अपने हाथों को सर्वथा निष्क्रिय ही नहीं, अपितु पूर्णत: नि:स्पन्द (गतिशून्य, पक्षाघात-ग्रस्त अंग) पायेंगे। इससे यह परिणाम निकलता है कि हाथ-जैसा अत्यन्त उपयोगी एवं अनूठा अंग भी मस्तिष्क के अभाव में निरर्थक हो जाता है। हाथ और मस्तिष्क को जोड़ने वाली तन्त्रिका-प्रणाली है। यही दोनों के मध्य संवाद स्थापित करती है। इतना तो निश्चित है कि हाथ पूरी तरह मस्तिष्क के नियन्त्रण में हैं और उसी के निर्देशों पर चलते हैं। हाथों के सार्थक प्रयोग एवं सोद्देश्य उपयोग से भी इसी तथ्य की पुष्टि होती है कि उसके पीछे परिष्कृत बुद्धि अथवा विकसित मस्तिष्क कार्य कर रहा है और आज हमें मानव-मस्तिष्क के हाथ से योजक केन्द्र की जानकारी प्राप्त हो गयी है। आज हाथों की अलग-अलग बनावटों से मस्तिष्क के केन्द्र की बनावटों का विश्लेषण भी सम्भव हो गया है। उदाहरणार्थ, यदि हाथ पर बृहस्पति पर्वत सर्वाधिक उभरा हुआ होगा, तो निश्चित है कि हाथ को नियन्त्रित करने वाला मानव-मस्तिष्क बृहस्पति के प्रकार का होगा और फिर बृहस्पति के प्रकार वाला मस्तिष्क-केन्द्र बृहस्पति ग्रह के ही विचारों, प्रतीकों और विलक्षणताओं को उत्पन्न करेगा। इसे दूसरे प्रकार से कहना चाहें, तो कह सकते हैं कि यदि सम्बद्ध व्यक्ति का मस्तिष्क-केन्द्र बृहस्पति के प्रकार का है, तो निश्चित रूप से उसके हाथ पर बृहस्पति पर्वत ही सर्वाधिक बड़ा होगा। दोनों में एकरूपता ही नहीं, अभिन्नता का होना भी अनिवार्य है; क्योंकि यदि मस्तिष्क-केन्द्र ने हाथ से काम लेना है, तो हाथ ने मस्तिष्क-केन्द्र से ही निर्देश लेना है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि यदि मस्तिष्क-केन्द्र की रचना में कोई परिवर्तन आता है, तो व्यक्ति के स्वभाव, रहन-सहन, चिन्तन एवं स्वास्थ्य आदि पर उसका प्रभाव पड़ना, अर्थात् तदनुरूप परिवर्तन का आना आवश्यक है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि हस्तरेखा-विज्ञान का आन्तरिक एवं मूल तत्त्व भली प्रकार से समझ लेने पर व्यक्ति के जन्म के रहस्य को सुलझाना असम्भव नहीं रह जाता, अपितु यह गुत्थी स्वत: सुलझ जाती है। ऐसा कुशल हस्तरेखाविद्—व्यवसायी हो अथवा शौक़िया—ही सही भविष्यकथन में समर्थ हो सकता है।

* बृहस्पति, सूर्य और शुक्र पर्वतों के प्रतीक व्यक्ति सौभाग्यशाली होते हैं। उनका न केवल स्वास्थ्य उत्तम रहता है, अपितु वे प्रसन्नचित्त भी रहते हैं तथा बुराईयों से भी दूर रहते हैं।

* शनि और बुध के प्रतीक व्यक्ति सामान्यत: मर्यादा और सीमा के अतिक्रमण में तथा बुराई को अपनाने में संकोच न करने वाले, स्वभाव से चिड़चिड़े तथा जीवन एवं आचार-व्यवहार में सर्वथा असामान्य होते हैं।

* मंगल के प्रतीक व्यक्ति अकारण ही तथा साधारण-सी बात पर क्षुब्ध एवं उग्र हो उठते हैं। कभी-कभी उनकी उग्रता मार-पीट का रूप भी ले लेती है, फिर भी वे बुरे ही हों, ऐसा आवश्यक नहीं।

* चन्द्र के प्रतीक व्यक्ति तटस्थ रहने वाले, आत्मकेन्द्रित (अंशतः स्वार्थी) तथा कल्पनालोक में विचरण करने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति शीघ्र ही उत्तेजित हो जाने वाले तथा अकारण ही अपने निश्चय से टूट जाने वाले होते हैं।

इस प्रकार तीन—बृहस्पति, सूर्य और शुक्र—प्रकारों को उत्तम कोटि में, दो—शनि और बुध—प्रकारों को अधम कोटि में तथा दो—एक मंगल के प्रतीक तथा दूसरे, चन्द्र के प्रतीक को क्रमशः उग्र तथा समझाया न जा सकने वाला होने से—मध्यम कोटि में रखा जा सकता है।

हस्तरेखा से सम्बद्ध अन्य पुस्तकों के पाठकों को यह स्पष्ट हो जायेगा कि इस पुस्तक में पर्वतों के सम्बन्ध में अनुसन्धान के लिए विस्तृत सम्भावनाओं को स्थान दिया गया है। हस्तरेखाशास्त्र पर मेरा यह प्रथम प्रयास है, जिसमें पर्वतों को आधार बनाया गया है। अन्य लेखकों ने अपनी रचनाओं में हाथों के निम्नोक्त प्रकारों—अविकसित तथा उपयोगी हाथ, गतिशील हाथ, दार्शनिक हाथ एवं नुकीले हाथ तथा मिश्रित हाथ—को अध्ययन का आधार बनाया है। इस सम्बन्ध में मेरा निवेदन यह है कि ये तथा इन-जैसे प्रकार व्यक्ति के व्यक्तित्त्व को आंशिक रूप में, अर्थात् व्यक्ति के किसी एक पक्ष-विशेष को ही उजागर करते हैं। इनसे व्यक्ति के पूरे व्यक्तित्त्व पर प्रकाश नहीं पड़ता। निस्सन्देह इनसे कुछ लक्षणों की जानकारी अवश्य मिलती है, परन्तु सब कुछ—स्वास्थ्य, विवाह सम्बन्धी दृष्टिकोण, खान-पान, रहन-सहन, जीवन-मृत्यु सम्बन्धी धारणा, उत्कृष्ट अथवा निकृष्ट प्रवृत्ति तथा परिवार के प्रति अनुरक्ति अथवा विरक्ति आदि—प्रकट नहीं हो पाता। इतना ही नहीं, इन सब प्रकारों से व्यक्ति के आन्तरिक संवेगों की तो कोई भी जानकारी प्राप्त नहीं होती।

इसके सर्वथा विरुद्ध पर्वतों के प्रकारों से न केवल व्यक्ति का समूचा व्यक्तित्त्व स्पष्ट हो जाता है, अपितु चरित्र व रुग्णता के बीच का सूक्ष्म अन्तर भी छिप नहीं पाता।

मेरी यह पुस्तक वर्तमान में प्रकाशित कतिपय अन्य लेखकों की पुस्तकों से इस रूप में भिन्न है कि जहां उन्होंने व्यक्ति की विशेषताओं—क्रियाशीलता तथा नियमबद्धता आदि—को महत्त्व दिया है, वहां मैंने विधाता द्वारा सृष्टि में विशेष स्थान लेने के लिए रचित, अतः अपेक्षित गुणों-विशेषताओं से सम्पन्न मनुष्य के प्राथमिक लक्षणों को अपने अध्ययन का आधार बनाया है। इसलिए मेरी इस पुस्तक के पाठकों के लिए प्रारम्भ से ही पूर्णतः सत्य भविष्यकथन सम्भव हो सका है। यह कोई आश्चर्य अथवा अविश्वास का विषय नहीं है।

यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि व्यक्ति के प्रकार का निश्चय करते समय उसकी चारित्रिक विशेषताओं—कार्यक्षमता, बुद्धिमत्ता, सत्यनिष्ठा (ईमानदारी), स्वास्थ्य तथा त्रुटियों-न्यूनताओं आदि—की पूर्ण जानकारी रखना आवश्यक है। इसी संयोजन से अध्ययन में एक सन्तुलन स्थापित हो जाता है। वस्तुत: प्रकारों का पहले से निर्धारण करने पर जहां नये छात्रों को इन प्रकारों से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण शक्तियों का ज्ञान ही न हो, वहां इसके विपरीत शक्तियों का पहले से विवेचन करने पर प्रकारों का सही और पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना सम्भव नहीं हो पाता। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए ही प्रस्तुत पुस्तक में प्रकारों के प्रमुख लक्षणों और गुणों को चित्ररूप में उद्धृत किया गया है। इससे न केवल प्रकारों की आरम्भिक जानकारी प्राप्त करने में सुविधा होगी, अपितु प्रकारों के मूल में स्थित शक्तियों के विवेचन में भी सफलता प्राप्त होगी। इस प्रकार के सन्तुलित अध्ययन से हस्तरेखाविद् में आत्मविश्वास उत्पन्न होगा और वह सुदृढ़ आधार पर न केवल भविष्यकथन कर सकेगा, अपितु हस्तरेखाओं के अध्ययन में आने वाली किसी भी कठिनाई को पार करने में भी वह समर्थ एवं सफल हो सकेगा। *

2

हस्तरेखाओं की सामान्य विशेषताएं

"मानव-जाति मिट्टी का एक कलश अवश्य है, परन्तु चेतना और संवेगों से ओत-प्रोत होने के कारण उससे भिन्न है।"

आत्मा अथवा जीव का भौतिक निवास यह मानव-शरीर अपनी संरचना और क्रियाशीलता में एक यन्त्र के समान है। अन्तर केवल इतना है कि इसमें लकड़ी-लोहे आदि के स्थान पर नस-नाड़ियां और हड्डियां लगी हुई हैं। किसी भी यन्त्र अथवा मशीन (इञ्जन) आदि का निर्माण उपयोगिता की दृष्टि से किया जाता है और इस उपयोगिता की पूर्ति के लिए उसे गतिशील बनाना, अर्थात् उसका सञ्चालक शक्ति के साथ जुड़ना आवश्यक ही नहीं, अपितु अन्तिम हो जाता है। भाप, जल, सम्पीड़ित वायु तथा विद्युत् आदि सञ्चालक-शक्ति के ही कुछ रूप हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि इञ्जन न होने पर चालक-शक्ति का और चालक-शक्ति के अभाव में इञ्जन का उपयोग न हो पाने के कारण दोनों व्यर्थ एवं निरर्थक होते हैं। इस प्रकार ये दोनों एक-दूसरे पर निर्भर हैं और एक-दूसरे के पूरक हैं।

मानव-शरीर की संरचना भी उद्देश्य-विशेष की पूर्ति के लिए हुई है। शरीर-यन्त्र एक तो सभी प्रकार के मानव-निर्मित यन्त्रों से कहीं अधिक जटिल है, दूसरे, इसके सञ्चालक-शक्ति से पूरी तरह न जुड़े बिना इसके कार्यशील न हो पाने के कारण शरीर केवल जीव-द्रव्य का एक भाग होता है, बुद्धिरूपी प्राणवायु के प्रवेश करते ही इसमें चैतन्य अथवा सक्रियता आती है। मां के गर्भ में पल रहा शिशु यान्त्रिक रूप से कार्य अवश्य करता है, परन्तु वास्तव में वह सचेत नहीं होता। आगे चलकर उसके शरीर के अन्य अंगों—नेत्र, श्रवण और नासिका—आदि के विकास के समान ही उसके हाथों की रेखाओं का भी विकास होता है और फिर ये रेखाएं मानव-शरीर को सक्रिय एवं गतिशील बनाने वाली शक्ति को ग्रहण करने के लिए तैयार होने का संकेत देने लगती हैं।

शरीर में प्रविष्ट चैतन्य (जीव अथवा आत्मा अथवा चेतना शक्ति) शरीर के अन्यान्य अंगों—नेत्र, श्रवण तथा नासिका आदि—के समान ही हाथों को भी अपने निर्धारित कार्य को करने की प्रेरणा, स्फूर्ति एवं शक्ति प्रदान करता है। ईश्वर अथवा

अन्य किसी परोक्ष सत्ता के अस्तित्व में कोई विश्वास करे अथवा न करे, परन्तु यह निश्चित है कि शरीर में चैतन्य का प्रवेश मनुष्य की शक्ति से बाहर है। बड़े से बड़ा वैद्य, तान्त्रिक, वैज्ञानिक अथवा रसायनशास्त्री भी किसी मृत व्यक्ति को जीवित नहीं कर सकता। जीवन-मरण ऊपर वाले के हाथ में है—इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता। कोई भी व्यक्ति किसी शरीर में प्राण नहीं डाल सकता। जीवन अथवा प्राण देने वाली इस शक्ति के ही बुद्धि, ईश्वर, विद्युत् तथा ग्रह आदि विभिन्न नाम हैं। उस शक्ति को किसी भी नाम से पुकारा जाये—इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। हां, हस्तरेखाशास्त्र के अध्ययन के लिए मानव-शरीर में किसी जीवनधारा का प्रवाहित होना आवश्यक है।

नवजात शिशु की गतिविधि का सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जायेगा कि उत्पन्न जातक के रोने की आवाज़ के साथ ही उसकी बन्द मुट्ठियां (हाथ की अंगुलियां) खुल जाती हैं और एकदम सीधी एवं कठोर हो जाती हैं। हाथों की इस अनायास गतिशीलता के पश्चात् ही फेफड़े वायु को भीतर खींचते हैं तथा उसके होठों से एक चीख़ (रोने की आवाज़) निकल पड़ती है, जो जीवन के प्रारम्भ की सूचक होती है। थोड़ी देर में बच्चा भूख अनुभव करता है और हाथ को मुंह तक ले जाने के रूप में इस तथ्य की ओर संकेत करता है। यह संकेत मस्तिष्क के कार्यशील होने का सूचक होता है। दूसरे शब्दों में मस्तिष्क हाथ-रूपी सेवक को नवजात के मुख तक खाद्य पदार्थ पहुंचाने का निर्देश दे रहा है। मेरा यह निश्चित मत है कि बच्चे के हाथ की अंगुलियों के ख़ुलने तथा सीधी एवं कठोर होने के समय से ही बच्चे के भीतर कठोर अंगुलियों के सिरों से जीवनी शक्ति प्रवेश करती है और मानव- शरीर को गतिशील बनाती है, अर्थात् सभी इन्द्रियों—श्रवण, नयन, नासिका तथा जिह्वा आदि—को अपने-अपने विषयों—सुनना, देखना, सूंघना तथा चखना आदि—में प्रवृत्त करती है। इस शक्ति का सञ्चार ही शरीर में आत्मा का प्रवेश अथवा जड़ और चेतन का संयोग है।

शरीर में प्रेरक शक्ति के प्रवेश करने के साथ ही जीवन का प्रारम्भ हो जाता है और शिशु (प्रारम्भ में) एक सामान्य भोक्ता के रूप में अपना जीवन जीने लगता है। उसकी दिनचर्या हंसने-रोने, सोने-जागने, खाने-पीने और मल-मूत्र विसर्जन करने तक सीमित रहती है। इस अवधि में उसके हाथों की अंगुलियों के तीसरे जोड़ों का भारीपन उसके भोक्ता रूप को दर्शाता है। समय बीतने और शिशु के एक वर्ष का हो जाने पर उसका सोना-खाना आदि घटने लगता है। उसके मस्तिष्क के विकास के साथ उसकी सोच का विस्तार होने लगता है। इस अवधि में जातक का हाथ भी बदल रहा होता है। बच्चे के बढ़ने व हाथ में आ रहे परिवर्तन का एक साथ अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि चौदह वर्ष की अवस्था तक बालक के स्वरूप की तरह उसका हाथ भी अनगढ़ रहता है। बालक की इस अवस्था को किशोरावस्था

अथवा बाल्यकाल नाम दिया जाता है। ज्यों ही बालक वयस्कता को प्राप्त करता है, त्यों ही उसके चरित्र के प्रदर्शन-परिवर्तन उसके हाथों में दिखाई देने लगते हैं। इस संक्रान्तिकाल में बालक के हाथ का सही एवं सूक्ष्म अध्ययन करने पर उसके चरित्र, स्वास्थ्य, गुण-दोष तथा रोग-विकार आदि की पूरी जानकारी प्राप्त की जा सकती है तथा तदनुसार आवश्यक सुधार एवं परिष्कार आदि किया जा सकता है। इस दृष्टि से माता-पिता के लिए बालक के हाथ के अध्ययन का महत्त्व और उपयोगिता स्वतः सिद्ध हो जाते हैं।

यहां एक तथ्य उल्लेखनीय है कि माता-पिता के लिए इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि माता-पिता द्वारा बालक की रुचि और समझ के विरुद्ध उसे अपनी इच्छा से चलाने की चेष्टा व्यर्थ तो होती ही है, प्रायः हानिप्रद भी सिद्ध होती है। वस्तुतः बालक का मस्तिष्क एक इञ्जन के समान है। जिस प्रकार इञ्जन में से कुछ कल-पुर्ज़े निकाल कर उससे आरा-मशीन का काम लेने लगें, तो यह कोई बुद्धिमत्ता नहीं होगी, अपितु एक अच्छे-भले एवं अत्यन्त उपयोगी यन्त्र को बिगाड़ना होगा। ठीक यही बात मानव-मस्तिष्क पर भी लागू होती है। जब माता-पिता बालक के अपरिपक्व मस्तिष्क में अपना ज्ञान ठूंसने लगते हैं, तो परिणाम में उन्हें असफलता का सामना करना पड़ता है। बालक को उसकी रुचि के कार्य से हटाकर माता-पिता का उसे अपने द्वारा थोपे गये कार्य को करने के लिए बाध्य करना बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय कदापि नहीं। फिर, इस चेष्टा में असफलता के लिए विधाता अथवा ईश्वर को कोसना अथवा दोष देना मानव की सहजवृत्ति है, जो नितान्त ग़लत है। यदि बालक को उसका अभीष्ट कार्य करने दिया जाता, तो सफलता अवश्य ही उसके चरण चूमती। अपनी ग़लती के लिए स्रष्टा को उत्तरदायी ठहराना अन्याय है। विधाता के कार्यों का गहनता से अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उसने प्रत्येक समस्या के साथ उसका समाधान व प्रत्येक प्रश्न के साथ उसका उत्तर भी रख छोड़ा है। स्रष्टा ने प्रत्येक व्यक्ति के हाथ को उसके मस्तिष्क का दर्पण बनाया है, अर्थात् सीधी-सादी रेखाओं की सुबोध भाषा में उसकी रुचि-प्रवृत्ति आदि को अंकित कर दिया है। मज़े की बात यह है कि स्रष्टा ने मानव-मस्तिष्क को दर्पण के समान समझने की कुञ्जी भी हस्तरेखाओं में ही रख दी है। इसकी उपेक्षा के कारण ही मनुष्य भटक रहा है। कबीर की भाषा में कहना चाहें, तो कह सकते हैं कि कस्तूरी मृग कस्तूरी की खोज में इधर-उधर भटक रहा है; क्योंकि वह नहीं जानता कि कस्तूरी तो उसकी नाभि में ही है, जिसकी गन्ध से वह सम्मोहित है।

जब कुछ व्यक्ति मानव के चरित्र, उसकी रुचि एवं प्रवृत्ति आदि के ज्ञान के लिए हस्तरेखाओं के अध्ययन को सर्वशक्तिमान् ईश्वर के रहस्यों को जानने की
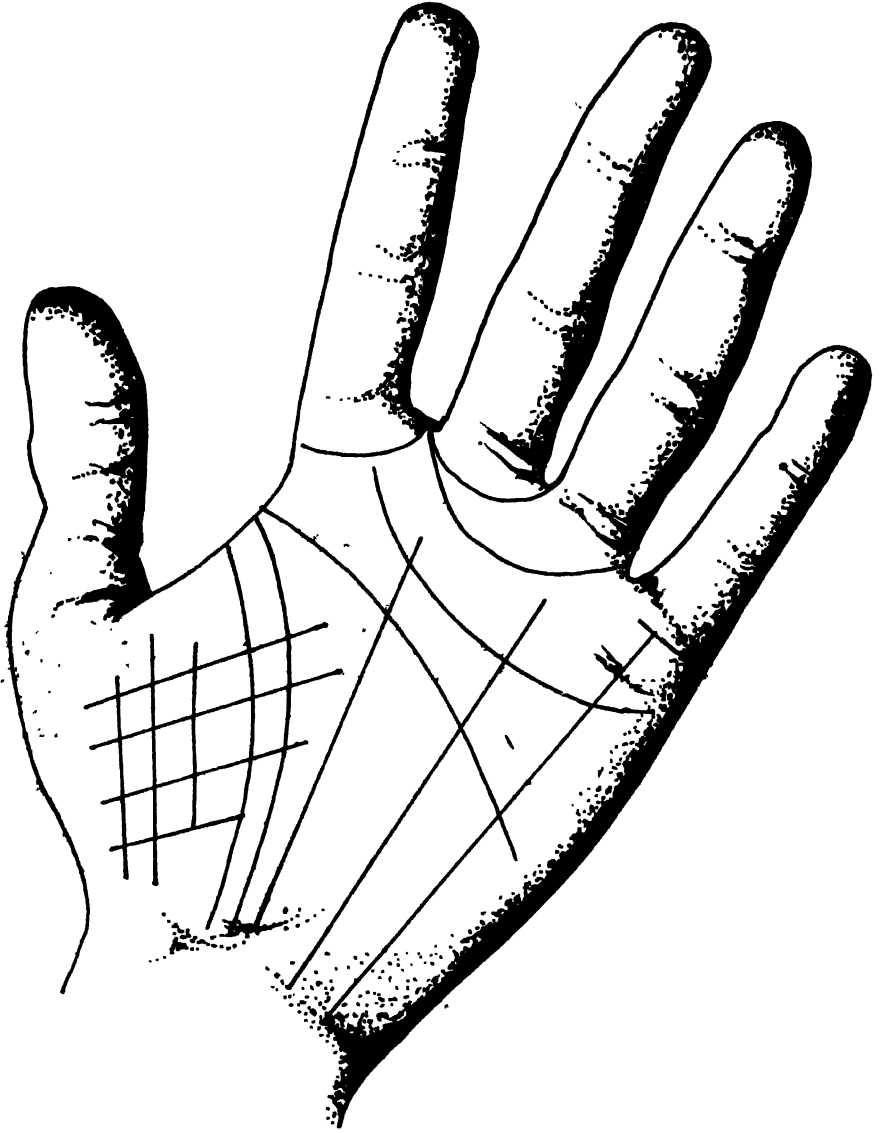
रेखाचित्र-ख

अनधिकार चेष्टा बताकर उसका विरोध करते हैं, तो यह देख-सुनकर आश्चर्य ही नहीं होता, अपितु हंसी भी आती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि आज के विज्ञान के युग में ऐसी धारणाओं के लिए कोई स्थान नहीं। जिस प्रकार विद्युत् और तरल वायु की खोज, फूलों की पत्तियों में रेखाओं की भाषा को पढ़ने का वैज्ञानिक प्रयास ईश्वर के विधान में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं माना जाता, ठीक उसी प्रकार हस्तरेखाओं का अध्ययन भी ईश्वरीय नियमों के साथ किसी रूप में कोई छेड़-छाड़ नहीं। यदि यकृत की विकृति को जानने के लिए चिकित्सक द्वारा जीभ का परीक्षण अनुचित नहीं, तो इच्छाशक्ति की पूर्णता-अपूर्णता व अधिकता-न्यूनता आदि को देखने के लिए हाथ के अंगूठे का परीक्षण करने वाले हस्तरेखाविद् के सम्बन्ध में दोहरा मानदण्ड क्यों? वस्तुत: हस्तरेखाशास्त्र पूर्णत: विज्ञान है और इसके निष्कर्ष तर्कसंगत ही सिद्ध हुए हैं।

यदि आज अभिभावक अपने बालकों के भविष्य का चुनाव करने के लिए हस्तरेखाशास्त्र का उपयोग करें, तो उन्हें सही मार्गदर्शन मिल सकता है। फिर न तो विफलता की आशंका रहेगी और न ही इसमें विधान के विरुद्ध किसी प्रकार के हस्तक्षेप का दोष लगेगा। विधाता ने तो व्यक्ति के हाथ में उसका भविष्य अंकित कर दिया है, फिर यदि मनुष्य अपने हाथ का अध्ययन न करे और असफलता के लिए विधाता पर दोषारोपण करे, तो इसे कहां और कैसे उचित कहा जायेगा? इस प्रकार हस्तरेखाशास्त्र की उपेक्षा न केवल मानव के लिए हानिप्रद है, अपितु उसकी मूर्खता की सूचक भी है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि हमें हस्तरेखाओं के अध्ययन को पूरी गम्भीरता से लेना चाहिए, तभी हम इसका सही व पूरा-पूरा लाभ उठा सकते है। हम पहले ही लिख चुके हैं कि मानव एक प्रकार का इञ्जन है, जिसे समुचित रूप से उपयोगी बनाये रखने के लिए उसके सभी कल-पुर्ज़ों में एक सन्तुलन बनाये रखना अत्यन्त आवश्यक है। मनुष्य का असन्तुलित, संकीर्ण अथवा विकृत होना इस तथ्य का सूचक है कि इस मशीन का कोई पुर्ज़ा दूसरे पुर्ज़ों पर अनावश्यक भार डाल रहा है। वस्तुत: एक पूर्णतया सन्तुलित हाथ वाला व्यक्ति ही सन्तुलित जीवन जी सकता है। सफल जीवन के लिए बुद्धि और स्वास्थ्य दोनों का सन्तुलित होना आवश्यक है। हस्तरेखाओं के अध्ययन से ही दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क और शरीर के स्वस्थ-सन्तुलित होने अथवा न होने की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इस सम्बन्ध में हस्तरेखाशास्त्र हमारी बहुत सहायता कर सकता है। हस्तरेखाशास्त्र इस विषय की सैद्धान्तिक जानकारी देता है, जिसके आधार पर हम हस्तरेखाओं का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करके मानव-चरित्र की सही व पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

हाथ की मुख्य रेखाएं : संक्षिप्त रूपरेखा

हृदय रखा

यह मनोभावों की दृढ़ता-क्षीणता तथा स्नावयिक शक्ति की तीव्रता-मन्दता की द्योतक है।

इस रेखा का स्पष्ट, सपाट (साफ़-सुथरापन) और उत्तम स्थिति का होना हृदय के सही ढंग से कार्य करने तथा जातक के मनोभाबों के स्थिर होने का सूचक है।

मस्तक रेखा

स्नावयिक और मानसिक शक्तियों की द्योतक इस रेखा की स्पष्टता, एकसारता एवं उत्तमता व्यक्ति के संयमी और एकान्तप्रिय होने की सूचक है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति प्राय: चिन्तनशील और विकसित मस्तिष्क वाले होते हैं।

जीवन रेखा

शारीरिक गठन, श्रम और संघर्षशीलता की द्योतक इस रेखा की स्पष्टता एवं सपाटता व्यक्ति के हृष्ट-पुष्ट, बल-वीर्यसम्पन्न और दृढ़ स्नायु तथा ऊर्जस्वी होने की परिचायक है। शारीरिक शक्ति के महत्त्व के अनुरूप ही इस रेखा को भी अत्यधिक महत्त्व प्राप्त है।

शनि रेखा

शनि पर्वत पर पायी जाने वाली यह रेखा व्यक्ति के जीवन में सन्तुलित होने तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के साथ-साथ उसके मूर्खतापूर्ण कार्यों से बचने की प्रवृत्ति की सूचक है। इसकी सापेक्ष स्पष्टता और सपाटता ही व्यक्ति के जीवन में सन्तुलन की उच्चावच स्थिति की परिचायक है।

सूर्य रेखा

सूर्य पर्वत पर पायी जाने वाली इस रेखा की स्पष्टता और सपाटता व्यक्ति के कला के क्षेत्र में प्रसिद्धि, रचनात्मक कार्यों में प्रगति तथा अपने व्यवसाय में सफलता की सूचक है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि शनि रेखा और सूर्य रेखा स्वास्थ्य सम्बन्धी गुण-दोषों को नहीं दर्शाती। यह कार्य बुध रेखा करती है, इसीलिए इसे स्वास्थ्य रेखा भी कहा जाता है। इस सम्बन्ध में यथास्थान विस्तृत चर्चा की जायेगी।

पर्वत-प्रकारों को समझने के लिए यहां कुछ विशिष्ट रेखाओं का सामान्य उल्लेख किया गया है। रेखाओं का सूक्ष्म परिचय और उनका तकनीकी पक्ष आपको अगले पृष्ठों में देखने को मिलेगा।

*

3

हाथ की मुद्राएं : चरित्र की सूचक

अध्ययन को सुविधाजनक और पूर्णत: वैज्ञानिक बनाने के लिए हमने ऐसी पद्धति—सर्वप्रथम हाथ की मुद्रा (छाप), बनावट, लचक, सामञ्जस्य का स्वरूप, रंग तथा नाखून आदि पर क्रमश: तथा नियमित चर्चा—को अपनाया है, जिससे इस शास्त्र के अध्येता को 'कहां से और क्या प्रारम्भ किया जाये' के उहापोह में नहीं पड़ना होगा, उसे तो केवल व्यक्ति के हाथों की स्वाभाविक गतिविधि को ही देखना होगा।

हाथों की स्वाभाविक गतिविधि की परख करने के लिए हस्तरेखाविद् को प्रवेश-द्वार से सर्वथा विपरीत दिशा में अपना आसन लगाना चाहिए। इससे उसके लिए आने वाले व्यक्ति के अपने तक पहुंचने से पूर्व ही उसके हाथों की गतिविधि को स्पष्ट देखना सम्भव होगा। यहां ध्यान देने योग्य एवं आवश्यक बात यह है कि सम्बद्ध रूप से व्यक्ति को इस तथ्य की भनक नहीं पड़नी चाहिए, अन्यथा वह किसी दबाव, उलझन अथवा परेशानी का पात्र बन सकता है।

नीयत की भनक पड़ते ही उसका मस्तिष्क अशान्त एवं विक्षुब्ध हो सकता है और फिर उसके हाथों की गतिविधि अस्वाभाविक हो जाने से आपका अध्ययन भी ग़लत हो जायेगा। अत: अध्येता को आते हुए व्यक्ति—अपने अध्ययन का विषय—को किसी भी प्रकार से असहज नहीं होने देना चाहिए। यहां तक कि उसके समीप आ जाने पर अथवा उसके द्वारा अपने सामान—कोट, लाठी, टोपी आदि—को रखने पर ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए, जिससे वह किसी भी रूप में असहज हो सके।

सहज रूप से आने वाला व सहज रूप से व्यवहार करने वाला व्यक्ति अध्येता के परीक्षण को सरल एवं सत्य बनाने में सहायक सिद्ध होता है। इसके विपरीत किसी भी प्रकार की शंका से ग्रस्त व्यक्ति असहज हो उठता है और उसके हाथ की क्रियाएं नियन्त्रित हो जाती है। अपने सचेत हुए मस्तिष्क के संकेत को पाकर उसके हाथ की अंगुलियां हथेली को ढक लेती हैं। उदाहरणार्थ, यदि आप किसी सहमे हुए व्यक्ति के हाथ का परीक्षण करने लगें, तो आप देखेंगे कि वह बार-बार अपनी

अंगुलियों से अपनी हथेली को छिपाने का प्रयास कर रहा होता है। यह इस तथ्य का सूचक होता है कि वह अपने भावों-विचारों की अनावृत नहीं होने देना चाहता। यह आवश्यक नहीं कि उसके चरित्र में कहीं कोई कलंक, खोट अथवा कालापन है। हां, यदि आपका व्यवहार सहज है और उसे ऐसी कोई भनक भी नहीं पड़ी तथा फिर भी वह अपनी हथेली की छिपाने की सफल-असफल चेष्टा करता है, तो निश्चित है कि वह व्यक्ति मक्कार, धूर्त तथा धोखेबाज़ है। ऐसे व्यक्ति को सचाई बताने में तो संकोच नहीं करना चाहिए, परन्तु हां, कुछ कहने से पहले सत्य को सुनिश्चित अवश्य कर लेना चाहिए। किसी एक संकेत के आधार पर ही किसी निर्णय पर पहुंचना अनावश्यक जल्दबाज़ी ही होगी। सभी तथ्यों पर सम्यक् विचार करने के उपरान्त ही कुछ कहना उचित होता है, अन्यथा अपनी ही हेठी होती है।
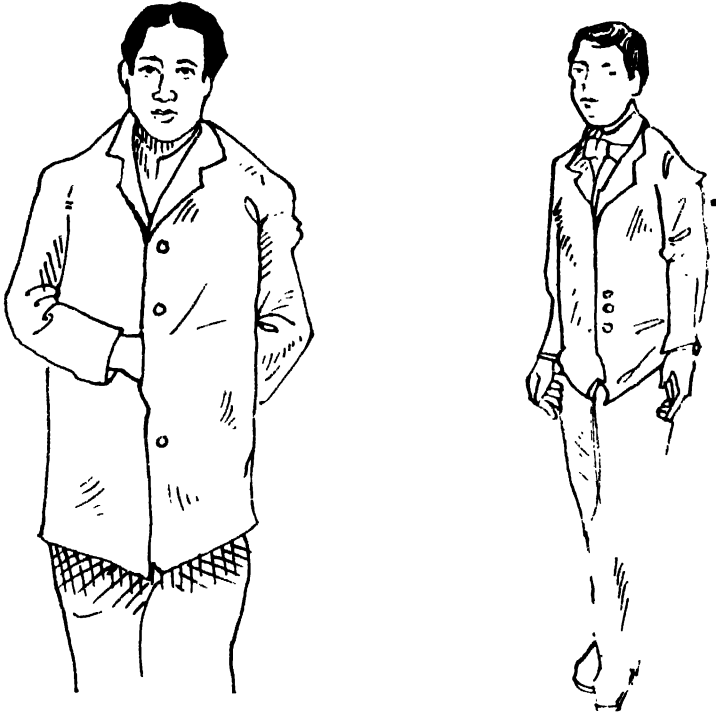
रेखाचित्र-1 व 2

आपका यजमान कुछ बताने में सावधानी भी बरत सकता है। हो सकता है कि वह किसी गुप्त रहस्य अथवा व्यवसाय सम्बन्धी किसी भेद को न खोलना चाहे। ऐसा व्यक्ति भी अपने हाथों की अंगुलियों को बन्द रखता है। अत: मात्र हथेली को ढकने के प्रयास को ही व्यक्ति के चरित्र की किसी दुर्बलता का संकेत नहीं समझना चाहिए। यहां यह भी विचारणीय है कि जिज्ञासु व्यक्ति भी हस्तरेखाविद् पर एक-

समान विश्वास नहीं करते। कभी-कभी विश्वास न जम पाने के कारण भी हथेली को छिपाने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। हां, विश्वास जम जाने पर व्यक्ति न तो हथेली छिपाने की चेष्टा करेगा और न ही पाखण्डियों के खुलेपन का नाटक करेगा। उसमें एक स्वाभाविकता होगी। उसके हाथ की अंगुलियां थोड़ी-सी अन्दर की ओर मुड़ी हुई होंगी और उसका हाथ तना हुआ लगने पर भी पूरी तरह खुला हुआ नहीं होगा। ऐसे व्यक्ति के चरित्र की सामान्य विशेषताएं इस प्रकार होती हैं—

* वह प्राय: अपने चरित्र को सार्वजनिक न करके अपने तक ही सीमित रखना चाहता है।

* वह अल्पभाषी, संयमी व आत्मनिर्भर होता है।

* उसमें हलकापन अथवा छिछोरापन नहीं होता। दूसरे शब्दों में वह धीर-गम्भीर होता है। अत: उसे विश्वसनीय माना जा सकता है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि हस्तरेखाओं के अध्येता को सभी प्रकार के हाथों के सम्पर्क में आने पर एक विशेष प्रकार के जीवन्त हाथ—स्फूर्ति से भरा, लचीला व लोचदार—की भली प्रकार से पहचान हो जानी चाहिए। ऐसे हाथ का स्पर्श करते ही अध्येता को तत्काल समझ लेना चाहिए कि जातक यजमान तेजस्वी एवं विशेष शक्तिसम्पन्न है। वस्तुत: सम्पर्क में आने वाले सभी जातक अथवा ग्राहकों के चरित्र के विश्लेषण के लिए उनके हाथों को वर्गीकरण की शैली से देखना आवश्यक नहीं; क्योंकि इस आधार पर केवल व्यक्ति के चरित्र की दृढ़ता अथवा दुर्बलता, रुचि-अरुचि तथा आकर्षण-विकर्षण का ही पता चलता है। अध्येता को यह ज्ञात होना चाहिए कि यजमान के हाथों के अतिरिक्त उसकी आंखें भी बोलती हैं, जो दया की भीख मांगती अथवा उसकी क्रूरता-पाशविकता की कहानी कहती हैं। अत: हाथों के अध्ययन के साथ हस्तरेखाविद् को इस पक्ष—शान्ति, धैर्य और गम्भीरता से यजमान की व्यथा-कथा को सुनना—की ओर भी ध्यान देना चाहिए। इससे आपको व्यक्ति के व्यक्तित्व को पहचानने और उसका सही मार्गदर्शन करने में केवल सुविधा ही नहीं होगी, अपितु निश्चितता भी हो जायेगी। इस स्थिति—आप हाथों की स्फूर्ति, लचक और लोच के साथ-साथ उसकी आत्मस्वीकृति के परिप्रेक्ष्य—में आप निस्संकोच रूप से कह सकेंगे कि अमुक व्यक्ति, आत्मनिर्भर, अल्पभाषी, संयमी और विवेकशील है। हस्तरेखाओं के अध्येता को यह ध्यान में रखना चाहिए कि उसे यजमान के सम्बन्ध में कुछ भी अस्पष्ट, जटिल तथा प्रश्नात्मक मुद्रा में नहीं कहना चाहिए। हां, उसे ऐसे आत्मीयतापूर्ण तथा विश्वास का वातावरण बनाना चाहिए कि यजमान अपनी कहानी स्वयं सुनाने को प्रस्तुत हो जाये। (रेखाचित्र-1,2)
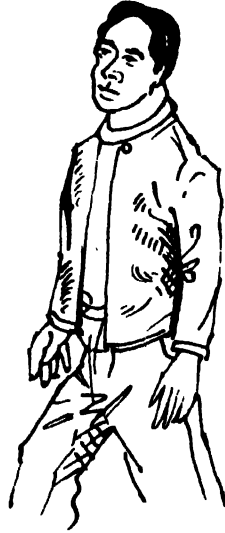
रेखाचित्र-3

इसके विपरीत हाथों को ढीला-ढाला और निर्जीव लटकाने वाले व खुली अंगुलियों वाले यजमान को सामने पाकर हस्तेरखाविद् को यह समझ लेना चाहिए कि उस व्यक्ति में निर्णय लेने तथा उद्देश्य निर्धारित करने की क्षमता का अभाव है। ऐसा व्यक्ति अपने किसी भेद के प्रकट होने से घबराता है। अतः इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए उसके सम्मुख विश्वास उत्पन्न कर सकने में समर्थ किसी चतुर व्यक्ति का उपस्थित रहना अथवा उसके साथ आत्मीय एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना अपेक्षित होता है। एक बार विश्वास उत्पन्न हो जाने पर ऐसा यजमान किसी भी सुझाव अथवा निर्देश को स्वीकार करने को उद्यत हो जाता है। ऐसा व्यक्ति आलसी और मानसिक रूप से रुग्ण होने के कारण केवल उद्देश्य-निर्धारण के सम्बन्ध में ही नहीं भटकता, अपितु निस्तेज और निर्वीर्य भी होता है। वह अपने से अधिक उत्कृष्ट मस्तिष्क के निर्देश पर चलने को सहमत हो जाता है। वस्तुतः संयमहीनता के कारण ऐसा व्यक्ति कुछ भी धारण करने में सर्वथा असमर्थ होता है (रेखाचित्र-3)

दूसरा यजमान कमरा लांघकर अपनी ओर हाथ लटकाये व मुट्ठियां बन्द किये (रेखाचित्र-4) आता है, तो निश्चित रूप से मान लेना चाहिए कि वह किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के सम्बन्ध में निश्चय न ले पाने के कारण परेशान है। जहां उसकी बन्द मुट्ठियां उसके निश्चय की दृढ़ता व अडिगता के साथ उसकी विलक्षण जीवन

शक्ति की सूचक हैं, वहीं इस तथ्य की ओर भी संकेत करती हैं कि उसने समझौते और बातचीत के सभी द्वार बन्द कर रखे हैं, जबकि कुछ निर्णय लेने का समय
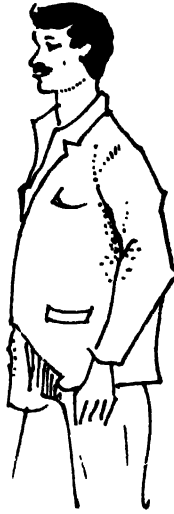
रेखाचित्र-4

समीप आ पहुंचा है। व्यक्ति के निश्चय की दृढ़ता की मात्रा का अनुमान उसके मुट्ठियों के बन्द करने की दृढ़ता के स्तर से ही लगाना चाहिए। मुट्ठियों का सहज भाव—कोमलता अथवा हल्केपन—से बन्द होना जहां व्यक्ति के दृढ़निश्चयी होने का सूचक है, वहां कसकर बन्द करना व अंगुलियों का हथेलियों पर कठोर दबाव पड़ना व्यक्ति के आवेशग्रस्त तथा किसी अप्रिय निश्चय लेने को विवश होने का भी सूचक है। इस प्रकार की मुद्रा के स्थूल रूप से दो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं—प्रथम, दृढ़ता उसकी चरित्रगत विशेषता है और वह इस स्थिति का अभ्यस्त है। द्वितीय, जितनी देर तक वह ऐसा सोचता है, उतनी देर तक ही उसके मन में संकल्प शक्ति स्थिर रहती है।

इसी प्रकार यदि आने वाला यजमान अपने हाव-भावों से शालीन लगता है, अपने बायें हाथ को सुरुचिपूर्ण ढंग से बाजू में रखे हुए है और दायें हाथ के अगले भाग को ऊपर उठाये और छाती पर रखे हुए है, उसकी कलाई और शनि, सूर्य व अंगुलियां शालीनता से मुड़ी और जुड़ी हुई हैं, जबकि बृहस्पति और बुध की अंगुलियां अलग-अलग तथा अन्य अंगुलियों के मध्य दूरी पर हैं (रेखाचित्र-5), तो ऐसे लक्षणों वाले व्यक्ति के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वह

कलात्मक गुणों से सम्पन्न है तथा अपने जीवन में सुन्दर एवं सुरुचिपूर्ण वस्तुओं से प्रेम करता है।

रेखाचित्र-5

यहां यह उल्लेखनीय है कि ऐसी भंगिमा पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में ही अधिक देखने को मिलती है। उपर्युक्त तत्त्व लक्षणों व गुणों से सम्पन्न तथा रहित व्यक्ति के विभाजक तत्त्व हैं। कलात्मक गुणों से रहित व्यक्ति के हाथ प्राय: निस्तेज, शिथिल एवं अप्रभावी होते हैं। उपर्युक्त हाथों वाला यजमान, अर्थात् गुण-सम्पन्न यदि स्त्री है, तो उसकी शालीनता और सुरुचि आदि गुणों की प्रशंसा करके उसे प्रभावित करना तथा फिर उसके हृदय तक पहुंचना कठिन नहीं होता।

हस्तरेखाशास्त्री को यह भली प्रकार स्मरण रखना चाहिए कि ऐसी मुद्रा अथवा भंगिमा कलात्मक रुचि के विशिष्ट परिवारों द्वारा परम्परा से अपनायी जाती है, जिसका अर्थ है कि ऐसे लोग शिष्ट, कुलीन और सम्भ्रान्त वर्ग के होते हैं। अत: उनके सम्बन्ध में मुख खोलने से पूर्व हस्तरेखाविद् को इस वर्ग के आचार-विचारों, मान्यताओं, धारणाओं तथा रीति-रिवाजों की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए, तभी वह अधिकृत रूप से कुछ कहने और अपने विषय के प्रति न्याय करने में समर्थ होता है (रेखाचित्र-6)।

यदि आने वाला व्यक्ति ठुमक-ठुमक कर चलता है, बायें हाथ को पेट के आस-पास तथा कलाई से झूलता हुआ रखता है, बाजू को शिथिल तथा ऊपर की

ओर किये रहता है, दायें हाथ को कलाई से ढीला और लटकाकर रखता है, आंखों पर चश्मा अथवा हाथों में दूरबीन लिये लचक कर चलता है, तो ऐसा व्यक्ति प्राय: अत्यन्त संवेदनशील, शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाला तथा स्त्रैण प्रवृत्ति का होता है। इन गुणों वाली स्त्रियां स्त्रीत्व के गुणों—सहज द्रवित होना, भीरुता तथा करुणा व ममता आदि—को उनके विकसित एवं गहरे रूप में लिये रहती हैं। प्राय: ऐसी स्त्रियों में स्त्रियोचित गुण—भीरुता, कातरता तथा उदारता आदि—साधारण रूप में ही मिलते हैं। ऐसी स्त्रियों को पुरुष प्रकृति की भले ही न माना जाये, परन्तु स्त्रियों का आदर्श प्रतिनिधि भी नहीं माना जा सकता। हां, यह अवश्य है कि असामान्य परिस्थिति में ऐसी स्त्रियां परिवार के लिए उपयोगी सिद्ध होती हैं। पुरुषोचित गुण लिये रहने वाली स्त्रियां साहसी एवं धैर्यशील होती हैं। न वे शीघ्र विचलित होती हैं और न ही निराश एवं हतोत्साहित होती हैं।

रेखाचित्र-6

ऐसे यजमान—जिसके हाथों को विश्राम के लिए स्थान नहीं मिल पाता, वह कभी अपनी हाथों को ऊपर उठाता है, तो कभी नीचे गिराता है या फिर कभी जेब में डालता है और जेब में पड़ी किसी वस्तु—घड़ी की चेन आदि—को टटोलने लगता है—के सम्बन्ध में निस्संकोच कहा जा सकता है कि वह अनिश्चित उद्देश्य तथा अस्थिर एवं अनियन्त्रित मनोभावों वाला व्यक्ति है (रेखाचित्र-7)।

हस्तरेखाशास्त्री को यह विदित होना चाहिए कि सही दिशा-निर्देश मिलने पर

ऐसे व्यक्ति प्रायः दृढ़चरित्र के सिद्ध होते हैं। अतः यदि वह चाहे, तो अपने यजमान का पथ-प्रदर्शन कर यश व धन कमा सकता है।

रेखाचित्र-7

किसी से टकराने से बचने के प्रयास की मुद्रा में अपने हाथों को शरीर के आगे अथवा थोड़ा-सा बग़ल में रखने वाला, किसी वस्तु के छू जाने की आशंका के

रेखाचित्र-8

उत्पन्न होते ही उन हाथों को तत्काल समेट लेने वाला, अंगुलियों के पोरों के ऊपर दृष्टि रखने व भ्रमण करते प्रतीत होने वाला व्यक्ति प्रायः सन्देहशील और प्रत्येक विषय में शंका-संशय करने वाला, प्रत्येक वस्तु एवं व्यक्ति की तह तक पहुंचने वाला व उसकी थाह लेने वाला होता है।

यदि आने वाला व्यक्ति हस्तरेखाशास्त्री के चेहरे पर, कमरे की साज-सज्जा पर, छत या फ़र्श पर, दरवाज़ों व खिड़कियों पर दृष्टि गड़ाने वाला अथवा किन्हीं छिपी वस्तुओं की खोज में लगा रहने वाला हो तथा साथ ही उसके हाथ भी इधर-उधर हिल-डुल रहे हों, (रेखाचित्र-8) तो ऐसे व्यक्ति को सतर्क, चौकसी बरतने वाला तथा स्पष्ट सुनने-जानने की प्रकृति वाला समझना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को अपने स्पष्ट व्यवहार से सहज ही प्रभावित किया जा सकता है।

अपने हाथों की अंगुलियों में रूमाल को लपेटते-खोलते, कपड़ों पर लगे बटन, चाबी के छल्ले अथवा घड़ी की चेन आदि किसी वस्तु से खेलते हुए कमरे में प्रवेश करने वाले ग्राहक (रेखाचित्र-9) को अधीर, व्यग्र, शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाला तथा अस्थिर प्रकृति का समझना चाहिए।

रेखाचित्र-9

अपने दोनों हाथों को सहज रूप से सामने की ओर किये और एक-दूसरे से पकड़े तथा अत्यन्त शालीन ढंग से आने वाले ग्राहक (रेखाचित्र-10) शान्त, सौम्य और सन्तुलित प्रकृति की महिलाओं से भी सामान्य स्थिति में कहीं आगे बढ़े हुए ही

नहीं होते, अपितु असामान्य स्थिति में भी उत्तेजित न होने वाले तथा धैर्य को न छोड़ने वाले होते हैं। उनका चिन्तन स्थिर होता है, परन्तु वे शीघ्रता में कोई निर्णय नहीं लेते। ऐसे ग्राहक समय व धैर्य की अपेक्षा रखते हैं। इन्हें पर्याप्त समय देने तथा शीघ्रता किये बिना अपनी बात समझाने पर भली प्रकार प्रभावित किया जा सकता है, अन्यथा इनका कथन यही होगा—वह कदाचित् सत्य कह रहा था, परन्तु हमारी समझ में तो कुछ भी नहीं आया।

रेखाचित्र-10

कसी हुई मुट्ठियां, झुकी हुई कोहनी, कमान की तरह बाहें लिये हुए आने वाला व्यक्ति (रेखाचित्र-11) उत्साही होने के साथ-साथ दम्भी प्रकृति का भी होगा। उसकी रुचि खेल-कूद—कुश्ती, हाकी, क्रिकेट आदि—में अधिक होगी। ऐसा व्यक्ति स्पष्ट और सुनिश्चित कथन को महत्त्व देने वाला होता है।

दोनों हाथों को धोने की मुद्रा में मलते हुए अथवा मालिश की मुद्रा में एक हाथ से दूसरे हाथ को रगड़ते-मसलते हुए प्रवेश करने वाला व्यक्ति (रेखाचित्र-12) धूर्त, चतुर, ढोंगी और अविश्वसनीय प्रकृति का होता है। ऐसे व्यक्ति को खरी-खरी सुनाने और उसके साथ धूर्तता बरतने से ही प्रभावित किया जा सकता है।

बड़े ही गर्व से अपने बायें हाथ को बाजू में रखे, अंगुलियों को हलके-से बन्द किये, दायें बाजू को कोहनी पर मोड़े अथवा पेट पर तिरछा सटाये तथा हलकी-सी बन्द अंगुलियों वाली हथेली को ऊपर किये (रेखाचित्र-13) आने वाले व्यक्ति को

दम्भी, पाखण्डी और अपनी महत्ता के अहंकार से ग्रस्त समझना चाहिए। ऐसे व्यक्ति दूसरों से घनिष्ठता तो क्या, मेलजोल तक पसन्द नहीं करते। वह हस्तरेखाशास्त्री से केवल अपने मन को पसन्द आने वाली झूठी अथवा चाटुकारिता-भरी बातें सुनना पसन्द करते हैं।
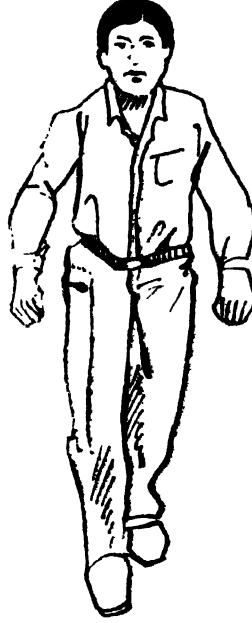
रेखाचित्र-11

रेखाचित्र- 12
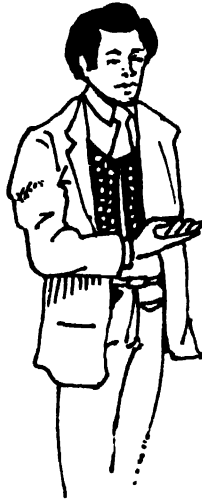
रेखाचित्र-13

एक अन्य व्यक्ति अपने भारी-भरकम हाथों को इस स्तर तक ढीले-ढाले ढंग

रेखाचित्र-14

से लटकाये हुए आता है मानो उसके हाथ जीवित व्यक्ति के हाथ न होकर मृत व्यक्ति

के हों। (रेखाचित्र-14) ऐसे व्यक्ति को मानसिक रूप से मृत ही समझना चाहिए। ध्यान से देखने पर वह व्यक्ति भावशून्य दृष्टि से हस्तरेखाविद् को अपनी ओर ताकता मिलेगा। ऐसा व्यक्ति अपने विषय में नहीं, अपितु केवल अपने भाई के विवाह होने-न होने, उसके बच्चों की संख्या, आयु तथा धनी होने आदि के विषय में भी जानने को उत्सुक होगा। ऐसे व्यक्ति से अधिक बातचीत करना निरर्थक होता है।

रेखाचित्र-15

अपने हाथों को पीछे की ओर बांधकर आने वाले ग्राहक (रेखाचित्र-15) की आंखें कुछ खोजती-सी मिलेंगी। ऐसा व्यक्ति जहां कुछ अधिक चौकस होता है, वहां वह भयग्रस्त एवं शंकालु भी होना है। वह अपना हाथ दिखाने से पहले आश्वस्त होना चाहता है। अत: ऐसे व्यक्ति का विश्वास शिष्ट एवं मधुर व्यवहार द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हाथों की विभिन्न मुद्राएं व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव और दृष्टिकोण की परिचायक होती हैं। यदि हस्तरेखाविशेषज्ञ हाथों की मुद्राओं का गहराई से अध्ययन करता है, तो उसे अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति का विश्लेषण करने और उसके सम्बन्ध में कुछ कहने में बड़ी सुविधा होगी। तब हस्तरेखाविद् न केवल अपने ग्राहक को प्रभावित कर सकेगा, अपितु उसके विश्वास को जीतने में भी सफल हो सकेगा।

*

4

हस्तपरीक्षण के लिए प्रारम्भिक अपेक्षाएं
(त्वचा का स्वरूप)

पिछले अध्याय में हाथों की विभिन्न मुद्राओं व स्थितियों से व्यक्ति के व्यक्तित्त्व को समझने-परखने की विद्या से परिचित हो जाने के उपरान्त उसके सर्वोत्तम परिणाम को पाने के लिए हस्तरेखाविद् को सर्वप्रथम परिवेश की अनुकूलता— आने वाले ग्राहक के लिए सुखद वातावरण, प्रकाश, स्वच्छता तथा सुविधाजनक आसन के अतिरिक्त खुले हुए कमरे आदि—का होना आवश्यक है। हस्तरेखाओं के सूक्ष्म अध्ययन के लिए प्रकाश की समुचित व्यवस्था का होना भी अनिवार्य है। दिन के प्रकाश अथवा रात्रि में विद्युत् के प्रकाश के होने पर भी मैग्नीफ़ाइंग ग्लास का प्रयोग वाञ्छनीय रहता है। नेत्र-ज्योति के तीव्र और प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था होने पर भी हाथों की सूक्ष्म रेखाओं के समुचित निरीक्षण-परीक्षण के लिए मैग्नीफ़ाइंग (छोटी वस्तुओं को बड़ा आकार देने वाला शीशा) ग्लास का प्रयोग वाञ्छनीय रहता है। दिन के उज्ज्वल प्रकाश में हाथ की त्वचा जिस साफ़-सुथरे रूप में सामने आती है, वैसी विद्युत् के प्रकाश में सम्भव नहीं। अत: यदि सम्भव हो, तो दिन के उजाले में ही हाथ की त्वचा और रेखाओं का अध्ययन-परीक्षण करना चाहिए। हाथों की संवेदनशील रेखाओं के अध्ययन के लिए लैंस के प्रयोग में संकोच नहीं करना चाहिए। इससे बाह्य रेखाओं का रूप ले रही अस्पष्ट रेखाओं की खोज का कार्य सम्भव हो सकेगा। वस्तुत: मनोभावों के प्रारम्भिक विकास की सूचक ये रेखाएं व्यक्ति के जीवन की गहराई को मापने में सहायक होती हैं।

यहां इस तथ्य को दोहराना अनुचित न होगा कि हस्तरेखाओं के सूक्ष्म, गहन एवं सटीक अध्ययन के लिए उज्ज्वल प्रकाश की पर्याप्त एवं समुचित व्यवस्था का होना अनिवार्य है। इसके लिए दिन का समय ही सर्वथा उपयुक्त रहता है। यही कारण है कि विवेकशील हस्तरेखाविद् रात्रि के विद्युत् प्रकाश में अपना व्यवसाय ही नहीं करते।

निष्कर्षत: खुला, स्वच्छ एवं व्यवस्थित भवन, सुविधाजनक आसन तथा

पर्याप्त प्रकाश, अर्थात् समग्रत: अनुकूल परिवेश हस्तरेखाओं के अध्ययन के लिए प्रथम अपेक्षित आवश्यकता है। तामपान के सहज होने की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इस अनुकूल स्थिति में हस्तरेखाविद् को अपने यजमान के दोनों हाथों की पहले अलग-अलग व फिर एक साथ मिलाकर जांच करने के उपरान्त ही कोई निष्कर्ष निकालना चाहिए।

केवल एक हाथ को देखकर किसी निर्णय पर पहुंचने से कभी-कभी असफलता का मुंह देखना पड़ता है। उदाहरणार्थ, व्यक्ति की आयु और उसके बढ़ने के फलस्वरूप उसके जीवन में आने वाले परिवर्तन का संकेत दायें हाथ में रहता है। जहां बायां हाथ व्यक्ति के मूल रूप को दर्शाता है, वहां दायां हाथ व्यक्ति के विकास को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार व्यक्ति के दोनों—मूल और विकसित—रूपों को समझने के लिए दोनों हाथों का परीक्षण अपेक्षित है। इससे उसके उत्थान अथवा पतन को समझा जा सकता है। मैंने इस विषय का गहन अध्ययन किया है और इस सम्बन्ध में अनेक हाथों को देखा है। मैंने मूलरूप में समर्थ पुरुषों को पिछड़ा हुआ और इसके विपरीत दुर्बल पुरुषों को उन्नति के शिखर पर पहुंचा हुआ पाया है। इस प्रकार जहां बायां हाथ व्यक्ति के मूलरूप का सच्चा प्रतिबिम्ब है, वहीं दायां हाथ उपलब्ध सुविधाओं एवं क्षमताओं के सही-ग़लत उपयोग और उनके परिणाम का सजीव एवं मुखर दर्पण है।

कतिपय हस्तरेखाशास्त्री बायें हाथ को हृदय के अत्यधिक निकट होने तथा अधिक रेखाओं वाला मानकर उसके अध्ययन को विशेष महत्त्व देते रहे हैं, परन्तु यह धारणा सही नहीं है। सत्य तो यह है कि हृदय का सम्बन्ध दोनों ही हाथों से है और दोनों ही हाथों का अध्ययन में समान महत्त्व भी है। सामान्यत: सभी व्यक्तियों का दायां हाथ सक्रिय और बायां हाथ निष्क्रिय रहता है। बायें हाथ से काम लेने वाले लोग अपवाद हैं, उनका बायां हाथ ही सक्रिय रहता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक व्यक्ति का सक्रिय रहने वाले हाथ पर ही वर्तमान रूप का लेखा-जोखा रहता है, जबकि निष्क्रिय हाथ उसके प्रकृतिप्रदत्त वरदानों को लिये रहता है। अत: व्यक्तित्त्व की समग्र जानकारी के लिए दोनों हाथों का एक साथ तथा पृथक्-पृथक् अध्ययन करना ही अपेक्षित होता है।

हाथों के अध्ययन में त्वचा के रूप-रंग की जानकारी अपना एक विशेष महत्त्व रखती है। मानव-त्वचा किसी फल के छिलके अथवा सांप की केंचुली की भांति उतारी जा सकने वाली नहीं। यह तो उस मोटे चमड़े के समान है, जिससे जूते बनाये जाते हैं। मानव-त्वचा के दो रूप होते हैं—

(1) स्थूल कोशिकाओं को लिये रहने वाली साफ़ और कोमल त्वचा।

त्वचा का यही रूप—कोमलता तथा कठोरता—उसका रूप-रंग कहलाता

है। उत्तम, कोमल एवं स्वच्छ त्वचा वाला व्यक्ति सुसंस्कृत, संवेदनशील तथा उत्तम प्रकृति का होता है।
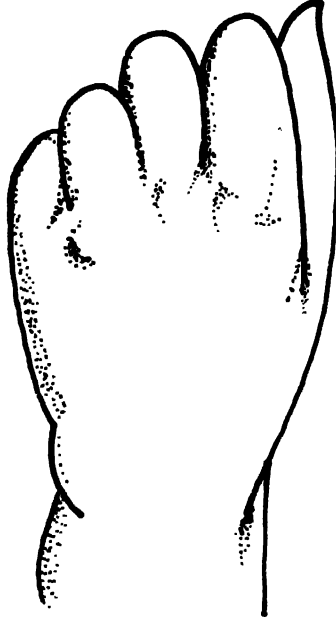
रेखाचित्र-16

(2) रूखी, खुरदरी तथा कठोर त्वचा।

ऐसी त्वचावाला व्यक्ति तुच्छ, अधम, पशु के स्तर पर एवं निकृष्ट आचरण करने वाला होता है (रेखाचित्र-16)।

हस्तरेखाशास्त्री को व्यक्ति की त्वचा की आकृति-प्रकृति के आधार पर उसके व्यक्तित्त्व को तत्काल भांप लेना चाहिए। उसे यह निश्चित रूप से समझ लेना चाहिए कि व्यक्ति के उत्तम आचरण तथा निकृष्ट-उत्कृष्ट गुणों एवं दोषों व अधम आचरण के अनुरूप ही त्वचा कोमल एवं कठोर रूप धारण करती है। इस कोमलता और कठोरता के विकास के विभिन्न स्तर होते हैं, जिन्हें भली प्रकार से समझने पर ही हस्तरेखाविद् अपने विषय के प्रति न्याय कर सकता है।

हस्तरेखाविद् त्वचा को आधार बनाकर व्यक्ति के परिवार अथवा उसकी प्रकृति आदि का निर्णय भी कर सकता है; क्योंकि मानव के चरित्र-निर्माण में ग्रहों की भी एक अपनी भूमिका अथवा योगदान रहता है। उदाहरणार्थ—

● शनिप्रधान व्यक्ति स्वभाव मे चिडचिड़ा, खिन्न तथा अवसादग्रस्त रहने

वाला होता है।

● बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति अल्पभक्षी, सभ्य तथा सुशील होता है।

● सूर्यप्रधान व्यक्ति सौन्दर्यप्रिय, स्थिर व निश्चल प्रेमी तथा उदात्त प्रकृति का होता है।

● बुधप्रधान व्यक्ति परिष्कृत रुचि का, गुणसम्पन्न, सदाचारी तथा निश्छल स्वभाव का होता है।

● मंगलप्रधान व्यक्ति में अक्खड़पन, फूहड़पन आदि लड़ाकू प्रवृत्तियां होती हैं।

● चन्द्रप्रधान व्यक्ति की कल्पनाशीलता चरम शिखर पर होती हैं।

● शुक्रप्रधान व्यक्ति इतना सुशील होता है कि वह कामोन्माद आदि प्रवृत्तियों का शिकार हो ही नहीं पाता।

इस प्रकार व्यक्ति के चरित्र के परिवर्तन और उसकी जानकारी में त्वचा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। त्वचा के रूप-रंग में आने वाला परिवर्तन व्यक्ति के न केवल स्वभाव और चरित्र में आये परिवर्तन का सूचक होता है, अपितु इस परिवर्तन के लिये उत्तरदायी ग्रह से सम्बन्धित जानकारी भी देता है। त्वचा की कठोरता, रूखापन तथा खुरदरेपन की जानकारी हाथ की अंगुलियों को हाथ के पीछे की खाल पर घुमाने-फिराने से प्राप्त की जा सकती है। कठोर त्वचा में जहां बड़ी-बड़ी कोशिकाएं होती हैं, वहां ऐसी त्वचा स्पर्श के प्रति संवेदनशील नहीं होती। हाथ की त्वचा का खुरदरापन इस तथ्य का स्पष्ट संकेत होता है कि व्यक्ति का सभ्यता और शालीनता से दूर का भी कोई सम्बन्ध नहीं। श्रमिकों—माली, कुम्हार, लोहार तथा बढ़ई आदि के हाथों की त्वचा का प्राय. ऐसा ही रूप देखने को मिलेगा। इस प्रकार की त्वचा वाले व्यक्ति को अपने धन्धे के घटिया होने की सोचने का अवकाश ही नहीं। सत्य तो यह है कि यदि इन्हें सुविधाजनक कार्य सौंप दिया जाये, तो ये ठीक उसी प्रकार दुखी हो जायेंगे, जिस प्रकार गाड़ी खींचने के कार्य में लगाये जाने पर सुशिक्षित लोग विचलित हो उठते हैं (रेखाचित्र-17)।

त्वचा का यह रूप—खुरदरापन एवं कठोरता—व्यक्ति में उदात्त गुणों—उदारता, शालीनता तथा संवेदनशीलता आदि—के अभाव का द्योतक है। त्वचा का यह रूप—

बृहस्पति प्रकार के व्यक्तियों को धृष्ट और निरंकुश,

शनि प्रकार के व्यक्तियों को अन्धविश्वासी, निराशावादी, कृपण तथा मैला रहने वाला,

सूर्य प्रकार के व्यक्तियों को अभद्र एवं उद्धत,

बुध प्रकार के व्यक्तियों को निम्न स्तर का षड्यन्त्रकारी,

रेखाचित्र-17

मंगल प्रकार के व्यक्तियों को आक्रामक,

चन्द्र प्रकार के व्यक्तियों को निकृष्ट स्तर के कल्पनाजीवी तथा

शुक्र प्रकार के व्यक्तियों को नितान्त अशिष्ट, अभद्र तथा अशालीन बना देता है।

इस प्रकार कठोर त्वचा व्यक्ति के पशु के स्तर तक निकृष्ट स्वभाव की द्योतक होती है, जबकि इसके विपरीत कोमल त्वचा चरित्र की साधुता का स्पष्ट और सही प्रमाण होती है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि अधिकांश व्यक्तियों की त्वचा उपर्युक्त दोनों प्रकार—कोमल और कठोर—की त्वचाओं की मध्यवर्ती—अर्थात् न तो एकदम कोमल और न ही एकदम कठोर—होती है। ऐसी त्वचा को मध्यम (कोमल को उत्तम और कठोर को अधम मानने के कारण) माना जाता है। ऐसी त्वचा लचीली होने पर भी नरम नहीं होती। सुदृढ़ होने पर भी खुरदरी नहीं होती (रेखाचित्र-18)। सफल उद्यमी, वकील, डाक्टर तथा पुरोहिताई-जैसे व्यवसायों से जुड़े लोगों के हाथों की त्वचा मध्यम स्तर की ही होती है। त्वचा का यह रूप जहां पुरुषों में

परिष्कृत रुचि और आदर्श चरित्र का द्योतक है, वहां स्त्रियों में सौन्दर्य और शालीनता का सूचक है। वस्तुत: त्वचा का यह मध्यवर्ती रूप न केवल दोनों चरम-सीमाओं में सन्तुलन स्थापित करता है, अपितु पर्वतों की सभी सामान्य विशेषताओं का समर्थन भी करता है। हस्तरेखाविद् को त्वचा के इन तीनों रूपों को पहचानने में किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। त्वचा के परीक्षण में सहायक अंगुलियों के जोड़ों के आन्तरिक रूप को समझना भी आवश्यक है।
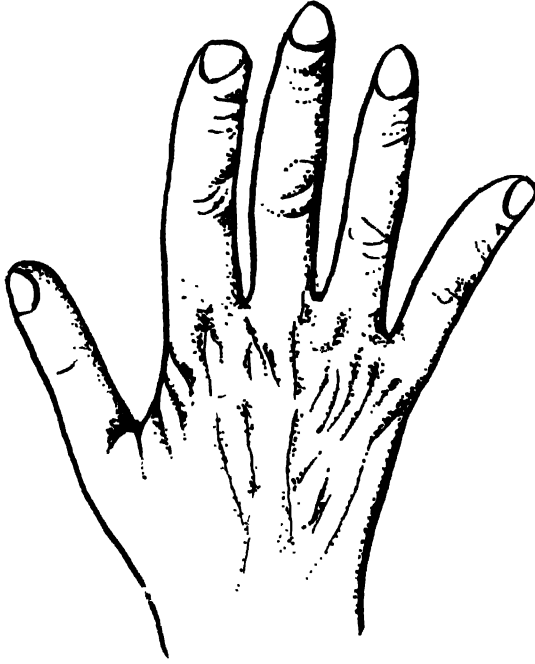
रेखाचित्र-18

अनेक व्यक्तियों के हाथों में मांस की गद्दी—कुछ हाथों में बहुत ही स्पष्ट—होती है (रेखाचित्र-19)। स्नायुतन्तुओं से बनी यह गद्दी अंगुलियों के सिरे पर होती है, जो व्यक्ति के संवेदनशील, आस-पास के परिवेश में गहरा लगाव रखने वाला, अवाञ्छनीय अथवा अप्रिय व्यवहार को अपमान मानकर अपने को आहत अनुभव करने वाला तथा दूसरों को किसी प्रकार का कोई दु:ख-कष्ट न देकर स्वयं सब कुछ सहने वाला होता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये सभी लक्षण व्यक्ति के उत्तम होने के सूचक हैं। इस सन्दर्भ में हस्तरेखाविद् को यह स्मरण रखना चाहिए कि व्यक्ति के हाथों की अंगुलियों के सिरों पर गद्दी अथवा गद्दियां जितनी अधिक
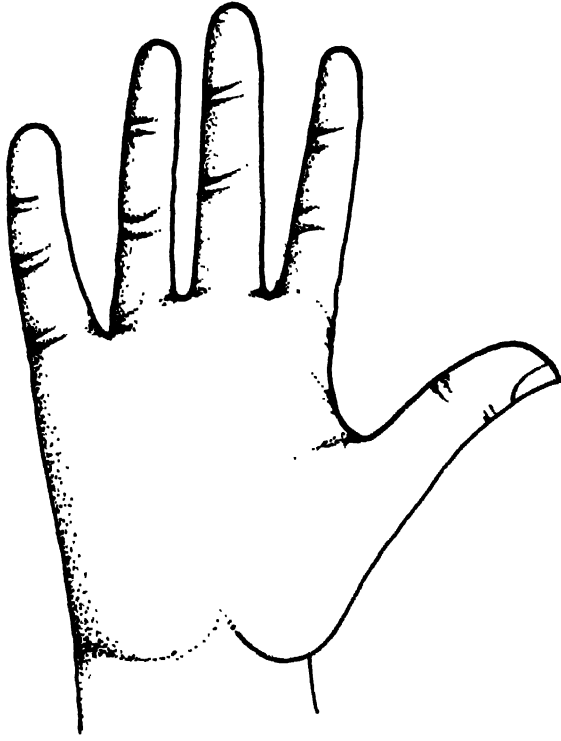
रेखाचित्र-19

विकसित होंगी, व्यक्ति उतना ही अधिक गुणी एवं उत्कृष्ट प्रकृति का होगा। *

5

हाथों की स्थिति

अपने यजमान के हाथों का परीक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व हस्तरेखाविद् को उसके ऊर्जाकोष से परिचित होना आवश्यक है; क्योंकि प्रतिभाशाली और प्रतापी व्यक्ति के भी आलसी होने पर उसके गुणों का समुचित विकास नहीं हो पाता। अत: हस्तरेखाशास्त्री को सर्वप्रथम अपने ग्राहक के हाथों को दबाकर उनकी कोमलता अथवा कठोरता की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। इसके लिए अध्येता को ग्राहक के दोनों हाथों को दृढ़ता से पकड़ना चाहिए। हाथों के छोटा होने पर अपनी अंगुलियां उन पर कस देनी चाहिए और प्रतिरोध होने तक हाथों को भींचते रहना चाहिए। इससे दबाव के विरुद्ध उठने वाली प्रतिरोधकशक्ति की मात्रा का अनुमान हो जायेगा। अब अपनी पकड़ को ढीला कर देना चाहिए और साथ ही अपनी अंगुलियों से ग्राहक की हथेलियों के केवल कोमल स्थानों को तब तक कसकर दबाना चाहिए, जब तक हाथ की मांसपेशियों की कठोरता अथवा कोमलता का कसाव अथवा शिथिलता का तथा प्रतिरोधकशक्ति का सही-सही तथा पूरा-पूरा अनुमान न हो जाये।

यह सत्य है कि हाथों की कठोरता और कोमलता का कुछ-न-कुछ सम्बन्ध धन्धे के साथ-साथ अथवा व्यसन (hobby) से भी है। उदाहरणार्थ, मनोरंजन अथवा व्यायाम के लिए साईकल और नौका चलाने वालों तथा गॉल्फ-क्रिकेट आदि खेलने वालों के हाथ कठोर हो सकते हैं, जबकि यह कठोरता कृत्रिम होती है; क्योंकि ऐसे लोग व्यवसाय-धन्धे के रूप में किसी प्रकार का कोई कठोर श्रम नहीं करते। अत: उनके हाथों की कठोरता को उनकी जन्मजात विशेषता समझना एक भारी भूल होगी।

हाथों की सामान्य अवस्था को मोटे तौर पर चार भागों में बांटा जा सकता है—

(1) शिथिल हाथ,

(2) कोमल हाथ,

(3) लचीले हाथ तथा

(4) कठोर हाथ।

इनका विवेचन इस प्रकार है।

शिथिल हाथ

हस्तरेखाविद् द्वारा जिन हाथों को अपनी अंगुलियों से कसकर पकड़ने पर किसी प्रकार की विरोधी-प्रतिरोधी प्रतिक्रिया नहीं होती, क़सकर भींचने से मांस और हड्डियां पिसती-सी प्रतीत होती हैं, यहां तक कि ऐसा लगता है कि यदि थोड़ा-सा भी अधिक दबाया गया, तो मांस अंगुलियों के बीच से बाहर निकल आयेगा, ऐसे हाथों को दुर्बल और कोमल समझना चाहिए।

ऐसा व्यक्ति स्वप्नजीवी, आलसी, सुख-सुविधाओं को पाने का अभिलाषी, परन्तु श्रम से जी चुराने वाला, यहां तक कि श्रम करने की अपेक्षा गन्दगी में रहने व अभाव को झेलने वाला होता है।

ऐसे व्यक्ति के हाथ के सूर्य पर्वत पर विद्यमान स्पष्ट रेखाएं उसकी प्रतिभा और सृजनक्षमता की द्योतक हैं, परन्तु उसके हाथ की शिथिलता उसके गुणों के विकास में बाधक बन जाती है, जिससे उसका व्यक्तित्व नाकारा हो जाता है।

शिथिल हाथ वाले व्यक्ति के बृहस्पति प्रकार का होने पर उसकी महत्त्वाकांक्षा को, सूर्य प्रकार का होने पर प्रतिभा एवं उपलब्धि को, बुध प्रकार का होने पर उसकी ऊर्जा को, मंगल प्रकार का होने पर उसकी युद्धप्रियता को, चन्द्र प्रकृति का होने पर उसकी कल्पनाशीलता को तथा शुक्र प्रकृति का होने पर उसकी सौन्दर्यप्रियता को ग्रहण लग जाता है। वस्तुत: व्यक्ति के हाथों की शिथिलता उसे सर्वथा निष्क्रिय बना देती है।

कोमल हाथ

ग्राहक का कोमल हाथ पिलपिला न होने पर भी हस्तरेखाशास्त्री को अपेक्षाकृत कोमल अवश्य लगेगा। हां, स्त्रियों के ढीले-ढाले और पिलपिले हाथों को कोमल हाथ समझने की भूल से बचना आवश्यक है। हस्तरेखाशास्त्री को इस तथ्य को सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि सामान्यत: स्त्रियों के हाथ पुरुषों के हाथों की अपेक्षा कोमल ही होते हैं। वास्तविकता को जानने के लिए हाथों को दबाना और शिथिल हाथ से भिन्नता को समझना अपेक्षित है। विभिन्न हाथों को दबाने से होने वाली भिन्न-भिन्न प्रकार की अनुभूति को ध्यान में रखने से इस सम्बन्ध में अभ्यास हो जाना निश्चित है।

सामान्यत: यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि कोमल हाथ वाला व्यक्ति शक्तिसम्पन्न होने पर भी आलसी और निष्क्रिय होता है। उसे उत्साहित करके

उसकी शक्ति को विकसित किया जा सकता है, जबकि शिथिल यानी पिलपिले हाथ वाले व्यक्तियों पर प्रोत्साहन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। दोनों में अन्तर जानने के लिए इस प्रयोग को भी आज़माया जा सकता है।

लचीले हाथ

जिन हाथों की अंगुलियों को दबाने पर रबड़ को दबाने के समान लचीलेपन और सजीवता के अतिरिक्त प्रतिरोध का अनुभव ही, उन्हें लचीले हाथ समझना चाहिए। ऐसे हाथ शिथिल अथवा कोमल हाथों के समान स्पञ्जी नहीं होते, अपितु लचीले होते हैं। किसी सफल व्यापारी, प्रगतिशील व्यवसायी अथवा कर्मठ कर्मचारी के हाथों को दबाने से इस तथ्य का प्रत्यक्ष अनुभव हो जाता है। वस्तुतः लचीले हाथों में उत्साह, ऊर्जा, जीवन्तता और स्फूर्ति होती है। ऐसे हाथों वाले व्यक्तियों को प्रेरणा-प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं रहती। आलस्य तो उनके समीप फटकता तक नहीं। यह ठीक है कि वे अपने को थकाने के स्तर तक श्रम नहीं कर पाते परन्तु पर्याप्त सुख-सुविधाओं को पाने के लिए आवश्यक श्रम करने के अभ्यस्त अवश्य होते हैं। उनकी प्रवृत्ति सदा आगे बढ़ने की होती है और वे अपनी सफलता के प्रति आश्वस्त भी होते हैं।

वर्गाकार अग्रभाग वाली अंगुलियां होने पर लचीले हाथ यथार्थवादी, चमचाकार लचीले हाथ क्रियाशील, नुकीले व लचीले हाथ उत्साही तथा आदर्शवादी होते हैं।

बृहस्पति की प्रधानता व्यक्ति को महत्त्वकांक्षी, शनि की प्रधानता तुनक-मिज़ाजी, सूर्य की प्रधानता धनोपार्जन की प्रवृत्ति वाला, बुध की प्रधानता चतुर व सफलता की ओर ले जाने वाली, मंगल की प्रधानता व्यक्ति को बड़े कार्य कराने वाली और शान्त प्रकृति चन्द्र की प्रधानता उसे कलाप्रेमी तथा शुक्र की प्रधानता उसे शालीन व सफल प्रेमी बनाने वाली होती है।

निष्कर्षतः लचीले हाथों वाले व्यक्ति संसार में मेधावी एवं सक्रिय होने के कारण सफल एवं यशस्वी सिद्ध होते हैं। ऐसे लोगों के सभी कार्य सुनियोजित होने से फलदायी होते हैं।

कठोर हाथ

प्रायः कम समझदार तथा थोड़ी बुद्धि वाले लोगों के हाथ कठोर होते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि समाज का बहुत बड़ा वर्ग इस श्रेणी में आता है और इस वर्ग की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। उल्लेखनीय यह है कि कठोर हाथ वाले लोगों के केवल हाथ ही कठोर नहीं होते, अपितु उनकी त्वचा भी मोटी व खुरदरी होती है। ऐसे हाथों पर किसी दबाव तथा कसाव का कोई प्रभाव नहीं पडता।

कठोर हाथ कर्मठता और कठोर श्रम के सजीव उदाहरण होते हैं। उनके लिए शारीरिक श्रम सामान्य क्रिया होती है। हां, उनका मस्तिष्क अवश्य जड़ होता है, जिससे वे किसी नये विचार, नयी स्थिति तथा नये परिवेश को ग्रहण करने के लिए सहसा उद्यत नहीं हो पाते। इस रूप में वे कोमल हाथ वाले व्यक्तियों के समान गतिशील एवं परिवर्तनप्रिय न होकर रूढ़िवादी एवं स्थिर प्रकृति के होते हैं। वे दूसरों से काम ले नहीं सकते। हां, दूसरे उनसे ख़ूब काम ले सकते हैं।

यहां इस तथ्य को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए कि कोमल अथवा लचीले हाथों और कठोर हाथों की मध्यवर्ती अनेक स्थितियां भी हो सकती हैं। इसके लिए अनुसन्धान और अध्ययन ही अपेक्षित है। हस्तरेखाशास्त्री का अनुभव भी उसके लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है। इस प्रकार अनुसन्धान, अध्ययन और अनुभव के आधार पर हस्तरेखाशास्त्री दोनों—कोमल और कठोर—के बीच की विभिन्न अवस्थाओं, अर्थात् समानताओं और विषमताओं को समझ सकता है और ठीक-ठीक भविष्यकथन कर सकता है। कठोर हाथ जहां सभी प्रभावों को नाकारा कर देते हैं, वहां आलस्य के वशीभूत कोमल हाथ भी अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सकते।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि जहां बायें हाथ के कोमल और दायें हाथ के कठोर पाये जाने का अर्थ व्यक्ति की कार्यशक्ति में वृद्धि का संकेतक है, वहां इसके विपरीत दायें हाथ के कोमल और बायें हाथ के कठोर पाये जाने का अर्थ व्यक्ति के आलसी हो जाने के कारण उसकी कार्यक्षमता का क्षीण हो जाना है। *

6

लचीले हाथ

लचीले हाथों के विभाजक तत्त्व अथवा लचीली वस्तुओं की कतिपय उल्लेखनीय विशेषताएं इस प्रकार से हैं—

(i) कठोर वस्तु की तुलना में लचीली वस्तु में विभिन्न स्थितियों के अनुरूप अपने को ढालने की विलक्षण क्षमता होती है।

(ii) जहां कठोर वस्तु दबाव से या तो टूट जाती है और/या अपनी स्थिति में अपरिवर्तित रहती है, वहां लचीली वस्तुएं दबाव से झुक जाती हैं।

(iii) हाथों के मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब होने के कारण लचीले और कठोर हाथ मस्तिष्क के क्रमशः लचीलेपन और कठोर रूप के सूचक होते हैं।

उपर्युक्त विशेषताओं के परिप्रेक्ष्य में यजमान का हस्तपरीक्षण करते समय उसकी मानसिक शक्तियों की जानकारी प्राप्त करना सरल-सुगम हो जाता है।

हाथ के लचीलेपन की कोटि निर्धारण करने के लिए उसे पीछे की ओर मोड़कर देखना चाहिए। हाथ जितनी अधिक सहजता से और जितना अधिक पीछे की ओर मुड़ जाता है, उसे उतना ही अधिक लचीला समझना चाहिए। हस्तरेखाविद् को अपने ग्राहक के हाथ को अपने बायें हाथ की हथेली पर रखकर उस पर दायें हाथ से नीचे की ओर दबाव डालना चाहिए और यथासम्भव पीछे की ओर मोड़ने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार दोनों हाथों के परीक्षण से यह निश्चित करना चाहिए कि पूरा हाथ लचीला है अथवा केवल जोड़ों से मुड़ता है। लचीला हाथ पूरे का पूरा मुड़ जाता है। इस परीक्षण से यह भी स्पष्ट हो जायेगा कि हाथ की अंगुलियां पैंतालीस डिग्री का कोण बनाती हुई पूरी-की-पूरी मुड़ जाती हैं अथवा मुड़ना तो दूर, सीधी भी नहीं होती हैं।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि प्रायः स्त्रियों के हाथ लचीले होते हैं। बहुत थोड़े अथवा विरले ही पुरुषों के हाथ लचीले मिलते हैं। हाथों का लचीलापन व्यक्ति के मस्तिष्क और स्वभाव के लचीलेपन—ग्राह्यता और तत्परता—का द्योतक है। इन दोनों विशेषताओं—ग्राह्यता और तत्परता अथवा उत्सुकता—का अर्थ है

परिवेश के अनुरूप अपने को ढालना, अपने चारों ओर की वस्तुओं को देखना तथा स्वयं को व्यक्त करने के लिए उद्यत रहना।

इस सन्दर्भ में लचीले हाथों को भली प्रकार समझने के लिए कठिनाई से खुलने वाले तथा वक्राकार, अर्थात् भीतर की ओर मुड़ी हुई अंगुलियों वाले कठोर हाथों की चर्चा अनुपयुक्त न होगी (रेखाचित्र-20)।

रेखाचित्र-20

कठोर हाथ

कठोर हाथ व्यक्ति के सावधान, दुराव-छिपाव, कायर और संकीर्ण प्रवृत्ति वाले मस्तिष्क का संकेत करते हैं। ऐसा व्यक्ति परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढाल नहीं पाता। अत: वह किन्हीं नये विचारों को ग्रहण करने से अथवा नये कार्य को अपनाने से कतराता है। वह परम्परावादी, अर्थात् लकीर का फ़कीर तथा यथास्थिति से सन्तुष्ट रहने वाला होता है। वह पूर्वजों से विरासत में प्राप्त धार्मिक तथा राजनीतिक विचारों से इस प्रकार जकड़ा होता है कि कोई भी तर्क उसे टस-से-मस नहीं कर सकता। उसे तो नयेपन से एक प्रकार की चिढ़-सी होती है। वह आज जैट के ज़माने में भी बैलगाड़ी की महत्ता का राग अलापता है। उसे तो वर्तमान में कुछ लोगों

के अपने काम-धन्धे में असफल रहने के पीछे उनका अतीत से नाता तोड़ना लगता है। उसके विचार में परम्परागत तौर-तरीक़ों को छोड़कर आज के तौर-तरीक़ों को अपनाने के कारण ही आज का मानव दुखी और अशान्त है। ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम तो करता है, परन्तु असफल हो जाने पर असफलता के कारणों का विश्लेषण न करके अपने उद्देश्य और उससे जुड़े लोगों—यहां तक कि जीवन की आवश्यकताओं—की ही उपेक्षा करने लग जाता है। वह अपने चिन्तन और व्यवहार में परिवर्तन न करके इस सम्बन्ध में मौन रहना ही अधिक पसन्द करता है। सत्य तो यह है कि वह टूटना पसन्द करता है, परन्तु परिवर्तन का पक्ष नहीं लेता। वह अपने मन के भेद को कभी किसी के सामने प्रकट करने अथवा हो जाने से घबराता है। अत: वह अपने धन को भी यथासम्भव छिपाकर रखता है।

हस्तरेखाशास्त्री को हाथों की कठोरता से व्यक्ति की इन चारित्रिक विशेषताओं का तथा इन विशेषताओं से व्यक्ति के हाथों की कठोरता का अनुमान लगाना चाहिए।
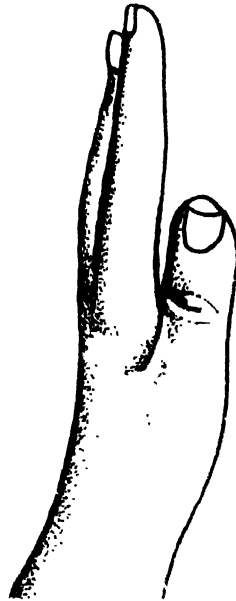
रेखाचित्र-21

पीछे की ओर दबाने पर अंगुलियों के स्वाभाविक रूप से सीधे होने तक आसानी से पूरे आकार में खुलते चले जाने वाले हाथ सामान्य विकसित हाथ

कहलाते हैं (रेखाचित्र-21)।

पीछे की ओर थोड़ा-सा मुड़ने वाले सामान्य विकसित हाथों के स्वामी सन्तुलित स्वभाव के होने के कारण अपने कार्य और व्यवहार में भी सन्तुलन के पक्षधर होते हैं, अर्थात् वे अतिवाद अथवा चरम सीमा के विरोधी होते हैं। वे अल्पभाषी, संयमी, आत्मनिर्भर, धैर्यवान् तथा उदार प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। वे परम्परा को उपयोगिता और अनुपयोगिता की कसौटी पर कस-परख कर ही अपनाते-छोड़ते हैं। वे न अत्यधिक उत्साही, न ही निराशावादी और न ही अन्धविश्वासी होते हैं। वे दूसरों की सहायता करने को आगे बढ़ने वाले होते हैं, परन्तु पात्र की परीक्षा को पर्याप्त महत्त्व देते हैं। वे पुरातन को छोड़ने और नये को ग्रहण करने में कोई संकोच नहीं करते। उनकी दृष्टि में उपयोगिता ही अच्छे-बुरे का निर्णायक तत्त्व है। ऐसे लोग संयमी, धीर-गम्भीर, व्यावहारिक एवं क्रियाशील होने के साथ-साथ विलक्षण ऊर्जा भी लिये रहते हैं।
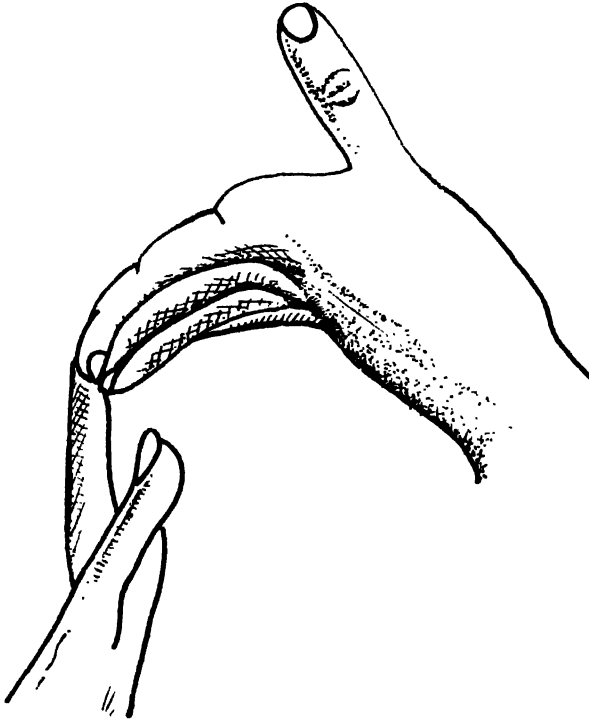
रेखाचित्र-22

कुछ व्यक्तियों के हाथ अत्यन्त लचीले होते हैं (रेखाचित्र-22)। ऐसे हाथों की अंगुलियां आसानी से (किसी प्रकार की पीड़ा अनुभव किये बिना ही) धनुष के आकार में पीछे की ओर इस प्रकार मुड़ जाती हैं, मानो हड्डियों में स्प्रिंग लगा हो,

जिससे अंगुलियां गतिशील हैं। इन हाथों को आगे-पीछे मोड़ने पर इनकी लचक देखने वालों को बहुत ही प्रभावित करती है।

हाथों की यह लचक व्यक्ति की सहजता, सरलता, परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढालने की क्षमता तथा नये विचारों को ग्रहण करने की तत्परता की द्योतक होती है। ऐसे व्यक्ति जहां बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते हैं, वहां सभी प्रकार के परिवेश में घुल-मिल जाने की विशेषता भी लिये रहते हैं।
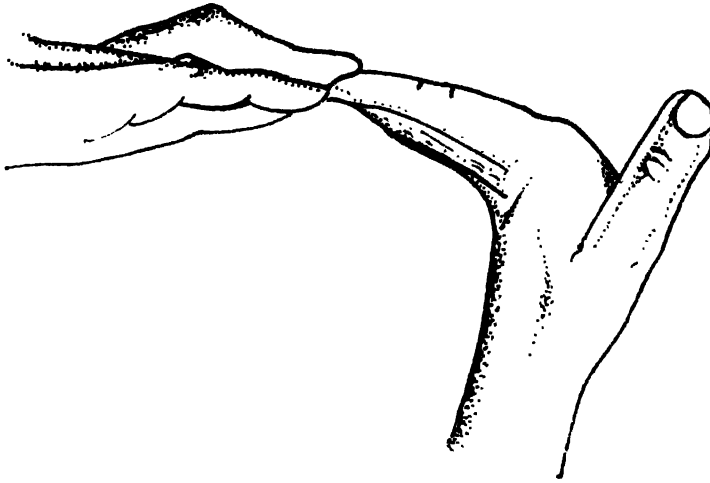
रेखाचित्र-23

यदि ऐसा गुणी व्यक्ति अपनी शक्तियों को विकेन्द्रित कर देता है, अर्थात् एक-साथ बहुत-सारे कार्य-व्यापार फैला देता है, तो उसे असफलता का ही सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति वस्तुतः अपनी संवेदनशीलता के कारण अपनी शक्तियों को केन्द्रित कर ही नहीं पाता। सहृदय और उदार होने के कारण वह केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के सन्दर्भ में ही धन को महत्त्व देता है। इसी से वह सञ्चित धन को दूसरों पर लुटाने में संकोच नहीं करता। ऐसा व्यक्ति नये विचारों को ग्रहण करने में तथा अपने कार्य को शीघ्रता से निपटाने को सदैव उद्यत रहता है। ऐसा उत्कृष्ट एवं विकसित मस्तिष्क वाला व्यक्ति विलक्षण उपलब्धियां प्राप्त कर सकता है, परन्तु अपनी शक्तियों को केन्द्रित न कर पाने के कारण बहुत कम लोग ही विश्व

को कुछ देने में सफल हो पाते हैं, (रेखाचित्र-23)।

इन व्यक्तियों की एक उल्लेखनीय विशेषता है—ध्यान दिलाये जाने पर अपनी ग़लतियों को स्वीकार करना तथा उनमें सुधार लाने का प्रयास करना।

अत्यन्त लचीले हाथ में उत्तम अंगूठे का अर्थ है—प्रतिभा में निखार ला सकना, आत्मसंयम और दृढ़संकल्प के साथ आगे बढ़ते हुए उन्नति के चरम शिखर पर पहुंच जाना।

अंगुलियों के केवल पहले लचीले जोड़े वाले, अर्थात् शेष भागों के सामान्य रूप वाले हाथ मिश्रित कहलाते हैं। ऐसे हाथ सभी अंगुलियों के कारण पूर्ण रूप से लचीले हाथों की तुलना में एक तिहाई लचीले होते हैं। मिश्रित हाथों की अंगुलियों का लचीलापन व्यक्ति के मानसिक गुणों का द्योतक होता है। हड्डी वाले जोड़ों पर पीछे की ओर मुड़ जाने वाली अंगुलियों वाले हाथ (रेखाचित्र-23) कार्य सम्पन्न करने में दक्ष होते हैं। प्रायः संगीत कला में निपुण व्यक्तियों के हाथ मिश्रित वर्ग के होते हैं। ऐसे हाथ व्यक्ति के लचीलेपन के साथ उसकी अपव्यय करने की प्रवृत्ति के सूचक भी होते हैं।

उपर्युक्त हाथों वाले व्यक्तियों को ढूंढना कोई कठिन कार्य नहीं होता, पुनरपि प्रथम प्रकार के (कठोर) हाथों के उदाहरण प्रायः अधेड़ आयु के किसान हैं और शेष प्रकारों (लचीले, अत्यन्त लचीले तथा अर्धलचीले) के उदाहरण तो सब कहीं मिल जाते हैं।

हस्तरेखाशास्त्री को दोनों हाथों का अत्यन्त सावधानीपूर्वक तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए। बायें हाथ के कठोर और दायें हाथ के लचीला पाये जाने पर व्यक्ति की मनःस्थिति में हो रहे सुधार का, उसके मस्तिक में आ रहे लचीलेपन का तथा कठोरता के त्याग की प्रवृत्ति को अपनाने का भी अनुमान लगाना चाहिए। इसके विपरीत बायें हाथ के लचीला और दायें हाथ के कठोर पाये जाने पर व्यक्ति की प्रतिभा में आ रहे ह्रास का अनुमान लगाना चाहिए। यह निश्चित समझना चाहिए कि ऐसा व्यक्ति कोमलता से कठोरता की ओर, अर्थात् उत्कृष्टता से निकृष्टता, उदारता से कृपणता, सरलता से चतुराई और सहजता से कृत्रिमता की ओर बढ़ रहा है। हस्तरेखाशास्त्री के इस तथ्य से परिचित हो जाने पर यह समझना कठिन नहीं होगा कि धन को पानी की तरह बहाने वाला यह व्यक्ति सहसा कृपण और एक-एक पैसे के लिए विवाद करने वाला कैसे बन गया। इस प्रकार दोनों हाथों की विशेषताओं से सम्यक् परिचित हो जाने के बाद ही उनमें आने वाले परिवर्तन का और तदनुरूप व्यक्ति के चरित्र के विकास-ह्रास का तुलनात्मक और सही विश्लेष्ण किया जा सकता है।

*

7

हाथों का रंग

मनुष्य के शारीरिक विकास की सामान्य अथवा विषम स्थिति को तथा मनुष्य के स्वस्थ अथवा अस्वस्थ होने को जांचने-परखने का सीधा आधार अथवा माध्यम उसके हाथों का रंग है। शरीर में आने वाले विकारों से निवृत्ति पाने के अनेक उपायों में से कुछ हैं—औषाधसेवन, मालिश, शल्य-क्रिया, बिजली लगवाना तथा स्नान आदि। वस्तुतः शरीर को स्वस्थ रखने के लिए सर्वाधिक आश्यकता होती है—रक्तप्रवाह को नियमित करने की। रक्तसञ्चार के नियमित होने को स्वास्थ्य और उसकी अनियमितता को अस्वास्थ्य मानना अनुचित न होगा, क्योंकि रक्तसञ्चार का अनियिमित होना ही रोग का लक्षण है और इसी आधार पर व्यक्ति निदान के प्रति प्रयत्नशील होता है।

शरीर में उत्पन्न होने वाले किसी भी रोग का सम्बन्ध किसी-न-किसी रूप में रक्तअवरोध (रक्तसञ्चार में अनियमितता) से अवश्य होता है। रोग के विकट रूप धारण करने पर अथवा अन्य वैद्यक उपायों से उपचार सम्भव न होने पर अथवा रोग के पुराना पड़ जाने पर शल्यचिकित्सा का सहारा लिया जाता है। हाथों का रंग भी रक्तसञ्चार की नियमितता-अनियमितता का अथवा उसके स्वस्थ-अस्वस्थ होने का द्योतक होता है।

हस्तरेखाशास्त्री को हाथों के रंग के आधार पर ग्राहक के गुणों की परख के उपरान्त इन गुणों को धारण करने की उसकी सामर्थ्य पर भी विचार करना चाहिए। व्यक्ति के हाथों का रंग उसके स्वास्थ्य के अतिरिक्त उसके स्वभाव, आचार-विचार तथा रुचि-प्रवृत्ति का भी द्योतक होता है। इसके अतिरिक्त रंग-विशेष—लाल, पीला, नीला तथा सफ़ेद आदि—की विशेषताएं भी व्यक्ति के चरित्र और स्वभाव आदि को प्रभावित करती हैं। इन दोनों का भी एक-दूसरे से गहरा सम्बन्ध है। अतः हस्तरेखाओं के अध्येता का रंगों की विशेषताओं से परिचित होना आवश्यक है। इसी के द्वारा वह विषय के प्रति न्याय, अर्थात् ग्राहक के स्वभाव, चरित्र और गुण-दोषों के अतिरिक्त उसकी शारीरिक दशाओं की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करने का

दावा कर सकेगा। वह बता सकेगा कि उसके यजमान में सर्दी-गरमी के प्रकोप सहन करने की जीवनी शक्ति है अथवा नहीं। इतना ही नहीं, रंगों की विशेषताओं की पूरी और सही जानकारी होने पर वह अपने यजमान में सहनशीलता के होने-न होने के कारण का विश्लेषण भी कर सकता है। इससे हस्तेरखाशास्त्री के लिए रंगों की विशेषताओं की गहरी जानकारी रखने का महत्त्व स्वत: सिद्ध हो जाता है। यहां यह कहना अनुचित न होगा कि रंगों के गुण-दोषों की अधिकृत जानकारी न रखने वाला हस्तरेखाशास्त्री हाथों के रंग के आधार पर भविष्यकथन करने पर उपहास का पात्र भी बन सकता है।

हाथों के रंग का सम्बन्ध शरीर में प्रवहनशील रक्त से है। यह रक्त शिराओं और धमनियों में दौड़ता रहता है, दूषित तत्त्वों को बाहर निकाल फेंकता है और पुन: शुद्ध होकर शरीर की जीवनी शक्ति को बनाये रखता है। विधाता ने शरीर मे प्रवाहित रक्त के स्वयं शुद्ध होने की व्यवस्था न की होती, तो दूषित रक्त कार्बन बनकर शरीर को निढाल बना देता, परन्तु प्रकृति ने फेफड़ों के माध्यम से विषैली गैस (कार्बन) को बाहर निकालने और कोशिकाओं में शुद्ध वायु भरने की व्यवस्था कर रखी है। फेफड़ों की श्वसन-क्रिया ही अन्त:श्वसन की प्रक्रिया से व्यक्ति के शरीर में नवजीवन का सञ्चार करती है। शरीर में प्रवाहित रक्त फेफड़ों से होकर बहता है और शुद्ध होकर नसों के माध्यम से वापस हृदय में पहुंचता है और फिर हृदय इस रक्त का सञ्चार शरीर के सभी भागों में करता है। इस प्रकार रक्त शरीर के अन्तिम छोर—त्वचा—तक जा पहुंचता है। इसी रक्त से त्वचा को रंग प्राप्त होता है। त्वचा के भिन्न- भिन्न वर्ण का होने का आधार रक्त की मात्रा और गुणवत्ता ही है। हस्तरेखाशास्त्री के लिए त्वचा का रंग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय है।

फेफड़ों द्वारा कार्बनिक विष की आंशिक शुद्धि किये जाने पर रक्त आंशिक जीवनी शक्ति लेकर धमनियों द्वारा वापस आ जाता है, जिसका अर्थ पुनर्जीवित करने के कार्य का अधूरा रह जाना है। इस क्रिया—आंशिक शुद्धि—के निरन्तर चलने पर स्वास्थ्य और फिर स्वभाव में व पुन: धीरे-धीरे चरित्र में आना स्वाभाविक है। रक्तशोधन की इस प्रक्रिया में आने वाले विभिन्न परिवर्ननों के व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी को हस्तरेखाशास्त्र का भौतिक पक्ष ही मानना चाहिए। रक्त के रंग से मिलने वाले संकेत न केवल भौतिक-विज्ञान की यथार्थता की सूचना देते हैं, अपितु वे इतने अधिक सटीक होते हैं कि इनसे व्यक्ति के स्वास्थ्य, स्वभाव और चरित्र के विभिन्न पक्षों की भी सही जानकारी मिल जाती है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि हाथों की त्वचा के रंग को उसके सही रूप में देखने के लिए कमरे का तापमान 60 डिग्री फॉरेनहाइट के आस-पास रखना चाहिए, अन्यथा न्यून अथवा अधिक तापमान होने पर रक्तप्रवाह की गति के मन्द-तीव्र हो

जाने से हाथों का रंग प्रभावित हो जाता है और फिर वास्तविक स्थिति का तथा सही गुणवत्ता का निर्णय करना कठिन हो जाता है।

हाथों के रंग की सही पहचान के लिए हथेली और नाख़ूनों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। हाथों के रंग (परिवर्तन) पर ऋतु का प्रभाव अनिवार्य रूप से पड़ता है। शीतकाल में हाथों के रंग का सफ़ेद तथा ग्रीष्मकाल में तांबे-जैसा प्राय: देखा जाता है। रंग-निर्धारण में स्थान का भी योगदान रहता है। पर्वतीय, समुद्रीय, स्थलीय और मरुस्थलीय प्रदेशों के लोगों के हाथों के रंग का अलग-अलग रूप लिए रहना आवश्यक है। इसी प्रकार समय के भी महत्त्व को अनदेखा नहीं किया जा सकता। प्रात:काल, मध्याह्न और सायंकाल में हाथों की रंगत में भिन्नता का आना स्वाभाविक है। अत: हाथों के रंग में आने वाले स्थायी तथा क्षणिक परिवर्तन—प्रात:काल लालिमायुक्त उज्जवलता, दोपहर में भूरापन और सायंकाल आंशिक पीलापन—पर ध्यान देना आवश्यक होता है। वस्तुत: किसी भी प्रकार की भ्रान्ति का शिकार न होने के लिए हाथ के पृष्ठ भाग की अपेक्षा हथेली के रंग पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

सफ़ेद रंग से अभिप्राय साफ़-सुथरा न होकर फीका, अर्थात् रक्तआपूर्ति के अभाव से ग्रस्त होना है। प्राय: अत्यन्त रूखे, खुरदरे और भारी हाथ पीले-सफ़ेद होते हैं और इन हाथों का पीला अथवा सफ़ेद होना व्यक्ति के रक्त में लाल कणों के अभाव का सूचक होता है। हाथ की यह सफ़ेदी अथवा पीलापन त्वचा की उज्ज्वलता अथवा पीले चन्दन के प्रयोग का परिणाम नहीं होती। इस तथ्य की परख के लिए ग्राहक के हाथ को अपने हाथ में लेकर उसकी शव-जैसी ऊष्माहीनता तथा नीलेपन की परख करनी चाहिए। हाथों का यह सफ़ेदी अथवा उनका पीलापन व्यक्ति के स्वभाव में उत्साह, स्फूर्ति, रुचि, आकर्षण तथा उद्देश्य आदि की हीनता अथवा उनके अभाव का सूचक होता है। ऐसा व्यक्ति समाज से कन्नी काटने वाला, उदासीन तथा आत्मविश्वासहीन होने से प्राय: एकान्तप्रिय होता है। ऐसा व्यक्ति न तो कभी दूसरों के सुख-दु:ख की चिन्ता करता है और न ही किसी को प्रसन्न करने की चेष्टा करता है। वस्तुत: ऐसा व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से भी अशक्त एवं निस्तेज होने के कारण सुस्त तथा आलसी होता है। इस सबका कारण उसके रक्तप्रवाह का क्षीण तथा अपर्याप्त होना है। जीवनशक्तिदायक रक्त की न्यूनता अथवा अल्पता व्यक्ति के आत्मविश्वास और संकल्पशक्ति को समाप्त कर देती है। फलत: वह स्वप्नद्रष्टा, कल्पनाजीवी, स्वार्थी, आत्मकेन्द्रित तथा भावनाविहीन हो जाता है। यहां तक कि रक्त की कमी उसकी कामुकता और अनुराग की प्रवृत्ति को भी बुरी तरह प्रभावित कर देती है। ऐसा व्यक्ति न तो उत्कट प्रेमी बन पाता है और न ही संवेदनशील व संघर्षशील बन पाता है। वस्तुत: ऐसा व्यक्ति रसास्वादन अथवा आनन्द की अनुभूति

कभी कर ही नहीं पाता।

सफ़ेद-पीले हाथों वाले व्यक्ति साहित्य-सर्जन में प्रवृत्त होते मिलते हैं, परन्तु ऐसे लोगों के साहित्य में भी हृदय को छूने वाली ऊर्जा अथवा ऊष्मा के स्थान पर बर्फ़-जैसी ठण्डी चमक ही मिलती है। इनके साहित्य में दमक का नितान्त अभाव होता है। ऐसे लोग धर्म के क्षेत्र में आने पर रहस्य की ओट में रहना और समाज से अलग-थलग रहना व अपना अलग स्थान बनाये रखना पसन्द करते हैं। ऐसे लोग प्राय: हृदय और गुर्दों के रोगों से ग्रस्त पाये जाते हैं।

यहां यह उल्लेखनीय है कि व्यक्ति की यह निस्तेजता तथा निर्वीयता उसके अन्यान्य गुणों को भी प्रभावित करती है।

सफ़ेद हाथों वाले व्यक्ति का बृहस्पति पर्वत उसमें इच्छाशक्ति, स्वाभिमान और धार्मिकता-जैसे गुणों को जाग्रत तो करता है, परन्तु उसके हाथों की सफ़ेदी इन गुणों को दोष में बदल देती है। वह उत्साहहीन, विरक्त और अन्धविश्वासी बन जाता है। बृहस्पति के अधिक प्रभावशाली होने पर व्यक्ति निर्मम, निरंकुश और अत्याचारी बन जाता है।

गम्भीरता और तेजस्विता प्रदान करने वाले शनि पर्वत के प्रबल होने पर हाथों की सफ़ेदी एवं पीलेपन के कारण व्यक्ति अधिक निस्तेज तथा अधिक निरुत्साही बन जाता है।

सूर्य पर्वत की प्रबलता से व्यक्ति की कला, प्रतिभा और सर्वतोमुखी बौद्धिक क्षमता में निखार की सम्भावना को हाथों का सफ़ेद-पीलापन धूल में मिला देता है।

बुध पर्वत की प्रबलता से व्यक्ति के चरित्र में विकास की आशा को पीले-सफ़ेद हाथ धूमिल ही नहीं कर देते, अपितु वह मनुष्यता के सामान्य स्तर से भी नीचे गिर जाता है। वह अपेक्षा से कहीं अधिक कपटी, चालबाज़, मक्कार और धूर्त बन जाता है।

व्यक्ति के सफ़ेद-पीले हाथ प्रबल मंगल पर्वत के गुणों को नितान्त प्रभाव-हीन बना देते हैं। व्यक्ति सर्वथा भावशून्य बन जाता है और उसकी आक्रामक क्षमता नि:शेष हो जाती है।

हाथों का सफ़ेद-पीलापन व्यक्ति में शुक्र पर्वत की प्रबलता के फलस्वरूप प्रेम-भावना की प्रचण्डता को क्षीण कर देता है।

चन्द्र प्रर्वत का तो अपना ही रंग सफ़ेद-पीला है। अत: इस पर्वत की प्रबलता का अर्थ—एक करेला, दूसरा नीम चढ़ा—कहावत को सार्थक करता है।

हाथों के पीले रंग के सर्वथा विपरीत गुलाबी रंग रक्तप्रवाह की सामान्यता का सूचक है। हाथों का गुलाबी रंग व्यक्ति के स्वास्थ्य में भी गुलाबीपन का सूचक है। हाथों का गुलाबी रंग इस तथ्य का प्रतीक है कि शरीर में रक्त का सञ्चार करने वाला

हृदय अपनी सामान्य क्षमता के साथ काम कर रहा है, अर्थात् धमनियों के द्वारा शुद्ध रक्त को शरीर के सभी भागों में पहुंचा रहा है। हाथों का गुलाबी रंग यह भी घोषित करता है कि रक्त लाल कणों से भरपूर और नवजीवनदायक शक्ति से ओत-प्रोत है। यही कारण है कि त्वचा का रंग भी गुलाबी है और स्पष्ट है कि व्यक्ति का स्वास्थ्य भी उत्तम है। ऐसा व्यक्ति शक्ति, स्फूर्ति, ऊर्जा और उत्साह का स्रोत होता है। वह तीव्र बुद्धि, प्रसन्नचित्त, आकर्षक, कान्तिमान्, विनोदी, सामाजिक, प्रेम करने वाला, मिलनसार, जीवन को वरदान समझकर उमंग से जीने वाला तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ता दिखाई देने वाला होता है।

गुलाबी हाथों वाला व्यक्ति स्वयं को उल्लासपूर्ण और जीवन्त प्रकृति का व जोशीला होता है, उसमें मुर्दा शरीरों में प्राण फूंकने की, निराश व्यक्तियों में आशा और उत्साह का सञ्चार करने की तथा भूले-भटकों का पथ-प्रदर्शन करने की विलक्षण शक्ति होती है। ऐसा व्यक्ति विश्वसनीय, दयालु, उदार, सहानुभूतिशील, परदु:खकातर तथा मित्रता निभाने वाला और संकट में साथ देने वाला होता है। उसकी उपस्थिति पीड़ितों के लिए आशा की और सुखी व्यक्तियों के लिए विश्वास की ऊष्मा लिये रहती है।

गुलाबी हाथ वाले व्यक्ति प्रबल शुक्र और प्रबल सूर्य प्रकार के होने पर सदैव अनेक लोगों से घिरे रहते हैं। चन्द्र और शनि को छोड़कर नेतृत्व गुणों से सम्पन्न होने के कारण शेष पर्वत प्रकारों का गुलाबी हाथों से सामाञ्जस्य बैठ जाता है। चन्द्र का श्वेत और शनि का पीत वर्ण अपवाद रूप में गुलाबी हाथों के गुणों को कुछ कम अवश्य करता है, पुनरपि सर्वथा नि:शेष नहीं करता।

निष्कर्षत: गुलाबी हाथ समग्र रूप से उत्तमता और उत्कृष्टता के द्योतक होने से प्रशंसनीय समझे जाते हैं।

लाल रंग वाले हाथ की लालिमा से झलकती तीव्रता और प्रगाढ़ता का कारण मंगल की प्रधानता होती है। यही कारण है कि लाल हाथों वाले व्यक्ति बृहस्पति, सूर्य अथवा शुक्र पर्वत प्रकारों से उत्पन्न होने वाले दोषों से मुक्त रहते हैं। हाथों की लालिमा रक्तप्रवाह की आवेगशक्ति, मात्रा तथा गुणवत्ता आदि की सूचक होती है। लाल हाथों वाले व्यक्ति के रक्त में लाल कणों की बहुलता होने से उनमें जीवन्तता और स्फूर्ति अत्यधिक मात्रा में होती है। उनका न केवल शरीर सुदृढ़ होता है, अपितु स्वभाव भी तीव्र और प्रचण्ड होता है। उनके शारीरिक बल की असीमता के कारण उन्हें असामान्य रूप से स्वस्थ मानना पड़ता है। वे अपने दु:खों-कष्टों की चिन्ता न करके अपनी अतिरिक्त शक्ति को खपाने के लिए सदैव किसी-न-किसी काम में व्यस्त रहते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन के सभी क्षेत्रों—प्रेम, युद्ध, कला, धर्म, व्यापार, राजनीति तथा उद्योग आदि—में सदैव अग्रणी बने मिलते हैं। वे मिलनसार, स्पष्टवक्ता,

सैर-सपाटे और खाने-पीने के शौक़ीन, दूसरों पर शासन करने की प्रवृत्ति वाले तथा परिणाम पर दृष्टि रखने वाले होते हैं। वे अपने प्रचण्ड स्वभाव के कारण प्राय: असंयत और अतिवादी भी हो जाते हैं, जिसका परिणाम कभी-कभी अवाञ्छनीय भी निकलता है।

हस्तरेखाशास्त्री को लाल रंग वाले हाथों की रेखाओं का अध्ययन करते समय व्यक्ति के शरीर में रक्त की अधिकता के कारण उसमें असीम शक्ति-सम्पन्न, अत्युत्तम, उग्र स्वभाव तथा स्पष्टता होने-जैसे गुणों को ध्यान में रखते हुए ही भविष्यकथन करना चाहिए।

लाल रंग वाले हाथ के बृहस्पति का प्रतीक होने पर व्यक्ति का महत्त्वाकांक्षी, अहंकारी तथा कठोरता से नियम पालन करने वाला होना निश्चित है।

सूर्य प्रधान होने पर व्यक्ति तीव्र एवं प्रखर प्रतिभाशाली होने के साथ-साथ सुरुचिविहीन, प्रदर्शनप्रिय तथा अतिवादी होता है।

शुक्र की प्रधानता होने पर व्यक्ति अपनी प्रेम-भावना के आवेग को अतिरेक की मात्रा में प्रकट करने वाला होने से अपने लिए तथा दूसरों के लिए समान रूप से ख़तरनाक सिद्ध होने वाला होता है।

मंगल की प्रधानता व्यक्ति में जोश और आवेग को उग्रता तथा कठोरता की सीमा तक बढ़ा देती है। व्यक्ति उत्कट प्रेम की ज्वाला में जलने वाला तथा संघर्षशील होने के अतिरिक्त अधिक खाने का शौक़ीन होने से पेटू, अजीर्णता तथा उच्चरक्तचाप से ही नहीं, अपितु मिरगी-जैसे रोगों से भी आक्रान्त हो सकता है। ऐसे व्यक्ति—मंगलप्रधान लाल हाथ वाले—के नाख़ूनों या हृदयरेखा में हृदय सम्बन्धी लक्षणों के दिखाई देने पर स्थिति को अत्यन्त ही गम्भीरता से लेना चाहिए। गले, श्वास और अंतड़ियों में विकार के लक्षणों को तो बुरा संकेत ही समझना चाहिए; क्योंकि हाथों का लाल रंग व्यक्ति की प्रत्येक क्रिया एवं गतिविधि में तीव्रता, उग्रता और प्रचण्डता का समावेश करने वाला होता है।

शुक्र की प्रधानता एवं छोटी-मोटी अंगुलियां, कठोर हथेली तथा चपटा अंगूठा रखने वाले व्यक्ति के हाथ का लाल रंग उसके हिंसक, ख़ून-ख़राबा तथा हत्या करने वाला होने का सूचक है। ऐसे व्यक्ति अपने प्रेम में थोड़ी-सी भी बाधा आने पर लड़ने-मरने को आमादा हो जाते हैं। वे कठोर एवं निर्मम ही नहीं, अपितु क्रूर एवं नृशंस भी होते हैं।

हाथों का पीला रंग मुख्य रूप से शनि की प्रधानता का और आंशिक रूप से बुध की प्रधानता का सूचक है। यदि हस्तरेखाशास्त्री को इन दोनों प्रकारों वाले हाथ के अतिरिक्त किसी हाथ का रंग पीला दिखाई दे, तो उसे सतर्क हो जाना चाहिए और उसे असामान्य स्थिति ही समझना चाहिए।

कुछ हाथों का पीलापन पित्तविकार का परिणाम होता है। कुछ मामलों में आंतों द्वारा मिलने वाला पित्त रस अपना कार्य पूरा होते ही ग़ायब हो जाता है, तो कुछ मामलों में इसके बहुत अधिक मात्रा में निकलने से उसका एक भाग रक्त में मिल जाता है और सूखकर विषैला पदार्थ बन जाता है, जिससे रक्त दूषित हो जाता है। रक्त इसे बाधा मानकर किसी स्थान पर फेंकने के प्रयास में त्वचा की सतह पर छोड़ देता है, जिससे एक तो धीरे-धीरे त्वचा का रंग पीला पड़ने लगता है और दूसरे इससे व्यक्ति का स्वास्थ्य, उसकी सक्रियता एवं जीवनी शक्ति क्षीण होने लगती हैं। धीरे-धीरे उसका मस्तिष्क विकृत और स्वभाव चिडचिड़ा हो जाता है। इतना ही नहीं, हृदय की रक्तसञ्चार शक्ति के क्षीण हो जाने के फलस्वरूप स्पन्दन-क्रिया भी अनियमित हो जाती है। यही कारण है कि पीली त्वचा वाले पुराने रोगी निस्तेज, दुर्बल और क्षीण होते हैं। ऐसे व्यक्ति उत्साह, स्फूर्ति और आनन्द की अनुभूति के लिए तरसते हुए देखे जाते हैं। उनके लिए जीवन एक भार होता है और उन्हें सर्वत्र विषाद और अन्धकार ही दिखाई देता है। उसके मस्तिष्क के पित्त के विष से अवरुद्ध हो जाने के कारण वह सनकी, उदास, खिन्न, व्याकुल मन:स्थिति वाला और समाज से कटने वाला बन जाता है। उसकी सोच में दु:ख, निराशा और उदासीनता छा जाती है। ऐसे व्यक्ति की दशा दयनीय हो जाती है। अत: हस्तरेखाशास्त्री को उसके प्रति करुणा और सहानुभूति के भाव रखते हुए उसे सान्त्वना देनी चाहिए। उसका साहस और मनोबल बढ़ाना चाहिए। यदि यजमान के हाथों की हथेली, नाख़ून और रेखाएं भी पीलापन लिये हुए हों, तो व्यक्ति को पाण्डु रोग से ग्रस्त समझना चाहिए और तत्काल उपयुक्त चिकित्सा करने का उसे सुझाव देना चाहिए।

हाथों का पीलापन सभी पर्वतों के प्रभाव को क्षीण-विकृत कर देता है।

* बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति उदास और खिन्न रहता है।
* शनि के पीतवर्ण का होने पर भी पीले हाथों वाला शनिप्रधान व्यक्ति असंयत और दुर्बल इन्द्रियों वाला हो जाता है।
* सूर्यप्रधान व्यक्ति की प्रतिभा कुण्ठित हो जाती है।
* मंगलप्रधान व्यक्ति क्रोधी और असहनशील बन जाता है।
* चन्द्रप्रधान व्यक्ति भावनाविहीन और उदास रहने वाला बन जाता है।
* शुक्रप्रधान व्यक्ति का शारीरिक बल क्षीण हो जाता है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि हस्तरेखाशास्त्री को इस तथ्य को भी ध्यान में रखना चाहिए कि कहीं हाथों की ताम्रता अथवा पीलापन, धूप, अत्यधिक गरमी अथवा अन्य किसी प्राकृतिक कारण से तो नहीं। विदेशियों के सम्बन्ध में तो यह तथ्य और भी अधिक विचारणीय हो जाता है। वस्तुत: हाथ के अन्य लक्षणों के लाल व गुलाबी रंग के होने पर भी केवल हाथ पीलापन लिये हुए हों, तो स्थिति को

असामान्य ही समझना चाहिए।

कुछ हाथों की त्वचा नीले व बैंगनी रंग की होती है। सामान्यतया त्वचा का यह रंग रक्तसञ्चार में दोष का सूचक है, पुनरपि यह उसके स्वभाव अथवा चरित्र की हीनता का निश्चित प्रमाण नहीं; क्योंकि यह रक्तसञ्चार के दोष—अपर्याप्तता अथवा क्षीणता—का तो सूचक है, परन्तु रक्त की गुणवत्ता में न्यूनता का सूचक नहीं। अतः त्वचा का यह रंग व्यक्ति के स्वभाव अथवा चरित्र में विकृति का पक्का सबूत नहीं। इस प्रकार हाथों की त्वचा का नीला अथवा बैंगनी रंग केवल रक्तसञ्चार की कमी का सूचक है, स्वास्थ्य सम्बन्धी किसी दोष का ज्ञापक नहीं।

इस प्रकार हाथों का सफ़ेद रंग रक्त के मन्द प्रवाह का, गुलाबी रंग सामान्य प्रवाह का, लाल रंग तीव्र प्रवाह का तथा पीला रंग रक्त के दूषित होने का सूचक है। हाथों की त्वचा का नीलापन रक्तसञ्चार की मन्दता के साथ-साथ रक्त की अल्पता—जिसके कारण रक्त प्रवाह में अवरोध का आना स्वाभाविक है—की सूचना देता है। डाक्टर लोग इस रोग को अपनी भाषा में 'रक्तसंकुलता' नाम देते हैं।

यह रक्तसंकुलता—रक्त की अल्पता और प्रवाह की मन्दता—हाथों को नीला कर देती है। यह प्रवाह जितना अधिक मन्द होता जाता है, हाथों का नीलापन उतना अधिक गहरा होता जाता है, जो हृदय के कार्य करने की शक्ति के बुरी तरह से प्रभावित होने का सूचक होता है। नाख़ूनों के विश्लेषण के अन्तर्गत इस पक्ष का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया जायेगा। हथेली में नीले धब्बों का दीखना रक्तसञ्चार में कभी-कभी व थोड़ी देर के लिए आने वालो अव्यवस्था का संकेत है और हथेली का पूर्णतः नीला हो जाना रोग के पुराना पड़ जाने का सूचक है।

दोनों हाथों को परस्पर ज़ोर से रगड़ने पर हाथों पर जमे रंग के न बिखरने पर यह तो निश्चित है कि ऐसा व्यक्ति हृदय रोगी है; परन्तु उसे यह बताना कदापि उचित नहीं होगा। एक बार एक व्यक्ति का परीक्षण करते समय मुझसे ऐसी भूल हो गयी थी। मेरी बात सुनते ही मेरा यजमान मरणासन्न हो गया और यदि तत्काल चिकित्सा-सुविधा सुलभ न होती, तो उसने वहीं दम तोड़ दिया होता। वस्तुतः यदि यजमान को इस सम्बन्ध में सावधान करना आवश्यक भी हो, तो भी कुछ गोल-मोल—आपके रक्तप्रवाह में कुछ गड़बड़ लगती है—कहना चाहिए। यदि यजमान अपने मुख से अपने हृदय की दुर्बलता की बात कहे, तो भी उसे अनसुना करते हुए उसके प्रति सहानुभूति और संवेदना का ही व्यवहार करना चाहिए।

निष्कर्षतः हाथों की रंगत का अध्ययन करते समय त्वचा के रंग का तथा मानव-शरीर में रक्तसञ्चार की भूमिका का ध्यान रखना आवश्यक है। तब ही इस शास्त्र के रहस्य को समझना जा सकेगा। *

8

नाख़ून

हाथों के परीक्षण के समय नाख़ूनों की बनावट, उनके आकार-प्रकार तथा रंग आदि पर ध्यान देना भी आवश्यक होता है।

सूक्ष्म परीक्षण से यह पाया गया है कि नाख़ून बारीक रेशों से और रेशे सींग-जैसे पदार्थ से बने और अपास में एक-दूसरे से इस प्रकार गुंथे हुए होते हैं कि उन्हें एक-दूसरे से अलग कर पाना सम्भव ही नहीं होता। नाख़ून मांसपेशियों अथवा हड्डियों से न निकलकर अंगुलियों के सिरों की त्वचा से निकलते हैं। यही कारण है कि त्वचा के छिन्न-भिन्न हो जाने पर नाख़ून भी उतर जाते हैं। नाख़ूनों को न काटा जाये, तो यह लम्बे होते जाते हैं। इनका प्रयोग आक्रमण करने में, आक्रमण से बचाव के लिए शस्त्र के रूप में किया अवश्य जाता है, परन्तु विकसित बुद्धि वाले मानव ने युद्ध और बचाव के लिए अनेक शस्त्रास्त्रों का आविष्कार कर लिया है, जबकि शेर, बाघ आदि हिंसक पशु आज भी अपने पंजों के लम्बे और नुकीले नाख़ूनों का प्रयोग शस्त्र के रूप में करते हैं।

अंगुलियों के छोरों में स्पर्श-बोध कराने वाली अत्यन्त कोमल असंख्य संवेदनशील कोशिकाएं होती हैं, जिनकी रक्षा नाख़ूनों द्वारा होती है। स्पर्श-बोध को प्रखर बनाने के उद्देश्य से ही कोशिकाओं को त्वचा के अत्यन्त निकट रखा गया है। नाख़ूनों के अभाव में इन कोशिकाओं के त्वचा के नीचे दब जाने से स्पर्श-बोध में बाधा का पड़ना निश्चित है।

नाख़ूनों को मानव-शरीर के भीतरी ढांचे में झांकने का झरोखा मानना सर्वथा उपयुक्त धारणा है। नाख़ूनों के नीचे का स्थान, मर्मस्थल, अत्यधिक कोमल और संवेदनशील होने के साथ-साथ रक्तसञ्चार के सारे रहस्यों की जानकारी कराने वाला होता है। नाख़ूनों से दिखाई देने वाला रक्त का स्तर और प्रवाह स्वास्थ्य और स्वभाव की अनेक महत्त्वपूर्ण बातों को देखने-परखने का अत्यन्त सटीक और प्रामाणिक आधार है। नाख़ूनों के नीचे के रक्त से हृदय की धड़कन तक का अनुभव किया जा सकता है और अनुमान लगाया जा सकता है। नाख़ूनों में होने वाले

परिवर्तनों से नाख़ूनों के नीचे अवस्थित स्नायु-केन्द्रों के ठीक तरह से कार्य करने का पता चल जाता है।

त्वचा के समान नाख़ून भी अपनी विशेषताएं लिये रहते हैं। उत्तम प्रकृति के लोगों के हाथों के नाख़ून भी प्राय: स्वस्थ और चिकने होते हैं। हाथों की त्वचा के उत्तम होने, परन्तु नाख़ूनों के रूखे-खुरदरे होने का अर्थ व्यक्ति के स्वभाव और जीवन में असन्तुलन का द्योतक है। इसी प्रकार त्वचा पर छोटे आकार के, घटिया और रूखे-सूखे नाख़ूनों का अर्थ कुलीन व्यक्ति का दुर्भाग्यग्रस्त अथवा पतित होना है। बड़े-बड़े नाख़ूनों वाले भारी-भरकम हाथों की घटिया और कठोर त्वचा व्यक्ति के स्नायु सम्बन्धी विकारों की द्योतक है। कभी-कभी ऐसे नाख़ूनों पर लम्बी-लम्बी धारियां भी देखने को मिलती हैं (रेखाचित्र-24)।

रेखाचित्र-24

यहां यह उल्लेखनीय है कि उत्तम त्वचा वाले हाथ में घटिया नाख़ून पाये जाने पर हस्तरेखाशास्त्री को सतर्क हो जाना चाहिए और इसका कारण ढूंढना चाहिए। सर्वप्रथम त्वचा और नाख़ूनों के स्वरूप की तुलना करनी चाहिए। स्वरूप और प्रकार की समानता मिलने पर इसे सामान्य स्थिति मानने अथवा न मानने की समीक्षा के अन्तर्गत इस असन्तुलन के कारणों का पता लगाना चाहिए

नरम, समान (समतल), जीवन्त, लचीले, चिकने तथा ऊपर से नीचे तक स्वच्छ तन्तु-रचना लिये रहने वाले नाख़ून उत्तम स्तर के होते हैं। आड़ी-तिरछी अथवा लम्बी धारियां नाख़ूनों के स्वरूप को दूषित कर देती हैं। वस्तुतः अलग-अलग आकार वाले तन्तुओं के एक साथ बढ़ने के प्रयास के परिणामस्वरूप ही नाख़ूनों पर आड़ी-तिरछी या खड़ी धारियां आ जाती हैं, जो स्नायुविकार की सूचक होती है (रेखाचित्र-25)।
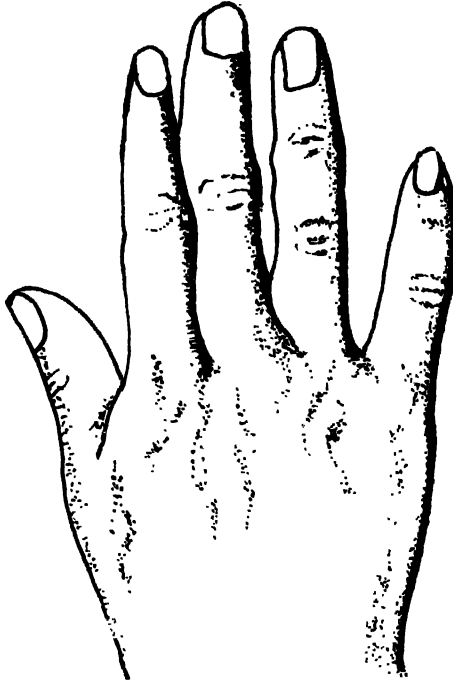
रेखाचित्र-25

गम्भीर प्रवृत्ति के व्यक्ति के नाख़ून आसानी से टूटने वाले व अपने ऊपर खड़ी धारियां लिये हुए होते हैं। यह इस तथ्य के सूचक होते हैं कि वे अंगुली के सिरे से न बढ़कर मांस के बाहर उगते हैं, अर्थात् वे अपने मर्मस्थल के साथ दृढ़ता से जुड़े हुए नहीं होते। व्यक्ति इस तथ्य की ओर ध्यान दे अथवा न दे, परन्तु यह स्पष्ट है कि यदि उसके नाख़ूनों पर सफ़ेद धब्बे उभर आये हैं, तो यह उसके स्नायुतन्त्र में आयी विकृति के निश्चित प्रमाण हैं। वस्तुतः प्रकृति नाख़ूनों पर सफ़ेद धब्बों के बढ़ने-घटने के माध्यम से स्नायु-बल में आने वाले विकार की सूचना देती है, जिसे एक चेतावनी के रूप में ही लेना चाहिए। सफ़ेद धब्बों के आकार का बढ़ना, नाख़ूनों की पारदर्शिता और स्पष्टता का ढक जाना, नाख़ूनों में धुंधलापन का आ जाना तथा

नाख़ूनों पर आड़ी-तिरछी लकीरों का उभरना और फिर उनका निरन्तर क्रमशः बढ़ते जाना, यहां तक कि नाख़ूनों का बड़ी-बड़ी धारियों से घिर जाना (रेखाचित्र-26) स्नायुविकार की विषमता का सूचक है। स्नायुविकार का समुचित उपचार न करने पर नाख़ून भुरभुरा होने, सिरों के पीछे की ओर मुड़ने तथा अपने रूप-रंग को बिगाड़ने लगता है।

भुरभुरा नाख़ून एक ओर से उंगली से ऊपर उठ जाता है, तो दूसरी ओर से नीचे धंस जाता है और मर्मस्थल के भीतर घुस जाने से छोटा रह जाता है। इस स्थिति में नसों पर भार पड़ने से पक्षाघात अथवा लकवें-जैसे रोग की आशंका उत्पन्न हो जाती है। वस्तुतः नसें सबसे बड़े स्नायुकेन्द्र, मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं। यह स्थिति नाख़ूनों की जीवनी शक्ति के नष्ट होने की, तेल सूख जाने की, तन्तु-विन्यास के विकारग्रस्त हो जाने की, तन्तुओं के एक-दूसरे से जुड़ने-गुंथने की बजाय एक-दूसरे पर चढ़ जाने और इसके फलस्वरूप गड़बड़ी उत्पन्न होने की सूचना देती है। इस प्रकार नाख़ूनों पर सफ़ेद धब्बे, खड़ी धारियां व उनका भुरभुरापन और पीछे की ओर मुड़ना आदि स्नायुविकार की चेतावनियों के क्रम हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि जहां स्नायु रोग के कारण कभी-कभी अच्छे नाख़ून एकदम मटमैले होते देखे जाते हैं, वहां स्वास्थ्य में सुधार होने पर नाख़ून भी अपने स्वाभाविक स्वरूप में आ जाते हैं और धारियां विलीन हो जाती हैं।

आड़ी-तिरछी धारियों वाले नाख़ूनों की जीवनी शक्ति के निश्शेष हो जाने के फलस्वरूप उनका बढ़ना भी रुक जाता है (रेखाचित्र-25)। ऐसे नाख़ून मृतवत् दिखाई देते हैं और उनका स्थान लेने के लिए अन्य-अन्य नाख़ून निकलते दिखाई देते हैं। यह स्थिति इस तथ्य की सूचक है कि व्यक्ति किसी ऐसे गम्भीर रोग से आक्रान्त हो गया था, जो उसके लिए प्राणलेवा बनने जा रहा था।

स्पष्ट है कि इस प्रकार का नाख़ून हस्तरेखाशास्त्री को उपस्थित व्यक्ति के चरित्र-विश्लेषण के लिए पर्याप्त सामग्री जुटायेगा। वह रोग की दशा, अवधि और विषमता आदि के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कहने की स्थिति में आ जायेगा। यहां विशेष रूप से ध्यान देने की बात यह है कि नाख़ून बीते समय की घटना को तो दर्ज कर लेता है, परन्तु भविष्य के सम्बन्ध में कोई सूचना अथवा जानकारी बिल्कुल ही नहीं देता। नये नाख़ून को अस्तित्त्व में आने के लिए लगभग छः महीने का समय लगता है। अतः नाख़ून के आधार पर चरित्र-विश्लेषण करते समय उस पर उभरी हुई रेखा की लम्बाई से रोग की अवधि को जाना जा सकता है। उदाहरणार्थ—

(अ) नाख़ून की चौड़ाई में मेंड-जैसी उभरी हुई रेखा अथवा धारी दिखाई देने पर रोग की अवधि दो माह और तीन माह आंकनी-समझनी चाहिए।

(ब) नाख़ून के एक तिहाई भाग के ढके होने पर रोग की अवधि दो माह तक

आंकनी--समझनी चाहिए।

(स) नाख़ून के आधे भाग के ढके होने पर रोग की अवधि तीन माह तक आंकनी-समझनी चाहिए।

उपस्थित व्यक्ति के व्यवहार से हस्तरेखाशास्त्री उपर्युक्त तथ्य की पुष्टि कर सकते हैं। दूसरे के वक्तव्य से सन्तुष्ट होने पर भी ऐसा व्यक्ति तर्क करना नहीं छोड़ेगा; क्योंकि इसमें उसे मज़ा आता है। अत: वह दूसरों की प्रत्येक ग़लत-गाही बात की आलोचना करता है और उन्हें तर्क-वितर्क के लिए उत्तेजित करता है। वस्तुत: वह बुद्धि-बल में उत्कृष्ट सिद्ध होने का सन्तोष प्राप्त करना चाहता है। अत: वह दूसरों के किसी कथन को सही मानते हुए भी उसे काटेगा। ऐसे व्यक्ति से निपटने और उसे सन्तुष्ट करने का एकमात्र उपाय उसकी हां-में-हां मिलाना है।
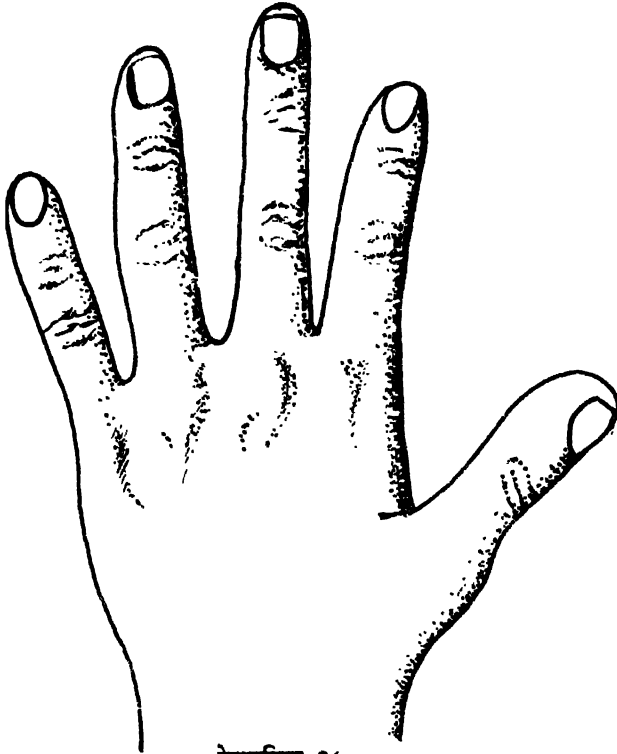
रेखाचित्र-26

अत्यन्त छोटे नाख़ून भले ही विरलता से मिलते हों, परन्तु सामान्य छोटे नाख़ूनों वाले व्यक्ति तो प्राय: देखने को मिलते हैं।

नाख़ूनों के छोटा होने के साथ-साथ गांठदार अंगुलियां, अत्यन्त चौड़ा अंगूठा, कठोर हाथ और हाथों में मंगल के विशाल पर्वत का होना व्यक्ति के अत्यन्त दुष्ट प्रकृति और कलहप्रिय होने के निश्चित संकेत हैं। ऐसा व्यक्ति किसी भी विषय—
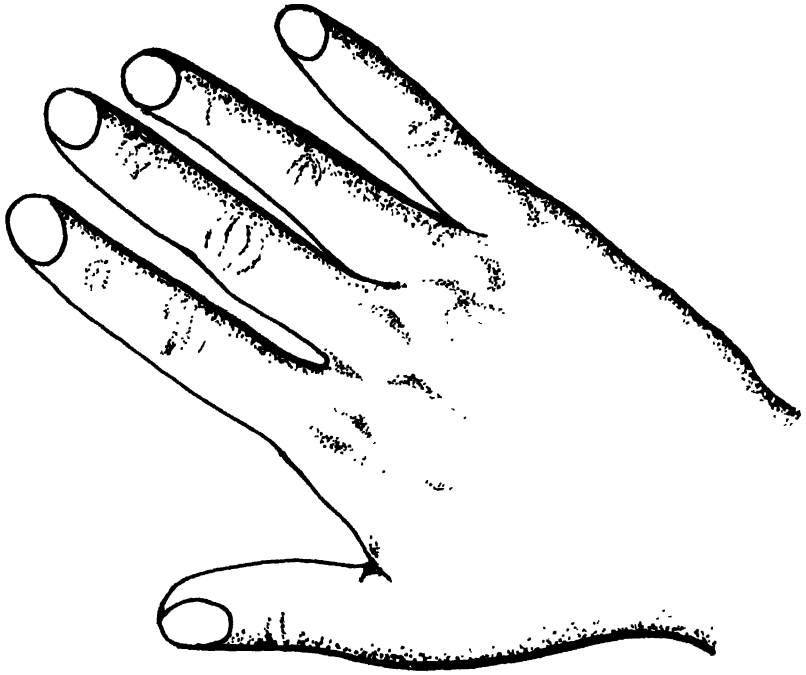
रेखाचित्र-27

रेखाचित्र-28

प्रेम, संगीत, कला, साहित्य तथा उद्योग-धन्धा आदि—पर चर्चा करते समय आलोचनात्मक रुख़ ही अपनायेगा। वस्तुतः नाख़ून आकार में जितने छोटे होंगे, व्यक्ति उतना ही अधिक कटु आलोचक होगा।
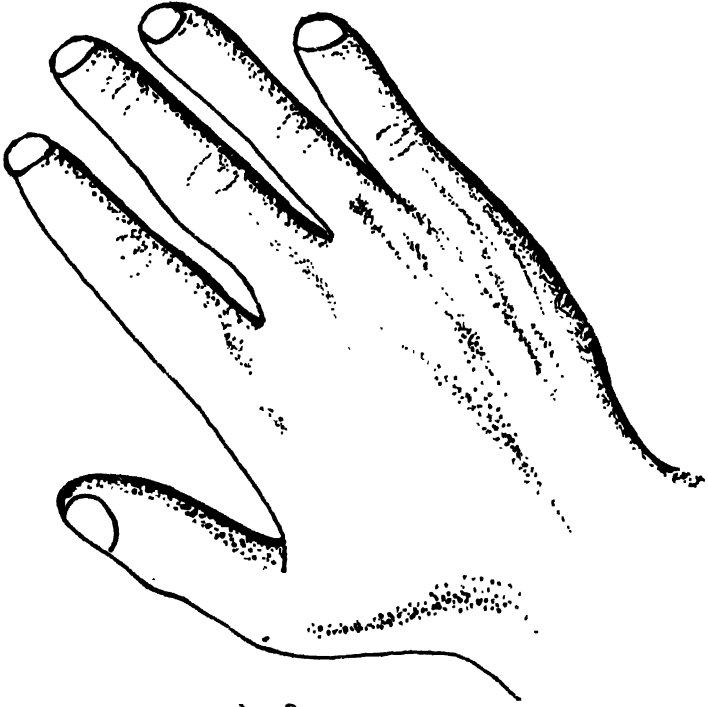
रेखाचित्र-29

छोटे नाख़ूनों की पहचान— अत्यधिक छोटे नाख़ून—एक चौथाई इञ्च लम्बा—से की जा सकती है (रेखाचित्र-29)। ऐसा छोटा नाख़ून एकदम चपटा-घिसा-पिटा-सा तो लगता ही है, अंगुलियों को एकदम मोटा और मूठ के आकार में भी ढाल देता है। ऐसा नाख़ून व्यक्ति के बलिष्ठ शरीर, सक्रिय एवं आलोचनाप्रिय मस्तिष्क तथा कलहप्रिय प्रकृति का सूचक होता है। ऐसे व्यक्ति को स्वादिष्ट भोजन खाने से भी कहीं अधिक आनन्द तर्क करने में आता है।

इसके विपरीत सिरे पर मोटे, अंगुलियों की ओर गोलाई लिये, नीचे की ओर चौड़े और गुलाबी रंग लिये रहने वाले नाख़ून खुले और स्पष्ट होने से उत्तम प्रवृत्ति के कहलाते हैं (रेखाचित्र-30) इस प्रकार के नाख़ूनों वाला व्यक्ति दिल का साफ़, स्पष्ट एवं सत्य बोलने वाला तथा ईमानदार प्रवृत्ति का होता है। नाख़ूनों की चौड़ाई को व्यक्ति के उदार होने का तथा गुलाबीपन को गुणी होने का सूचक समझना चाहिए।

आकार में छोटे, परन्तु सुगढ़ और सिरे से चौड़ाई के नीचे की ओर क्रमशः
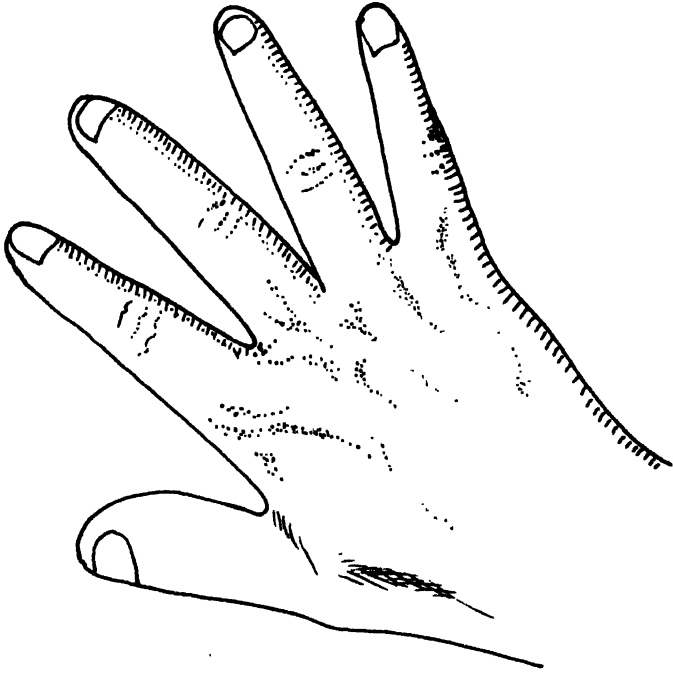
रेखाचित्र-30
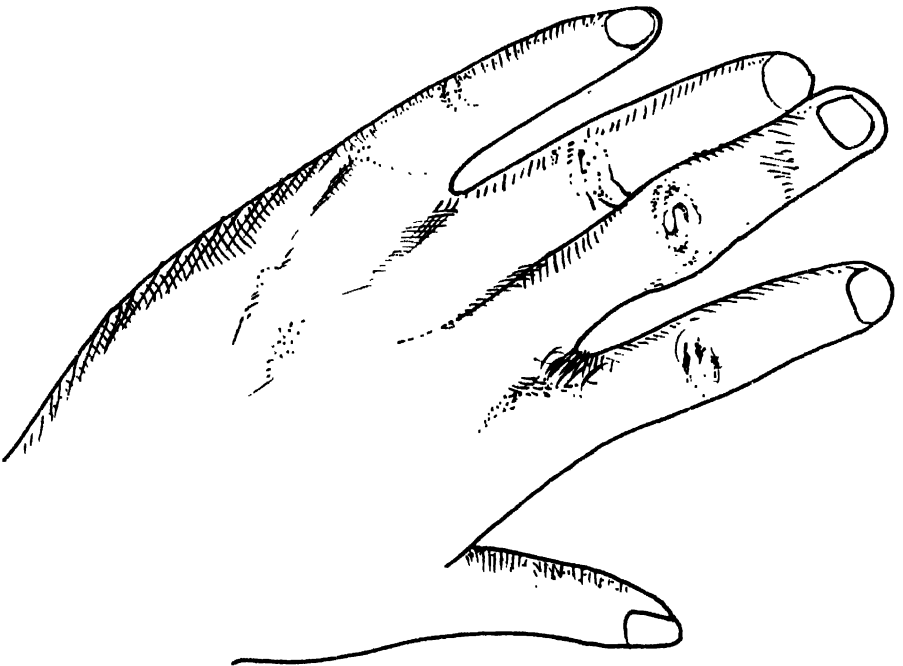
रेखाचित्र-31

घटते जाने (पतला होते जाने) वाले अथवा तल तक एक-समान चौड़ाई लिये रहने वाले नाख़ून यूं तो प्राय: लम्बी अंगुलियों में ही देखने को मिलते हैं, (रेखाचित्र-31) परन्तु कभी-कभी अपवाद रूप में लम्बे और छोटे हाथों में भी पाये जाते हैं। वस्तुत: ऐसे नाख़ून किसी वर्ग विशेष तक सीमित न होकर सभी प्रकार की अंगुलियों और हाथों में देखने को मिलते हैं।

इसी प्रकार के नाख़ून व्यक्ति के हृदय रोग से पीड़ित होने के अतिरिक्त उसके स्वभाव की विचित्रता के भी सूचक होते हैं। वस्तुत: ध्यान से देखने पर इन नाख़ूनों के निचले भाग में गहरा नीलापन स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। इन नाख़ूनों पर चन्द्र चिह्न का अर्थ नीलेपन का सिरे तक फैल जाना है। यह स्थिति हृदय की बनावट में दोष की और हृदय रोग होने की ओर निश्चित संकेत करती है।

नाख़ून के निचले भाग में पक्के-गहरे नीले रंग के होने का अर्थ रक्त-प्रवाह में मन्दता और हृदय की दुर्बलता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि किशोर अवस्था से युवावस्था में प्रवेश कर रही कन्याओं के मासिक धर्म की अनियमितता के कारण उनके नाख़ूनों में आये नीलेपन को हृदय रोग का संकेत समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। नाख़ूनों के नीलेपन के स्थायी-अस्थायी होने के सम्बन्ध में भली प्रकार से विचार करना चाहिए। हां, चालीस वर्ष से ऊपर की आयु वाली स्त्रियों के हाथों में नाख़ूनों के नीलेपन को निश्चित रूप से रोग का लक्षण समझना चाहिए, पुनरपि इस तथ्य की पुष्टि अवश्य कर लेनी चाहिए कि रक्त-अवरोध के कारण नाख़ूनों में आया नीलापन स्थायी है अथवा अस्थायी ? नाख़ून के निचले भाग, रंग के गहरा, भड़कीला और बैंगन-जैसा नीला दिखाई देने को हृदय रोग की गम्भीरता का संकेत मानना चाहिए, परन्तु इसक विपरीत नाख़ूनों के साधारण हलके नीलेपन को व्यक्ति के हृदय के दुर्बल होने का लक्षण मानना चाहिए। हस्तरेखाशास्त्री को नाख़ूनों के रंग के आधार पर व्यक्ति के चरित्र का विश्लेषण करते समय इन सभी तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए।

गांठदार अथवा ग्रन्थिल नाख़ून तो एक बार देख लिये जाने पर अविस्मरणीय बन जाते हैं। ऐसा नाख़ून अंगुली की गिल्टी के रूप में फूले हुए सिरे पर उगता है। ऐसे नाख़ून वाली अंगुली के अग्रभाग का अथवा सिरे का रूप संकरा हो या चौरस, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। इसकी प्रमुख विशेषता तो इसका गांठदार अथवा गिल्टी-जैसा फूला हुआ होना है। इस स्वरूप वाला नाख़ून व्यक्ति के क्षय रोग से ग्रस्त होने का सूचक है। चिकित्सकों के अनुसार यह स्थिति पौष्टिक आहार के अभाव अथवा क्षय रोग के विषम रूप धारण करने का निश्चित लक्षण है।

क्षय रोग को निश्चित करने के लिए अंगुलियों के पोरों पर भी दृष्टिपात करना चाहिए। इस रोग में पोर बिजली के बल्ब या गुब्बारे-जैसे हो जाते हैं और नाख़ून

सिरे के ऊपर इस प्रकार मुड़ जाते हैं कि सिरा मुद्गर अथवा मूठ-जैसा बन जाता है। इस स्थिति को रीढ़ की हड्डी में विकार का और फेफड़ों में क्षय रोग के विषम हो जाने का निश्चित संकेत समझना चाहिए।
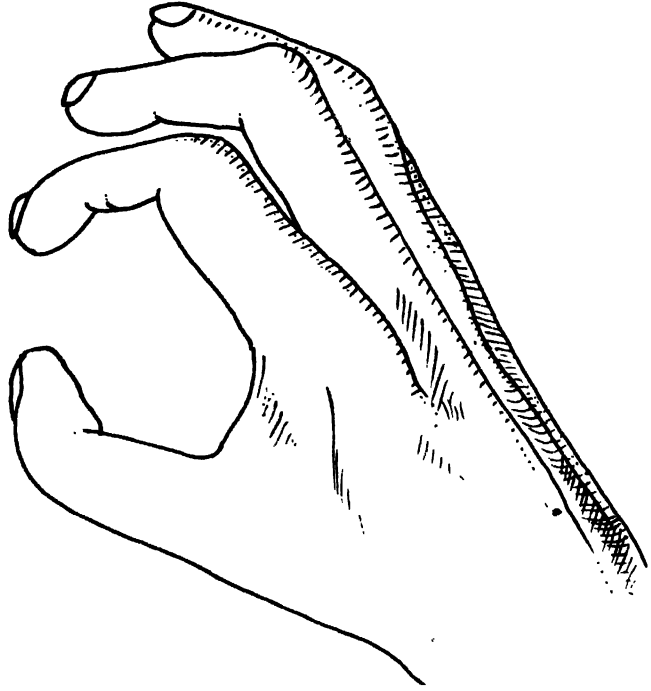
रेखाचित्र-32

नाख़ून का गहरा नीलापन रक्तविकार का सूचक है। फेफड़ों के कार्य—शरीर से कार्बन को निकालना और उसमें आक्सीजन को भरना—निर्वहण में अवरोध आ जाने पर अनेक विषैले तत्त्व रक्त में मिलकर शरीर में फैल जाते हैं। इससे शरीर को नवशक्ति नहीं मिलती और गोल नाख़ून भी नीले पड़ जाते हैं। इस प्रकार नाख़ूनों का गहरा नीलापन हृदय रोग की गम्भीरता का सूचक है। गहरे नीले नाख़ूनों वाले व्यक्ति के लिए तो कभी-कभी जुकाम भी निमोनिया का रूप ले लेता है।

कुछ नाख़ून गिल्टी की तरह फूले हुए तो नहीं होते, परन्तु अत्यन्त टेढ़े-मेढ़े व घुमावदार होते हैं। इनका यह टेढ़ापन ही इन्हें दूसरे प्रकार के नाख़ूनों से अलग करता है। (रेखाचित्र-33) ऐसे नाख़ूनों वाले व्यक्ति की श्वास नली और कण्ठ प्राय: विकारग्रस्त रहते हैं। कहीं-कहीं तो इनके फेफड़ों में भी गड़बड़ी देखी जाती है। ऐसे व्यक्ति एक तो प्राय: सर्दी-जुकाम से पीड़ित रहते हैं, दूसरे मौसम में तबदीली आने पर इनकी श्वास नली और गले आदि में भी गड़बड़ी हो जाती है।

अत: ऐसे व्यक्तियों को सर्दी से बचाव की चेतावनी देने में संकोच नहीं करना चाहिए।
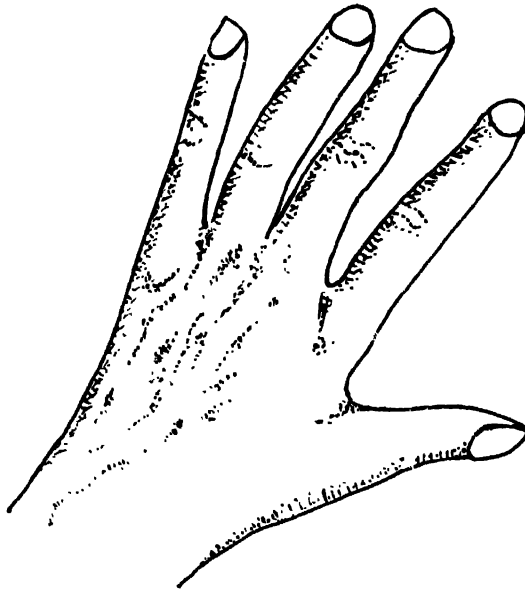
रेखाचित्र-33

सफ़ेद, पीले और नीले रंग के अन्तर को सही ढंग से परखने के लिए इन्हें गुलाबी नाख़ूनों—जो प्राय: सर्वत्र सुलभ रहते हैं—के साथ रखकर देखना चाहिए। इस तुलना से वास्तविकता को परखना सरल हो जायेगा। ध्यान से देखने की बात यह है कि नाख़ून का नीलापन सारे नाख़ून पर एक समान है अथवा निचले भाग पर गहरा होता चला गया है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि नाख़ूनों के नीचे का पक्का लाल रंग व्यक्ति के उत्साह-सम्पन्न और अत्यधिक शक्तिशाली होने का निश्चित प्रमाण है। इसके अतिरिक्त हस्तरेखाशास्त्री को नाख़ून सम्बन्धी अपने अध्ययन को यहीं तक—पुस्तक में वर्णित प्रकारों तक—सीमित नहीं रखना चाहिए। यदि उसे इनसे भिन्न प्रकार के नाख़ून देखने को मिलते हों, तो उन्हें न केवल महत्त्व देना चाहिए, अपितु प्रकाश में भी लाना चाहिए। हमारा यह निश्चित मत है कि पुस्तक में दिये नाख़ूनों के विवरण से भिन्न प्रकार के नाख़ूनों की जांच का कार्य सरल हो जायेगा। *

9

हाथों पर बाल (रोम)

किसी जटिलता को सुलझाने और अपने मत को सुनिश्चित रूप देने में हाथों पर केशों (रोमों) की स्थिति का अध्ययन उपयोगी सिद्ध होता है। जहां सिर पर घने बालों का होना अपेक्षित होता है, वहां शरीर के अन्य भगों पर बालों का होना अनपेक्षित होता है। यह एक अस्वाभाविक स्थिति है। व्यक्ति के शरीर पर अधिक बालों का होना एक ओर उसके बलिष्ठ व सुदृढ़ होने का परिचायक है, तो दूसरी ओर उसके असभ्य व अशिष्ट होने का सूचक भी है।

प्रत्येक कार्य में हाथों का उपयोग होने के कारण सामान्यत: उन पर अधिक बाल नहीं होते, परन्तु बालों की अधिकता से व्यक्ति में शारीरिक दृष्टि से पुष्ट तथा अथक परिश्रमी होने के अतिरिक्त किसी भी गम्भीर रोग को पास न फटकने देने की अद्‌भुत निरोधक शक्ति भी होती है।

स्त्रियों के हाथों पर उगे बालों की अधिकता का अर्थ उनका स्त्री होने की अपेक्षा पुरुष होना, अर्थात् पुरुषोचित गुणों—कठोरता, अधिक श्रम करने की प्रवृत्ति तथा निर्ममता आदि—का होना है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि किसी पुरुष के हाथों पर बालों के न होने का अर्थ उसका पौरुषहीन होना कदापि नहीं। साथ ही यह भी स्मरणीय है कि शारीरिक रूप से अधिक शक्तिशाली न होने का अर्थ भी दुर्बल चरित्र का होना कदापि नहीं। ऐसा व्यक्ति सभ्य एवं अतिसंवेदनशील भी हो सकता है।

हाथों के बालों की आकृति-प्रकृति—मोटे अथवा बारीक तथा घटिया अथवा बढ़िया—व्यक्ति के चरित्र की जानकारी कराने में सहायक सिद्ध होती है। उत्कृष्ट त्वचा वाले व्यक्ति के हाथों के बाल रूखे और मोटे नहीं हो सकते। हाथों पर रूखे-मोटे बाल वाले व्यक्ति बलशाली हो सकते हैं, परन्तु सभ्य, शिष्ट और परिष्कृत रुचि वाले नहीं हो सकते। यदि किसी बढ़िया एवं सुरुचिपूर्ण वेशभूषा धारण करने वाली महिला के हाथों पर उगे बाल रूखे और मोटे हों, तो उस महिला को निश्चित रूप से फूहड़ और गंवार ही समझना चाहिए।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हाथों पर उगे बालों की आकृति-प्रकृति में

सम्बद्ध स्त्री-पुरुष के चरित्र और स्वभाव के साथ-साथ शारीरिक और मानसिक रुचि-प्रवृत्ति को भी पहचाना जा सकता है।

शरीर रचना की दृष्टि से बाल त्वचा के छिद्रों द्वारा बालों का पोषण करने वाली थैलियों से निकलते हैं। ये थैलियां त्वचा में गहराई तक जड़ें जमाये रहती हैं और शरीर के रक्त से ऊर्जा प्राप्त कर उसे बालों तक पहुंचाती हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि व्यक्ति की जीवनी शक्ति के प्रबल न होने पर इन थैलियों से बाल नहीं उगते और जीवनी शक्ति के क्षीण हो जाने पर उगे बाल रूखे-सूखे हो जाते हैं और उनका विकास अथवा बढ़ना भी रुक जाता है। अत्यन्त तीव्र ज्वर में बालों का झड़ने लगना इसी तथ्य का सूचक है। ज्वर की तीव्रता थैलियों की जीवनी शक्ति को नष्ट कर देती है, जिससे बाल निस्तेज हो जाते हैं। वस्तुत: ज्वर में रक्त की प्रबल शक्ति का मुख्य आधार लौहतत्त्व क्षीण हो जाता है। यही कारण है कि चिकित्सक रोगी को लौह की कमी को पूरा करने वाली औषधियों के सेवन का सुझाव देते हैं।

एक अन्य विचारणीय तथ्य यह है कि बालों का अपना कोई रंग नहीं होता। बालों के रंग की अनेकरूपता बालों की पोषण-थैलियों द्वारा शरीर से लिये गये लौहतत्त्व की मात्रा का परिणाम होती है। लौहतत्त्व की मात्रा और गुणवत्ता के आधार पर ही बालों का रंग काला, सुनहरा, लाल, रेशमी, भूरा, मटमैला अथवा सफ़ेद होता है।

यह एक रोचक तथ्य है कि उत्तर ध्रुव प्रदेश के, नार्वे के तथा उत्तर जर्मनी के ट्यूटानिक लोगों के बालों का रंग सुनहरी-जैसा होता है, जबकि दक्षिण भागों के निवासी लैटिन प्रजाति के लोगों के बालों का रंग काला होता है। इस भौगोलिक आधार पर सभी लोगों के बालों का वर्गीकरण इसलिए सम्भव नहीं; क्योंकि विवाह तथा अन्यान्य कारणों से विभिन्न प्रजातियों के लोग एक-दूसरे से घुल-मिल गये हैं। अत: बालों—भूरी, रेशमी तथा काले—का परीक्षण तथा इनके आधार पर चरित्र-विश्लेषण करते समय भूगोल सम्बन्धी परिवेश का तथा प्राकृतिक कारणों से मानव-शरीर में आये विकारों एवं परिवर्तन आदि पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। इन्हीं दोनों—भूगोल तथा प्रकृति—कारणों से नार्वे, स्वीडन और डेनमार्क के लोगों के बाल रेशमी-भूरे होते हैं, जबकि फ्रांस, इटली, स्पेन तथा पूर्वी यूरोप के पूर्ववर्ती देशों के लोगों के बाल काले होते हैं।

यह सर्वजनविदित तथ्य है कि उत्तरी भू-भाग के लोगों को न केवल कठोर श्रम करना पड़ता है, अपितु सर्दी, गरमी और बरसात के कष्टों को भी झेलना पड़ता है। अत: भौगोलिक कारणों से भौतिक सन्तुलित बनाये रखने में ऊर्जा के स्रोत में लौहतत्त्व के क्षीण हो जाने पर लोगों के बालों के रंग में भिन्नता आ जाना स्वाभाविक ही है।

उत्तरी भू-भाग के लोगों में ही नहीं, अपितु प्यार में भी एक प्रकार की ठण्डक होती है, ऊष्मा और उत्तेजना का अभाव होता है। साफ़-सुथरे रहने और एक साथ काम करने वाले स्त्री-पुरुषों में भावुकता अथवा कामवासना-जैसा कुछ देखने को नहीं मिलता। वस्तुत: शीत जलवायु वाले प्रदेशों के लोगों को जीवित रखने के लिए तथा अपेक्षित ऊर्जा की पूर्ति के लिए ऊष्मा उत्पन्न करने वाला लौहतत्त्व इस प्रकार खप जाता है कि कामोन्माद एवं उत्तेजना के लिए कुछ बच ही नहीं पाता। उत्तेजना और कामवासना को प्रज्वलित करने के लिए बलिष्ठ शरीर, उत्तम स्वास्थ्य, उत्कृष्ट शक्ति और जोश-भरी प्रकृति आदि की अपेक्षा रहती है।

हाथों पर भूरे बाल वाला व्यक्ति जहां सन्तुलित स्वभाव का होता है, वहां वह भावुकता और उत्साह-जैसे गुणों से रहित होता है। वह ईमानदार, अत्यधिक व्यावहारिक, कर्मठ और सहज बुद्धि वाला अवश्य होता है, परन्तु उसमें संवेदना और लगाव देखने को नहीं मिलता। वह उदासीन प्रकृति का व्यक्ति होता है। स्वीडन और नार्वे के निवासियों के बाल भूरे और भूसे-जैसा पीलापन लिए हुए होते हैं। अत: उन पर उपर्युक्त सभी विशेषताएं लागू होती हैं।

जिन व्यक्तियों के हाथों के बालों का रंग लाल, चमक या कालापन लिये हुए हो, तो रंग की गहराई के आधार पर उन व्यक्तियों में उपर्युक्त गुणों की न्यूनता-अधिकता समझनी चाहिए।

लैटिनभाषी लोगों के बालों का रंग काला होता है। वे लोग धूप और सुहावने मौसम का आनन्द लेने के आदी होते हैं। अत: उनमें भरपूर ऊर्जा और शक्ति रहती है और वे जहां प्रेम करने में बढ़े-चढ़े दिखाई देते हैं, वहां आलसी और कामचोर भी होते हैं। इसका कारण उस क्षेत्र की जलवायु है। वहां का सुन्दर और सुकोमल वातावरण मोहक-मादक है, जिससे वहां के लोग आरामपसन्द हैं। उनकी जीवनी शक्ति शरीर को ऊष्मा प्रदान करने में ख़र्च नहीं होती, अत: वे उसका उपयोग एन्द्रिय सुख उठाने और विषय-भोगों को भोगने में करते हैं। इसी प्रकार काले बालों वाले व्यक्ति निरुत्साही, अधीर, अशान्त और थोड़े-बहुत असन्तुलित प्रकृति के होते हैं। उनके बालों का कालापन उनमें आवश्यकता से अधिक ऊष्मा, ऊर्जा और स्फूर्ति का संकेतक होता है। निश्चित है कि वे अपनी इस अतिरिक्त ऊर्जा का उपयोग विषय-सुखों को भोगने में करते हैं।

काले बाल प्रबल ऊर्जा और प्रचण्ड स्फूर्ति के द्योतक अवश्य होते हैं, परन्तु भारत में सभी काले बाल वालों को एक समान विषयी समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। सभी काले बालों वाले लोग न तो समान स्वभाव के होते हैं और न ही उनकी एक-जैसी मनोवृत्ति होती है। इस देश के अधिकांश काले बालों वाले लोग व्यावहारिक होते हैं और वे अपनी ऊर्जा का उपयोगी कार्यों में सार्थक प्रयोग करते

हैं। इस प्रकार हाथों पर उगे काले बालों के आधार पर चरित्र का विश्लेषण करते समय इन तथ्यों पर ध्यान देना उपयोगी सिद्ध होता है।

हाथों पर उगे सफ़ेद बाल रक्त में लौहतत्त्व (कालेपन का आधार) की कमी के सूचक होते हैं। सफ़ेद बालों की अपेक्षा धूसर (मटमैले) बालों से रक्त में लौहतत्त्व की कुछ अधिकता होती है। वस्तुत: व्यक्ति की जीवनी शक्ति के सामान्य स्तर पर आ जाने पर उसमें बालों को भूरा रेशमी रंग देने के लिए अपेक्षित लौहतत्त्व अपर्याप्त पड़ जाता है। निरन्तर भयाक्रान्त अथवा शिरोवेदना से पीड़ित रहने वाले व्यक्तियों के बाल भी असमय में सफ़ेद होते देखे जाते हैं। इस समस्या के मूल कारणों की चर्चा अगले अध्यायों में की जायेगी।

व्यक्ति के हाथों पर उगे बालों के रंग के स्लेटी अथवा धूसर दिखाई देने पर अंगुली के सिरों के रंग की जांच करनी चाहिए। यहां काला, लाल रंग और त्वचा में लालिमा पाये जाने पर शुक्र पर्वत की स्थिति को देखना चाहिए, शुक्र पर्वत के एकदम समतल, शिथिल, दुर्बल व रेखाओं से आक्रान्त होने पर तथा हृदय रेखा के सफ़ेद एवं शृंखलाकार रेखाओं से घिरी हुई होने पर व्यक्ति को एकदम लम्पट और व्यभिचारी समझना चाहिए।

हाथ के बालों का रंग आयु के कारण स्लेटी अथवा धूसर हो गया हो, तो हाथ के पीछे की त्वचा का परीक्षण करना चाहिए। त्वचा वृद्धावस्था का संकेत देने वाली झुर्रीदार है अथवा यौवन को प्रकट करने वाली माखन-जैसी चिकनी है। त्वचा के वृद्धावस्था का संकेत देने पर बालों के रंग को स्वाभाविक—अवस्था का परिणाम—मानना चाहिए और इसके विपरीत त्वचा के रंग के रेशमी होने पर बालों के रंग के धूसरपन का कारण व्यक्ति द्वारा जीवनी शक्ति का अपव्यय समझना चाहिए। इस तथ्य की पुष्टि शुक्र पर्वत से भी हो जायेगी। किसी दु:ख-शोक अथवा आघात के कारण बालों के रंग में विकार आने की स्थिति में शुक्र पर्वत पर बनने वाली रेखा टूटी-फूटी मिलेगी अथवा उसमें अनेक द्वीप देखने को मिलेंगे। आघात का संकेत देने के लिए मस्तक और जीवन रेखाओं पर एक चिह्न भी दिखाई देगा। छोटी-छोटी रेखाओं के कटने का अर्थ व्यक्ति के निरन्तर सिरदर्द से पीड़ित रहना है।

बालों के रंग के लाल होने को व्यक्ति के रक्त में लौहतत्त्व की अधिकता समझनी चाहिए। रंग की गुणवत्ता—उत्कृष्टता-निकृष्टता, मोटा-रूखापन आदि—की परीक्षा भी आवश्यक होती है। रूखे-मोटे बालों का रंग गहरा और चटकीला होता है, जो व्यक्ति के स्वभाव के उग्र, चिड़चिड़ेपन और शीघ्र उत्तेजित होने की प्रवृत्ति का सूचक होता है। बालों की अच्छी क़िस्म से यह निश्चित समझना चाहिए कि व्यक्ति क्षणिक आवेश अथवा साधारण क्रोध की स्थिति में आने पर कभी उग्र रूप भी धारण कर सकता है। इसके विपरीत निकृष्ट कोटि के बाल व्यक्ति को

पाशविकता—युद्धप्रियता, प्रतिशोध की प्रवृत्ति, अकारण कलह और प्रचण्ड स्वभाव आदि—का द्योतक होते हैं। समग्रत: लाल बालों वाला व्यक्ति स्वभाव से झगड़ालू, क्रोधी, असहनशील तथा असभ्य होता है।

बालों का सुनहरा रंग सर्वोत्तम माना जाता है। इस रंग में लाल बालों की क्रोध और संघर्ष की प्रवृत्ति तथा काले बालों की अतिरिक्त ऊर्जा एवं स्फूर्ति का मिश्रण होता है। इस मिश्रण को उत्तम कोटि का संयोग माना जाता है। इस रंग के बालों वाला व्यक्ति भीतर-ही-भीतर सुलगती भट्टी के समान, अर्थात् शिष्टता के आवरण के कारण अपने क्रोध को प्रकट न करने और उसे भीतर-ही-भीतर पीने को विवश माना जाता है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि केवल बालों के रंग के आधार पर व्यक्ति के स्वभाव, चरित्र तथा आन्तरिक विचारों की जानकारी प्राप्त नहीं की जा सकती। अन्यान्य तत्त्वों के गहन अध्ययन और विश्लेषण के पश्चात् हाथों के बालों के रंग पर दृष्टि डालने से इस निर्णय की पुष्टि में सहायता मिलती है। *

10

हाथ : अपने समग्र रूप में

इस अध्याय में हाथ की समग्रता [illegible] में [illegible] का अर्थ है-
दोनों हाथों का पूरा [illegible] अर्थात् हथेलियों [illegible] की ओर और
अंगुलियों का स्वाभाविक रूप में पूरी तरह खुला हुआ होना। सर्वप्रथम यह देखा
जाता है कि हथेली की ओर अंगुलियों की लम्बाई में आनुपातिक समानता है अथवा
नहीं, अर्थात् अंगुलियां हथेली की अपेक्षा छोटी या लम्बी हैं या नहीं। इस परीक्षण के
अन्तर्गत ही हस्तरेखाशास्त्र के तीन जगत्—पारलौकिक, लौकिक और निकृष्ट—आ
जाते हैं जो क्रमशः इन तीन मान्यताओं के द्योतक हैं कि व्यक्ति या तो उचित बौद्धिक
उत्कर्ष से या दैनिक गतिविधि से या फिर पाशविक प्रवृत्तियों से पहचाना जाता है।
हाथ के समग्र परीक्षण से इस तथ्य का निर्णय किया जाता है कि व्यक्ति किस जगत्
से सम्बन्ध रखता है। दर्शनशास्त्र में भी व्यक्ति के अध्ययन के लिए तीन विभाजन-
आत्मा, जीव और शरीर-- किये जाते हैं। इन तीनों को हस्तरेखाशास्त्र में क्रमशः
अमर, मानसिक और पार्थिव संज्ञा दी जाती है। हस्तरेखाशास्त्र में वायु, अग्नि और
जल जैसे तीन वर्गों में अन्यान्य अनेक उपविभाजन किये जाने पर भी सर्वसम्मत
विभाजन तीन ही हैं—पारलौकिक, भौतिक और निकृष्ट।

हाथ को देखकर सर्वप्रथम यह जानना होता है कि व्यक्ति उपर्युक्त वर्गों--
पारलौकिक, लौकिक तथा निकृष्ट—में से किस वर्ग से सम्बन्ध रखता है। यहां ध्यान
देने योग्य तथ्य यह है कि हाथ की अंगुलियां अथवा ऊपरी भाग मस्तिष्क का,
अंगुलियों का मध्य भाग--अंगुलियों के तल से लेकर चन्द्र पर्वत से शुक्र पर्वत तक
जाने वाली रेखा तक- पार्थिव अथवा भौतिक तत्त्व का और अंगुलियों का निचला
भाग—शुक्र पर्वत तक जाने वाली रेखा से लेकर कलाई तक—निकृष्ट तत्त्व का
प्रतिनिधत्त्व करता है। (रेखाचित्र- 34) इस प्रकार हाथ में हस्तरेखाशास्त्र के तीनों
लोक स्थित रहते हैं।

अंगुलियां के लम्बा होने का अर्थ व्यक्ति का विकसित मस्तिष्क, अर्थात्

चिन्तनशील होना है। अंगुलियों के मध्य भाग के अधिक विकसित होने का अर्थ व्यक्ति का व्यवहारकुशल होना है। अंगुलियों के निचले भाग के अधिक प्रबल होने को व्यक्ति के निकृष्ट आचरण वाला होने का सूचक मानना चाहिए।

प्रबल मस्तिष्क लोक वाला व्यक्ति बौद्धिकता से जुड़े—अध्यापन, लेखन, पत्रकारिता, विज्ञान सम्बन्धी अनुसन्धान आदि—कार्यों को अपने व्यवसाय के रूप में अपनाने की ओर प्रवृत्त होता है। ऐसे व्यक्ति के मस्तिष्क लोक के अत्यधिक विकसित होने तथा तदनुरूप उपयुक्त कार्यक्षेत्र के न मिल पाने पर उसके कल्पनाजीवी और अव्यावहारिक बन जाने की सम्भावना भी बनी रहती है। अनेक साहित्यकारों एवं शिक्षकों की व्यावसासिक असफलता के पीछे यही कारण होता है। वे ज्ञान के भण्डार होते हैं, परन्तु अपनी योग्यता के अनुरूप स्थान न मिल पाने के कारण कुछ-कुछ कुण्ठित होते हैं, जिसके फलस्वरूप वे धीरे-धीरे अपनी व्यावहारिक सूझ-बूझ खो बैठते हैं और असामान्य दिखाई देने लगते हैं।
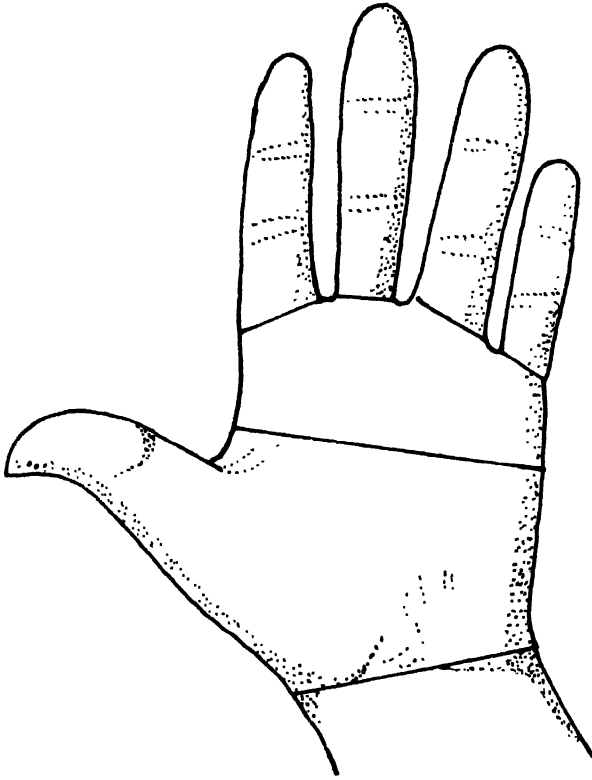
रेखाचित्र-34

मस्तिष्क के मध्य भाग के विकसित रूप वाला व्यक्ति गम्भीर, साहसी,

उच्चाकांक्षी, समझदार, व्यवहारकुशल तथा आक्रमण और प्रतिरोध की सूझ-बूझ रखने वाला होता है। ये गुण आज की परिस्थितियों से सफलतापूर्वक जूझने में भले ही अन्तिम साधन सिद्ध न होते हों, परन्तु फिर भी इन गुणों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इन गुणों वाला व्यक्ति व्यापार, राजनीति, कृषि तथा अन्य किसी भी व्यवसाय को अपनाकर सफलता प्राप्त कर सकता है। ऐसा व्यक्ति व्यावहारिकता के नाम पर बुद्धि की शक्ति को अपेक्षित महत्त्व नहीं देता। वह धन को ही अधिक महत्त्व देता है; क्योंकि उसकी दृष्टि में भौतिक उपलब्धियां ही जीवन का सार तत्त्व होती हैं।

मस्तिष्क के निम्न भाग के अधिक विकसित एवं प्रभावी होने पर व्यक्ति निकृष्ट प्रवृत्ति का और कुत्सित वासनाएं एवं दूषित इच्छाएं रखने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति कामुक होने के कारण विषयों के सुख-भोग के प्रति लम्पट बना रहता है। यदि ऐसे व्यक्ति का हाथ ऊबड़-खाबड़ और उजड्ड-सा हो, तो यह निष्कर्ष सर्वथा सटीक उतरता है। ऐसे व्यक्ति के लिए सम्मान और गौरव आदि देने वाले मानवीय मूल्यों का कोई महत्त्व नहीं होता। उसका सौन्दर्य-प्रेम अश्लीलता, वासना और कामुकता को लिये रहता है। वह धन पाने पर उसका सदुपयोग नहीं कर पाता। खाने का शौक़ीन होता है, परन्तु इस सम्बन्ध में संयम और सीमा में न रह पाने की प्रवृत्ति के कारण लोगों की दृष्टि में पेटू समझा जाता है। उसकी समझ भी धूर्तता से मुक्त नहीं होती। उसके प्रदर्शनप्रिय होने के कारण उसे वस्तुओं के संग्रह का शौक़ तो होता है, परन्तु सुरुचि और सामञ्जस्य का नितान्त अभाव ही देखने को मिलता है। उसकी सोच, गतिविधियों और चेष्टाओं में घटियापन रहता है। अत: वह प्रतिभाशालियों एवं बुद्धिजीवियों की दृष्टि में सदैव उपेक्षा और हास्य का पात्र बना रहता है।

कभी-कभी किन्हीं हाथों में तीनों लोक बराबर आकार और सन्तुलित स्थिति के हो सकते हैं। ऐसे हाथों वाले व्यक्ति के चरित्र में, विचार, कार्य और व्यवहार में एक आदर्श सन्तुलन होगा। एक लोक के दूसरे लोक पर प्रभावी न होने की स्थिति में व्यक्ति का जीवन के प्रति दृष्टिकोण कभी एकांगी नहीं होता। उलटे ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, व्यावहारिक और सन्तुलित प्रकृति का होता है। ऐसे व्यक्ति को सर्वथा निर्दोष सन्त समझने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए; क्योंकि उसमें उत्तम गुणों के साथ कुछ सामान्य दोष भी होते हैं। इस मिश्रण के कारण ही वह व्यवहारकुशल बन पाता है। वह केवल सोचता ही नहीं, अपितु अपनी सोच को व्यावहारिकता की कसौटी पर कसता भी है। इस प्रकार वह प्रतिभा और सूझ-बूझ का धनी होता है।

इस प्रकार समूचे हाथ में तीनों लोकों की सन्तुलित स्थिति व्यक्ति की सफलता को सुनिश्चित तो करती है; परन्तु यह भी विचारणीय है कि यह स्थिति संगति और अनुकूलता को लिये होनी चाहिए। विरोध और प्रतिकूलता होने पर शरीर में आने वाला आलस्य सभी गुणों और योग्यताओं को नाकारा कर देता है।

असन्तुलित हाथों में यह देखना चाहिए कि कौन-सा लोक सर्वाधिक प्रबल है और क्या वह अन्य दोनों लोकों का नेतृत्व कर सकने में अथवा उन्हें प्रभावित कर सकने में समर्थ है? तीनों लोकों में से किसी एक के अधिक लम्बा होने पर व्यक्ति का उसके प्रति आकृष्ट होना और उसका अनुसरण करना स्वाभाविक ही है।

तीनों लोकों में किस लोक का स्वरूप एवं प्रभाव अधिक है—इसे जानने के लिए विश्लेषक बुद्धि अपेक्षित है। हां, इतना निश्चित समझना चाहिए कि मध्य लोक के विकसित हुए बिना सांसारिक सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। बुद्धि प्रतिष्ठा दिला सकती है, धन-लाभ को सुनिश्चित नहीं कर सकती। मध्य लोक के उन्नत रहने पर तो व्यक्ति निकृष्ट प्रवृत्तियों के होने पर भी वित्तीय क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है।

दोनों—ऊपरी और मध्यम—लोकों में संयोजन का अर्थ मानसिक शक्ति और वित्तीय क्षेत्र में अद्भुत सफलता प्राप्त करना है। मध्य लोक और निम्न लोक के संयोजन की स्थिति में साधारण (निकृष्ट) व्यवसाय से भी अपार धन सम्पत्ति के लाभ का योग रहता है। हां, मध्य भाग के उन्नत न रहने पर व्यक्ति बौद्धिक योग्यता और प्रज्ञा-बल को खो बैठता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इससे जीवन में उसकी सफलता बुरी तरह प्रभावित होती है।

निष्कर्षतः उत्कृष्ट एवं वाञ्छनीय परिणाम को पाने के लिए हाथ का संतुलित होना अनिवार्य शर्त है। जांच के लिए हाथ के दोनों— ऊपरी और निचले—भागों को तीसरे, यानी मध्य भाग के साथ मिलाकर देखना चाहिए। *

अंगुलियां : सामान्य स्वरूप

[illegible] आदि—[illegible]

अंगुलियों के [illegible] अधिक उपयुक्त रहता है, क्योंकि प्रत्येक [illegible] पर्वत की विशेषताएं [illegible]

प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ अंगुली [illegible] पूर्व और [illegible] होती हैं, लेकिन अंगुलियों के आधार [illegible] वाले अंगूठे को अंगुली नहीं माना जाता।

अंगुलियों के सामान्य से अधिक लम्बी अथवा छोटी होने अथवा न होने का निर्णय अगले अध्याय में निर्दिष्ट मापदण्ड के आधार पर ही करना उचित है। केवल बड़ी अथवा छोटी अंगुलियों के आधार पर हाथों को बड़ा [illegible] छोटा मानने की भूल नहीं करनी चाहिए।

अंगुलियों के जोड़ों के विकास, गठन, चिकनापन और चौरसपन को देखकर सर्वप्रथम यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी जोड़ विकसित हैं अथवा केवल पहला एक अथवा कोई दो जोड़ विकसित हैं। जोड़ों के गांठदार होने पर उसके भी गुण वही होते हैं, जो गांठदार हाथों के होते हैं। जोड़ों के चिकना अथवा चौरस होने पर उनके गुण चिकने हाथों में मिलने वाले गुण जैसे होंगे। जोड़ों के परीक्षण के साथ-साथ अंगुलियों के लचीलेपन का भी तुलनात्मक विश्लेषण आवश्यक है। एक अंगुली के दूसरी अंगुली की अपेक्षा अधिक लोचदार होने पर उसमें अपने आधारस्तम्भ—पर्वत-प्रकार—की विशेषताओं की अधिकता को समझना चाहिए। अंगुलियों के सीधी, ऐंठनदार, झुकी, मुड़ी हुई, तिरछी अथवा अन्यान्य प्रकार की होने की परीक्षा अंगुली के अपनी धुरी पर घूमने के आधार पर की जाती है।

तिरछी मुड़ने वाली अंगुलियां अपनी आधारस्तम्भ बने पर्वत के गुणों में वृद्धि

करती हैं। आधारभूत पर्वत के स्वरूप का भी वैसा होना और अंगुली का अपनी धुरी पर घूम जाना नैतिक दायित्व के निर्वहण में शिथिलता का सूचक होता है। अन्तःकरण के गुणों को सुनिश्चित करने के लिए तथा नैतिकता को प्राकृतिक दोषों से पृथक् करने के लिए नाख़ूनों का, पर्वत के आकार का, जीवन रेखा का तथा पर्वत पर बनी रेखा का अध्ययन करना चाहिए (रेखाचित्र-35)।
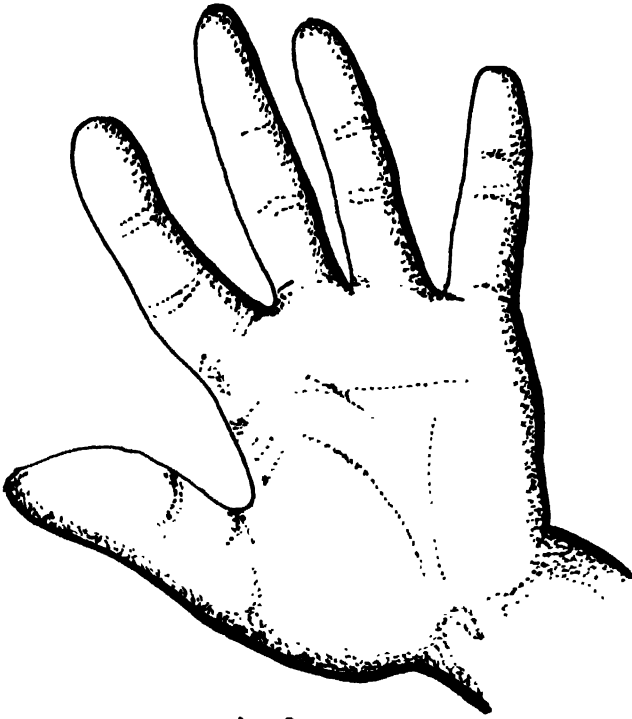
रेखाचित्र-35

प्रत्येक अंगुली के अग्रभाग का और उसकी आकृति—वर्गाकार, चमचाकार अथवा शंकुरूप—का परीक्षण भी करना चाहिए; क्योंकि प्रत्येक अंगुली अपने सम्बन्धित पर्वत के गुणों को न्यूनता एवं अधिकता प्रदान करती है।

अन्य अंगुलियों की अपेक्षा किसी एक अंगुली के अधिक सीधी और कुछ अंगुलियों के उसकी ओर झुकी हुई पाये जाने पर (रेखाचित्र-36) उस अंगुली को हाथ की सर्वाधिक समर्थ एवं शक्तिशाली अंगुली समझना चाहिए। वस्तुतः झुकी हुई अंगुली दूसरी अंगुली—जिस अंगुली की ओर झुकी होती है—को अपनी कुछ शक्ति दे देती है। यहां तक कि सीधी होती हुई भी दूसरी ओर झुकती हुई प्रतीत होने वाली अंगुली पर भी यही तथ्य लागू होता है। झुकने वाली अंगुली उस दूसरी अंगुली—जिस ओर झुक रही है—को अपने पर्वत के गुण प्रदान कर देती है। भले ही दोनों

अंगुलियों के पर्वतों के गुणों में साम्य हो अथवा वैषम्य हो।
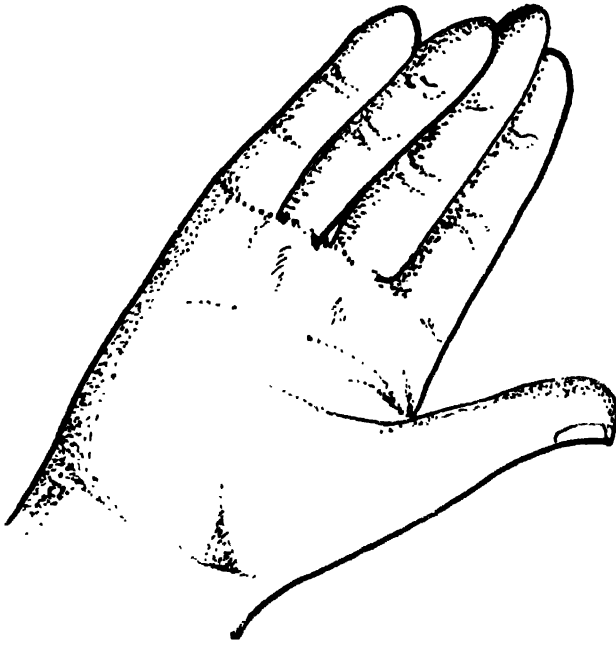
रेखाचित्र-36

स्थिर अंगुली दो प्रकार की होती है—

प्रथम, एकदम सीधी, द्वितीय, थोड़ी झुकी हुई।

इन दोनों को एक न मानकर सूक्ष्म अन्तर को गहराई से देखना-परखना चाहिए।

सन्तुलित अंगुलियां सीधी, सपाट और समानान्तर होती हैं। इस कोटि की अंगुलियां एक-दूसरे के ऊपर अथवा नीचे कदापि नहीं होतीं (रेखाचित्र-38 क, 38 ख)।

सामान्य रेखा से नीचे अंगुली समूह के ऊपर वाला पर्वत जहां नीचे वाले पर्वत की शक्ति को कम कर देता है, वहां ऊपर वाला अंगुली समूह अपने ऊपर आधार पर्वत की शक्ति को बढ़ाने वाला होता है (रेखाचित्र-38)।

उपर्युक्त रेखाचित्र-39 में निर्दिष्ट हाथ की अंगुलियों में समान रूप से सन्तुलित अंगुली समूह को उत्कृष्ट माना जाता है। परीक्षण करते समय अंगुलियों की मुद्रा—जुड़ी हुई अथवा पृथक्-पृथक्—पर विचार करना भी आवश्यक है। अंगुलियों के अपनी स्वाभाविक अवस्था में न होने पर भ्रान्त धारणा बन सकती है। हस्तरेखाशास्त्री
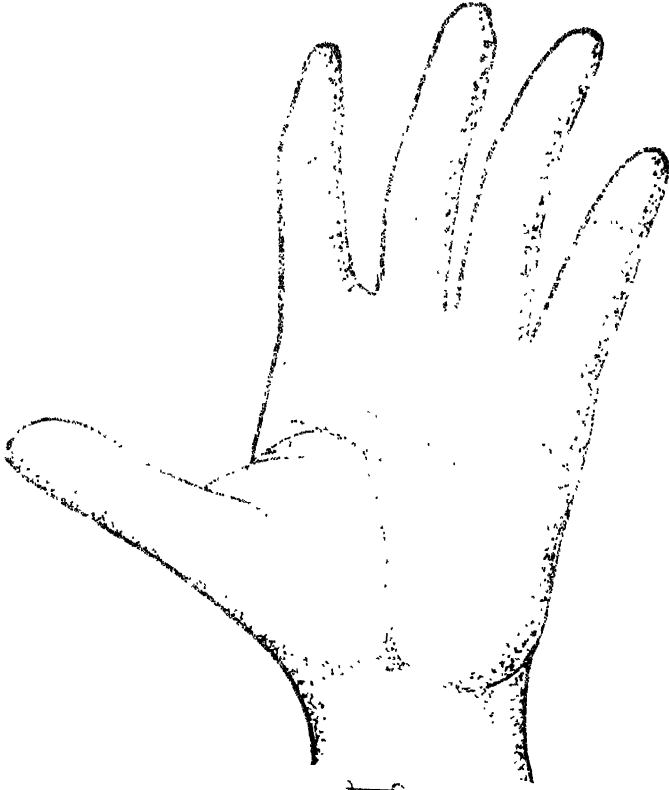
रेखाचित्र 37
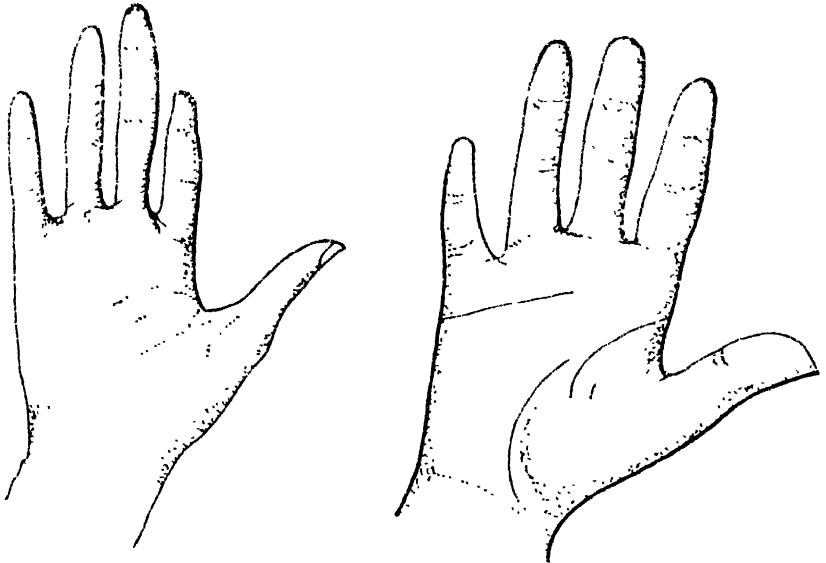
रेखाचित्र-38क व 38ख

को सम्बद्ध व्यक्ति को कोरे कागज़ पर हाथ रखने व अपने हाथ को कई बार ऊपर-नीचे उठाने का निर्देश देना चाहिए। यजमान के ऐसा करने पर हस्तरेखाशास्त्री को उसकी अंगुलियों की मुद्रा की वास्तविक स्थिति का यथार्थ ज्ञान हो जायेगा। हाथों की मुद्रा की परख की एक दूसरी विधि है—व्यक्ति को अपना हाथ बिना किसी सहारे के ऊपर की ओर बिल्कुल सीधा-सामने रखने का निर्देश देना चाहिए। इस स्थिति में भी अंगुलियों की मुद्रा--सीधापन, टेढ़ापन, जुड़ा हुआ होना तथा अलग-अलग होना आदि—की सही जानकारी का मिलना निश्चित है।
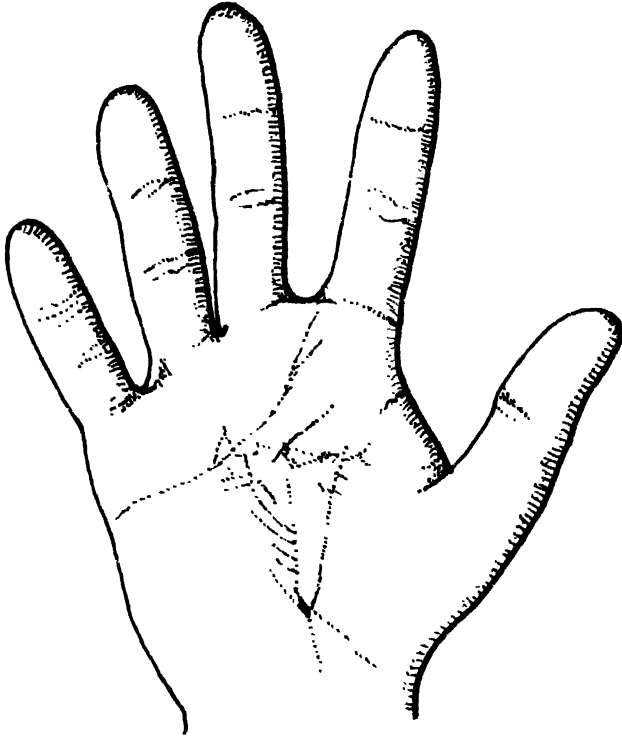
रेखाचित्र-39

हाथ की इस मुद्रा में अंगूठे और हाथ के पार्श्वभाग के मध्य पर्याप्त दूरी व्यक्ति के उदारचित्त, दानशील, स्वतन्त्रताप्रिय तथा किसी प्रकार के विरोध-अवरोध के प्रति असहिष्णु होने की सूचक है। अंगूठे के निम्नस्थ होने पर ही व्यक्ति में ये विशेषताएं देखने को मिलती हैं (रेखाचित्र-40)।

बृहस्पति और शनि पर्वत वाली अंगुलियों के बीच पर्याप्त दूरी का होना व्यक्ति को स्वतन्त्र, चिन्तनशील तथा शीघ्रता से दूसरों के प्रभाव में न आने वाला बनाता है (रेखाचित्र-41)।

शनि और सूर्य की अंगुलियों के बीच की दूरी व्यक्ति को भविष्य की चिन्ता
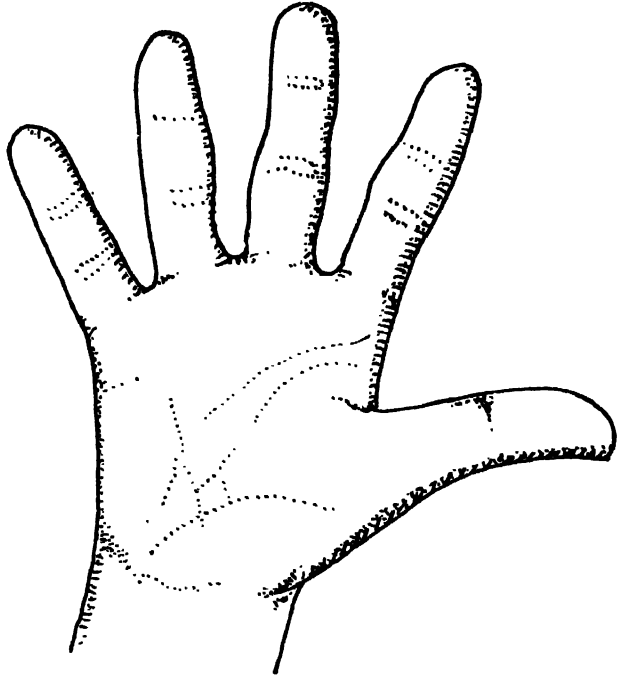
रेखाचित्र-40 व 41
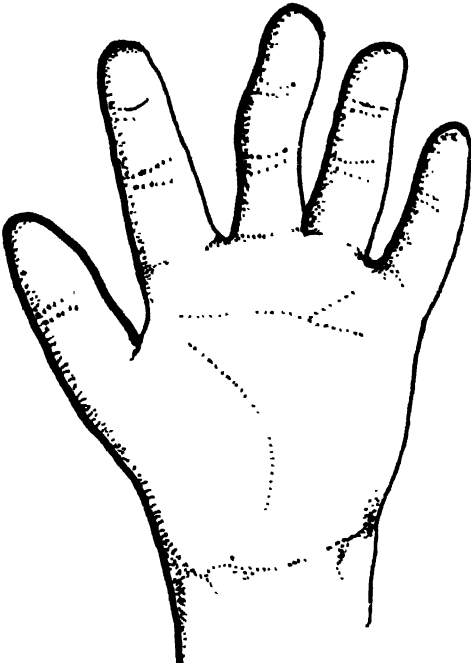
न करने वाला, प्रगतिशील, निरंकुश विचारों वाला तथा रूढ़ियों, परम्पराओं और औपचारिकताओं को पसन्द करने वाला दर्शाती है (रेखाचित्र-42)।
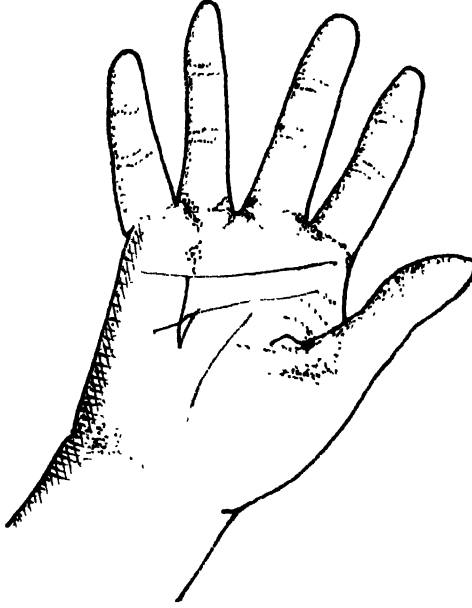
रेखाचित्र-42

सूर्य और बुध की अंगुलियों के बीच की दूरी व्यक्ति के स्वतन्त्र रूप से कार्य करने की तथा लोगों द्वारा अपने कार्य-व्यवहार की आलोचना--निन्दा, स्तुति आदि--व परवाह न करने की प्रवृत्ति वाला होने की सूचक है।

अंगुलियों के बीच की यह दूरी व्यक्ति के चरित्र के विश्लेषण करने और उसका सही परिणाम निकालने में उपयोगी सिद्ध होती है। अंगुलियों के बीच की दूरियों के संयुक्त रूप भी अलग-अलग होते हैं (रेखाचित्र-43)। ऐसा व्यक्ति स्वतन्त्र प्रकृति का होने के साथ-साथ स्वच्छन्दताप्रिय भी होता है।

शनि और सूर्य की अंगुलियों की एक-दूसरे से निकटता अथवा उनका जुड़ाव व्यक्ति के भविष्य के लिए चिन्ता का कारण होता है। अन्य अंगुलियों की एक-दूसरे से निकटता अथवा जुड़ाव व्यक्ति के स्वतन्त्र चिन्तनशील होने के साथ-साथ उसके सामाजिक प्रतिक्रिया के प्रति जागरूक होने तथा भविष्य की चिन्ता करने वाला होता है।

अंगुलियों के बीच की दूरी की अधिकता व्यक्ति के मिलनसार एवं मित्रता के
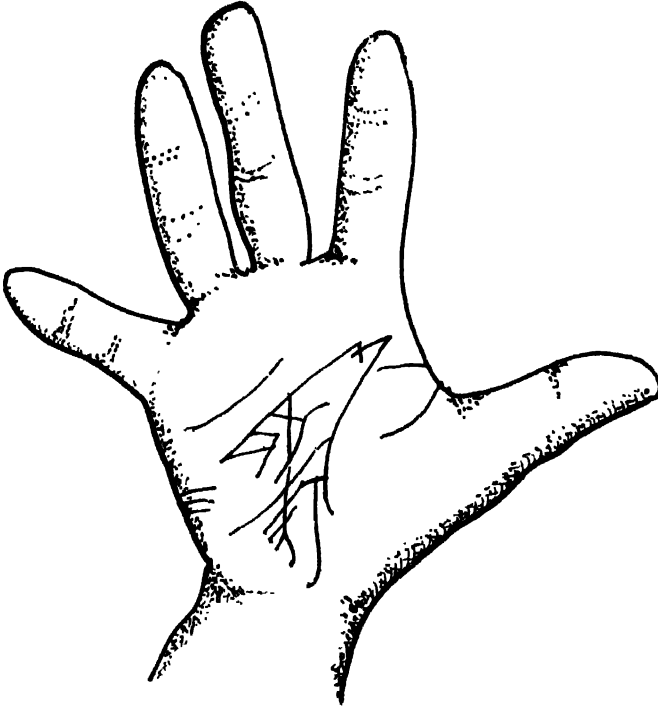
रेखाचित्र-43 व 44
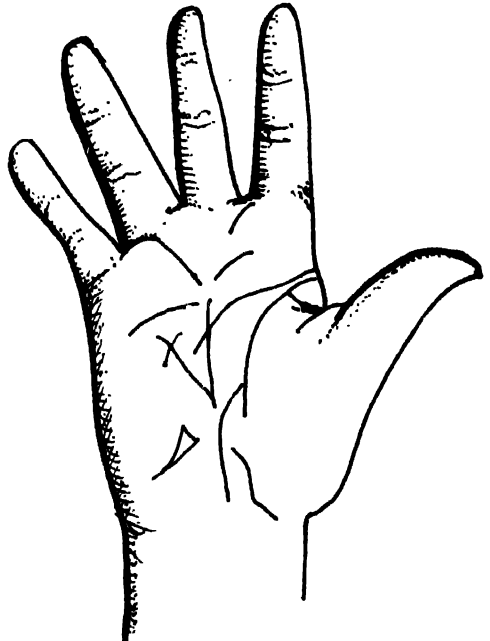
योग्य होने का संकेत देती है (रेखाचित्र-44)। अंगुलियों के बीच की दूरी की सामान्यता का अर्थ व्यक्ति से सम्पर्क बनाना कठिन कार्य नहीं होता, उससे सुविधा से मिला जा सकता है अथवा मेलजोल बढ़ाया जा सकता है।

सभी अंगुलियों के आपस में जुड़ा होने का अर्थ है—व्यक्ति से मैत्री स्थापित करना कठिन होना; क्योंकि ऐसा व्यक्ति स्वभाव से कठोर होता है और स्वतन्त्र चिन्तन कर ही नहीं पाता। वह औपचारिकताओं से जकड़ा होता है। अत: ऐसे व्यक्ति के पास जाने पर औपचारिकताओं के निर्वहण के प्रति सतर्क रहना पड़ता है। इसके अतिरिक्त ऐसा व्यक्ति अत्यन्त कृपण और सदैव भविष्य की चिन्ता से ग्रस्त रहता है (रेखाचित्र-45)।
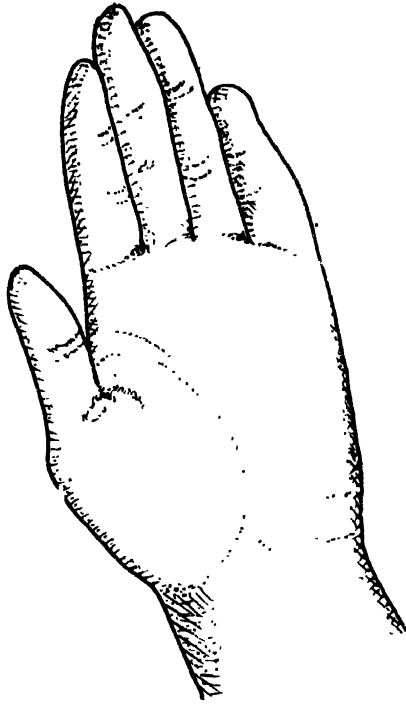
रेखाचित्र-45

हस्तरेखाशास्त्री को व्यक्ति की सभी अंगुलियों की लम्बाई, मोटाई और उनके छोर की जांच करते समय तुलना को आधार बनाना चाहिए। सन्तुलन-चक्र का काम करने वाली शनि की अंगुली सर्वाधिक लम्बी तथा बृहस्पति और सूर्य की अंगुलियां बराबर लम्बी होती है। इन दोनों—बृहस्पति और सूर्य की—अंगुलियों में अधिक लम्बी अंगुली अपने गुणों से दूसरी अंगुली को प्रभावित करती है।

अंगुलियों के अग्रभाग अथवा सिरे भी विचारणीय विषय हैं। नुकीले अथवा

पैने सिरों की अपेक्षा चपटे अथवा वर्गाकार सिरे रखने वाले व्यक्ति अधिक शक्तिशाली एवं अधिक व्यावहारिक होते हैं। बृहस्पति की और सूर्य की अंगुलियों की लम्बाई के बराबर होने पर भी वर्गाकार अथवा चपटाकार सिरे वाली अंगुली रखने वाला व्यक्ति नुकीली अथवा पैनी अंगुली वाले व्यक्ति की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक होगा। अंगुली का नुकीलापन व्यक्ति की जिज्ञासु प्रवृत्ति का सूचक है। अंगुली-विशेष की शक्ति के निर्णय के लिए सभी अंगुलियों की लम्बाई और उनके अग्रभाग की जांच-परख आवश्यक है।

बुध की अंगुली सामान्यत: सबसे छोटी होती है। प्रबल बुध वाले व्यक्ति की अंगुली तो अपेक्षाकृत और भी अधिक छोटी होती है। इसके विपरीत शनि की अंगुली सभी अंगुलियों से अधिक लम्बी होती है।

यहां इस तथ्य को नहीं भूलना चाहिए कि हाथों की अंगुलियों की लम्बाई भी व्यक्ति की ऊंचाई (क़द) के अनुसार होती है। सामान्य रूप में बुध की अंगुली सूर्य की अंगुली के प्रथम जोड़ तक पहुंचनी चाहिए। ऐसा न होने पर—अर्थात् बुध की अंगुली के सूर्य की अंगुली के पहले पोर से अधिक लम्बी होने पर—एक तो बुध की प्रबलता समझनी चाहिए और दूसरे उसे मुख्य अंगुली नहीं मानना चाहिए।

बृहस्पति की अंगुली की सामान्य लम्बाई जहां इस ग्रह की सामान्य विशेषताओं की, अधिक लम्बाई व्यक्ति में बृहस्पति के गुणों के प्रखर होने की और सामान्य से कम लम्बाई गुणों के अभाव की सूचक है। यही नियम शनि, सूर्य और बुध की अंगुलियों पर भी लागू होता है। मंगल, चन्द्र और शुक्र पर्वतों की अंगुलियां न होने के कारण व्यक्ति में इनके गुणों की स्थिति का निर्णय पर्वतों से करना चाहिए।

अंगुलियों के सिरों से नीचे की ओर, अलग-अलग बनने वाले पर्वतों का अध्ययन भी व्यक्ति के चरित्र-विश्लेषण में सहायक सिद्ध होता है।

सभी अंगुलियों में हस्तरेखाशास्त्र में निर्दिष्ट तीन—मानसिक, भावनात्मक और भौतिक—लोकों के दर्शन होते हैं। पर्वत-प्रकारों से सम्बन्धित गुणों का उपयोग किस लोक में होगा, इसे सुनिश्चित करने के लिए तीनों लोकों का अध्ययन आवश्यक है।

किसी अंगुली के प्रथम पर्व के सर्वाधिक लम्बा और बड़ा होने का अर्थ मानसिक जगत् का प्रभावी रहना और और इसी दिशा में सम्बन्धित ग्रह के गुणों का उपयोग होना है। दूसरे पर्व के सर्वाधिक लम्बा-बड़ा होने का अर्थ व्यक्ति पर व्यवसाय सम्बन्धी गुणों का प्रभाव और व्यवसाय को बढ़ाने की दिशा में उसका यत्नशील होना है। तीसरे पर्व के प्रबल होने का अर्थ व्यक्ति की निकृष्ट एवं पाशविक वृत्तियों का उस पर प्रभावी होना है (रेखाचित्र-46-47)।

प्रथम पर्व की लम्बाई अपने अनुपात में व्यक्ति को मानसिक अनुभूतियों में
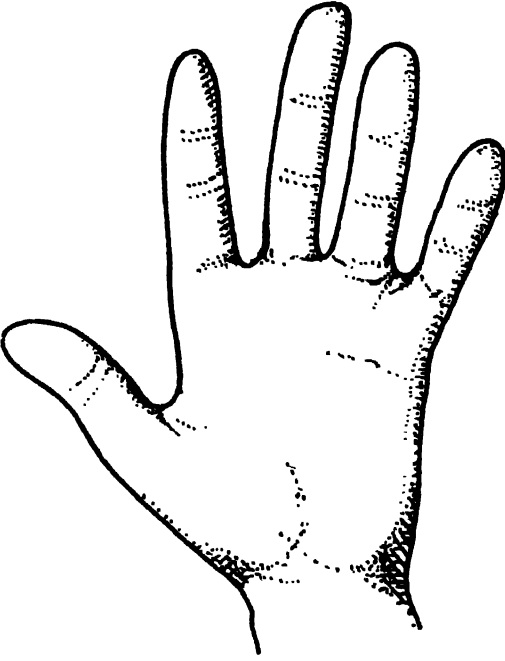
रेखाचित्र-46 व 47
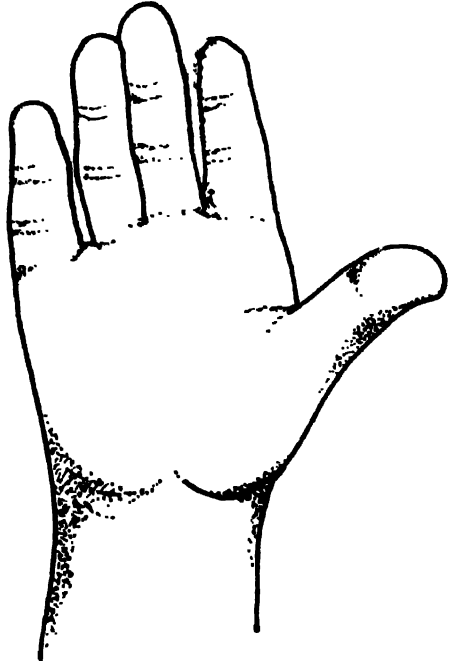
सुख-आनन्द प्राप्त करने वाला सिद्ध करती है। इस पर्व की लम्बाई के छोटा होने का अर्थ व्यक्ति का भौतिकवाद में अधिक विश्वास होना है, अर्थात् ऐसा व्यक्ति भौतिक आकर्षणों से आक्रान्त होता है।

अंगुली के दूसरे पर्व के अधिक लम्बा और सघन होने पर व्यक्ति धन के उपार्जन को अपने जीवन का उद्देश्य मानने वाला होता है (रेखाचित्र-48)। तृतीय पर्व के अधिक लम्बा और सघन होने पर व्यक्ति को खाने-पीने और विषय-भोग में आसक्त मानना चाहिए। ऐसा व्यक्ति प्राय: विलासी और आमोदप्रिय होता है। इस तीसरे पर्व का अधिक मोटापन और घनापन व्यक्ति के खाने-पीने का अत्यधिक शौक़ीन होने का सूचक है।

अंगुलियों के पहला पर्व छोटा, दूसरा पर्व सामान्य और तीसरा पर्व बहुत मोटा रखने वाला व्यक्ति मस्तिष्क की अपेक्षा रखने वाले कार्यों में रुचि-प्रवृत्ति रखने वाला नहीं होता। वह धन-कमाने तथा बढ़िया खाने-पीने को ही अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य मानता है।

प्रथम पर्वत छोटा, दूसरा पर्व सामान्य और तीसरा पर्व अत्यधिक सघन होने का अर्थ व्यक्ति खाने-पीने और मौजमस्ती का शौक़ीन तो है, परन्तु विषय-भोग में उसकी रुचि-प्रवृत्ति नहीं। तीसरे पर्व की सघनता जितनी अधिक होगी, व्यक्ति की ये विशेषताएं उसी अनुपात में अधिक विकसित होंगी। तीसरे पर्व का सामान्य विकास व्यक्ति की रुचि-प्रवृत्ति के सन्तुलित होने का सूचक है।

तृतीय पर्व की मोटाई व्यक्ति की भोग-विलास तथा ऐन्द्रिय-सुखों के उपभोग में गहरी रुचि-प्रवृत्ति की सूचक है। यह मोटाई जितनी अधिक होगी, व्यक्ति की विषयों में आसक्ति भी उसी अनुपात में अधिक होगी।

पर्वतों के विभिन्न प्रकारों के अनुरूप ही पर्वों के प्रभाव में परिवर्तन आता है। बृहस्पतिप्रधान और मंगलप्रधान व्यक्तियों की अंगुलियों के तीसरे पर्व का मोटा होना उन्हें खाओ-पिओ और मौज उड़ाओ की प्रवृत्ति वाला सिद्ध करता है। वस्तुत: पर्वों की लम्बाई जहां शक्ति की प्रतीक है, वहां पर्वों की मोटाई अथवा सघनता निकृष्टता अथवा सीमा से अधिकता की सूचक है।

तीसरे पर्व के मोटा न होकर संकरा और आकार में कमर के समान होने पर व्यक्ति को जीने के लिए खाने में विश्वास रखने वाला, अर्थात् मावन-जीवन का सही उपयोग करने वाला, बौद्धिक कार्यों में रुचि रखने वाला, अपने कार्य-व्यवसाय को गम्भीरता से लेने वाला, धन को आवश्यकता से अधिक महत्त्व न देने वाला तथा भोग-विलास में प्रवृत्त न होने वाला समझना चाहिए। (रेखाचित्र-50)

अंगुलियों के बीच की दरारें व्यक्ति के खोजी प्रकृति होने का संकेत देती है। बहुत लम्बी अंगुलियों और चौड़ी दरारें रखने वाला व्यक्ति मात्र जिज्ञासु बनकर रह
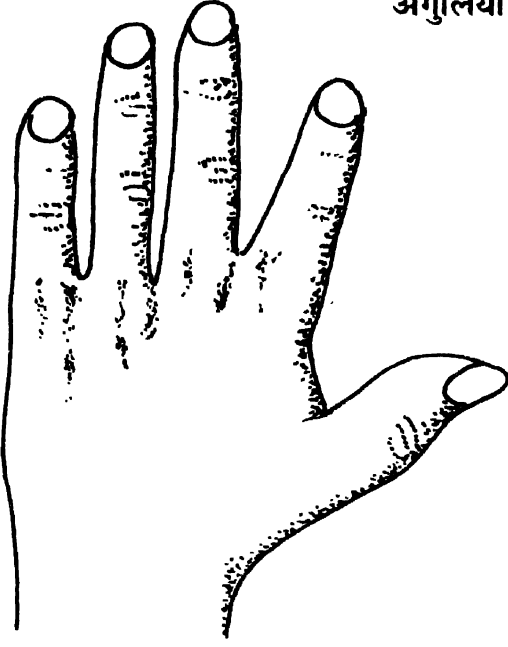
रेखाचित्र-48 व 49
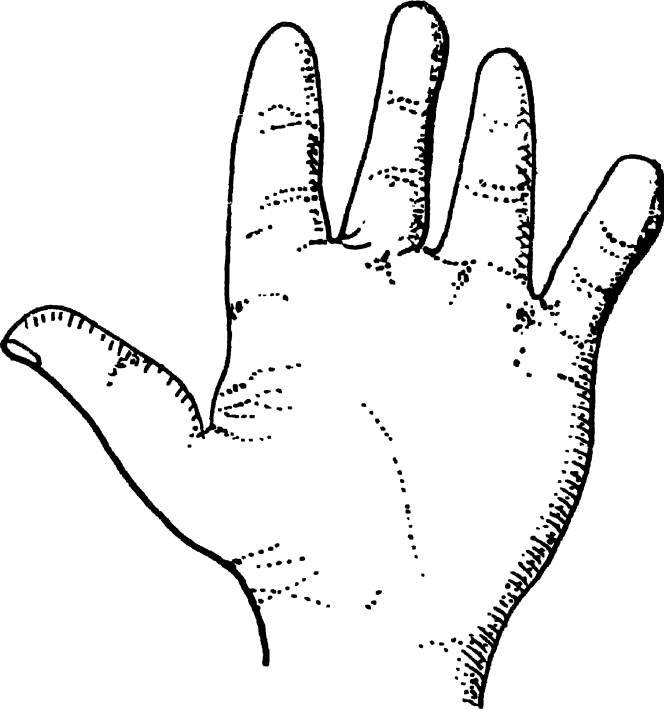
जाता है। वह प्रत्येक विषय में झांकता तो है, परन्तु गहरा उतर नहीं पाता।
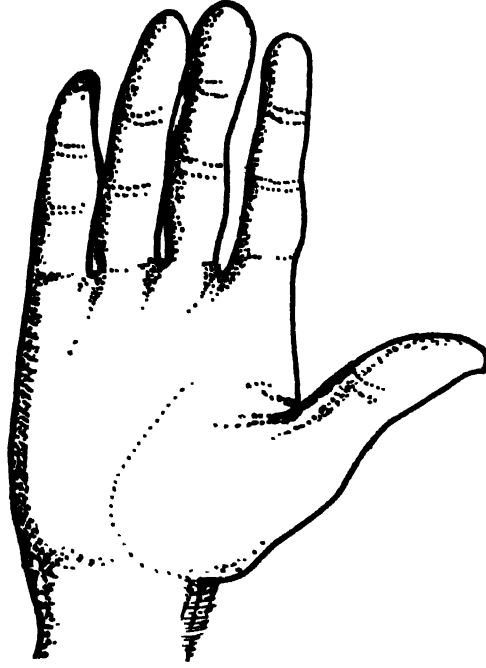
रेखाचित्र-50

तीसरे पर्व का मोटापा और उसकी सघनता व्यक्ति के सक्रिय मस्तिष्क वाला और बढ़ी हुई खोजी प्रवृत्ति का संकेत है। उसके विपरीत कटि के आकार वाला तृतीय पर्व व्यक्ति को धन की चिन्ता न करने वाला, अधिक न खाने वाला तथा खोजी एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति वाला सूचित करता है।

इस प्रकार प्रत्येक पर्व के अध्ययन में अंगुलियों के अग्रभाग पर विचार करना चरित्र-विश्लेषण में सहायक सिद्ध होता है।

अंगुली के प्रथम पर्व का लम्बापन अंगुली के आधार में विद्यमान पर्वत-ग्रहों के प्रभावोत्पादक मानसिक गुणों का संकेतक है। अंगुलियों के सिरों का नुकीलापन, वर्गाकार तथा चमचाकार होना क्रमशः इन विशेषताओं के आदर्श रूप का, व्यवहार-कुशलता का तथा मस्तिष्क की सक्रियता एवं मौलिकता का संकेत होता है।

द्वितीय पर्व का लम्बापन व्यवसाय पक्ष से सम्बन्धित होता है। सिरों का नुकीला, पैना, वर्गाकार तथा चमचाकार होना क्रमशः कलात्मकता, व्यावहारिक सूझ-बूझ तथा व्यावसायिक मौलिकता एवं सक्रियता का परिचायक है। तृतीय पर्व अंगुली के गुणों के रूप में व्यक्ति में विषयासक्ति एवं भोग-विलास में प्रवृत्ति का

सूचक है। नुकीले, वर्गाकार और चमचाकार सिरे क्रमशः सम्बद्ध पर्वत के गुणों को अत्यधिक उभारने का, अतिशय उपभोग न करने का तथा क्रियाशील एवं मौलिक होने के संकेत हैं।

प्रत्येक अंगुली के किसी पर्व का सामान्य से अधिक सघन, पतला अथवा मोटा होना व्यक्ति में सम्बद्ध पर्वत के गुणों की प्रबलता का संकेत होता है। इसी प्रकार अंगुली के नुकीले सिरे गुणों के आदर्श स्वरूप को, वर्गाकार सिरे व्यावहारिक स्वरूप को तथा चमचाकार सिरे व्यक्ति के क्रियाशील होने का संकेत होते हैं।

इस प्रकार प्रत्येक अंगुली का विश्लेषण पर्वों और अग्रभागों के अध्ययन से ही प्रारम्भ करना चाहिए तथा इसी पद्धति से व्यक्ति के चरित्र की जांच-परख करनी चाहिए।

*

12

अंगुलियों के अग्रभाग

अंगुलियों के अग्रभाग प्रायः चार रूपों—चमचाकार, वर्गाकार, शंकु आकार और नुकीला आकार—में मिलते हैं। यहां ध्यान देने की बात यह है कि किसी भी हाथ को अंगुलियों के अग्रभाग के आकार का विशुद्ध रूप नहीं माना जा सकता। अतः हाथों के स्वरूप-निर्धारण में भूल हो जाना स्वभाविक ही है। चमचाकार, वर्गाकार और नुकीली अंगुलियां और उनके इस रूप के अग्रभाग बहुत बड़ी संख्या में देखने को मिलते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार की अंगुलियों वाले हाथ 'मिश्रित हाथ' कहलाते हैं। किसी हाथ को वर्ग विशेष—वर्गाकार, चमचाकार अथवा शंकु आकार—में रखना कठिन होता है। इस सम्बन्ध में भ्रम का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इस अध्याय में अंगुलियों के वर्गाकार तथा चमचाकार अग्रभागों की चर्चा की जा रही है।

चम्मच, अर्थात् बोतल से दवाई लेकर उसे पीने के कार्य में प्रयुक्त होने वाले एक छोटे पात्र का आकार लिये रहने के कारण ही अंगुली का ऐसा अग्रभाग चमचाकार कहलाता है (रेखाचित्र-51)। अंगुलियों के सभी प्रकार के अग्रभागों के सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि अंगुलियों के अग्रभागों के माध्यम से ही अत्यावश्यक जीवनधारा शरीर में प्रविष्ट होती है। अंगुलियों के सिरे जितने अधिक नुकीले-पैने होंगे, जीवनधारा उतनी ही अधिक सुविधा से शरीर में प्रविष्ट होगी। वस्तुतः अंगुलियों के सिरे व्यक्ति और उसके स्रष्टा के मध्य अधिक सीधे सम्पर्क की स्थापना करते हैं। अधिक नुकीले सिरों वाली अंगुलियों वाला व्यक्ति अधिक व्यावहारिक एवं सूझ-बूझ रखने वाला होता है। अंगुलियों के चौड़े सिरे जीवनधारा के शरीर में प्रवेश करने में सर्वाधिक बाधक सिद्ध होते हैं। अतः नोकदार सिरों वाली अंगुलियों वाले व्यक्ति यथार्थवादी एवं व्यावहारिक होते हैं। चमचाकार सिरों वाली अंगुलियों वाले व्यक्ति जीवन में सक्रिय एवं गतिशील होते हैं। आश्चर्यजनक उत्साह, स्फूर्ति एवं गतिशीलता से ओतप्रोत उनका व्यक्तित्त्व दूसरों के लिए प्रेरणा-स्रोत बन जाता है। ऐसे लोग संघर्ष, युद्ध एवं शिकार से सम्बद्ध साहसिक कहानियों को तथा

इतिहास के सफल वीरों के जीवन चरित्र को पढ़ना पसन्द करते हैं। वे साहसपूर्ण खेलों—फुटबाल, दौड़, कबड्डी, गॉल्फ तथा टेनिस आदि—में ही विशेष रुचि रखते हैं और उन्हें ही अपने मनोरंजन का माध्यम बनाते हैं। वे जीवन को संघर्ष मानकर उसकी गतिशीलता में ही विश्वास रखते हैं। अतः युद्ध और शिकार-जैसे साहसिक कार्यों को करना और दूसरों को करते देखना-सुनना उन्हें विशेष प्रिय लगता है। वे उच्च आदर्श के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वालों को ही अपना नेता मानते हैं। ऐसे लोग कुत्ता, बिल्ली आदि घरेलू पशुओं से प्यार करते हैं तथा गम्भीर, सत्यनिष्ठ, वचन के पक्के और विश्वसनीय होते हैं।
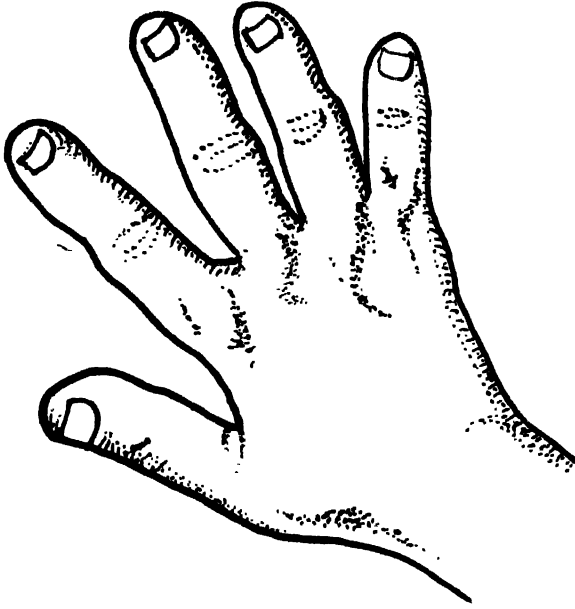
रेखाचित्र-51

अंगुलियों का नोकदार अग्रभाग जहां व्यक्ति के रूढ़िग्रस्त होने का सूचक है, वहां उसकी नये साधनों, स्रोतों और व्यवसाय-धन्धों की खोज की प्रवृत्ति को भी प्रदर्शित करता है। वस्तुतः ऐसी व्यक्ति अपनी शक्ति, ऊर्जा और प्रतिभा का अधिकाधिक उपयोग करना चाहता है और इसी कारण वह नये-नये यन्त्रों एवं साधनों के आविष्कार की दिशा में आगे बढ़ता है। वह किसी धार्मिक मान्यता से बंधने में विश्वास नहीं रखता और इस क्षेत्र में लोगों की निन्दा-स्तुति की भी परवाह नहीं करता। ऐसा व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी कुशलता का परिचय देता है और विशिष्ट

व्यक्तियों की भीड़ में भी अपनी अलग पहचान बनाये रखने में सफल होता है।

ऐसे लोग ही विशिष्ट वैज्ञानिक के रूप में लोकप्रसिद्ध हुए हैं। वे केवल खोजी ही नहीं, अपितु निर्माण और विकास को भी गति देने वाले सिद्ध हुए हैं। नये-नये क्षेत्रों की खोज का, समुद्र की गहराई और पर्वतों की ऊंचाई की थाह पाने का, दुर्गम एवं निर्जन वनों का पता लगाने का तथा मिट्टी को सोने में बदलने का श्रेय इन्हीं लोगों को प्राप्त है।

अंगुली के अग्रभाग की वक्रता सिरे पर चौकोर हो जाती है। ऐसे सिरों वाली अंगुलियों के स्वामी व्यवस्था, परम्परा, नियम और रूढ़ियों का आदर करने वाले होते हैं (रेखाचित्र-52)।
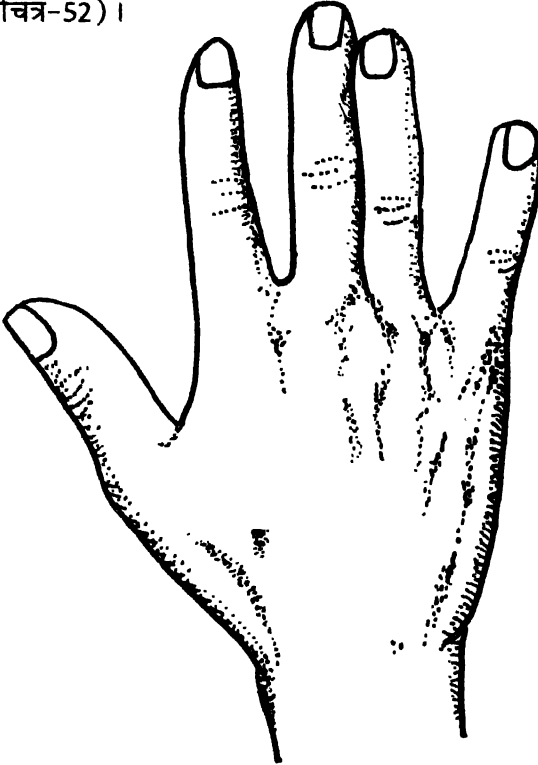
रेखाचित्र-52

ऐसे व्यक्ति—घर हो या बाहर—सर्वत्र एक प्रकार की व्यवस्था, प्रत्येक वस्तु का सही ढंग से और सही स्थान पर रखा होना, सभी कार्यों का सही समय पर और प्रचलित पद्धति से होना तथा सभी लोगों से शिष्टता से भेंट करना आदि देखने के अभ्यस्त होते हैं। वे सभी कार्य—दुकान या कार्यालय जाना, भोजन करना तथा सोना-जागना आदि—समय पर करना पसन्द करते हैं तथा दूसरों से भी ऐसी ही अपेक्षा रखते हैं। वे न केवल समय के पाबन्द होते हैं, अपितु एक समय में एक ही

कार्य निपटाने के भी पक्षधर होते हैं। उनका मस्तिष्क एक समय पर एक कार्य पर ही केन्द्रित हो पाता है। ऐसे लोग विनम्र, परम्पराओं का आदर करने वाले तथा नियमों के पालन को कर्तव्य समझने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति साहित्य, गणित, इतिहास तथा वैज्ञानिक शोध आदि विषयों में गहरी रुचि लेने वाले होते हैं। मूर्तिकला में भी ऐसे व्यक्ति विशेष निपुण पाये जाते हैं। ऐसे लोग खेलकूद में भी कीर्तिमान स्थापित करते हैं और अपनी वेषभूषा के प्रति विशेष सजग रहते हैं।

चौकोर सिरों की अंगुलियों वाले व्यक्ति जहां चिन्तन के क्षेत्र में सुव्यवस्था लिये रहते हैं, वहां उनमें कर्म की प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है। सिरे के पर्याप्त चौरस होने पर ऐसे व्यक्तियों में उपर्युक्त गुण अधिक निखरे रूप में मिलते हैं। चौरस सिरे के नुकीला होने पर व्यक्ति अपेक्षित रूप से नियमबद्ध नहीं होता। अंगुलियों का वर्गाकार सिरा बहुत उपयोगी होता है और सभी व्यावहारिक व्यक्तियों की अंगुलियों के सिरे वर्गाकार ही मिलेंगे। मुनीमों, लेखाकारों, क्लर्कों, व्यापारियों, वैज्ञानिकों एवं प्रबन्धकों के हाथों की अंगुलियों के सिरे वर्गाकार ही होते हैं। वर्गाकार सिरे सोच-विचार कर कार्य करने व सफलता प्राप्त करने के निश्चित संकेत हैं।
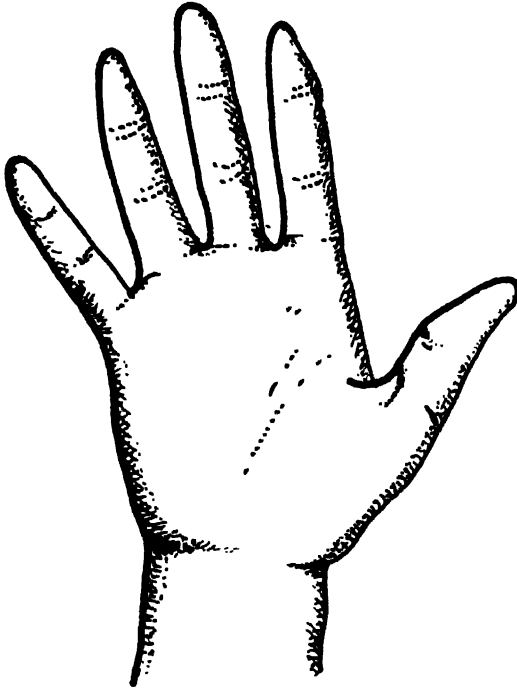
रेखाचित्र-53

स्त्रियों की अंगुलियों के अग्रभाग प्रायः नुकीले होते हैं (रेखाचित्र-53)।

अनेक पुरुषों की अंगुलियों के अग्रभाग भी नुकीले होते हैं। यदि अंगुलियों का नुकीला स्वरूप स्पष्ट न हो, तो जिस अनुपात में वर्गाकार अथवा चमचाकार स्वरूप स्पष्ट हो, उसी अनुपात में उस व्यक्ति में उन सिरों वाली अंगुलियों के गुणों के होना मानना चाहिए। यहां यह उल्लेखनीय है कि कलाकारों की अंगुलियां प्राय: आगे से नुकीली और शंकुरूप होती हैं। शंकुरूप अग्रभाग वाली अंगुलियों वाले व्यक्ति प्रत्येक पदार्थ में संगति और सामञ्जस्य देखना चाहते हैं। वे संवेदनशील होने के कारण उपयोगिता के स्थान पर सुन्दरता को अधिक महत्त्व देते हैं। सौन्दर्य-प्रेमी होने के कारण उन्हें किसी भी प्रकार के बन्धन बोझ लगते हैं। वे आंखों को प्रिय और कानों को मधुर लगने वाले दृश्य व संगीत के प्रति सहज ही आकृष्ट हो जाते हैं। वे श्रम की अपेक्षा मनोरंजन को अधिक महत्त्व देते हैं। अत: परिणाम की चिन्ता नहीं करते।

नुकीले सिरों वाली अंगुलियों वाले व्यक्ति प्रतिभाशाली तथा ओजस्वी होने के साथ-साथ अन्तर्मुखी भी होते हैं। उनका मनोबल समृद्ध होता है और वे व्यवस्था को गौरव देते हुए अपनी बुद्धि व कार्यक्षमता से किसी भी संकट से जूझने में समर्थ होते हैं।

नुकीले सिरों वाली अंगुलियों में जीवनी शक्ति के प्रवेश में कम समय लगता है। अत: ऐसे व्यक्तियों की मानसिक शक्ति अत्यन्त तीव्र और समृद्ध होती है। वे यथार्थ की अपेक्षा आदर्श को अधिक महत्त्व देते हैं तथा ऐसे व्यवसायों की खोज में लगे रहते हैं, जहां वे अपनी शक्तियों का भरपूर उपयोग करते हुए कला की सेवा कर सकें।

ऐसे लोगों का आवास सुन्दर और कलात्मक अवश्य होता है, परन्तु वहां व्यवस्था का अभाव होता है। इनकी वेषभूषा बढ़िया अवश्य होती है, परन्तु उसमें सलीक़ा देखने को नहीं मिलता। वे प्राकृतिक सौन्दर्य को अंकित करने वाले चित्रों में भी अन्त:प्रेरणा देखने के इच्छुक होते हैं। वे कला को किसी रूढ़ि में बांधने के विरुद्ध होते हैं तथा रोमांस और प्रेमाख्यान को लिपिबद्ध करने वाली पुस्तकें पढ़ना पसन्द करते हैं। ऐसे लोग स्वादिष्ट भोजन के शौक़ीन तो होते हैं, परन्तु मांसाहार को पसन्द नहीं करते। अत्यन्त भावुक, अत्यन्त संवेदनशील और सहानुभूतिपरक होने के कारण वे किसी के भी बहकावे में आसानी से आ जाते हैं। यहां तक कि प्रेम के विषय में भी एकनिष्ठ नहीं रह पाते, फिर भी उनका हृदय स्फटिक के समान स्वच्छ और निर्मल होता है। समग्रत: ऐसे लोग मोहक और आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं। अत: नुकीले सिरों वाली अंगुलियों को देखते ही व्यक्ति के आदर्श गुणों—सौन्दर्यबोध, कलात्मकता, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, उत्कृष्ट प्रतिभा, विवेक और भावुकता आदि—का भण्डार होने की कल्पना की जा सकती है।
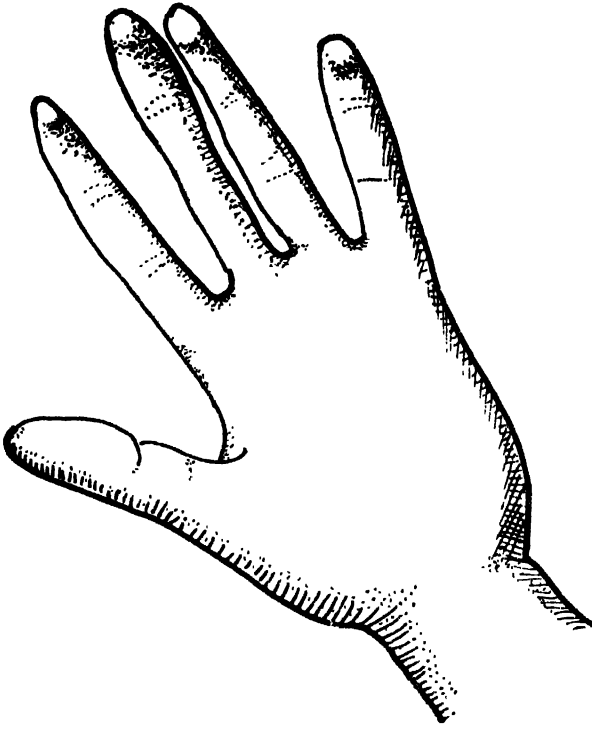
रेखाचित्र-54

नुकीले सिरों वाली अंगुलियों का एक अन्य रूप है नोकदार एवं पैने सिरों वाली अंगुलियां। इनकी बनावट कुछ इस प्रकार की होती है कि एक बार इन्हें देख लेने पर इन्हें भुलाना सम्भव ही नहीं होता। सिरों का रूप एकदम नुकीला होता है, जबकि अंगुलियां एकदम लम्बी और पतली होती हैं (रेखाचित्र-54)। इस प्रकार की अंगुलियों वाले व्यक्ति प्राय: कल्पनार्जीवी होते हैं। अत: वे किसी उद्योग या कार्य-व्यापार में सफल सिद्ध नहीं होते। वे प्राय: लकीर के फ़कीर होने के साथ आदर्श से बंधे रहने वाले होते हैं। इसी कारण न तो वे धन-सम्पत्ति को अपेक्षित महत्त्व दे पाते हैं और न ही व्यावहारिकता को अपना पाते हैं। वे सौन्दर्य-प्रेमी होने के कारण अपनी ही दुनिया में विचरण करते हैं। वे न तो कठोर श्रम करने के अभ्यस्त होते हैं और न ही किसी की प्रशंसा के भूखे होते हैं। वे दूसरों पर अपनी अच्छी छाप छोड़ते हैं और घटिया परिवेश में असन्तुलित एवं असंयत हो उठते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने को दूसरों से उत्कृष्ट और प्रयोजन-विशेष की पूर्ति के लिए ईश्वर द्वारा इस लोक में भेजा गया मानते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज में आशानुरूप सम्मान, पद, महत्त्व एवं गौरव न मिलने पर निराश व कुण्ठित हो जाते हैं।

नुकीले सिरों वाली अंगुलियों की विशेषताओं का पता न चलने तक ऐसी

अंगुलियों वाली स्त्रियों को सुन्दर माना जाता था, परन्तु अब यह धारणा बदल गयी है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि ऐसी अंगुलियां कठोर कार्य कर ही नहीं पातीं; क्योंकि इनके आकार में शीघ्र ही ख़राबी आने लगती है। अतः इन्हें शक्तिशाली नहीं माना जा सकता।

कोमल हाथों की अंगुलियों के सिरों के चमचाकार होने पर व्यक्ति प्रेमी और कार्यशील तो होता है, परन्तु स्वभाव का आलसी भी होता है। इसी प्रकार कोमल हाथों की अंगुलियों के सिरों के वर्गाकार होने का अर्थ है—व्यक्ति का अपेक्षित रूप से कम शक्तिशाली होना। नुकीले सिरों वाली अंगुलियों वाले व्यक्ति आदर्शवादी होते हैं।

बड़े अंगूठे के साथ बृहस्पति, शनि, सूर्य और मंगल पर्वतों के होने का अर्थ है कि ये पर्वत अंगुलियों के सिरों से सम्बद्ध गुणों को उत्कर्ष पर ले जा रहे हैं।

सभी प्रकार—चमचाकार, वर्गाकार तथा नुकीले—के सिरों वाली अंगुलियों के गुणों को प्रकट होने के लिए बृहस्पति व शनि आदि पर्वतों का समर्थन मिलना आवश्यक है। बृहस्पति अभिलाषा का, शनि गम्भीरता का, बुध तीक्ष्णता का, मंगल आक्रामकता का और सूर्य ऊर्जा का स्वामी एवं सहायता देने वाला है।

अंगुली के सिरे आंखों के सामने आने पर दृश्यमान स्वरूप की जानकारी देते हैं। इनके कार्यरत होने या न होने को सुनिश्चित करने के लिए बायलर के पानी और आवश्यक दहनक्रिया की व्यवस्था करनी चाहिए, अर्थात् पानी में भिगोने और आग के समीप लाने से सिरों का स्वरूप सुनिश्चित करना चाहिए।

इस प्रकार हाथों के नाख़ूनों, बालों, पर्वतों और रेखाओं आदि का समग्र रूप में अध्ययन करने के पश्चात् ही भविष्यकथन के सम्बन्ध में किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

*

13

गांठदार अंगुलियां

सामान्यतः अंगुलियां दो प्रकार की— चिकनी-सपाट या गांठदार जोड़ों वाली ही होती हैं (रेखाचित्र-55)। अंगुलियों के ये दो रूप व्यक्ति की भिन्न प्रकृति को सूचित करते हैं। युवकों की अंगुलियां प्रायः चिकनी-सपाट और परिपक्व आयु वालों की अंगुलियां गंठीली (गांठदार जोड़ों वाली) होती हैं। हां, अपवाद तो सब कहीं होता है।
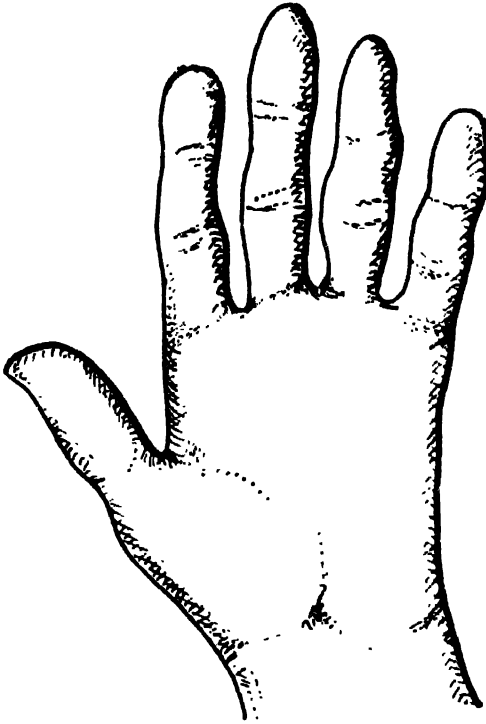
रेखाचित्र-55

अंगुलियों के जोड़ों में शीघ्र गांठों का निकल आना व्यक्ति को दार्शनिक गुणों वाला सिद्ध करता है। बड़ी आयु का होने पर लोगों की अंगुलियों के जोड़ों में गांठों

का निकलना भी इसी तथ्य का समर्थन करता है। बड़े-बूढ़े समय के साथ प्रायः अधिक चिन्तनशील और विश्लेषक प्रवृत्ति के हो जाते हैं।

अंगुलियों के केवल प्रथम जोड़ का विकसित होना मस्तिष्क की सन्तुलित विशेषताओं को दर्शाता है। भौतिक लोक के प्रतिनिधि द्वितीय जोड़ का विकसित होना व्यक्ति को घर और कार्यालय में सुरुचिपूर्ण व्यवस्था रखने वाला बनाता है। दो गांठों का मिला होना दोनों—मानसिक और भौतिक—क्षेत्रों में व्यवस्था का सूचक है। ऐसा व्यक्ति मन्दगति से, फूंक-फूंक कर पांव धरने वाला, तर्कशील और विश्लेषक प्रकृति का होता है। ऐसे व्यक्ति बिना जांच-परख के न किसी बात को सत्य मानते हैं और न ही किसी पर विश्वास करते हैं। वे प्रत्येक तथ्य को अपनी सूझ-बूझ और व्यावहारिक अनुभव की तुला पर तोल कर ही कोई निर्णय लेते हैं। उनमें भावुकता तथा आवेश से काम लेने की प्रवृत्ति का नितान्त अभाव होता है।

सत्यान्वेषी दार्शनिकों की अंगुलियां प्रायः गांठदार होती हैं। ऐसे लोग सोच-समझकर और धैर्य से कार्य करने के अभ्यस्त होने के कारण कठिन समस्याओं को आसानी से सुलझा लेते हैं। वे किसी भी वस्तु अथवा व्यक्ति को अपनाने से पूर्व उसकी भली प्रकार जांच पड़ताल करते हैं। अनुकूल एवं सही पाये जाने पर ही उसे अपनाते अथवा अपनाने को उद्यत होते हैं। यही कारण है कि वैज्ञानिकों और इतिहासकारों की अंगुलियां जहां गांठदार जोड़ों वाली होती हैं, वहां प्रेम-कथाकारों की अंगुलियां नितान्त भिन्न होती हैं। वस्तुतः गांठदार अंगुलियां कर्मशक्ति और गहरी सूझ-बूझ की परिचायक होती हैं। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, ऐसे लोग जहां किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व अध्ययन, विश्लेषण आदि का आश्रय लेते हैं, वहीं वे अपने निष्कर्ष निर्णय को आसानी से नहीं बदलते। वे बिना किसी प्रमाण के किसी तथ्य पर न तो विश्वास करते हैं और न ही समर्थन।

इस प्रकार गांठदार जोड़ों वाली अंगुलियों वाले व्यक्ति तार्किक, अनुसन्धानकर्ता, विचारक और दार्शनिक होते हैं। उन्हें निर्णय लेने में देर अवश्य लगती है, परन्तु उनके निर्णय उनकी गहरी सूझ-बूझ के परिचायक होते हैं। वे भौतिक प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने में और उनकी गति पर नियन्त्रण रखने में सफल होते हैं।

यह स्मरणीय है कि प्राणवायु अंगुलियों के अग्रभाग में प्रवेश करके बुद्धि को भी दमकाती है, जिसे प्रथम मानसिक गुणों वाली गांठों अथवा द्वितीय भौतिक गुणों वाली गांठों द्वारा आत्मसात् किये जाने के बाद आगे जाने दिया जाता है। इस प्रक्रिया के कारण ही दार्शनिक-तात्त्विक गुणों वाली गांठों से किसी विचार का फिसलना सम्भव नहीं होता।

चिकनी व एकसार अंगुलियों में भी गांठें पड़ सकती हैं और पड़ जाती हैं। *वस्तुतः कुछ लोगों में आयु बढ़ने के साथ चिन्तन एवं तर्कशक्ति विकसित हो जाती*

है। यही कारण है कि युवकों की अपेक्षा वृद्धों के हाथों की अंगुलियां प्रायः गांठदार मिलती हैं। वस्तुतः आयु के बढ़ने के साथ व्यक्ति में ठहराव आ जाता है। जल्दबाज़ी, आवेश और आवेग का स्थान धैर्य, तर्क और विश्लेषण ले लेता है।

यद्यपि श्रम की अपेक्षा चिन्तन और विश्लेषण की प्रवृत्ति अंगुलियों के जोड़ों में गांठों को जन्म देती है, तथापि यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक गांठदार अंगुलियों वाला व्यक्ति ख्याति-प्राप्त, तार्किक अथवा लब्धप्रतिष्ठ वैज्ञानिक ही हो। गैस की खाइयों में कार्यरत श्रमिक भी विद्वानों के समान सोच-समझकर कार्य करने के अभ्यस्त होते हैं। कठोर श्रम करने वाले कुछ लोगों की अंगुलियां कोमल व चिकनी भी देखने को मिलती हैं। इससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि गांठें परिश्रम से नहीं, अपितु मानसिक गुणों से बनती हैं (रेखाचित्र-55)। यह हम अपने गहन अध्ययन और परीक्षण के आधार पर ही कह रहे हैं।

मानसिक गुणों की सूचक गांठ के सामान्य आकार का होने का अर्थ है--व्यक्ति समझदार, प्रतिभाशाली, सोच-विचार करने वाला, सतर्क और व्यवस्थित ढंग से काम करने की प्रवृत्ति वाला है। हां, इस गांठ का अत्यधिक विकसित रूप व्यक्ति के सनकी और पागल होने का संकेत देता है (रेखाचित्र-56)। ऐसे व्यक्ति ऊंची उड़ानें तो भरते हैं, परन्तु अपने चिन्तन को कार्यरूप में परिणत नहीं कर पाते। वस्तुतः इन लोगों की व्यावहारिक बुद्धि अविकसित होती है, जिससे इनके चिन्तन और आचरण में ताल-मेल नहीं बैठता और इनका मानसिक सन्तुलन बिगड़ा हुआ होता है (रेखाचित्र-56)।

द्वितीय, अर्थात् भौतिक गुणों वाली गांठ के विकसित होने का अर्थ है—व्यक्ति सांसारिक विषयों में रुचि लेता है, अपने घर, कार्यालय तथा आस-पास को साफ़- सुथरा रखता है, वेशभूषा के प्रति सतर्क तथा बन-ठन कर रहने में विश्वास रखता है।

अंगुलियों के अग्रभागों के वर्गाकार होने का अर्थ है—व्यक्ति—स्त्री हो या पुरुष, स्वामी हो अथवा सेवक—का व्यवस्था से कसकर बंधा हुआ तथा कठोर अनुशासनप्रिय होना।

प्रथम गांठ के साथ अंगुलियों के चमचाकार सिरों वाला होने का अर्थ है--व्यक्ति का अत्यधिक सनकी और दुराग्रही होना। कारण स्पष्ट है—गांठ वाली चमचाकार अंगुलियों से निकलने में जीवनी शक्ति को रुकावट का सामना करना पड़ता है, जिससे व्यक्ति कठोर यथार्थवादी बन जाता है। नुकीले (नोकदार) सिरे गांठों की कठोरता को घटा देते हैं। उत्कृष्ट गठीले हाथ आदर्श एवं दार्शनिक रुचि के मिश्रित रूप के सूचक होते हैं। इस स्थिति में यथार्थवाद उग्र रूप धारण नहीं कर पाता। नुकीले अग्रभागों और गांठदार अंगुलियों वाले व्यक्ति धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं।

नुकीलापन संशय को विश्वास में बदलने का प्रतीक है। चमचाकार तथा वर्गाकार सिरों वाली तथा गठीले जोड़ों वाली अंगुलियां रखने वाले व्यक्ति सन्देहशील तथा अत्यन्त भौतिक प्रवृत्ति के होते हैं, वे किसी भी वस्तु के अस्तित्त्व की परख किये बिना उस पर विश्वास नहीं करते।
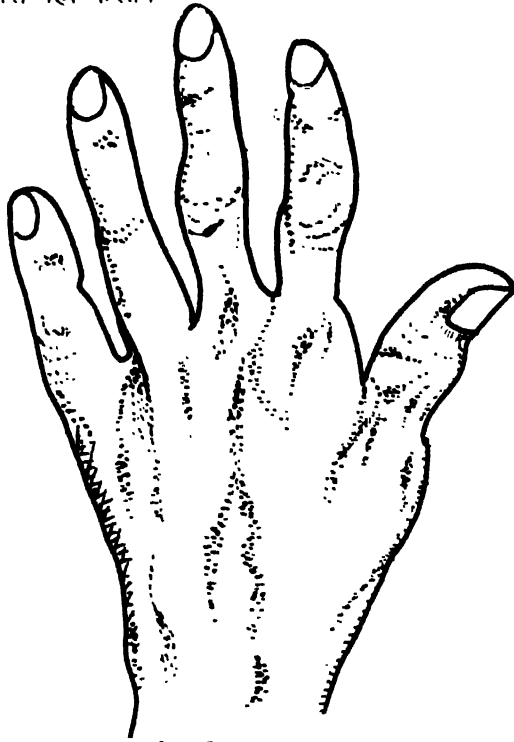
रेखाचित्र-56

गठीले हाथों के सम्बन्ध में किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व सर्वप्रथम उनमें सामञ्जस्य की जांच-परख करनी चाहिए। हाथों की कोमलता (वास्तव में शिथिलता) व्यक्ति के स्वभाव में आलस्य का संकेत होती है। अत: हाथों के गठीलेपन के साथ उनकी कठोरता, कोमलता तथा लचीलेपन आदि को देखना अत्यन्त आवश्यक होता है। इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि गांठदार हाथ वाले व्यक्ति कभी लचीले नहीं होते। वे सदैव अपने अध्ययन और अनुभव के आधार पर ही किसी सत्य को स्वीकार करते हैं। ऐसे लोगों की अंगुलियों की गांठें इतनी स्पष्ट होती हैं कि इन्हें देखते ही पता चल जाता है। स्पष्टता के अभाव का अर्थ अंगुलियों का गठीला न होना ही समझना चाहिए।

गांठों के अत्यधिक उभार के कारण भद्दी दिखाई देने वाली अंगुलियों से यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि व्यक्ति में गांठदार अंगुलियों के गुणों की प्रबलता है।

अंगुलियों के आस-पास, आगे-पीछे अथवा दायें-बायें, त्वचा के नीचे की हड्डी के समीप छल्ला अथवा चक्र का आकार दिखाई देने पर गांठों के गुणों को अतिशय विकसित होना समझना चाहिए। स्पष्ट है कि यह अच्छे प्रभाव को पूरी तरह नकारने वाला होता है। गांठदार अंगुलियों के पहले पोर के भीतर की ओर मुड़ा होने पर व्यक्ति की सोच में कठोरता, अर्थात् नये विचारों को ग्रहण करने में उदासीनता की प्रबलता समझना चाहिए। *

14

चिकनी अंगुलियां

चिकने हाथों की अंगुलियों में गठीली अंगुलियों में पाये जाने वाले उभरे हुए जोड़ नहीं मिलते। चिकनी अंगुलियों का अग्रभाग तो किसी भी प्रकार का हो सकता है, परन्तु अन्तर की पहचान का आधार है—गांठें। गंठीली अंगुलियों वाले व्यक्ति जहां तर्कशील और विश्लेषक प्रवृत्ति के होते हैं, वहीं चिकनी अंगुलियों वाले व्यक्ति आवेग, प्रेरणा और अन्तर्ज्ञान आदि गुणों के धनी होते हैं।

हस्तरेखाशास्त्र में चिकनी अंगुलियां कलात्मक मानी जाती हैं, परन्तु ऐसी अंगुलियों वाले व्यक्ति कलाबोध रखते हैं अथवा नहीं, इस तथ्य की जानकारी अंगुलियों के अग्रभागों के नुकीले होने अथवा न होने से मिलती है। नुकीला अग्रभाग जीवनी शक्ति के प्रवेश में बाधक नहीं होता। अत: व्यक्ति आदर्शवादी होता है। कुछ लोग ऐसी अंगुलियों वाले व्यक्तियों को सच्चा कलाकार मानते हैं। कुछ मिश्रित रूप—बाह्य रूप गांटदार और अग्रभाग वर्गाकार अथवा चमचाकार—की अंगुलियां रखने वाले व्यक्ति कलाकार न होकर शिल्पी भी होते हैं। ऐसे कुछ व्यक्ति तो अत्यन्त उत्कृष्ट कोटि के कारीगर होते हैं। वस्तुत: इन अंगुलियों के गहन परीक्षण के उपरान्त ही व्यक्ति के सम्बन्ध में भविष्यकथन करना चाहिए।

चिकनी अंगुलियों वाले व्यक्ति निस्सन्देह प्रेरणा, आवेग और अन्तर्ज्ञान से काम लेते हैं, परन्तु कोई पग उठाने से पूर्व वे गहरे ढंग से सोच-विचार नहीं करते। प्रतिभासम्पन्न होना एक बात है और प्रतिभा का व्यावहारिक उपयोग करना दूसरी बात है। अपने सुन्दर सपनों को कैनवस पर उतार पाने वाले ही सपनों की सुन्दरता का दावा कर सकते हैं। ऐसे सफल व्यक्तियों ने सदियों से अपना अद्वितीय स्थान बनाये हुए ऐसे अत्यन्त मूल्यवान् चित्रों की सृष्टि की है, जिनकी तुलना के चित्र आज दुर्लभ हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस परिवर्तनशील संसार में जन्म-मृत्यु के चक्र में घूमते असंख्य लोगों की भीड़ में विरले ही अपनी अमर कलाकृतियों द्वारा अपने को अजर-अमर बनाने में सफल होते हैं।

चिकनी अंगुलियां, कोमल-मांसल हाथों और छोटे अंगूठे वाले व्यक्ति कोरे

स्वप्नद्रष्टा होते हैं। वे आज का काम कल पर छोड़ने के आदी होने के कारण कभी किसी काम को निपटा ही नहीं पाते। इसके विपरीत अंगुलियों के गांठदार होने के साथ-साथ उन अंगुलियों के शीर्ष भागों के वर्गाकार होने पर व्यक्ति विद्वान् न होने पर भी सामान्य ज्ञान से सम्पन्न होते हैं। वस्तुत: उनका बड़ा अंगूठा उन्हें निश्चयशक्ति प्रदान करता है। अत: इन्हें संकल्प के धनी कहा जा सकता है। इसी से वे अपने चिन्तन को तत्काल कार्यरूप दे डालते हैं। ऐसे व्यक्ति प्राकृतिक दृश्यों की अपेक्षा भौतिक वस्तुओं का चित्रण करते हैं। इनकी अनुभूति इसी रूप में अपनी अभिव्यक्ति पाती है। इनके चित्रों को 'पेंटिंग' का नाम दिया जाता है, जो हाट केक (गरम जलेबी) के समान बिकते हैं। इनकी अंगुलियों के कलात्मक न होने पर भी इन्हें 'सफल कलाकार' के रूप में मान्यता प्राप्त होती है। इनकी सफलता का आधार इनकी उत्कृष्ट प्रतिभा न होकर इनका परिश्रम, दृढ़ निश्चय और सामान्य अनुभव होता है। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे अपनी कल्पनाओं को साकार रूप देने में सफल होते हैं।
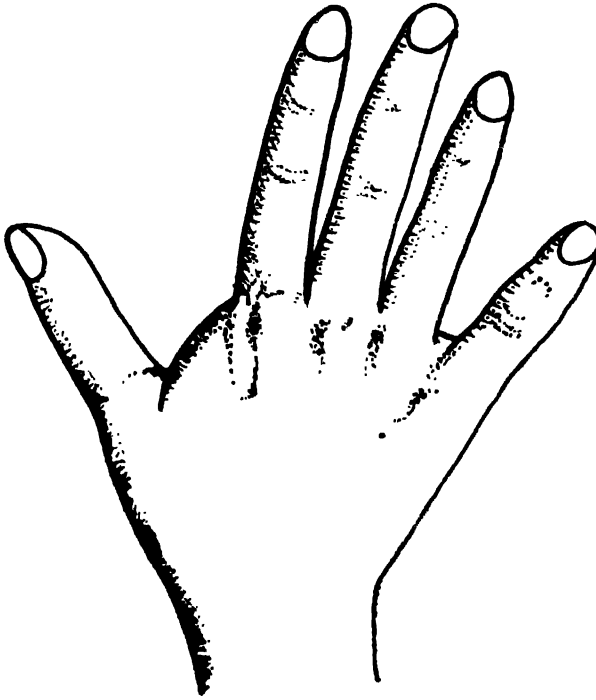
रेखाचित्र-57

चिकनी व एकसार अंगुलियों में जीवनी शक्ति बिना किसी बाधा के प्रवाहित होती है। ऐसी अंगुलियों वाले व्यक्ति कला-प्रेमी होते हैं। वे शीघ्र निर्णय लेने वाले

व तर्क की अपेक्षा अन्त:प्रेरणा को वरीयता देने वाले होते हैं तथा गहरी छानबीन के झंझट में नहीं पड़ते। वे लोग अपनी कलात्मक रुचि के साथ-साथ सौन्दर्योपासक होते हैं, परन्तु ऐसी अंगुलियों वाले सभी व्यक्ति सृजनशील नहीं होते। हां, चिकनी अंगुलियों से यह संकेत अवश्य मिलता है कि व्यक्ति आवेगशील, शीघ्र निर्णय लेने वाला, सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि वाला तथा कला में गहरी रुचि रखने वाला है। इसके अतिरिक्त ऐसी अंगुलियों वाले व्यक्ति तर्क-प्रधान और संशयशील न होने के कारण धर्म में भक्तों के समान अगाध निष्ठा रखते हैं। वे दूसरों की श्रद्धा को भी बड़ा गौरव देते हैं। ऐसे व्यक्ति गठीली अंगुलियों वाले व्यक्तियों के समान प्रत्येक वस्तु में मीन-मेष निकालने वाले नहीं होते। वे अपने निवास और कार्यालय को ही नहीं, अपितु अड़ोस-पड़ोस को भी साफ़-सुथरा रखने-देखने के आदी होते हैं। लेटिन राष्ट्रों के चिकनी एवं भरी-भरी अंगुलियों वाले लोगों द्वारा अपने गिरजाघरों को ख़ूब सजाना उनकी इस प्रवृत्ति का ही एक नमूना है। इसके विपरीत गठीली-वर्गाकार अंगुलियों वाले प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय के लोग सादगीप्रिय होते हैं।

चिकनी अंगुलियों का निरीक्षण-परीक्षण करते समय हाथ की क़िस्म पर भी विचार करना आवश्यक होता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि चिकनी अंगुलियों वाले व्यक्तियों के आवेगशील और अन्तर्ज्ञान-सम्पन्न होने का अर्थ यह कदापि नहीं लेना चाहिए कि उनका चरित्र भी उच्च स्तर का है तथा वे उच्चकुल से सम्बन्धित हैं। कभी-कभी तो साधारण परिवारों के तथा अशिक्षित लोगों के हाथों की अंगुलियां भी चिकनी होती हैं। हां, यह निश्चित है कि चिकनी अंगुलियों वाले व्यक्ति भले ही बढ़िया हाथ रखते हों अथवा घटिया, भले ही वे ऊंचे परिवार के हों अथवा निचले स्तर के, परन्तु आवेग और अर्न्तदृष्टि से वे सम्पन्न, सौन्दर्यप्रेमी, भावुकता में बह जाने वाले और तत्काल निर्णय लेने वाले तथा शीघ्र कार्य में प्रवृत्त होने वाले अवश्य होते हैं। वे अपने व्यवसाय की सफलता के प्रति सदैव चिन्तित और शंकाकुल रहते हैं, परन्तु उन्हें माथापच्ची करना बड़ा ही कष्टप्रद लगता है। अत: वे अपने कार्य को निपटाने के लिए दूसरों की सलाह पर सहज ही विश्वास कर लेते हैं। इससे वे गांठदार अंगुलियों वाले व्यक्तियों की अपेक्षा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में द्रुतगति से आगे बढ़ते हैं। चित्रकला एवं संगीतकला में चिकनी अंगुलियों वाले व्यक्ति दूसरे प्रकार की अंगुलियों वाले व्यक्तियों की तुलना में भले न ठहर पायें, परन्तु अभिनय के क्षेत्र में तो इनका बोलबाला पाया जाता है। इन्हें इस क्षेत्र में न केवल यश और ख्याति मिलती है, अपितु धन-सम्पत्ति भी पर्याप्त मिलती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि मौलिकता और स्वाभाविकता का जैसा मनोरम प्रदर्शन अभिनय के क्षेत्र में किया जा सकता है, वैसा चित्रकला में सम्भव नहीं। चिकनी अंगुलियों वाले व्यक्ति अभिनय को सजीव रूप देने में सिद्धहस्त होते हैं। इस कला के द्वारा वे अपनी किसी

हानि को भी लाभ में बदल देते हैं। वे न तो कभी किसी अवसर को हाथ से जाने देते हैं और न ही अपनी मानसिक शान्ति को विक्षुब्ध होने देते हैं।

आत्मा को झकझोर कर रख देने वाले तथा अन्तरात्मा की सहज, निश्छल और आवेगपूर्ण अभिव्यक्ति के फलस्वरूप संगीत के क्षेत्र में भी चिकनी अंगुलियों वाले व्यक्तियों ने अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। इस क्षेत्र में चिकनी अंगुलियों वाले विशिष्ट निपुणता प्राप्त न करने वाले व्यक्ति भी साधारण गीत, भजन आदि के गाने में कुशल पाये जाते हैं। वस्तुतः संगीत कोमल हृदय की भावपूर्ण अभिव्यक्ति है। गठीली अंगुलियों पर मस्तिष्क का नियन्त्रण रहता है, जबकि चिकनी अंगुलियों वाले व्यक्ति भावुक और संवेदनशील होते हैं।

यही कारण है कि चिकनी अंगुलियो वाले व्यक्ति संगीत की गहराइयों में उतरने में और उसकी ऊंचाई को छूने में अधिक समर्थ होते हैं। ऐसी अंगुलियों वाले व्यक्तियों में ही अन्तःप्रेरणा होती है।

प्रायः देखा गया है कि चिकनी अंगुलियों के वर्गाकार, चमचाकार और नुकीले छोरों वाले व्यक्तियों को क्रमशः प्रयाण गीतों, समूह गीतों तथा कल्पनालोक के गीतों की रचना में कुशलता प्राप्त होती है। तीनों--वर्गाकार, चमचाकर और नुकीले—प्रकार के छोरों वाली अंगुलियों में चिकनापन होना एक अनिवार्य शर्त है।

चिकनी अंगुलियों वाले व्यक्ति प्रायः सफल व्यवसायी होते हैं। वे न केवल नये विचारों की कल्पना करते हैं, अपितु उन्हें मूर्तरूप भी देते हैं। वे पुराने व्यापारियों के समान बचत को महत्त्व न देकर अपने व्यापार-धन्धे के अधिकाधिक प्रसार-विस्तार में विश्वास रखते हैं। उनमें अत्यधिक ऊर्जा और प्रचण्डता होती है। वे शीघ्र निर्णय लेने वाले होते हैं। अपनी इसी जल्दबाज़ी के कारण उनसे ग़लतियां भी हो जाती हैं, परन्तु उनकी एकदम सीधी व प्रबल मस्तक रेखा ग़लतियों से उनका बचाव कर लेती हैं।

अंगुलियों के नुकीले अग्रभागों वाले व्यक्ति का कलात्मक पक्ष भी अत्यन्त प्रबल होता है। अंगुलियों के अग्रभागों के वर्गाकार होने पर व्यक्ति अपनी व्यावहारिक, तीव्र तथा चिन्तनशील प्रेरणा का भी सही उपयोग करते हैं तथा किसी प्रकार के आदर्शवाद के पचड़े में नहीं पड़ते। अंगुलियों के अग्रभागों का चमचाकार होना अंगुलियों के चिकनेपन के गुणों और प्रभाव—मौलिकता, सक्रियता तथा स्वच्छन्दता आदि—को कई गुना बढ़ा देता है। इन गुणों से सम्पन्न व्यक्ति कभी-कभी सनकी व उन्मादग्रस्त भी पाये जाते हैं।

अंगुलियों के अग्रभाग कैसे भी क्यों न हों, परन्तु अंगुलियों के चिकना होने पर व्यक्ति प्रायः अधिक चिन्तन-मन्थन और जांच-परख करने वाले नहीं होते, अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवेग से आगे बढ़ने के अभ्यस्त होते हैं। तभी तो उन्हें अपनी इन प्रवृत्तियों का परिणाम भी भुगतना पड़ता है। *

15

लम्बी अंगुलियां

कुछ व्यक्तियों की अंगुलियां असामान्य रूप से लम्बी होने के कारण सहसा आकर्षण का केन्द्र बन जाती हैं। कुछ अंगुलियां सामान्य-मध्यम स्तर की—न लम्बी और न ही छोटी—होती हैं, तो कुछ अंगुलियां सामान्य से कुछ छोटी होती हैं। इस प्रकार अंगुलियों के तीन प्रकार हैं—लम्बी, सामान्य और छोटी। अंगुलियों के इस भेद को भली प्रकार समझने के लिए व्यक्ति को अपनी अंगुलियों को हथेली की ओर मोड़ने के लिए कहा जाता है। इस स्थिति में यह स्पष्ट हो जाता है कि बृहस्पति की अंगुली सबसे छोटी और शनि की अंगुली सबसे लम्बी होती है, परन्तु सूर्य की अंगुली हथेली के अधिक निकट होने के कारण वह सबसे अधिक बड़ी प्रतीत होती है। (रेखाचित्र-58)

अंगुलियों को हथेली की ओर मोड़ने पर अंगुलियां कलाई तक पहुंचनी चाहिए, अर्थात् अंगुलियों की लम्बाई हथेली की लम्बाई के बराबर होनी चाहिए, परन्तु अंगुलियों के नीचे के पर्वतों के कारण अंगुलियां कलाई तक पहुंच नहीं पातीं। उनमें पर्याप्त अन्तर आ जाता है। अतः अंगुलियों को नापने की इस विधि को त्रुटिपूर्ण ही समझना चाहिए।

आज से पांच वर्ष पूर्व मैंने एक व्यक्ति की अंगुलियों को नापने पर पाया कि उसकी शनि की अंगुली दस इंच की थी और मोड़ने पर मणिबन्ध तक पहुंचती थीं। इस व्यक्ति के हाथ की शनि की अंगुली प्रथम मणिबन्ध के पास पहुंचती थी। इसे मैं [illegible] लम्बी अंगुलियों वाला हाथ मानता हूं (रेखाचित्र-59)।

नापकर शुक्र के केन्द्र से कुछ नीचे और मणिबन्ध के मध्य कहीं तक पहुंचने वाली अंगुलियों को लम्बा ही समझना चाहिए। इस विधि से अंगुलियों की तुलनात्मक लम्बाई की जानकारी भी हो जाती है। अंगुलियों की लम्बाई के अनुपात में ही उनके गुणों में तीव्रता-मन्दता आयेगी।

लम्बे हाथों की हथेली और अंगुलियां असाधारण रूप से लम्बी होती हैं। हथेली की लम्बाई की तुलना में अंगुलियों की लम्बाई कुछ अधिक होती है। इस
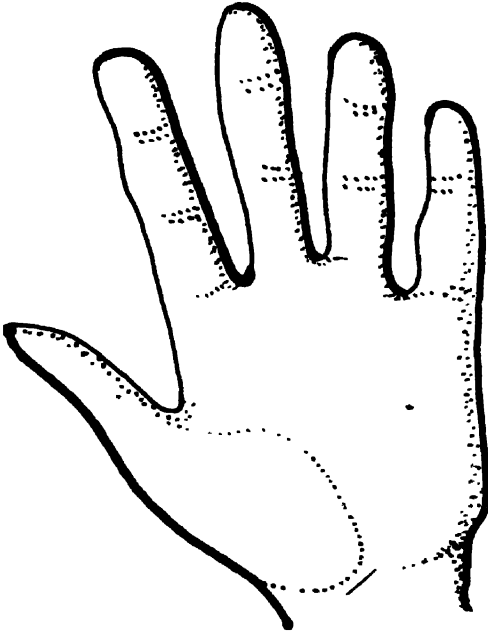
रेखाचित्र-58 व 59
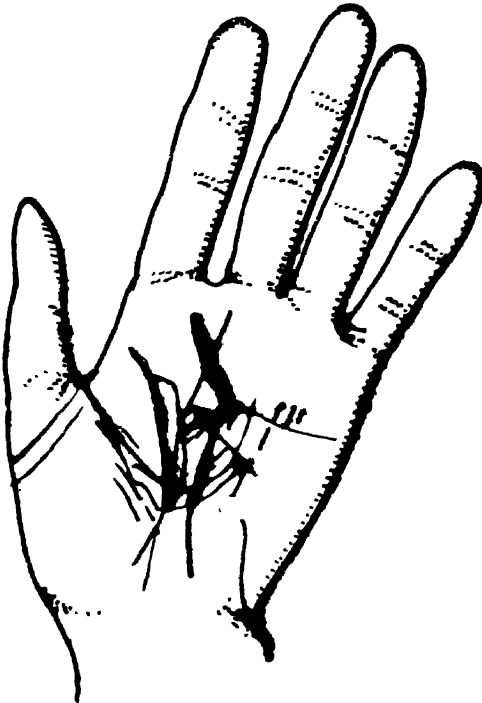
प्रकार के लम्बे हाथों वाले व्यक्ति की चाल-ढाल, बात-चीत, तथा चिन्तन-मनन आदि में सर्वत्र धीमापन मिलता है। इससे ये गरिमाशाली तो लगते हैं, परन्तु इनके सहयोगी इनके धीमेपन के कारण ऊब जाते हैं, जबकि छोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति जल्दबाज़, तेज़ और तड़क-भड़क में विश्वास रखने वाले होते हैं। व्यक्ति की अंगुलियों की लम्बाई को देखने के साथ ही उनकी मोटाई भी देखनी चाहिए; क्योंकि लम्बी अंगुलियों का पतलापन अंगुलियों के गुणों में वृद्धि कर देता है। इस तथ्य की उपेक्षा **भविष्यकथन** को अप्रिय एवं भ्रामक बना सकती है।

मोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति न केवल पशुबल से सम्पन्न होते हैं, अपितु उनकी अंगुलियों का मोटापन उन्हें पशुबल के शीघ्र एवं अविवेकपूर्ण प्रयोग के लिए प्रेरित भी करता है। वे अपनी शक्ति का उपयोग भोग-विलास में करते हैं। लम्बी-पतली अंगुलियों में इन दोषों में कमी आ जाती है। लम्बी अंगुलियों वाले व्यक्ति प्रत्येक तथ्य की गहराई में उतरते हैं और पूरी जांच-परख के उपरान्त ही कुछ स्वीकार करते हैं। इनके औपचारिकताओं से बंधे होने के कारण इनसे व्यवहार करने वालों को फूंक-फूंककर क़दम उठाना पड़ता है। अपनी संवेदनशीलता के कारण वे साधारण-सी बात से भी अपने को अपमानित व आहत अनुभव करते हैं। वे अपने साधारण-से अपमान का भी प्रतिशोध लिये बिना शान्ति और सुख की सांस नहीं ले पाते। इस प्रकार लम्बी अंगुलियों का व्यक्ति के जीवन में विशेष महत्त्व होता है। लम्बी अंगुलियों वाले व्यक्ति अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण उत्तरदायित्व के पद पर प्रतिष्ठित होते हैं और अपने कर्तव्य-कर्म के निर्वाह में सफल पाये जाते हैं।

लम्बी अंगुलियों के ऊपर से वर्गाकार होने का अर्थ है—व्यक्ति गणित-जैसे जटिल विषय में भी कभी कोई ग़लती नहीं करता और ग़लती हो जाने पर लगने वाले समय और श्रम की चिन्ता किये बिना उसे सुधारे बिना चैन नहीं लेता। ऐसे व्यक्ति ग़लती को पकड़ने में भी देर नहीं लगाते। उनकी दृष्टि तत्काल ग़लती पर जा टिकती है।

लम्बी अंगुलियों के गांठदार होने का अर्थ है—व्यक्ति कार्य करने में ढीला हो सकता है, परन्तु ग़लती कभी नहीं करता तथा छोटी-सी-छोटी बात का भी ध्यान रखता है।

लम्बी अंगुलियों के गठीले जोड़ वाली होने पर व्यक्ति प्रतिभा की अपेक्षा निरन्तर अथक परिश्रम से सफलता प्राप्त करने वाले होते हैं। उनमें किसी भी विषय की बारीकियों को समझने-परखने का धैर्य होता है। अत: वे संगीत के क्षेत्र में अपना स्थान बनाने में सफल होते हैं। ऐसे लोग अपनी बात को लम्बा खींचने की और किसी तथ्य के न छूट जाने के प्रति सतर्क रहने के कारण विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने वाले होते हैं। उनकी इस प्रवृत्ति के कारण ही उनके सम्पर्क में आने वाले

व्यक्ति उनसे एक प्रकार की 'ऊब' अनुभव करते हैं और सदैव किनारा करने की सोचते हैं। उनकी यही प्रवृत्ति उनके सर्जनात्मक कार्यों—लेखन, भाषण तथा चित्रण आदि—में भी देखने को मिलती है। वस्तुत: वे अपनी कला में संकेतों से काम न लेकर यथार्थ का विस्तृत एवं उपदेशपरक वर्णन करते हैं। इसी कारण वे 'ऊबाऊ कलाकार' के रूप में जाने जाते हैं।

ऐसे लोग अपने घरेलू जीवन में भी छोटी-से-छोटी सुविधा-सामग्री जुटाने के प्रति ही विशेष सतर्क नहीं रहते, अपितु प्रत्येक वस्तु को यथास्थान रखने, अर्थात् व्यवस्था देखने के भी अभ्यस्त होते हैं। ऐसे लोग ही जीवन में तुच्छ एवं उपेक्ष्य समझी जाने वाली बातों की ओर ध्यान दिलाकर न केवल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, अपितु अपनी उपयोगिता को भी सिद्ध करते हैं।

गांठदार अंगुलियों वाले व्यक्ति जहां किसी वस्तु के सूक्ष्म विश्लेषण में प्रवृत्त रहते हैं, वहीं लम्बी अंगुलियों वाले व्यक्ति का ध्यान इस ओर रहता है कि विश्लेषण में कहीं कुछ छूट न जाये। अत: जहां एक का ध्यान विश्लेषण पर केन्द्रित रहता है, वहीं दूसरे का ध्यान पूर्णता पर रहता है।

लम्बी अंगुलियों वाले व्यक्ति संशयालु—प्रत्येक वस्तु, विषय, कथन एवं घटना की वास्तविकता में सन्देह करना और बिना जांच-परख के स्वीकार करने को उद्यत न होना—होने के कारण न केवल 'ऊबाऊ' होते हैं, अपितु ढीले-ढाले, सुस्त और किसी स्तर पर पीछे रहने वाले भी होते हैं। अपनी संशयवृत्ति के कारण वे दूसरे लोगों से मेल-जोल नहीं बढ़ा पाते और कुछ अंशों तक स्वार्थी—केवल अपनी सुख-सुविधा की चिन्ता करने वाले—होते हैं। उनकी यह स्वार्थपरता उनकी आयु बढ़ने के साथ निरन्तर उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है। लम्बी अंगुलियों के पतली व कोमल नाख़ूनों वाली होने पर तो यह वृत्ति अपनी चरमसीमा पर पहुंच जाती है। लम्बी अंगुलियों वाले हाथों में शुक्र अथवा सूर्य पर्वत की अस्पष्टता को भी व्यक्ति की स्वार्थपरता का प्रतीक समझना चाहिए। ऐसे हाथों में चन्द्र पर्वत का उभार तो स्वार्थपरता का स्पष्ट और निश्चित संकेत होता है। लम्बी अंगुलियों वाले व्यक्ति निष्ठुर, निर्मम और क्रूर होते हैं। वे अपनी वास्तविकता को छिपाने के लिए ही उदारता का ढोंग रचते हैं। वे केवल अपनी पसन्द को छोड़कर न केवल खर्च करने में कृपण होते हैं, अपितु आसानी से दूसरों के काम करने को भी तैयार नहीं होते। वे निडरता का अभिनय करते हुए भी डरपोक होते हैं तथा इसीलिए दूसरों की चापलूसी करते हैं।

लम्बी अंगुलियों के सम्बन्ध में निर्दिष्ट तत्त्व पतली एवं लम्बी अंगुलियों पर विशेष रूप से लागू होते हैं। मंगल पर्वत के साथ अंगुलियों के छोरों के चमचाकार होने तथा अंगूठे के बड़ा होने का अर्थ चापलूसी-जैसे अवगुण का अत्यधिक

विकसित होना होता है। ऐसी अंगुलियों वाले व्यक्ति अपने लिए दूसरों की कृपा पाने को तो उत्सुक रहते हैं, परन्तु स्वयं दूसरों की सहायता नहीं करते। इस प्रकार ऐसे व्यक्ति के व्यवहार में दोग़लापन होता है। संशयशील होने के कारण वे किसी के भी सच्चे मित्र नहीं होते। वे अपना काम निकलते ही उससे किनारा कर लेते हैं और कभी-कभी तो सहायता न करने वाले के प्रति द्वेष-भाव भी रखने लगते हैं।

लम्बी व पतली अंगुलियों वाले व्यक्ति के सर्वथा विपरीत लम्बी व मोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति अधिक विश्वसनीय एवं सच्चे मित्र सिद्ध होते हैं। ऐसी अंगुलियों के अग्रभागों के अध्ययन में छोटी-छोटी बातों की भी जांच-पड़ताल करने, सभी तत्त्वों का विस्तृत विवरण जानने तथा प्रत्येक वस्तु पर पैनी दृष्टि की प्रवृत्ति का भी परिचय प्राप्त हो जाता है।

वर्गाकार छोरों वाली लम्बी व मोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति व्यावहारिक, नियमबद्ध तथा सामान्य सूझ-बूझ रखने वाले होते हैं। चमचाकार सिरों वाली अंगुलियों वाले व्यक्ति क्रियाशील एवं मौलिक होते हैं। अत: ऐसे व्यक्ति अनुसन्धान एवं अन्वेषण के क्षेत्र में अग्रगामी होते हैं। वे महान् आविष्कारक, उच्च स्तर के दार्शनिक एवं महान् वैज्ञानिक के रूप में ख्याति प्राप्त करते हैं। लम्बी अंगुलियों के सिरों के नुकीला होने पर व्यक्ति सौन्दर्य-प्रेमी एवं कलात्मक रुचि-सम्पन्न होते हैं।

यहां यह उल्लेखनीय है कि लम्बी अंगुलियों वाले व्यक्ति समाज के प्रत्येक वर्ग में मिलते हैं। यहां तक कि कुछ मूर्ख एवं अशिक्षित व्यक्तियों की अंगुलियां भी लम्बी व मोटी पायी जाती हैं, परन्तु मोटी अंगुलियों के लम्बेपन के प्रभाव से इन व्यक्तियों में भी जीवन की बड़ी ही नहीं, छोटी-छोटी बातों को भी पर्याप्त महत्त्व देने की प्रवृत्ति विकसित रूप में होती है। एक अन्य ध्यान देने योग्य बात यह है कि ऐसी अंगुलियों के नुकीले सिरों वाले व्यक्ति के सौन्दर्य-प्रेमी होने के कारण उन्हें अनिवार्यत: प्रतिभाशाली समझने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए।

लम्बी अंगुलियों वाले व्यक्तियों को यान्त्रिकी (Engineering) के क्षेत्र में विलक्षण कौशल एवं सफलता प्राप्त होती है। ऐसे ही हाथ वाले व्यक्ति आभूषणों एवं अलंकरणों पर अपनी उत्कृष्ट एवं सूक्ष्म कला की अनोखी छाप छोड़ते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे हाथ यन्त्रों की मरम्मत करने व छोटे-मोटे कल-पुर्ज़े बनाने में भी कुशल होते हैं।

उल्लेखनीय तथ्य यह है कि लम्बी अंगुलियां राजा, रानी, नौकरानी आदि किसी की भी हो सकती हैं, परन्तु इन सबके हाथों की कोमलता और उत्तमता एक समान कदापि नहीं होगी। इसी आधार पर एक समान लम्बी अंगुलियों वाले व्यक्ति भी कहीं विस्तार से जानने वाले, तो कहीं केवल आवश्यक से सरोकार रखने वाले मिलेंगे, कोई शंका-सन्देह की वृत्ति वाले, तो कोई स्वार्थी व पाखण्डी मिलेंगे। ❋

16

छोटी अंगुलियां

समाज के सभी वर्गों में कुछ स्त्री- पुरुषों के हाथों की अंगुलियां छोटी देखने को मिलती हैं और वे तत्काल पहचान ली जाती हैं। छोटी अंगुलियां जहां मोड़ने पर कठिनाई से शुक्र पर्वत के केन्द्र तक पहुंच पाती हैं, वहीं वे हाथ के अनुपात में भी छोटी दिखाई देती हैं। छोटी अंगुलियों की लम्बाई में भी विविधता मिलती है, परन्तु लम्बी अंगुलियों के मुक़ाबले इन्हें पहचानना कठिन नहीं होता।

सामान्य लम्बाई वाली छोटी अंगुलियां शुक्र पर्वत के मध्य तक पहुंचने वाली अथवा उससे पीछे रहने वाली भी हो सकती हैं। हथेली के लम्बी होने पर तो छोटी अंगुलियां शुक्र रेखा तक भी नहीं पहुंच पातीं। यही कारण है कि ऐसी अंगुलियों में छोटी अंगुलियों के गुणों का विशेष प्रभाव रहता है। हथेली और अंगुलियों के मेल में हथेली का प्रभाव भी अंगुलियों के प्रभाव के साथ जुड़ जाता है। हथेली के वर्गाकार अथवा चौरस होने पर छोटी अंगुलियां व्यक्ति के व्यवहारकुशल और उपयोगितावादी होने का संकेत देती है।

छोटी अंगुलियां गुणों में लम्बी अंगुलियों से सर्वथा विपरीत होती हैं। छोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति पेड़ गिनने की अपेक्षा फल खाने में विश्वास रखने वाले होते हैं। वे किसी भी वस्तु के विवरण को जानने में रुचि नहीं रखते, उन्हें छोटी-मोटी बातों की गहराई में जाना अप्रिय एवं कष्टप्रद लगता है (रेखाचित्र-60)।

छोटी अंगुलियों (सामान्य) वाले व्यक्ति गम्भीरता से चिन्तन करने वाले होते हैं। सामान्य से भी अधिक छोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति तो सोचने में ही नहीं, अपितु अपनी सोच को कार्यरूप देने में भी शीघ्रता को अपनाते हैं। उन्हें किसी भी बात को घुमा-फिराकर कहना अथवा सुनना अच्छा नहीं लगता। वे 'टू द प्वाइण्ट' अर्थात् सीधे प्रयोजन अथवा काम की बात पर आने के पक्षधर होते हैं और किसी भी काम को शीघ्रता से निपटाने में विश्वास रखते हैं।

छोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति गहरे अन्तर्ज्ञानी होते हैं। वे तत्काल परख लेते हैं कि सम्बद्ध व्यक्ति सत्यभाषण कर रहा है अथवा उन्हें मूर्ख बनाने की चेष्टा कर रहा

है। वे किसी भी बात का पूर्ण विवरण सुनने से पहले ही उसके मूल तत्त्व तक पहुंच जाते हैं और वास्तविकता को समझ लेते हैं। अत: वे समग्र रूप से और तत्काल निर्णय लेने तथा तदनुसार आचरण करने वाले होते हैं। उनका प्रत्येक कार्य एवं प्रयास परिणामोन्मुख होता है। उन्हें किसी भी योजना से कुछ लेना-देना नहीं होता, वे तो केवल उससे होने वाले लाभ से सम्बन्ध रखने वाले होते हैं। अत: वे किसी भी विषय की छोटी-मोटी एवं अनावश्यक बातें दूसरों—बड़ी अंगुलियों वालों—के लिए छोड़ देते हैं।
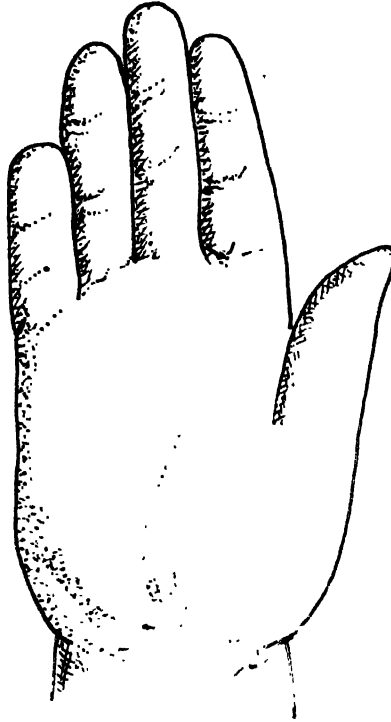
रेखाचित्र-60

अपनी इस प्रवृत्ति—गहराई में न उतरना, विवरण की उपेक्षा करना तथा शीघ्रता से निर्णय लेना एवं उसे कार्यरूप देने में जुट जाना आदि—के कारण उन्हें कभी-कभी अपने कार्यों पर पछताना भी पड जाता है; क्योंकि शीघ्रता से लिये गये निर्णयों में त्रुटि की सम्भावना सदैव बनी रहती है। यह बात अवश्य है कि वे जिस भी दायित्व को संभालते हैं, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं, परन्तु शीघ्रता की प्रवृत्ति के कारण वे अपनी कितनी ही उत्कृष्ट सम्भावनाओं को भी नष्ट कर देते हैं।

छोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति बड़े ही सौभाग्यशाली होते हैं। वे जीवन में बड़ी-बड़ी उपलब्धियां प्राप्त करने वाले तथा विश्व को विस्मय-विमुग्ध करने वाली

योजनाओं में मेधावी होते हैं। बुध की प्रबलता वाला व्यक्ति किसी भी क्षेत्र—व्यापार, व्यवसाय, उद्योग-धन्धा, ज्ञान-विज्ञान अथवा चोरी-डाका—से जुड़े होने पर विद्युत्गति से प्रगति करता है। मंगल की प्रबलता वाले व्यक्ति को छोटी अंगुलियों की द्रुतगति के कारण सम्भावित संकट से बचाने वाले किसी सहायक की अपेक्षा रहती है। चन्द्र की प्रबलता व्यक्ति के स्वार्थ-भाव और उसकी अव्यावहारिकता को कम करने वाली होती है। शुक्र की प्रबलता व्यक्ति की चिन्तनशीलता और आवेश को तीव्रगति दे देती है।

व्यक्ति के मानसिक अथवा भौतिकलोक पर छोटी अंगुलियों के प्रभाव को जानने के लिए सभी पर्वों का अध्ययन अपेक्षित होता है। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पर्व का प्रभावी होना क्रमशः व्यक्ति की मानसिक रूप से सजगता का, व्यवसाय में श्रमशीलता का तथा भोग-विलास के साधनों को जुटाने की प्रवृत्ति का सूचक है।

इस प्रकार छोटी अंगुलियों के सम्भावित प्रभाव को ध्यान में रखकर व्यक्ति के महत्त्वाकांक्षी होने की तथा मंगल की उग्र एवं आक्रामक शक्ति के प्रभाव से उसके प्रचण्ड कार्य करने की भविष्यवाणी की जा सकती है। सभी पर्वत-गुणों को प्रेरक शक्ति मानकर ही परिणाम की कल्पना करनी चाहिए।

मस्तक रेखा की स्थिति—प्रबल, स्पष्ट, सीधी, निस्तेज, निर्जीव और मनोबल तथा मानसिक सन्तुलन के दोषों के सूचक द्वीपों-शृंखलाओं से आक्रान्त आदि—की जांच परख करना भी आवश्यक है। अच्छी व स्पष्ट मस्तक रेखा जहां स्वस्थ व सन्तुलित विवेक को व्यक्त करती है, वहीं छोटी अंगुलियों वाले व्यक्तियों को दक्ष एवं कुशल बनाने में अत्यधिक सहायक भी होती है। वस्तुतः छोटी अंगुलियों का साथ देने वाले अन्य गुणों का अच्छा होना ही छोटी अंगुलियों को अच्छा बनाता है। छोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति तुच्छ एवं संकीर्ण विचारों वाले तो नहीं होते, परन्तु द्रुतगामी और आवेगशील होने के कारण निर्णय लेने में जल्दबाज़ी करते हैं। शान्त-चित्त एवं सावधान होकर सोच-विचार करने की प्रवृत्ति न रखने के कारण उनके निर्णयों के ग़लत होने की सम्भावना सदव बनी रहती है। छोटी अंगुलियां, वर्गाकार छोर, लचीला हाथ, उचित आकार-प्रकार वाला अंगूठा, उत्तम और सीधी मस्तक रेखा वाले व्यक्ति मेधावी तथा लक्ष्य में सफलता प्राप्त करने वाले होते हैं। विपरीत छोटी अंगुलियां होने पर भी पैने व नुकीले छोर, कठोर हाथ, घटिया अंगूठा और घटिया मस्तक रेखा होने पर व्यक्ति जीवन में सदैव विफल रहते हैं। *

17

अंगूठा

''भाग्य अथवा संयोग या दोनों मिलकर भी किसी दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति को जीवन के ध्येय में असफल नहीं बना सकते। वस्तुत: संकल्प में बड़ी-से-बड़ी बाधा को देर-सवेर पार कर सकने की विलक्षण क्षमता होती है। क्या पर्वत से निकली जलधारा के प्रवाह को कभी शिलाखण्ड (चट्टानें) रोक सकते हैं? क्या कभी सूर्य के रथ की गति को रोकने की किसी ने सोची अथवा चेष्टा की है? स्पष्ट है कि व्यक्ति अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से अपने अभीष्ट को निश्चित रूप से प्राप्त कर सकता है।

''उद्देश्य-प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करने वाला व्यक्ति ही सच्चे अर्थों में भाग्य का धनी होता है। अपनी अकर्मण्यता के कारण प्राप्त असफलता के लिए भाग्य को कोसना तो निपट मूर्खता ही है। लक्ष्य की ओर बढ़ने की दिशा में उठाया गया प्रत्येक क़दम अपने में महत्त्वपूर्ण होता है। सत्य तो यह है कि संकल्प के बल पर मृत्यु को भी कुछ समय के लिए टाला जा सकता है।''

—इला ह्वीलर विल्का

हाथ के समग्र अध्ययन में अंगूठे की महत्त्वपूर्ण भूमिका होने के कारण उसका विस्तृत विवेचन करना आवश्यक है। हाथ के इस अंग की शक्ति बड़ी ही अद्‌भुत है, जिसे जानने पर व्यक्ति विस्मय-विमुग्ध रह जाता है। भारतीय शास्त्रकारों ने व्यक्ति के चरित्र के उद्धारक इस अंग के महत्त्व को समझकर सभी संस्कारों में इसकी भूमिका निर्धारित की है। चीन के प्राचीन पुरोहितों ने भी अंगूठे के प्रथम पर्व की कोशिकाओं के आधार पर चरित्र के अध्ययन की एक विस्तृत विवरण वाली, परन्तु जटिल पद्धति प्रस्तुत की है। रोमन विद्वान् तो अंगूठे को ही हस्तपरीक्षण का आधार मानते हैं; क्योंकि उनके अनुसार अंगूठे के अध्ययन के साथ अपने ज्ञान को जोड़ने पर विश्लेषण के लिए पर्याप्त एवं अपेक्षित सामग्री सुलभ हो जाती है। हाथ का अकेला यही भाग—अंगूठा—अध्ययन का एक ऐसा सुनिश्चित स्रोत है, जिसके आधार पर प्रामाणिक निष्कर्षों पर पहुंचा जा सकता है। अब देखना यह है कि अंगूठे को प्रभावी बनाने वाले अन्य संयोग कौन-से हैं और उनका कितना योगदान है?

अंगूठा अनेक अर्थों में अंगुली से भिन्न होता है। वास्तव में चारों अंगुलियों का सामना करने में समर्थ होने के कारण वह अकेला चारों अंगुलियों के न केवल समकक्ष है (रेखाचित्र-61), अपितु चारों अंगुलियों की आवश्यकता को पूरा करने में भी समर्थ है। सत्य तो यह है कि अंगूठा ही सभी अंगुलियों को निर्देश देने वाला है और इसकी सबलता-दुर्बलता ही व्यक्ति को चरित्रवान् अथवा चरित्रहीन बनाने वाली होती है।
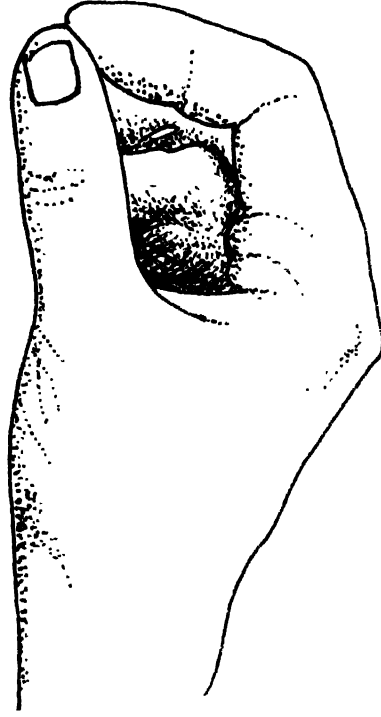
रेखाचित्र-61

अंगूठे का बड़ा होना व्यक्ति में चरित्र-बल का सूचक होता है। ऐसे व्यक्ति बौद्धिक उत्कृष्टता से सम्पन्न तथा सोच-विचारकर कार्य करने वाले होते हैं। वे अपने बुद्धिबल और मनोबल पर विश्वास रखने वाले, अर्थात् दृढ़ निश्चयी होते हैं (रेखाचित्र-62)। इसके विपरीत अंगूठे का छोटा होना व्यक्ति को आवेश और भावना के प्रवाह में बहा ले जाने वाला, अर्थात् दुर्बल चरित्र का होने का संकेत देता है। ऐसे व्यक्ति नेतृत्व की अपेक्षा रखते हैं (रेखाचित्र-63)।

अंगूठे का सामान्य आकार से अधिक मोटा होना व्यक्ति के शासक होने का स्पष्ट संकेत हैं। बड़े अंगूठे वाले व्यक्ति जहां इतिहास में रुचि रखते हैं, आवश्यक, उपयोगी एवं व्यावहारिक वस्तुओं को पसन्द करते हैं, वहीं छोटे अंगूठे वाले व्यक्ति
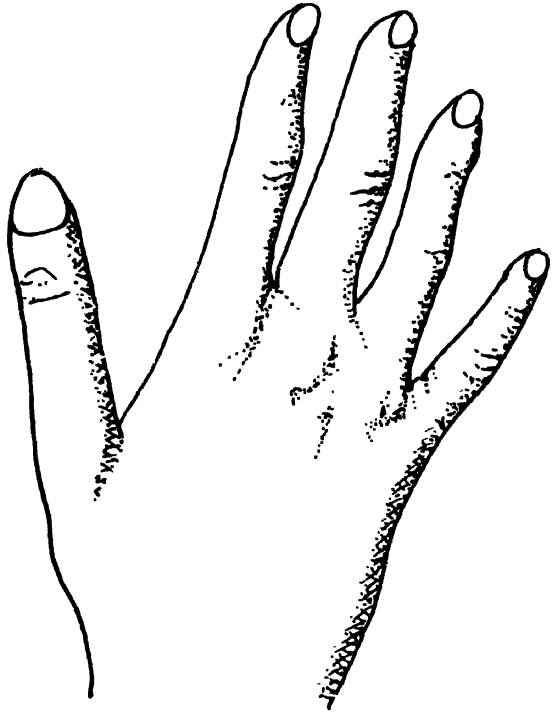
रेखाचित्र-62 व 63
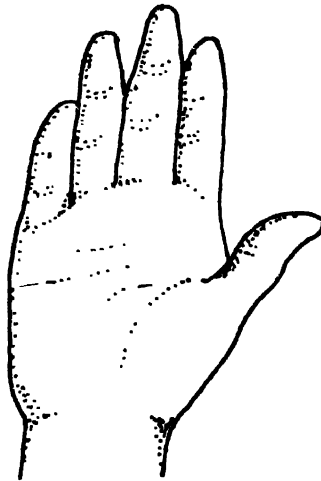
रोमांस-प्रिय, सौन्दर्य-प्रेमी, भावुक तथा कल्पनाजीवी होते हैं। यही कारण है कि छोटे अंगूठे वाले व्यक्ति व्यावहारिक जीवन में बड़े अंगूठे वालों के सामने नहीं टिक पाते। छोटे अंगूठे वाले व्यक्तियों को अपने सामान्य जीवन में बड़े अंगूठे वाले व्यक्तियों के समान सफलता मिल ही नहीं पाती।

अंगुलियों के समान ही अंगूठे में भी तीन पर्व होते हैं। कुछ हस्तरेखाशास्त्रियों द्वारा अंगूठे के दो पर्व मानना उचित प्रतीत नहीं होता। वे हस्तरेखाशास्त्र के तीनों लोकों से सम्बन्धित होते हैं। अंगूठे के इन तीनों—प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय—पर्वों का सम्बन्ध क्रमश: बुद्धिलोक, भावलोक और भौतिकलोक से है। अंगूठे के ये तीनों पर्व व्यक्ति की सफलता के लिए अनिवार्यत: अपेक्षित एवं प्रेरणाप्रद तथा अत्यधिक महत्त्वपूर्ण एवं शक्तिशाली निम्नोक्त तीन गुणों—जिनके अभाव में बड़े-से-बड़े प्रतिभाशाली, उद्यमी अथवा भाग्य का धनी व्यक्ति भी जीवन में कुछ उल्लेखनीय प्राप्त नहीं कर सकता—के सूचक हैं।

प्रथम पर्व—दृढ़ इच्छाशक्ति अथवा पक्का इरादा (संकल्पशक्ति)

द्वितीय पर्व—विवेक, अर्थात् सूझ-बूझ एवं समझदारी।

तृतीय पर्व (शुक्र पर्वत)—प्रेम-भावना तथा संवेदना।

इस प्रकार अंगूठा अपने तीन पर्वों के अन्तर्गत दृढ़ निश्चय, सूझ-बूझ और समर्पण (प्रेम की शक्ति) का प्रतिनिधित्व करता है। इन तीनों का योग व्यक्ति को इतना सामर्थ्य प्रदान करता है कि वह अपने मार्ग की बड़ी-से-बड़ी बाधा को भी सहजता से पार लेता है। अंगूठे के इन अतिविशिष्ट गुणों के कारण ही हस्तरेखाशास्त्री भविष्यकथन के लिए इस पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि बड़ा अंगूठा दृढ़ संकल्प, विवेक व प्रेम आदि उत्कृष्ट गुणों की प्रचुरता का सूचक है। इन गुणों से सम्पन्न व्यक्ति सभी बाधाओं से जूझने और सफलता के शिखर पर पहुंचने में समर्थ होते हैं। छोटे अंगूठों में तृतीय पर्व, अर्थात् शुक्र पर्वत सर्वाधिक विकसित होता है, जबकि अन्य दो पर्व—प्रथम और द्वितीय—कम विकसित होते हैं। शुक्र पर्वत के विकसित होने के कारण ऐसे व्यक्तियों में प्रेम और संवेदना की प्रवृत्ति अपने प्रखर रूप में पायी जाती है, परन्तु अन्य दो पर्वों के अविकसित रहने के कारण दृढ़ संकल्पशक्ति और विवेक बुद्धि अपेक्षित विकसित रूप में नहीं मिलती। फलत: यह संयोग व्यक्ति को दुर्बल व क्षीण बना देता है। दृढ़ संकल्पशक्ति और निर्णय लेने की क्षमता में नेतृत्व प्रदान करने के गुण होते हैं। ये गुण प्रथम पर्व के विकास से सम्बन्ध रखते हैं। इसी प्रकार द्वितीय पर्व के विकास का सम्बन्ध सूझ-बूझ, जांच-परख और तर्कशक्ति के प्रयोग से होता है। तीनों पर्वों का समुचित विकास व्यक्ति के दृढ़ चरित्र की रक्षा करने में समर्थ एवं नैतिक बल से सम्पन्न होने का पक्का प्रमाण होता है। कहने की आवश्यकता नहीं

कि नैतिक बल के अभाव का अर्थ है—चरित्र की रक्षा न कर पाना, अर्थात् उसका दुर्बल होना। चरित्र की यह दुर्बलता व्यक्ति में विद्यमान प्रतिभा के महत्त्व को भी शून्य कर देती है।

अंगूठे का महत्त्व इस तथ्य से भी उजागर हो जाता है कि यह केवल मानव जाति के सदस्यों में पाया जाता है। पशुओं में इसका अभाव अथवा लोप ही देखने को मिलता है। वानर से नर के विकास में भी अंगूठे का अस्तित्त्व महत्त्वपूर्ण भूमिका रखता है। मनुष्यों में जहां अंगूठा विद्यमान है, वहां वानरों में इसका सर्वथा अभाव है। अन्य पशुओं में भी अंगूठे का अस्तित्त्व नहीं मिलता। अधिकांश पशु अपने-अपने झुण्डों में एक-साथ अवश्य रहते हैं, परन्तु उनमें अनुशासन देखने को नहीं मिलता। इतना ही नहीं, एक ही वर्ग के पशुओं को खाने-पीने के सम्बन्ध में एक-दूसरे से लड़ते देखा जाता है। प्रत्येक पशु को अपने खाने-पीने, रहने तथा आने-जाने की व्यवस्था स्वयं और अकेले ही करनी पड़ती है। बच्चे भी अपनी मां के स्तनों से तब तक चिपके रहते हैं, जब तक वे चलने-फिरने योग्य नहीं हो जाते। समर्थ होते ही उन्हें अपने भोजन के लिए स्वयं प्रयास करना पड़ता है। माता-पिता और सन्तान का एक-दूसरे के साथ कोई सम्बन्ध तो क्या, पहचान तक नहीं रहती। किसी एक भी पशु में किन्हीं दूसरे पशु अथवा पशुओं पर नियन्त्रण व शासन करने की योग्यता नहीं पायी जाती। इस प्रकार पशु-पक्षियों से मनुष्यों की भिन्नता एवं विलक्षण सामर्थ्य—शासन, अनुशासन, व्यवस्था, नेतृत्व, जीना और जीने देने की प्रवृत्ति आदि—का श्रेय अंगूठे को ही जाता है। पशुओं के हाथों में अंगूठा नहीं होता। अत: उनमें ये गुण—अनुशासन, भाईचारा, नेतृत्व की स्वीकृति आदि—नहीं होते। अंगूठे के कारण ही मनुष्य पशुओं को पालतू बनाने, उन्हें खदेड़कर बस्तियां बसाने तथा अपने जाति-बन्धुओं को संगठित कर शत्रुओं से मोर्चा लेने में सफल हुआ है। इस प्रकार मनुष्य की पशुओं से उत्कृष्टता वस्तुत: अंगूठे से रहित हाथ पर अंगूठे वाले हाथ की विजय है।

अंगूठे के सम्बन्ध में एक अन्य उल्लेखनीय तथ्य यह है कि अंगुलियों की अपेक्षा अंगूठे में मांसपेशियां अधिक होती हैं। अंगुलियों में जहां खोलने और बन्द करने वाली, अर्थात् फैलने और सिकुड़ने वाली मांसपेशियां होती हैं, वहां अंगूठे की मासपेशियां इस रूप में विकसित होती हैं कि वह न केवल चारों ओर घूम सकता है, अपितु एक-एक करके सभी अंगुलियों का विरोध-प्रतिरोध भी कर सकता है। अंगूठे की यह प्रतिरोधक शक्ति ही मनुष्य को सभी छोटे-बड़े कार्यों को करने में समर्थ एवं कुशल बनाती है, कला एवं विज्ञान के क्षेत्र में दक्षता प्रदान करती है, यन्त्रों के सञ्चालन, औज़ारों—प्लास, पेचकस आदि—के प्रयोग तथा पैन-पैंसिल के पकड़ने में मनुष्य को सामर्थ्य प्रदान करने का श्रेय अंगूठे को ही प्राप्त है। अंगूठे की

कृपा-सहायता से ही मनुष्य उन उपकरणों के निर्माण और विकास में समर्थ हुआ, जिनसे मानव-सभ्यता विकास की सीढ़ियां चढ़ सकी है और नया इतिहास अस्तित्त्व में आया है। अंगूठे के अभाव के कारण ही पशु अपने भोजन (शिकार) को भूमि पर पटखकर पंजे से दबाते हैं और दांतों से चीरते हैं। इस प्रकार उन्हें धरती से अंगूठे का काम लेने को विवश होना पड़ता है।

अंगूठा मनुष्य की इच्छाशक्ति तथा प्रयोग-क्षमता का भी परिचय देता है। जन्म लेने वाले बच्चे में न तो कोई इच्छा होती है और न ही वह स्वतन्त्र होता है। वह तो पूर्णतः दूसरों के अधीन एवं नियन्त्रण में होता है। एक स्वस्थ बालक जन्म के उपरान्त कुछ सप्ताहों तक—लगभग बाईस घण्टों तक—सोता ही रहता है। इस अवधि में उसका अंगूठा बन्द मुट्ठी और अंगुलियों से ढका रहता है, जो उसकी इच्छाशक्ति की निष्क्रियता का सूचक होता है, अर्थात् अभी तक उसने अपनी इच्छाशक्ति के प्रयोग का विचार तक नहीं किया। धीरे-धीरे शिशु की निद्रा की अवधि घटने लगती है और उसके अपने विचार बनने लगते हैं, जिन्हें वह स्तन चूसने-न चूसने, रोने-हंसने, सोने-जागने की क्रियाओं को करने-न करने के रूप में व्यक्त करता है। इस स्थिति के अस्तित्त्व में आते ही अंगूठा मुट्ठी और अंगुलियों के आवरण से बाहर आ जाता है। अंगूठे का इस प्रकार से दिखाई देने का अर्थ है—शिशु की इच्छाशक्ति व्यक्त होने लगी है।

जन्मजात बुद्धिहीन अथवा अत्यन्त मन्दबुद्धि तथा किसी भयंकर एवं असाध्य रोग अथवा गहरे आघात से नष्ट चेतना वाले शिशुओं का अंगूठा दुर्बल होता है। ऐसे दुर्बल अंगूठे वाले व्यक्ति दूसरों पर तो क्या, अपने ऊपर भी नियन्त्रण रखने में समर्थ नहीं होते। जन्म से ही बुद्धिहीन शिशु का अंगूठा न केवल अपेक्षाकृत छोटा व दुर्बल होता है, अपितु उसका गठन भी विकृत होता है। अतः विकृत अंगूठे को व्यक्ति के जन्मजात बुद्धिहीन एवं मूर्ख होने का एक निश्चित संकेत समझना चाहिए। मूर्ख अथवा बुद्धिहीन व्यक्ति में इच्छाशक्ति के नितान्त अभाव के कारण उसके हाथ का अंगूठा न केवल निष्क्रिय अवस्था में रहता है, अपितु हथेली में बन्द भी नहीं हो पाता या फिर कठिनाई से बन्द हो पाता है। अंगूठे का कठिनाई से हथेलियों में बन्द हो पाना इस तथ्य का संकेत देता है कि व्यक्ति कभी सामान्य बुद्धि का था, परन्तु किसी रोग, आघात अथवा दुर्घटना के कारण अपनी चिन्तन-शक्ति को खो बैठा है और अब उसका संकल्प-बल लुप्त हो गया है। इस प्रकार अंगूठे का हथेली में बन्द न होना अथवा कठिनाई से बन्द होना क्रमशः व्यक्ति के जन्मजात मूर्ख होने का और किसी रोग अथवा आघात के कारण कालान्तर में निर्बुद्धि होने का सूचक होता है।

मिरगी के रोगियों का अंगूठा दौरा पड़ने से पूर्व बिना किसी चेतावनी के तत्काल ही हथेली में बन्द हो जाता है। फलतः रोगी के लिए दौरे के झटके को झेल
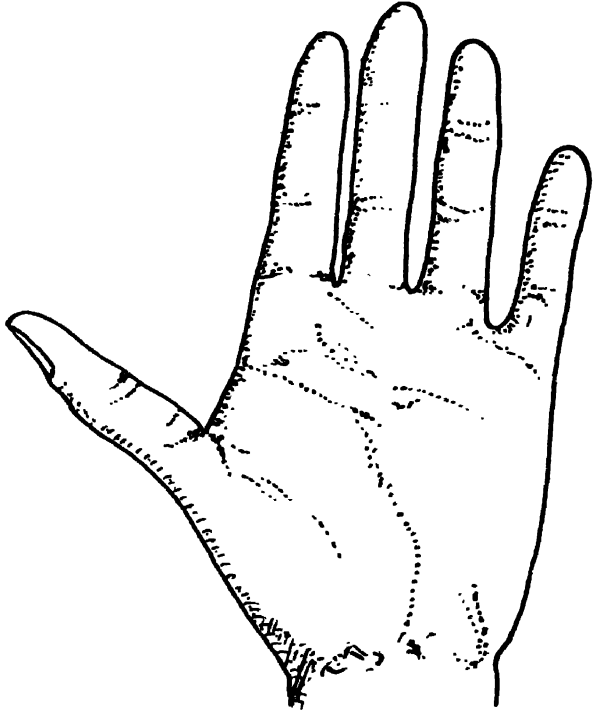
रेखाचित्र-64 व 65
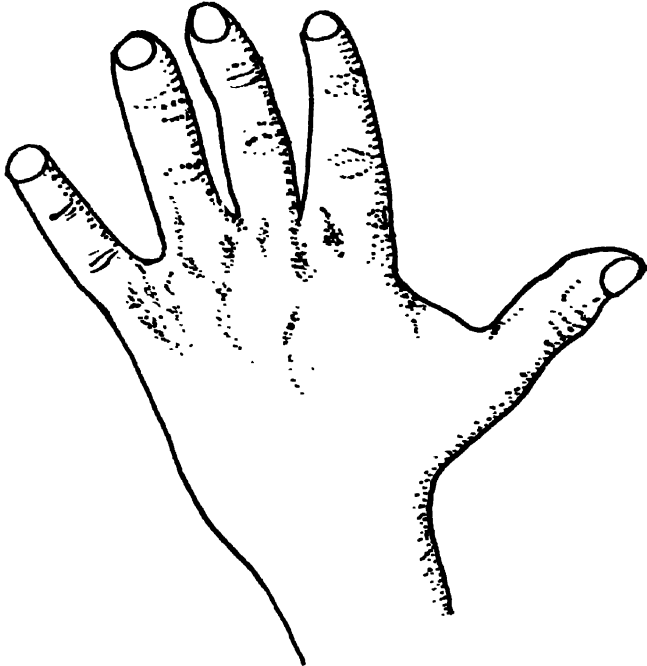
पाना, अर्थात् होश-हवास बनाये रखना सम्भव नहीं हो पाता। जब रोग व्यक्ति की इच्छाशक्ति को ग्रस लेता है, तो अंगूठा लज्जित-सा होकर अपने को हथेली में छिपा लेता है। रोग पर नियन्त्रण पाने तथा उसके विरुद्ध संघर्ष करने के लिए संकल्पशक्ति का अथवा दृढ़ इच्छाशक्ति का होना अनिवार्य है। व्यक्ति में जब तक दृढ़ इच्छाशक्ति विद्यमान रहती है, तब तक अंगूठा हथेली में बन्द नहीं होता। अंगूठे का हथेली में बन्द होना व्यक्ति के मस्तिष्क के विक्षुब्ध होने, अर्थात् विवेक एवं दृढ़ इच्छाशक्ति के शून्य होने का सूचक है। अचेत अवस्था में पड़े अथवा उच्च ज्वर से पीड़ित व्यक्तियों के अतिरिक्त मरणासन्न व्यक्तियों के अंगूठे की इस मुद्रा—हथेली में बन्द होना—को स्पष्ट देखा जा सकता है। वस्तुत: अंगूठे की यह स्थिति मृत्यु के समान किसी भयानक संकट के आने की सूचक है। जब तक व्यक्ति किसी भी उपस्थित संकट का सामना करने के लिए अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति को संजोये रखता है, तब तक उसका अंगूठा सीधा बना रहता है। इस प्रकार अंगूठे का सीधा बने रहना व्यक्ति में संकट से जूझने की दृढ़ इच्छाशक्ति के विद्यमान होने का सूचक है, परन्तु इस शक्ति के क्षीण होते ही अंगूठा हथेली में सिकुड़ जाता है। दूसरे शब्दों में अंगूठे का हथेली में बन्द होने का अर्थ व्यक्ति की इच्छाशक्ति तथा कार्यशक्ति दोनों का शून्य हो जाना होता है, अर्थात् व्यक्ति नियति का विरोध न करके उसके आगे समर्पण कर देना चाहता है।

इच्छाशक्ति के दो रूप-भेद हैं—1. नैसर्गिक इच्छाशक्ति और 2. तर्कसंगत इच्छाशक्ति। प्रथम जन्मजात होती है तथा किसी निश्चित प्रयोजन के न होने पर व्यक्ति को दुराग्रही और अड़ियल—मैं न मानूं की प्रवृत्ति वाला—बना देती है।

दूसरी ज्ञान तथा अनुभव से प्राप्त होने के कारण तर्कसंगत और विवेक पर आधारित होती है। नैसर्गिक इच्छाशक्ति पशुओं में भी होती है और इसी से अकारण उनमें जन्म से ही हठी और एक-दूसरे से लड़ने की प्रवृत्ति पायी जाती है। पशुओं में थोड़ी-बहुत समझ और निर्णय लेने की क्षमता होती अवश्य है, परन्तु अत्यन्त क्षीण और सर्वथा अविकसित। इस प्रकार मनुष्यों में अंगूठे से व्यक्त होने वाली इच्छाशक्ति सामान्य पशु-प्रवृत्ति न होकर नितान्त तर्कसंगत एवं विवेक-सम्मत होती है, जो मस्तिष्क द्वारा परिचालित होती है तथा व्यक्ति को स्पष्ट दिशा-निर्देश देती है।

हाथ के अविकसित—निकृष्ट एवं प्रारम्भिक—रूप को जीवाणुओं में भी देखा जा सकता है, जो लेसदार जैली-जैसा होता है। जीवाणुओं के सिर, पैर और भुजाएं नहीं होती। खाने-पीने की आवश्यकता का अनुभव होने पर जीवाणु अपनी ही परिधि में किसी बिन्दु पर फूलकर अपने शिकार को लील लेता है। हाथ के रूप में उसका यह फैलाव अथवा उभार आवश्यकता के अनुसार प्रकट-अप्रकट होता रहता है।

बुद्धि के विकास के साथ हाथों व पंजों की बनावट भी बदलती गयी। समुद्री जीव पंखुड़ियों के समान उभरे हुए अपने अंगों से अंगुलियों का काम लेते हैं। विकास के अगले चरण में मांसाहारी जीव अपने पंजों और खुरों से अंगुलियों का काम लेते दिखाई देते हैं। अंगुलियों का अन्तिम अथवा चरम विकास बन्दरों में मिलता है। यूं तो वानर का हाथ मनुष्य के हाथ से मिलता-जुलता है, परन्तु अन्तर इतना है कि वानर का पंजा अंगूठे के अत्यधिक निकट है और इस तथ्य का सूचक है कि असली अंगूठा मनुष्य के पास है। वानर के अंगूठे के सम्बन्ध में निम्नोक्त दो बातें उल्लेखनीय हैं—

1. वानर का अंगूठा पंजे के एक ओर होता है तथा पर्याप्त ऊंचाई पर होता है।

2. वानर के अंगूठे में अंगुलियों के विरोध-प्रतिरोध करने का सामर्थ्य नहीं होता। एक अन्य उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि वानर जितना ही अधिक बुद्धिमान होगा, उसकी अंगुली अंगूठे से उतनी ही अधिक मिलती-जुलती होगी।

हाथ के सही निरीक्षण के लिए उसका पूरी तरह और सीधा खुला हुआ होना आवश्यक है। अंगूठे की स्थिति को जानने के लिए हाथ को बग़ल में ऊंचे, नीचे और बीच में रखकर देखना चाहिए। बन्दर के पंजे से पर्याप्त ऊपर स्थित अंगूठे की भांति अंगूठा रखने वाले व्यक्ति को मूर्ख ही समझना चाहिए। वस्तुतः अंगूठे का हाथ की पीठ से ऊंचा होना (रेखाचित्र-64) व्यक्ति के बौद्धिक ह्रास का तथा अनुशासन के पालन में उसकी शिथिलता का सूचक है। ऐसा व्यक्ति ऊंचा उठा हुआ व छोटे अंगूठे वाला, अधिकांशतः वानर के गुण रखने वाला ही होगा। वानर भले ही चालाक हो, परन्तु वह मानव-जैसी बुद्धि और सूझ-बूझ तो नहीं रखता, तभी तो वह तंग मुंह वाले मटके में से अपनी बन्द मुट्ठी को खोलकर न निकाल पाने के कारण पकड़ा जाता है।

निचला अंगूठा न केवल खुली अवस्था में हाथ की पीठ से दूर रहता है, अपितु हाथ के बन्द करने पर भी पीठ से सटता नहीं। बृहस्पति की अंगुली और निचले अंगूठे के बीच काफ़ी फ़ासिला रहता है (रेखाचित्र-65)। यह व्यक्ति में मानवीय गुणों की उच्चतम स्थिति को दिखाता है। ऐसा व्यक्ति हृदय से उदार, दूसरों की स्वतन्त्रता का समर्थक तथा दीन-दुखियों व अभावग्रस्तों की सहायता के लिए सदैव उद्यत रहने वाला होता है। निम्नस्थ अंगूठे वाला व्यक्ति उदार अवश्य होता है, परन्तु लचीले अंगूठे वाले व्यक्तियों के समान धन को लुटाने में विश्वास नहीं रखता। शुक्र पर्वत का निम्नस्थ भाग होने के कारण ऐसे व्यक्ति दूसरों के प्रति गहरी सहानुभूति और उदारता रखने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति किसी भी व्यक्ति द्वारा सहायता मांगे जाने पर उसे कदापि निराश नहीं करते। यह स्थिति इस तथ्य को सिद्ध करती है कि ऐसे व्यक्ति निष्ठुर और निर्मम नहीं होते। नीचे स्थित ऐसा अंगूठा सामान्यतः लम्बा

होता है और वह व्यक्ति के चरित्र में विशेषताओं—दृढ़ संकल्प, विवेक, उदारता तथा सहानुभूति आदि—की सम्पन्नता को प्रकट करता है।

अंगूठा छोटा हो, तो नीचे स्थित अंगूठे की उपर्युक्त विशेषताएं जाती रहती हैं। अंगूठे का छोटा होना व्यक्ति को वानर के निकट ले जाता है और उसमें वानर-जैसी स्वार्थपरता, चंचलता और बुद्धिहीनता पायी जाती है। छोटे अंगूठे वाले व्यक्ति निजी स्वार्थवृत्ति से प्रेरित होकर ही स्वतन्त्रता-प्रेमी होते हैं, परन्तु यहां यह उल्लेखनीय है कि ऐसा अंगूठा विरलता से ही दिखाई देता है। ऐसा अंगूठा सामने आने पर उसके अधूरे अथवा दूषित पर्वों के साथ-साथ उसके प्रभावी पर्वों, उसके खुलने पर हाथ के पास अथवा दूर रहने पर विचार करने के उपरान्त व उसके शीर्षभाग और सम्पूर्ण संयोजन का परीक्षण करते हुए ही सही निष्कर्ष निकालना चाहिए।

अंगूठे के प्रथम दो, अर्थात् प्रथम और द्वितीय, पर्वों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करना भी उपयोगी सिद्ध होता है। प्रथम पर्व को इच्छाशक्ति का और द्वितीय पर्व को तर्कशक्ति का प्रतीक माना जाता है। सभी हाथों के अंगूठों में यह देखना आवश्यक होता है कि उसका प्रथम अथवा द्वितीय पर्व अपूर्ण अथवा अत्यधिक विकसित तो नहीं है। सामान्य अथवा मध्यम स्थिति होने पर अंगूठे की लम्बाई आमतौर पर बृहस्पति की अंगुली के तीसरे पर्व के मध्य तक पहुंचती है (रेखाचित्र-66)।

अंगूठे का सामान्य रूप से इतना नीचे स्थित होने पर कि उसके कारण उसकी सामान्य लम्बाई भी छोटी लगे, ऐसे अंगूठे को 'छोटा अंगूठा' मानना चाहिए। इसके विपरीत दूसरी स्थिति यह है कि उच्च स्थान पर स्थित होने के कारण इस माप को पार करने वाला अंगूठा सामान्य लम्बा कहलाता है।

अंगूठे का सामान्य निरीक्षण करते समय ध्यान रखना चाहिए कि उसके प्रथम पर्व का दूसरे पर्व से कुछ छोटा होना 'सामान्य स्थिति' का और इसके विपरीत प्रथम पर्व का द्वितीय पर्व से अधिक लम्बा होना असामान्य स्थिति का सूचक है। असामान्य स्थिति का व्यक्ति इतना अधिक जल्दबाज़ होता है कि वह कुछ कर चुकने के उपरान्त ही सोच-विचार करता है। वह ग़लती करने पर भी अपनी हठधर्मिता के कारण अपने निर्णय पर अटल रहता है। वह यह सोच ही नहीं पाता कि अपनी ग़लती न मानने की उसे कितनी बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ती है (रेखाचित्र-67)।

अंगूठे के दूसरे पर्व की अधिक लम्बाई का अर्थ व्यक्ति का विवेकशील, तर्क-कुशल, परन्तु किसी परिणाम पर पहुंचने में असमर्थ होना है। ऐसा व्यक्ति तर्क तो करता है, परन्तु तर्क को कार्य-रूप नहीं दे पाता। ऐसे समग्र रूप और कार्यविधि से परिचित होने पर भी उसका समुचित लाभ नहीं उठा पाता।

जन्म से ही अविकसित इच्छाशक्ति वाले व्यक्तियों को प्रयास व अभ्यास
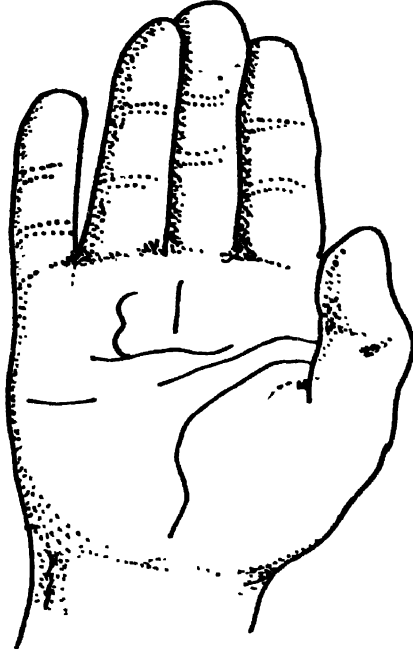
रेखाचित्र-66 व 67
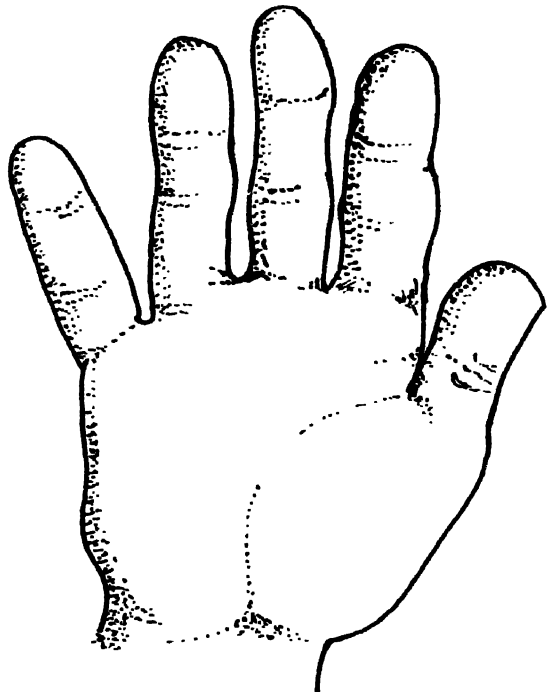
आदि कृत्रिम साधनों से विकसित इच्छाशक्ति वाला नहीं बनाया जा सकता। यह हम अपने अनुभव और प्रयोग के आधार पर कह रहे हैं। हमने अविकसित इच्छाशक्ति वाले कुछ व्यक्तियों को उच्च पदों पर प्रतिष्ठित करने और योग्यतम व्यक्तियों के सम्पर्क में रखने-जैसे प्रोत्साहन देकर देखा, तो प्रारम्भ में इन व्यक्तियों में इच्छाशक्ति और योग्यता प्रस्फुटित होने का आभास मिला, परन्तु उन लोगों से अलग होते ही, अर्थात् परीक्षण अवधि के समाप्त होते ही वही ढाक के तीन पात देखने को मिले। उनकी इच्छाशक्ति अपनी पूर्वस्थिति में आ गयी। यहां तक कि वे स्वार्थवश प्राप्त साधनों का ही दुरुपयोग करने लगे। इससे यह परिणाम निकला कि चौकसी की अवधि में आये परिवर्तन को वास्तविक स्थिति नहीं माना जा सकता; क्योंकि ऐसे व्यक्ति थोड़ा-सा चलने पर ही दम तोड़ देते हैं (रेखाचित्र-68)। इस तथ्य का सर्वोत्तम उदाहरण मदिरासेवियों का मदिरा-सेवन के परित्याग का संकल्प करना और फिर कुछ ही दिनों में इच्छाशक्ति का शिथिल पड़ना तथा उनका पुनः मदिरा-पान करने लगना है।
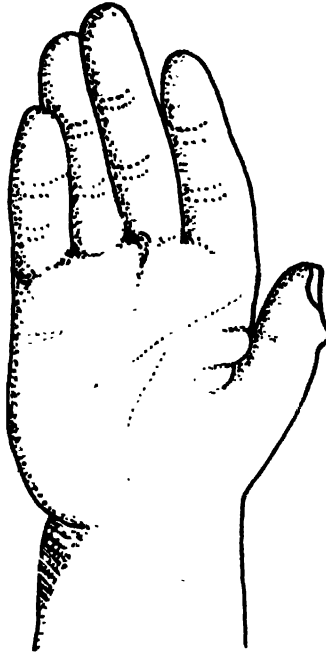
रेखाचित्र-68

कुछ हस्तरेखा-विशेषज्ञों के अनुसार कुछ व्यक्तियों के अंगूठे के पहले पर्व आगे बढ़ाने वाली संकल्पशक्ति भी प्रचुर परिमाण में लिये रहते हैं। अतः वे जीवन

के प्रत्येक क्षेत्र में सफल रहते हैं। वस्तुतः किसी भी उपलब्धि का मूल आधार अथवा तत्त्व दृढ़निश्चय, संकल्प एवं पक्का इरादा है। संकल्प के सामने उद्देश्य होना चाहिए, जिस ओर व्यक्ति प्रयत्नशील हो सके। व्यक्ति के कलात्मक अथवा व्यावहारिक बुद्धि का होने पर इच्छाशक्ति को आगे बढ़ने में सहायता मिलती है और समुचित योग्यता रखने पर व्यक्ति निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करता है। हां, योग्यता का अभाव होने पर व्यक्ति की संकल्पशक्ति क्षीण हो जाती है। अतः मोटे, भारी, परन्तु लम्बे अंगूठे वाले व्यक्ति की संकल्पशक्ति के कारण जीवन में सफल होने की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। ऐसे लक्षणों वाले अंगूठे की इच्छाशक्ति तो व्यक्ति की निकृष्टता को और अधिक निकृष्ट बना देती है।

हाथ पर अंगूठे के स्थान के सम्बन्ध में विचार करते समय बन्दर के अंगूठे के साथ उच्च अंगूठे की तुलना के अन्तर्गत उसके प्रभावों की और निम्नस्थ अंगूठे के गुण-दोषों की भी चर्चा पहले ही की जा चुकी है। अतः अब केवल समस्थिति वाले अंगूठे पर ही विचार करते हैं
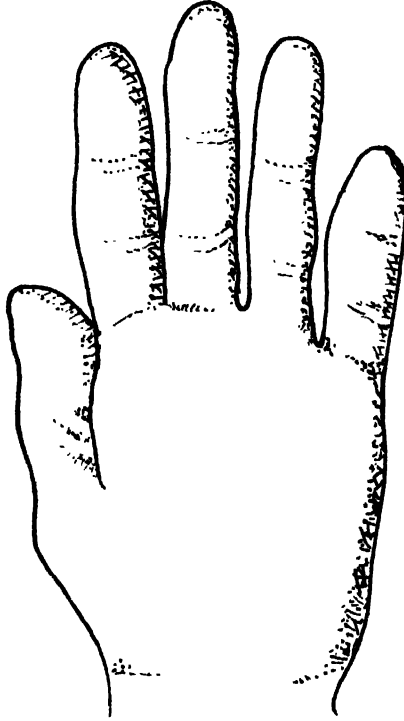
रेखाचित्र-69

समस्थिति वाला अंगूठा हाथ पर ऊपर की ओर या नीचे की ओर अथवा बराबर के स्थान पर अवस्थित, हाथ के साथ एकदम सटा हुआ व सीधा होता है।

यह कम लचीले जोड़ वाले निम्नस्थ अंगूठे से तथा खुलने पर अंगुलियों से काफ़ी दूरी रखने वाले अंगूठे से एकदम विपरीत गुणों वाला होता है (रेखाचित्र-69)।

इसमें जोड़ तो नहीं होता, फिर भी इसे कठोर नहीं कहा जा सकता; क्योंकि इसमें लचीलापन होता है। इसकी गतिशीलता तथा हाथ के पीछे की ओर इसका सटा हुआ होना इसकी पहचान है।

इस प्रकार के अंगूठे वाला व्यक्ति सतर्क ही नहीं होता, अपितु यह सोचकर लोगों से सम्पर्क नहीं बढ़ाता कि लोग उसके आगे अपनी मांगें प्रस्तुत करेंगे और उसे उन मांगों की पूर्ति के लिए प्रयास करना पड़ेगा। इस प्रकार के दृष्टिकोण वाले व्यक्ति तटस्थ प्रवृत्ति के होने के साथ-साथ स्वार्थी, आत्मकेन्द्रित तथा संकीर्ण मनोवृत्ति वाले भी होते हैं। यही कारण है कि इन लोगों से मेल-जोल बढ़ाना सरल नहीं होता। वे अन्य लोगों से दूरी बनाये रखने में ही अपना बड़प्पन समझते हैं और अपने ढंग का जीवन जीते हैं। ये लोग न तो दूसरों पर विश्वास करते हैं और न ही दूसरों का विश्वास जीत पाते हैं। इससे इनके मित्रों की संख्या अत्यन्त सीमित होती है। सत्य तो यह है कि ये न तो मित्र बनाना जानते हैं और न ही ऐसा चाहते हैं।

अंगूठे के साथ ही अंगुलियों के कठोर अथवा कम लचीली होने पर व्यक्ति के ये गुण-दोष और भी अधिक बढ़ जाते हैं। अगुंलियों के नाख़ूनों का छोटा और कोमल होना व्यक्ति के अत्यन्त दुष्ट और नीच प्रकृति का संकेत होता है। ऐसे व्यक्ति सौहार्द और सहानुभूति से सर्वथा रहित, परले दरजे के संकीर्ण, आत्मकेन्द्रित, उदासीन तथा एकान्तप्रिय होते हैं।

मध्य में स्थित अंगूठा न तो बहुत ऊंचा और न ही बहुत नीचा होता है, न वह एकदम हाथ से सटा हुआ और न ही बहुत दूर लटकने वाला होता है (रेखाचित्र-60)। वह सीधा उठा रहता है और साहस, निर्भीकता, स्वतन्त्रता और स्फूर्ति का सूचक होता है। ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति न तो एकदम उदार होते हैं और न ही कृपण। उनका दृष्टिकोण बड़ा ही सन्तुलित होता है। वे दूसरों के विचारों को बड़े ध्यान से सुनते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते समय अपनी गहरी सूझ-बूझ और समझदारी का परिचय देते हैं।

मध्य में स्थित अंगूठा व्यक्ति के मन और मस्तिष्क के सन्तुलित होने का सूचक है। ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति अपने विचारों में सन्तुलित, व्यवहार में सतर्क, अपने सम्मान की रक्षा करने वाले तथा दूसरों को यथोचित सम्मान देने वाले होते हैं। वे न तो एकदम लोगों से कट कर रहते हैं और न ही भावना अथवा आवेश में बह जाते हैं। वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सन्तुलन और विवेक का परिचय देते हैं तथा दुराव छिपाव के स्थान पर खुलेपन में विश्वास रखते हैं। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे दूसरों का विश्वास जीतने और उन्हें मित्र बनाने में सफल रहते हैं।

वस्तुतः मध्य में स्थित अंगूठा सुडौल होने के साथ-साथ आकर्षक भी होता है। यह न तो निरंकुशता और न ही टाल-मटोल का सूचक है। ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति सदैव संयमी, नियम और मर्यादा का पालन करने वाले तथा सामाजिक परम्पराओं का आदर करने वाले होने के अतिरिक्त उच्च विचारवान् होते हैं (रेखाचित्र-70)।
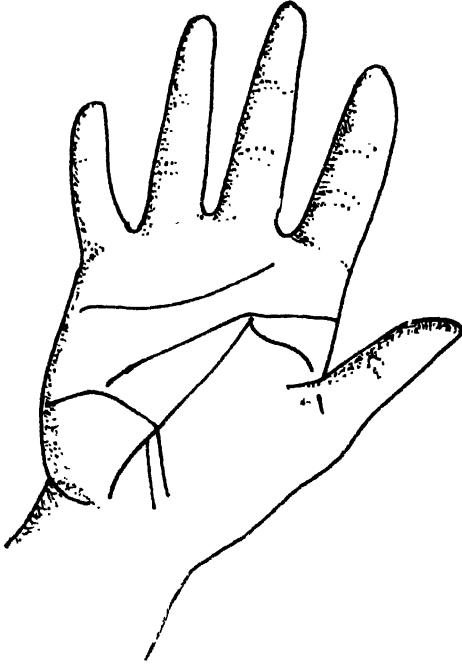
रेखाचित्र-70

अंगूठे की बनावट के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होने के कारण उसके सभी रूपों—आकार-प्रकारों—की जानकारी प्रस्तुत की जा रही है। भारी, मोटे व प्रारम्भिक अंगूठे की बनावट केले के समान होती है (रेखाचित्र-71)। वह न तो सुडौल व सुन्दर होता है और न ही आकर्षक। यहां तक कि उसके दोनों जोड़ भी अपने-अपने पृथक् स्थानों पर दिखाई नहीं देते, पूरा-का-पूरा अंगूठा हाथ पर चिपका हुआ मांसपिण्ड-सा लगता है। उत्कृष्ट अंगूठे का नमूना आगे प्रस्तुत है।

भारी व मोटा अंगूठा पाशविकता और नीचता का द्योतक होता है। ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति में ही नहीं, अपितु प्रेम-प्रसंगों में भी पाशविक होते हैं। ऐसे व्यक्ति निर्मम, अशिष्ट, दूसरों की भावनाओं को कुचलने वाले, दूसरों के अनादर में आत्मतृप्ति अनुभव करने वाले तथा दूसरों का उपहास करने वाले, नितान्त
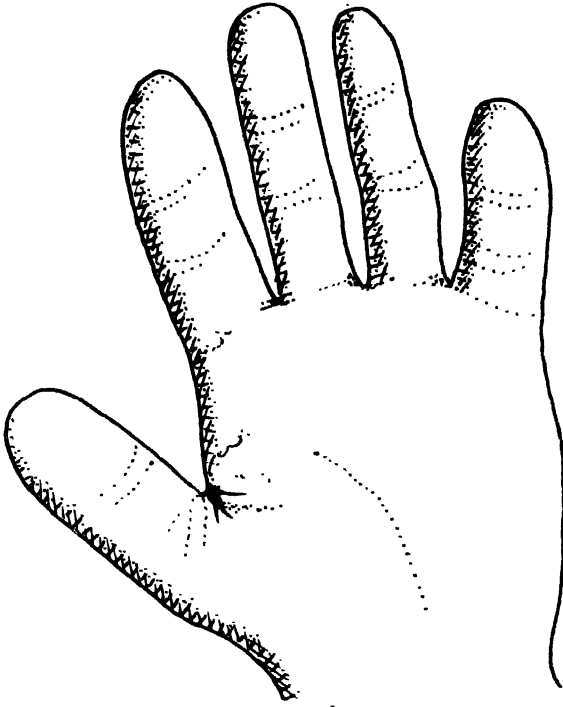
रेखाचित्र-71 व 72
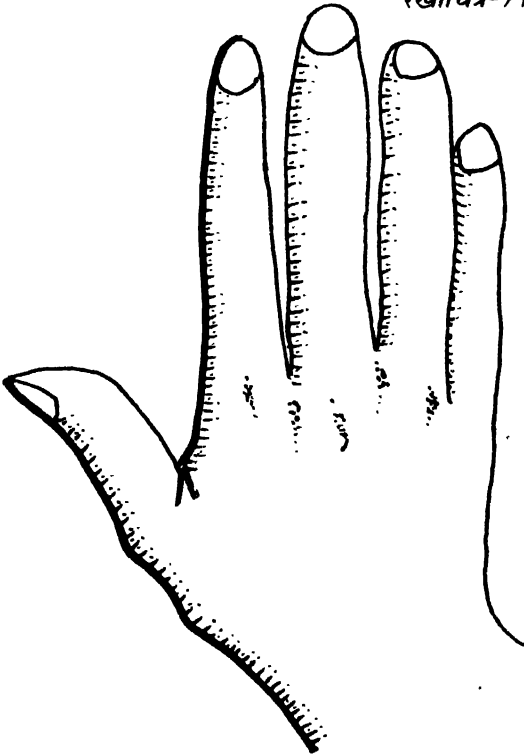
फूहड़ व असभ्य होते हैं। नितान्त विशुद्ध रूप से इस प्रकार के अंगूठे वाले व्यक्ति तो विरले ही मिलते हैं। हां, इससे मिलते-जुलते लक्षणों वाले व्यक्तियों का अभाव नहीं। इस जानकारी से ऐसे व्यक्तियों की चारित्रिक विशेषताओं को समझना और बताना सरल होगा।

कुछ अंगूठे दीखने में ही नहीं, अपितु पकड़ने पर भी बिल्कुल सपाट-से लगते हैं, परन्तु भीतर से पोले होते हैं (रेखाचित्र-72)। ऐसे अंगूठे सभी प्रकार की त्वचा, हाथ और अंगुलियों के पर्व वाले व्यक्तियों के हाथों में पाये जाते हैं। इन अंगूठों को कोमल अथवा शिथिल ही मानना चाहिए। इनका समतल तथा निस्तेज होना ही इनकी पक्की पहचान है। इस प्रकार के अंगूठे, स्नायु-बल और स्नायु-ऊर्जा के कारण 'स्नायविक अंगूठा' कहलाते हैं। ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति अत्यधिक सशक्त प्रकृति के होते हैं।

इस प्रकार के चपटे अंगूठों के नाख़ून प्राय: धारीदार होते हैं और ऐसे हाथों में रेखाएं अधिक पायी जाती हैं। चपटे अंगूठों के कोमल व शिथिल होने के कारण व्यक्ति स्नावयिक रूप से असन्तुलित होते हैं। जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं, चपटा अंगूठा ही स्नावयिक अंगूठा कहलाता है; क्योंकि यह प्रधान रूप से स्नायुतन्त्र की स्थिति का ही द्योतक होता है।

अंगूठे का एक अन्य प्रकार है—चपटे स्नावयिक अंगूठे से सर्वथा भिन्न गोल अथवा आरम्भिक अंगूठे के समान आकारविहीन तथा नाख़ून की ओर से मोटा व चौड़ा दीखने वाला (रेखाचित्र-73)। ऐसे अंगूठे के दोनों पर्व जहां चौड़े व मोटे होते हैं, वहां यह स्वस्थ और ठोस भी दिखाई देता है।

ऐसा अंगूठा व्यक्ति की शारीरिक और संकल्पशक्ति की दृढ़ता की द्योतक है। ऐसे व्यक्ति अपनी शक्ति का दुरुपयोग कभी नहीं करते। वे सदैव उसका स्वस्थ, उचित और न्यायसंगत प्रयोग करते हैं। वे सभी बाधाओं को पार करते हुए शीघ्रता से लक्ष्य-प्राप्ति की ओर बढ़ते चले जाते हैं। इन पर अंकुश न रखने से इनकी दृढ़ता आक्रामक रूप धारण कर अनर्थकारी भी सिद्ध हो सकती है।

अंगूठे का एक अन्य रूप है—पूरी लम्बाई में एक समान मोटा होना। ऐसा अंगूठा कोमल होने के साथ सुडौल भी होता है तथा इसका अग्रभाग वर्गाकार अथवा नुकीला होता है (रेखाचित्र-74)। इसका नाख़ून भी चिकना और गुलाबी आभा लिये रहता है और इसकी त्वचा उच्चकोटि की होती है। ऐसा अंगूठा जीवन में स्फूर्ति, शालीनता और परिष्कृति आदि गुणों से समृद्ध होता है तथा उत्तम स्तर का प्रथम पर्व होने पर ऐसा अंगूठा रखने वाले व्यक्ति प्रबल इच्छाशक्ति से सम्पन्न होते हैं। द्वितीय पर्व की प्रबलता व्यक्ति में तार्किक गुणों की स्थिति को दर्शाती है। ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति अपने गुणों का यथोचित उपयोग करके व्यवहारकुशल होने का
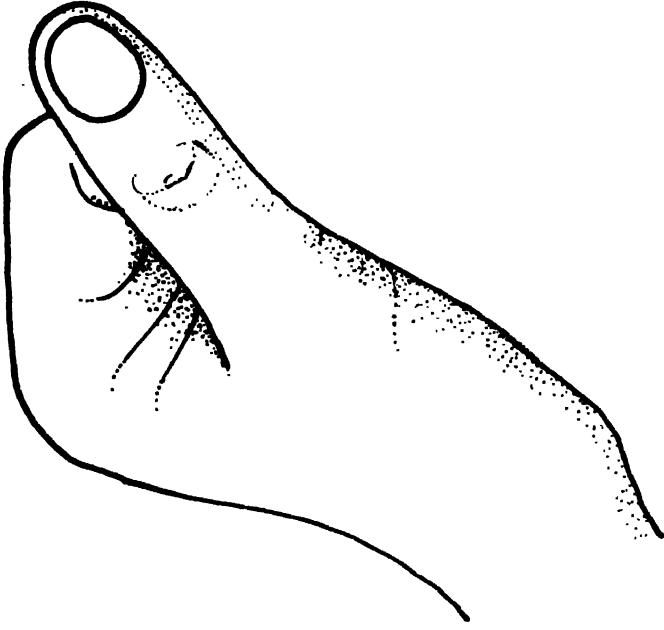
रेखाचित्र-73 व 74
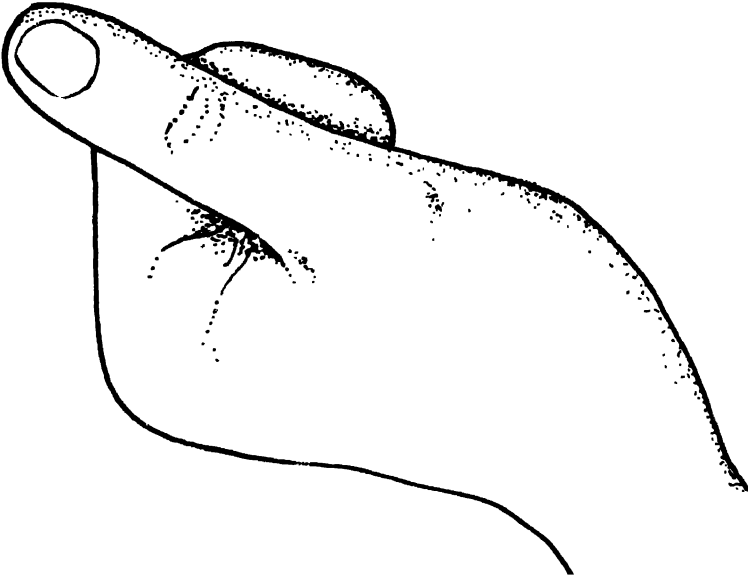
परिचय देते हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति किसी की भावनाओं को चोट पहुंचाये बिना ही लक्ष्य-प्राप्ति में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। वे अपनी स्वार्थ-पूर्ति के लिए दूसरों के हित की बलि चढ़ाने में विश्वास नहीं रखते। वे तो अपने दृढ़संकल्प और व्यवहारकुशलता से दूसरों को साथ लेकर आगे बढ़ने वाले होते हैं। वस्तुतः ऐसा सुन्दर और सुडौल अंगूठा व्यक्ति के आकर्षक व्यक्तित्त्व, दृढ़ चरित्र, विवेक और दयालु प्रवृत्ति का द्योतक होता है। इस अंगूठे वाले व्यक्ति जहां अपने उद्देश्य के प्रति पूर्णतः समर्पित रहते हैं, वहां वे अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों पर भी मोहक प्रभाव छोड़ते हैं।

इस प्रकार के अंगूठे के चार भेद—1. भारी-मोटा प्रारम्भिक, 2. सपाट-पोला, 3. गोल-चपटा तथा 4. एक समान लम्बा—होते हैं।

अंगूठे के इस विवेचन के उपरान्त अब हम उसके पर्वों, पर्वों की लम्बाई, अंगुली के सिरों की बनावट तथा स्वरूप आदि की चर्चा करेंगे। इन दो तथ्यों को कभी नहीं भूलना चाहिए—प्रथम, सामान्यतः अंगूठे का प्रथम पर्व उसके द्वितीय पर्व से कुछ छोटा होता है तथा द्वितीय, अंगूठे का अग्रभाग (सिरा) बृहस्पति की अंगुली के तृतीय पर्व के मध्य तक पहुंचने वाला होता है।

अंगूठे के किसी भी पर्व के सामर्थ्य एवं महत्ता के निर्णय के लिए सर्वप्रथम उसकी लम्बाई पर विचार करना अपेक्षित होता है। अंगूठे के प्रथम पर्व की अपेक्षा अधिक लम्बे द्वितीय पर्व वाले व्यक्तियों में विवेक की अपेक्षा इच्छाशक्ति की दृढ़ता देखने को मिलती है। ऐसे व्यक्ति दुराग्रही, निरंकुश, स्वेच्छाचारी तथा अत्यन्त ही उग्र प्रवृत्ति के होते हैं। वे अपने कार्यक्षेत्र में किसी के भी हस्तक्षेप को सहन नहीं करते। इतना ही नहीं, अपितु एकदम असंयत-असन्तुलित तक हो उठते हैं। यह एक प्रकार से उत्तम गुण की अधिकता के बुरे परिणाम में परिणत होने का उदाहरण है। वस्तुतः इच्छाशक्ति के विवेक से अधिक प्रबल होने से दुराग्रह का पनपना सर्वथा स्वाभाविक ही है।

अंगूठे के प्रथम पर्व की लम्बाई का द्वितीय पर्व की लम्बाई के बराबर होने का अर्थ है—दोनों—विवेक और इच्छाशक्ति—गुणों की समस्थिति (रेखाचित्र-75) दोनों गुणों के सन्तुलित होने का परिणाम यह होता है कि ऐसे व्यक्तियों के निर्णय सदैव विवेकसम्मत होते हैं। यह लोग मनमाने ढंग से इच्छाशक्ति का प्रयोग नहीं करते; क्योंकि उस पर तर्क और विवेक का नियन्त्रण रहता है। इसके साथ ऐसे व्यक्तियों में निर्धारित कार्य की पूर्ति की दिशा में शिथिलता, उपेक्षा अथवा टाल-मटोल के भाव भी नहीं रहते। वस्तुतः ऐसे व्यक्ति मेधावी तथा नेतृत्व गुणों से सम्पन्न होते हैं।
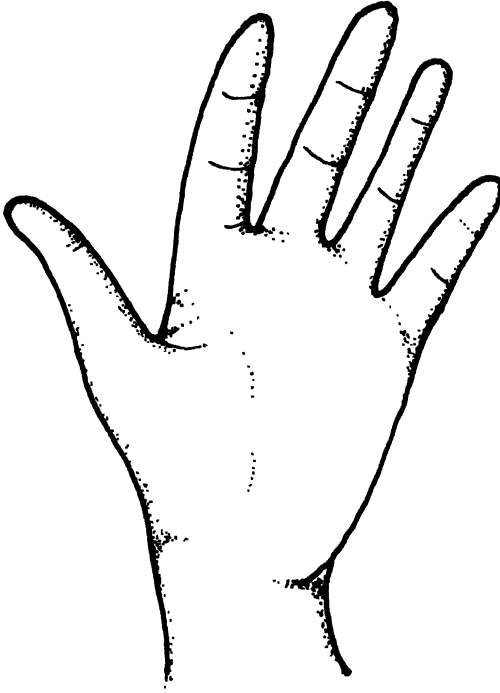
रेखाचित्र-75

प्रबल द्वितीय पर्व और अपूर्ण प्रथम पर्व वाला अंगूठा रखने वाले व्यक्ति असन्तुलित स्वभाव के होते हैं। वे विवेक के नियन्त्रण में इस प्रकार जकड़े रहते हैं कि बस, सोचते ही रह जाते हैं, करते कुछ भी नहीं। ये लोग संकल्पशक्ति की दृढ़ता न रखने के कारण अपने विचारों को कार्यरूप नहीं दे पाते। वे राज्य-सञ्चालन, धर्म के स्वरूप तथा व्यवसाय-धन्धे के आदर्श रूप की चर्चा तो बढ़-चढ़कर करते हैं, परन्तु किसी दायित्व को संभालने के लिए कभी आगे नहीं बढ़ते।

तर्कशक्ति के द्योतक द्वितीय पर्व के इच्छाशक्ति के द्योतक अंगूठे के प्रथम पर्व से छोटा होने का अर्थ है—इच्छाशक्ति की दुर्बलता। कोई भी ऐरा-ग़ैरा ऐसे व्यक्तियों को आसानी से उल्लू बना सकता है। ये लोग बहुत शीघ्र ही निरुत्साहित हो जाते हैं, अत: ये कभी स्वामी नहीं बन पाते, सदैव अधीन बने रहना ही पसन्द करते हैं। कभी-कभी अपने को सही सिद्ध करने के लिए इनकी हठधर्मिता अपनी पराकाष्ठा तक पहुंच तो जाती है, परन्तु इच्छाशक्ति की जन्मजात दुर्बलता के कारण टिकी नहीं रह पाती।

इच्छाशक्ति वाले पर्व से तर्कशक्ति वाले पर्व की अत्यधिक तथा अतिन्यून लम्बाई के विभिन्न स्तरों के अनुरूप व्यक्तियों के स्वभाव में भिन्नता के विभिन्न रूप

देखने को मिलते हैं। वास्तव में जहां किसी भी पदार्थ की अल्पता अथवा अपर्याप्तता अवाञ्छनीय होती है, वहां उसकी अति भी कदापि वाञ्छनीय नहीं होती; क्योंकि अति वाले व्यक्ति भी संसार के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं।

अंगुलियों के पर्व (अग्रभागों) के समान ही अंगूठे के पर्वों की भी परख विशेष सावधानी से करनी अपेक्षित होती है; क्योंकि इन्हीं अग्रभागों की भिन्नता से व्यक्ति में शक्ति की न्यूनता-अधिकता की जानकारी मिलती है। अंगूठे के छोर के नुकीला होने का अर्थ है—व्यक्ति के अतिसंवेदनशील होने के कारण उसकी इच्छाशक्ति का दुर्बल होना। नुकीले पर्व की अन्य विशेषताएं हैं—अन्त:प्रेरणा, सौन्दर्य, प्रेम तथा आदर्शवाद। अंगूठे के पर्व का नुकीलापन अंगूठे की अतिरिक्त लम्बाई से जुड़ी इच्छाशक्ति की प्रबलता को भी क्षीण कर देता है। नुकीले पर्व वाला अंगूठा रखने वाले व्यक्ति न केवल कम निरंकुश होते हैं, अपितु उन्हें प्रभावित करना भी सरल होता है। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि नुकीले पर्व की कोमल विशेषताएं इच्छाशक्ति वाले लम्बे पर्व द्वारा व्यक्त की जाने वाली इच्छाशक्ति के साथ जुड़ जाती हैं। अंगूठे के पर्व के नुकीला और इच्छाशक्ति वाले पर्वों के अधूरा होने का अर्थ है—व्यक्ति न केवल अत्यधिक दुर्बल है, अपितु उसका जीवन भी अस्थिर है।

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, अंगूठे के पर्व का नुकीलापन व्यक्ति के अतिसंवेदनशील होने का और इच्छाशक्ति में न्यूनता का द्योतक है। सत्य तो यह है कि अंगूठे के इच्छाशक्ति वाले पर्व की लम्बाई भले ही कितनीं अधिक क्यों न हो, अंगूठे के अग्रभाग का नुकीलापन उसे अवश्य ही प्रभावित करेगा। इच्छाशक्ति में शिथिलता का आना निश्चित ही है (रेखाचित्र-76)।

अंगूठे के पर्व के वर्गाकार होने का अर्थ है—व्यक्ति का व्यवहारकुशल और सामान्य ज्ञान से सम्पन्न होना (रेखाचित्र-77)। अंगूठे का वर्गाकार पर्व अधूरे पर्वों वाले अंगूठे को शक्ति प्रदान करता है, सामान्य पर्व की सामान्य जानकारी में वृद्धि करता है तथा अत्यधिक लम्बाई वाले पर्व की विशेषताओं को तीव्र-प्रचण्ड बनाता है, परन्तु यह स्थिति वाञ्छनीय नहीं होती; क्योंकि पर्व के वर्गाकार होने तथा लम्बाई के अत्यधिक होने पर व्यक्ति परले दरजे का दुराग्रही बन जाता है।

अंगूठे के पर्व के चमचाकार होने का अर्थ है—व्यक्ति की इच्छाशक्ति का मौलिक, सक्रिय और स्वतन्त्र होने (रेखाचित्र-78) के अतिरिक्त अपूर्ण इच्छाशक्ति वाले पर्व को भारी सामर्थ्य प्राप्त होना। अंगूठे के पर्व के चमचाकार होने तथा इच्छाशक्ति वाले पर्व के लम्बा होने पर व्यक्ति में उत्साह, स्फूर्ति, सक्रियता और कुशलता-जैसे गुणों का समावेश हो जाता है। यह सामर्थ्य दुर्बल व्यक्ति को कर्मशील एवं सुखी बनाने वाली सिद्ध होती है। हां, सबल व्यक्ति की शक्ति में आशातीत वृद्धि
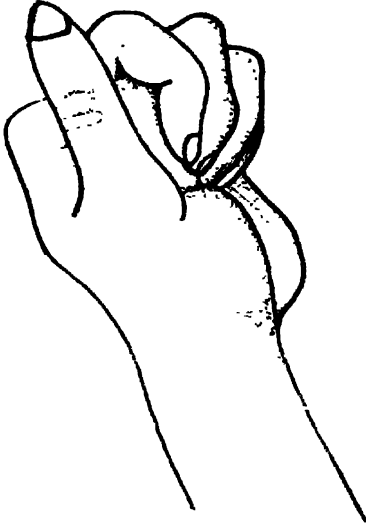
रेखाचित्र-76 व 77
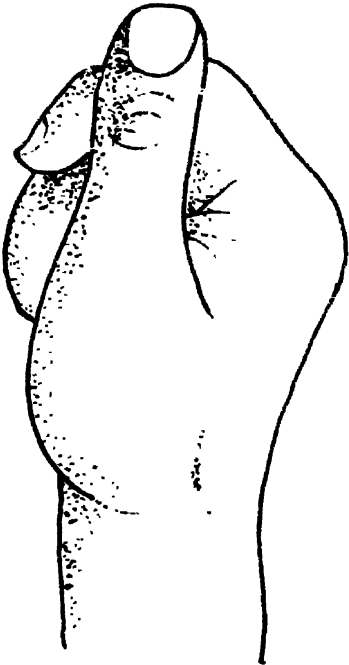
हो जाने से उसे अपनी शक्ति को ख़र्च करने के लिए नये स्रोतों की खोज करनी पड़ती है। इस प्रकार इच्छाशक्ति वाले पर्व की लम्बाई की अधिकता और पर्व का चमचाकार होना संकट का निश्चित संकेत होता है। ऐसे व्यक्तियों की सफलता सदैव सन्दिग्ध बनी रहती है।

उपर्युक्त तीनों प्रकार के पर्वों—नुकीलापन, वर्गाकार और चमचाकार—को उनकी बनावट से पहचाना जा सकता है। वस्तुत: अंगूठे के पर्वों की बनावट अंगुलियों के पर्वों की बनावट-जैसी ही होती है। अब हमें अंगूठे के इच्छाशक्ति वाले पर्व की बहुधा दीखने में आने वाली, परन्तु किसी एक वर्ग में न रखी जा सकने वाली विभिन्न आकृतियों के सम्बन्ध में विचार करना है।

कुछ अंगूठे इच्छाशक्ति वाले पर्व के साथ नाख़ून की ओर से पूरी तरह से भारी न होने पर भी काफ़ी चौड़े दिखाई देते हैं। इस पर्व के न तो बहुत पतला और न ही गद्दे अथवा मूठ-जैसा भारी होने से यह चपटा-सपाट स्नायविक पर्व होता ही नहीं है। इस प्रकार के अंगूठों की मुख्य विशेषता इनकी चौड़ाई का अत्यधिक होना है। इस अत्यधिक चौड़ाई के कारण ही इन्हें फावड़ा अथवा चप्पू के आकार वाले अंगूठे कहा जाता है (रेखाचित्र-79)। ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति इस सीमा तक दृढ़ निश्चयी होते हैं कि वे निरंकुश, स्वच्छन्द और दुराग्रही के रूप में जाने जाते हैं। अंगूठे की लम्बाई में कमी होने पर भी चप्पू-जैसा पर्व व्यक्ति की दृढ़ता में शिथिलता नहीं आने देता।

यहां यह उल्लेखनीय है कि दृढ़ इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति का शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ-सशक्त होना आवश्यक नहीं। सत्य तो यह है कि ऐसे व्यक्ति अंशत: रुग्ण और दुर्बल होते हैं। इच्छाशक्ति की दृढ़ता का सम्बन्ध तो मन से है। मनोबल के बने रहने पर साधारण स्थिति के व्यक्ति द्वारा भी उच्च साहस का प्रदर्शन करते देखा जाता है और इसके विपरीत मनोबल के गिर जाने पर समर्थ व्यक्ति भी कायर-जैसे कार्य करते देखे जाते हैं। वस्तुत: किसी संकट की स्थिति में कुछ व्यक्तियों में एक ऐसा विलक्षण साहस आ जाता है कि उसके साथी उसके इस रूप को देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं। प्राय: यह भी देखा जाता है कि संकट के टल जाने पर अत्यन्त साहसी प्रतीत होने वाला व्यक्ति ''काग़ज़ी शेर'' के रूप में सामने आता है। एक नाविक ने अपने एक साथी के दुर्व्यवहार पर क्षुब्ध होकर उसे बुरी तरह से इतना पीटा कि उसे विश्वास हो गया कि वह मर गया है। इस स्थिति में वह इस प्रकार घबरा गया कि अपने कार्यक्षेत्र को छोड़कर अपने घर को भाग गया। वह अपनी पत्नी को रात-भर सारी घटना का विवरण बार-बार सुनाता रहा। वह नाविक अपनी पत्नी से इस घटना की चर्चा अन्य रात्रियों में भी निरन्तर करता रहा। संयोग से उसकी पत्नी गर्भवती थी और उसने यथासमय (नौ महीनों के उपरान्त) एक मूठदार अंगूठे वाले शिशु को
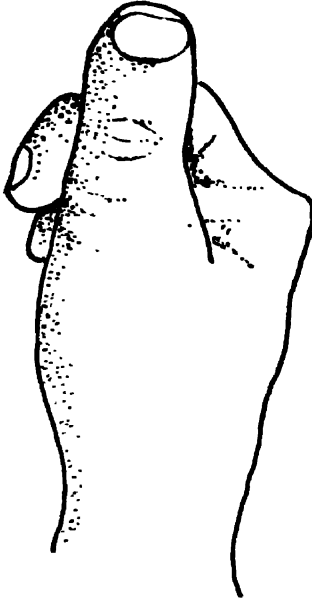
रेखाचित्र-78 व 79
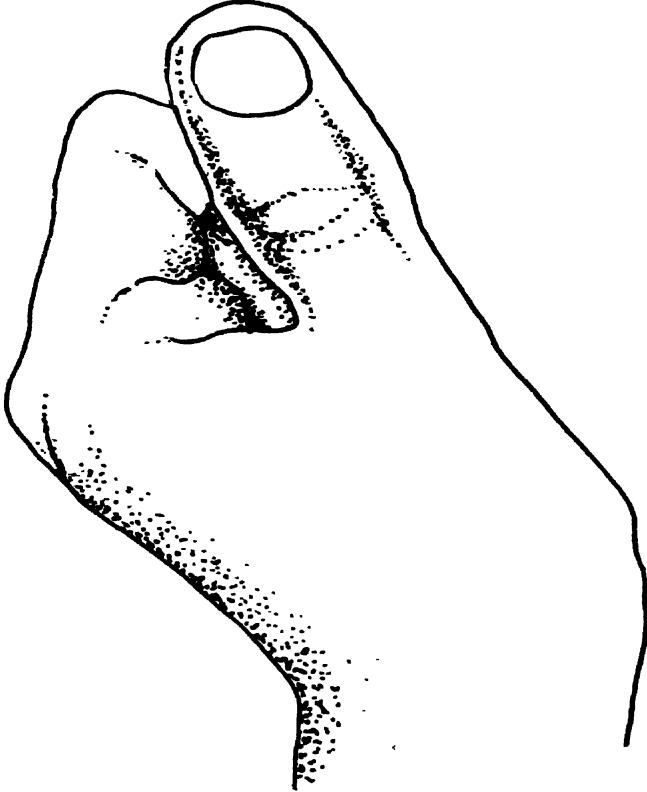
जन्म दिया। इस बालक के अंगूठे के चारों ओर किरमिजी रंग का एक फ़ीता था।

कभी-कभी कुछ ऐसे अंगूठे भी देखने को मिलते हैं, जिनका इच्छाशक्ति वाला पर्व मोटा, गोल या मोटा-चौड़ा होता है तथा नाख़ून छोटा एवं अत्यन्त घटिया होता है। ऐसे अंगूठे किन्हीं दुर्बल-रोगी व्यक्ति के नहीं, अपितु स्वच्छ एवं हृष्ट-पुष्ट व्यक्तियों के भी होते हैं। इन अंगूठों की बनावट अलग से मूठ-जैसी होने के कारण ही इन्हें 'मूठदार अंगूठा' कहा जाता है (रेखाचित्र-80)।
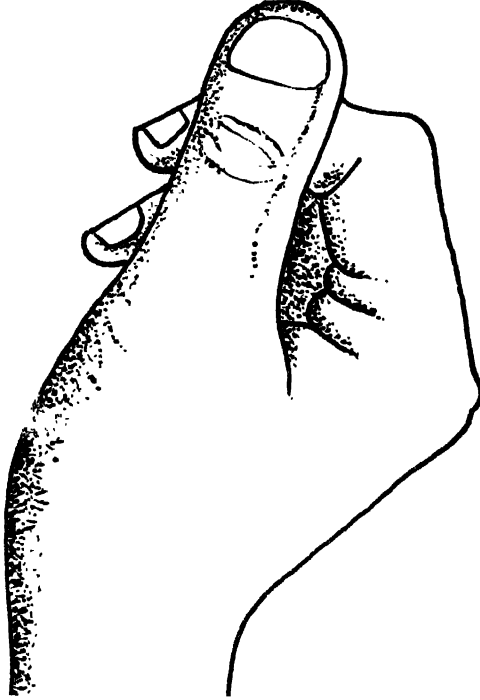
रेखाचित्र-80

मूठदार अंगूठों की मोटाई और इनका रूखापन इनके धारकों के पशु-स्तर के दुस्साहसी, हठी, मूर्ख और हत्यारा होने का सूचक है। कहने की आवश्यकता नहीं कि ऐसे अंगूठों वाले व्यक्ति अत्यन्त नीच प्रकृति के होते हैं, यहां तक कि उनकी हथेली में दीखने वाले गुण भी दोष बन जाते हैं और व्यक्ति को कहीं अच्छा परिवेश मिल जाये और इनकी हथेली के गुण विकार न बनने पायें, तो इनका मूठदार अंगूठा पाशविकता का प्रदर्शन नहीं करता, परन्तु इस तथ्य को कदापि आंखों से ओझल नहीं करना चाहिए कि थोड़ी-सी ढील मिलते ही मूठदार अंगूठा अपनी धूर्तता का प्रदर्शन करने से कभी नहीं चूकता।

मूठदार अंगूठों के प्रायः वंशानुगत (वंश-परम्परा)होने से ऐसे अंगूठों को

देखते ही व्यक्तियों के बाप-दादाओं के चरित्र का सहज अनुमान लगा लेना चाहिए। पीढ़ी-दर-पीढ़ी ऐसे अंगूठे वाले व्यक्तियों के चरित्र के सम्बन्ध में किया गया अध्ययन सर्वथा सत्य सिद्ध हुआ है। अत: यह निश्चित समझना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति अत्यन्त ख़तरनाक होते हैं और इनसे छेड़खानी करना संकट को न्योता देना होता है।

यद्यपि हमने मूठदार अंगूठे को "हत्यारे का अंगूठा" कहा है, तथापि इस अंगूठे वाले व्यक्ति को अनिवार्यत: हत्या कर चुकने वाला अथवा हत्या करने वाला मानना भी एक भूल होगी; क्योंकि कभी-कभी ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति अत्यन्त सौम्य आचरण करते भी देखे जाते हैं। इस विपरीत स्थिति का कारण मैथुन अथवा गर्भधारण में किसी विकृति का आना है।

अपने मूल स्थान पर पूर्णरूप से विकसित मूठदार अंगूठा, सुडौल-मशक्त शुक्र पर्वत, हाथ की कठोर संगति, सुदृढ़ता और सीधापन, तृतीय पर्व में बहुत मोटी और प्रथम पर्व में बहुत छोटी अंगुलियां और उन अंगुलियों पर छोटे नाख़ून तथा हाथ में गहरी लाल रेखाएं रखने वाले व्यक्ति अत्यन्त असहनशील होते हैं। यहां तक कि साधारण-से विरोध पर मरने-मारने को उतारू हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति भयंकर एवं गम्भीर परिणामों को भुगतने के उपरान्त भी अपनी पाशविक प्रवृत्तियों को छोड़ नहीं पाते। अनेक हत्यारों के हाथ प्राय: ऐसे लक्षणों वाले ही होते हैं। उनके हृदय में ईर्ष्या, द्वेष और प्रतिशोध के भाव इतने उग्र और प्रचण्ड होते हैं कि उनकी मानसिकता ही विकृत हो जाती है। वे कभी अच्छा न कर सकते हैं और न ही ऐसा सोच सकते हैं। वास्तव में अपने हाथ के अंगूठे के मूठदार और उसमे जुड़े दोषों के कारण वे सहज में और अकारण ही किसी से मार-पीट करने ही नहीं, अपितु किसी की हत्या करने तक को उत्तेजित हो जाते हैं। मूठदार अंगूठे के इन दुर्गुणों के कारण ऐसे अंगूठे वाले को 'हत्यारा' कहना सर्वथा सही उतरता है; क्योंकि ऐसा अंगूठा पशुवृत्ति, हिंसावृत्ति, प्रतारणा और प्रवञ्चना-जैसे निकृष्ट दोषों का प्रतीक होता है। हां, मूठदार अंगूठे को देखकर अपना निर्णय देने में शीघ्रता नहीं करनी चाहिए, अपितु हाथ के प्रत्येक भाग का सूक्ष्म और गहन अध्ययन करके इस दिशा में निर्धारित मानदण्डों के आधार पर उसका विश्लेषण करके तथा सभी तथ्यों में सन्तुलन स्थापित करते हुए किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि मूठदार अंगूठे को चमचाकार समझने की ग़लती तो कभी नहीं करनी चाहिए, अपितु व्यक्ति के स्वभाव को घटिया बनाने तथा पशु-स्तर पर लाने वाले तथ्यों पर विचार करना चाहिए। यह नहीं भूलना चाहिए कि लचीलापन व्यक्ति की लचीली मानसिकता का सूचक होता है। शुक्र पर्वत व्यक्ति के स्वभाव को ही कोमल नहीं बनाता, अपितु प्रेम, सहानुभूति-जैसे गुणों के साथ-साथ व्यक्ति के स्वभाव को अनियन्त्रित करने

वाले पाशविक उन्माद को भी विकसित करता है। अंगूठे में इच्छा तथा पर्वशक्ति वाले पर्वों को अलग करने वाली गांठ कभी होती है और कभी नहीं होती। यह गांठ अन्य स्थानों पर किये जाने वाले कार्य यहां भी करती है। यह प्राणवायु का मार्ग अवरुद्ध करके व्यक्ति को सोचने के लिए बाध्य करती है (रेखाचित्र-81)। यह गांठ प्रथम पर्व की शक्ति को बढ़ाती है, अंगुली के नुकीले छोर को प्रबल बनाती है, प्रथम पर्व के ज्ञान को घटाती है और द्वितीय पर्व की सूझबूझ को बढ़ाती है। यहां तक कि उसे जल्दबाज़ी में किसी निर्णय को लेने से रोकती है। इन सभी तथ्यों पर सूक्ष्म और गहन विचार करने के उपरान्त ही मूठदार अंगूठे वाले व्यक्ति के चरित्र के सम्बन्ध में निश्चित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।
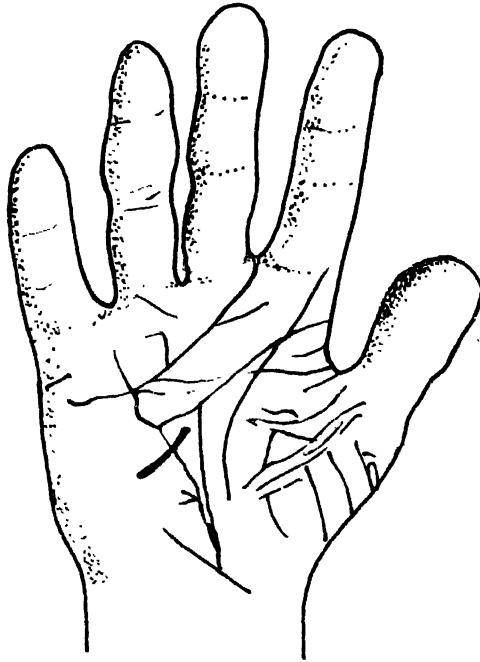
रेखाचित्र-81

अब हम तर्क, समझदारी, सूझ-बूझ, विवेक और निर्णय की क्षमता-जैसे उत्कृष्ट गुणों को व्यक्त करने वाले द्वितीय पर्व की चर्चा करेंगे। इस द्वितीय पर्व को प्रथम पर्व से अलग रखने का कारण यह है कि वे लोग प्राय: बुद्धिमान् कहलाते हैं, जो किसी आवेश अथवा आवेग में आकर किसी काम को शीघ्रता से निपटाने में विश्वास नहीं रखते, अपितु ख़ूब सोच-समझकर ही कोई पग उठाते हैं। इस प्रकार इस पर्व का विवेक अथवा समझदारी से निश्चित सम्बन्ध समझना चाहिए। यदि यह

पर्व अंगूठे से सटा हुआ हो और न ही कठोर हो और न ही लचीला, तो विवेक का गुण अत्यन्त समृद्ध अथवा उन्नत स्थिति में होता है। हां, समझदारी का यह गुण कभी-कभी व्यक्ति को धन के व्यय के सम्बन्ध में कृपण भी बना देता है।

द्वितीय पर्व की लम्बाई की जांच के लिए हथेली से जोड़ने वाले इसके जोड़ से प्रारम्भ करके प्रथम और द्वितीय पर्व के बीच वाले जोड़ तक नापना चाहिए। ऐसा करते समय इस तथ्य पर दृष्टि रखनी चाहिए कि अंगूठा अपनी स्वाभाविक मुद्रा में रहता है अथवा नहीं। जोड़ों की स्पष्ट स्थिति को जांचने के लिए प्रथम पर्व को हथेली की ओर से मोड़ना चाहिए और इस प्रकार इस पर्व की सही लम्बाई निर्धारित करनी चाहिए (रेखाचित्र-82)।

रेखाचित्र-82

सामान्यतया पर्वों की लम्बाई हाथ की लम्बाई के अनुपात में होती है। बहुत लम्बे हाथ में जहां पर्व काफ़ी लम्बे होते हैं, वहां छोटे हाथों में छोटे होते हैं। हस्तरेखाशास्त्री के लिए यह निश्चित करना आवश्यक है कि पर्वों की लम्बाई हाथ की लम्बाई के अनुरूप है अथवा इच्छाशक्ति वाले पर्व के अनुरूप है। इच्छाशक्ति वाले पर्व को अन्य पर्वों से कुछ अधिक लम्बा होना ही चाहिए। प्रथम पर्व और द्वितीय पर्व की लम्बाई का बराबर होना एक शुभ लक्षण ही समझना चाहिए; क्योंकि

द्वितीय पर्व विवेक और तर्क का प्रतीक है। इसकी लम्बाई और बनावट इच्छाशक्ति के पीछे विवेक और तर्कबुद्धि की प्रौढ़ता को सूचित करती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि सुविचारित इच्छाशक्ति ही सफलता को सुनिश्चित करती है। इच्छाशक्ति वाले प्रथम पर्व से इच्छाशक्ति के नियन्त्रक इस प्रथम पर्व के अधिक लम्बा होने का अर्थ है—व्यक्ति सूझ-बूझ और समझदारी से ही नहीं, अपितु सही दिशा में काम करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति और उसका परामर्श विश्वसनीय होता है। दोनों—प्रथम और द्वितीय—पर्वों के समान रूप से लम्बा होने का अर्थ है—व्यक्ति के दुराग्रही तथा अहंकारी होने पर भी वह विवेक के पल्ले को कभी नहीं छोड़ता। अत: जीवन में कभी असफलता का सामना नहीं करता।

अंगूठे का निरीक्षण करते समय द्वितीय पर्व के लम्बा होने पर व्यक्ति में प्रबल सक्रिय विवेकशक्ति होने की निश्चित सम्भावना का उल्लेख हम पीछे कर चुके हैं। यहां उल्लेखनीय यह है कि इस लम्बाई के साथ पर्वों का नुकीलापन व्यक्ति को आवेगशील बनकर उसकी दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति को घटा देता है, जबकि पर्वों के वर्गाकार होने पर निर्णय की क्षमता ठोस और व्यावहारिक रूप ले लेती है। इन्हीं पर्वों के चमचाकार होने पर व्यक्ति अपनी ऊर्जा का अन्यान्य क्षेत्रों में सदुपयोग करने में समर्थ हो जाता है। अत: यह एक निश्चित एवं निर्भ्रान्त तथ्य है कि द्वितीय पर्व सभी दृष्टियों से सन्तुलन रखने वाला सिद्ध होता है। प्रथम और तृतीय पर्वों के मध्यवर्ती द्वितीय पर्व की लम्बाई व्यक्ति को अपनी इच्छाशक्तियों को नियन्त्रित रखने में समर्थ सूचित करती है और इसके विपरीत इस पर्व के छोटा-अधूरा होने पर यह व्यक्ति के स्वच्छन्द होने का संकेत देती है। इस प्रकार यह द्वितीय पर्व इच्छाशक्ति और प्रेम के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाता है और विवेक के द्वारा उन्हें समुचित दिशा-निर्देश देता है।

द्वितीय पर्व का प्रथम पर्व से छोटा होना इच्छाशक्ति से तर्कशक्ति की अधिक प्रबलता का संकेतक है। यह स्थिति इच्छाशक्ति को पथभ्रष्ट करने वाली होती है। द्वितीय पर्व की बनावट कमर-जैसी पतली होने का अर्थ व्यक्ति की इच्छाशक्ति का सामान्य स्थिति में रहना है। द्वितीय पर्व के छोटा और साथ ही मोटा होने का अर्थ है—व्यक्ति चरम स्तर पर दुराग्रही, बिना सोच विचार किये कार्य में प्रवृत्त होने वाला तथा अनेक ग़लतियां करने कर भी किसी प्रकार न सुधरने वाला, यहां तक कि सुधार के अवसर मिलने पर भी उनकी उपेक्षा करने वाला होता है। वस्तुत: द्वितीय पर्व का छोटा होना व्यक्ति की इच्छाशक्ति की दुर्बलता का सूचक होता है। दुराग्रह के स्तर की इच्छाशक्ति का सही पथ-प्रदर्शन के लिए तर्कशक्ति का संयोग आवश्यक है, जो नहीं होता और इसी से दुष्परिणाम सामने आते हैं। अंगूठे के छोर का पैनापन अथवा नुकीलापन जले पर नमक पर कार्य करता है, अर्थात् छोटे द्वितीय पर्व की

दुर्बलता को और भी अधिक दुर्बल बना देता है। वस्तुत: तर्कशक्ति की अनुपस्थिति के कारण इच्छाशक्ति का प्रभावित हो जाना सुगम हो जाता है और फिर इससे अंगूठे के सभी अच्छे गुण नाकारा हो जाते हैं।

अंगूठे के पर्व के वर्गाकार होने का अर्थ है—अनुशासनप्रिय व्यक्ति में भी सामर्थ्य और आत्मविश्वास आदि गुण इस स्तर तक दुर्बल हो जाते हैं कि उसकी स्थिति अथवा प्रदर्शन उपहासास्पद बन जाता है। वह व्यर्थ में हो-हल्ला करने वाला 'काग़ज़ी शेर' कहलाता है। इतना ही नहीं, द्वितीय पर्व के अधूरा अथवा बहुत छोटा होना से अंगूठे के अन्य गुण भी अपनी उपयोगिता एवं महत्ता खो बैठते हैं। जैसा कि हम पहले लिख आये हैं, प्रबल इच्छाशक्ति समुचित दिशा-निर्देश न पाकर उच्छृंखल हो जाती है। इस प्रकार के—वर्गाकार छोर वाले—व्यक्ति कमरे को साफ़-सुथरा रखने, कपड़ों को झाड़ने तथा बैठक (ड्राइंगरूम) को सजाने-संवारने में ही अपनी सारी ऊर्जा को ख़र्च कर देते हैं। वे अपनी शक्ति का सदुपयोग किसी महत् उद्देश्य में न करके केवल वस्तुओं को व्यवस्थित रूप देने में ही उसे व्यर्थ गंवा देते हैं।

इस प्रकार द्वितीय पर्व का छोटापन वर्गाकार पर्वों के सभी उत्कृष्ट गुणों को शून्य अथवा नाममात्र का बना देता है। यही कारण है कि चमचाकार पर्वों वाले व्यक्ति गरजने वाले बादल होते हैं, बरसने वाले नहीं। वे सोचते हैं, कुछ करने को बिलबिलाते हैं, परन्तु अपूर्ण तर्कशक्ति के कारण कुछ कर नहीं पाते। इस प्रकार द्वितीय पर्व की लम्बाई को व्यक्ति की तर्कशक्ति के स्तर पर मापदण्ड मानना चाहिए। अत: द्वितीय पर्व की बनावट पर विचार करते समय उसके प्रकार पर भी ध्यान देना चाहिए।

पर्व का चौड़ापन (मोटापा अथवा मांसल होना नहीं) तर्कशक्ति देने वाली मांसपेशियों के चुस्त-दुरुस्त होने का सूचक है। ऐसा व्यक्ति कभी अशिष्टता को अपना ही नहीं सकता। उसके विचार सदैव स्वस्थ-उत्कृष्ट होंगे और उसका आचरण प्रशंसनीय होगा। पर्व के चौड़ेपन के साथ अंगुलियों के पर्वों का वर्गाकार होना व्यक्ति को व्यावहारिक तथा साथ में प्रथम पर्व की उत्कृष्टता उसे दृढ़संकल्पशील सिद्ध करती है। इस प्रकार का द्वितीय पर्व दुर्बल अंगूठों पर विरलता से ही मिलता है। इस प्रकार का द्वितीय पर्व तो अधूरे अंगूठे की शक्ति का स्रोत माना जाता है। सामान्य रूप से तो पुष्ट आकृति वाले ऐसे पर्व के साथ अंगूठे के नुकीले पत्र का मिलना एक असम्भव स्थिति है, पुनरपि यह स्थिति व्यक्ति के अतिविशिष्ट रूप में स्वस्थ तथा उत्कृष्ट कोटि के चिन्तक होने का निश्चित संकेत है।

द्वितीय पर्व का चपटापन और शिथिल रूप उसे स्नायविक प्रकार का सिद्ध करता है (रेखाचित्र-72)। ऐसे व्यक्ति का शारीरिक गठन दुर्बल और उसकी जीवनी शक्ति क्षीण होती है। ऐसे व्यक्ति के पास ज्ञान का भण्डार हो सकता है, परन्तु

उसके पास उसके ज्ञान को प्रयोग-उपयोग में लाने की इच्छाशक्ति (सक्रियता) का अभाव होता है, जिसके फलस्वरूप उसका जीवन व्यर्थ होता है (रेखाचित्र-73)।

द्वितीय पर्व का घटियापन, मोटापा और भारीपन (रेखाचित्र-74) इस तथ्य का सूचक है कि व्यक्ति प्रारम्भिक (साधारण) सूझ-बूझ, सोच-समझकर होने के साथ पशु के स्तर तक निर्मम-क्रूर होता है। इस स्तर की वृत्ति से उसके इच्छाशक्ति वाला पर्व तथा अंगुली का सिरा अत्यधिक प्रभावित होते हैं। इसे इसी पुस्तक में पीछे लिखे निकृष्ट दोषों के वाहक प्रारम्भिक अंगूठे का ही एक रूप समझना चाहिए।

द्वितीय पर्व का गोल और पतला होना तथा साथ ही त्वचा का उत्कृष्ट कोटि का होना इस तथ्य का सूचक है कि व्यक्ति अत्यन्त परिष्कृत एवं परिमार्जित तर्कशक्ति का स्वामी है। ऐसा व्यक्ति संवेदनशील अवश्य होता है, परन्तु अपनी इस प्रवृत्ति के कारण वह अपनी इच्छाशक्ति को क्षीण नहीं होने देता। वह ख़ूब सोच-विचार कर लक्ष्य निर्धारित करता है और उसकी प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होता है। इच्छाशक्ति वाले पर्व तथा अग्रभाग उसे सही दिशा में बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। हां, दूषित विचार रखने वाला ऐसा व्यक्ति तो प्रारम्भिक पर्व वाले व्यक्ति से भी कहीं अधिक भयंकर एवं हानिकारक सिद्ध हो सकता है; क्योंकि इच्छाशक्ति को प्राप्त कुशल, परन्तु भटकाने वाला दिशा-निर्देश सचमुच स्वार्थ से प्रेरित होता है। अतः ऐसा व्यक्ति लोमड़ी के समान धूर्तता और चतुराई का प्रदर्शन करता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इसके विपरीत उत्तम विचारों वाला व्यक्ति एक उत्कृष्ट निदर्शन के रूप में सामने आता है।

द्वितीय पर्व के मध्य में बहुत संकरा अथवा कमर के आकार का होने का अर्थ है—व्यक्ति का नितान्त कुशाग्र बुद्धि होने के साथ-साथ अत्यन्त व्यवहारकुशल होना (रेखाचित्र-83)। ऐसा व्यक्ति न केवल अपने कार्य को सफलतापूर्वक निपटाने में निपुण होता है, अपितु उसे दूसरे लोगों से कार्य लेने और निकलवाने की भी विलक्षण कुशलता प्राप्त होती है। वह दूसरों को द्रवित करने की कला में पारंगत होता है। इस प्रकार कमर-जैसी आकृति वाला द्वितीय पर्व व्यक्ति के व्यवहारकुशल, नीति-निपुण, सुरुचि-सम्पन्न और गहरी सूझ-बूझ वाला होने का निश्चित प्रमाण है।

अंगूठे के द्वितीय पर्व के आकार का लम्बा होना व्यक्ति के मनोबल के सुदृढ़ होने का संकेत होता है। ऐसा व्यक्ति अपने सम्पर्क में आने वालों अथवा अपने से मेल-जोल बढ़ाने वालों को कभी किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाता। वस्तुतः लम्बा पर्व इच्छाशक्ति के गुणों का इस प्रकार से संयोजन करता है कि जीवन में सफलता सर्वथा सुनिश्चित हो जाती है।
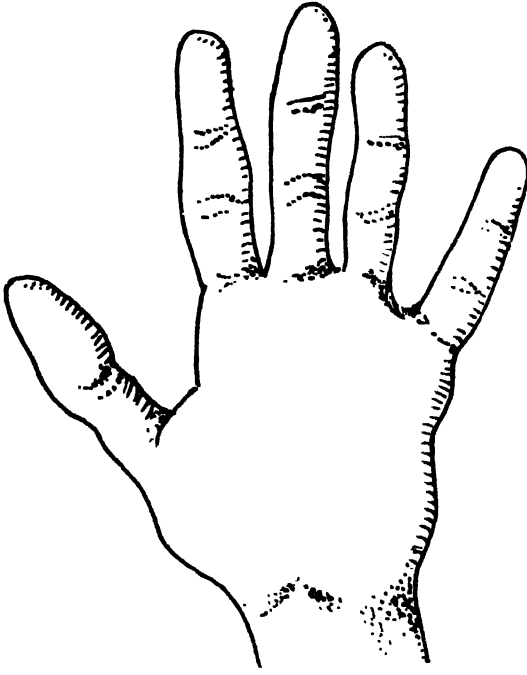
रेखाचित्र-83

अंगूठे की बनावट दो प्रकार की होती है—लचीली तथा कठोर। ये दोनों विपरीत गुण लिये रहती हैं। लचीला अंगूठा जहां जोड़ पर पीछे की ओर आसानी से मुड़ जाता है (रेखाचित्र-84), वहां कठोर अंगूठा अपनी कठोरता के कारण पीछे की ओर नहीं मुड़ पाता (रेखाचित्र-85)।

लचीला अंगूठा व्यक्ति के कुशाग्रबुद्धि, विशिष्ट प्रतिभाशाली परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढालने में समर्थ होने के साथ अपव्ययी-धन के मामले में बेपरवाह होने का सूचक है। लचीले अंगूठे वाले व्यक्ति उदार, दयालु और संवेदनशील तथा घर-बाहर सब कहीं प्रसन्न रहने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति विवेक के स्थान पर भावुकता की ओर अधिक झुकते हैं और इसी भावुकता के कारण अपनी सारी जमा-पूंजी लुटवा देते हैं। यहां तक कि संकट की घड़ी के लिए कुछ संजो रखने की चिन्ता भी नहीं करते। यद्यपि अपनी विशिष्ट प्रतिभा के बल पर ये लोग अपने सभी कार्यों को निपटाने में समर्थ होते हैं, तथापि अपनी भावुकता के कारण स्थिरवृत्ति के नहीं होते। ऐसे लोग पल में तोला और पल में माशा होते हैं। ये लोग परिश्रमी भी नहीं होते, फिर भी इनके व्यक्तित्व की छाप के कारण इनका कोई कार्य रुकता नहीं। ये लोग किसी की अधीनता को सहन नहीं करते और न ही किसी का नेतृत्व
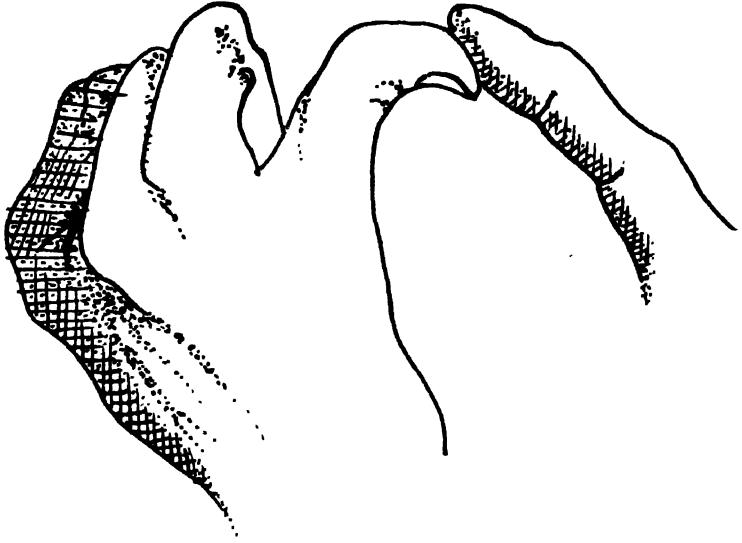
रेखाचित्र-84 व 85
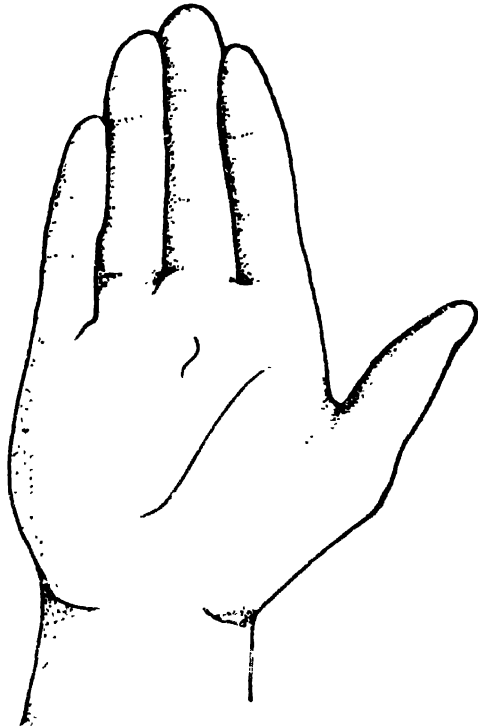
स्वीकार करते हैं। वस्तुतः ये सदैव दूसरों से आगे निकलने में विश्वास रखते हैं और अपने विशिष्ट गुणों—प्रतिभा, उत्साह और उदारता आदि—के कारण इनके लिए ऐसा करना कठिन नहीं होता। ये लोग विशिष्ट प्रतिभाशाली होने के साथ प्रसन्न रहने की प्रवृत्ति वाले भी होते हैं, परन्तु कभी-कभी अपनी इसी विलक्षण प्रतिभा के कारण ये इस प्रकार अकेले पड़ जाते हैं कि इनकी प्रसन्नता अवसाद अथवा कुण्ठा में बदल जाती है।

अंगूठों का निरीक्षण-परीक्षण करते समय उनके गुणों के साथ-साथ उन गुणों को ग्रस लेने वाले तत्त्वों का अध्ययन भी आवश्यक होता है; क्योंकि इसके बिना तो सारा निष्कर्ष उलटा हो सकता है। अंगुलियों के वर्गाकार पर्व; उत्तम हृदय रेखा और समुन्नत शनि पर्वत का संयोग लचीले पर्वत पर नियन्त्रण रखते हैं। इनके नियन्त्रण के फलस्वरूप मौलिकता के प्रतीक चमचाकार छोर अथवा आवेश-उत्साह-स्फूर्ति आदि के प्रतीक नुकीले पर्व सामान्यतया अपना प्रभाव स्थिर नहीं रख पाते। धीरता, गम्भीरता और संयम-जैसे गुणों से नियन्त्रक संयोगों को झेला भी जा सकता है, परन्तु ऐसे गुणों से सम्पन्न व्यक्ति विरल ही होते हैं।

कठोर अंगूठा जोड़ में कठोरता लिये रहने के कारण लचीले अंगूठे के समान पीछे की ओर नहीं मुड़ता (रेखाचित्र-85)। यह अंगूठा न केवल जोड़ में कठोर होता है, अपितु सीधा और हाथ से सटा हुआ भी होता है। इसकी कठोरता की मात्रा का पता जोड़ से ही लगता है। इस प्रकार के कठोर अंगूठे वाले व्यक्ति व्यावहारिक, सामान्य सूझ-बूझ वाले, कृपणता के स्तर तक मितव्ययी, भली प्रकार फूंक-फूंककर पैर रखने वाले, दुराग्रही और सतर्क रहने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रबल इच्छाशक्ति-सम्पन्न तो होते हैं, परन्तु न तो मिलनसार होते हैं और न ही विश्वसनीय। मज़े की बात यह है कि ऐसे व्यक्ति स्वयं भी किसी पर भरोसा नहीं करते। हां, वे कठोर परिश्रमी और अपनी प्रगति से दूसरों को चमत्कृत करने वाले होते हैं।

कठोर अंगूठे वाले व्यक्ति लचीले अंगूठे वालों की तुलना में एक चौथाई कमाई न करने पर भी पर्याप्त बचत करने वाले होते हैं। वे महत्त्वाकांक्षी न होने के कारण यथाप्राप्त से सन्तुष्ट रहते हैं। दूसरों शब्दों में वे कभी निराशा और कुण्ठा के शिकार नहीं होते। यही कारण है कि वे अपनी निम्न अथवा साधारण स्थिति में भी सुख, शान्ति और आनन्द का जीवन जीते हैं।

कठोर अंगूठे वालों की एक अन्य उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वे एक साथ अनेक कार्यों को हाथ में कभी नहीं लेते और जिस कार्य को हाथ में लेते हैं, उसे पूरा करके छोड़ते हैं। इस प्रकार अपनी इच्छाओं को सीमित रखने वाले और यथाप्राप्त से सन्तुष्ट रहने वाले ये लोग संयमशील होने के साथ-साथ न्यायप्रिय भी होते हैं।

कठोर अंगूठे वाले व्यक्ति प्रत्युत्पन्नमति और कुशाग्रबुद्धि के न होने पर भी कतिपय ऐसे मानवीय गुणों से सम्पन्न होते हैं, जिससे कि इन्हें लोक में दोनों—यश और प्रतिष्ठा—प्राप्त होते हैं। हां, कठोर अंगूठे के घटिया और साधारण होने पर ये गुण तो जाते ही रहते हैं। इस प्रकार अंगूठे का परीक्षण करते समय व्यक्ति के व्यक्तित्व—कुल, परिवार, शिक्षा-दीक्षा, चरित्र तथा स्वभाव आदि—को ध्यान में रखकर ही भविष्यकथन करना चाहिए, जिससे कि कुछ ग़लत न कहा जाये। कठोर अंगूठे की उत्कृष्टता-निकृष्टता के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति के गुणों के उत्कृष्ट-निकृष्ट होने की भविष्यवाणी खरी उतरती है।

अंगूठे की परख में अन्य ध्यान देने योग्य तत्त्व है—संगति। इसे इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति की तीव्रता अथवा मन्दता के रूप में जाना जा सकता है। जीवनी शक्ति से सम्पन्न हाथ का दुर्बल अंगूठा भी शिथिल हाथ के सशक्त अंगूठे से कहीं अधिक बेहतर होता है। वस्तुत: संगति में अंगूठों की क्रिया की सञ्चालक होने के कारण उन्हें संवारने-बिगाड़ने की पूरी सामर्थ्य है। अत: अंगूठे के अध्ययन में संगति—ऊर्जा के अस्तित्व-अनस्तित्व—का देखना अत्यन्त आवश्यक है; क्योंकि उत्तम अंगूठे वाले कोमल हाथ परिश्रम करने के इच्छुक होने पर भी शीघ्र श्रान्त-क्लान्त (थककर चूर) हो जाने वाले होने के कारण कुछ उपलब्ध नहीं कर पाते।

अंगूठे के आकार के साथ ही उसके रंग की भी जांच करनी चाहिए और देखना चाहिए कि इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति से सञ्चालित क्रियाओं की तीव्रता अथवा मन्दता का कारण स्वास्थ्य का सामान्य होना है अथवा पित्त-दोष आदि का होना है। स्वस्थ व्यक्ति द्वारा क्षीण इच्छाशक्ति से भी किया गया कार्य अस्वस्थ अथवा उदासीन प्रवृत्ति के व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले कार्य से कहीं अधिक सुचारु होता है। इधर, पित्त-दोष मस्तिष्क के कार्य में बाधा डालता है और द्वितीय पर्व को भी अशक्त-दुर्बल बना देता है। इसके अतिरिक्त पर्वतों की जांच भी आवश्यक है; क्योंकि इससे पर्वतों के गुणों पर संकल्प एवं अच्छी तर्कशक्ति के होने-न होने के प्रभाव की जानकारी मिलती है। उदाहरणार्थ, उत्तम अंगूठे के प्रभाव से बृहस्पति की अभिलाषा, गौरव, सम्मान-प्रतिष्ठा तथा धर्म-भावना को अधिक प्रमुखता मिलती है। इच्छा अथवा आकांक्षा का होना बुरा नहीं, परन्तु कोई भी इच्छा तर्कशक्ति का आधार लिये बिना तो सफल हो ही नहीं सकती। इसी प्रकार छोटा अथवा नोकदार अंगूठा बृहस्पति के उपर्युक्त गुणों—इच्छा, सम्मान तथा धर्मवृत्ति आदि—को अंशत: दुर्बल कर देता है। अत: शुभ पर्वतों को देखते समय उनके द्वारा गुणों की स्थिति की जानकारी प्राप्त की जाती है। अंगूठे के सक्षम होने पर तर्कशक्ति और इच्छाशक्ति की प्रबलत का और इसके विपरीत अंगूठे के अक्षम होने पर इनकी दुर्बलता का अनुमान लगाया जाता है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि जहां सक्षम अंगूठे से शनि की बौद्धिक शक्ति को दृढ़ता मिलती है, वहां अक्षम अंगूठा उस शक्ति को क्षीण कर देता है। सूर्य पर्वत की प्रबलता के कारण विलक्षण प्रतिभाशाली युवक का सशक्त अंगूठा यह संकेत देता है कि व्यक्ति अपने व्यवसाय में विशेष कुशलता एवं सफलता प्राप्त करेगा। ऐसे प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति के अंगूठे का नुकीला-छोटा होना उसे कलाकार के रूप में सफल होना सूचित करता है, जबकि अंगूठे का वर्गाकार रूप उसे नितान्त व्यावहारिक व्यक्ति सिद्ध करता है।

बुध पर्वत की प्रबलता के कारण चतुर एवं तीव्र बुद्धि वाले व्यक्ति के अंगूठे का बड़ा आकार होना यह इंगित करता है कि वह जीवन में सभी क्षेत्रों—उद्योग, व्यापार, शिक्षा, राजनीति तथा प्रशासन आदि—में सफल तथा उन्नति करने वाला है। इसके विपरीत अंगूठे की अशक्तता और नुकीलापन बुध पर्वत के सभी गुणों-प्रभावों को नष्ट करने वाला होता है। अंगूठे का वर्गाकार रूप भी व्यक्ति के व्यवहारकुशल होने का सूचक होता है।

व्यक्ति के हाथ में आक्रामक प्रवृत्ति वाले मंगल की निम्न स्थिति होने पर भी व्यक्ति के अंगूठे के अग्रभाग का वर्गाकार अथवा चमचाकार होना सभी दोषों का परिहार कर देता है और व्यक्ति को दृढ़ निश्चयी बनाता है, जबकि अंगूठे का छोटा होना तथा उसके अग्रभाग का पैना अथवा नुकीला होना व्यक्ति की शक्ति को क्षीण कर देता है। वस्तुतः प्रतिरोध करने वाला मंगल जहां अंगूठे से बड़ा होने पर शान्त और निर्भीक बना रहता है, वहां वह अंगूठे के छोटा होने पर निरुत्साहित हो जाता है।

यदि चन्द्र पर्वतप्रधान व्यक्ति का अंगूठा विशेषतः वर्गाकार अथवा चमचाकार पर्वों वाला हो, तो उसे निश्चित रूप से व्यावहारिक स्तर का कल्पनाशील व्यक्ति समझना चाहिए। ऐसे व्यक्ति की कल्पनाएं वायवी न होकर ठोस और कार्य रूप ग्रहण कर सकने योग्य होती हैं। ऐसे व्यक्ति के हाथ की अंगुलियों के छोरों का नुकीलापन तो इस गुण को और अधिक समृद्ध बनाने वाला होता है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति के अंगूठे को सशक्त होना उसके प्रेम-निर्वाह करने वाला, पक्का सहृदय तथा व्यवहारकुशल होने का सूचक है। इसके विपरीत अंगूठे का छोटापन और नुकीलापन व्यक्ति को अस्थिर और चञ्चल बनाता है। वस्तुतः अंगूठे की कोमलता और लम्बाई जहां व्यक्ति के गुणों को दृढ़ता प्रदान करने वाले होते हैं, वहां वे स्वभाव को अस्थिर बनाने वाले भी होते हैं। हां, सशक्त अंगूठा सभी प्रकार के नाख़ूनों के गुणों में वृद्धि करने वाला और अशक्त अंगूठा उन गुणों को क्षीण करने वाला होता है। वास्तव में अंगूठे की लम्बाई गांठ वाली अंगुलियों की विशेषताओं—विश्लेषक प्रवृत्तियों—को इस प्रकार स्थायित्व प्रदान करती है कि वे अंगुलियां सत्य

की खोज में संलग्न हो जाती हैं। इसके विपरीत अंगूठे का छोटापन न केवल व्यक्ति की सक्रियता को क्षीण कर देता है, अपितु व्यक्ति को सहज विश्वासी—किसी भी बात को सत्य मान लेना—भी बना देता है।

अंगूठे की लम्बाई जहां चिकनी अंगुलियों को विशेष शक्ति प्रदान करती है, वहां अंगूठे का छोटापन कार्यक्षमता को और नुकीलेपन के गुणों को दुर्बल बना देता है और व्यक्ति की नेतृत्वशक्ति को नाकारा करते हुए इसे कोरा बातूनी बना देता है। अंगूठे के बड़ा होने से उसके वर्गाकार और चमचाकार अग्रभाग व्यावहारिक क्षेत्र में अधिक क्रियाशील हो उठते हैं।

नुकीले और पैने अग्रभाग वाले अंगूठे व्यक्ति को व्यावहारिक तो अवश्य बना देते हैं, परन्तु उसकी कलात्मक विशेषताओं को क्षीण कर देते हैं। अंगूठे का छोटापन ऐसे व्यक्तियों—नुकीली, पैनी अंगुलियों वालों—को स्वप्नजीवी और यथार्थ से मुंह मोड़ने वाले बना देता है। ऐसे व्यक्ति श्रम से जी चुराने वाले होते हैं। अंगूठे का बड़ा होना छोटी अंगुलियों के गुणों को तीव्र और दृढ़ बना देता है। इसके विपरीत अंगूठे का छोटापन न केवल अंगुलियों के गुणों को नाकारा कर देता है, अपितु उनकी व्यावहारिक उपयोगिता के आगे भी प्रश्नचिह्न लगा देता है। इस प्रकार बड़ा अंगूठा लम्बी अंगुलियों के गुणों को सुदृढ़, समृद्ध और विकसित करने वाला होता है, जबकि अंगुलियां लम्बी होने पर भी अंगूठे का छोटापन व्यक्ति को ऊंची-ऊंची हांकने वाला, परन्तु व्यवहार में कुछ भी न कर पाने वाला बना देता है। हां, अंगूठा छोटा होने पर भी हाथ की अंगुलियों का चिकनापन तथा अंगुलियों के छोरों का नुकीलापन व्यक्ति को कलात्मक रुचि का बनाने वाले तत्त्व हैं।

गांठदार जोड़ों तथा वर्गाकार (चमचाकार) अग्रभागों के साथ बड़े अंगूठे वाले व्यक्ति विज्ञान, दर्शन तथा यान्त्रिक क्षेत्र में उच्च शिखर पर पहुंचने वाले होते हैं। बड़े अंगूठे वाली स्त्रियां सच्ची प्रेमिका होने के साथ-साथ व्यवहारकुशल भी होती हैं। वे अपने पति अथवा प्रेमी को संकट से उभारने की क्षमता भी रखती हैं। इसके विरीत छोटे अंगूठे वाली स्त्रियां केवल प्रेम करना जानती हैं। वे अपने पति अथवा प्रेमी के साथ दुःख, दरिद्रता और अभाव का जीवन तो जीती हैं, परन्तु उसकी किसी प्रकार से सहायता नहीं करतीं। उनमें अपने तथा अपने पति के भाग्य में परिवर्तन करने का सामर्थ्य ही नहीं होता।

हस्तरेखाशास्त्री भविष्यकथन के लिए प्राय अंगूठे का आश्रय लेते हैं—यह हम इस अध्याय के प्रारम्भ में लिख चुके हैं। अतः अंगूठे के गुणों और मानव-जीवन को सम्पूर्ण बनाने वाली उसकी शक्तियों पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों की यहां विस्तृत चर्चा की गयी है।

*

18

पर्वत और अंगुलियां : परीक्षण तथा परिणाम

प्रथम अध्याय में प्रस्तुत चित्र के द्वारा न केवल पर्वतों की संख्या को, अपितु उनकी स्थिति को भी स्पष्ट किया गया है। पर्वत सात हैं और उनकी स्थिति इस प्रकार है—**चार** पर्वत अंगुलियों के मूल में, **दो** पर्वत हाथ के पार्श्व में और **एक** पर्वत अंगूठे के मूल (तीसरे पर्व) में स्थित हैं। मंगल पर्वत दो उच्च क्षेत्र और निम्नक्षेत्र— भागों में विभक्त है। पर्वत के अपने उचित स्थान पर होने-न होने की तथा किसी एक शक्तिशाली पर्वत द्वारा किसी दूसरे असमर्थ पर्वत को दबाने की समुचित जानकारी प्राप्त करने के लिए पर्वतों की स्थिति और सीमा आदि का सही व पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है।

हस्तरेखाओं की जानकारी प्राप्त करने वाले अर्धशिक्षितों के लिये सम्बद्ध व्यक्ति के पर्वत प्रकार—विशेषतया उस (पर्वत प्रकार) के अस्पष्ट होने पर—का सही निर्धारण करना सचमुच एक जटिल समस्या का रूप ले लेता है। अत: सभी हस्तरेखाशास्त्रियों को इस अध्याय में पर्वत प्रकारों की स्थिति को स्पष्ट करने के प्रयास को गहराई से समझना चाहिए, उन्हें प्रत्येक मार्गदर्शी सिद्धान्त को प्रयोग की कसौटी पर कसते हुए उसकी वास्तविकता को सुनिश्चित करना चाहिए तथा पर्वत प्रकारों के वर्गीकरण की कला में निपुणता प्राप्त करनी चाहिए। इस दृष्टि से इस अध्याय की उपयोगिता स्वत: सिद्ध है। इस सम्बन्ध में कुछ और लिखने की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

सभी पर्वत सृष्टि की रचना के मूल प्रकारों के प्रतिनिधि अथवा प्रतीक हैं। अत: किसी एक अथवा एक से अधिक पर्वतों के विकास के आधार पर व्यक्ति के पर्वत प्रकार की सबलता-दुर्बलता को समझा जा सकता है। प्रत्येक अंगुली का नाम उससे जुड़े पर्वत के नाम पर पड़ा है; क्योंकि वह अंगुली सम्बद्ध पर्वत के गुणों को ही ग्रहण करती है। भौतिक दृष्टि से तो छोटी-छोटी पहाड़ियों-जैसे दिखाई देने वाले हाथ की अंगुलियों की जड़ों अथवा अन्यत्र इधर-उधर बाहर की ओर उभरे ये सभी पर्वत मांसपिण्ड अथवा मांसल गद्दियों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं (रेखाचित्र-

रेखाचित्र-86 व 87
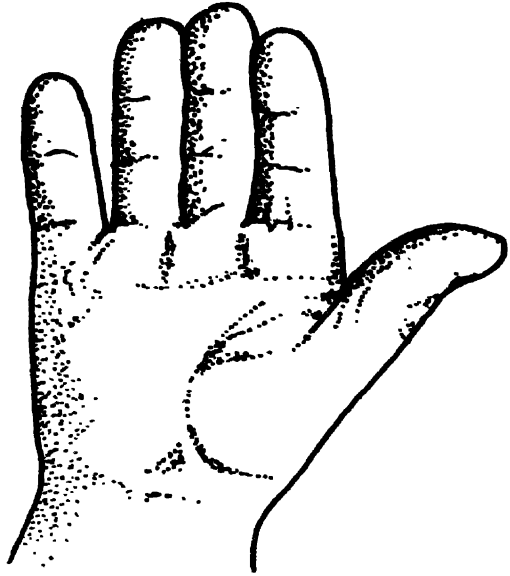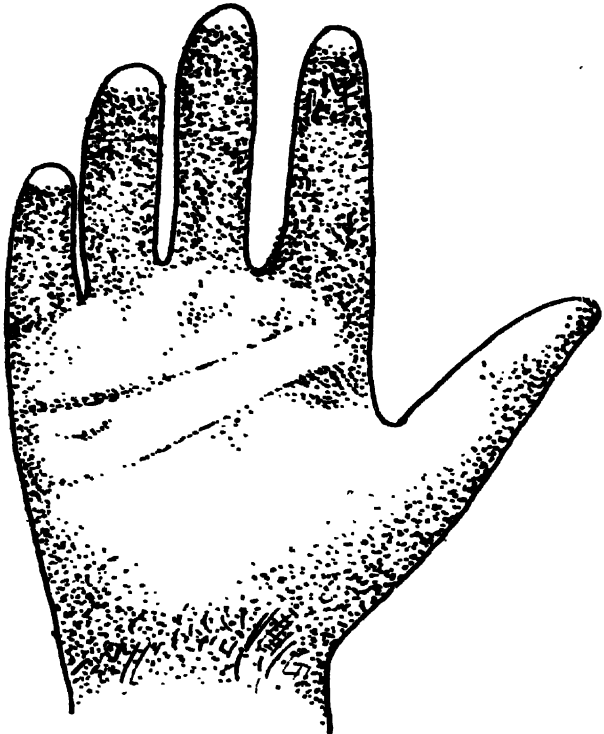
86)। वैसे कुछ हाथों में ये पर्वत पूर्णरूप से सपाट भी होते हैं (रेखाचित्र-87), तो कुछ हाथों में पर्वत स्थानों पर या तो गड्ढे होते हैं या फिर वे स्थान धंसे हुए होते हैं (रेखाचित्र-88)।
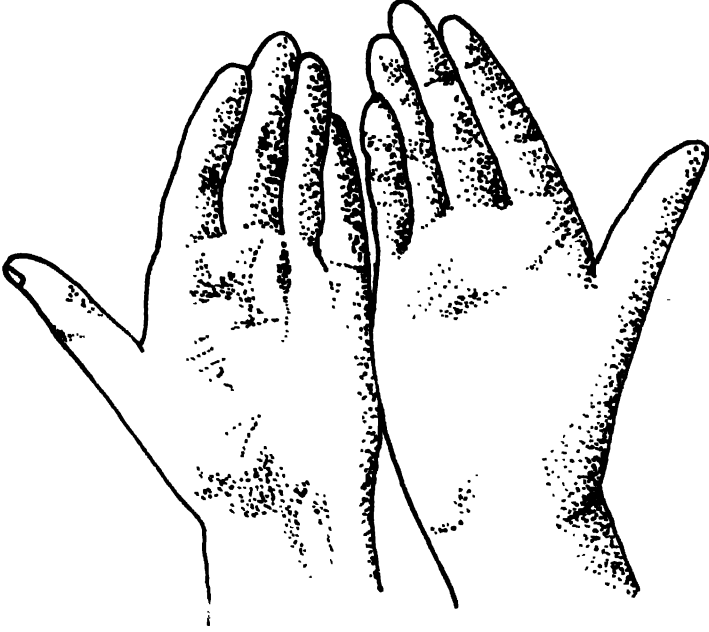
रेखाचित्र-88

स्पष्ट तथा उभरे हुए पर्वत उन्नत सशक्त, समतल व सपाट पर्वत साधारण तथा धंसे हुए पर्वत दुर्बल एवं गुणों से रहित माने जाते हैं।

पर्वतों की जांच-परख करते समय सर्वप्रथम इस तथ्य को सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि कौन-सा पर्वत सर्वाधिक सशक्त एवं उन्नत है। इस जानकारी से यह सुनिश्चित हो जायेगा कि सम्बद्ध व्यक्ति में किस पर्वत के गुणों की प्रधानता एवं प्रमुखता है। एक पर्वत के आकार का बहुत बड़ा होना तथा दूसरे पर्वत के आकार के सामान्य होने का अर्थ यह होगा कि सम्बद्ध व्यक्ति निश्चित रूप से उन्नत पर्वत-प्रकार से सम्बन्ध रखने वाला है। उन्नत पर्वत पर गहरी रेखाओं का होना इस तथ्य का पुष्ट प्रमाण होता है। उन्नत-विकसित पर्वत की अंगुली का अन्य अंगुलियों से अधिक लम्बी और विकसित होना तो व्यक्ति को उस पर्वत का सच्चा एवं आदर्श प्रतिरूप सिद्ध करने वाला अकाट्य प्रमाण है। वास्तव में विकसित अथवा उन्नत पर्वत सर्वाधिक प्रभावी होता है।
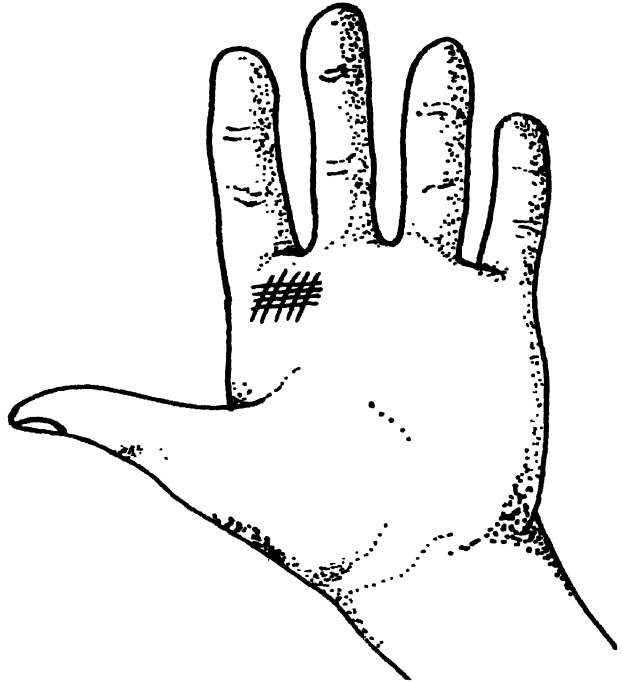
रेखाचित्र-89 व 90
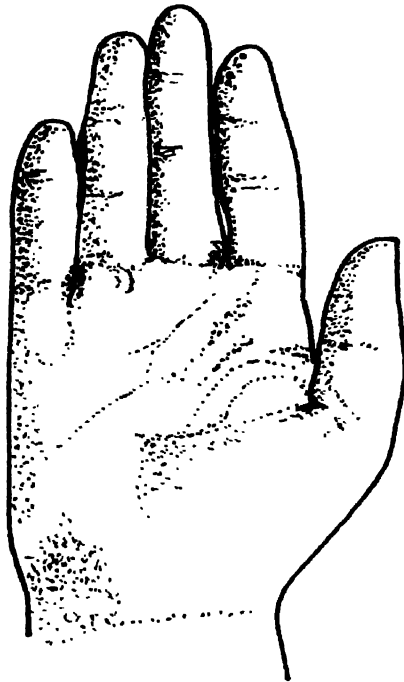
सपाट पर्वत पर किन्हीं तिरछी रेखाओं से न कटती हुई एक स्पष्ट एवं गहरी रेखा का होना पर्वत की सपाटता से जुड़ी न्यूनता को दूर करके उस सपाट पर्व को विकसित पर्वत-जैसी विशिष्टता प्रदान करती है। दो सीधी रेखाएं पर्वत की शक्ति में वृद्धि अवश्य करती हैं, परन्तु एक स्पष्ट गहरी रेखा-जैसी शक्ति नहीं देतीं। रेखाओं का दो से अधिक—तीन या चार—होना जहां शक्ति को क्षीण करने वाला होता है, वहां आड़ी-तिरछी रेखाओं का जाल पर्वत को दोषों और विकारों का घर बना देता है (रेखाचित्र-89)।

प्रत्येक पर्वत उत्कृष्ट और निकृष्ट, सबल और दुर्बल पक्षों को लिये रहता है। सुविकसित एवं समुचित स्थान पर अवस्थित पर्वत उत्कृष्ट कोटि का होता है, तो आड़ी-तिरछी अथवा एक-दूसरी को काटती रेखाओं से घिरा हुआ पर्वत निकृष्ट एवं दोषपूर्ण कहलाता है।

कठोर संगति और लाल रंग पर्वत की शक्ति में वृद्धि करने वाला होता है। श्वेत रंग स्पष्टता अवश्य देता है, परन्तु यह दुर्बलता का और ऊर्जा के अभाव का द्योतक है। किसी सशक्त पर्वत पर अच्छी रेखा और सम्बन्धित अंगुली की लम्बाई को देखकर भविष्यकथन में शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। पर्वत की कठोरता-शिथिलता पर तथा पर्वत के रंग पर भी ध्यान देना अपेक्षित होता है। अन्यान्य लक्षणों के प्रबल होने के साथ संगति के कठोर और रंग के लाल-गुलाबी होने पर सम्बद्ध व्यक्ति को पर्वत प्रकार का सच्चा और आदर्श प्रतीक (प्रतिनिधि) समझना चाहिए। अल्पविकसित पर्वत भी अन्य पर्वतों से अधिक कठोर होने पर ऊर्जा और शक्ति में वृद्धि करने वाला होता है। रंग के गुण सम्बद्ध पर्वत में अवश्य विद्यमान रहते हैं। अत: निस्सन्देह रंग का एक विशिष्ट महत्त्व है। उत्कृष्ट कोटि की त्वचा वाले संवेदनशील हाथों के कुछ पर्वत गुलाबी रंग लिये रहते हैं, जबकि अन्यान्य क़िस्म के हाथों के पर्वत सफ़ेद होते हैं। इन दोनों रंगों के गुणों को सम्बद्ध पर्वतों में विद्यमान समझना चाहिए। किसी एक हाथ में एक-साथ दो पर्वतों के विकसित रहने पर सम्बद्ध व्यक्ति को दोनों पर्वतों का मिश्रित प्रतिरूप समझना चाहिए। इन दोनों पर्वतों में अच्छी उठती रेखा तथा सामान्य से अधिक कठोरता तथा अधिक गहरा लाल रंग रखने वाले पर्वत को इन गुणों से रहित व दूसरे पर्वत से अधिक प्रबल समझना चाहिए। दो पर्वतों में से अधिक प्रबल पर्वत को सुनिश्चित करने की सन्देहप्रद स्थिति में सर्वाधिक लम्बी अंगुली वाले पर्वत को ही अधिक प्रबल मानना चाहिए। कौन-सी अंगुली किस पर्वत की शक्ति में कितनी वृद्धि करती है—इसके निर्णय के लिए शनि की अंगुली के साथ अंगुलियों की सापेक्ष लम्बाई की तुलना करनी चाहिए। बृहस्पति की सामान्य अंगुली का शनि की अंगुली के प्रथम पर्वत तक पहुंचना अपेक्षित होता है (रेखाचित्र-90)।

शनि के प्रतिभा और संयम का प्रतिनिधि होने के कारण शनि पर्वत वाली

अंगुली का अन्य सभी अंगुलियों से अधिक लम्बा होना व्यक्ति के चरित्र में सन्तुलन का सूचक होता है। इसी प्रकार सूर्य की अंगुली का शनि की अंगुली के प्रथम पर्व के मध्य तक आना अपेक्षित होता है (रेखाचित्र-90)। इससे अधिक लम्बी अंगुली सूर्य गुणों की प्रबलता को तथा छोटी सूर्य गुणों की न्यूनता को दर्शाती है। बुध की सामान्य अंगुली सूर्य की अंगुली के प्रथम पोर तक पहुंचनी चाहिए (रेखाचित्र-90)। इससे अधिक और न्यून लम्बाई क्रमशः बुध के गुणों की अधिकता व न्यूनता की सूचक होती है।

अंगुलियों की लम्बाई आंकते समय विचारणीय तथ्य यह है कि किसी अंगुली का लम्बाई उसके बढ़े हुए आकार के कारण है अथवा अन्य अंगुलियों के आकार में सामान्य से न्यून होने के कारण है। ऐसा भी हो सकता है कि सम्बद्ध हाथ की लम्बाई असामान्य हो व अन्य अंगुलियां अपने आकार में सामान्य से बहुत छोटी हों। अतः अंगुलियों की जांच-परख के लिए अलग-अलग पर्वों का निरीक्षण भी अपेक्षित है। वस्तुतः तीन पर्व क्रमशः बौद्धिक, भौतिक और तामसिक गुणों के द्योतक हैं। अंगुली का प्रथम पर्व नाख़ून वाला, दूसरा बीच वाला और तीसरा नीचे वाला होता है। अंगुलियों के निरीक्षण से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि व्यक्ति अपने प्रबल पर्वतों का उपयोग किस रूप—बौद्धिक विकास, भौतिक उपलब्धियों अथवा विकास स्वार्थों की पूर्ति—में करने वाला है।

अंगुलियों के अग्रभाग भी विचारणीय होते हैं; क्योंकि इन्हीं से यह जाना जाता है कि सम्बद्ध व्यक्ति पर्वत प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किस अंगुली के छोर—चमचाकार, वर्गाकार अथवा नोकदार—से प्रेरणा एवं दिशा-निर्देश लेगा। यह भी देखना चाहिए कि क्या अंगुलियां अपनी सामान्य स्थिति में एक-दूसरी से जुड़ी हुई हैं अथवा एक-आध अंगुली दूसरी अंगुलियों की अपेक्षा हथेली पर अधिक नीचे जुड़ी हुई है। नीचे की ओर जुड़ी हुई अंगुली अपने पर्वत-प्रकार की शक्ति को कुछ अंशों में क्षीण करने वाली होती है। अंगुली की इस स्थिति के कारण सम्बद्ध पर्वत के आकार के अन्य पर्वतों के आकार से एक तिहाई रह जाने का अर्थ उस पर्वत की शक्ति का पूर्ण न होना, अर्थात् एक-तिहाई कम होना है। नीचे की ओर स्थित अंगुली वाले प्रत्येक पर्वत के सम्बन्ध में इस सिद्धान्त को लागू करना चाहिए। एक अन्य विचारणीय तथ्य यह भी है कि दूसरे पर्वत की ओर झुकने वाली अंगुली भी अपनी शक्ति का कुछ अंश उस पर्वत को दे रही होती है। इसी प्रकार कुटिल प्रवृत्ति की प्रतीक टेढ़ी अंगुली अपने पर्वत की कुटिलता में वृद्धि करने वाली होती है।

अंगुली की शक्ति के निर्णय का आधार उसका प्रभावी पर्व होता है। उदाहरणार्थ, टेढ़ी अंगुली से प्रकट होने वाली धूर्तता अधिकतम विकसित तीनों पर्वों—क्रमशः बौद्धिक, भौतिक और निकृष्ट—स्तर पर प्रकट होती स्पष्ट प्रतीत होती है। कहीं एक

अंगुली तो लचीली होती है, परन्तु अन्य अंगुलियां कठोर अथवा सामान्य होती हैं। इस स्थिति में यह समझना चाहिए कि लचीली अंगुली व्यक्ति के मस्तिष्क (चिन्तन) के लचीलेपन की सूचक तो है, परन्तु यह गुण केवल उस एक अंगुली के गुणों को ही प्रभावित करेगा। किन्हीं व्यक्तियों के हाथ की सभी अंगुलियों के छोर अलग-अलग प्रकार के होते हैं। इस स्थिति में प्रत्येक अंगुली के अग्रभाग के स्वरूप—वर्गाकार, चमचाकार अथवा नुकीलापन—के अनुरूप ही उसके गुणों की स्थिति को समझना चाहिए।

व्यक्ति को रोगविषयक जानकारी देने (भविष्यकथन करने) से पूर्व सभी पर्वतों की भली प्रकार से जांच कर लेनी चाहिए। इसके अतिरिक्त व्यक्ति के स्वास्थ्य की जांच के लिए प्रत्येक अंगुली के नाख़ूनों का भी सूक्ष्म अध्ययन करना चाहिए और प्राप्त संकेतों का विश्लेषण करना चाहिए। उदाहरणार्थ, केवल एक नाख़ून के धारीदार और शेष सभी नाख़ूनों के चिकने होने पर यह समझना चाहिए कि व्यक्ति के स्नायु रोग से आक्रान्त होने की सम्भावना है। इस प्रकार का निष्कर्ष निकालने के लिए नाख़ून की बनावट और क़िस्म पर भी ध्यान देना अपेक्षित होता है। उदाहरणार्थ, प्रबल सूर्य पर्वत वाले व्यक्ति की सूर्य की अंगुली के नाख़ून का धारीदार होने का अर्थ—हृदय का दुर्बल होना होता है। इस प्रकार का व्यक्ति न केवल शीघ्र घबराने की प्रवृत्ति लिये रहता है, अपितु अस्थिर चित्त भी होता है। वह न केवल कोई निर्णय ले पाता है, अपितु लिये हुए निर्णय पर स्थिर भी नहीं रह पाता। यह सिद्धान्त सभी प्रकार के नाख़ूनों पर खरा उतरता है। सभी अंगुलियों के नाख़ूनों की बनावट, रंग और उनकी प्रकृति द्वारा संकेतित रोग अथवा विकार निश्चित रूप से सम्बन्धित पर्वत-प्रकार के दोष एवं विकारग्रस्त होने का सूचक होता है। यहां तक कि नाख़ून एक से अधिक रोगों की स्थिति में प्रमुख रोग की जानकारी भी दे देता है। उदाहरणार्थ, शनिप्रधान व्यक्ति दो—पित्त-दोष तथा पक्षाघात—रोगों से आक्रान्त हो सकता है। नाख़ूनों का पीलापन पित्तविकार की प्रधानता का, नाख़ूनों का धारीदार और भुरभुरापन स्नायविक अव्यवस्था की प्रधानता का तथा नाख़ूनों का एक-साथ पीलापन, धारीधार और भुरभुरापन व्यक्ति की समान रूप से उग्रता, अर्थात् स्वास्थ्य में संकट की सीमा स्थिति पर पहुंचे विकार का सूचक होता है। वस्तुतः पर्वत-प्रकारों के सन्दर्भ में इस पद्धति के द्वारा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सम्बद्ध व्यक्ति अमुक रोग से ग्रस्त रह चुका है, अथवा वर्तमान में पीड़ित है अथवा भविष्य में आक्रान्त हो सकता है। एक अन्य विचारणीय तथ्य यह भी है कि अंगुलियों के छोटे होने पर व्यक्ति न केवल अपने विचारों में, अपितु कर्म (Action) में भी तेज़ी से काम करने वाला होता है। व्यक्ति की इस विशेषता को भी प्रबल पर्वत के साथ जोड़ना चाहिए।

छोटी अंगुलियों की पांच प्रमुख विशेषताएं हैं—1. सोच-विचार में शीघ्रता,

2. अपनी सोच को कार्यरूप में लाने की अधीरता, 3. श्रम के परिणाम को पाने की आतुरता, 4. सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के साथ समान व्यवहार करने की प्रवृत्ति तथा 5. उपलब्धि के स्तर पर कुछ महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय करने की उत्कट इच्छा। पर्वतों के अध्ययन में वैसे तो इन सभी विशेषताओं को लागू किया जा सकता है, परन्तु सभी पर्वत-गुण छोटी अंगुलियों के वर्ग की केवल एक अंगुली के होने पर ही लागू होते हैं।

छोटी अंगुलियों के समान लम्बी अंगुलियों की भी कुछ अपनी विशेषताएं हैं, जिनमें प्रमुख हैं—1. छोटी-से-छोटी बात को जानने की उत्सुकता, 2. प्रत्येक विषय की गहराई तक जाने की प्रवृत्ति, 3. व्यक्ति का मन्दबुद्धि होना तथा 4. शंका और सन्देह से ग्रस्त होना। हाथ में केवल एक अंगुली के लम्बा होने का अर्थ उसकी विशेषताओं का सम्बन्धित पर्वत पर लागू होना है।

अंगुलियों के गठीला होने पर तीन गुणों—विश्लेषण, तार्किकता और अन्वेषण—पर ध्यान देना अपेक्षित होता है। पहली गांठ का सम्बन्ध बौद्धिक योग्यता से होता है। अत: इसके विकसित होने पर व्यक्ति 'ज्ञान का भण्डार' होता है। ऐसा व्यक्ति सुचारु व्यवस्था और कुशल संगठन के साथ जुड़ने पर विलक्षण चमत्कारी सिद्ध हो सकता है। ऐसा व्यक्ति भौतिक सुख-सुविधाओं और उपलब्धियों के प्रति उदासीन होता है तथा अपने सभी कार्यों को ख़ूब सोच-विचार कर व पूरी समझदारी से करने वाला होता है।

अंगुलियों के अग्रभाग—चमचाकार, वर्गाकार अथवा नुकीलापन—से सम्बन्धित गुण व्यक्ति के मानसिक स्तर व बुद्धिबल को अत्यन्त गहरे रूप से प्रभावित करने वाले होते हैं। मानसिक स्थिति की सूचक गांठ के केवल एक अंगुली पर पाये जाने का अर्थ है—इन विशेषताओं को सम्बन्धित अंगुली की सम्बन्धित निम्नोक्त विशेषताओं से जोड़ना। प्रथम गांठ सम्बद्ध व्यक्ति की गांठदार अंगुली के पर्वत-प्रकार से सम्बन्ध रखती है। भौतिक पर्व की सूचक द्वितीय पर्व की गांठ के विकसित होने का अर्थ है—व्यक्ति घर, कार्य-स्थल तथा वेशभूषा में सुरुचि, सुचारुता और सुव्यवस्था रखने की प्रवृत्ति वाला है। उसके इस गुण को पर्वतों के सन्दर्भ में देखा जा सकता है। केवल एक अंगुली में इस गांठ के होने पर इसे सम्बद्ध अंगुली के गुणों पर लागू किया जा सकता है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि दोनों पर्वों के विकसित होने पर तो उनकी दार्शनिक प्रवृत्तियों को सभी पर्वत प्रकारों पर लागू किया जाता है, परन्तु एक ही अंगुली में गांठ होने पर उसे केवल सम्बन्धित पर्वत पर ही लागू करना होता है।

अंगुलियों के चिकनेपन का अर्थ है—व्यक्ति तर्क की अपेक्षा भावना और आवेग से काम करने का प्रवृत्ति वाला है। पर्वतों के सम्बन्ध में भी इन्हीं गुणों को

लागू करना अपेक्षित होता है। हां, केवल एक अंगुली के इस प्रकार का होने पर उस अंगुली के गुणों को केवल एक—उस अंगुली से सम्बद्ध—पर्वत पर लागू करना चाहिए।

यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि छोटी अंगुलियों के न केवल जोड़ गठीले हो सकते हैं, अपितु उनके सिरे भी विविध प्रकारों—चमचाकार, वर्गाकार तथा नोकदार—में से किसी एक प्रकार के हो सकते हैं। इस स्थिति में व्यक्ति को छोटी अंगुलियों के कारण सोच-विचार कर कार्य करने वाला तथा गांठदार जोड़ों के कारण विश्लेषक बुद्धि से काम लेने वाला समझना चाहिए। अंगुलियों के अग्रभागों की बनावट के आधार पर व्यक्ति तर्क को महत्त्व देने वाला, व्यावहारिक बुद्धि का व स्वप्नद्रष्टा भी हो सकता है। अंगुलियां छोटी होने के साथ चिकनी भी हों, तो गुण अपनी चरम सीमा पर विकसित होते हैं। छोटी व चिकनी अंगुली के छोरों के चमचाकार अथवा वर्गाकार होने पर व्यक्ति व्यवहारकुशल तो होता है, परन्तु कार्यकुशल नहीं होता। इसके विपरीत छोटी-चिकनी अंगुली के छोरों के नुकीले व पैने होने पर व्यक्ति के गुणों में विद्युत्-जैसी चमक आ जाती है। इन गुणों को पर्वतों के सन्दर्भ में जोड़कर देखा जाता है। हां, केवल एक अंगुली के गांठदार होने पर इन गुणों को अकेली अंगुली व अकेले पर्वत के सन्दर्भ में देखा जाता है।

लम्बी अंगुलियां अत्यधिक विवरणप्रियता की और इनके गांठदार जोड़ विश्लेषण की प्रवृत्ति के सूचक होते हैं। इन दोनों अंगुलियों की लम्बाई और लम्बी अंगुलियों के जोड़ों का गठीलेपन का अभाव इतना तीव्र होता है कि व्यक्ति सभी कार्यों में मन्द-शिथिल होता है। इन गुणों को समस्त पर्वतों पर भी तथा केवल एक पर्वत पर भी लागू किया जा सकता है। केवल एक अंगुली के जोड़ों के गठीले और शेष लम्बी अंगुलियों के जोड़ों के चिकने होने पर व्यक्ति विवरणप्रिय होने के साथ-साथ प्रखर चिन्तक भी होता है। अंगुलियों का लम्बा, जोड़ों का चिकना और छोरों का चमचाकार अथवा वर्गाकार होना लम्बी अंगुलियों के गुणों को अत्यधिक व्यावहारिक रूप देने वाले तत्त्व हैं। छोरों का नुकीला-पैनापन व्यक्ति की चिन्तनशक्ति को तो तीव्र बनाता है, परन्तु लम्बी अंगुलियों के गुणों की प्रचण्डता को घटा देता है।

हस्तरेखाशास्त्री को उपर्युक्त सभी तथ्यों को चिकने जोड़ वाली सभी अंगुलियों से सम्बन्ध रखने वाले सभी पर्वतों के सन्दर्भ में तथा केवल एक अंगुली के जोड़ों के चिकना होने पर उस अंगुली के पर्वत के सन्दर्भ में ही देखना-विचारना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह भी निश्चित समझना चाहिए कि दोनों प्रकार की—लम्बी और गंठीली—अंगुलियों में छोटे-कोमल नाख़ूनों के गुण आ जाते हैं। नाख़ूनों का रंग भी सभी अंगुलियों को अपनी सभी विलक्षण विशेषताएं प्रदान करता है।

सभी पर्वतों के एक-समान विकसित रूप वाले हाथ प्रायः ही देखने को

मिलते हैं। ऐसे हाथों वाला व्यक्ति सभी पर्वतों के गुणों को सन्तुलित रूप में लिये रहता है। ऐसे व्यक्ति स्थिर स्वभाव और व्यापक दृष्टिकोण रखने वाले, तर्कशील तथा स्वस्थ-सन्तुलित व्यक्तित्व के धनी होते हैं। भावावेश में कभी इसका पक्ष, तो कभी उसका पक्ष नहीं लेते।

व्यक्ति के नैसर्गिक पर्वत-प्रकार को सही ढंग से जानने के लिए तथ्यों पर विचार करना अपेक्षित होता है:—1. किसी पर्वत पर शुभ लक्षणों वाली रेखा का होना-न होना, 2. अंगुली की शक्ति, 3. बृहस्पति, शनि, सूर्य और बुध पर्वत के महत्त्वपूर्ण होने का संकेत देने वाले शिरोरेखा का होना-न होना। इस निरीक्षण का महत्त्व इसलिए है; क्योंकि इससे इस तथ्य की जानकारी हो जाती है कि अंगुलियों के शीर्ष केन्द्र में स्थित हैं अथवा उनका झुकाव दूसरे पर्वतों की ओर है। समान रूप से प्रत्येक विकसित पर्वत वाले हाथ में पर्वत के सिरों की जांच-परख से पर्वत-विशेष में दूसरे पर्वत से प्रभावित न होने की शक्ति होने की जानकारी मिलती है।

निम्नोक्त स्थिति में अन्तिम निष्कर्ष निकलने के लिए—1. हाथ में सभी पर्वतों का समान रूप से विकसित होना, 2. पर्वतों के शिखरों का एक समान उन्नत होना, 3. संकेत-विशेष की सूचक उठती हुई रेखा की अनुपस्थिति तथा 4. अंगुलियों की लम्बाई का सामान्य होना—अंगुली के अग्रभाग के आधार को देखना चाहिए। अंगुली के अग्रभाग वर्गाकार हैं अथवा चमचाकार अथवा शंकुरूप, इसका परीक्षण करके ही विकसित गांठों का भी विवेचन करना चाहिए।

एकसमान सन्तुलित पर्वतों को समझना कभी-कभी कठिन अवश्य हो जाता है, परन्तु लक्षण स्पष्ट होने पर कोई समस्या नहीं आनी चाहिए। सन्तुलित व्यक्ति की पहचान यह है कि वह वक्ता की योग्यता को परखता है। वह किसी के वचनों से सन्तुष्ट न होकर गहराई में जाने की प्रवृत्ति वाला होता है। ऐसे व्यक्ति के पर्वत-प्रकार की जानकारी लेना आवश्यक होता है।

पर्वतों के शिखरों की सही जानकारी का होना भी आवश्यक होता है। (रेखाचित्र-91क व 91ख) यह चित्र त्वचा की कोशिकाओं के इधर-उधर के विस्तार को तथा हाथ के एक भाग को प्रदर्शित करता है। चित्र में दिखाई देने वाली कोशिकाओं से बने छोटे-से त्रिकोण को देखिये और इससे निर्णय कीजिये कि इस त्रिकोण का केन्द्र-बिन्दु पर्वत का सही केन्द्र है। इस शिखर के पर्वत के अत्यधिक मांसल होने या न होने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। कतिपय हस्तरेखाशास्त्रियों ने सर्वाधिक मांसल भाग को ही पर्वत का उच्चतम बिन्दु माना है—जो सत्य नहीं है। कोशिकाओं द्वारा निर्मित त्रिकोण का केन्द्र ही शिखर-बिन्दु है। इस शिखर की जानकारी प्राप्त करना और फिर इस जानकारी का उपयोग करना अनावश्यक एवं श्रमसाध्य कार्य प्रतीत होते हैं, परन्तु वास्तविकता यह है कि इस विद्या की गहरी

रेखाचित्र-91क व 91ख
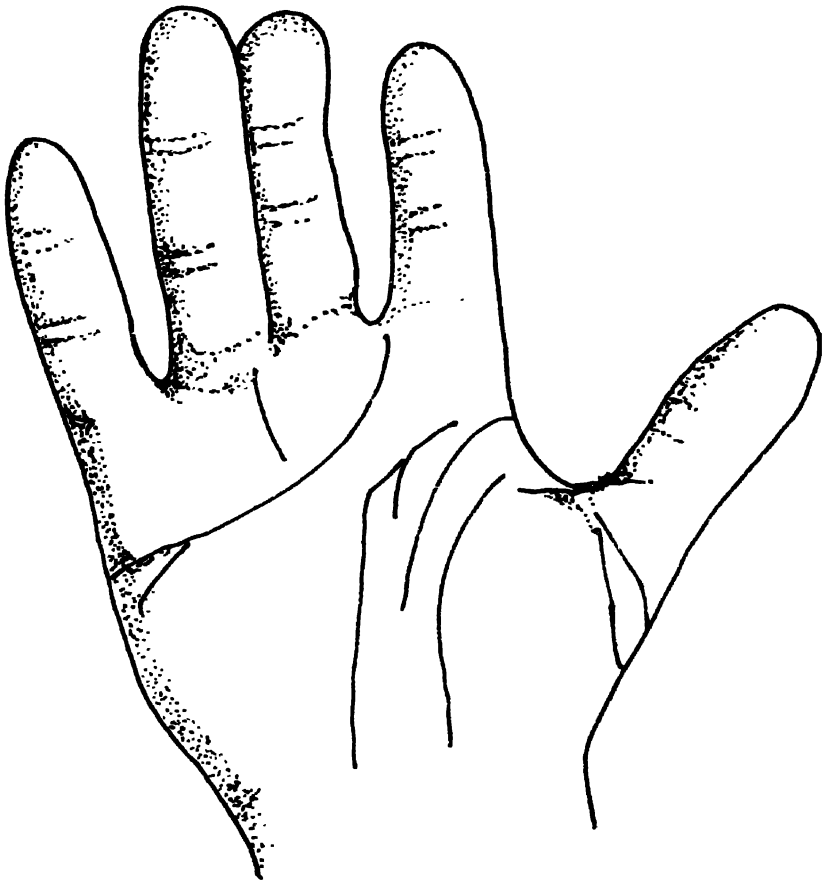
जानकारी रखने वालों के लिए यह कार्य सर्वथा दुष्कर नहीं। वे तो पर्वतों के सिरों को देखते ही उन्हें पहचान लेते हैं। यों तो सरसरी दृष्टि डालते ही पर्वतों के शिखर की जानकारी मिल जाती है, परन्तु फिर भी मैग्नीफ़ाइंग ग्लास का सहारा लेना अच्छा रहता है। रात्रि के समय बिजली की रोशनी में तो मैग्नीफ़ाइंग ग्लास की सहायता के बिना पर्वत शिखर की सही पहचान लगभग असम्भव ही होती है।

शिखर का पर्वत के एकदम मध्य में होना अच्छा होता है। शिखर के पर्वत के निकट होने पर जहां पर्वत के गुणों के स्तर में विकास आ जाता है, वहां अधिक निकटता ह्रास लाने वाली होती है। इसी प्रकार तीन जगत् (या लोक) भी पर्वतों के निकट रहने पर उनके गुणों में वृद्धि और अत्यधिक निकट रहने पर गुणों का ह्रास करते हैं। मध्यवर्ती शिखर पर्वत के ठीक स्थान पर होने का तथा पर्वत की शक्ति के बढ़ने का सूचक होता है।

समान रूप से विकसित पर्वतों में किसी एक पर्वत के शिखर का अन्य पर्वत-शिखरों की अपेक्षा उत्तम स्थान पर होने का अर्थ है—उसकी प्रमुखता अथवा प्रबलता। यह स्थिति किसी भी उलझन में पर्वत-प्रकार को जानने में सहायक सिद्ध होगी। एक शिखर का झुकाव किसी दूसरे पर्वत की ओर होने पर यह दूसरा पर्वत झुकने वाले पर्वत की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होगा। वस्तुत: पर्वत-शिखर के झुकने का अर्थ है—सशक्त पर्वत को अपनी शक्तियां समर्पित करना। इस विषय की विस्तृत चर्चा तो विभिन्न पर्वतों से सम्बन्धित अध्याय में की जायेगी, यहां तो हम केवल सामान्य नियम को स्पष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं।

सात पर्वत-प्रकारों से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों में समानता तथा एक-जैसी पूर्णता न तो मिलती है और न ही ऐसी आशा रखना उचित है। वस्तुत: कुछ पर्वत-प्रकारों में दोष, विकार तथा न्यूनता आदि भी पाये जाते हैं (रेखाचित्र-91 ग)।

सभी पर्वतों में खड़ी रेखाएं तो अच्छी होती हैं, परन्तु इन रेखाओं को काटने और नष्ट करने वाली रेखाएं बुरी होती हैं। इससे यह सिद्धान्त पुष्ट होता है कि एक-दूसरे को काटने वाली रेखाओं द्वारा निर्मित जाल पर्वत के दोषों का सूचक होता है। केवल आड़ी रेखाओं वाला पर्वत ही अशुभ कहलाता है। (रेखाचित्र-92) इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि केवल आड़ी रेखाएं ही बाधक होती हैं। किसी भी खड़ी रेखा का न होना बाधा के प्रतिकार के प्रयास के अभाव का सूचक है। आड़ी रेखाओं के अशुभ प्रभाव से घिरी होने पर भी खड़ी रेखाएं जाल के रूप में होने पर कुछ अच्छा परिणाम सामने लाती हैं।

विभिन्न पर्वत-प्रकारों में कुछ की प्रवृत्ति दूसरों की अपेक्षा बुराई की ओर अधिक होती है। स्वाभाविक रूप से बुरी प्रवृत्ति वाले पर्वत-प्रकारों पर रेखाजाल का अथवा
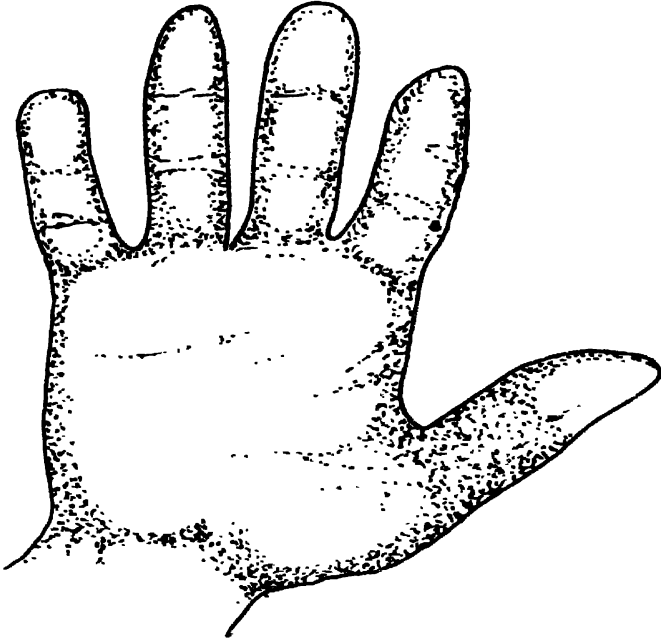
रेखाचित्र-91ग व 92

आड़ी रेखाओं का होना उस पर्वत के अच्छे गुणों को क्षीण करने वाला होता है।

दोषों की जांच-परख करते समय नाख़ूनों और उनके रंगों का विचार करना भी आवश्यक होता है; क्योंकि इनसे दोनों—स्वास्थ्य और चरित्र—से सम्बन्धित दोषों की जानकारी मिल जाती है। प्रायः देखने को मिलता है कि जहां कुछ व्यक्ति जन्मजात अपराधी वृत्ति के होते हैं, तो कुछ व्यक्ति परिस्थितियों—अभाव, कुसंग, लोभ तथा उपेक्षा आदि— के कारण अपराधी बन जाते हैं। पर्वतों की अवस्थिति से इस तथ्य का पता लगाया जा सकता है। पर्वतों की परीक्षा के समय इस तथ्य को कभी नहीं भूलना चाहिए कि किसी भी तत्त्व की अपर्याप्तता के समान उसकी अधिकता भी अवाञ्छनीय होती है। उदाहरणार्थ, महत्त्वाकांक्षा एक उत्तम एवं वाञ्छनीय गुण है, परन्तु यदि इसे सीमा के अन्तर्गत न रखा जाये, इस पर अपेक्षित नियन्त्रण न लगाया जाये, तो इसकी उत्कटता व्यक्ति को पथभ्रष्ट भी कर सकती है। अच्छे गुण वाला व्यक्ति भी अपनी महत्त्वाकाक्षां की पूर्ति के लिए अपराध वृत्ति को भी अपना सकता है। यह ठीक है कि महत्त्वाकांक्षा के न होने से व्यक्ति यत्किञ्चित प्राप्त से सन्तुष्ट हो जाता है, बहुत आगे बढ़ने की सोच ही नहीं पाता, परन्तु इससे उसके पथभ्रष्ट होने अथवा बेईमानी आदि को अपनाने की सम्भावना भी कम हो जाती है। कहने का अभिप्राय यह है कि जहां महत्त्वाकांक्षा का न होना अवाञ्छनीय होता है, वहां महत्त्वाकांक्षा का अनियन्त्रित होना भी कभी वाञ्छनीय नहीं होता।

पर्वतों की जांच-परख करते समय दोनों हाथों को देखना चाहिए; क्योंकि एक हाथ में कठोर प्रकृति का लगने वाला पर्वत दूसरे हाथ में कोमल प्रवृत्ति का हो सकता है। यह पर्वत की शक्ति में क्षीणता की स्थिति दर्शाता है, जिसका अभिप्राय यह है कि संयोग की विपरीतता परिणाम को उलट देती है।

इसी प्रकार एक हाथ का रंग लाल, पीला और सफ़ेद हो, परन्तु दूसरे हाथ का रंग सर्वथा भिन्नता लिये हुए हो, इससे एक हाथ के रंग के सूचक गुण दूसरे हाथ के रंग की भिन्नता के साथ कहीं अधिक प्रभावी, कहीं न्यून प्रभावी, तो कहीं नितान्त अप्रभावी बन जाते हैं। इस परिवर्तन के आधार पर व्यक्ति के भूत और वर्तमान चरित्र को जाना-समझा जा सकता है।

इस प्रकार दोनों हाथों में विद्यमान पर्वतों को सही तौर पर और सुगमतापूर्वक समझने के लिए पिछले अध्यायों में निरूपित रंग, संगति तथा दायें-बायें हाथों के विकास सम्बन्धी नियमों की जानकारी भली प्रकार प्राप्त करनी चाहिए; क्योंकि ये नियम रंग, संगति तथा हाथों के विकास के अतिरिक्त भिन्न-भिन्न पर्वतों, अंगुलियों तथा सम्पूर्ण हाथ के अध्ययन पर भी लागू होते हैं। इन नियमों को लागू करने में निपुणता प्राप्त करने पर ही मिश्रित हाथों की जटिलता को सफलतापूर्वक समझा जा सकता है।

*

19

बृहस्पति पर्वत

किसी पर्वत के प्रभाव में वृद्धि वाले तत्त्व—1. एकमात्र चिह्न अथवा कतिपय रेखाओं के जुड़ने से बनने वाले नक्षत्र, 2. त्रिकोण, 3 वृत्त, 4. वर्ग, 5. एकमात्र खड़ी रेखा तथा 6. त्रिशूल—(रेखाचित्र-93) होते हैं।
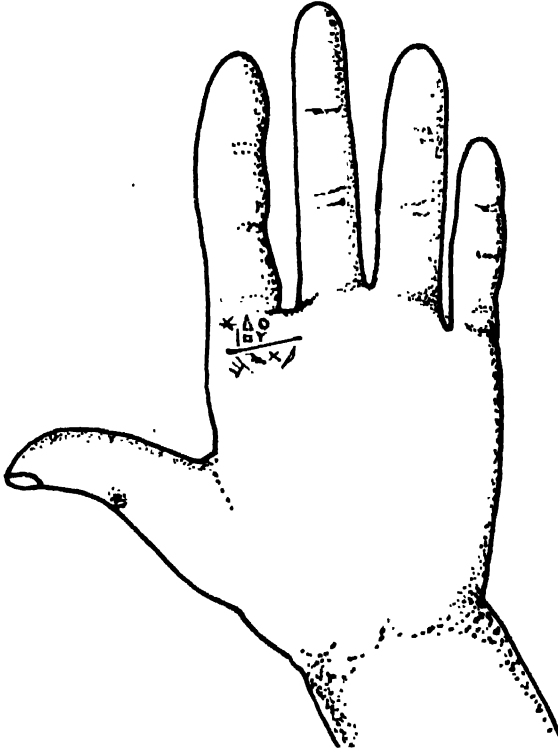
रेखाचित्र-93

सम्बद्ध पर्वत के दोषों—व्यक्ति के स्वास्थ्य और चरित्र सम्बन्धी विकृतियों—के सूचक तत्त्व हैं—1. एकमात्र चिह्न, 2. दो अथवा दो से अधिक रेखाओं के जुड़ने से बनने वाला जाल, 3. तिरछी धारियां, 4. क्रॉस तथा 5. द्वीप या बिन्दु।

निम्नोक्त से यह सुनिश्चित होता है कि व्यक्ति के स्वास्थ्य में दोष है अथवा उसके चरित्र में विकार है।—1. मुख्य रेखाएं, 2. आकस्मिक रेखाएं तथा 3. उनकी रंगत।

कुछ पर्वतों के सन्दर्भ में इन नियमों में कुछ परिवर्तन भी देखने को मिलते हैं। प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में चित्र के माध्यम से जहां पर्वत-प्रकारों पर लागू होने वाले नियमों की जानकारी दी गयी है, वहां विभिन्नताओं का भी यथास्थान उल्लेख किया गया है। इन सबका सावधानीपूर्वक अध्ययन करके ही आगे बढ़ना चाहिए।

मानव-जाति के सात पर्वत-प्रकार हैं। इनमें प्रथम बृहस्पति है, जिसकी पहचान विकसित बृहस्पति पर्वत से व बृहस्पति की अंगुली से की जाती है। इस पुस्तक के पिछले अध्यायों में पहचान से सम्बन्धित निम्नोक्त तथ्यों—1. पर्वतों की परीक्षण विधि, 2. पर्वतों के सशक्त-अशक्त होने का निष्कर्ष निकालने की विधि तथा 3. समान रूप से विकसित पर्वतों में से अधिक सशक्त को ढूंढ़ने की विधि—पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

इस विवेचन के आधार पर बृहस्पति का प्रतीक व्यक्ति महत्त्वाकांक्षी और नेतृत्व गुण से सम्पन्न होता है। वह सर्वत्र और सदैव अपनी उपस्थिति को महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावी बनाने का तथा उच्च पदों को पाने का इच्छुक होता है। उसकी शीर्ष पर बने रहने की लालसा उसे राजनीति की ओर भी ले जाती है। सर्वोच्च पद पाने और आदेश-निर्देश देने का अवकाश (स्कोप) सेना में भी पर्याप्त परिमाण में होने के कारण बृहस्पति पर्वतप्रधान व्यक्ति सेना में भी पाये जाते हैं। बृहस्पति पर्वतप्रधान व्यक्ति धर्म के प्रति कट्टरता की सीमा तक अटूट आस्था तो रखते हैं, परन्तु साथ ही वे संशयवादी भी होते हैं। बृहस्पति की अंगुली के छोर से उनके अतिवादी होने का स्पष्ट संकेत मिलता है। इन व्यक्तियों के जीवन का लक्ष्य होता है—राजनीति अथवा प्रशासन में महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करना, समाज में सम्मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करना, लोक में यश-गरिमा-लाभ, आदेश का पालन कराना तथा धर्म तथा समाज के क्षेत्र में शिखर पर बने रहना आदि। ऐसे लोगों से समाज के प्राय: सभी वर्गों के लोगों का कभी-न-कभी काम पड़ता रहता है। ये लोग दूसरों के कार्यों को संवारने वाले, उदार, चरित्रवान् तथा आदर्श प्रकृति के होते हैं।

व्यक्ति के बृहस्पति का प्रतीक होने के निर्णायक चार संकेत हैं—1. बृहस्पति पर्वत का पूर्ण और सशक्त होना, 2. पर्वत के शीर्ष-बिन्दु का केन्द्र में स्थित होना, 3. अंगुली का लम्बा और सशक्त होना तथा 4. हाथ का लाल अथवा गुलाबी रंग का होना (रेखाचित्र-94)। इन चारों लक्षणों वाले, अर्थात् बृहस्पति के सच्चे प्रतीक विरले व्यक्ति ही होते हैं। अधिकांश व्यक्ति तो मिश्रित प्रकृति के ही पाये जाते हैं। उपर्युक्त गुण बृहस्पति के विशुद्ध प्रतीक में ही मिलते हैं। यदि किसी व्यक्ति के हाथ

में बृहस्पति पर्वत के समान ही अन्य पर्वत भी विकसित रूप में हों, तो उन अन्य विकसित पर्वतों के गुण भी बृहस्पति पर्वत के गुणों में समाविष्ट हो जाते हैं।
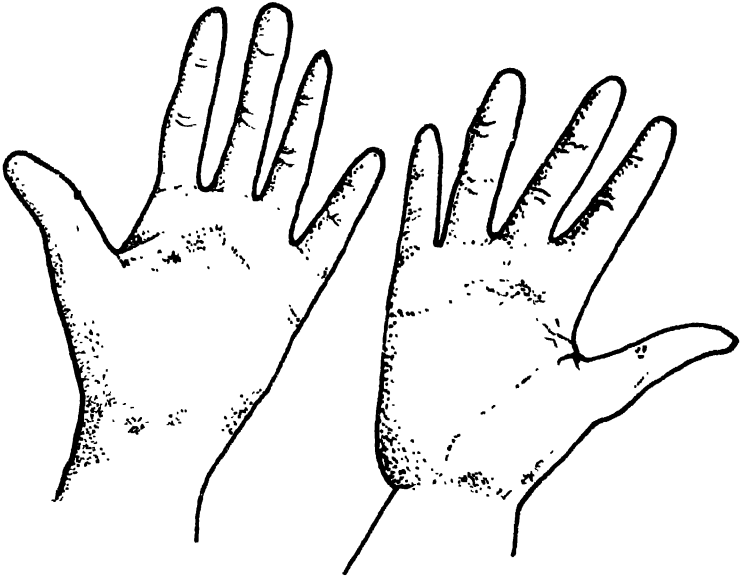
रेखाचित्र-94

विशुद्ध बृहस्पति के प्रतीक व्यक्ति का क़द (ऊंचाई) मध्यम होती है। सर्वाधिक ऊंचा और बुध का प्रतीक सर्वाधिक छोटा होता है। बृहस्पति का प्रतीक व्यक्ति तो सातों पर्वतों में न सर्वाधिक लम्बा या ऊंचा और न ही सर्वाधिक छोटा होता है। वह हृष्ट-पुष्ट, स्थूल, मांसल देह और विशालकाय होता है। उसका शरीर ठोस होता है, उसमें थुलथलापन अथवा ढीलापन नहीं होता। उसके शरीर की हड्डियां पर्याप्त मजबूत और शरीर के भार को ढोने में पूर्ण समर्थ होती हैं। उसकी त्वचा कोमलता, स्निग्धता और गुलाबीपन लिये रहती है। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी, मोहक, स्नेह एवं दया से भरी और बोलती-सी होती हैं। उसकी नेत्रों की पलकें भारी और कुछ-कुछ सूजी हुई होती हैं। उसकी आंखों की बरौनियां लम्बी और आगे की ओर मुड़ी होती हैं, भौहें धनुष के आकार में टेढ़ी और बाल एक-समान होते हैं, जिनसे उसकी भौहें और भी अधिक मोहक दिखाई देती हैं।

बृहस्पति के प्रतीक व्यक्तियों की नाक साफ़ सुथरी, कुछ अधिक बड़ी और बनावट में रोमन लोगों की नाक-जैसी दिखती है। इनका मुंह बड़ा, दोनों होंठ मांसल

और लालिमा लिये रहते हैं। दांतों की बनावट के कारण ऊपर का होंठ थोड़ा उठा-सा रहता है। दांत उजले और सुदृढ़ तो होते हैं, परन्तु वे लम्बे-संकरे उगते हैं। कभी-कभी सामने के दो दांत सामान्य से अधिक लम्बे होते हैं। गाल पूरी गोलाई लिये रहते हैं, जिससे आंखों की निचली हड्डियां भरी-भरी लगती है, ठोड़ी लम्बी-कड़ी होती है तथा उसकी बीच में प्राय: एक गड्ढा होता है। कान गठा हुआ और सिर के समीप होता है। सिर सुगठित, बाल भूरे रंग के और ग्रीवा मध्यम स्तर की, पर लम्बी-मोटी और मज़बूत होती है, पीठ और कन्धे भरे हुए तथा बराबर चौड़े होते हैं। जंघाएं और पांव मध्यम आकार के, सुगढ़ और सुदृढ़ होते हैं। इनकी चाल सुन्दर, शानदार और मोहक होती है।

बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति थोड़े परिश्रम से सिर के ऊपरी भाग में पसीने से लथ-पथ हो जाते हैं। सुदृढ़ देहयष्टि रखने पर भी इनके सिर के बाल जल्दी उड़ जाते हैं, जिससे ये गंजे हो जाते हैं। इनके शरीर पर उगे घने बाल उनकी शारीरिक शक्ति के सूचक होते हैं। इनका सीना चौड़ा-विकसित होता है तथा इनके बड़े फेफड़ों से मधुर, मोहक और प्रभावोत्पादक स्वर निकलता रहता है।

बृहस्पतिप्रधान व्यक्तियों का व्यक्तित्व प्रभावशाली, पौरुष मोहक और स्वभाव इतना स्निग्ध एवं चित्ताकर्षक होता है कि कोई भी व्यक्ति उनका सान्निध्य प्राप्त करने को उत्सुक-लालायित रहता है। ये जन्मजात नेता होते हैं। नेतृत्व प्रदान करने और प्रशासन में इन्हें विलक्षण कौशल प्राप्त रहता है। भगवान् ने इन्हें ऐसा सामर्थ्य, तेज, बल और व्यक्तित्व प्रदान किया होता है कि लोग इन्हें अपने हृदय का सम्राट मानने-बनाने में गर्व व गौरव अनुभव करते हैं। इन्हें अपने सहयोगियों और अनुयायियों का समर्थन सहज-सुलभ रहता है।

बृहस्पतिप्रधान स्त्रियों के बाल उत्तम क़िस्म के, अर्थात् घने, लम्बे, काले-कजरारे और घुंघराले होते हैं। समग्रत: बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति उत्तम कोटि के गुणों से सम्पन्न ही होते हैं, परन्तु अपवाद रूप में इन गुणों को दूषित करने वाले कुछ निकृष्ट व्यक्ति भी मिलते हैं, जिनकी चर्चा आगे चलकर की जायेगी। यहां इतना ही समझना चाहिए कि सामान्य रूप से सभी बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति उत्तम प्रकृति और सद्‌गुणों के भण्डार ही होते हैं। इनके शरीर का गठन और डीलडौल उन्हें आत्मविश्वास से परिपूर्ण करने वाला होता है। इन्हें अपनी प्रतिभा और सामर्थ्य की जानकारी ही नहीं होती, अपितु पूरा विश्वास भी होता है। यही कारण है कि ये अपनी योजनाएं स्वयं बनाते हैं, उनकी पूर्ति की दिशा में स्वयं प्रयत्नशील होते हैं तथा सिर को ऊंचा करके गुरु-गम्भीर स्वर में दूसरों से बात करते हैं। ये अपने तर्कों द्वारा दूसरों को अपनी बात मनवाने के पक्षधर होते हैं। अपने अत्यधिक आत्मविश्वास के कारण ये अपने विचारों में अडिग अवश्य होते हैं, परन्तु अपनी बात मनवाने के लिए झगड़ा-लड़ाई

मोल नहीं लेते। नेतृत्व के गुणों से युक्त होने के कारण ये लोगों से अपने विचारों का अनुसरण करने, अपने आदेशों का पालन करने तथा अपना अनुगमन करने की अपेक्षा करते हैं। ऐसे व्यक्तियों में अपने कथन के प्रभाव को देखने का धैर्य भी होता है।

बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति आदेश-निर्देश देने के अभ्यस्त होने पर दया, ममता, स्नेह और सहानुभूति के सजीव रूप होते हैं। वे अत्यन्त सहृदय और संवेदनशील होते हैं। दीन-दुखियों की सेवा-सहायता से उन्हें सुख और सन्तोष मिलता है। लोकप्रियता पाने की उनकी सहज लालसा भी उन्हें सक्रिय रूप में उदार बनने को प्रेरित करती है। दूसरों की सेवा व सहायता करने का उनका ढंग ऐसा सहज और निश्छल होता है कि लोग अनायास ही उनके भक्त एवं प्रशंसक बन जाते हैं।

बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति सामान्य जीवन में ही नहीं, अपितु व्यापार-धन्धे में भी सचाई और ईमानदारी बरतते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने सौन्दर्य और सद्‌गुणों के कारण महिलाओं के लिए आकर्षण का केन्द्र होते हैं। सुन्दरियां इनके रूप-सौन्दर्य और गुणों पर मुग्ध होकर इन्हें पाने को लालायित रहती हैं। इनकी शिष्टता और विनम्रता दूसरों को इनका बिना दाम का ग़ुलाम बना देती हैं। ये मुक्तहस्त से धन ख़र्च करते हैं; क्योंकि शक्ति, सत्ता और लोकप्रियता के सामने धन को तुच्छ मानते हैं। अपने श्रम से धन कमाने में और उस धन का निश्चिन्तता से ख़र्च करने में ये अपना उपमान आप होते हैं। वस्तुत: इन्हें कृपणता और संग्रह-सञ्चय से एक प्रकार की घृणा रहती है। वस्तुत: भगवान् ने बृहस्पतिप्रधान व्यक्तियों को ऐसे विशिष्ट गुण प्रदान किये होते हैं, जिनसे इन्हें लोगों को नेतृत्व प्रदान करने, उन पर आधिपत्य बनाये रखने, लोकप्रियता प्राप्त करने तथा बुराइयों से बचने में अद्‌भुत क्षमता एवं सफलता प्राप्त होती है।

बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति जन्म से धार्मिक होते हैं। वे किसी सम्प्रदाय-विशेष में तो नहीं बंधते, परन्तु सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् एवं सर्वज्ञ परमात्मा में दृढ़ विश्वास अवश्य रखते हैं। वे आडम्बर के स्तर तक धार्मिक समारोहों का आयोजन इसलिए करते हैं, ताकि लोगों में वे अपनी छवि को उज्ज्वल रूप में प्रस्तुत-प्रतिष्ठित कर सकें। लोकप्रियता पाने के लिए तो वे अपना सर्वस्व तक लुटाने को उद्यत रहते हैं। वे कुलीन, शान्तिप्रिय, ईमानदार, न्याय-विधि में विश्वास रखने वाले, रुढ़ियों-परम्पराओं का सम्मान करने वाले, दीन-दुखियों की सेवा-सहायता करने वाले, सर्वसाधारण के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष करने वाले तथा छल-कपट एवं धोखाधड़ी, नेतृत्व, महत्त्वाकांक्षा, मन-सम्मान, धार्मिकता, परम्परा का पालन करने तथा अहंकार आदि गुणों के सूचक होते हैं। हस्तरेखाशास्त्री को बृहस्पतिप्रधान व्यक्तियों के चरित्र और गुणों की परख सुनिश्चित.कर लेने पर पर्वत के शीर्ष-बिन्दु

का निरीक्षण-परीक्षण करना चाहिए; क्योंकि इससे गुणों के वितरण और उपयोग की जानकारी प्राप्त करना सम्भव होता है।

शीर्ष-बिन्दु की पर्वत के मध्य में अवस्थिति का अर्थ है—गुणों का समान रूप से वितरण। शीर्ष-बिन्दु के शनि की ओर झुकने का अर्थ है—व्यक्ति की गम्भीरता, उदासीनता और बुद्धिमत्ता आदि के कारण उसकी महत्त्वाकांक्षा का एक ओर निरापद बन जाना, तो दूसरी ओर नियन्त्रित हो जाना; क्योंकि शनि जहां बृहस्पति का मार्गदर्शन करता है, वहां उस पर अंकुश भी लगाता है। शीर्ष-बिन्दु का झुकाव हाथ के बाहरी किनारे पर और शनि के सामने की ओर होने का अर्थ यह है कि ऐसे व्यक्ति निजी लाभ और व्यक्तिगत स्वार्थ-सिद्धि के लिए ही अपने गुणों का उपयोग करने वाले होते हैं। शीर्ष-बिन्दु का हृदय रेखा और मस्तक रेखा के निकट होने का क्रमशः अर्थ है—गुणों का उपयोग इष्ट-मित्रों के लिए तथा बौद्धिक उत्कर्ष के लिए होना।

इसी प्रकार हाथ की प्रवृत्ति का अध्ययन करके इस तथ्य का निर्णय करना चाहिए कि महत्त्वाकांक्षा को ऊर्जा का समर्थन प्राप्त होगा अथवा नहीं? बृहस्पतिजन्य गुणों का व्यक्ति को लाभ पहुंचेगा अथवा नहीं? कहीं शिथिलता अथवा कोमलता व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा की असफलता का कारण तो नहीं बनेगी? इसी प्रकार हाथ की त्वचा के रूप-रंग के आधार पर यह सुनिश्चित किया जाता है कि व्यक्ति के गुण आदर्श, उत्कृष्ट एवं श्रेष्ठ हैं अथवा तुच्छ, निकृष्ट एवं निन्दनीय हैं।

हस्तरेखाशास्त्री को यह ज्ञात होना चाहिए कि जहां मस्तिष्क क्षेत्र का लचीलापन बृहस्पति की महत्त्वाकांक्षा को सफलता प्रदान करने वाला होता है, वहां जड़बुद्धि की सूचक हाथों की कठोरता महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति को बाधित करने वाली होती है। किसी भी व्यक्ति के जीवन की परख के लिए सर्वप्रथम उसमें बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति की विशेषताओं के होने-न होने का, द्वितीय, उन विशेषताओं के स्वरूप—उत्कृष्ट अथवा निकृष्ट—होने का तथा तृतीय, व्यक्ति के विवेक की दशा-स्पष्टता अथवा धूमिलता—का निर्णय करना चाहिए। कहने की आवश्यकता नहीं कि निकृष्ट संयोजन से नहीं, अपितु उत्कृष्ट संयोजन से ही अभीष्ट परिणाम की आशा की जा सकती है।

हस्तरेखाशास्त्री को यह नहीं भूलना चाहिए कि बृहस्पतिप्रधान एक व्यक्ति महत्त्वाकांक्षा के क्षेत्र में उच्च बौद्धिक स्तर का नेतृत्व करता मिलता है, तो दूसरा उसी महत्त्वाकांक्षा का उपयोग स्वार्थ-पूर्ति और निजी हित-साधन में करता भी मिल सकता है। हस्तरेखाशास्त्री को व्यक्ति की हथेली, नाख़ूनों, रेखाओं और रंगत आदि को देखकर इस तथ्य का पता लगाना चाहिए कि व्यक्ति में इस रुग्ण भावना का क्या कारण है? इस दुर्बलता, असामर्थ्य अथवा रुग्णता से क्या संकेतित होता है?

त्वचा के रूप-रंग की सफ़ेदी और साथी की उदासीनता होने पर बृहस्पतिप्रधान

व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित एवं स्वार्थी समझना चाहिए। इससे व्यक्ति नेतृत्व-जैसे गुणों से ही रहित नहीं हो जाता, अपितु अपना आकर्षण भी खो बैठता है। वह सत्ता और शक्ति पाने का इच्छुक और प्रयत्नशील तो होता है, परन्तु उनका उपयोग निजी हित तक सीमित रखता है। अत: उसके साथी उससे दूर-दूर रहते हैं। सामान्य स्थिति में वे उसके आगे-पीछे नहीं घूमते। तवचा के सफ़ेद रंग की अपेक्षा गुलाबी रंग सफलता का निश्चित संकेत होता है। वस्तुत: गुलाबी रंग ऊर्जा और शक्ति के सामान्य प्रवाह का तथा सुन्दर स्वास्थ्य, मोहक व्यक्तित्व और मधुर स्वभाव का सूचक होता है। अत: गुलाबी रंग की त्वचा वाले व्यक्ति मेधावी, विवेकी, मधुरभाषी, क्रियाशील, उत्साह-सम्पन्न तथा आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं। उनके इन विशिष्ट गुणों के कारण उनके मित्र ही नहीं, अपितु शत्रु भी प्रशंसक बन जाते हैं और वे अनायास ही सर्वजनप्रिय एवं लोकबन्धु बन जाते हैं। हथेली का लाल रंग (गुलाबी नहीं) व्यक्ति के अत्यधिक उग्र एवं प्रचण्ड होने का सूचक है। ऐसा व्यक्ति उद्दण्ड और उद्धत होने के साथ-साथ अत्यधिक खाने वाला और उसके फलस्वरूप अजीर्णग्रस्त रहने वाला व हृदय से मस्तिष्क में अधिक रक्त जाने से रक्ताघात से पीड़ित रहने वाला होता है। निरंकुश शासक की प्रवृत्ति वाला ऐसा बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति आततायी, दमनकारी और उच्छृंखल हो जाता है। लाल रंग के बहुत पक्का होने का अर्थ है—व्यक्ति का प्रत्येक क्षेत्र में सीमा का अतिक्रमण करने वाला तथा लज्जा-मर्यादा की उपेक्षा करने वाला होना।

बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति की त्वचा का पीला रंग देखने को नहीं मिलता; क्योंकि ऐसे व्यक्ति के जिगर में कभी विकार हो ही नहीं सकता। हां, बृहस्पति के साथ शनि अथवा बुध का योग होने पर हथेली की त्वचा का रंग पीला हो सकता है। विशुद्ध बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति की त्वचा का रंग कदापि पीला नहीं हो सकता। हां, कभी-कभी हृदय के अधिक क्रियाशील होने अथवा दुर्बल होने पर त्वचा नीली अवश्य पड़ सकती है, पुनरपि बृहस्पति का नीले रंग से कोई सम्बन्ध न होने के कारण बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति के हृदय रोग से ग्रस्त होने की कोई सम्भावना नहीं रहती।

बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति के नाख़ूनों की जांच करते समय हस्तरेखाशास्त्री को संकेतित विशेषताओं की न्यूनता-अधिकता पर अपना ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित करना चाहिए। स्वस्थ व्यक्ति की अंगुलियों के नाख़ून कभी विकारग्रस्त (स्वास्थ्य विकृति के सूचक) नहीं होते। कभी-कभार किसी रोग के आक्रमण को केवल अस्थायी और मात्र संयोग ही समझना चाहिए फिर भी रोगसूचक लक्षणों की जानकारी रखना आवश्यक होता है।

नाख़ूनों की बनावट से उनके स्नायविक अथवा धारीदार होने का पता चल जाता है। चौड़े नाख़ून पित्त-दोष के सूचक होते हैं, परन्तु ये विरल हाथों में ही पाये

जाते हैं। बहुधा तो हट्टे-कट्टे शरीर वालों के हाथों के नाख़ून ही चौड़े होते हैं। छोटे और कोमल नाख़ूनों वाले व्यक्ति सत्यनिष्ठ, उदार, सच्चरित्र तथा उत्तम प्रकृति के होते हैं। बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति के हाथों के नाख़ूनों के छोटे होने का अर्थ है—व्यक्ति की नेतृत्व-प्राप्ति की महत्त्वाकांक्षा का अत्यन्त उग्र और प्रचण्ड रूप धारण किये रहना। इसके अतिरिक्त छोटे नाख़ून बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति में प्रचण्ड शक्ति, साहस और आवेश के भी सूचक हैं।

छोटे व कोमल नाख़ून सर्वोत्तम माने जाते हैं। ये नाख़ून व्यक्ति के सचाई और उदारता-जैसे उदात्त गुणों से सम्पन्न होने के निश्चित संकेत हैं। बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति का शारीरिक गठन सुदृढ़ होता है। अतः उसके शरीर पर इस तथ्य के सूचक एवं शक्ति के प्रतीक बाल घने होते हैं।

हस्तरेखाशास्त्री को बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति के शरीर पर उगे बालों की उत्कृष्टता-निकृष्टता की भी भली प्रकार जांच करनी चाहिए। हलके बाल व्यक्ति के कम विषयासक्त होने, अतः रोगों के प्रकोप से बचे होने के सूचक होते हैं। ऐसा व्यक्ति एक ओर जहां भावना-रहित, उदासीन, आकर्षण-विहीन अथवा साधारण रूप से आकर्षक होता है, वहां दूसरी ओर आलस्य से कोसों दूर रहने वाला, अपने उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में व्यावहारिक प्रयास करने वाला तथा दृढ़ संकल्पशील होता है। बालों का घना-कालापन व्यक्ति के बल, उत्साह, उमंग और जोश से सम्पन्न होने के साथ-साथ उसके विषयासक्त, प्रेम पाने के प्रति सदैव उत्सुक एवं प्रयत्नशील होने का भी सूचक है। ऐसा व्यक्ति विषय-भोगी होने के कारण पौष्टिक-गरिष्ठ भोजन में रुचि रखने वाला, अतः बिगड़े स्वास्थ्य वाला होता है।

पूरे हाथ का भली प्रकार निरीक्षण करने वाले हस्तरेखाशास्त्री के लिए यह जानने में कोई कठिनाई नहीं आयेगी कि सम्बद्ध व्यक्ति किस क्षेत्र में सफलता एवं ख्याति प्राप्त कर सकता है। सर्वाधिक विकसित मस्तिष्क लोक वाले व्यक्ति को साहित्य लेखक के रूप में प्रतिष्ठा मिलती है। यह विश्व के महान् नेताओं, राजनीतिज्ञों और महारथियों पर पुस्तकें लिखकर अपनी बौद्धिक प्रतिभा से विश्व को चमत्कृत करेगा तथा अपनी लेखनी नेतृत्व गुण सम्पन्न विषयों पर ही चलायेगा।

इसी प्रकार हाथ के अत्यधिक स्पष्ट एवं विकसित मध्य भाग वाला व्यक्ति व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला होगा। हाथ के निचले-तृतीय भाग के अधिक सुस्पष्ट-विकसित होने पर व्यक्ति विलासिता के स्तर पर सुख-भोगी और उसके दुष्परिणामों को भुगतने वाला होगा।

यहां यह उल्लेखनीय है कि ऊपर के दोनों लोकों का संयोजन उत्तम होने से वाञ्छनीय होता है; क्योंकि ऐसा व्यक्ति सूझ-बूझ वाला होने से मध्य लोक और निम्न लोक पर नियन्त्रण रखने में समर्थ होता है। मध्य लोक का सम्बन्ध सामान्य सूझ-

बूझ से है, जिसके अभाव में व्यक्ति कामुक, विलासी एवं स्वप्नद्रष्टा बनकर रह जाता है। यही नियम विभिन्न अंगुलियों—विशेषत: बृहस्पति की अंगुली—पर भी लागू होता है। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि अंगुलियों के तीनों—प्रथम, द्वितीय और तृतीय—पर्व क्रमश: मानसिक, बौद्धिक तथा व्यावहारिक लोकों के प्रतीक हैं। अंगुली के तीनों पर्वों में जो पर्व सर्वाधिक लम्बा होगा, व्यक्ति उस पर्व से सम्बद्ध लोक में ही अधिक सक्रिय होगा।

सबसे छोटी अंगुली के छोटे पर्व को देखने से उससे सम्बद्ध लोक की अवस्थिति और उसके आकार का परिचय मिलता है। अंगुलियों के लम्बे और छोटेपन को देखने के साथ उनकी संगति की जानकारी भी लेनी चाहिए। उदारहणार्थ, बृहस्पति की अंगुली के शनि की अंगुली के प्रथम पर्व के मध्य तक पहुंचने वाली होने का अर्थ होगा—व्यक्ति बृहस्पतिप्रधान होने पर भी नेतृत्व-प्राप्ति के लिए उत्कट रूप से उत्सुक नहीं है। बृहस्पति की अंगुली की लम्बाई शनि की अंगुली की लम्बाई जितनी होने पर बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति अपनी शक्ति का पर-पीड़न में दुरुपयोग करने वाला होगा।
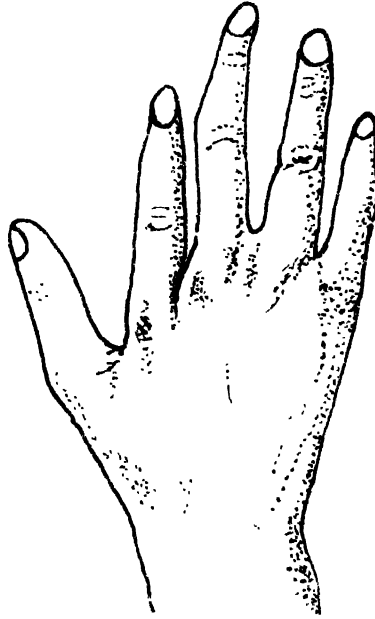
रेखाचित्र-95

बृहस्पति की अंगुली के शनि की अंगुली से अधिक लम्बी होने पर तो

बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति शासक के रूप में उद्दण्ड, उच्छृंखल एवं आततायी बन जाता है।

बृहस्पति की अंगुली के शनि की अंगुली के प्रथम पोर तक न पहुंचने वाली (रेखाचित्र-95) होने का अर्थ है—व्यक्ति बृहस्पति का शुद्ध प्रतीक ही नहीं है। अत: ऐसा व्यक्ति सशक्त बृहस्पति पर्वत रखने पर भी नेतृत्व के कौशल से विहीन होता है। इस प्रकार का व्यक्ति धार्मिकता, सम्मान-प्राप्ति की इच्छा तथा महत्त्वाकांक्षा को लिये रहने वाला तो हो सकता है, परन्तु उसमें इन्हें प्राप्त करने की प्रभावी योग्यता नहीं होती। बृहस्पति की अंगुली का टेढ़ा होना बुरा संकेत भले ही न हो, परन्तु गुणों में कुटिलता-धूर्तता का कुछ-न-कुछ संयोग अवश्य हो जाता है, फिर भी यह संयोग व्यक्ति को अपने लक्ष्य-प्राप्ति की दिशा में पूर्ण शक्ति और व्यवस्थित ढंग से आगे बढ़ने की योग्यता प्रदान करता है।

बृहस्पति की टेढ़ी अंगुली के साथ बुध के पित्त-दोष के अथवा अशुभ-अनिष्ट लक्षणों का संयोग होने पर व्यक्ति धूर्त-बेईमान सिद्ध होगा। बुध के दोषों का किसी भी रूप में संयोग न होने पर बृहस्पति की अंगुली का टेढ़ापन केवल व्यक्ति के गुणों में धूर्तता का समावेश करता है, अर्थात् व्यक्ति अपने सद्गुणों का कहीं-न-कहीं और कुछ-न-कुछ दुरुपयोग ही करता है।

अंगुली के विभिन्न पोरों के आधार पर उसका अध्ययन करते समय उसके छोरों का निरीक्षण-परीक्षण करना भी आवश्यक होता है। बौद्धिक शक्ति के प्रतीक प्रथम पर्व के लम्बेपन का अर्थ होगा—व्यक्ति का मानसिक जगत् में विचरणशील तथा धर्म में आस्थावान् होना। अंगुलियों के अग्रभागों का नुकीलापन व्यक्ति को मानसिक क्षेत्र में आदर्शवादी तथा अन्तर्दर्शी गुणों से सम्पन्न होना सूचित करता है। बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति जन्मजात धार्मिक होता है—यह सब पीछे लिखा जा चुका है। अंगुलियों के नुकीले छोरों के साथ पर्व की लम्बाई इस सत्य को प्रचण्ड रूप से पुष्ट कर देती है। ऐसा व्यक्ति आदर्श के स्तर तक धर्म में दृढ़ आस्था और पक्का विश्वास रखने वाला होता है। उसका बौद्धिक स्तर विकसित एवं उच्चकोटि का होता है।

अंगुली के छोर के वर्गाकार होने का अर्थ है—व्यक्ति सूझ-बूझ और तर्क से काम लेने वाला, यहां तक कि धर्म-साधना, पूजा एवं अनुष्ठान आदि के विषय में भी सादगी और व्यावहारिकता को अपनाने वाला होता है। अंगुली के चमचाकार छोर रखने वाला व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व में तो विश्वास रखता है, परन्तु किसी धर्म सम्प्रदाय का अनुसरण नहीं करता। उसका चिन्तन स्वतन्त्र और मौलिक होता है। अंगुली के छोर का अत्यधिक वर्गाकार अथवा चमचाकार होना व्यक्ति को जीवन के सभी क्षेत्रों—परिवार, समाज तथा व्यवसाय-धन्धे आदि—में स्वच्छन्द, उच्छृंखल तथा आततायी होना सिद्ध करता है। प्रथम पर्व की चौड़ाई के अनुपात में ही व्यक्ति

अधिक धृष्ट और कम धार्मिक होता है।

अंगुली का द्वितीय पर्व बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति के व्यवसाय-पक्ष से सम्बन्ध रखता है। यह पर्व व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा और नेतृत्व प्रदान करने की इच्छा का द्योतक है। ऐसा व्यक्ति दुर्बल मानसिकता रखने पर भी इस पर्व के प्रभाव से आगे बढ़ने वाला होता है। महत्त्वाकांक्षा का सूचक द्वितीय पर्व व्यक्ति को व्यावहारिक बुद्धि एवं दृष्टिकोण रखने वाला भी बनाता है। यही कारण है कि वह धन के उपार्जन को सर्वाधिक प्राथमिकता देता है।

अंगुलियों की जांच-परख के अन्तर्गत उनके छोरों से प्राप्त होने वाले संकेतों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। अगुलियों के नुकीले छोर गुरु के गुणों को पखर बनाने वाले होते हैं। द्वितीय पर्व का प्रबल होना और छोरों का वर्गाकार होना व्यक्ति की व्यवसाय में सफलता का सूचक है। चमचाकार छोर व्यक्ति को सक्रिय और महत्त्वाकांक्षी होने के साथ मौलिक तथा अपने लिए स्थान बना लेने वाला सूचित करते हैं।

छोटी अंगुली का तृतीय पर्व भी पर्याप्त महत्त्व लिये है। इस पर्व के लम्बा-मोटा होने का अर्थ है—निचले जगत् का सामान्य और ऊपरी पर्वतों को वाञ्छित समर्थन प्रदान करने वाला होना। अन्य दो पर्वो से इस तीसरे पर्व के अधिक लम्बा होने का अर्थ है—बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति की नेतृत्व-प्राप्ति और महत्त्वाकांक्षा के पीछे स्वार्थ-भावना का होना तथा व्यक्ति के व्यवहार का दोषपूर्ण होना। इस स्थिति में निचला पर्व प्रमुखता प्राप्त कर लेता है और शेष दोनों पर्वों को उसका पिछलग्गू बनना पड़ता है। अत: व्यक्ति के समस्त कार्य-व्यवहार में घटियापन आ जाता है। पर्व के मोटा न होने का अर्थ है—व्यक्ति द्वारा बृहस्पति सम्बन्धी गुणों का सामान्य रूप से प्रयोग करना।

इस तृतीय पर्व का एक साथ लम्बा व मोटा होना व्यक्ति के पेटू होने का सूचक है। ऐसा व्यक्ति अधिक खाने की प्रवृत्ति वाला होने के कारण एक तो स्वास्थ्य की दृष्टि से शिथिल रहता है, दूसरे अधिक खाने की समस्या के समाधान के लिए अपनी आय को बढ़ाने की ओर अधिक ध्यान देता है (रेखाचित्र-96), जिसके फलस्वरूप उसकी शासन करने और सम्मान पाने की महत्त्वाकांक्षाएं पीछे रह जाती हैं, यहां तक कि वे साध्य के स्थान पर धन-प्राप्ति का साधन मात्र बनकर रह जाती हैं।

अब तक हमने देखा कि बृहस्पति की अंगुली के प्रथम पर्व के नुकीला-लम्बा होने पर व्यक्ति भोजनभट्ट तथा इसी अंगुली के तृतीय पर्व के लम्बा-मोटा होने पर व्यक्ति धर्मपरायण एवं अन्तर्ज्ञान-सम्पन्न होता है। इन दोनों पर्वों के मध्यवर्ती द्वितीय पर्व का स्वस्थ आकार व्यवसाय सम्बन्धी चेष्टाओं और महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति में

व्यक्ति को समर्थ-सफल बताता है। इसी प्रकार पर्वों के पृथक्-पृथक् अध्ययन से यह सुनिश्चित करना सम्भव होता है कि व्यक्ति किस क्षेत्र में सफल होने वाला है।

रेखाचित्र-96

किन्हीं हाथों में बृहस्पति की अंगुली का तृतीय पर्व लम्बा-मोटा न होकर कमर-जैसा चौड़ा होता है (रेखाचित्र-97)। अंगुली के सशक्त होने पर ऐसा तृतीय पर्व यह सूचित करता है कि व्यक्ति उच्चकोटि का आदर्शवादी कर्मशील है। ऐसा व्यक्ति कभी कोई ओछा-घटिया कार्य कर ही नहीं सकता। यहां तक कि वह बृहस्पति की निकृष्टता की स्थिति में उत्पन्न होने वाले रोगों से भी आक्रान्त नहीं होता। हां, अंगुली के तृतीय पर्व की शिथिलता का कभी मोटा होने, कभी घना होने तथा कभी कुम्हला जाने का अर्थ—व्यक्ति के अपनी खाने-पीने की शौक़ीनी के कारण उदार-विकार से ग्रस्त होना हो सकता है। उदार-विकार से हमारा अभिप्राय अजीर्णता, अफारा तथा पेट फूलना-जैसे रोगों का पनपना है। अंगुली के पर्वों का छोटापन व्यक्ति का छोटे पर्वों से जुड़े गुणों मे रहित होना है।

बृहस्पति की अंगुली का अध्ययन करते समय इस तथ्य की विशेष जांच-परख करनी चाहिए कि प्रत्येक पर्व के सामान्य होने का अथवा एक पर्व का अथवा दो पर्वों का लम्बा या छोटा होना व्यक्ति को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है। इस

परख के लिए यह निश्चित करना आवश्यक होता है कि एक सामान्य लम्बी अंगुली का छोर कहां तक पहुंचना चाहिए और सम्बद्ध अंगुली का छोर कहां तक पहुंच रहा
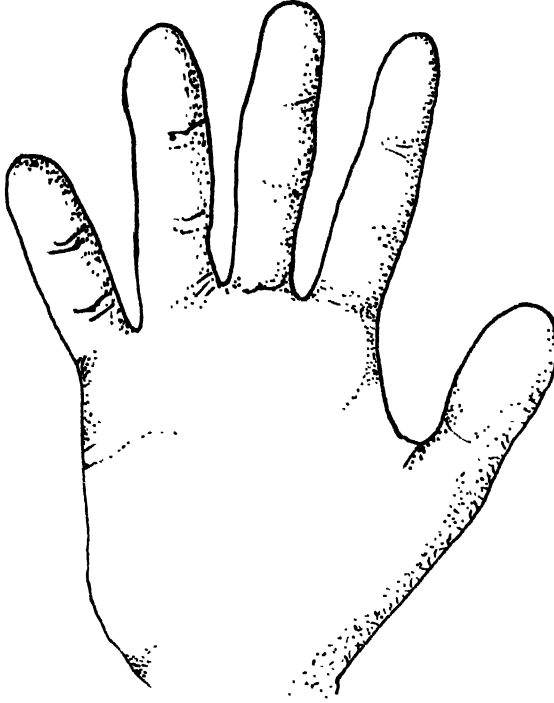
रेखाचित्र-97

है। इसी परिप्रेक्ष्य में पर्व के सामान्य अथवा सामान्य से छोटा-बड़ा होने का निर्णय करना चाहिए और फिर यह निर्धारित करना चाहिए कि व्यक्ति बृहस्पति के गुणों का उपयोग किस क्षेत्र में करने वाला है। वस्तुत: इस प्रकार यह जानना सम्भव हो जाता है कि व्यक्ति बौद्धिक विषयों, व्यवसाय-धन्धे अथवा भोग-विलास में अपनी क्षमताओं को भुनाने जा रहा है। पर्व की अपूर्णता को आधार बनाकर यह बताया जा सकता है कि व्यक्ति में तीनों लोकों में किस लोक के गुणों का अभाव है। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि प्रथम पर्व अन्तर्ज्ञान और धर्म से, द्वितीय पर्व महत्त्वाकांक्षा और व्यवसाय से तथा तृतीय पर्व अधिकार-प्राप्ति और भोजन-भट्ट होने की इच्छा से जुड़ा है। तृतीय पर्व के मोटा और कुछ अधिक गहरा लाल रंग लिये रहने का अर्थ—तीव्रवेगी रक्तसञ्चार के कारण व्यक्ति का भोजन-भट्ट होना है और फिर अधिक खाने के दुष्परिणाम के कारण रक्ताघात-जैसे गम्भीर संकट को भुगतने वाला होना है। इस प्रकार प्रत्येक पर्व के गुण-दोषों के निर्धारण से पूर्व उसके रंग पर भी ध्यान देना चाहिए।

पर्व के सफ़ेद रंग धर्म, व्यवसाय तथा महत्त्वाकांक्षा आदि के सम्बन्ध में न केवल व्यक्ति के निरुत्साही होने का, अपितु तृतीय पर्व के प्रचण्ड प्रभाव को क्षीण करने का भी सूचक है। वस्तुत: रंग के गुणों को प्रत्येक पर्व के गुणों पर लागू करने की आवश्यकता का कारण रंग का कहीं अधिक गहरा, कहीं सामान्य, तो कहीं हलका होना है। इस दृष्टि से प्रत्येक पर्व के पृथक्-पृथक् अध्ययन से पर्वत-प्रकारों के सम्बन्ध में पूरी जानकारी मिल जाती है और फिर यह जानना सुगम हो जाता है कि किस व्यक्ति का कौन-सा पक्ष प्रभावी रहने वाला है।

बृहस्पति की अंगुलियों के गांठदार होने का अर्थ है—व्यक्ति के गुणों में जटिलता का आना, अर्थात् व्यक्ति का तर्कशील एवं विश्लेषक प्रवृत्ति का होना। एकमात्र प्रथम पर्व के विकसित होने का अर्थ है—व्यक्ति का पूर्ण रूप से सन्तुलित होना और सभी कार्यों को नितान्त सुचारु एवं व्यवस्थित ढंग से सम्पन्न करने वाला होना। केवल द्वितीय पर्व का विकसित होना व्यक्ति को अपने व्यवसाय-धन्धे को व्यवस्थित बनाये रखने वाला तथा स्वयं भी साफ़-सुथरा और बन-ठनकर रहने वाला सूचित करता है।

अंगुलियों का चिकनापन व्यक्ति के आवेगशील, अन्त:प्रेरणा से प्रेरित तथा कलात्मक होने की रुचि का सूचक है। ऐसा व्यक्ति अधिक सोच-विचार के चक्कर में न पड़कर किसी भी कार्य को यथाशीघ्र प्रारम्भ कर देता है और फिर अपनी लगन और अपने परिश्रम के बल पर सफलता भी प्राप्त कर ही लेता है।

अंगुलियों के लम्बा होने से यह समझना चाहिए कि व्यक्ति किसी भी कार्य में प्रवृत्त होने से पूर्व सभी पक्षों का सूक्ष्मता व गहराई से अध्ययन करने वाला होता है। वह पहले गुण-दोषों की समीक्षा-परीक्षा करता है और फिर किसी कार्य को प्रारम्भ करता है। ऐसा व्यक्ति इस स्तर तक शंकाशील होता है कि वह अपने विश्वस्त व्यक्तियों पर भी विश्वास नहीं करता।

बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति के हाथ की अंगुलियां छोटी होती हैं। वह सोच-विचार कर और साथ ही द्रुतगति तथा स्फूर्ति से काम करने वाला होता है। वह इस प्रकार आवेगशील होता है कि धैर्य और प्रतीक्षा (Wait & Watch) उसे क़तई नहीं सुहाते। यही कारण है कि वह छोटी-मोटी बातों और कार्य के विवरण पर ध्यान ही नहीं देता। वह केवल अपने उद्यम की योजना बनाता है और फिर तत्काल उसे कार्यरूप देने लग जाता है।

बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति के गुणों के सन्दर्भ में छोटी अंगुलियों के गुणों की तुलना करने पर और प्रत्येक पर्व की जांच-परख करने पर इस तथ्य का निर्णय करना सहज-सरल हो जाता है कि व्यक्ति किस क्षेत्र—बौद्धिक अथवा व्यावसायिक—में विशिष्टता प्राप्त करने वाला होगा या फिर साधारण रूप से जीवन-यापन करने

वाला होगा।

बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए दृढ़ संकल्प और विवेक-जैसे गुणों की जांच के लिए अंगूठे का विश्लेषण करना चाहिए। इसमें यह देखना चाहिए कि इच्छाशक्ति वाले पर्व की बनावट कैसी—चमचाकार, वर्गाकार या फिर नोकदार—है या पतवार-जैसी अथवा चौड़ी व परिष्कृत रूप की है।

इच्छाशक्ति वाले पर्व की लम्बाई से इच्छाशक्ति की मात्रा का पता चलता है। द्वितीय पर्व की बनावट से विवेक और बुद्धिमत्ता के स्तर का पता चलता है। व्यक्ति के विवेक के साथ उसकी इच्छाशक्ति की तुलना करने से इच्छाशक्ति की मात्रा—प्रबलता, सामान्यता अथवा क्षीणता—का पता चलता है। इन परीक्षणों से यह परिणाम निकाला जा सकता है कि भावना और संकल्प का संयोग व्यक्ति की बृहस्पति से जुड़ी महत्त्वाकांक्षाओं को सफलता के शिखर पर पहुंचायेगा या फिर गुणों का अभाव इन्हें नष्ट कर देगा। यह मानकर चलना चाहिए कि महत्त्वाकांक्षाओं की सफलता दृढ़ इच्छाशक्ति और विकसित समझदारी पर ही निर्भर करती है। प्रबल बृहस्पति वाले व्यक्ति में इन गुणों—दृढ़ संकल्प और विवेक—के होने-न होने की जानकारी अंगूठे से ही मिलती है।

व्यक्ति के प्रकार को सुनिश्चित कर लेने पर जीवन में उसे प्राप्त होने वाले स्थान की जानकारी दी जा सकती है। विशुद्ध प्रतीक के भविष्य को बताने के लिए सर्वप्रथम उसके स्वास्थ्य और चरित्र की विशेषताओं, समस्याओं, आशंकाओं, दोषों और गुणों आदि की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। हाथ की कोमलता-लचीलेपन से व्यक्ति के सदाचारी तथा हाथ के कठोर और रूखेपन से उसे दुराचारी, संगति ठीक होने से व्यक्ति को परिश्रमी और न होने से आलसी; हाथों की रंगत गुलाबी होने से उत्साह-स्फूर्ति सम्पन्न तथा सफ़ेद होने से उदासी, पित्त दोष से ग्रस्त तथा रक्तविकार से पीड़ित समझना चाहिए। इसी प्रकार नाख़ूनों की उत्तमता व्यक्ति को हृष्ट-पुष्ट, ईमानदार तथा निकृष्टता, हृदय, श्वास तथा स्नायु रोगों से आक्रान्त, क्षीणकाय और बेईमान संकेतित करती है। हाथ के बालों से ऊर्जा के होने-न होने का पता चलता है।

इस प्रकार अंगुली से व्यक्ति के कलात्मक रुचि-सम्पन्न, व्यावहारिक अथवा परिश्रमी होने का पता चलता है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गांठदार अंगुलियां नियन्त्रण की, चिकनी अंगुलियां प्रेरणा और मार्गदर्शन की तथा लम्बी अंगुलियां विचारशील होने की द्योतक हैं। इसी प्रकार लम्बी तथा छोटी अंगुलियां सम्बद्ध विषय पर क्रमशः गहन चिन्तन और गम्भीरता से सक्रिय होने की सूचक होती हैं। अंगूठे से व्यक्ति के अपने गुणों का कार्यक्षेत्र में उपयोग कर पाने की अथवा न कर पाने की जानकारी मिलती है। उपर्युक्त सभी जानकारियों के आधार पर ही

व्यक्ति का भविष्यकथन सम्भव एवं उपयुक्त होता है।

बृहस्पतिप्रधान सभी व्यक्तियों को एक समान उत्तम कोटि का समझना भी एक भ्रम होगा। इस वर्ग के कुछ व्यक्ति ओछे और निकृष्ट स्तर के भी देखने को मिलते हैं। वस्तुत: यदि बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति अशुभ लक्षणों वाला है, तो उसका शरीर क्षीण, चेहरा कान्तिहीन, आंखें निस्तेज, त्वचा रूखी और बाल रूखे व बड़े होते हैं। उसकी नाक टेढ़ी, मुंह बड़ा व चौड़ा और कामुकता के लक्षण लिये रहने वाला तथा दांत गन्दे-भद्दे और लम्बे होते हैं। बृहस्पति का यह प्रतीक समग्रत: अनाकर्षक ही नहीं, अपितु भयंकर रूप से घृणास्पद भी होता है, जिससे कोई भी व्यक्ति उससे मित्रता तो दूर, सम्पर्क तक स्थापित करना नहीं चाहता। ऐसे व्यक्ति में अधिकार जमाने की प्रवृत्ति एवं इच्छा तो होती है, परन्तु उसमें अपनी इस इच्छा को कार्यरूप में परिणत करने की क्षमता-योगयता का नितान्त अभाव होता है। वह असहाय, विवश, दुर्बल एवं साधनहीन लोगों पर अपना अधिकार जताता है। वह इस प्रकार से निमर्म, क्रूर, निर्दय एवं अत्याचारी होता है कि अपने परिवारजनों और इष्ट-मित्रों को भी कष्ट पहुंचाने से नहीं चूकता। वह घर के लोगों पर अपना रौब जमाकर एक प्रकार से अपनी हीन भावना को सन्तुष्ट करता है। वह परले दरजे का फ़ुज़ूलखर्च, स्वार्थी, कामुक, व्यभिचारी और आततायी होता है। उसके इन दुर्गुणों के कारण परिवार के लोग अपने को अपमानित अनुभव करते हैं और उससे दूर रहने और किनारा करने को ही उचित समझते हैं। अपनी गन्दी व ओछी हरकतों और इच्छाओं को कभी पूरी न कर पाने के कारण ऐसा व्यक्ति सदैव असन्तुष्ट, उद्विग्न और दुखी रहता है। यहां तक कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसकी असफलता और निराशा उसे न केवल लम्पट, झूठा, बेईमान और व्यभिचारी बना देती है, अपितु उसे पशुतुल्य, बर्बर एवं नीच भी बना देती है। वह अपनी नीचता से परिचित होने पर भी अपने को श्रेष्ठ और दूसरों पर शासन करने के योग्य समझता है। अपनी इच्छाओं की पूर्ति से निराश वह अपने लिए एक बोझ और परिवार की अपकीर्ति, लोकनिन्दा तथा अपमान का कारण बन जाता है।

इस प्रकार के व्यक्ति का बृहस्पति पर्वत पूर्ण लाल रंग तथा गहरी लाल रेखाएं लिये रहता है। बृहस्पति की अंगुली बहुत टेढ़ी और ऐंठी हुई होती है, अंगुली का तृतीय पर्व अत्यधिक मोटा और घटिया होता है। त्वचा रूखी, हाथ कठोर, नाख़ून छोटे, अंगूठा बड़ा, अंगूठे का इच्छा पर्व मोटा तथा द्वितीय पर्व मोटा व ठोस होता है।

इस सबके विपरीत बृहस्पति के शुभ लक्षणों वाले व्यक्ति का हाथ बड़ा, अंगुलियां लम्बी, अंगुलियों के छोर वर्गाकार, नाख़ून चौड़े और गुलाबी, नाख़ूनों के सिरे वर्गाकार अथवा गोल होते हैं। शुभ लक्षणों वाले व्यक्ति की बृहस्पति वाली अंगुली बड़ी होती है। अंगुली के पर्व समान रूप से विकसित होते हैं। बुध व शुक्र

पर्वत पूर्ण एवं स्पष्ट होते हैं। उसमें सामान्य स्तर का लचीलापन होता है। अंगूठा बड़ा होता है और उसका इच्छाशक्ति वाला पर्व लम्बा, चौड़ा अथवा चप्पू के आकार का होता है। अंगुली का द्वितीय पर्व लम्बा, कटि का आकार लिये रहता है।

लगभग सभी बृहस्पतिप्रधान व्यक्तियों के हाथ के तृतीय पर्व मोटे और उनकी हृदय तथा जीवन रेखाएं गहरी और लाल-गुलाबी रंगत वाली होती हैं।

उपर्युक्त विवरण के आधार बृहस्पति के अच्छे और बुरे प्रकारों को पहचानने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होनी चाहिए। हां, बृहस्पति में अन्य प्रकारों के घुल-मिल जाने से विशुद्ध बृहस्पति के गुण क्षीण हो जाते हैं तथा इस स्थिति में व्यक्ति के प्रधान पर्वत को सुनिश्चित करने में अवश्य कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

पर्वत के निर्धारण करने में अष्टादश अध्याय में उल्लिखित निर्देशों को आधार बनाना चाहिए और देखना चाहिए कि शक्ति की दृष्टि से कौन-सा पर्वत प्रथम स्थान पर है और कौन-सा पर्वत द्वितीय स्थान पर है। इससे पर्वत-प्रकार का समूचा संयोजन करके इस सम्बन्ध में एक स्थिर और सुनिश्चित निष्कर्ष निकाला जा सकता है। उदाहरणार्थ, बृहस्पति और शुक्र की मिश्रित स्थिति में बृहस्पति के सर्वाधिक शक्तिशाली और प्रथम स्थान पर होने का और शुक्र पर्वत के द्वितीय स्थान पर होने का निर्णय इस तथ्य से होगा कि ऐसे व्यक्ति में बृहस्पति की महत्त्वाकांक्षा तथा अधिकार प्राप्ति आदि विशेषताओं के साथ-साथ शुक्र पर्वत के सभी गुण—प्रेम, उदारता तथा सहानुभूति आदि—भी विद्यमान रहेंगे। प्रबल गुणों को अग्रणी और द्वितीय स्तर के गुणों को उन गुणों में जुड़ा हुआ मानना चाहिए। प्रभावी लोक की जानकारी अंगुली के तीनों—प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय—पर्वों से मिलती है।

इसी प्रकार बृहस्पति और बुध के मिश्रित तत्त्वों वाले व्यक्ति की बुध की अंगुली का द्वितीय पर्व अधिक लम्बा होगा और बृहस्पति को बुध के वैज्ञानिक गुणों से प्रोत्साहन एवं प्रेरणा मिल रही होगी। यदि इस संयोजन में बुध की अंगुली के द्वितीय पर्व के स्थान पर प्रथम पर्व अधिक लम्बा हो, तो बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति बुध के वाक्पटुता और भाषण-प्रभविष्णुता-जैसे गुणों से लाभान्वित होगा। ऐसा व्यक्ति दूसरों के आकर्षण का केन्द्र बन जाता है और इस रूप में बुध के इन गुणों का महत्त्व अत्यधिक बढ़ जाता है।

इस प्रकार पर्वतों और अंगुलियों के पर्वों के क्रमबद्ध अध्ययन से इनकी वास्तविक स्थिति स्पष्ट हो जायेगी। व्यवसाय सम्बन्धी भविष्यकथन के लिए निष्कर्ष पर पहुंचने का यही सुनिश्चित और उपयुक्त साधन है। इसके आधार पर व्यक्ति को सुनिश्चित सफलता दिलाने वाले व्यवसाय की भविष्यवाणी करना सम्भव हो जाता है।

बृहस्पतिप्रधान विरला व्यक्ति ही आत्महत्या करता है। यहां भी इसका कारण महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति में तथा अधिकार-भोग में मिली असफलता से उत्पन्न निराशा और कुण्ठा ही होती है। अधिकांश असफल व निराश बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति तो अपने दु:ख को भुलाने के लिए मदिरा का ही आश्रय लेते हैं।

आत्महत्या करने वाले बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति की अंगुलियां छोटी होती हैं और वह आवेश से काम करने वाला होता है। निराशा और कुण्ठा के आवेश में वह किसी ऊंचे स्थान से छलांग लगाकर अथवा रिवॉल्वर से अपने को शूट करके आत्महत्या कर लेता है।

इसके विपरीत लम्बी-गठीली अंगुलियों वाले बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति निराशा और कुण्ठा का शिकार होने पर आत्महत्या नहीं करते। वे सोचने-समझने का अवसर मिलने पर आत्महत्या का सहारा नहीं लेते। लाल रंग के हाथों, रेखाओं और नाख़ूनों वाले बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति मादक द्रव्यों तथा उत्तेजक पेयों के सेवन के आदी हो जाते हैं। गहरी और गहरे लाल रंग की जीवन रेखा वाले बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति तो मादक द्रव्यों को पचाने की विलक्षण शक्ति लिये रहते हैं, जिससे उनमें मादक पदार्थों के सेवन की मात्रा निरन्तर एवं उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है, जो अन्तत: प्राणघातक सिद्ध होती है। *

20
शनि पर्वत

हाथ के शनि पर्वत और शनि की अंगुली से व्यक्ति के शनिप्रधान होने का पता चलता है। शनि पर्वत की ऊंचाई और उसके विकास के अनुपात में ही अंगुली अधिक लम्बी व बड़ी होती है। इस अंगुली के अग्रभाग के वर्गाकार की अधिकता के अनुपात में ही व्यक्ति में शनि की प्रबलता रहती है।

शनि पर्वत का अत्यधिक विकसित रूप विरले हाथों में ही मिलता है। अधिकांश हाथ तो शनि का दबा हुआ रूप ही लिये रहते हैं। शनि की सामान्यत: लम्बी अंगुली ही व्यक्ति में शनि के गुणों की स्थिति की सूचक होती है। शनि पर्वत के अस्पष्ट होने पर उस पर पड़ी रेखाओं से उसके रूप के सामान्य से भिन्न होने का संकेत मिलता है। शनि पर्वत जहां प्रबल है, वहां आकस्मिक रूप से तीक्ष्ण हो जाने वाला भी है। अत: इसका विवेचन विशेष सावधानीपूर्वक करना होगा।

उल्लेखनीय है कि शनि पर्वत पर बने संयुक्त चिह्न, त्रिकोण, वृत्त, त्रिशूल अथवा वर्ग इस पर्वत की शक्ति में वृद्धि करने वाले होते हैं। इसके विपरीत आड़ी रेखा, जाल, कटाव अथवा द्वीप इस पर्वत के दोषों के सूचक हैं। इन दोषों का दोनों--स्वास्थ्य और चरित्र—से सम्बन्ध हो सकता है। नाख़ूनों के रंग से इसका सम्बन्ध स्वास्थ्य से है अथवा चरित्र से है--की जानकारी मिलती है (रेखाचित्र-98)। अधिकांश शनिप्रधान व्यक्तियों का शनि पर्वत का शीर्ष-बिन्दु केन्द्र में होता है और अन्य पर्वतों के शीर्ष-बिन्दुओं का झुकाव शनि पर्वत की ओर ही होता है।

शनिप्रधान व्यक्ति की सबसे बड़ी और सरल पहचान है—शनि की अंगुली का एकदम सीधा होना तथा दूसरी अंगुलियों का झुकाव उसकी ओर होना (रेखाचित्र-99) यद्यपि रेखाचित्र-39 भी शनि के प्रतीक व्यक्ति का उदाहरण है, तथापि (चित्र-99) शनि उच्च पर्वत से कहीं अधिक सामान्य है, शनि की अंगुली सबसे ऊंचे स्थान पर स्थित है, अन्य सभी अंगुलियों का झुकाव शनि की अंगुली की ओर है और मस्तक रेखा भी शनि की ओर मुड़ गयी है। शनिप्रधान व्यक्ति न केवल विरल और विलक्षण होता है, अपितु प्रकृति का एक वरदान-रूप भी होता है।
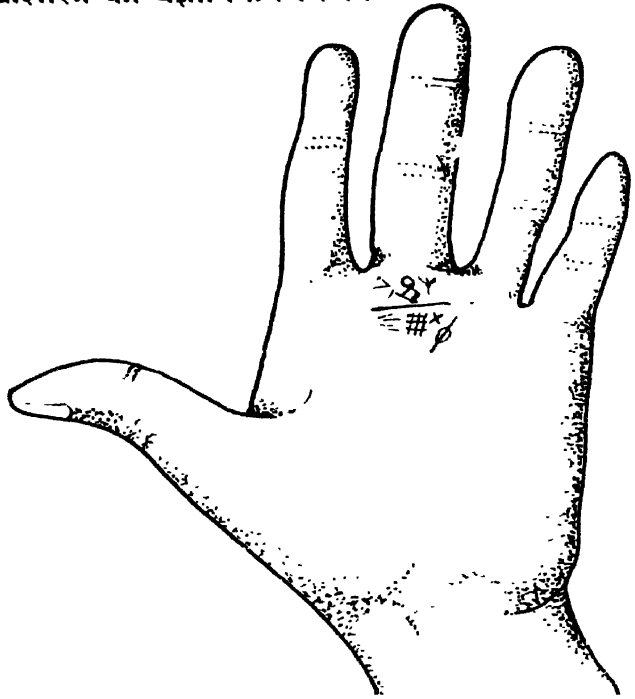
रेखाचित्र-98 व 99
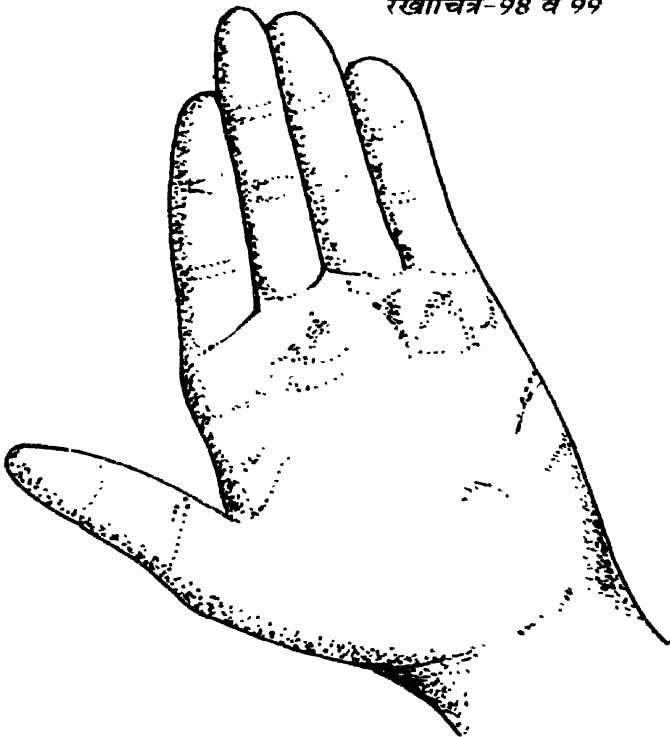
शनिप्रधान व्यक्ति सन्तुलित, शान्तिपूर्ण और सुखद जीवन व्यतीत करने वाला तथा अत्यन्त प्रभावी होता है। शनि की अंगुली व्यक्ति के अनुचित और अनावश्यक उत्साह को नियन्त्रित करके उसे संयत एवं सन्तुलित बनाती है। इस अंगुली द्वारा ऐसा न करने से व्यक्ति का जीवन अत्यन्त दु:खमय हो जाता है।

शनिप्रधान व्यक्ति बृहस्पति, सूर्य, बुध और शुक्र की कार्य करने की त्वरित गति पर भी नियन्त्रण लगाने वाला और उनके अतिरिक्त उत्साह के प्रवाह को संयत करने वाला होता है। होश के बिना जोश लाभ के स्थान पर हानि पहुंचाता है—यह एक निर्भ्रान्त सत्य है। इस रूप में शनि का महत्त्व स्वत: सिद्ध है।

सातों प्रकारों में शनिप्रधान व्यक्ति सर्वाधिक बुद्धिमान्, विवेकशील और संयमी होते हैं। केवल शनि ही व्यक्ति के उत्साह को नियन्त्रित करने के रूप में व्यक्ति को छलांग लगाने से पूर्व उसके परिणाम पर भली प्रकार से विचार करने के लिए प्रेरित करता है। अन्य किसी भी पर्वत-प्रकार में इस प्रकार की विशेषता नहीं मिलती। अन्य प्रकारों के व्यक्ति परिणाम की चिन्ता करने वाले नहीं होते।

प्रबल शनिप्रधान व्यक्ति जीवन में उत्साह-रहित, दु:ख-विषाद और असफलता को निश्चित मानने वाला, अर्थात् एक प्रकार से निराशावादी होता है। अपने इस दृष्टिकोण के कारण वह दूसरों को भी निरुत्साहित करने के रूप में कुछ भी करने से पूर्व ख़ूब सोच-विचार करने का परामर्श देता है। वह अधिक मिलनसार न होने के कारण न तो सभा-समारोहों में सम्मिलित होता है और न ही लोगों में घुल-मिल पाता है। इसी से लोग उसे उदासीन व रूखा मानते हैं, परन्तु उसकी यह उदासीन प्रकृति ही उसके व्यक्तित्व में सन्तुलन की सूचक होती है।

शनि की कम विकसित शक्ति अधिक शुभ होती है। उसका सामान्य से अधिक विकसित होना अशुभ एवं अनिष्टकारी सिद्ध होता है। सत्य तो यह है कि इसका सामान्य विकास भी शुभ नहीं होता।

शनि का शुद्ध प्रतिरूप सातों प्रकारों में सर्वाधिक लम्बा होता है। ऐसे व्यक्ति की शनि की अंगुली भी अन्य अंगुलियों से लम्बी होती है। वह दुबला-पतला, मरियल-सा होता है और उसकी त्वचा रूखी-सूखी, पीली, झुर्रियां लिये हुए, लटकी हुई अथवा हड्डियों पर खिंची हुई-सी होती है तथा वह पित्त-दोष से पीड़ित होता है। वह अपने चिड़चिड़े स्वभाव तथा चेहरे के पीलेपन से सहज ही पहचाना जाता है। उसके बाल काले, घने, मोटे, रूखे-सूखे और कठोर होने के कारण इतने कमज़ोर होते हैं कि युवावस्था में ही झड़ जाते हैं, जिससे गंजापन भी उसके व्यक्तित्व से जुड़ जाता है। उसके चेहरा कुल्हाड़ी के आकार का—लम्बा-पतला होता है, गाल अन्दर की ओर धंसे हुए, उसके गालों की हड्डियां ऊंची और उन पर चढ़ी खाल कसी हुई होती है, जबकि त्वचा ढीली और झुर्रियों वाली होती है।

उसकी आंखें गहरी और सामान्य से अत्यधिक काली होती हैं। उन आंखों से प्राय: दु:ख, निराशा और बेचैनी के भाव झलकते हैं। क्रोध, संशय और उत्कण्ठा-जैसे भावों द्वारा मस्तक के झकझोरे जाने पर नेत्रों के भावों व विकारों में परिवर्तन आता है। पित्त-दोष से ग्रस्त होने के कारण शनिप्रधान व्यक्तियों के नेत्रों की सफ़ेदी पीलेपन में बदल जाती है। उनकी भौहें मोटी, कड़ी और भद्दी होती हैं, उनके कान सामान्य से बड़े और बाहर की ओर निकले हुए होते हैं, उनकी नाक लम्बी, पतली, सीधी और अन्त में तीखी होती हैं। उनके नथुने सख़्त होते हैं, जिससे उनके सांस लेते समय वे फूलते नहीं। उनका मुंह बड़ा होता है और होंठ पीले-पतले होते हैं। निचला होंठ और जबड़ा ठोस और उभरे हुए होते हैं। उसके दांत नरम होने के कारण उसके यौवन के ढलते ही गिरने लगते हैं और मसूड़े भी पीले, रक्तहीन तथा रोगग्रस्त होते हैं। उसकी दाढ़ी के बाल ठोड़ी और होंठों तक घने और शेष चेहरे पर छितराये रहते हैं। ठोड़ी साफ़-सुथरी और बड़ी, गरदन लम्बी-पतली, मांसपेशियां रस्से-जैसी सख़्त और खुरदरी, नसें नीली होने के साथ ढीली-सिकुड़ी व त्वचा के भीतर से बाहर की ओर निकली हुई तथा टेंटुआ साफ़ दिखाई देने वाला होता है। उसका सीना पतला और फेफड़े इस प्रकार तंग होते हैं, मानो उन्हें आवश्यकता से कम स्थान पर कार्य करना पड़ रहा हो। पतले होंठों से निकलकर आती उसकी आवाज़ भद्दी और कर्कश होती है। उसके कन्धे ऊंचे, परन्तु झुके हुए, भुजाएं लम्बी, परन्तु निर्जीव और लटकी हुई होती हैं। वह अपनी चाल-ढाल से उदास, व्याकुल और चिड़चिड़ा लगता है। उसका शरीर, रूप-रंग, बोल-चाल और आचार-व्यवहार से ऐसा लगता है कि उसे कभी पौष्टिक आहार सुलभ ही नहीं हुआ। उसकी दुबली-पतली काया, उदास नेत्र, रूखी त्वचा, कठोर बाल, तंग सीना, झुके कन्धे, ढीली चाल-ढाल आदि सब उसके निकृष्ट स्वास्थ्य और अपेक्षित रक्त की न्यूनता को सूचित करते हैं।

शनिप्रधान व्यक्ति के मन में उत्साह, स्फूर्ति, ऊर्जा, ऊष्मा और अमंग-जैसे सार्थक भावों का नितान्त अभाव रहता है, फलत: वह कभी हर्ष व उल्लास का अनुभव नहीं करता। उसके जीवन में निराशा और विषाद स्थायी रूप से घर किये रहते हैं। हर्ष, उल्लास, स्फूर्ति और तेजस्विता से भरे व्यक्ति के सम्पर्क में आने पर भी, यहां तक कि उसके द्वारा जीवन को आनन्दमय बनाने का प्रयास किये जाने पर भी शनिप्रधान व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन नहीं आता। वह अपने स्वभाव से टस से मस नहीं होता। वह जीवन के हर्ष-उल्लास को नकारता हुआ शोकग्रस्त होकर सदैव यही सोचता और मानता है कि संसार दु:खों का घर है। दु:ख के घने बादलों में सुख की स्थिति तो बिजली की चमक जितनी भी नहीं है।

शनिप्रधान व्यक्ति अपनी निषेधात्मक प्रवृत्ति के कारण सुख-सुविधाओं का

उपभोग करता हुआ भी दुखी और उदास रहता है। उसे सदैव ऐसा लगता है, मानो वह संसार में दु:ख भोगने के लिए ही उत्पन्न हुआ है। वस्तुत: उसकी शारीरिक रचना ऐसी होती है कि वह सुलभ आनन्द के क्षणों में भी विषादग्रस्त हो जाता है। उसकी बुद्धि किसी भी सकारात्मक तत्त्व को स्वीकार कर ही नहीं पाती। किसी भी आमोद-प्रमोद में वह अपने को समो ही नहीं पाता। वह तो प्रकाश में अन्धकार, जीवन में मृत्यु और वसन्त में पतझड़ देखने का अभ्यस्त होता है। इसके अतिरिक्त अपनी कुरूपता के कारण वह किसी के आकर्षण का केन्द्र भी नहीं बन पाता।

शनिप्रधान व्यक्ति न केवल सनकी होता है, अपितु शंका और संशय से ग्रस्त भी होता है। वह दूसरों से मिलने-जुलने में संकोच करने वाला, दूसरों को आदर-सम्मान न देने वाला, नगर की अपेक्षा ग्राम्य-जीवन को अपनाने वाला तथा दूसरों से अलग-थलग एकाकी जीवन बिताने वाला होता है। विद्यार्थी के रूप में वह कृषि तथा रसायनशास्त्र-जैसे मननशील विषयों को चुनता है, ताकि खेत अथवा प्रयोगशाला में अकेला रहने का अवसर प्राप्त कर सके। वह मित्र बनाने की कला में अकुशल होता है। अत: उसके परिचितों का क्षेत्र अत्यन्त ही सीमित-संकुचित होता है। इसी कारण उसे अपने व्यवसाय-धन्धे में सफलता के लिए अपने विनम्र व्यवहार तथा मोहक ढंग पर निर्भर रहना पड़ता है।

अपनी एकान्तप्रियता के कारण शनिप्रधान व्यक्ति कृषि, उद्यान अथवा वनस्पति-विज्ञान-जैसे विषयों को अपने व्यवसाय-धन्धे के रूप में अपनाता है। ऐसा व्यक्ति भू-खनन और खोज-जैसे कार्यों में रुचि रखने के कारण धरती के गर्भ में छिपे तेल के कूपों, कोयले की खानों तथा लोहा-तांबा के भण्डारों को खोज निकालने में सफल होता है। इसीलिए शनिप्रधान व्यक्ति को भाग्यशाली माना जाता है और शनि का भाग्य के साथ सम्बन्ध जोड़ा जाता है।

शनिप्रधान व्यक्ति तन्त्र-विद्या के अध्ययन में विशेष रुचि लेने वाला होता है और इस क्षेत्र में उसे विलक्षण सफलता भी प्राप्त होती है। रसायन-शास्त्र भी उसका प्रिय विषय होता है। वह औषधियों और तत्त्वों के मिश्रण से नये-नये रहस्यों को प्रकाश में लाता है और इसीलिए वह रहस्यवादी और कुछ अंशों में अन्धविश्वासी भी बन जाता है। भौतिक-विज्ञान, उच्च गणित तथा चिकित्सा-शास्त्र में भी उसे न केवल रुचि होती है, अपितु इन विषयों में वह पारंगतता भी प्राप्त करता है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि उसका ज्ञान सतही कदापि नहीं होता। वह तो गहरे ज्ञान का भण्डार और सच्चे अर्थों में उच्च स्तर का वैज्ञानिक कहलाने का अधिकारी होता है। जब संसार के अन्य लोग अपने समय को आमोद-प्रमोद तथा निद्रा-व्यसन आदि में गंवा रहे होते हैं, शनिप्रधान व्यक्ति उस समय का उपयोग दुर्लभ ग्रन्थों के गहन अध्ययन में, समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने में और नये आविष्कारों को प्रकाश में लाने में कर

रहा होता है।

शनिप्रधान व्यक्ति न केवल समझदार, अपितु अत्यन्त सावधान भी होता है। वह अपने साथियों अथवा सम्पर्क में आने वालों की प्रतिभा एवं योग्यता पर न तो सहसा विश्वास करता है और न ही उनकी योजना में सम्मिलित होता है। इसके अतिरिक्त वह रातों-रात धनपति बनाने वाले साधनों—लॉटरी, बॉण्ड, शेयर तथा व्यापार—आदि की अपेक्षा खेतीबाड़ी और भवनों के क्रय-विक्रय में निवेश को कम जोखिम वाला मानता है, अतः इन्हें प्राथमिकता देता है। सोच-समझकर कार्य करने की उसकी प्रवृत्ति उसे रूढ़िवादी के रूप में प्रस्तुत करती है। वह किसी भी कार्य को शीघ्रता से हाथ में ले ही नहीं पाता।

शनिप्रधान व्यक्ति को कुछ करने के लिए प्रेरित तो किया जा सकता है, परन्तु किसी भी रूप में बाध्य नहीं किया जा सकता। उसे आदेश देकर उससे कुछ कराना कठिन होता है, परन्तु उसकी प्रशंसा करके अथवा उसे प्रोत्साहन देकर उससे कुछ भी कराना सम्भव होता है। चिढ़ाये जाने अथवा रुष्ट होने पर वह विद्रोह करने पर उतर आता है और कुछ भी ऊलजलूल बकने लगता है।

शनिप्रधान व्यक्ति सावधानी से काम करने की प्रवृत्ति वाला होने के कारण किसी भी संकट से उद्धार का मार्ग निकाल लेता है। वह कार्यालय और घर के अड़ोस-पड़ोस में गम्भीरता और शालीनता देखने का अभ्यस्त होता है। उसे ओछापन क़तई पसन्द नहीं। वह अपनी वेषभूषा में अधिकांशतः काले, भूरे अथवा स्लेटी रंग के वस्त्रों को महत्त्व देता है। उसके घर में भी भड़कीले रंगों का प्रयोग देखने को नहीं मिलता।

शनिप्रधान व्यक्ति की शारीरिक ऊष्मा सामान्य से कम होने के कारण उसमें कामुकता, शृंगार-वासना और प्रेम-लोलुपता आदि के लिए कोई स्थान नहीं होता। यहां तक कि वह विवाह के प्रति भी किसी प्रकार की रुचि व उत्साह आदि का प्रदर्शन नहीं करता। शनि का शुद्ध प्रतिरूप तो विवाह शब्द से ही घृणा करने वाला और आजन्म ब्रह्मचारी रहने वाला होता है। शनिप्रधान व्यक्ति समझदार होने के कारण धन के मामले में भी मितव्ययी और बचत करने वाला होता है। शनि के प्रभाव की न्यूनता-अधिकता के अनुपात से ही व्यक्ति न्यूनाधिक लोभी होता है।

शनिप्रधान व्यक्ति किसी कार्य में सहसा प्रवृत्त नहीं होता, परन्तु एक बार कार्य को हाथ में ले लेने पर उसे सम्पन्न करने में सच्ची लगन, धैर्य और श्रम का परिचय देता है। *वह संगीत के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त कर सकता है, परन्तु एक तो उसका क्षेत्र शास्त्रीय संगीत होगा और* दूसरे उसमें निराशा और अवसाद का मिश्रण होगा। वह कलाप्रेमी न होने पर भी सौन्दर्योपासक अवश्य होता है। वह प्रकृति के और प्राकृतिक दृश्यों के सौन्दर्य का प्रशंसक तथा उनमें रमने वाला होता है।

शनिप्रधान व्यक्ति सफल लेखक भी बन सकता है, परन्तु उसकी लेखनी के विषय होंगे—कृषि, रसायन-शास्त्र, तन्त्र, मन्त्र तथा विज्ञान आदि। उसकी साहित्यिक रचनाओं के नायक दुखी, खिन्न, निराश तथा जीवन से विरक्त और संसार को त्यागने वाले होंगे। वह भूत-प्रेतों की रोचक कहानियों के लिखने में कुशल होता है। शनिप्रधान व्यक्ति की धारणाएं इस प्रकार बद्धमूल एवं सुदृढ़ होती है कि वह किसी प्रकार का परिवर्तन, नियन्त्रण यहां तक कि आलोचना को भी पसन्द नहीं करता है। वह अपनी त्रुटियों-न्यूनताओं से ही नहीं, अपनी कुरूपता, अपनी एकान्तप्रियता, लोगों से सम्पर्क न रखने की आदत तथा दूसरों के प्रति अपने मन में उत्पन्न होने वाले ईर्ष्या-द्वेष से दूसरों के परिचित होने को जानता है। अत: उसमें कुण्ठा और हीनता की ग्रन्थि गहरी जड़ पकड़ लेती है और वह प्रतिशोधप्रिय, दूसरों को अनावश्यक कष्ट पहुंचाने वाला तथा दूसरों को तड़पता हुआ देखकर प्रसन्नता अनुभव करने वाला भी हो सकता है। कुछ शनिप्रधान व्यक्ति तो अपवाद रूप में निरंकुश व अत्याचारी नरपिशाच भी बन जाते हैं।

शनि के गुणों और दोषों की भली प्रकार जानकारी प्राप्त कर लेने के उपरान्त अब यह देखना चाहिए कि उसके कितने अंश का विरोध अन्य गुणों द्वारा नहीं किया जा रहा। उल्लेखनीय यह है कि प्रत्येक व्यक्ति का सन्तुलित चरित्र इस तथ्य का सुनिश्चित प्रमाण है कि उसमें शनि के प्रधान तत्त्व पर्याप्त मात्रा में विद्यमान हैं। शनि की अनुपस्थिति का अर्थ है--व्यक्ति में सन्तुलन का अभाव। हां, शनि के प्रभाव की आवश्यकता से अधिकता व्यक्ति को अत्यन्त कुरूप, निराश, उदासीन और अतिकृपण बना देती है।

शनि पर्वत, शनि की अंगुली की प्रबलता तथा सभी अंगुलियों का शनि की अंगुली की ओर झुकाव शनि का उत्तम प्रकार होता है। शनि पर्वत पर जाल का अथवा रेखाओं का आड़ा-तिरछा होना, हृदय रेखा का विकारग्रस्त होना, अंगुलियों का टेढ़ापन तथा हाथ की कठोरता शनि के अशुभ तथा निकृष्ट रूप के सूचक हैं। शनि के प्रभाव को जानने के लिए सभी बातों पर विचार करना आवश्यक है। जीवन रेखा पर स्वास्थ्य के अशुभ लक्षणों, नाख़ूनों की आकृति, संगति और रंग आदि के आधार पर बताया जा सकता है कि व्यक्ति शनि से सम्बन्धित रोगों में से किसी रोग से अवश्य ही पीड़ित है।

शनि से सम्बन्धित पित्त-दोष—पित्ताशय अथवा जिगर की बनावट की न्यूनता अथवा विकृति से उत्पन्न--अस्थायी नहीं होता। इस रोग में पित्त के विष के रक्त में पहुंचने से व्यक्ति के मुख, हाथ, हथेली, नाख़ून और रेखाएं आदि अंग पीले पड़ जाते हैं। इसके अतिरिक्त रक्त में पित्त के मिलने से व्यक्ति पीड़ा और बेचैनी महसूस करने लगता है। शरीर पर तथा शरीर के प्रमुख अंगों पर छाये पीलेपन को देखकर व्यक्ति

के शनिप्रधान और पित्त-दोष से ग्रस्त होने की भविष्यवाणी की जा सकती है। यहां यह उल्लेखनीय है कि ऐसे व्यक्ति के लिए पित्त-दोष की प्रचण्डता से अधरंग (पक्षाघात) का ख़तरा बढ़ जाता है। नाख़ूनों से इस स्थिति की जानकारी हो जाती है।

शनिप्रधान व्यक्ति को ग्रसने वाली अन्य व्याधियां हैं—सन्धिवात अथवा गठिया रोग, बवासीर तथा नसों की सूजन। हाथों पर नसों के उभार और उन नसों में गाढ़े रक्त के भराव को देखने से बवासीर और नसों के सूजन-जैसे रोगों की पहचान हो जाती है। शनिप्रधान व्यक्ति पर अधरंग का प्रकोप शरीर के निचले भागों में होता है। ऐसे व्यक्ति के न केवल दांत कमज़ोर होते हैं, अपितु उसके कानों में भी कष्ट रहता है। इन दोनों अंगों—दांत और कान—के रोगग्रस्त होने की जानकारी शनि पर्वत के नीचे मस्तक रेखा पर पड़े बिन्दुओं अथवा छोटे द्वीपों से हो जाती है। शनिप्रधान व्यक्ति के हाथ के जीवन रेखा के बाधित होने को अथवा शनि पर्वत पर जाल की या फिर आड़ी-तिरछी रेखाओं की उपस्थिति को व्यक्ति के उपर्युक्त रोगों से ग्रस्त होने का निश्चित संकेत समझना चाहिए। नाख़ूनों की जांच से शनि पर्वत पर जाल अथवा आड़ी तिरछी रेखाओं की उपस्थिति को देखा जा सकता है। सम्बद्ध व्यक्ति की शक्ति की जानकारी के लिए भी शनि पर्वत पर विद्यमान बिन्दुओं का अध्ययन अपेक्षित होता है।

शनिप्रधान व्यक्ति के शरीर की त्वचा के रूप रंग से उसके चरित्र और स्वभाव की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। त्वचा की निकृष्टता अन्य सभी गुणों को निकृष्ट बना देती है। ऐसा निकृष्ट व्यक्ति उपद्रवी, निरंकुश और स्वेच्छाचारी होने के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव-जाति से घृणा करने वाला और उपद्रव भड़काने वाला होगा। इसके विपरीत उत्कृष्ट अथवा मध्यम स्तर की त्वचा व्यक्ति के उत्तम चरित्र की द्योतक होती है।

शनिप्रधान व्यक्ति के हाथ का लचीलापन उसके स्वभाव के कम कठोर और उदार होने का संकेत होता है। मस्तिष्क के लचीला होने से व्यक्ति न तो निराशा का अनुभव करता है और न ही दुष्ट वृत्तियों के आगे आसानी से हार मानता है। इसके विपरीत हाथ की कठोरता व्यक्ति के स्वार्थी, कृपण और आत्मकेन्द्रित होने को सूचित करती है। इस प्रकार लचीला हाथ उत्तम और कठोर हाथ निकृष्ट होता है। कोमल हाथ जहां व्यक्ति की कृपण वृत्ति को कम अथवा शून्य करता है तथा उसे लोकप्रिय एवं सामाजिक बनाता है, वहां कठोर हाथ व्यक्ति को निम्न स्तर का व्यवहार करने वाला, असभ्य, अशिष्ट और अलोकप्रिय बनाने वाला होता है। शनिप्रधान व्यक्ति के हाथों की शिथिल संगति उसे आलसी, निकम्मा, बातूनी, सफल व्यक्तियों का उपहास करने वाला तथा बम आदि के विस्फोट से समाज में हत्या,

उपद्रव करने वाला संकेतित करती है।

शिथिल हाथ की अपेक्षा कोमल हाथ पर्याप्त अच्छा होता है; कोमल हाथ वाला शनिप्रधान व्यक्ति जहां आलसी नहीं होता, वहां उसके आदर्श भी काफ़ी ऊंचे होते हैं। लचीली संगति तो सबसे अच्छी होती है; क्योंकि यह यकृत को गतिशील बनाये रखने के लिए तथा व्यक्ति की निराशा और उदासीनता को दूर करने के लिए अपेक्षित ऊर्जा प्रदान करती है। हाथों की कठोरता भी ऊर्जा के अस्तित्व की सूचक है, परन्तु कठोर हाथ ऊर्जा पाकर अप्रिय कार्य कर बैठते हैं। कठोर हाथ वाले व्यक्ति का गूढ़ मस्तिष्क प्रगति का और नये आविष्कारों को प्रकाश में लाने का विरोध करता है। वह सदैव भूतकाल में जीता है और भूतकाल का ही गुणगान करता है। ऐसा व्यक्ति अशिक्षित, अशिष्ट, अन्धविश्वासी, कृपण, संकीर्ण दृष्टिकोण वाला तथा प्रत्येक अच्छाई एवं आदर्श का विरोध करने वाला होता है।

भविष्यकथन में हाथों के रूप-रंग का विशेष महत्त्व है। हाथों के पीलेपन की मात्रा से ही व्यक्ति के अधरंग-बवासीर आदि रोगों की सामान्यता-असामान्यता का ज्ञान होता है। इसके अतिरिक्त हाथों की रंगत से व्यक्ति के चरित्र का पता चलता है। व्यक्ति के हाथों का रंग जितना अधिक पीला होगा, व्यक्ति उतना ही अधिक शंकालु, संकीर्णवृत्ति तथा निराशावादी होगा। गहरा पीलापन व्यक्ति के उदास, चिड़चिड़ा, अधीर, समाज से कटा छटा और कुछ अंशों तक आपराधिक वृत्ति का होना सूचित करता है।

शनिप्रधान व्यक्ति के हाथों की सफ़ेदी उसकी निष्ठुरता तथा भावशून्यता का संकेत है। ऐसे व्यक्ति न लोगों से मिल-जुल पाते हैं और न ही लोग इनसे मिलना-जुलना पसन्द करते है। वे आकर्षक रूप-रंग रखते हुए भी लोगों के आकर्षण का केन्द्र नहीं होते, यहां तक कि कोई उनके पास तक नहीं फटकता, सब उससे दूर-दूर भागते हैं। इससे व्यक्ति दूसरे लोगों के प्रति असहनशील और व्यंग्य-बाणों का प्रयोग करने वाले हो जाते हैं, जिससे वे अलोकप्रिय हो जाते हैं और उनका कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो पाता। इस प्रकार प्रबल शनिप्रधान व्यक्ति निस्तेज, अभागे और अशुभ फल पाने वाले होते हैं।

गुलाबी रंग के हाथों वाले शनिप्रधान व्यक्ति का स्वास्थ्य उत्तम होता है और वह प्राय: प्रसन्नचित्त रहता है। ऐसा व्यक्ति निराशावादी भी नहीं होता। अत: वह शनि के अन्य प्रतिरूपों से कहीं अधिक अच्छा होता है।

हाथों का लाल रंग भी अच्छे स्वास्थ्य का तथा व्यक्ति के प्रसन्नचित्त होने का सूचक है। यह उदासी को दूर भगाने वाला है। अन्य कारणों से प्रभावित न होने पर यह रंग उत्तम ही सिद्ध होता है।

हाथों का नीलापन व्यक्ति के बवासीर, नसों की सूजन और हृदय रोग से ग्रस्त

होने का संकेत देता है। शनि पर्वत पर जाल अथवा आड़ी-तिरछी रेखाओं के होने से इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है। इस तथ्य को और अधिक सुनिश्चित करने के लिए हाथ के पीछे की नसों की जांच-परख करनी चाहिए।

व्यक्ति के चरित्र और स्वास्थ्य की जानकारी का आधार होने के कारण नाख़ूनों की जांच का विशेष महत्त्व है। अशुभ शनिप्रधान व्यक्ति के हाथों पर छोटे-कोमल नाख़ून शुभ नहीं होते; क्योंकि इन नाख़ूनों के गुण व्यक्ति के दोषों में वृद्धि करने वाले होते हैं। शुभ शनि पर भी कोमल नाख़ून शुभ नहीं माने जाते। चौड़ा और स्वस्थ नाख़ून दोनों—स्वास्थ्य और स्वभाव—की उत्तमता का द्योतक है। इसके विपरीत संकुचित-संकीर्ण नाख़ून अच्छे नहीं माने जाते। शनिप्रधान व्यक्ति सामान्यतः यक्ष्मा और हृदय रोग से ग्रस्त नहीं होता, परन्तु नाख़ूनों से ऐसा संकेत मिलने पर व्यक्ति को इन रोगों से ग्रस्त मान लेना चाहिए। शनिप्रधान व्यक्ति स्नायविक और अधरंग जैसे रोगों से ग्रस्त होते ही रहते हैं। अतः नाख़ूनों के धारीदार और भुरभुरा होने को इन रोगों की स्थिति का निश्चित संकेत समझना चाहिए। नाख़ूनों के रंग की स्थिति से रोग की विषमता को भी जाना जा सकता है। नाख़ूनों के रूप-रंग में होने वाले परिवर्तनों को शनि के गुणों पर लागू करने से सही स्थिति का पता चल जाता है। स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति के व्यक्ति की निजी समस्या होने को एक प्रकार का विकट संकट ही समझना चाहिए।

हाथों पर उगे बाल और उनका रंग भी व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य के परिचायक होते हैं। बालों का श्याम वर्ण और भूरा सुनहरापन क्रमशः व्यक्ति के चतुर-धूर्त तथा शुद्धचित्त एवं विश्वसनीय होने के सूचक हैं। बालों के रंग के आधार पर भविष्यकथन करते समय बालों की मात्रा—घनापन अथवा छितरापन, स्वरूप—पतला-लम्बापन अथवा मोटा-छोटापन तथा गुणवत्ता—कोमलता-स्निग्धता अथवा कठोरता व रूखापन—आदि पर भी विचार करना चाहिए।

हथेली से अधिक लम्बी अंगुलियां व्यक्ति के बुद्धिमान् होने की सूचक होती हैं। ऐसा व्यक्ति बौद्धिक क्षेत्र में ही सफलता प्राप्त करता है, किसी व्यवसाय में नहीं टिक पाता। वह एक अच्छा लेखक और सफल शिक्षक तो बन जाता है, परन्तु धन का अर्जन और सञ्चय के प्रति उदासीन रहता है। हां, हाथ के मध्य भाग के अत्यधिक विकसित होने का अर्थ है—व्यक्ति के भावनालोक का प्रभावी होना, अर्थात् व्यक्ति का व्यापार-व्यवसाय में भी सफल रहना। हाथ के निचले भाग का विकसित होना व्यक्ति को अधम कोटि और निकृष्ट प्रकृति का होना बताता है। तीनों लोकों में एक लोक के लुप्त और शेष दो लोकों के विकसित होने का अर्थ है—मानसिक और निचले जगत् का विकसित और मध्यलोक का लुप्त होना। यह स्थिति व्यक्ति को निकृष्ट प्रकृति का और स्वप्नद्रष्टा, अर्थात् यथार्थ की उपेक्षा करने वाला

और कल्पनालोक में विचरण करने वाला बताती है। अन्य स्थितियों में भी इसी तर्क को लागू किया जा सकता है।

अंगुलियों के पहले पर्व का लम्बा होना व्यक्ति के मानसिकलोक की प्रबलता का सूचक है। इससे यह संकेत मिलता है कि सम्बद्ध व्यक्ति चिन्तक, तन्त्र, मन्त्र और विज्ञान में रुचि रखने वाला तथा अन्धविश्वासी है। द्वितीय पर्व की लम्बाई इस तथ्य का संकेत है कि व्यक्ति कृषि, विज्ञान, रसायन शास्त्र, इतिहास तथा गणित आदि विषयों में प्रगतिशील होगा। यद्यपि तृतीय पर्व की लम्बाई व्यक्ति मे दोषों की वृद्धि का संकेत अवश्य है, तथापि शनि के कामवासना से सम्बन्धित न होने के कारण व्यक्ति को विलासी अथवा कामुक समझना उचित नहीं होगा। तृतीय पर्व के लम्बा होने पर भी अंगुली के आकार-प्रकार के अथवा पर्वत की स्थिति के उत्तम होने पर तो दोषों का आंशिक रूप में परिहार हो जाता है और व्यक्ति कृपण न कहलाकर मितव्ययी कहलाता है। इसकी विपरीत स्थिति--अंगुली के आकार-प्रकार का और पर्वत की स्थिति का उत्तम न होना-- में तो दोष ही दोष रहते हैं। तृतीय पर्व का मोटापन व्यक्ति को सामान्य अध्ययनशील बताता है, तो उसका कोण के रूप का होना पूर्ण मनोयोग और गहरी रुचि से अध्ययन में प्रवृत्त होने वाला बताता है। मुड़ी हुई अंगुली सोच समझ और बुद्धिमत्ता की संकेतक है, तो अंगुली के बहुत छोटा होने का अर्थ है— व्यक्ति शनिप्रधान ही नहीं है और इसके फलस्वरूप उसमें न गम्भीरता है और न ही सन्तुलन।

शनि पर्वत के शीर्ष-बिन्दु के बृहस्पति पर्वत की ओर झुकने पर व्यक्ति में बृहस्पति के गुण—महत्त्वाकांक्षा, अधिकार जताने की प्रवृत्ति तथा दूसरों से अपने को ऊंचा समझने का विचार— आ जाते हैं। शीर्ष बिन्दु का झुकाव सूर्य पर्वत की ओर होने पर व्यक्ति में सूर्य के गुण—सौम्यता, बुद्धिमत्ता तथा धीरता आदि—आ जाते हैं। इस स्थिति—शीर्ष-बिन्दु का अन्यत्र झुकाव—में शनि की विकार उत्पन्न करने वाली प्रचण्डता शिथिल पड़ जाती है; क्योंकि व्यक्ति स्वयं को दूसरे पर्वतों को सौंप देता है। हां, शीर्ष-बिन्दु के पर्वत के केन्द्र में अवस्थित होने पर व्यक्ति इस प्रकार आत्मकेन्द्रित हो जाता है कि वह निजी स्वार्थ साधन के अतिरिक्त और कुछ सोच ही नहीं पाता; क्योंकि अन्य पर्वत उसे किसी भी रूप में प्रभावित ही नहीं कर पाते। हां, अंगुली का झुकाव बृहस्पति पर्वत की ओर होने पर वह अपनी कुछ शक्ति बृहस्पति को दे देती है। अंगुली का झुकाव सूर्य पर्वत की ओर होने पर शनि की कुछ गम्भीरता और प्रचण्डता को सूर्य ओट लेता है, जिससे व्यक्ति जीवन में सावधानी और सोच-विचार को अपनाने लगता है।

अंगुलियों के अग्रभागों (सिरों) की जांच भी व्यक्ति के चरित्र और स्वभाव को जानने में उपयोगी सिद्ध होती है। शनि की अंगुली के छोर को छोड़कर शेष चारों

अंगुलियों के छोरों के एक समान होने पर, अर्थात् केवल शनि की अंगुली के छोर के शेष चारों अंगुलियों के छोरों से भिन्न होने पर यह निश्चित समझना चाहिए कि अग्रभाग के गुण ही शनि की अंगुली में होंगे। अन्य अंगुलियों में भी अग्रभागों के गुणों के अनुसार ही गुण होंगे। सामान्यतः नुकीली अंगुलियां शुभ संयोग की सूचक होती हैं, परन्तु केवल शनि की अंगुली के छोर का नुकीला होना तथा शेष चारों अंगुलियों के छोरों का चमचाकार अथवा वर्गाकार होना सन्तुलन-चक्र को दुर्बल बना देता है। शनि की अंगुली के अग्रभाग के समान सभी अंगुलियों के अग्रभागों का नुकीलापन सन्तुलन को बनाये रखने वाला होगा। शनि की अंगुली के छोर के पैनेपन अथवा नुकीलेपन के अनुपात में ही व्यक्ति आदर्शवादी, अन्धविश्वासी, स्वप्नों, शकुनों और दूसरों की ऊलजुलूल बातों को बिना सोचे विचार किये सत्य मान लेने वाला होता है।

प्रथम पर्व के लम्बा और नोकदार होने का निश्चित अर्थ है—व्यक्ति के सन्तुलन-चक्र के सशक्त न होने के कारण उसके चरित्र का अनिश्चित होना (रेखाचित्र 100)।
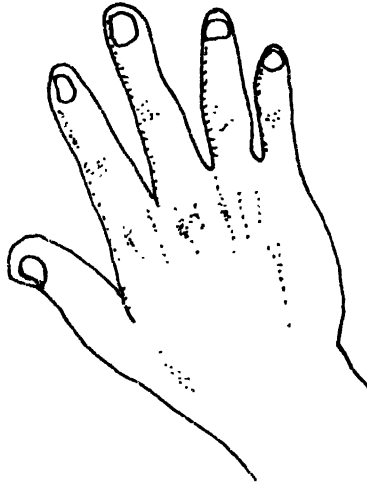
रेखाचित्र-100

अंगुली का वर्गाकार छोर व्यक्ति को व्यावहारिक सूझ-बूझ वाला, शान्तचित्त, धीर-गम्भीर और अन्धविश्वासों से प्रभावित न होने का सूचक है। द्वितीय पर्व का लम्बापन और छोर का नुकीलापन व्यक्ति की प्रत्येक गतिविधि में आदर्श को महत्त्व

देने की प्रवृत्ति का संकेत नहीं देता, अपितु यह स्थिति प्रथम और तृतीय पर्वों को प्रभावित करने वाली भी होती है। पर्वों का अधिक लम्बापन और छोरों का वर्गाकार रूप व्यक्ति को वैज्ञानिक—कृषि, भौतिकी, रसायन, चिकित्सा तथा गणित—व्यवसायों में सफल रहने वाला, धन तथा यश कमाने वाला सिद्ध करता है। यह स्थिति—पर्वों की अधिक लम्बाई और छोरों का वर्गाकार रूप—एक ओर प्रथम पर्व के अन्धविश्वास को समाप्त करने वाली और दूसरी ओर तृतीय पर्व की मितव्ययिता को कृपणता के स्तर तक बढ़ाने वाली होती है। पोरों की अधिक लम्बाई के साथ छोरों के चमचाकार होने पर व्यक्ति अत्यधिक बुद्धिमान्, क्रियाशील, सौम्य और मौलिक होने के कारण समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति कृषि, रसायन, गणित आदि जिस किसी क्षेत्र को अपनाता है, उसमें शीर्ष स्थान पर रहता है।

अंगुली के पर्वों की जांच-परख के समय उनमें चमचाकार पर्वों के गुणों का समावेश करने के उपरान्त ही निष्कर्ष निकालना चाहिए। चमचाकार पर्वों की पहचान यह है कि वे अत्यधिक चौड़े होते हैं तथा उनसे अंगुली को पर्याप्त गम्भीरता मिलती है। चमचाकार सन्तुलन सर्वाधिक समर्थ होता है। चमचाकार छोर (रेखाचित्र-100) के साथ शनि के प्रकार के बहुत विकसित होने का अर्थ है—व्यक्ति उदास, खिन्न, चिन्तित, चिड़चिड़ा और परेशान रहने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति के साथ निर्वाह करना सचमुच ही कठिन होता है; क्योंकि वह अपने दुर्गुणों से चमचाकार पर्वों की मौलिकता और क्रियाशीलता को नाकारा बना देता है।

शनि की अविकसित अथवा अधूरी तथा नुकीले छोर वाली अंगुली रखने वाला व्यक्ति अस्थिरचित्त तथा आसानी से दूसरों के बहकावे में आ जाने वाला होता है (रेखाचित्र-101क-ख); क्योंकि इस स्थिति में सन्तुलन-चक्र होता ही नहीं है, इसीलिए अच्छा अंगूठा भी व्यक्ति की कोई सहायता नहीं कर पाता। वह परले दर्जे का उजड्ड होने के साथ इस प्रकार अस्थिरचित्त व डांवांडोल होता है कि कोई उस पर विश्वास ही नहीं करता।

गांठदार अंगुलियां शनि के गुणों को अधिक स्पष्ट और सुनिश्चित करने वाली होने के कारण व्यक्ति के तर्कशील और विश्लेषक होने की सूचक हैं। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक स्थिति का तर्क की कसौटी पर विश्लेषण करने वाला होता है। वह कार्य करने में शिथिल अवश्य होता है, परन्तु शंकाशील होने के कारण प्रत्येक स्थिति के प्रति सतर्क रहता है। शनिप्रधान गठीली अंगुलियों वाला व्यक्ति बुद्धिमान् तथा भावनाओं के प्रवाह में न बह जाने वाला होने के कारण एक उन्नत और सफल न्यायाधीश प्रमाणित होता है।

गठीली अंगुलियों के नुकीले छोर जहां प्रचण्डता को घटा देते हैं और वर्गाकार छोर उन्हें व्यावहारिकता प्रदान करते हैं, वहां चमचाकार छोर उन्हें सक्रिय और
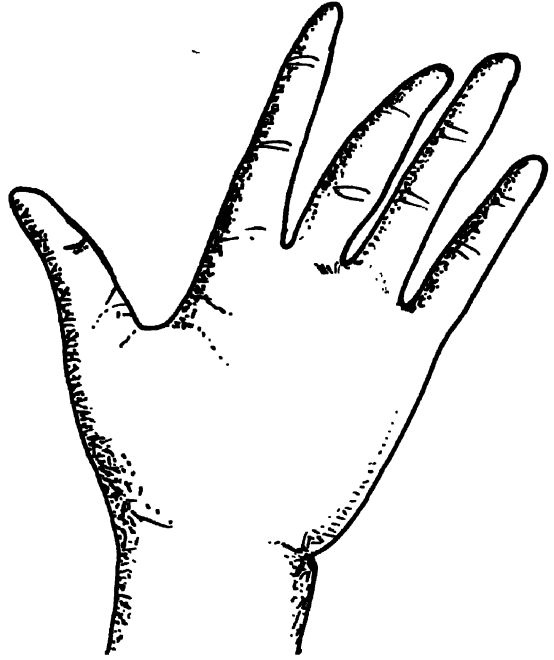
रेखाचित्र-101क व 101ख
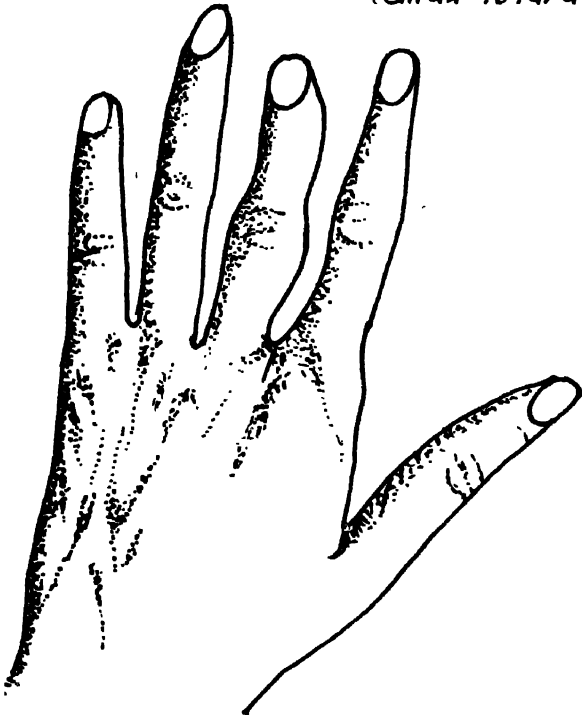
मौलिक बनाते हैं। शनिप्रधान गंठीली अंगुलियों वाले व्यक्तियों में उपर्युक्त सभी संयोजन—छोरों का नुकीला, वर्गाकार तथा चमचाकार होना—अकसर ही देखने को मिलते हैं। इनमें से किसी भी संयोजन वाला व्यक्ति गम्भीर प्रकृति का और वास्तविक जीवन जीने वाला होता है।

शनिप्रधान व्यक्ति की अंगुलियों का चिकना होना उसके भावुक, सौन्दर्योपासक और ललित कलाओं में रुचि रखने वाला होने का सूचक है। चिकनी अंगुलियों के छोरों का नुकीलापन तो इस तथ्य की पुष्टि करने वाला होता है। चिकनी अंगुलियों वाला शनिप्रधान व्यक्ति सचमुच भाग्य का धनी और सुख-सुविधाओं से सम्पन्न आनन्दमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है। वह जीवन में कभी निराशा और असफलता का मुंह नहीं देखता। सुखी और निश्चिन्त जीवन जीने वाला होने के कारण वह तन्त्र-मन्त्र में रुचि लेने लगता है और क्रमशः अन्धविश्वासी बन जाता है।

लम्बी अंगुलियों वाला शनिप्रधान व्यक्ति साधारण-से-साधारण बात की भी तह तक जाने वाला होता है। लम्बी अंगुलियों के पहले पर्व का लम्बा होना व्यक्ति को रहस्यवादी और अन्धविश्वासी बनाने वाला होता है। द्वितीय पर्व का लम्बा होना व्यक्ति को वैज्ञानिक विषयों—विशेषतः कृषि के क्षेत्र एवं अनुसन्धान—में विशेष रुचि रखने वाला होने का सूचक होता है।

शनिप्रधान व्यक्ति की छोटी अंगुलियों की सामान्य विशेषता—शीघ्र सोचने-समझने की शक्ति—व्यक्ति में सहज रूप से आ जाती है। छोटी अंगुलियों के नुकीले, वर्गाकार और चमचाकार छोर व्यक्ति के क्रमशः भावुक, व्यावहारिक और अत्यधिक उतावला होने के सूचक हैं। छोटी अंगुलियों वाला शनिप्रधान व्यक्ति वेश-भूषा के प्रति विशेष सतर्क रहने वाला नहीं होता, परन्तु इससे उसके व्यक्तित्व के आकर्षण में कोई अन्तर नहीं पड़ता और लोग उसके सम्पर्क में आने में संकोच नहीं करते।

शनिप्रधान व्यक्ति की लम्बी अंगुलियां उसे साफ़-सुथरा रहने और उत्तम वेश-भूषा को धारण करने के प्रति अत्यन्त सतर्क तो बनाती हैं, परन्तु वह अपनी शंकालु और सन्देहशील प्रवृत्ति—सभी लोगों पर सन्देह करना, किसी पर विश्वास न करना—के कारण मित्र नहीं बना पाता। ऐसे व्यक्ति के अंगूठे से उसके विवेक और इच्छाशक्ति की जानकारी मिलती है। छोटा अंगूठा चरित्र की दुर्बलता और स्वभाव की अस्थिरता का तथा बड़ा अंगूठा संकल्पशक्ति और गम्भीरता का द्योतक होता है।

अंगूठे की परख कर व्यक्ति के शनिप्रधान गुणों के साथ उसके सम्बन्ध को समझना सरल हो जाता है। संकल्पशक्ति की मात्रा की जांच के लिए इच्छाशक्ति वाले पर्व की लम्बाई के आधार पर उसके स्वरूप को देखना चाहिए। इसी प्रकार

सूझ-बूझ की मात्रा, अर्थात् द्वितीय पर्व की लम्बाई और प्रकृति को जानने के लिए द्वितीय पर्व की बनावट को देखना चाहिए। पर्वों की तुलनात्मक लम्बाई से इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति के सन्तुलित होने अथवा न होने की जानकारी लेनी चाहिए। इन सबसे शनि के गुणों को आगे बढ़ाने वाली शक्ति की सीमा और मात्रा को जाना जा सकेगा।

नोकदार और पैने अंगूठे जहां शक्ति को क्षीण करने वाले होते हैं, वहां चमचाकार तथा वर्गाकार अंगूठे शक्ति में अत्यधिक वृद्धि करने वाले होते हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि पर्वत-प्रकार की उत्कृष्टता-निकृष्टता की तथा अंगुली के मार्गदर्शक लोक की परख आवश्यक होती है। शनिप्रधान व्यक्ति के लोक की परख के उपरान्त इस निष्कर्ष पर पहुंचना सम्भव होता है कि उसकी अंगुली का कौन-सा पर्व—गौण अथवा द्वितीय—उसे सहायता पहुंचाने वाला होगा।

शनिप्रधान व्यक्ति इतना अधिक आवेगशील होता है कि अपनी समस्याओं का समाधान न मिलने पर आत्महत्या तक का मार्ग अपना सकता है। उदास, कुण्ठित, खिन्न और चिन्तित रहने वाला शनिप्रधान व्यक्ति निराशा और विफलता से खीझकर केवल मृत्यु को ही मुक्ति का मार्ग मानने लगता है। हां, शनि पर्बत के अत्यधिक विकसित न होने पर शनिप्रधान व्यक्ति के इस प्रकार के चिन्तन पर कुछ अंकुश अवश्य लग जाता है। शनिप्रधान व्यक्ति सामान्यत: अधीर और दुर्बल चरित्र का होने के कारण सदैव अपनी जीवनलीला को समाप्त करने की ही सोचता रहता है; क्योंकि उसे इसी में अपने दु:खों का अन्त दिखाई देता है।

व्यक्ति के पर्वत-प्रकारों और अपराध-विज्ञान की पुस्तकों का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष सामने आया है कि प्राय: शनि पर्वत और बुध पर्वत से सम्बद्ध व्यक्ति ही अपराधी मनोवृत्ति के होते हैं। इन दोनों पर्वत प्रकारों वाले व्यक्ति संसार से रूठे रहने वाले और लोगों से घृणा करने वाले तथा सबसे कटकर अलग-थलग रहने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति दूसरों के अधिकारों—धन, सम्पत्ति और जीवन—को छीनने तथा अवैध कार्य करने वाले होने के कारण अपना जीवन जेलों में बिताने को विवश होते हैं, परन्तु प्रयत्न करने पर इन अपराधियों को सुधारा अवश्य जा सकता है।

शनि और बुध पर्वत प्रकारों के व्यक्ति पेशेवर अपराधी, अर्थात् अपराध को ही अपनी रोटी-रोज़ी का साधन बनाने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने मलिन अन्त:करण के कारण कुछ अच्छा सोच ही नहीं सकते। वे तो सदैव अपराध करने के अवसर ढूंढ़ते रहते हैं। उनका हृदय परिवर्तन करना बड़ा ही कठिन कार्य होता है; क्योंकि वे सुधरने का ढोंग तो करते हैं, परन्तु दूसरों को सदैव धोखा देने में ही अपनी कुशलता और सफलता मानते हैं।

निस्सन्देह शनिप्रधान व्यक्ति अधिकांशत: पित्त-दोषग्रस्त और अपराधी मनोवृत्ति के होते हैं; परन्तु नियम के साथ अपवाद को यहां भी नाकारा नहीं जा सकता। शनिप्रधान व्यक्ति उच्चपदस्थ कतिपय कुलीन, सच्चरित्र, विवेकशील और लब्धप्रतिष्ठ भी पाये गये हैं। इब्राहम लिंकन के सम्बन्ध में भी कहा जाता है कि वह शनिप्रधान थे। उनकी श्रेष्ठता, साधुता और लोकमान्यता सर्वजन विदित है। *

21

सूर्य पर्वत

सूर्य-प्रकार तृतीय पर्वत-प्रकार है, जिसकी जानकारी सूर्य पर्वत और सूर्य की अंगुली की स्थिति से मिलती है। सूर्य पर्वतप्रधान व्यक्ति सुन्दर, आकर्षक, बातचीत में ही नहीं, व्यवहार में भी कुशल, परन्तु अंशतः धनलोलुप और कठोर प्रकृति का अवश्य होता है, परन्तु अपराधी वृत्ति का कदापि नहीं होता। वह लक्ष्य-प्राप्ति के लिए ग़लत मार्ग कभी नहीं पकड़ता।

पिछले अध्याय में इस तथ्य का उल्लेख किया जा चुका है कि शनि और बुध प्रकार के व्यक्ति जहां पित्त-दोष से ग्रस्त होते हैं, वहां वे भ्रष्ट साधनों का सहारा लेने वाले दूषित मनोवृत्ति के भी होते हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि अन्य पर्वत-प्रकारों के व्यक्ति अशिक्षित, असभ्य, अशिष्ट, अपरिष्कृत तथा घटिया तो हो सकते हैं, परन्तु वे अपराधी मनोवृत्ति के कदापि नहीं होते। ऐसे व्यक्तियों से यदि क़भी कोई अपराध हो भी जाता है, तो इसे एक संयोग अथवा दुर्घटना ही समझना चाहिए, न कि उनकी मूल मनोवृत्ति।

सूर्य पर्वत को शक्तिशाली बनाने वाले तत्त्व हैं—पृथक्-पृथक् अथवा मिले-जुले चिह्नों का समूह, नक्षत्र, त्रिकोण, वृत्त, एकमात्र खड़ी रेखा तथा वर्ग अथवा त्रिशूल। सूर्य पर्वतप्रधान व्यक्ति के चरित्र तथा स्वभावगत दोषों के सूचक लक्षण हैं—आड़ी-तिरछी रेखाएं, जाल, गुणनचिह्न तथा द्वीप अथवा बिन्दु। किन दोषों का सम्बन्ध किन लक्षणों से है—इसकी जानकारी नाख़ूनों के रंग आदि से मिलती है (रेखाचित्र-102)।

सूर्य पर्वतप्रधान व्यक्ति के कुछ लक्षणों का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। सामान्य रूप से वह स्वस्थ, सुन्दर, आकर्षक, शक्तिशाली, प्रसन्नचित्त और मिलनसार होता है। उसे एक सहज व्यक्ति का आदर्श रूप माना जा सकता है। वह बातचीत में निपुण, व्यवहारकुशल, मिलनसार, सौन्दर्य-प्रेमी तथा कलात्मक रुचि का व्यक्ति होता है। उसके प्रत्येक कार्य-व्यवहार, चेष्टा और गतिविधि में उसकी बुद्धिमत्ता और सूझ-बूझ का परिचय मिलता है। वस्तुतः वह विलक्षण प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति

होता है। शनि का साथ होने पर भी वह शनि के लक्षणों—उदासी, विषाद तथा निराशा आदि—से आक्रान्त नहीं होता। वस्तुत: वह जीवन के श्याम पक्ष की उपेक्षा करने वाला और श्वेत पक्ष को महत्त्व देने वाला व आशावादी होता है। बात यह है कि जिस प्रकार शनि उत्साह के अतिरेक पर नियन्त्रण लगा देता है, उसी प्रकार सूर्य निराशा और उदासी को कोसों दूर भगा देता है।
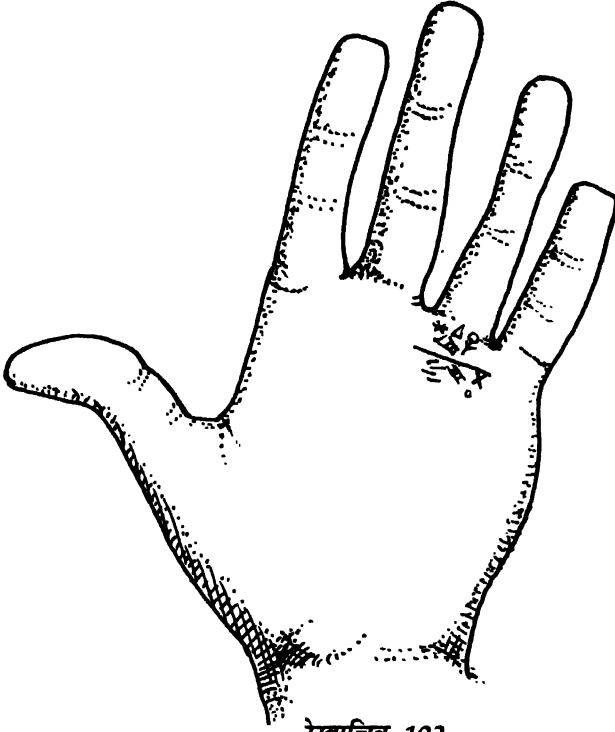
रेखाचित्र-102

यथार्थ जीवन में कार्य और व्यवसाय-धन्धे का पर्याप्त महत्त्व है, परन्तु स्वस्थ और उत्साह-सम्पन्न बने रहने के लिए खेल-कूद और मनोरंजन का भी अपना महत्त्व है। व्यक्ति का निरन्तर गम्भीर वातावरण में रहना भी वाञ्छनीय नहीं होता। थके-मांदे व्यक्ति के लिए हास्य-विनोद एक रसायन सिद्ध होता है, जो उसकी शारीरिक और मानसिक थकावट को दूर करके उसमें नवस्फूर्ति का सञ्चार करने के रूप में उसे कार्य करने में योग्य व समर्थ बनाता है। बृहस्पति व्यक्ति को उन्नति और समृद्धि की ओर ले जाने वाला है। अत: बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति जीवन को उन्नत करने की योजनाओं को बनाने और उन्हें कार्यरूप देने में ही सदैव लगा रहता है। शनि व्यक्ति को संयम, सन्तुलन, विवेक और गम्भीरता प्रदान करता है और सूर्य जीवन को सचमुच जीने योग्य बनाने के लिए व्यक्ति को उत्साहवर्द्धक एवं उल्लास

से ओत-प्रोत परिवेश जुटाता है, जिससे सूर्यप्रधान व्यक्ति कला और प्रतिभा के क्षेत्र में उभर कर सामने आता है।

सूर्य पर्वतप्रधान सभी व्यक्ति उन्नत कलाकार अथवा अभिनेता भले न बन पायें, परन्तु वे सभी निश्चित रूप से सौन्दर्योपासक होते हैं। वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—घर, बाहर, कार्यालय, वेशभूषा तथा विहार-स्थल आदि—में सुन्दरता, सुरुचि और व्यवस्था को रखने और देखने वाले होते हैं। वे अपनी सहज आशावादी प्रकृति के कारण न केवल स्वयं जीवन का आनन्द उठाते हैं, अपितु दूसरों को भी आनन्दित होने के अवसर जुटाते हैं।

यहां यह उल्लेखनीय है कि सौन्दर्य-प्रेम और सृजन-क्षमता दो भिन्न तत्त्व हैं और दोनों में पर्याप्त अन्तर है। सौन्दर्योपासकों में सृजन-शक्ति का होना आवश्यक नहीं। अत: खान-पान, रहन-सहन और वेशभूषा में कलात्मकता और सुरुचि को अपनाने वालों को कलाकार समझ लेना एक भ्रम को पालना है। सूर्यप्रधान व्यक्ति कलाप्रेमी एवं कलाप्रशंसक अवश्य होते हैं, परन्तु ऐसे व्यक्ति सूर्य पर्वत के अत्यन्त विकसित होने पर ही कलाकार बन सकते हैं। इस प्रकार के कलाकारों की पहचान के चिह्न हैं—1. शीर्ष-बिन्दु का केन्द्र में होना, 2-3. अंगुली का और उसके प्रथम पर्व का लम्बा होना तथा 4. सूर्य रेखा का (रेखाचित्र-103) गुणनचिह्न और द्वीप से रहित एवं उत्तम होना (रेखाचित्र-104)।

सूर्यप्रधान व्यक्ति व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने वाला होता है। जीवन के सभी अन्य क्षेत्रों के समान व्यवसाय में भी वह अपने सौन्दर्य-प्रेम का परिचय देने वाला होता है। वस्तुत: शालीनता और सज्जनता उसकी जन्मजात विशेषताएं होती हैं और इसीलिए उसके सम्पर्क में आने वाले उसके भक्त के स्तर पर प्रशंसक बन जाते हैं। समय, परिस्थितियों और लोगों की आशाओं के अनुरूप अपने आपको ढालने तथा लोगों की आकांक्षाओं पर खरा उतरने में उसे विलक्षण क्षमता एवं सफलता प्राप्त रहती है। वह अपनी रुचि के व्यवसाय को चुनता है और उससे अपेक्षित धन कमा लेता है।

विकसित सूर्य पर्वतप्रधान व्यक्ति की पहचान के लक्षणों का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। ये लक्षण इस प्रकार से हैं—हाथ में सूर्य पर्वत उन्नत होता है, शीर्ष-बिन्दु केन्द्र में होता है, रेखाएं गहरी कटी हुई होने पर भी खड़ी हुई होती हैं जो व्यक्ति की रचनात्मक शक्ति की अपेक्षा उसकी प्रतिभा की विविधता का संकेत देती हैं।

हम सूर्यप्रधान व्यक्तियों के दो वर्गों—1. सृजनात्मक शक्ति-सम्पन्न और 2. सौन्दर्य-प्रेमी एवं कला की उपासना करने वाला—का ऊपर उल्लेख कर आये हैं। यहां पुन: इस तथ्य पर बल दिया जा रहा है कि इन दोनों में अन्तर को समझना और

रेखाचित्र-103 व 104
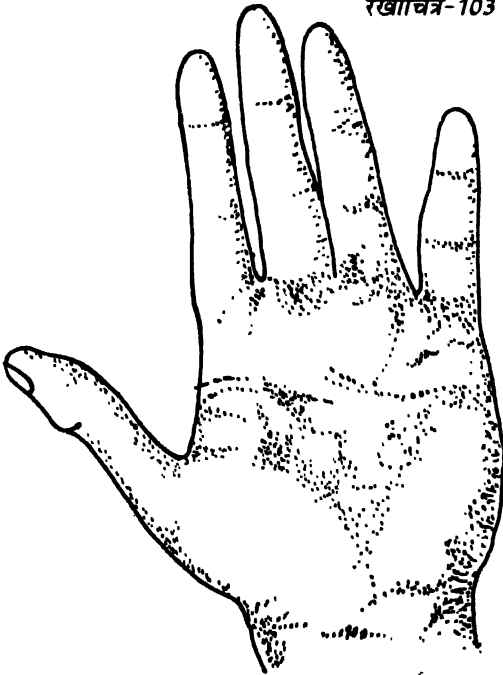
इन दोनों की पृथक् पहचान करना अत्यन्त आवश्यक है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति सुन्दर, आकर्षक, मध्यम ऊंचाई और मध्यम स्थूलता लिये रहता है। न तो वह बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति के समान मांसल (मोटा) और न ही शनिप्रधान व्यक्ति के समान पतला व लम्बा होता है। सूर्यप्रधान व्यक्ति का शरीर व्यायाम करने वाले व्यक्ति के शरीर के समान ही गठा व कसा हुआ, परन्तु हलका और लचीला होता है। उसके शरीर की रेखाएं गोलाई और लालिमा लिये रहती हैं। उसके शरीर का रंग लाल-गोरा, त्वचा स्निग्ध, कोमल और सुदृढ़ तथा कपोल गुलाबी-चमकीले होते हैं। उसका मस्तिष्क ऊंचा न होकर पूरा चौड़ा, बादाम-जैसी बड़ी-बड़ी आंखें, नीला-भूरा रंग लिये रहने वाली और सीधी, सच्ची भावना व्यक्त करने वाली होती हैं। बरौनियां लम्बी तथा ऊपर वाले सिरों पर गोलाई में मुड़ी हुई होती हैं। हृदय में भावों के उमड़ने पर आंखों में कोमलता और दयालुता छलकने लगती है, जो मस्तिष्क की स्फूर्ति और दीप्ति की सूचक होती है। उसके गाल गोल-भरे हुए, नाक सीधी-सुगठित, होंठ न अधिक पतले और न ही अधिक मोटे, चेहरा मोहक-आकर्षक, दांत मोतियों-जैसे सुन्दर-चमकीले और सुदृढ़ तथा मसूड़े स्वस्थ एवं लाल होते हैं। उसकी ठोड़ी न तो भीतर धंसी हुई और न ही बाहर अधिक निकली हुई, अर्थात् सन्तुलित-सुन्दर बनावट की होती है। उसके कान आकार में मध्यम, सुगढ़-सुगठित, गुलाबी और सिर के समीप सटे हुए होते हैं। उसकी ग्रीवा लम्बी, हृष्ट-पुष्ट और आकर्षक होती है। उसकी न तो मांसपेशियां उभरी हुई होती है और न ही टेंटुआ बाहर की ओर निकला हुआ होता है। उसके कन्धे चौड़े, बलिष्ठ और मज़बूत, फेफड़े श्वास लेने पर भली प्रकार फैलने-सिकुड़ने के रूप में रक्त को शुद्ध करने वाले, छाती चौड़ी-विशाल और भरी हुई तथा स्वर मधुर एवं कर्णप्रिय होता है। उसके इन ऊपरी अंगों के समान ही निचले अंग भी पुष्ट, व्यवस्थित तथा सुगढ़ होते हैं। उसका कोई भी अंग भद्दा, कटा-फटा, टेढ़ा-मेढ़ा और बेडौल नहीं होता। उसके पांव न अधिक बड़े होते हैं और न ही अधिक छोटे। पिंडलियां धनुष के आकार में मुड़ी हुई और ऊंची होती हैं, जिससे उसकी चाल में उछाल, चुस्ती और लचीलापन आ जाता है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति की प्रमुख पहचान यह है कि उसका स्वास्थ्य उत्तम और शरीर इस प्रकार सुन्दर-सुगठित होता है कि वह कामदेव का सजीव प्रतिनिधि एवं आकर्षण का केन्द्र होता है। बौद्धिक दृष्टि से भी वह अत्यन्त उन्नत और विकसित होता है। वह उच्च कोटि का विद्वान्, महान् विचारक, ललित कलाओं में गहरी रुचि रखने वाला तथा सौन्दर्योपासक होता है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति अपनी ऊंची अन्तर्दृष्टि के कारण अन्य लोगों की अपेक्षा शीघ्र ही किसी भी विषय की गहराई तक पहुंच जाता है। कला और साहित्य के क्षेत्र

में उसकी पैठ आश्चर्यचकित करने वाली होती है। सूर्यप्रधान व्यक्ति शनिप्रधान व्यक्ति-जैसा श्रम और अध्ययन न करने पर भी दूसरों पर अपनी योग्यता की गहरी छाप छोड़ने वाला होता है। लोग उसके ज्ञान और सामर्थ्य पर आश्चर्यचकित हुए बिना रह नहीं पाते। वस्तुतः असाधारण प्रतिभा का धनी ऐसा व्यक्ति किसी भी नयी अवधारणा को इस सहजता से आत्मसात् कर लेता है कि दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती है। पुराने विषयों को नये रूप में प्रस्तुत करने में उसे विशेष निपुणता प्राप्त होती है। वह जहां आविष्कारक होता है, वहां पुराने को नये रूप में प्रस्तुत करने के कारण अनुकरणशील भी कहलाता है। कभी-कभी तो वह अपनी स्थिति से कहीं अधिक ऊंचा मान लिया जाता है। वह अपने परिचितों, मित्रों तथा सम्पर्क में आने वालों को प्रभावित-सम्मोहित कर उनका आदर-सम्मान प्राप्त कर लेता है और उनके आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। वह किसी भी क्षेत्र—साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, न्याय, विधि, चिकित्सा तथा यान्त्रिकी आदि—के विशेषज्ञों के बीच बैठा उन्हें अपने ज्ञान से चमत्कृत एवं हतप्रभ कर सकता है। प्रत्येक विषय में संयत, सन्तुलित एवं सम्बद्ध ढंग से बोलने की उसकी कला सचमुच आश्चर्यचकित करने वाली होती है। स्थान, समय और परिस्थिति के अनुरूप व्यवहार करने की कुशलता के कारण उसे सचमुच ही सर्वत्र एक सफल व्यक्ति के रूप में सम्मान प्राप्त होता है। सूर्यप्रधान व्यक्ति को 'एक चमत्कारी महापुरुष' कहना सर्वथा उचित ही है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति वरदान-प्राप्त एक ऐसी अन्तर्दृष्टि लिये रहता है, जिसमें विद्युत्-जैसी तीव्रता, क्षिप्रता, प्रचण्डता और चमक रहती है। यही कारण है कि वह अध्ययन किये बिना ही बहुत कुछ ज्ञान सीख लेता है। उसके विशिष्ट गुण उसे लोकप्रिय बनाते हैं और उसके इन्हीं गुणों के कारण लोग उसके सम्पर्क में आने के लिये उत्सुक एवं प्रयत्नशील रहते हैं। उसकी उपस्थिति किसी भी सभा, सम्मेलन और गोष्ठी की शोभा बढ़ा देती है। वह केवल खेल के मैदान का ही हीरो नहीं होता, अपितु शेयर बाज़ार और जुआघर-जैसे जोखिम-भरे स्थानों पर भी अपनी बहुमुखी प्रतिभा का सर्वोत्कृष्ट परिचय देने वाला होता है। उसके जीवन-रूपी शब्दकोश में पराजय, असफलता, निराशा और पश्चात्ताप-जैसे शब्द ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलते। वह घर, कार्यक्षेत्र, पहनावे आदि में ही नहीं, अपितु प्रकृति और स्त्रियों में भी सौन्दर्य को देखने और पसन्द करने का आदी होता है। असुन्दरता से तो उसे चिढ़ लगती है।

छोटे नाख़ून वाला सूर्यप्रधान व्यक्ति यदि महान् चित्रकार नहीं बन पाता, तो भी चित्रकला का मर्मज्ञ अवश्य होता है। कला का उपासक होने के साथ वह एक सफल आलोचक भी होता है। वह बढ़िया वस्त्रों, मूल्यवान् आभूषणों, वैभवपूर्ण आवास और सेज को पसन्द करने वाला होता है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति के हाथ की अंगुली के प्रथम पर्व का लम्बा होना उसके

सुसंस्कृत एवं जीवन के उपभोग की प्रत्येक सामग्री के सम्बन्ध में अत्यन्त उच्च रुचि रखने वाला होता है। अंगुली के तृतीय पर्व के सर्वाधिक लम्बा होने का अर्थ है कि व्यक्ति अच्छे स्वभाव का होने पर भी सभी स्थानों पर अपनी रुचि का घटिया प्रदर्शन करने वाला होता है। यदि उसका स्वास्थ्य अच्छा है, तो वह शुद्ध अन्त:करण से मानव-जाति की सेवा करने वाला, दूसरे लोगों के प्रति दया, ममता और सहानुभूति रखने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति एक सच्चा और आदर्श मित्र तो होता है, परन्तु उसके स्वभाव की अस्थिरता के कारण उस पर निर्भर नहीं किया जा सकता। वह अपनी विलक्षण प्रतिभा से अकारण ईर्ष्या रखने वाले लोगों को शत्रु भी बना लेता है। उसकी प्रतिभा के सामने न टिक पाने वाले उसके कट्टर शत्रु बन जाते हैं और उससे प्रतिशोध लेने के अवसर की ताक में रहते हैं।

सूर्यप्रधान व्यक्ति की सोच स्पष्ट, निर्भ्रान्त, तर्कसम्मत और सुलझी हुई होती है। वह सभी विषयों—धर्म, समाज, व्यवसाय, कला, साहित्य और निजी सम्बन्ध आदि—को तर्क की कसौटी पर कसता है, अपने भावों और विचारों को सशक्त एवं प्रभावशाली अभिव्यक्ति देने में उसे विशेष कौशल प्राप्त रहता है। उसके लिए सफलता एक सामान्य स्थिति होती है। परिस्थितियां उसके लिए इस प्रकार अनुकूल बन जाती हैं, मानो वे उसी के लिए बनी हों। उसके मित्र एवं परिचित भी उसकी उन्नति में एक प्रकार की प्रसन्नता अनुभव करते हैं। वे उसे उन्नति का सच्चा अधिकारी मानकर उसकी सहायता करने में अपनी कृतार्थता—प्रकृति के कार्य में सहयोग देना—समझते हैं।

सूर्यप्रधान व्यक्ति उच्च पदों पर प्रतिष्ठित होने वाला तथा धनोपार्जन करने वाला होता है। कृपणता अथवा मितव्ययिता में विश्वास न रखने के कारण वह संकट के लिए कुछ बचाकर रखने वाला नहीं होता, उसकी रुचियां ऊंची और व्यय-साध्य होती हैं, परन्तु वह अपनी प्रतिभा से इतना अधिक धन कमाता है कि उसे न तो कभी अभाव का सामना करना पड़ता है और न ही कभी अपनी रुचियों को अधूरा छोड़ना पड़ता है। हज़ारों-लाखों में खेलने वाला सूर्यप्रधान व्यक्ति सैकड़ों के लेन-देन को तो कुछ महत्त्व ही नहीं देता।

सूर्यप्रधान व्यक्ति अपने मनोभावों को वाणी देने में कभी किसी प्रकार का भय अथवा संकोच अनुभव नहीं करता। वस्तुत: दूसरों के सामने अपनी बात कहने में उसे एक प्रकार से हर्ष का अनुभव होता है। वह धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति होने के कारण धर्म को गौरव तो देता है, परन्तु न कट्टरपन्थी, न शंकालु और न ही अन्धविश्वासी होता है, फिर भी वह श्रद्धा और विश्वास का पल्ला पकड़े रहने वाला होता है। वह मन्त्र-तन्त्र आदि में भी निपुण एवं चमत्कारों का प्रदर्शन करने वाला होता है। वह सदैव प्रसन्नचित्त, उत्साह एवं स्फूर्ति से ओत-प्रोत तथा युवक के समान आशावादी

होता है। वह इस प्रकार संयत और सन्तुलित स्वभाव का होता है कि किसी के द्वारा अपराध अथवा अनौचित्य हो जाने पर न तो क्रोध करता है और न ही किसी घटना को अपने मस्तिष्क में सुरक्षित रखता है। वह अपने शिष्ट और मधुर व्यवहार से किसी भी व्यक्ति—अपने विरोधी तथा अपने से ईर्ष्या-द्वेष रखने वाले—को एक क्षण में अपना मित्र बना लेता है। इस प्रकार दूसरों के हृदय को जीतने की कला में भी वह पारंगत होता है, परन्तु अपने स्वभाव की अस्थिरता के कारण किसी का भी पक्का मित्र बनकर नहीं रह पाता। अत: दूसरे लोग भी उसके स्थायी मित्र नहीं बन पाते।

सूर्यप्रधान व्यक्ति कामोपभोग के विषय में भी सुरुचि-सम्पन्न होते हैं। वे कामुक और लम्पट न होकर सच्चे प्रेमी और सहज भाव से सहवास का सुख भोगने वाले होते हैं। वे रात्रि भोजन के उपरान्त संगीत सुनना पसन्द करने वाले, खाने की मेज़ और सामग्री को सुसज्जित तथा उपस्थित लोगों को उत्तम वेशभूषा में देखने की प्रवृत्ति वाले होते हैं। इन्हें सुन्दर, सुसज्जित तथा कलात्मक रुचि वाली स्त्रियां अत्यन्त प्रिय लगती हैं। वे सहसा किसी दुराचार अथवा दुर्व्यसन के शिकार तो नहीं होते, परन्तु मनभावन परिवेश में प्राप्त मनोरंजन अथवा मौज-मस्ती के अवसर को गंवाते भी नहीं हैं। इन्हें नये स्थानों की यात्रा बड़ी अच्छी लगती है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति ईमानदार, अपने दोषों, त्रुटियों तथा न्यूनताओं को स्वीकार करने वाला, बड़ी आसानी से धन कमाने वाला होने से चोरी, झूठ तथा छल-कपट से दूर रहने वाला तथा अपने श्रम से यश-प्रसिद्धि पाने की इच्छा रखने वाला होता है। सूर्यप्रधान व्यक्ति सर्वगुणसम्पन्न होने से सम्पूर्ण विश्व पर शासन करने की अद्‌भुत क्षमता रखता है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति अपने वैवाहिक जीवन से असन्तुष्ट रहता है। वह न तो विवाह से विमुख होता है और न ही शनिप्रधान व्यक्ति के समान मानव-जाति से घृणा करता है, परन्तु अपने ऊंचे आदर्शों के कारण अपने जीवनसाथी से बड़ी-बड़ी अपेक्षाएं रखता है, जिनके न मिलने पर पनपे असन्तोष से ग्रस्त हो जाता है। कभी-कभी अपने जीवनसाथी के चुनाव में भूल भी कर बैठता है। साधारण स्त्री को जीवनसंगिनी बनाकर वह अपने वैवाहिक जीवन को आप ही असफल बना लेता है। सूर्यप्रधान व्यक्तियों की यह सामान्य नियति है। अत: उनके हाथ का अध्ययन करते समय इस तथ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सूर्यप्रधान व्यक्ति की अंगुली टेढ़ी और उसका तृतीय पर्व मोटा, प्रथम पर्व छोटा तथा अंगुली के नाख़ून भी छोटे हों, तो उसके वैवाहिक जीवन को निश्चित रूप से दुखी समझना चाहिए। कठोर हाथ और दुर्बल मानसिकता-जैसे लक्षण भी वैवाहिक जीवन के दुखी होने के सूचक हैं।

कुछ सूर्यप्रधान'व्यक्ति साधारण गुणों वाले भी होते हैं। उनके बाल कड़े-घुंघराले, चेहरा लाल, हलका पीला, फीकापन लिये हुए तथा आंखें तिरछी तथा प्रतिभा का अभाव अथवा सामान्य रूप होता है। वह दम्भी, अहंकारी, ढोंगी, प्रदर्शनप्रिय, अपने को योग्य एवं बहुत बड़ा बुद्धिमान समझने वाला, अदूरदर्शी, अपव्ययी, दरिद्र, नाम का भूखा, इच्छापूर्ति के लिए ग़लत तरीक़े अपनाने वाला, प्रतिशोध लेने वाला तथा असन्तुलित होता है। उसे यह भ्रम होता है कि लोग उसकी प्रतिभा से जलते हैं और उनकी अड़ंगेबाज़ी से ही उसे जीवन में अपेक्षित सफलता नहीं मिल पा रही। इस प्रकार ऐसे कुछ सूर्यप्रधान व्यक्ति जीवन में असफल, असन्तुष्ट और निराश होने के कारण विशेष परिस्थितियों में अपराध करने तक से नहीं चूकते।

इस प्रकार सूर्यप्रधान व्यक्तियों के दो रूप तो मिलते ही हैं। कभी-कभी इन दो चरम सीमाओं के मध्यवर्ती कुछ रूप भी देखने को मिल जाते हैं, परन्तु उनकी संख्या स्वल्प एवं सीमित होती है। वस्तुत: कहीं व्यक्ति स्वयं अपने को परिस्थितियों के अनुरूप ढालता है, तो कहीं परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाता है और इसके विपरीत कहीं परिस्थितियां व्यक्ति को परिवर्तन के लिए विवश-बाध्य कर देती हैं। इन सब तथ्यों के सन्दर्भ में ही सूर्यप्रधान व्यक्ति के स्वभाव और चरित्र की परीक्षा करने पर वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त करना कठिन नहीं होता।

सूर्यप्रधान व्यक्ति वैसे तो स्वस्थ रहने वाला होता है, परन्तु वह पित्त-विकार से मुक्त नहीं होता, फिर भी उसके स्वभाव में निराशा और चिड़चिड़ेपन के लिए कोई स्थान नहीं होता। वैद्यक के अनुसार भी पित्त-दोष का व्यक्ति के जीवन, स्वभाव अथवा चरित्र पर किसी प्रकार का कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता। पित्त-दोष से युक्त व्यक्ति सामान्यतया स्वस्थ-प्रसन्न ही रहता है। ऐसे व्यक्ति के चरित्र में कभी विकार आ जाने पर भी वह अपराध वृत्ति को नहीं अपनाता।

सूर्यप्रधान व्यक्ति आवश्यकता से अधिक न खाने की प्रवृत्ति का होने के कारण कभी अजीर्णता का शिकार नहीं होता। उसका पेट ठीक रहता है, परन्तु उसके हृदय की गति अनियमित रहती है। उसके स्वास्थ्य की समस्या ही हृदय रोग है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति के स्वास्थ्य के अन्तर्गत हृदय रोग की जानकारी और उसके निर्णय के लिए उसके नाख़ूनों की जांच करनी चाहिए। नाख़ूनों का नीलापन, हृदय रेखा पर द्वीप, आड़ी-तिरछी रेखाएं, कटाव, ज़ंजीरें तथा नक्षत्र अथवा अन्यान्य चिह्नों के अतिरिक्त हाथ पर जीवन रेखा की दुर्बलता और पर्वत पर जाल-जैसे किसी भी संकेत को स्वास्थ्य में विकार (गड़बड़ी) का लक्षण समझना चाहिए। पर्वत को काटती आड़ी-तिरछी रेखाएं जाल से भी कहीं अधिक अशुभ होती हैं। इन सबसे

व्यक्ति के हृदय रोग का पता लगाया जा सकता है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति की नेत्र-दृष्टि दुर्बल होती है। उसके हृदय रोगी होने की आशंका होने पर पर्वत के नीचे की मस्तक रेखा की जांच करनी चाहिए कि वहां कोई छोटे बिन्दु अथवा छोटे द्वीप का चिह्न तो नहीं। इससे नेत्र-विकार को जाना जा सकता है। वैसे तो वह लू और अन्यान्य ज्वर से ग्रस्त भी हो सकता है परन्तु जीवन रेखा पर किसी बड़े ख़तरे का संकेत न मिलने पर इस सबका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। फिर भी उसके व्यक्तित्व का सही और यथासम्भव पूर्ण विश्लेषण करने के लिए उसके स्वास्थ्य की यथार्थ स्थिति, स्वास्थ्य के दोष-विकार आदि का ज्ञान आवश्यक होता है।

शनि पर्वत की ओर झुका हुआ सूर्य पर्वत अपनी चमक-दमक और अपने हर्ष-उल्लास का कुछ अंश शनि पर्वत को दे देगा और उससे उदासी व गम्भीरता में न्यूनता को ग्रहण करेगा। इसके विपरीत शनि पर्वत का झुकाव सूर्य पर्वत की ओर होने पर सूर्य पर्वत सामान्य से कहीं अधिक निष्ठुर और गम्भीर हो जायेगा। बुध पर्वत की ओर झुका हुआ सूर्य पर्वत अपने सौन्दर्य-प्रेम, कला-साधना और प्रतिभा-विकास का कुछ भाग बुध पर्वत को दे देगा, इसके विपरीत बुध का झुकाव सूर्य पर्वत की ओर होने पर बुध के गुणों—व्यावसायिक चातुर्य और वैज्ञानिक प्रगति आदि—का कुछ भाग सूर्य में आ जायेगा। इस प्रकार प्रत्येक पर्वत प्रकार को और एक पर्वत के दूसरे पर्वत की ओर झुकने पर अपने गुणों का कुछ अंश उसे दे देने के तथ्य की जानकारी हो जाने पर पर्वतों के विस्थापन के सही-सही अर्थ को समझना सरल हो जाता है और इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पर्वत-प्रकारों को समझना अत्यन्त उपयोगी है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति की स्थिति और उसके चारित्रिक गुणों को देख लेने के उपरान्त यह देखना होता है कि व्यक्ति इनसे किस रूप में प्रभावित हुआ है। ऊपर यह लिखा जा चुका है कि दोनों प्रकार—परिष्कृत और साधारण—के व्यक्ति सूर्यप्रधान गुण लिये रहते हैं। इन दोनों का विभाजक तत्त्व त्वचा ही है। त्वचा के रूप-रंग से ही श्रेणी का पता चलता है। उत्तम कोटि की उत्कृष्ट त्वचा और मस्तिष्कलोक के दर्शक प्रथम पर्वत की प्रबलता व्यक्ति के सौन्दर्य-प्रेमी और कलाओं में रुचि रखने वाले होने की सूचक है। इसके विपरीत निकृष्ट त्वचा और प्रभावी निचलाजगत् (तृतीय पर्व) व्यक्ति के तुच्छ-ओछा होने का लक्षण है। ऐसा व्यक्ति एक तो गहरे-भड़कीले रंगों में रुचि रखने वाला और प्रदर्शनप्रिय होता है। मध्यम कोटि की त्वचा मध्यलोक (द्वितीय पर्व) के गुणों का अनुसरण करती है। ऐसा व्यक्ति कुशल व्यवसायी होता है। इस पर्व की घनिष्ठता-अघनिष्ठता से व्यक्ति की कर्मशक्ति की प्रबलता-दुर्बलता का, दूसरे शब्दों में सफलता-असफलता का पता चलता है।

शिथिल हाथ वाला सूर्यप्रधान व्यक्ति एक ओर अति सुसंस्कृत होगा और दूसरी ओर निठल्ला होगा। वह सुन्दर सपने तो देखता है, नयी-नयी योजनाएं भी बनाता है, परन्तु उन योजनाओं को कार्यरूप देने के लिए उद्यम नहीं कर पाता। वह इतना अधिक आलसी होता है कि सदैव दूसरों को उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ना पड़ता है। सूर्य पर्वतप्रधान शिथिल हाथों वाला व्यक्ति इस स्तर तक अव्यावहारिक होता है कि आकर्षक व्यक्तित्व और समर्थ मित्र होने पर भी वह कुछ उल्लेखनीय कर नहीं पाता। ऐसा व्यक्ति किसी को अपना विरोधी अथवा शत्रु बनाने का साहस भी नहीं जुटा पाता।

सूर्यप्रधान व्यक्ति के कोमल हाथ उसके कर्मशील होने के सूचक होते हैं। ऐसा व्यक्ति शिथिल हाथों वाले व्यक्ति के स्तर तक सुसंस्कृत और कलात्मक सुरुचि सम्पन्न तो होता ही है, चाहने पर वह अपनी कर्मशक्ति का विकास भी कर सकता है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति के लचीले हाथ उसके अपनी प्रतिभा से ख़ूब धन कमाने वाला होने के सूचक हैं। कलाकार के रूप में भी वह अत्यन्त व्यावहारिक होगा। वह ऐसे पदार्थ की सृष्टि करेगा कि जिसके लिए ग्राहक का अभाव नहीं होगा। अभिनेता के रूप में भी वह धन और नाम कमाने वाला होगा। लेखक होने पर भी वह न केवल ऊंचा पारिश्रमिक, अपितु प्रसिद्धि भी प्राप्त करेगा। अभिप्राय यह है कि अपने जीवन में विवेक और समझदारी को अपनाने वाला होने के कारण वह जिस भी व्यवसाय को अपनाता है, उसमें सफलता प्राप्त करता है।

सूर्यप्रधान कठोर हाथों वाला व्यक्ति दुर्गुणी, बातूनी तथा असंस्कृत होने के कारण निम्न स्तर का कहलाता है।

हाथों का लचीलापन प्रतिभा के लचीलेपन का सूचक है। इस लचीलेपन के साथ सूर्यप्रधान होने के संकेत के स्पष्ट होने का अर्थ है—व्यक्ति का कुशाग्रबुद्धि और बहुमुखी प्रतिभा का धनी होना। ऐसे व्यक्ति की उड़ान को सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता। वह भावुक, प्रभावित करने वाला, आनन्द-लाभ और दु:ख-सहिष्णु होता है। जीवन में क्रमबद्ध काम करने वाले उच्चकोटि के कलाकार इसी वर्ग के होते हैं। उनकी कलाकृतियों का संख्या की दृष्टि से नहीं, अपितु गुणवत्ता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होती है। ऐसा व्यक्ति मुक्तहस्त से व्यय करने वाला होता है।

हाथ का मध्यम लचीलापन सर्वोत्तम माना जाता है। वस्तुत: शुद्ध सूर्यप्रधान व्यक्ति के लिए किसी अतिरिक्त मानसिक लोच की अपेक्षा ही नहीं रहती। मध्यम लचीले हाथ वाला व्यक्ति स्थिर-सन्तुलित स्वभाव वाला तथा आत्मनिर्भर रहने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति सहसा कल्पनालोक में विचरण नहीं करता। पूर्ण व्यावहारिक होने के कारण वह दोनों—कला और व्यवसाय—क्षेत्रों में एक समान सफल रहता है।

उसके हाथों की कठोरता मस्तिष्क के लोचरहित और प्रतिभा के कुछ अंश के निष्क्रिय हो जाने की सूचक है। ऐसा व्यक्ति अपनी शक्तियों को इधर-उधर बिखरने नहीं देता, वह अपनी सभी क्षमताओं को समेटकर किसी एक निश्चित व्यवसाय में लगा देता है। सूर्यप्रधान गुणों—प्रतिभा आदि—के कम होने पर भी वह अपने धन्धे में सफल रहता है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति का रंग लाल अथवा गुलाबी होना चाहिए। ये दोनों रंग उत्तम स्वास्थ्य के सूचक हैं। गुलाबी रंग व्यक्ति के प्रसन्नचित्त होने का और लाल रंग स्वस्थ रक्त की आपूर्ति का सूचक है। लाल रंग की अधिकता कान्ति को प्रखर तो बनाती है, परन्तु हृदय रोग के ख़तरे का कारण भी बनती है। व्यक्ति के हाथ के नाख़ूनों की तथा हृदय रेखा की जांच से हृदय पर इस रंग के प्रभाव को सुनिश्चित किया जा सकता है।

चेहरे की सफ़ेदी तेज और उत्साह की हीनता की प्रतीक है। सूर्यप्रधान व्यक्ति कभी निस्तेज और निरुत्साही नहीं होते। अत: उनके चेहरे का वर्ण श्वेत नहीं होता। यदि सूर्यप्रधान व्यक्ति का वर्ण श्वेत है, तो इसे निश्चित रूप से स्वास्थ्य में विकार का लक्षण समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति न केवल अस्वस्थ होगा, अपितु अनाकर्षक भी होगा।

शुद्ध सूर्यप्रधान व्यक्ति का रंग पीला भी नहीं होता। पीलेपन को स्वास्थ्य में बहुत बड़ा दोष समझना चाहिए। पीला रंग व्यक्ति की कर्मशक्ति और कला-साधना को विकृत कर देता है। फलत: उसे जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता नहीं मिलती। ऐसे व्यक्ति पित्त-दोष के शिकार तो नहीं होते, परन्तु पित्त-दोष का मिलना एक भयंकर स्थिति होती है।

हस्तरेखाशास्त्री को पीलेपन की मात्रा तथा रहने की अवधि आदि का भली प्रकार अध्ययन करने के उपरान्त पीलेपन के गुणों का व्यक्ति के अन्य गुणों से साम्य-वैषम्य बिठाकर निष्कर्ष निकालना चाहिए। पीला रंग हृदय से सम्बन्धित रोगों का संकेत देता है। हाथ के छोटे-छोटे धब्बे हृदय रोग के अस्थायी होने का और पूरी हथेली का पीलापन तथा नाख़ूनों का नीचे तक गहरा-नीला होना रोग की गम्भीरता का लक्षण है। रोगी को हृदय रोग की जानकारी देते समय उसकी मानसिकता को भी ध्यान में रखना चाहिए। हृदय रेखा पर सूर्य पर्वत के नीचे किसी द्वीप या बिन्दु का होना तो स्थिति की विकटता का सूचक है। व्यक्ति कितना खोखला हो चुका है—इस तथ्य की जानकारी के लिए जीवन रेखा का परीक्षण करना चाहिए। नाख़ूनों के आकार से भी निष्कर्ष निकालने में सहायता मिलती है।

नाख़ूनों के नीचे की गुलाबी रंगत सही स्वास्थ्य की, सफ़ेदी निस्तेजता-निष्प्रभवता की, पीतिमा पित्त-विकार की तथा अधिक लाल-नीलापन हृदय रोग के

सूचक हैं। स्वस्थ व्यक्ति के नाख़ून गुलाबी ही होने चाहिए। नाख़ूनों के अन्य सभी रंग किसी-न-किसी रोग या विकार आदि के ही संकेत होते हैं। अत: नाख़ूनों के रंग के गुलाबी से भिन्न होने को एक असामान्य स्थिति ही समझना चाहिए।

नाख़ूनों की बनावट और उनके रूप-रंग से व्यक्ति के स्नायु रोग से आक्रान्त होने-न होने की जानकारी हो जाती है। जोखिम उठाने और सट्टेबाज़ी में पड़ने वाला व्यक्ति प्राय: स्नायु रोग का शिकार हो जाता है। पूरे स्नायु-तन्त्र की जांच से रोग की स्थिति का पता चलता है। नाख़ूनों का घुण्डीदार होना फेफड़ों में अथवा रीढ़ की हड्डी में क्षय रोग का सूचक है। छोटे-कोमल नाख़ून व्यक्ति को तर्कपटु और वाचाल सूचित करते हैं। अपने दुर्बल स्थल में संरचनात्मक दोष लिये रहने वाले नाख़ून व्यक्ति के हृदय रोग से ग्रस्त होने का संकेत हैं। वस्तुत: चिकना और गुलाबी रंगत वाला नाख़ून ही बढ़िया क़िस्म का माना जाता है, जो प्रसन्नता, उत्तम स्वास्थ्य और ईमानदारी का प्रतीक होता है। हाथों पर उगे बालों से व्यक्ति के शारीरिक बल का पता चलता है। हलके भूरे-सुनहरे रंग वाले बाल ही उत्तम होते हैं, पीले, सफ़ेद और मटियाले रंग के बाल घटिया होते हैं।

प्रबल सूर्यप्रधान व्यक्ति के बाल सुनहरी आभा लिये हुए चमकीले होते हैं। काले बाल व्यक्ति के तेजस्वी, प्रसन्नचित्त, आकर्षक और उत्तम चरित्र होने के सूचक हैं। वस्तुत: काले बालों की उत्तेजक चमक से व्यक्ति का प्रखर एवं कुशाग्र-बुद्धि होना इंगित होता है। व्यक्ति के हाथों पर बालों की सघनता के अनुरूप ही व्यक्ति को शक्तिसम्पन्न समझना चाहिए।

पूरे हाथ की जांच-परख से व्यक्ति के सम्बद्ध लोक को जानना सम्भव होता है। अंगुलियों का हथेली से अधिक लम्बा होना मस्तिष्क के सशक्त होने का, दूसरे शब्दों में व्यक्ति के बुद्धिजीवी होने का, अर्थात् साहित्य, संगीत, कला, शिल्प आदि में किसी ललित क्षेत्र को व्यवसाय के रूप में अपनाने वाला होने का संकेत है। मध्य-लोक का सर्वाधिक विकसित होना व्यक्ति के व्यापारकुशल, व्यापार के क्षेत्र में धन और नाम कमाने वाला, व्यवसाय संघों का नेतृत्व करने वाला तथा बड़ी-बड़ी कम्पनियों का सञ्चालन करने वाला होने का सूचक है। हाथ के निचले-तीसरे भाग के प्रबलतम होने का अर्थ व्यक्ति का निकृष्ट प्रवृत्तियों और तुच्छ रुचियों को अपनाने वाला एवं प्रदर्शनप्रिय होना है। सूर्य की अंगुली के तृतीय पर्व की मोटाई तो इस तथ्य को पुष्ट कर देती है। अत: हस्तरेखाशास्त्री को व्यक्ति के हाथ में विद्यमान और अविद्यमान लोकों और उनके गुणों के संयोग के आधार पर ही उसके स्वभाव और चरित्र का विश्लेषण करना चाहिए।

इस सम्बन्ध में अंगुलियों का अत्यन्त निकटता से परीक्षण और विश्लेषण करना उपयोगी सिद्ध होता है। सूर्य और बृहस्पति की अंगुलियों की बराबर लम्बाई

का अर्थ व्यक्ति की प्रतिभा और महत्त्वाकांक्षा में सन्तुलन होना है, अर्थात् व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा उसकी योग्यता के अनुरूप है। वह उतना पाना चाहता है, जितना कि वह पा सकता है। अत: उसे अपने श्रम का उपयुक्त फल मिलना निश्चित है।

सूर्य की अंगुली के बृहस्पति की अंगुली से बड़ी होने का अर्थ है—व्यक्ति कला अथवा व्यापार के क्षेत्र में रुचि लेने वाला और सफलता प्राप्त करने वाला है। सूर्य की अंगुली का लम्बाई में शनि की अंगुली के बराबर अथवा लगभग बराबर होना यह इंगित करता है कि व्यक्ति अपनी योजनाओं की सफलता के लिए अपना सर्वस्व—जीवन, धन तथा मान-मर्यादा—को दांव पर लगाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति सट्टा-जुआ-जैसे जोखिम-भरे कार्यों को चुनौती के रूप में अपनाने वाला होता है। सूर्य की अंगुली का शनि की अंगुली से अधिक लम्बी होना व्यक्ति के ढीठ, दुष्ट और अपनी तुच्छ-अधम प्रवृत्तियों पर अंकुश न लगा पाने वाला होने का संकेत है। अंगुली का पार्श्व में मुड़ा होना व्यक्ति के चतुर, समझदार और होशियार रहने वाला बताता है। अंगुली की अत्यधिक लम्बाई के साथ उसका टेढ़ापन व्यक्ति के परले दरजे का धूर्त और पक्का जुआरी होने का सूचक है।

अंगुली के प्रथम पर्व का सर्वाधिक लम्बा और सरलता से पीछे की ओर मुड़ना व्यक्ति के मानसिक गुणों के लचीला तथा कलात्मक होने का सूचक है। इस स्थिति में यह देखना आवश्यक है कि व्यक्ति कला के क्षेत्र में रुचि लेने वाला है अथवा व्यवसाय के क्षेत्र को अपनाने वाला है।

प्रथम पर्व की सर्वाधिक लम्बाई व्यक्ति को बुद्धिजीवी—कवि, लेखक तथा कलाकार आदि—सिद्ध करती है। द्वितीय पर्व की सर्वाधिक लम्बाई व्यक्ति के व्यवसाय पक्ष की प्रबलता की सूचक है। तृतीय पर्व की सर्वाधिक लम्बाई यह संकेत करती है कि व्यक्ति कला के क्षेत्र में प्रगति करने वाला तो होगा, परन्तु एक तो वह साधारण रुचि का व्यक्ति होगा और दूसरे वह प्रदर्शन में अधिक विश्वास रखने वाला होगा।

प्रथम और द्वितीय पर्वों की समान लम्बाई यह संकेतित करती है कि व्यक्ति कला और व्यापार के संयोग से, अर्थात् दोनों क्षेत्रों में समान रूप से अपनी प्रतिभा का उपयोग करके धन और यश कमाता है। व्यवसायलोक के छोटा होने पर व्यक्ति यश-प्रतिष्ठा तो पा लेता है, परन्तु धनोपार्जन में सफल नहीं हो पाता। द्वितीय और तृतीय पर्वों की लम्बाई का बराबर होना और प्रथम पर्व का छोटा होना यह निर्देश देता है कि व्यक्ति धन-प्राप्ति की इच्छा तो रखता है, परन्तु उसमें इच्छापूर्ति के लिए अपेक्षित गुणों—योग्यता और श्रम आदि—का नितान्त अभाव है। ऐसा व्यक्ति बढ़िया वस्त्रों को पहनने का शौक़ीन तो होता है, परन्तु उसका बौद्धिक स्तर साधारण ही होता है। पर्वों का परीक्षण करते समय इस तथ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि

किस पर्व ने किस पर्व के आकार को छोटा बनाकर अपने आकार में वृद्धि की है।

यहां यह समझ लेना चाहिए कि अंगुलियों के अग्रभागों के गुण न केवल अंगुली में, अपितु व्यक्ति के चरित्र में भी समाविष्ट रहते हैं। नुकीले अग्रभाग व्यक्ति को कलात्मक रुचि वाला बना देते हैं। प्रथम पर्व की सर्वाधिक लम्बाई के गुणों में नुकीलेपन के गुण (कलात्मक) भी जुड़ जाते हैं। वर्गाकार अग्रभाग व्यक्ति के व्यावहारिक और नियमित होने के तथा चमचाकार अग्रभाग व्यक्ति के सक्रिय और मौलिक होने के सूचक हैं। लम्बे प्रथम पर्व के साथ वर्गाकार अग्रभाग से लम्बे द्वितीय पर्व की कमी की पूर्ति हो जाती है।

द्वितीय पर्व के सर्वाधिक लम्बा तथा अंगुली के सिरे के नुकीला होने पर अग्रभाग के कलात्मक गुण व्यक्ति की व्यावसायिक प्रतिभा में आ जाते हैं। ऐसा व्यक्ति सुन्दर वस्त्रों को पहनने का, अपने व्यवसाय स्थल को स्वच्छ-सुन्दर रखने का, सुन्दर परिवेश में रहने-घूमने-फिरने का तथा मौज-मस्ती करने का शौक़ीन होता है। अपनी इन प्रवृत्तियों के कारण वह अपने व्यवसाय-धन्धे में अपेक्षित ध्यान नहीं दे पाता।

वर्गाकार अग्रभाग वाला व्यक्ति समझदार, व्यावहारिक सूझ-बूझ वाला और सफल रहने वाला होता है। चमचाकार अग्रभाग वाला व्यक्ति मनोरंजन-प्रिय और मौलिक प्रवृत्ति का होता है। नोकदार अथवा पैने अग्रभागों वाला व्यक्ति आदर्श का उपासक होने से कल्पनाजीवी, स्वप्नद्रष्टा और अव्यावहारिक होता है। तृतीय पर्व के सर्वाधिक लम्बा और अंगुली के छोरों के नुकीला होने पर व्यक्ति सौन्दर्य-प्रेमी—रूप का दीवाना—तो होता है, परन्तु कला के क्षेत्र में उसका स्तर ऊंचा नहीं होता। वर्गाकार अग्रभागों वाला व्यक्ति धन कमाने की इच्छा रखने वाला और धन-प्राप्ति पर उसके प्रदर्शन का शौक़ीन होता है। अग्रभागों से व्यक्ति की खेल-कूद में रुचि-प्रवृत्ति का भी पता चलाता है।

अंगुलियों की गांठें व्यक्ति के उत्साह और स्वेच्छाचारिता पर कुछ अंशों में नियन्त्रण लगा देती हैं, परन्तु ऐसे व्यक्ति का मस्तिष्क इतनी तेज़ी से काम करता है, मानो वह अन्तर्ज्ञानी हो। अंगुलियों की गांठें वस्तुत: दोषों की प्रतीक हैं, जो व्यक्ति के सर्वोत्तम न कर पाने की सूचक होती हैं। अंगुलियों का चिकनापन स्वाभाविक रूप माना जाता है और इससे पता चलता है कि सूर्यप्रधान व्यक्ति अपनी कलात्मक अनुभूति के लिए अपनी अन्तर्दृष्टि से शक्ति प्राप्त करने वाला है।

पर्वों की जांच-परख करते समय यह देखना आवश्यक होता है कि विकसित लोक में गांठदार अथवा चिकनी अंगुलियों वाले गुणों की प्रधानता है अथवा नहीं। लम्बी अंगुलियां व्यक्ति को छोटी-से-छोटी बात का भी ध्यान रखने वाला बताती हैं। कलाकार के रूप में वह प्रत्येक ब्योरे पर पूरा ध्यान देने वाला होता है।

उदाहरणार्थ, मानव का चित्र प्रस्तुत करते समय वह उसके कोट को ही नहीं, उसके बटनों को भी, बालों को ही नहीं, अपितु उसके रंग और शैली को भी, नेत्रों को ही नहीं, अपितु उनकी बरौनियों को भी यथावत् प्रस्तुत करने के प्रति सजग रहता है। यही तथ्य मूर्तिकार और लेखक पर भी लागू होता है। व्यापार में भी वह हिसाब-किताब में सामान्य से अधिक सावधानी बरतने वाला होगा। वस्तुतः वह जिस भी क्षेत्र—बाबूगिरी, अध्यापन, लेखन तथा लेखाकार आदि—को अपनायेगा, उसमें सफलता प्राप्त करने वाला होगा।

छोटी अंगुलियां व्यक्ति को तीव्रता प्रदान करती हैं। अतः छोटी अंगुलियों वाला व्यक्ति प्रत्येक कार्य को तीव्रता से निपटाने वाला और निर्णय लेने में विलम्ब न करने वाला होगा। ऐसा व्यक्ति पहली बार सर्वोत्तम प्रभाव डालता है। सूर्य की अंगुली के शनि की अंगुली जितना लम्बा होने पर व्यक्ति भी बिना सोचे-समझे किसी भी कार्य में छलांग लगाने वाला हो सकता है। सूर्यप्रधान व्यक्ति छोटी अंगुलियां होने पर जुआ-सट्टा आदि में रुचि लेने वाला होता है। उसके अच्छे पक्ष के उजागर करने की संकल्पशक्ति के उसमें होने-न होने की जानकारी अंगूठे से ही प्राप्त की जा सकती है।

बड़ा अंगूठा चरित्र की दृढ़ता का सूचक है। बड़े अंगूठे वाले व्यक्ति छोटे अंगूठे वाले व्यक्तियों की अपेक्षा कहीं अधिक कर्मठ होते हैं। छोटा अंगूठा व्यावहारिक पक्ष के दुर्बल बनाने का और कलापक्ष को एक ओर खुली छूट देने का तथा दूसरी ओर उसके विकास के अवसर न जुटा पाने का सूचक है। यही कारण है कि छोटे अंगूठे वाले सूर्यप्रधान व्यक्ति प्रतिभासम्पन्न होने पर भी अपनी प्रतिभा का पूरा लाभ उठाने वाले नहीं होते । इच्छा पर्व की लम्बाई प्रतिभा से लाभ उठाने की क्षमता को और आकृति इच्छाशक्ति की उत्कृष्टता-निकृष्टता को, व्यक्ति के व्यवहारकुशल होने-न होने को तथा उसके धैर्यवान् अथवा अधीर-व्यग्र होने को बताती है। द्वितीय पर्व व्यक्ति की तर्कशक्ति के अच्छे-बुरे रूप को बताता है, तो द्वितीय पर्व की लम्बाई इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति के मध्य सन्तुलन होने-न होने को तथा इच्छाशक्ति की प्रबलता अथवा अपर्याप्तता को बताती है। इससे इच्छाशक्ति अथवा तर्कशक्ति के नियन्त्रित होने-न होने का पता चलता है। सूर्यप्रधान व्यक्ति के अंगूठे के द्वितीय पर्व के प्रबल होने का अर्थ है कि वह सूझ-बूझ और समझदारी से काम लेने वाला है। ऐसे व्यक्ति के परिणामों की उत्कृष्टता के निर्णय के लिए यह देखना चाहिए कि उसकी हृदय रेखा साफ़-सुथरी एवं उत्तम है अथवा नहीं; क्योंकि यही हृदय रेखा शुद्ध एवं स्पष्ट होने पर निर्णयशक्ति और बुद्धि को विकसित करती है।

सूर्यप्रधानता के कतिपय पर्याप्त गुणों से सम्पन्न व्यक्ति तो अनेक मिलते हैं, परन्तु इसके शुद्ध प्रतिरूप विरल ही देखने को मिलते हैं। शुद्ध प्रतिरूप तो मानवता

और सहृदयता का सजीव उदाहरण होता है। वह अपने और दूसरों के जीवन को आनन्द और उल्लास से भर देता है। वह दूसरों की उन्नति को अपनी उन्नति समझता है और दूसरों को लाभ पहुंचाने में अलौकिक आनन्द का अनुभव करता है। उसके सम्पर्क में आने वाले लोग उसकी समीपता को अपने लिए एक वरदान एवं सौभाग्य समझते हैं। *

22

बुध पर्वत

बुध पर्वत-प्रकार की पहचान का आधार बुध पर्वत और बुध की अंगुली है। बुध पर्वत-प्रकार के व्यक्ति की कतिपय सुस्पष्ट विशेषताएं हैं—ऐसा व्यक्ति जहां तक महान् वक्ता, वैज्ञानिक, चिकित्सक, वकील तथा सफल व्यवसायी बनता है, वहां एकदम बेईमानी के साधनों को अपनाने वाला होता है।

बुध-प्रकार के व्यक्ति का हाथ देखकर सर्वप्रथम दो तथ्यों—विकास की प्रबलतम अवस्था तथा प्रभावी पक्ष के शुभ अथवा अशुभ होने—का पता लगाना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के शुभ पक्ष के प्रभावी होने पर वह किसी भी क्षेत्र में सर्वाधिक सफलता प्राप्त करने वाला और सर्वोत्कृष्ट रहने वाला होता है। बुध-प्रकार का व्यक्ति संसार का सबसे बड़ा धोखेबाज़, झूठा, बदमाश और धूर्त होता है। इस प्रकार बुराई में भी कोई दूसरे पर्वत प्रकार का व्यक्ति उसकी समता नहीं कर सकता। अतः बुध-प्रकार के व्यक्ति से सदा सावधान रहने में ही भलाई होती है। इसकी पहचान कठिन नहीं होती; क्योंकि इस पर्वत-प्रकार में अन्य पर्वत-प्रकारों से कुछ भिन्न तत्त्व अत्यन्त स्पष्ट रहते हैं।

बुध-प्रकार का व्यक्ति चतुर, विद्वान् तथा मानव-प्रकृति का सफल जानकार होने के कारण जीवन में प्रायः सफलता प्राप्त करने वाला होता है। एक ओर जहां वह शक्ति का भण्डार होता है, वहां दूसरी ओर वह अपनी शक्ति का सार्थक उपयोग करना भी भली-भांति जानता है। दो—क़ानून और चिकित्सा—व्यवसाय उसे विशेष प्रिय एवं रुचिकर होते हैं। क़ानून तो ऐसा क्षेत्र है, जहां वह अपनी चतुराई, धूर्तता, सूझ-बूझ और वाग्विदग्धता का भरपूर उपयोग कर सकता है। इसके अतिरिक्त बुध-प्रधान व्यक्ति लेखन और व्यापार के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करने वाले होते हैं। ये लोग उच्च स्तर के लेखक और सम्पन्न व्यापारी के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं।

बुध पर्वत को शक्तिशाली बनाने वाले तत्त्व हैं—अलग-अलग अथवा संयुक्त चिह्न, नक्षत्र, त्रिकोण, वृत्त, एक मात्र उठती हुई रेखा तथा त्रिशूल अथवा वर्ग। चरित्र तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी दोषों-विकारों के सूचक तत्त्व हैं—तिरछी रेखा, जाल, गुणन-

रेखाचित्र-105 व 106
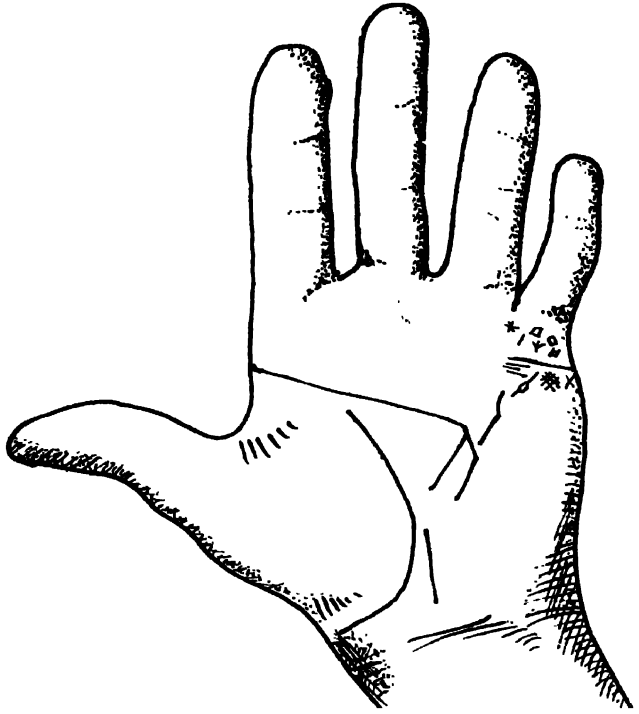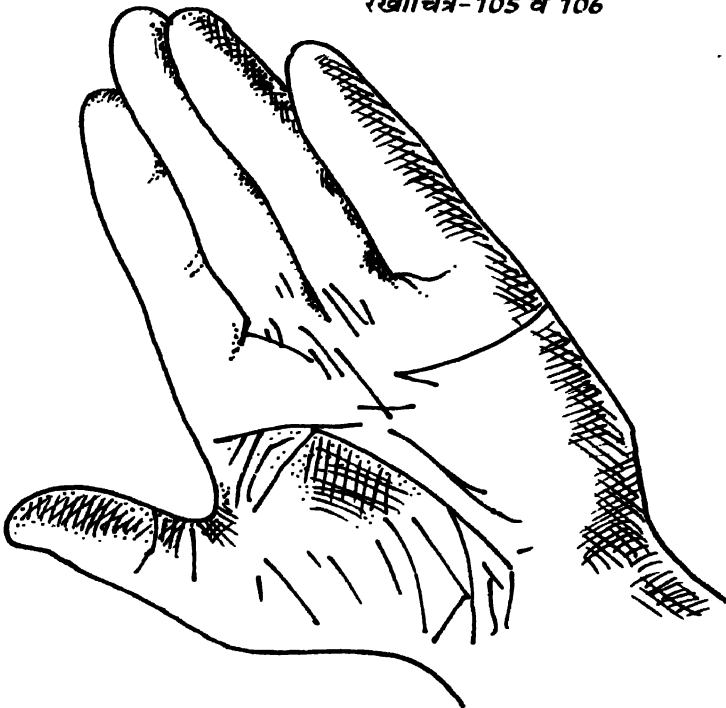
चिह्न तथा द्वीप अथवा बिन्दु। नाख़ूनों के रंग से इन विकारों के सम्बन्ध-सूत्र की जानकारी मिल जाती है (रेखाचित्र-105)।

बुध पर्वत का सुविकसित होना, अंगुली का लम्बी-बड़ी होना और पर्वत के शीर्ष-बिन्दु का केन्द्र में स्थित होना बुध परिवार के व्यक्ति की पहचान के निश्चित चिह्न हैं। (रेखाचित्र-106) बुध परिवार के व्यक्ति का क़द मझोला (165 सेण्टीमीटर के आस-पास) और शरीर सुगठित होता है। वह दिखने में ऊर्जा और स्फूर्ति से ओत-प्रोत, साफ़-सुथरा रहने वाला और प्रभावशाली चेहरे-मोहरे वाला होता है। उसका चेहरा अण्डे के आकार-जैसा गोल होता है, उसके चेहरे के अंग—आंख, नाक, कान आदि—सामान्य और भाव क्षण-प्रतिक्षण बदलते रहते हैं। उसकी त्वचा उत्तम, चिकनी, जैतून की आभा वाली और पारदर्शी (चमकीली) होती है। जब कभी वह डरा-सहमा अथवा उत्तेजित होता है, तो उसकी त्वचा के नीचे प्रवहमान रक्त कभी लाल, तो कभी सफ़ेद दिखाई देता है। उसका माथा ऊंचा-उभरा हुआ और सिर के बाल काले-घुंघराले होते हैं। उसकी दाढ़ी घनी—उसके पूरे चेहरे को ढंकने वाली होती है। दाढ़ी का सफ़ेद रंग शरीर के अन्य स्थानों पर उगे बालों के रंग से कुछ अधिक गहरा होता है। वह अपनी दाढ़ी को कांट-छांट कर और उसे संवार कर रखने की प्रवृत्ति वाला होता है। उसकी भौंहें पतली-छितरी हुई और कभी-कभी नाक के ऊपर आकर मिलने वाली होती हैं, उसकी आंखें काली, कहीं-कहीं गहरी काली होती हैं, जिनसे व्याकुलता और बेचैनी के भाव झलकते हैं। उसकी आंखों की ज्योति तीव्र-तीक्ष्ण और सदैव कुछ खोजती-ढूंढ़ती-सी प्रतीत होती है। उसका ऐसा देखना कभी-कभी विचित्र और अप्रिय भी लगता है, परन्तु शीघ्र ही उसकी सहजता और सरलता पर विश्वास होने लगता है। उसकी आंखों का सफ़ेद भाग कुछ-कुछ पीलापन लिये रहता है, जो उसकी व्यग्रता और चिड़चिड़ेपन का सूचक होता है, जो उसके पित्त-दोषग्रस्त होने के परिणाम हैं। उसकी नाक पतली-सीधी और कभी-कभी सिरे पर मांसल होती है, होंठ पतले-एकसार और कभी-कभी हलके पीले-नीले होते हैं। घबराहट और परेशानी में वह तेज़ी से सांस लेता है और कभी-कभी तो मुंह से भी सांस लेता है। उसकी ठोड़ी लम्बी-पैनी, नीचे से कुछ ऊपर की ओर उठी हुई होती है, जिससे उसका चेहरा ठीक अण्डे के आकार का दिखाई देता है। उसकी गर्दन सुदृढ़ और हृष्ट-पुष्ट होती है। उसके कन्धे सुगठित, लचीले, सशक्त और सुडौल होते हैं। उसका स्वर क्षीण व अशक्त न होकर मध्यम ध्वनि वाला, तीखा, ऊंचा और प्रभावित करने वाला होता है। उसके अंग उत्तम और दर्शनीय होने के साथ गति, स्फूर्ति और उत्साह से परिपूर्ण होते हैं। उसके दांत छोटे, परन्तु स्वच्छ-चमकीले, मसूड़े गुलाबी, मांसपेशियां सुदृढ़ व शक्ति प्रदान करने वाली होती हैं। बुधप्रधान व्यक्ति इस प्रकार सुगठित, सशक्त एवं स्फूर्तिवान् होता है

कि सुन्दर न होने पर भी सुघड़ लगता है। वह सभी पर्वत-प्रकारों के व्यक्तियों की अपेक्षा कहीं अधिक तीव्र, सक्रिय और मानसिक रूप से फुर्तीला होता है। उसकी अन्तर्दृष्टि बिजली के समान कौंधने वाली होती है और उसकी प्रत्येक चेष्टा में भव्यता तथा कुशलता की झलक मिलती है।

बुधप्रधान व्यक्ति खेलों में भी निपुण होता है। अपने हाथों के साथ-साथ अपनी बुद्धि से भी काम लेने वाला होने के कारण वह न केवल कुशलता से खेलों की योजना बनाता है, अपितु विपक्षी दल की शक्ति-दुर्बलता का सही अनुमान भी लगा लेता है और इसीलिए वह जीतने में सफल रहता है। शक्ति के स्थान पर कौशल और चालाकी की अपेक्षा रखने वाले खेलों में तो उसकी विजय सदैव सुनिश्चित रहती है। तर्क-वितर्क करने में और अपनी बात को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में वह बेजोड़ होता है। वक्तृत्व-कला में उसकी रुचि ऐसी उत्कट होती है कि वह किसी भी विषय पर बोलने के अवसर को नहीं गंवाता। सबसे बड़ी बात यह है कि उसे सही बात की, सही समय पर और सही ढंग से कहने की अनोखी पहचान होती है। पार्टियों में भाषण करने वालों में वह सदैव आगे रहता है। उसकी वाक्पटुता, तार्किकता, हास-परिहासकुशलता और अभिव्यक्ति की क्षमता आदि विशेषताएं उसे लोकप्रिय बना देती हैं, जिससे उसके प्रशंसकों और मित्रों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रहती है।

बुधप्रधान व्यक्ति की सफलता का प्रमुख कारण है—मानव-चरित्र और स्वभाव को परखने-समझने की उसकी अद्‌भुत शक्ति। वह अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों की न केवल मन:स्थिति को भांप लेता है, अपितु अपने व्यवहार-कौशल से उन्हें अपना मित्र अथवा प्रशंसक भी बना लेता है। वह सदैव किसी-न-किसी योजना के बनाने में और अपनी चतुराई एवं सहज बुद्धि से उसे कार्य-रूप देने में प्रवृत्त रहता है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि वह विशिष्ट प्रतिभासम्पन्न एवं चतुर होने के कारण प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर लेता है। उसका आचार-व्यवहार ऐसा होता है कि लोग उसकी प्रतिभा का लोहा मानने लगते हैं।

बुरे लक्षणों वाला बुधप्रधान व्यक्ति ख़तरनाक होता है। वह लोगों को अपनी बात मनवाने, उन्हें फुसलाने और अपने अनुकूल बनाने की कला में दक्ष होता है। मानव-स्वभाव का गहरा पारखी होने के कारण वह भली-भांति जानता है कि किससे कैसे काम निकालना चाहिए। अत: वह कभी-कभी बड़ी सावधानी से स्वयं पीछे रहकर दूसरों को कार्य करने का अवसर देता है, परन्तु उसका सारा ज्ञान, सारी सोच और सारी चालाकी निजी लाभ के लिए होती है। वह समय का पूरा लाभ उठाता है। वह निरर्थक घूमने-फिरने, गप्पबाज़ी करने तथा मौज-मस्ती करने में समय व्यर्थ नहीं गंवाता।

बुधप्रधान व्यक्ति विज्ञान और अनुसन्धान सम्बन्धी पुस्तकों के अध्ययन में रुचि लेने वाला होता है। गणित उसका अत्यन्त प्रिय विषय होता है और इसमें वह इतना दक्ष होता है कि जटिल-से-जटिल प्रश्न को भी सरलता से हल कर लेता है। चिकित्सा के क्षेत्र में इसे दूसरों की अपेक्षा कहीं अधिक सफलता मिलती है। वह सर्वाधिक ख्याति प्राप्त करने वाला होता है। बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति दूसरे स्थान पर सफल रहते हैं।

बुध से सम्बन्धित गुणों के रहने पर विपरीत संयोग भी अच्छा माना जाता है। बुध पर्वत पर सीधी-खड़ी रेखाओं का होना तथा अंगुली का या फिर द्वितीय पर्व का लम्बा होना व्यक्ति के चिकित्सा-क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त करने के प्रबल संकेत हैं। सफल एवं लब्धप्रतिष्ठ डॉक्टरों के हाथ पर यह चिह्न देखने को मिल जाता है। इस चिह्न को 'चिकित्सा क्षतचिह्न' भी कहा जाता है (रेखाचित्र-107)।

किसी महिला के हाथ पर इस चिह्न का मिलना उसके सफल एवं प्रतिष्ठित उपचारिका होने का सूचक है। बुधप्रधान व्यक्ति कर्मठ, अध्ययनशील, वैज्ञानिक अभिरुचि वाला तथा मानव-स्वभाव को पहचानने की तीक्ष्ण दृष्टि रखने वाला होने के कारण सफल चिकित्सक तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। बुधप्रधान व्यक्ति अपनी चतुराई और गहरी सूझ-बूझ के कारण एक अच्छा तान्त्रिक, मन्त्री अथवा उच्च अधिकारी बनने की योग्यता भी रखता है। वस्तुत: बुधप्रधान व्यक्ति अमूर्त और अप्रत्यक्ष शास्त्रों की जटिलताओं को न केवल समझता है, अपितु उन्हें सुलझाने की भी योग्यता रखता है। वस्तुत: वह इस विषय का विशेषज्ञ होता है और तन्त्र-विद्या में उसकी गहरी पैठ होती है।

अशुभ बुधप्रधान व्यक्ति एक तो विवेकहीन होते हैं और दूसरे धन कमाने को विशेष महत्त्व देने वाले होते हैं। इन्हीं कारणों से सूक्ष्मदर्शी होने के साथ छल-कपट का सहारा लेने वाले पाखण्डी ज्योतिषी इसी वर्ग में आते हैं। केवल हाथ को देखकर व्यक्ति का ही नहीं, अपितु उसके मित्रों और सम्बन्धियों तक का नाम-पता बताने वाले हस्तरेखाशास्त्री बुध पर्वत के अशुभ प्रकार के उदाहरण होते हैं। ये लोग हस्तरेखाशास्त्र की गहरी जानकारी तो नहीं रखते—इसे वे कभी-कभी स्वीकार भी करते हैं, परन्तु मानव-स्वभाव की परख में पारंगत होने तथा हाथ की सफ़ाई में कुशल होने के कारण लोगों को उल्लू बनाकर उनसे धन ऐंठने में सफल हो जाते हैं। सतही ज्ञान रखने वाले ऐसे लोगों के कारण ही हस्तरेखाशास्त्र की विश्वसनीयता को हानि पहुंचती है। वस्तुत: ऐसे लोगों को सच्चे अर्थों में बुध पर्वत का दूषित प्रकार ही समझना चाहिए।

बुधप्रधान व्यक्ति प्रकृति से गहरा अनुराग रखता है। वह न केवल पशु-पक्षियों, अपितु मनोरम दृश्यों, स्थलों और चित्रों में भी रुचि लेने वाला होता है। वह
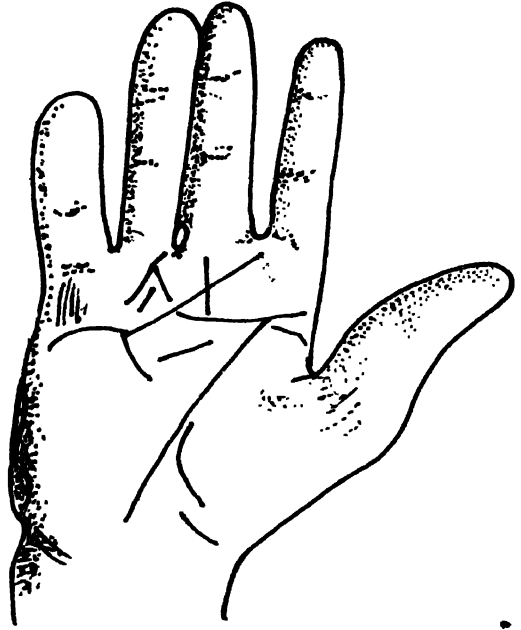
रेखाचित्र-107 व 108
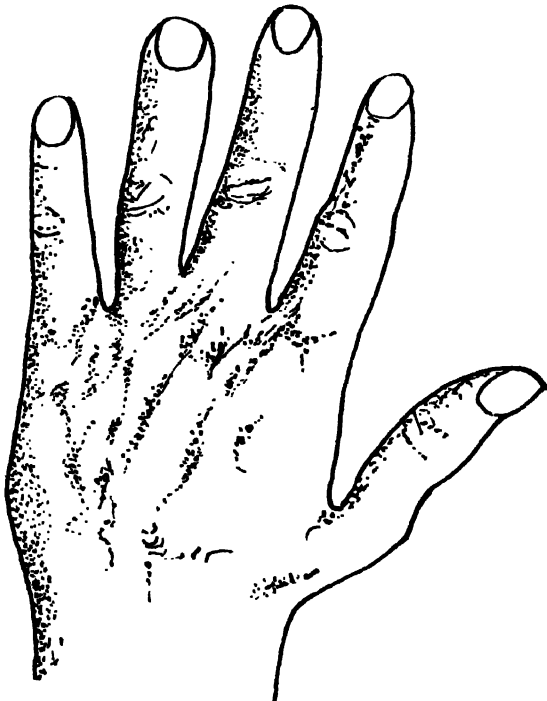
पढ़ने का शौक़ीन होता है, परन्तु वह मनोरंजनप्रधान साहित्य की अपेक्षा जीवनोपयोगी साहित्य को ही प्राथमिकता देता है।

व्यवसाय के क्षेत्र में अन्य सभी पर्वत-प्रकारों के व्यक्तियों की अपेक्षा बुधप्रधान व्यक्ति सर्वाधिक सफल रहने वाला होता है। इस क्षेत्र में अन्य कोई भी प्रकार बुध-प्रकार की तुलना नहीं कर पाता (रेखाचित्र-108)। बुधप्रधान व्यक्ति चतुर, होशियार, सूझ-बूझ रखने वाला, ऊर्जस्वी, प्रबन्धकुशल, दूसरों को प्रभावित करने में दक्ष तथा अभिव्यक्तिकुशल होता है। उसकी ये सभी विशेषताएं उसे उच्च स्तर का सफल व्यवसायी बना देती हैं। व्यापार के क्षेत्र में अद्‌भुत सफलता प्राप्त करने वाली और दूसरों को पीछे छोड़ जाने वाली यहूदी जाति इस तथ्य का एक सजीव एवं सुस्पष्ट उदाहरण है। यहूदी जाति के अधिकांश सदस्य बुध प्रकार के ही हैं।

बुधप्रधान व्यक्ति पैसा कमाने की नयी-नयी योजनाएं बनाने में और उन्हें अपने ही मौलिक तरीक़ों से कार्यरूप देने में अद्वितीय होते हैं। वे दूसरों की योजनाओं को चुराने और उन्हें नये रूप देकर अपना बताने में भी बेजोड़ होते हैं।

बुधप्रधान व्यक्ति अभिनय के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का विलक्षण प्रदर्शन करने वाले होते हैं। वे अपनी कुशलता से अभिनय को यथार्थ और सजीव रूप देकर दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर देते हैं। बुधप्रधान व्यक्ति वकालत के धन्धे में भी सफलता प्राप्त करने वाले होते हैं। मानव-मन की दुर्बलताओं-सबलताओं के पारखी और प्रत्येक वस्तु को सभी पहलुओं से देखने-परखने के अभ्यस्त होने तथा कुशल वक्ता होने के कारण वे इस व्यवसाय से ख़ूब धन और नाम कमाते हैं। ऐसे व्यक्ति शिक्षक के रूप में भी सफल रहते हैं; क्योंकि इनका ज्ञान व्यापक, अभिव्यक्ति का ढंग मोहक और मानव-चरित्र एवं स्वभाव की परख गहरी होती है। इससे वे श्रोताओं तथा अपने सम्पर्क में आने वाले अन्यान्य व्यक्तियों को सहज में ही प्रभावित कर लेते हैं।

बुधप्रधान व्यक्ति चतुर-चालाक और होशियार अवश्य होता है, परन्तु न तो वह दुष्ट होता है और न ही अपराधी वृत्ति का होता है। वह स्वभाव से संयत, बच्चों से प्यार करने वाला, परिवार के प्रति समर्पित और ईमानदार मित्र होता है। वह भोगों में आसक्ति नहीं रखता, सुन्दर वस्तुओं तथा स्त्रियों में रुचि अवश्य लेता है, परन्तु वह भोगवादी एवं कामुक प्रवृत्ति का नहीं होता। वह स्वभाव से उतावला और किसी भी कार्य को यथाशीघ्र सम्पन्न देखने को व्यग्र रहने वाला होता है। उसका मस्तिष्क सदैव क्रियाशील रहता है और वह कुछ-न-कुछ नया करने की सोचता रहता है। वह प्रकृति और बदलते प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लेने वाला तथा कृत्रिमता एवं कोरे प्रदर्शन से दूर रहने वाला तथा यात्रा-पर्यटन आदि में आनन्द का अनुभव करने वाला होता है।

बुधप्रधान व्यक्ति मित्रों की संगति को पसन्द करने वाला, छोटी आयु में विवाह कर लेने वाला, अपने समान आयु, रूप-रंग और गुणों वाली कन्या का वरण करने वाला, सामान्यतः पतली, छरहरे बदन की, उत्साह और जोश से भरी, सुरुचि-सम्पन्न तथा ख़ूब सज-धजकर रहने वाली स्त्रियों में रुचि लेने वाला होने पर भी अपनी पत्नी पर गर्व करने वाला और उसे सदैव सजा-धजा देखना चाहने वाला होता है। पति के रूप में वह एक सुशील एवं आदर्श पुरुष सिद्ध होता है।

बुधप्रधान व्यक्ति स्वस्थ, सशक्त, कर्मठ, निरलस, उद्यमी, भ्रमणशील तथा अत्यधिक उत्साही होता है। कभी-कभी उसकी ऊर्जा इतनी अधिक बढ़ जाती है कि उसके नाख़ूनों में लम्बी-लम्बी धारियां पड़ जाती हैं। इस प्रकार स्नायविक गड़बड़ी का शिकार बुधप्रधान व्यक्ति जिगर और पित्त-दोष आदि से ग्रस्त होने पर चिड़चिड़ा हो जाता है।

बुधप्रधान व्यक्ति के जिगर का रोग शनिप्रधान व्यक्ति के जिगर के विकार से भिन्न होता है। शनिप्रधान व्यक्ति की स्नायु सम्बन्धी गड़बड़ी में सुधार होते ही रोग जाता रहता है। उसके पेट की गड़बड़ी अजीर्णता का तथा त्वचा का जैतूनी रंग पित्त-प्रकोप का संकेतक होता है, शनिप्रधान व्यक्ति की क्रियाशीलता उसे उपचार से लाभ पहुंचाने, अर्थात् गड़बड़ियों को दूर भगाने में उसकी सहायता करती है। कभी लकवे का शिकार होने पर उसकी भुजाएं और ऊपरी भाग प्रभावित होते हैं परन्तु बुधप्रधान व्यक्ति सामान्यतया स्वस्थ होता है। अतः बुधप्रधान व्यक्ति के रोगों को अनदेखा करते हुए उसकी विलक्षण मानसिक क्षमताओं की परख करनी चाहिए।

सभी बुधप्रधान व्यक्ति उत्तम स्वभाव के नहीं होते—यह हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं। कुछ आपराधिक वृत्ति के बुधप्रधान व्यक्ति सुधार-गृहों में पड़े रहते हैं और कुछ केवल अपनी धूर्तता से ही जेल जाने से बच जाते हैं, अन्यथा वे परले दरजे के अपराधी होते हैं। ऐसे लोगों के हाथों में एक स्थान पर एक सूक्ष्म अगोचर रेखा होती है, जिससे यह संकेत मिलता है कि इस व्यक्ति की एक बिन्दु पर व्यापार अथवा व्यवसाय सम्बन्धी योग्यता का स्थान धूर्तता और बेईमानी ले लेंगी। ऐसा व्यक्ति चाहकर भी अपनी दुष्प्रवृत्ति पर नियन्त्रण नहीं रख पाता। इस अदृश्य रेखा के पार हो जाने का अर्थ ही यह है कि व्यक्ति के हाथ से विवेक का दामन छूट गया है। अतः उसका सीढ़ी-दर-सीढ़ी फिसलना निश्चित है। इस फिसलन का ही यह परिणाम होता है कि व्यक्ति एक सफल एवं प्रतिष्ठित व्यापारी के स्थान पर झूठा, बेईमान और चोर बन जाता है (रेखाचित्र-109)। ऐसे लोग सट्टा खेलते तथा शेयर बाज़ार का धन्धा करते समय चोरी, हेराफेरी और बेईमानी करने से तो बाज़ नहीं आते, परन्तु अपनी चालाकी से पकड़े न जाने का रास्ता भी निकाल ही लेते हैं। व्यापारी के रूप में भी ग्राहकों को अपने वाग्जाल में ऐसा फंसाते हैं कि वे जेब ख़ाली

करते हुए भी दुखी नहीं होते।

बुधप्रधान ऊंचे दरजे के चोरों के हाथ तो बढ़िया होते हैं, परन्तु अंगुलियां टेढ़ी होती हैं। बुध पर्वत पर जाल अथवा आड़ी-तिरछी रेखाएं होती हैं तथा मस्तक रेखाएं निस्तेज एवं भावशून्य होती हैं। उन पर छोटे-छोटे चतुष्कोण होते हैं। इन लक्षणों वाले व्यक्ति या तो अपने हाथों को छिपाने की चेष्टा करते हुए या फिर बार-बार उन्हें आपस में रगड़ते-मसलते हुए मिलेंगे।

किसी हाथ पर बुध की टेढ़ी अंगुली को देखते ही समझ लेना चाहिए कि सम्बद्ध व्यक्ति असाधारण रूप से चतुर एवं धूर्त है। अब सावधान होकर उस संकेत की खोज करनी चाहिए, जिससे पता चल सके कि व्यक्ति छली और बेईमान भी है अथवा नहीं? इसमें थोड़ी-सी भूल अथवा असावधानी हस्तरेखाशास्त्री को सत्य से कोसों दूर ले जा सकती है। बुधप्रधान व्यक्ति की बुध की अंगुली का टेढ़े होने को इस बात का निश्चित संकेत मानना चाहिए कि व्यक्ति का सामाजिक अथवा राजनीतिक स्तर भले ही कितना ऊंचा क्यों न हो, परन्तु वह सचाई और ईमानदारी की रेखा को लांघने के लालच पर क़ाबू नहीं रख सका—यह शत-प्रतिशत सत्य स्थिति है। किसी अंश में उसके ईमानदार रहने के प्रमाणों के मिलने पर भी टेढ़ी अंगुली और अशुभ लक्षणों से यह अनुमान लगाना चाहिए कि उसके मन में सत्य-असत्य के मध्य प्रबल द्वन्द्व चल रहा है और सत्य पर उसकी पकड़ ढीली पड़ती जा रही है।

आपराधिक वृत्ति के बुधप्रधान व्यक्तियों का क़द छोटा, रंग सांवला और स्वभाव तीखा होता है। उनकी आंखों में दूसरों को ठगने की बेचैनी रहती है तथा उनके बाल सीधे, कड़े, रूखे और जीवनी शक्ति से रहित होते हैं। उनकी अंगुलियां टेढ़ी, रस्सीनुमा, मरोड़दार और भीतर की ओर मुड़ी हुई होती हैं, नाख़ून शेर के पञ्जे के समान नुकीले, पर्वत पर जाल बना हुआ, बुध की अंगुली मरोड़दार, हृदय रेखा विकृत अथवा विलुप्त, मस्तक रेखा निस्तेज और उस पर चतुष्कोण बने हुए, अंगूठा कठोर-ऊंचा तथा बुध की अंगुली की पहली गांठ विकसित होती है। ऐसे लोग भ्रष्ट, चरित्रहीन, बेईमान, जेबकतरे, ठग, जुआरी, बैंकों-घरों में डाका डालने वाले तथा सभी प्रकार के अपराध करने वाले होते हैं। कंजर जाति के जिप्सी बुध परिवार से सम्बन्ध रखते हैं और इस प्रकार के सभी दोषों-गुणों को लिये हुए रहते हैं। ऐसे लोग ख़तरों से जूझने वाले होने के साथ-साथ बहुत-बड़े अन्धविश्वासी होते हैं (रेखाचित्र-110)।

इस प्रकार बुधप्रधान व्यक्ति दो वर्गों—अच्छे और बुरे—में बंटे हुए हैं। अतः सर्वप्रथम तो बुधप्रधान व्यक्ति के वर्ग का निर्णय करना चाहिए, फिर उसके पश्चात् ही उसके वैज्ञानिक, व्यवसायी, वक्तृत्व कला में कुशल होने का तथा उसकी प्रवृत्तियों के प्रयोग की दिशा की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।
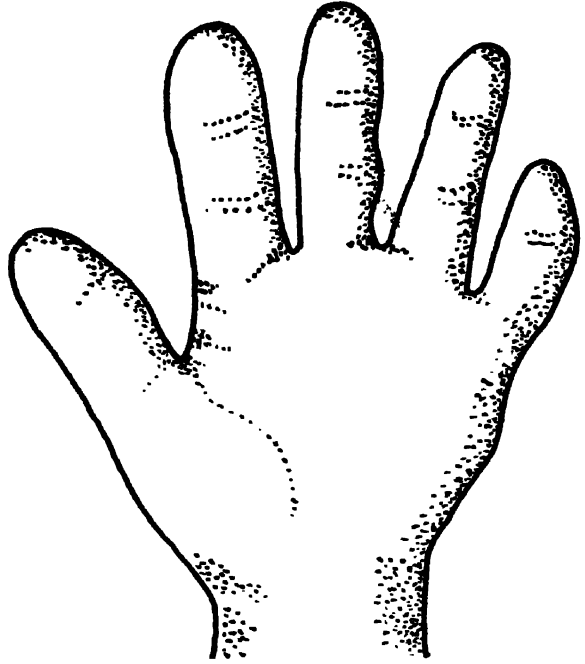
रेखाचित्र–109 व 110
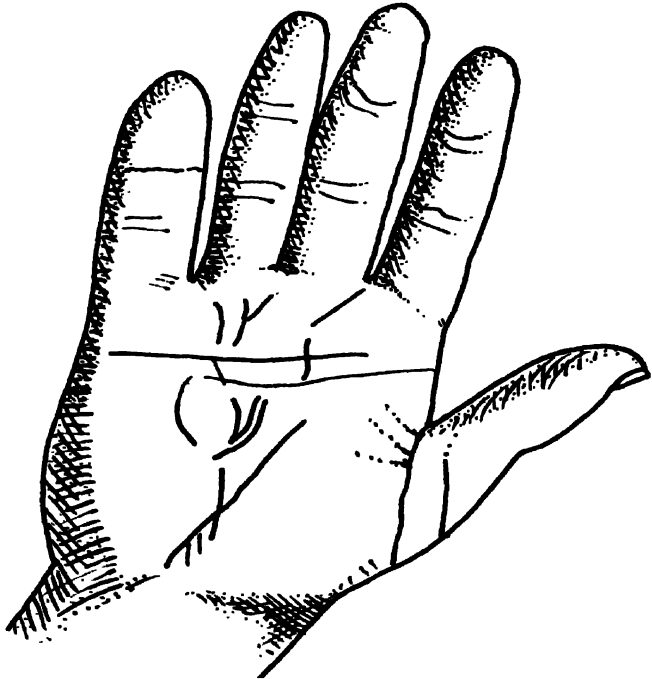
बुधप्रधान व्यक्ति के हाथों की मुद्रा पर ध्यान देना भी उसके चरित्र के समझने में सहायक सिद्ध होता है। उसके द्वारा अपने हाथों का छिपाना उसके छली-कपटी और धोखेबाज़ होने का निश्चित संकेत है। त्वचा का रूप-रंग भी व्यक्ति के सुसंस्कृत अथवा अपरिष्कृत होने की जानकारी देता है, परन्तु यहां कभी-कभी विपरीत स्थिति भी हो जाती है। जिस प्रकार यह आवश्यक नहीं होता कि बढ़िया सूट-बूट पहनने वाला व्यक्ति सज्जन अथवा फटे-पुराने (साधारण) वेशभूषा वाला व्यक्ति दुर्जन ही हो, उसी प्रकार कभी-कभी उत्तम त्वचा वाला बुधप्रधान व्यक्ति भी दुष्ट हो सकता है। हां, यह अवश्य है कि उत्तम त्वचा के बावजूद दुष्ट प्रकृति बुधप्रधान व्यक्ति इस स्तर का धूर्त होगा कि जीवन-भर लोग उसे सज्जन एवं आदर्श पुरुष समझते रहेंगे। कभी कोई उसकी वास्तविकता को जान ही नहीं पायेगा।

बुधप्रधान वैज्ञानिक, चिकित्सक, व्यापारी तथा वकील की त्वचा की श्रेष्ठता उसकी भद्रता और सुशीलता की सूचक होगी और इससे वह जीवन में ऊंची सफलता पाने वाला होगा। इसके विपरीत घटिया त्वचा को सभी व्यवसायियों के अपने व्यवसाय में घटियापन बरतने और आदर्श न बन पाने की सूचक समझना चाहिए। निम्न स्तर के अपराधों में लिप्त रहने वाले बुधप्रधान व्यक्तियों की त्वचा का रूप-रंग निकृष्ट ही होता है।

हाथों की बनावट व्यक्ति में ऊर्जा की मात्रा, उत्साह-स्फूर्ति की स्थिति को सूचित करती है। इससे व्यक्ति के सक्रिय अथवा निष्क्रिय, कर्मठ अथवा आलसी होने की जानकारी मिलती है। हाथों के शिथिल होने का अर्थ है—उपलब्धियां-प्राप्ति की आशा का धूमिल होना। यह एक सुखद संयोग है कि ऐसे हाथ प्रायः नहीं होते। कोमल हाथ व्यक्ति के असामान्य (विशिष्ट) होने के सूचक हैं। वस्तुतः कर्मशक्ति और ऊर्जा बुधप्रधान व्यक्ति की अनिवार्य विशेषताएं हैं। किसी भी व्यवसाय में रत बुधप्रधान व्यक्ति आलसी और साधारण तो हो ही नहीं सकता। हाथ का लचीलापन तो व्यक्ति के गुणों के अत्यन्त होने का और जिस किसी क्षेत्र में उन्नति करने का सूचक है। हां, कठोर हाथ अवश्य सामान्य विशेषताओं के क्षीण होने के और व्यक्ति के पिछड़ जाने के सूचक हैं; क्योंकि कठोर हाथों वाले व्यक्ति का मस्तिष्क अपेक्षित तीव्रता से काम नहीं करता। इसके विपरीत हाथों का लचीलापन व्यक्ति के मस्तिष्क के लचीलेपन का, अर्थात् उसके प्रतिभाशाली होने का द्योतक है। व्यक्ति की यह प्रतिभा उसे अपने व्यवसाय—डॉक्टर, वकील आदि—में विशिष्टता दिखाने का अवसर जुटायेगी। लचीले हाथों वाला बुधप्रधान डॉक्टर न केवल नयी-नयी औषधियों का प्रयोग करेगा, अपितु अपने रोगियों की समस्याओं के समाधान में भी कुशल सिद्ध होगा। यदि ऐसा व्यक्ति वकील होगा, तो क़ानून की बारीकियों को समझने, क़ानून को अपने ढंग से परिभाषित करने तथा अपने ग्राहकों (मुवक्किलों) को

जिताने के नये-नये मार्गों को ढूंढ़ने में प्रवीण होगा। कोमल हाथों वाला वकील क़ानून की उन त्रुटियों व न्यूनताओं को एकदम समझ लेता है, जिस पर कठोर हाथों वाले विधिवेत्ताओं का ध्यान ही नहीं जाता। इसी प्रकार लचीले हाथों वाला बुधप्रधान व्यापारी भी कुशाग्र और प्रखर बुद्धि का होने के कारण ख़ूब लाभ कमाने वाला होता है। वस्तुतः कठोर हाथ व्यक्ति के उत्साह और उसकी बुद्धि की प्रखरता को कुण्ठित करने वाले होते हैं। सर्वाधिक उन्नत एवं शीर्षस्थ व्यक्तियों के हाथ कठोर हो ही नहीं सकते; क्योंकि कठोर हाथ उन्नति के पथ पर अग्रसर हो ही नहीं सकते। कठोर हाथों वाले व्यक्ति तो रूढ़िवादी, पुरातनपन्थी और कृपण प्रवृत्ति के होते हैं।

इसी प्रकार हाथों का रंग व्यक्ति के स्वास्थ्य और स्वभाव की सूचना देता है। बुधप्रधान व्यक्ति स्वभाव से निस्तेज, निरुत्साही और ठण्डा नहीं होता। अतः बुधप्रधान व्यक्ति के हाथों का सफ़ेद रंग विरल रूप में देखने को मिलेगा। वस्तुतः सफ़ेद रंग उत्साह को मन्द और बुद्धि को कुण्ठित करने वाला होने के साथ-साथ व्यक्ति को कर्मनिष्ठता से हटाकर उदासीन बनाने वाला होता है। अतः सफ़ेद हाथ वाले बुधप्रधान व्यक्ति की चतुर-चालाक प्रवृत्तियां उसे ग़लत रास्ते पर ले जाती हैं तथा उसे नितान्त अवशून्य, निर्मम एवं कठोर बना देती हैं। यह सिद्धान्त सभी व्यवसायों—वकील, डॉक्टर तथा व्यापारी-व्यवसायी आदि—पर लागू होता है।

हाथों का लाल-गुलाबी रंग व्यक्ति में उत्साह, स्फूर्ति और शक्ति की प्रखरता का सूचक होता है। हाथों का लाल रंग व्यक्ति को स्वस्थ, कर्मठ, कुशाग्रबुद्धि तथा कठोर श्रम करने वाला होना बताता है। लाल रंग व्यक्ति के गुणों को निखारने वाला और स्वभाव को उत्कृष्ट बनाने वाला होता है। लाल रंग के हाथों वाला व्यक्ति न केवल अपने व्यवसाय में सफल रहने वाला होता है, अपितु समाज में अपनी धाक जमाने वाला भी होता है।

बुधप्रधान व्यक्ति के पित्त-विकार का शिकार होने की सम्भावना के सन्दर्भ में कुछ व्यक्तियों के हाथों का पीला रंग भी देखने को मिलता है। हाथों का यह पीलापन व्यक्ति के स्वास्थ्य और स्वभाव के बिगड़ने और व्यक्ति के सही मार्ग से भटक जाने की आशंका को जन्म देता है। पीले हाथों वाला व्यक्ति एक ओर पेट के रोगों से ग्रस्त होगा, दूसरी ओर झूठ और बेईमानी की राह पर चलने वाला होगा और तीसरी ओर अपने साथियों की ग़लतफ़हमी का शिकार होगा।

हाथों के रंग के उपरान्त नाख़ून आते हैं। धारीदार नाख़ून व्यक्ति की अधीरता के, कोमल और पीछे की ओर मुड़े नाख़ून व्यक्ति की जीवनी शक्ति के चुक जाने के, नीले नाख़ून रक्तसञ्चार में गड़बड़ी के और पीले नाख़ून पित्त-विकार के कारण व्यक्ति के रक्त के विषैला हो जाने के सूचक हैं। गुलाबी नाख़ूनों वाला व्यक्ति स्वस्थ, बुद्धिमान्, स्फूर्त, उत्साही तथा सूझ-बूझ से काम करने वाला होता है।

इसी प्रकार छोटे नाख़ूनों वाला बुधप्रधान व्यक्ति न केवल छिद्रान्वेषी होता है, अपितु वाद-विवाद में अपने पक्ष की पुष्टि में किसी भी सीमा तक जा सकता है। चौड़े नाख़ूनों वाला व्यक्ति डीलडौल वाला तथा शक्तिशाली होता है। मध्यम आकार व संकरे नाख़ूनों वाला व्यक्ति कोमल प्रकृति और दुर्बल शरीर वाला होता है।

हाथों पर उगने वाले बाल शरीर में विद्यमान लौहतत्त्व की मात्रा और स्थिति के सूचक होते हैं। इन बालों का रंग प्राय: काला ही होता है, जो व्यक्ति के प्रचण्ड प्रवृत्ति का होने की आशंका को जन्म देता है। बुधप्रधान व्यक्ति के हाथों पर बहुत बाल होते हैं। बालों की यह अधिकता व्यक्ति के स्वास्थ्य के उत्तम होने और उसकी प्रवृत्तियों के प्रचण्ड होने का संकेत देती है। ऐसे व्यक्तिंयों की बुध की अंगुली प्राय: टेढ़ी होती है। बुधप्रधान व्यक्तियों के हलके-छितरे हुए बाल बहुत कम ही देखने को मिलते हैं। बालों का लाल रंग व्यक्ति की तीव्र प्रवृत्तियों को और भी अधिक प्रचण्ड बना देने वाला होता है। बुधप्रधान व्यक्तियों के बाल अधिकांशत: अख़रोटी रंग के होते हैं, जो बुध सम्बन्धी गुणों की सम स्थिति के सूचक होते हैं।

सम्पूर्ण हाथ की जांच-परख से यह पता चल जाता है कि व्यक्ति किस लोक से सम्बद्ध है और किस क्षेत्र में अधिक प्रभावी है। इस वर्ग के व्यक्ति प्राय: व्यवसाय जगत् में ही अधिक फलते-फूलते देखे जाते हैं। बुधप्रधान व्यक्ति किसी भी क्षेत्र अथवा व्यवसाय—चिकित्सा, विधि, उद्योग तथा व्यापार—को क्यों न अपनायें, ख़ूब धन कमाते हैं। पर्वत के शीर्ष-बिन्दु के हाथ के बाहर की ओर होने पर व्यक्ति स्वार्थी और अपनी योग्यताओं का केवल अपने लाभ के लिए उपयोग करने वाला होता है। शीर्ष-बिन्दु के पर्वत के केन्द्र में स्थित होने पर व्यक्ति जिस किसी भी क्षेत्र को अपनायेगा, उस पर बुध प्रमुखता से छाया रहेगा। शीर्ष-बिन्दु के सूर्य की ओर झुकाव का अर्थ है—व्यक्ति की कला और सौन्दर्य के प्रति इतनी उत्कट रुचि कि उनका आनन्द उठाने के लिए वह बुध के कतिपय गुणों के परित्याग तक में भी संकोच नहीं करता। शीर्ष-बिन्दु के केन्द्रस्थ होने के साथ-साथ अन्य पर्वतों के शीर्ष-बिन्दु के खिंचाव बुध की ओर होने का अर्थ है—व्यक्ति में बुध के गुणों की प्रबलता और अपने क्षेत्र में मौलिकता-विशिष्टता का प्रदर्शन।

अंगुली का निरीक्षण करते समय सर्वप्रथम यह देखना चाहिए कि क्या बुध की अंगुली सूर्य की अंगुली की प्रथम गांठ से अधिक लम्बी है अथवा नहीं (रेखाचित्र-111)। अंगुली का लम्बा होना व्यक्ति को विशुद्ध रूप से उसका बुधप्रधान होना सूचित करता है। इसके विपरीत अंगुली का छोटा होना व्यक्ति में बुध के प्रभाव अथवा गुणों के अभाव अथवा न्यूनता का द्योतक होता है (रेखाचित्र-112)। अंगुली लम्बी होने के साथ ही यदि टेढ़ी भी हो, तो रेखाओं के जाल, हृदय रेखा, मस्तक रेखा और चतुष्कोण आदि की भी परख करनी चाहिए। इन अशुभ लक्षणों के

रेखाचित्र–111 व 112
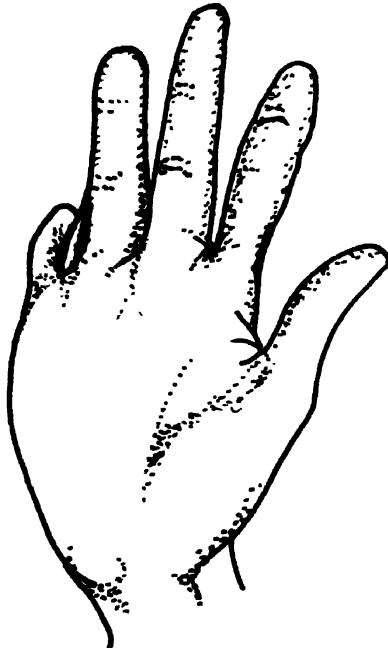
आधार पर व्यक्ति के बेईमान होने का निष्कर्ष निकालना सरल हो जाता है।

बुध की अंगुली में तीनों जगत् अत्यन्त सुस्पष्ट होते हैं। प्रथम पर्व का अधिक लम्बा होना व्यक्ति को वक्तृत्व कला में कुशल एवं अभिव्यक्ति के क्षेत्र में अत्यन्त सफल सूचित करता है। ऐसा व्यक्ति ख्यातिप्राप्त लेखक एवं लोकप्रिय वक्ता बनता है। द्वितीय पर्व का अधिक लम्बा होना व्यक्ति के विज्ञान पक्ष के प्रबल होने का संकेत है। ऐसा व्यक्ति एक ऊंचे दर्जे का डॉक्टर, वकील अथवा वैज्ञानिक बनता है। तृतीय पर्व का अधिक लम्बा होना व्यक्ति के कारोबारी, सफल व्यापारी एवं व्यवसाय में प्रसिद्धि-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होने का संकेत है। इस प्रकार अंगुली के लम्बे पर्व की जांच व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्णय में सहायक होती है। व्यक्ति को उसके लिए अत्यन्त उपयुक्त क्षेत्र को चुनने का परामर्श एवं दिशा-निर्देश दिया जा सकता है।

अंगुलियों के प्रबलतम गौण रूप की जांच का भी अपना महत्त्व होता है; क्योंकि इससे बुधप्रधान व्यक्ति की अभिरुचियों का परिचय मिलता है। बुध की लम्बी अंगुली के दो पर्वों का लम्बा और एक पर्व का कम लम्बा होना इस तथ्य की जानकारी देता है कि कौन-सा पर्व अधिक प्रभावशाली और कौन-सा पर्व अपूर्ण है। बुध की अंगुली की ध्यानपूर्वक जांच करने और उसका सही मूल्यांकन करने पर इस जटिल तथ्य को आसानी से सही तौर पर जाना जा सकता है।

अंगुलियों के अग्रभागों (सिरों) का अध्ययन भी आवश्यक होता है। बुध की अंगुली के प्रथम पर्व की लम्बाई बुधप्रधान व्यक्ति के प्रतिष्ठित लेखक अथवा कुशल वक्ता होने की सूचक है—इसका पीछे उल्लेख किया जा चुका है। यहां यह उल्लेखनीय है कि अंगुली के अग्रभाग का नुकीलापन व्यक्ति को कल्पना की ऊंची उड़ान भरने वाला और अपने आदर्श लेखन तथा वक्तृत्व-कला का सिक्का जमा देने वाला होने का सूचक है। अग्रभाग के वर्गाकार होने का अर्थ है—व्यक्ति व्यावहारिक विषयों पर चर्चा करने वाला होगा। यह सदैव अपने को गहरी सूझ-बूझ वाला और आंकड़ों पर आधृत तर्कसंगत बातचीत करने वाला सिद्ध करने वाला होगा। अंगुली के अग्रभाग के चमचाकार होने का अर्थ है—व्यक्ति की भाषण-कला में चुम्बकीय आकर्षण होगा। वह अपने भाषण से लोगों को प्रभावित ही नहीं, अपितु अपना भक्त बनाने वाला होगा। लोग मन्त्रमुग्ध होकर उसकी बात सुनेंगे और उसके सम्मोहन में आकर उसके कथन को ब्रह्मवाक्य मानेंगे।

अंगुली के द्वितीय पर्व की लम्बाई का सर्वाधिक होना तथा अंगुली के अग्रभाग का पैना-नोकदार होना इस तथ्य का संकेत है कि व्यक्ति अपनी वैज्ञानिक खोजों में आदर्शवाद को अपनाने वाला है। लम्बे द्वितीय पर्व के अग्रभाग का वर्गाकार होना व्यक्ति को सामान्य सूझ-बूझ वाला और व्यावहारिक विचारों वाला होने का संकेत

है। लम्बे द्वितीय पर्व के अग्रभाग के चमचाकार होने का अर्थ है—प्राचीन विज्ञान की खोज में व्यक्ति का प्रचलित परम्परा से हटकर सर्वथा नवीन और मौलिक दृष्टिकोण अपनाना।

अंगुली के तृतीय पर्व की लम्बाई के अधिकतम होने के साथ अग्रभाग का नुकीला-पैना होना व्यक्ति के आदर्शवाद और उसकी कलात्मक रुचि के व्यापार सम्बन्धी योग्यता से जुड़ने का संकेतक है। वर्गाकार अग्रभाग व्यक्ति के सामान्य सूझ-बूझ और व्यावहारिक विचारों वाला तथा व्यवसाय के मामले में कभी मूर्खता न करने वाला होने का सूचक है। इसी प्रकार चमचाकार अग्रभाग व्यक्ति में कार्य करने की अथाह शक्ति होने, कारोबार को नित नये तरीक़ों से आगे बढ़ाने में समर्थ होने तथा पैसा कमाने के लिए अथक परिश्रम कराने वाला होने का सूचक है। चमचाकार अग्रभाग सशक्त एवं सौभाग्यशाली संयोग माना जाता है।

गांठदार अंगुलियां व्यक्ति की विशेषणात्मक एवं तार्किक शक्ति की प्रबलता की सूचक हैं। ऐसी अंगुलियों के प्रथम पर्व के विकसित होने का अर्थ है—व्यक्ति के चिन्तन में तारतम्य और उसकी अभिव्यक्ति में व्यवस्था का होना। विकसित द्वितीय पर्व व्यक्ति के साफ़-सुथरा रहने का और प्रत्येक कार्य में स्वच्छता रखने का सूचक है। दोनों पर्वों का विकसित होना बुध की तीव्रता और समझदारी में दार्शनिकता का जुड़ना सूचित करता है। इससे व्यक्ति के वक्ता होने पर उसका अपने भाषण स्वयं तैयार करने वाला और वकील होने पर अपने मामलों को ख़ूब सोच-समझकर तैयार करने वाला तथा चिकित्सक होने पर रोग के लक्षणों की जांच के उपरान्त निदान करने वाला होने का संकेत मिलता है। इस प्रकार यदि वह व्यापारी है, तो ख़ूब सोच-समझकर ही कोई सौदा करेगा। वह कभी उतावलेपन में कोई काम नहीं करेगा। अंगुलियों का चिकना होना तीव्र-शीघ्रगामी व्यक्ति को और अधिक आवेगशील और अन्तर्दर्शी बनाने का सूचक है। ऐसा व्यक्ति मानव-स्वभाव का सहज पारखी होता है, वह लोगों की वास्तविकता को समझने में कभी ग़लती नहीं करता। इतना ही नहीं, बल्कि वह पहली झलक में ही किसी भी व्यक्ति को उसके यथार्थ रूप में जानने की विलक्षण शक्ति रखता है। इसके अतिरिक्त उसके सभी कार्यों में कलात्मकता एवं सुरुचि के दर्शन होते हैं।

इस प्रकार सभी अंगुलियों के अग्रभागों—नुकीले, चमचाकार अथवा वर्गाकार आकृतियों—के गुणों को गांठदार अथवा चिकनी अंगुलियों के गुणों के साथ मिलाकर देखने पर व्यक्ति के स्वभाव और चरित्र की सही जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

लम्बी अंगुलियों वाला व्यक्ति छोटी-से-छोटी बात पर ध्यान देने वाला होता है। वक्ता के रूप में व्यक्ति विषय का विस्तृत विवेचन करने वाला होता है। वकील

के रूप में वह सम्बन्धित मामले की तह तक पहुंचने की और सभी बारीकियों को समझने की चेष्टा करने वाला, मुक़दमे से जुड़े काग़ज़-पत्रों, रिकॉर्ड को संभाल कर रखने वाला तथा मुक़दमे के कमज़ोर पहलू को संभालने का प्रयास करने वाला होता है। चिकित्सक के रूप में लम्बी अंगुलियों वाला बुधप्रधान व्यक्ति रोगियों के उपचार में किसी भी तथ्य को अनदेखा न करने वाला, रोग सम्बन्धी सूक्ष्म-से-सूक्ष्म तथ्य की जानकारी प्राप्त करने वाला तथा रोगी के स्वास्थ्य-लाभ को अपने जीवन का आदर्श मानने वाला होगा। यदि ऐसा व्यक्ति व्यवसायी है, तो वह अपने व्यापार-धन्धे में किसी प्रकार की कोई कोताही-लापरवाही न करने वाला तथा व्यापार के सौदों को गम्भीरता से लेने वाला होगा।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि लम्बी अंगुलियों की सन्देहशीलता बुध की सन्देहशील प्रकृति में वृद्धि करने वाली होती है। लम्बी अंगुलियों का सही लक्षणों वाली होने पर बुध की विमलता बढ़ जाती है और फिर वाचाल व्यक्ति ऊबाऊ (बोर करने वाला) सिद्ध होता है।

छोटी अंगुलियां तेज़-तर्रार और फुर्तीले व्यक्ति के इन गुणों में और अधिक वृद्धि कर देती हैं। अंगुलियों में गांठें होने पर इन गुणों में न्यूनता आ जाती है। यदि गांठदार छोटी अंगुलियों वाला व्यक्ति वक्ता हो, तो वह अपने ज्ञान का उपयोग केवल अवसर की मांग के अनुसार करता है, यदि वकील हो, तो वह केवल मुक़दमे की जीत को निश्चित करने तक ही अपनी सूझ-बूझ का उपयोग करता है, चिकित्सक होने पर वह अपनी अन्तर्दृष्टि का सहज उपयोग करता है और व्यवसायी होने पर वह किसी ग्राहक की साख और कर्मचारी की ईमानदारी के सम्बन्ध में तुरन्त निर्णय ले लेता है।

छोटी अंगुलियों के साथ-साथ उनके अग्रभागों (सिरों) पर विचार करना अपेक्षित होता है। नुकीले अग्रभाग शीघ्रगामी व्यक्ति को और अधिक शीघ्रगामी बनाने वाले तथा वर्गाकार अथवा चमचाकार अग्रभाग द्रुतगति में कमी लाने वाले होते हैं। तीनों प्रकारों—नुकीले, वर्गाकार तथा चमचाकार—के अग्रभागों से सम्बन्धित गुणों से किस अग्रभाग के गुण अधिक प्रभावी रहने वाले हैं—इस तथ्य की जानकारी भी मिल जाती है।

निम्नस्थ अंगूठा मानसिकता के उच्च विकास की और उच्च विकसित अंगूठा मानसिकता के कम विकसित होने की सूचना देता है। इस प्रकार अंगूठे की आकृति इच्छाशक्ति अथवा तर्कशक्ति के प्रभावी रहने की और हृदय तथा अंगूठे की आकृति उत्कृष्ट-निकृष्ट प्रकृति की सूचक होती है।

बुधप्रधान व्यक्ति का अंगूठा कठोर होता है। वह धन-सम्पत्ति से मोह रखने वाला होता है। वह अपने परिवारजनों पर ख़र्च करने में कृपणता तो नहीं बरतता,

फिर भी फ़ुजूलख़र्ची से बचने की प्रवृत्ति वाला होता है। अतः वह अनेक प्रकार की योजनाएं तो बनाता है, परन्तु धन के प्रति मोह के कारण व्यय न कर पाने से उसकी योजनाएं धरी-की-धरी रह जाती हैं।

प्रथम पर्व के वर्गाकार अथवा चमचाकार होने से बुधप्रधान व्यक्ति प्रभावशाली, मौलिक, व्यवहारकुशल और दृढ़निश्चयी होता है। बुधप्रधान व्यक्ति का मूठ-जैसा अंगूठा अशुभ माना जाता है। अंगूठे के द्वितीय पर्व से व्यक्ति की इच्छाशक्ति, तार्किकता और सूझबूझ आदि की स्थिति—प्रबलता-अशक्तता—की जानकारी मिलती है। अंगूठे की आकृति व्यक्ति के सुसंस्कृत अथवा असंस्कृत होने की जानकारी देती है। बुधप्रधान व्यक्ति का अंगूठा प्रायः शुभ होता है। अधिकांशतः अंगूठे का प्रथम पर्व बड़ा, वर्ग अथवा चप्पू की आकृति का तथा द्वितीय पर्व लम्बा और कमर की आकृति का होता है। यह संयोग उत्तम समझा जाता है; क्योंकि यह व्यक्ति की इच्छाशक्ति की प्रबलता और सूझ-बूझ की उत्कृष्टता का सूचक होता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि बुधप्रधान व्यक्ति बहुआयामी होता है। एक ओर जहां वह सर्वोत्तम और सर्वोत्कृष्ट हो सकता है, वहीं दूसरी ओर वह निकृष्टतम भी हो सकता है। इस वर्ग में जहां लब्धप्रतिष्ठ लेखक, वक्ता, वकील, चिकित्सक और सुप्रसिद्ध व्यवसायी आते हैं, वहीं चोर-डाकू, बदमाश, झूठे और बेईमान भी इस वर्ग में आते हैं। अतः हस्तरेखाशास्त्री को इस वर्ग के व्यक्तियों के परीक्षण में अत्यन्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है। व्यक्ति की त्वचा के रूप-रंग की अंगूठे से मिलान करके उसकी सही पहचान करनी चाहिए और कोटि अथवा वर्ग का निर्धारण करना चाहिए। वस्तुतः निकृष्ट स्तर के बुरे लोगों और उत्कृष्ट स्तर के उत्तम लोगों की पहचान कठिन नहीं होती, परन्तु हां, सभ्यता के आवरण में छिपे ढोंगियों की पहचान के लिए तीव्र दृष्टि अपेक्षित होती है। *

23

मंगल पर्वत

पांचवें पर्वत-प्रकार मंगल के दो रूप-भेद हैं—1. उच्च पर्वत—हाथ के एक ओर मस्तक रेखा के ऊपर स्थित तथा 2. निम्न पर्वत—जीवन रेखा के नीचे, शुक्र पर्वत के ऊपर स्थित। मंगल का क्षेत्र हथेली का मध्य भाग है। पर्वतों के मानचित्र को देखने से इसके विकास की अवस्थाओं की सीमाओं की जानकारी हो जाती है। मानचित्र में यह सब स्पष्ट रूप से चित्रित है। मानचित्र में निम्न मंगल की सीमा पर निर्दिष्ट 'आक्रमण' शब्द के नीचे का सारा क्षेत्र शुक्र पर्वत का है।

उच्च मंगल को शक्ति प्रदान करने वाले हैं—पृथक् अथवा संयुक्त चिह्न, नक्षत्र, त्रिकोण, वृत्त, एकमात्र उठती रेखा, त्रिशूल तथा वर्ग। पर्वत के विकारों को दर्शाने वाले तत्त्व हैं—आड़ी-तिरछी रेखाएं, गुणनचिह्न, द्वीप, बिन्दु अथवा जाल। इन विकारों का दोनों—स्वास्थ्य और चरित्र—से सम्बन्ध है। इन दोनों में से किस विकार का सम्बन्ध स्वास्थ्य से है और किस विकार का सम्बन्ध चरित्र से है, इस तथ्य का निर्णय नाख़ूनों के रूप-रंग आदि से होता है।

मंगल क्षेत्र में सारी रेखाओं का आड़ा-तिरछापन, नक्षत्र, गुण व चिह्न अथवा जाल आदि सम्बद्ध व्यक्ति की उत्तेजनशीलता, क्रोधावेश और चिड़चिड़ेपन में वृद्धि करने वाले होते हैं। मंगल के निम्न पर्वत पर उपलब्ध चिह्नों के जीवन रेखा पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना भी आवश्यक है। इसके लिए रेखाचित्र-113 दर्शनीय है।

मंगल के उच्च पर्वत की जानकारी से पूर्व मंगल क्षेत्र को इससे सम्बन्धित विकास का प्रमुख भाग माना जाता था, परन्तु उच्च पर्वत का पता चल जाने पर उसके महत्त्व को भी समझा जाने लगा और फिर समय बीतने पर शुक्र पर्वत के दो भाग करके ऊपरी भाग के जीवन रेखा के नीचे स्थित होने के कारण यह भाग निम्न मंगल पर्वत को दे दिया गया। अत: मंगलप्रधान व्यक्ति को सही रूप में समझने के लिए दोनों पर्वतों का और मंगल के क्षेत्र का संयुक्त रूप से अध्ययन अपेक्षित है। इनमें से किसी एक को छोड़ने से सही और पूर्ण भविष्यकथन सम्भव ही नहीं होगा।

यहां हमने मंगल पर्वत सम्बन्धी अध्ययन को यथासम्भव पूर्ण बनाने के लिए

मंगल के पूर्ण प्रतीकों के साथ-साथ अविकसित तथा अर्धविकसित व्यक्तियों को भी सम्मिलित किया है। इस प्रकार कई हज़ार व्यक्तियों के हस्तपरीक्षण के उपरान्त एक सूची तैयार की गयी है; क्योंकि इस वर्ग का अध्ययन करने के लिए यही एकमात्र शुद्ध और विश्वसनीय पद्धति है। इस प्रकार विश्व में सर्वाधिक जाने-पहचाने गये हज़ारों मंगलप्रधान व्यक्तियों के अध्ययन के परिणामों पर आधारित सामग्री को पूर्णत: प्रामाणिक और विश्वसनीय ही समझना चाहिए।
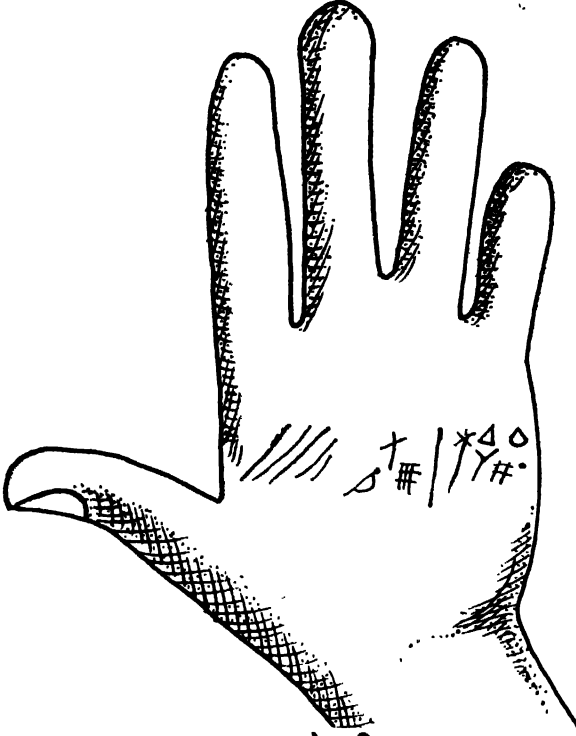
रेखाचित्र-113

मंगल पर्वतप्रधान व्यक्ति में प्रमुख रूप से आक्रमण और प्रतिरोध के तत्त्व पाये जाते हैं; क्योंकि वह एक योद्धा होता है। वह तलवार-पिस्तौल से खेलने तथा मुक्केबाज़ी और कुश्ती तक सीमित न रहकर विपरीत स्थितियों से जूझने और व्यवसाय-जगत् में अपने लिए स्थान बनाने वाला होता है। मंगलप्रधान व्यक्ति देश के हित में लड़ने-मरने के लिए प्रसन्नतापूर्वक सेना में भरती होने वाला तो होता है, परन्तु उसका क्षेत्र केवल यह नहीं। मंगल के विशुद्ध प्रतीक अन्य पर्वत-प्रतीकों की अपेक्षा अपने को दबाने वालों का सामना अधिक साहस और प्रबलता से करते हैं; क्योंकि वे आक्रमणशील प्रवृत्ति के होते हैं।

मंगल का थोड़ा-बहुत प्रभाव तो लगभग सभी हाथों में देखने को मिलता है।
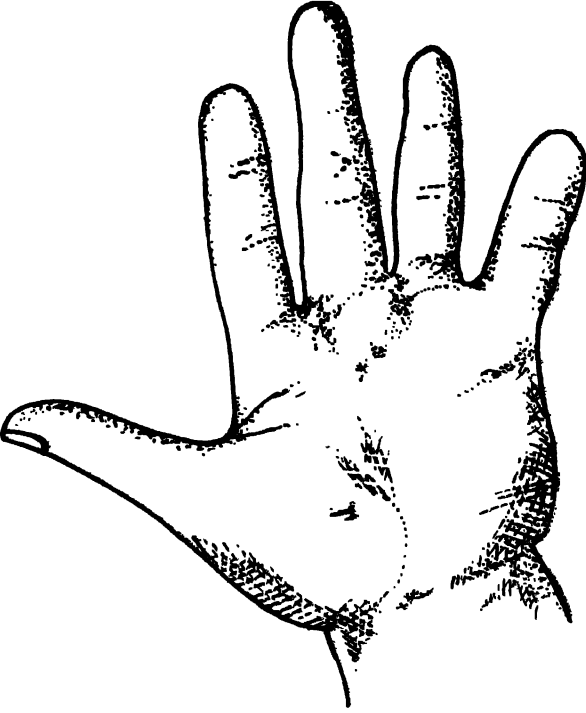
रेखाचित्र–114 व 115
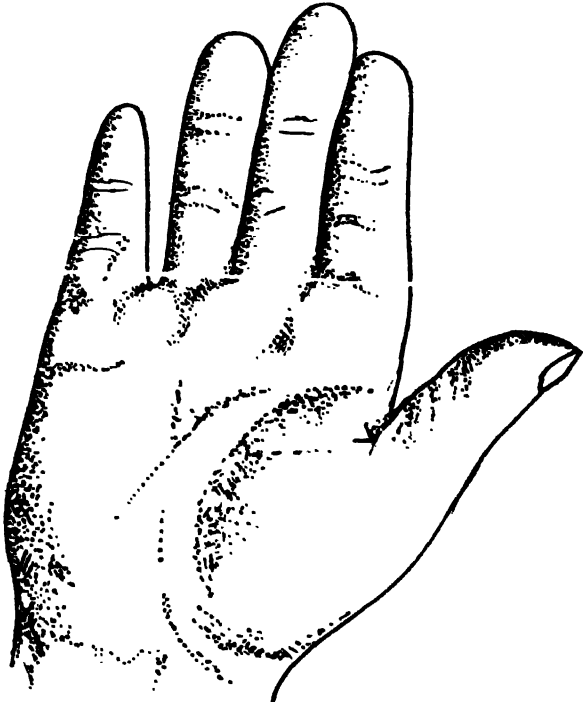
मंगल के प्रभाव को न लिये रहने वाला व्यक्ति तो अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर ही नहीं पाता, वह तो शीघ्र ही निरुत्साहित होकर अपनी हार मान लेता है। मंगल-प्रधान व्यक्ति की तो पहचान ही यह है कि उसमें आक्रमण और प्रतिरोध सम्बन्धी तत्त्व उन्नत तथा समृद्ध हों। इन दोनों—आक्रमण और प्रतिरोध—तत्त्वों से रहित व्यक्ति मेधावी और कुशाग्रबुद्धि होने पर भी दूसरों के पैरों तले कुचला जाता है। मंगल के गुणों—उत्साह और संघर्ष की प्रवृत्ति—के अभाव में तो व्यक्ति अपने गुणों को संसार के सामने लाने में कभी सफल ही नहीं हो सकता।

योद्धा दो प्रकार के होते हैं—1. आक्रमणशील और दूसरों पर आक्रमण करने वाले और 2. प्रतिरोधक, अर्थात् आत्मरक्षा के लिए लड़ने वाले अथवा दूसरों द्वारा अपने ऊपर डाले दबाव को सहन न करने वाले। मंगल की प्रतिरोध की द्योतक प्रवृत्ति को उच्च पर्वत में दिखाया गया है (रेखाचित्र-114)। इस प्रकार उच्च पर्वत प्रतिरोध का और निम्न पर्वत आक्रामकता का प्रतीक है (रेखाचित्र-115)। इन दोनों में एक पर्वत अत्यन्त विकसित और दूसरा छोटा होता है। विकसित पर्वत के अनुसार मंगल का प्रतीक व्यक्ति आक्रमणशील अथवा प्रतिरोधक प्रवृत्ति का होता है। कभी-कभी दोनों पर्वत समान अथवा न्यूनाधिक रूप में विकसित मिलते हैं। इस स्थिति में व्यक्ति दोनों—आक्रामकता और प्रतिरोध—क्षमताओं को लिये रहने के कारण पूरी दृढ़ता के साथ आगे बढ़ता है और वह किसी भी दबाव के आगे कभी झुकता नहीं है। दोनों—उच्च और निम्न—मंगल पर्वतों के विकसित रूपों को लिये रहने वाले व्यक्ति किसी भी बाधा को पार करने वाले और कभी अपनी पराजय को स्वीकार न करने वाले होते हैं।

दोनों विकसित पर्वतों को लिये रहने वाले व्यक्ति को ही मंगल का शुद्ध प्रतीक समझना चाहिए। मंगल के क्षेत्र के अधिक भाग के विकसित होने का और उस पर सूक्ष्म अथवा लाल रेखाएं होने का अर्थ है—व्यक्ति में संयम का अभाव है, वह बहुत ही जल्दबाज़ है। इसके साथ दोनों पर्वतों के विकसित होने को एक भयंकर संयोग ही समझना चाहिए; क्योंकि इससे आक्रामक और प्रतिरोधक शक्ति-सम्पन्न व्यक्ति के उत्तेजनशील होने का संकेत मिलता है।

आक्रामक गुणों का सम्बन्ध पहले समूचे मंगल क्षेत्र से माना जाता था, परन्तु अब यह सम्बन्ध निम्न पर्वत से जोड़ा जाता है। हस्तरेखाविशेषज्ञों ने अध्ययन, परीक्षण और अनुभव से यह निष्कर्ष निकाला कि अशक्त मंगल क्षेत्र वाले व्यक्ति के स्वभाव में अचानक आया चिड़चिड़ापन उसे अत्यधिक क्रोधी और प्रचण्ड आक्रामक बना देता है, परन्तु साथ ही ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही शान्त और संयत भी हो जाता है।

ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि सभी विघ्नों-बाधाओं और विरोधों से जूझते हुए शान्त मन से अपना रास्ता बनाना एक बात है और तनिक-सी बात पर पागलपन

के स्तर तक क्रोधाविष्ट हो जाना दूसरी बात है। इन दोनों स्थितियों में धरती-आकाश का अन्तर है। प्राचीन हस्तरेखाविशारदों ने इस आक्रामकता को नियन्त्रित करने वाली सभी शक्तियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

प्राचीन हस्तरेखाशास्त्रियों द्वारा खाली गड्ढेदार हथेली को विपत्ति लाने वाली, धन की हानि करने वाली तथा प्रत्येक कार्य को विफल करने वाली बताने के पीछे उनका उद्देश्य यही था कि हथेली का यह रूप आक्रामकता की अनुपस्थिति का सूचक है और अनाक्रामकता अथवा अकर्मण्यता के परिणामों का वैसा होना सुनिश्चित ही है। वस्तुत: यहां उन विद्वानों ने ख़ाली हथेली में आक्रमण के लिए स्थान न देखकर इस स्थिति को आक्रमण तथा क्रोध का नितान्त अभाव मानने की ग़लती कर दी, जबकि वास्तविकता यह है कि हथेली का ख़ाली गड्ढेदार होना किसी आतंक, भय एवं सन्त्रास के न होने का संकेत है। यही कारण है कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अत्यन्त सफल एवं विशिष्टताप्राप्त बहुत-से लोगों की हथेली ऐसी पायी जाती है।

प्राचीन हस्तरेखाशास्त्रियों ने निम्न मंगल पर्वत (रेखाचित्र-116) के अभाव को भी असफलता का प्रतीक माना है; क्योंकि उनके अनुसार आक्रामक शक्ति के अभाव के कारण ऐसा व्यक्ति अपने से निम्न स्तर के व्यक्ति से भी पराजित हो जाता है।

मंगल को तीन भागों--1. उच्च अथवा प्रतिरोधक मंगल, 2. निम्न अथवा आक्रामक मंगल तथा 3. मंगल का क्षेत्र, अर्थात् क्रोधावेश की स्थिति—के रूप-भेदों के आधार पर मंगलप्रधान व्यक्ति भी तीन प्रकार का हो सकता है। अत: विकास की अवस्था का परीक्षण करने पर व्यक्ति के मंगल रूप को पहचानना कठिन नहीं होना चाहिए।

बाहर से दखने में हाथ के किनारे पर वक्राकार लगने वाला उच्च मंगल पर्वत सुविकसित एवं सशक्त माना जाता है (रेखाचित्र-114)। इसका इतना अधिक पूर्ण होना कि हथेली पर भीतर की ओर गद्दी बन जाये, उच्च मंगल पर्वत के असामान्य रूप से प्रबल होने का सूचक है। हाथ के किनारे को सीधा और पर्वत वाले स्थान पर गड्ढा होना पर्वत के गुणों की अनुपस्थिति का सूचक है (रेखाचित्र-117)। मंगल पर्वत का विकसित न होना भीषण परिणाम लाने वाला होता है।

मंगल का ऊपरी पर्वत प्रतिरोध शक्ति देने वाला होता है, जिसका अर्थ है—व्यक्ति प्रत्येक स्थिति में शान्ति, संयम और सन्तुलन को बनाये रखने वाला है। वह अनुकूल परिणाम न मिलने पर भी निराश, कुण्ठित तथा उदास नहीं होता। ऐसा व्यक्ति सदैव संघर्ष करने में विश्वास रखता है। अत: गिरा दिये जाने पर इस चुस्ती और शीघ्रता से उठ खड़ा होता है कि कोई उसे गिरा हुआ देखने ही न पाये। किसी भी रूप में पराजय को स्वीकार न करने की यह मनोवृत्ति ही व्यक्ति को संघर्षरत
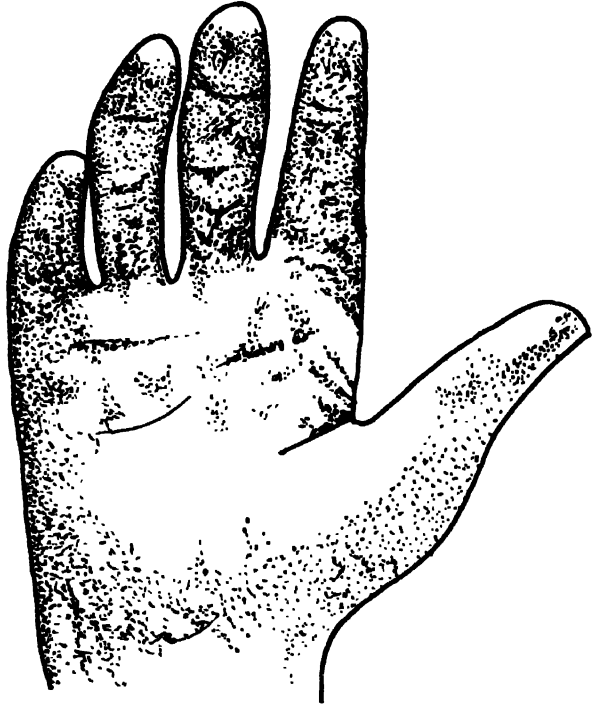
रेखाचित्र-116 व 117
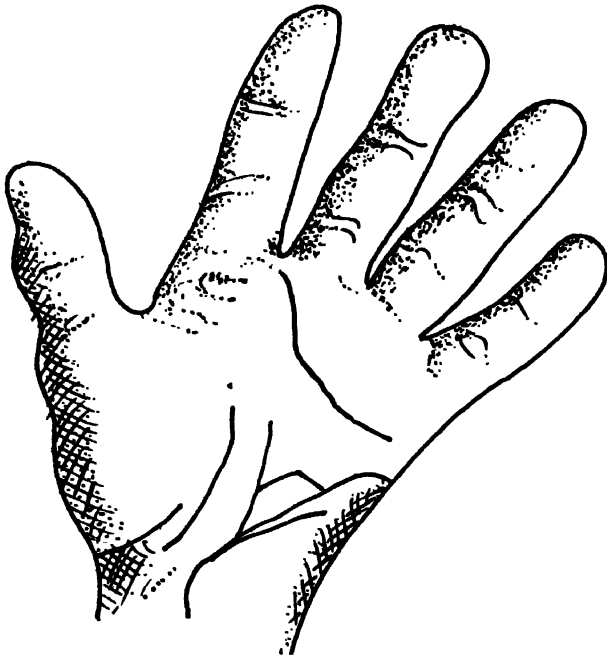
रहने तथा सभी बाधाओं से निरन्तर जूझते रहने को प्रवृत्त करती है। इसके विपरीत उच्च पर्वत की अनुपस्थिति तथा सपाट अथवा पिचका हुआ हाथ का किनारा लिये रहने वाला व्यक्ति शीघ्र निराश हो जाने वाला, दबाव के आगे हथियार डाल देने वाला तथा सामना करने की शक्ति न रखने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति संकट के क्षणों में उत्तेजित तो हो जाता है, परन्तु ज़रा-सा धक्का लगते ही धड़ाम से ऐसे गिरता है कि उठने की सोच ही नहीं पाता। वस्तुत: उसके मन में यह भावना घर कर जाती है कि वह असमर्थ है और उसके प्रयास का कोई परिणाम निकलने वाला नहीं। इससे प्रतिरोध शक्ति प्रदान करने वाले उच्च पर्वत के महत्त्व को भली प्रकार समझा जा सकता है। वस्तुत: इस शक्ति का अभाव मानव को सांस लेते हुए भी निर्जीव-जैसा बना देता है।

कभी-कभी निराश न होने वाला मूर्ख तथा साधारण व्यक्ति भी सफलता का मार्ग ढूंढ़ निकालता है—हाथ के परीक्षण में इस तथ्य की कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। लगभग सभी आत्महत्या करने वालों अथवा ऐसा प्रयास करने वालों के हाथों में मंगल पर्वत अपूर्ण-अविकसित ही पाया जाता है। केवल विकसित उच्च मंगल पर्वत वाला हाथ ही न कभी युद्ध-संघर्ष का मार्ग पकड़ता है और न ही किसी से तक़रार मोल लेता है। हां, वह निश्चित रूप से विरोध का सामना करता है, दबाव के आगे कभी नहीं झुकता और सभी प्रकार के दमन को दबाने में सफलता प्राप्त करके ही दम लेता है।

मंगल के निचले पर्व (रेखाचित्र-115) से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति अपने बल पर ही योजनाएं बनाता है, उन्हें व्यापक-विस्तृत रूप देता है और सफल बनाता है। उसमें विरोधों, विघ्नों और बाधाओं से जूझने की अद्‍भुत क्षमता होती है। ऐसा व्यक्ति संघर्षप्रिय और अध्यवसायी होने के साथ-साथ आक्रामक प्रवृत्ति का होता है। प्रबल उच्च पर्वत और अपूर्ण निचले पर्वत वाला व्यक्ति न केवल महाझूठा होगा, अपितु विरोध-प्रतिरोध करने की शक्ति से भी रहित होगा। यहां तक कि उत्तेजित किये जाने पर भी वह खड़ा नहीं रह पायेगा।

उपर्युक्त विवेचन से आक्रमण, प्रतिरोध और क्रोधावेश का अन्तर स्पष्ट हो जाने पर मंगल के प्रतिरूपों—आक्रामक, प्रतिरोधक तथा दोनों के मिश्रित अथवा संयुक्त रूप—को समझना सरल होगा। प्रतिरूपों के स्तर को समझने के लिए सम्बद्ध पर्वत के विकास की स्थिति को भी देखना होगा।

मंगलप्रधान व्यक्ति का क़द मंझोला और शरीर सुदृढ़-सुगठित होता है। उसके कन्धे पीछे की ओर, चाल-ढाल से अपनी रक्षा के प्रति सदैव सतर्क दिखने वाले, गोली के आकार का छोटा सिर और मस्तिष्क का निचला भाग असामान्य रूप से बड़ा होता है। उसकी ग्रीवा का पिछला भाग चौड़ा और सामान्य से कुछ अधिक

विकसित होता है। उसका चेहरा गोल, मोटी, दमदार और लाल रंग वाली होने से चितकबरी-जैसी दिखने वाली त्वचा, छोटे-रूखे अथवा लाल रंग के घुंघराले बाल, रूखी-छोटी दाढ़ी, बड़ी, निर्भीक, काली और चमकीली आंखें, आंखों का सफ़ेद भाग रक्त की आपूर्ति की प्रबलता का सूचक, रक्त-जैसी लाली लिये रहने वाला, बड़ा और मज़बूत मुंह, सामान्यतया पतले होंठ, निचला होंठ कुछ मोटा, छोटे, व्यवस्थित, सुदृढ़ एवं पीले दांत, आंखों के नीचे तक ढकती और क्रुद्ध मुद्रा को दिखाती घनी-सीधी उगी भौंहें, लम्बी-सीधी नाक, ठोस, सुदृढ़ और अन्त में थोड़ी-सी ऊपर को उठी ठोड़ी तथा सिर के पास टिके छोटे कान होते हैं। उसके शरीर के चारों ओर की त्वचा पर्याप्त लाल होती है, जो प्राय: बैगनी-सी लगती है।

मंगल के पूर्ण प्रतीक व्यक्तियों की गर्दन छोटी और मोटी, उनके कन्धे चौड़े, पुष्ट और शक्तिशाली और सीना चौड़ा होता है। उनके चौड़े सीने के भीतर, चौड़े और विशाल फेफड़े होते हैं तथा उनसे होकर आने वाली आवाज़ गूंजती हुई लगती है। उनकी टांगें छोटी, परन्तु पुष्ट-सुदृढ़, शरीर की अस्थियां बड़ी-सुदृढ़, पैर चौड़े और पिंडलियां सपाट होती हैं। इससे व्यक्ति की चाल में शान-शौक़त और निश्चिन्तता का भाव छलकता है। समग्र रूप से मंगल का प्रतीक व्यक्ति अपने को ऐसा सिद्ध करता है कि विश्व में वह अपने लिए अपने मार्ग की खोज करने में समर्थ है; क्योंकि उसके पास एक साथ दोनों—शारीरिक बल और बुद्धि बल— अपने समृद्ध रूप में होते हैं। मंगलप्रधान व्यक्ति वीर और साहसी होता है। लड़ाई-झगड़े अथवा वैर-विरोध से वह चिन्तित अथवा भयभीत नहीं होता। यही कारण है कि वह सैनिक के रूप में विशेष सफल रहता है। सेना में भरती शुद्ध मंगलप्रधान व्यक्ति शौर्य और पराक्रम का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वे अपने को सौंपे गये कार्य को पूरा करके ही दम लेते हैं और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजयी रहते हैं।

मंगलप्रधान व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट और मानसिक दृष्टि से स्फूर्ति-उत्साह से सम्पन्न होता है। वह अपने उत्तम स्वास्थ्य के कारण कभी किसी कार्य को अधूरा नहीं छोड़ता। वस्तुत: उसका अच्छा स्वास्थ्य उसे कभी अकर्मण्य होने ही नहीं देता। उसकी सफलता एक ओर उसकी निराशा और निरुत्साह को दूर करती है और दूसरी ओर उसके आत्मविश्वास में वृद्धि करती है। इससे उसकी आक्रामक शक्ति निरन्तर सक्रिय बनी रहती है।

मंगलप्रधान व्यक्ति सिपाही के रूप में उत्तम स्वास्थ्य और बलिष्ठ शरीर के कारण कभी थकावट महसूस नहीं करता। वह अपने विरोधी को कुचल कर ही चैन की सांस लेता है। वस्तुत: उसके पास इतनी अधिक शक्ति और ऊर्जा होती है कि वह जो एक बार ठान लेता है, उसे पूरा कर ही लेता है। उसकी एक विशेषता यह है कि उसे अपने सभी कार्यों में अपेक्षित सफलता मिलती है। इसके अतिरिक्त वह

धन के उपयोग में भी समझदारी का परिचय देता है। वह उदार अवश्य होता है, परन्तु केवल उपयोग और आवश्यकता की वस्तुओं की ख़रीद तक ही अपने को सीमित रखता है। उसके जीवन में अनावश्यक और अनुपयोगी सामग्री के लिए कोई स्थान नहीं होता। वह मित्र बनाने में रुचि ही नहीं रखता, अपितु मित्रों के प्रति अतिरिक्त निष्ठा और समर्पण का भाव भी रखता है। यहां तक कि उनके लिए धन ख़र्च करने और दूसरों से उनका बचाव करने में भी पीछे नहीं रहता। उसका व्यवहार सदैव शिष्ट और शालीन होता है। यदि कभी वह अभद्रता का परिचय देता हुआ पाया भी जाये, तो निश्चित समझिये कि यह उसकी किसी विवशता के कारण ही ऐसा होगा, किसी ऊंचे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ही उसे ऐसा करना पड़ा होगा। अपने विरोधी को पछाड़ने के लिए उसे उसके तौर-तरीक़े अपनाने पड़े होंगे। अत: स्पष्ट है कि मंगलप्रधान व्यक्ति सामान्यत: भद्र, शालीन और शिष्ट होता है, परन्तु परिस्थितियों के अनुरूप 'जैसा को तैसा' बनने में भी संकोच नहीं करता।

मंगलप्रधान व्यक्ति की चरित्रगत एक अन्य विशेषता यह है कि उसे समझाना-बुझाना और फुसलाना तो सम्भव है, परन्तु उसे डरा-धमका कर मैदान छोड़ने को विवश करना कदापि सम्भव नहीं। हृष्ट-पुष्ट शरीर और भरे-पूरे स्वास्थ्य का स्वामी होने के कारण मंगलप्रधान व्यक्ति अत्यधिक कामुक भी होता है। उसके उत्तेजित होने पर तो उसका आकर्षक रूप-सौन्दर्य देखते ही बनता है। वस्तुत: वह अपनी उत्कट भावना और तीव्र रक्तसञ्चार के कारण पूरी गहनता के साथ प्यार में डूब जाता है। उसका प्रणय-निमन्त्रण इतना प्रचण्ड और मोहक होता है कि उसकी प्रेयसी के लिए अपने ऊपर नियन्त्रण-संयम रखना असम्भव हो जाता है।

मंगलप्रधान व्यक्ति का स्वभाव शासन करने और अधिकार जतलाने का होता है। निचले पर्वत के विकसित होने पर उसकी यह प्रवृत्ति और अधिक तीव्र हो जाती है। विरोध इन्हें सर्वथा असह्य ही नहीं, आविष्ट करने वाला भी होता है। यही कारण है कि वह छोटी-छोटी बात पर शीघ्र प्रचण्ड रूप धारण कर लेता है और फिर लोगों को यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे व्यक्ति को छेड़ना कदापि निरापद नहीं। अत: वे उससे शालीन व्यवहार करने और उसके क्रुद्ध होने पर उसे शान्त करने में ही अपनी भलाई समझते हैं।

मंगलप्रधान व्यक्ति स्वस्थ-बलिष्ठ एवं हृष्ट-पुष्ट शरीर का होने के कारण पेटू भी होता है। वह गरिष्ठ भोजन—घी, दूध, मांस, मछली, अण्डा, काजू, बादाम और पनीर आदि—को खाने का शौक़ीन होता है। उसे अधिक शारीरिक शक्ति की अपेक्षा करने वाले खेलों—कुश्ती, कबड्डी तथा फुटबाल आदि—में भी विशेष रुचि होती है। वह अच्छा खिलाड़ी बनने का इच्छुक होने के साथ-साथ अनुशासन और नियमों का पालन करने वाला भी होता है।

मंगलप्रधान व्यक्ति के विचारों में संकीर्णता का अभाव होता है। वह क्रियाशील होने के कारण साहस और शक्ति की अपेक्षा रखने वाले कार्यों में रुचि लेने वाला होता है। बौद्धिकता और दार्शनिकता से उसे कुछ भी लेना-देना नहीं होता।

मंगलप्रधान व्यक्ति जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों—शिक्षा, व्यवसाय, सेना, राजकीय प्रशासन तथा पौरोहित्य आदि—में पाये जाते हैं। वस्तुतः उन्हें अतिरिक्त ऊर्जा को खपाने का अवसर जुटाने वाले कार्यों में लगाना ही अच्छा रहता है। वह सभी क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति से सभी लोगों को परिचित कराने की सामर्थ्य एवं योग्यता रखता है। उसके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति भी उससे प्रभावित हुए बिना रह नहीं पाते।

मंगलप्रधान व्यक्ति चित्रकार के रूप में अपने चित्रों के लिए युद्ध, आखेट तथा रोमांचक खेल-कूद के दृश्यों को ही चुनता है। पाठक के रूप में उसे युद्ध, संघर्ष और साहस की कहानियों को पढ़ना अच्छा लगता है। परम्परागत साहसपूर्ण कहानियों के आदर्श नायकों के रोमाञ्चक कृत्यों को पढ़ने में वह कभी नहीं ऊबता, उन्हें बार-बार पढ़ता और पढ़ना चाहता है। संगीतकार के रूप में उसे प्रेरणा, उत्साह और स्फूर्ति देने वाला संगीत पसन्द आता है। वह रग-रग में जोश और चुस्ती भरने वाली लयों, तालों और सुरों में रुचि रखता है।

वक्ता के रूप में वह युद्धों और साहसपूर्ण कार्यों की चर्चा से जुड़ी तथा श्रोताओं में साहस और वीरता का सञ्चार करने वाली भाषा का प्रयोग करता है। इस प्रकार वह जिस भी क्षेत्र को अपनाता है, उसमें उसकी प्रचण्डता अपने शिखर पर होती है और सभी लोगों पर अपनी अमिट छाप छोड़ती है।

मंगलप्रधान व्यक्ति की उग्रता और प्रचण्डता उसके चरित्र का एक दूषित पहलू ही है; क्योंकि अपनी इन्हीं चरित्रगत विशेषताओं के कारण वह 'अति' पर उतर आता है और ऐसे-ऐसे ग़लत काम कर बैठता है कि जिनका परिणाम अत्यन्त ही भयंकर होता है। निम्न स्तर के कार्य और प्रतिकूल वातावरण उसे इस प्रकार बुरी तरह से प्रभावित करते हैं कि वह लम्पट, नशेड़ी (शराब, गांजा, सुल्फ़ा का नशा करने वाला) ही नहीं, अपितु हत्यारा तक बन जाता है। इस प्रकार के व्यक्ति की पहचान कठिन नहीं होती। उसकी पहचान के कुछ लक्षण इस प्रकार से हैं—कठोर-सख़्त हाथ, गहरे लाल रंग वाली रूखी-मोटी त्वचा, बड़ी कोशिकाएं, छोटी अंगुलियां, अंगुलियों का तीसरा पर्व मोटा, छोटे-नाज़ुक नाख़ून, बहुत बड़े मंगल पर्वत, ऊंचा अथवा बुरी तरह कटा-फटा मंगल क्षेत्र, मंगल क्षेत्र में अनियन्त्रित स्वभाव का द्योतक बड़ा-सा गुणनचिह्न, चमचाकार अंगूठा और उसका कुन्दाकार प्रथम पर्व। दुष्ट प्रकृति के मंगलप्रधान व्यक्ति की पहचान के अन्य लक्षण हैं—छोटा क़द, गहरा लाल चेहरा, ख़ूनी आंखें, बैगनी अथवा चितकबरी आंखें, टेढ़ा-सा मुंह,

लाल-मटियाले बाल तथा लम्बे कान। ऐसा व्यक्ति प्रेम में धोखा दिये जाने पर धोखा देने वाले प्रेमपात्र की हत्या को उतारू हो जाता है और इसके लिए कुल्हाड़ी, चाकू-जैसे हथियारों का प्रयोग करता हुआ अपनी पशुता का परिचय देता है। वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए चोरी का आश्रय लेता अवश्य है, परन्तु न तो उसे इसमें आनन्द आता है और न ही वह भूख मिटाने-जैसी छोटी-मोटी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चोरी करता है।

मंगलप्रधान (निकृष्ट कोटि) व्यक्ति विवाह के लिए आतुर रहता है, वह रूपवती स्त्री का ही वरण करता है। सहज नारीत्व के गुणों से सम्पन्न स्त्री को पत्नी बनाने का इच्छुक होने से वह शुक्रप्रधान स्त्रियों को ही विशेष रूप से पसन्द करता है। उसका स्वास्थ्य साधारण होता है। वह जल्दी-जल्दी और बार-बार ज्वरग्रस्त होता रहता है। रक्त की आपूर्ति की प्रचुरता के कारण वह प्राय: ही रक्तदोष, कण्ठ-विकार तथा श्वास-कास रोगों से आक्रान्त रहता है। मंगल के उच्च पर्वत पर जाल अथवा आड़ी-तिरछी रेखाओं, हाथों के रंग, नाख़ूनों तथा अन्यान्य संकेतों से रोगों की स्थिति की जानकारी मिल जाती है। वस्तुत: स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के संकेत निचले मंगल पर्वत पर नहीं, ऊपरी मंगल पर्वत के निचले तीसरे भाग पर स्पष्ट ही देखने को मिलते हैं। चन्द्र पर्वत के ऊपरी तीसरे भाग से आन्त्र-विकार और क्षय रोग की जानकारी मिल जाती है।

मंगलप्रधान (निकृष्ट कोटि) व्यक्ति के हाथों के विभिन्न गुण—कोमलता, कठोरता, लचीलापन, त्वचा का रूप-रंग-सफ़ेदी, पीलापन और गुलाबी आदि भी उसकी पहचान में सहायक होते हैं। हाथों की उत्तमता और त्वचा के रूप-रंग की उत्कृष्टता उसके शालीन और प्रतिष्ठित होने के संकेत होते हैं तथा उसकी नीचता और पाशविकता के अभाव के सूचक हैं। इसका अर्थ है कि व्यक्ति स्वभाव से उग्र-प्रचण्ड अवश्य है, परन्तु परिस्थितियों ने उसे व्यवहार में भद्रता और शालीनता को अपनाने वाला बना दिया है।

सामान्यतया मंगलप्रधान व्यक्तियों की त्वचा का रंग घटिया ही पाया जाता है, फिर भी अपवाद के रूप में किसी-किसी की त्वचा उत्तम क़िस्म की मिलती है। मंगल के विशुद्ध प्रतिरूप एक ऐसे व्यक्ति से मेरी भेंट हुई, जिसकी त्वचा बढ़िया रूप-रंग की थी। वह बुद्धिजीवी होने के साथ मन्त्री भी था। एक अन्य मंगलप्रधान उत्तम त्वचा वाला सुप्रसिद्ध पहलवान भी देखने को मिला, जो अत्यन्त संयत, शिष्ट और शान्त प्रकृति का था (रेखाचित्र-118), परन्तु इन्हें एक प्रकार से अपवाद ही समझना चाहिए, अन्यथा मंगलप्रधान (उत्कृष्ट कोटि) व्यक्ति की त्वचा का रूप-रंग मध्यम स्तर का ही होता है। ऐसा व्यक्ति सभ्य समाज में उठने-बैठने वाला एवं पूरी तरह से सामाजिक कहलाता है। इस (मध्यम रूप-रंग वाली) त्वचा के साथ उच्च

पर्वत के प्रमुख और निचले पर्वत के मध्यम पाये जाने पर व्यक्ति बौद्धिक दृष्टि से सुसंस्कृत और प्रतिरोधक शक्ति से सम्पन्न होता है। उसमें अपेक्षित सन्तुलन लिये रहने वाली आक्रामकता होती है।
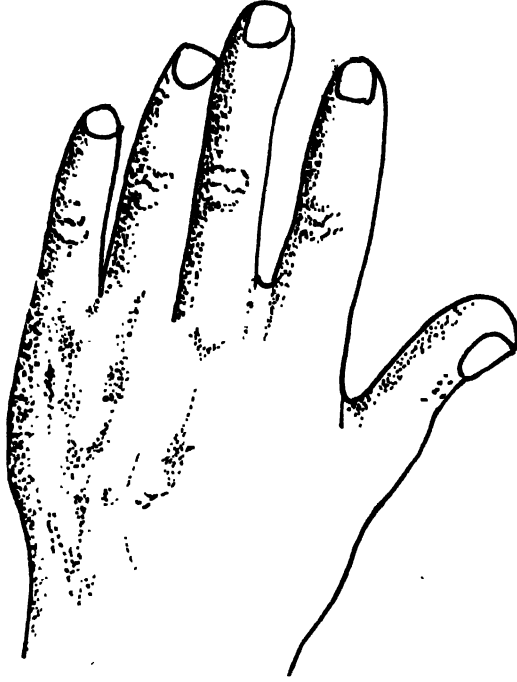
रेखाचित्र-118

घटिया त्वचा वाला मंगलप्रधान व्यक्ति अपनी उग्रता और धृष्ठता के कारण लोगों की उपेक्षा का पात्र बन जाता है। लोग उससे किनारा करना अधिक पसन्द करते हैं।

हाथ के लचीलेपन से मस्तिष्क के लचीले, व्यक्ति के सुसंस्कृत और उसकी मानसिकता के विकसित होने का संकेत मिलता है। ऐसा व्यक्ति उग्र और झगड़ालू तो नहीं होता, परन्तु अतिवादी अवश्य हो जाता है। वस्तुत: लचीले हाथों वाले व्यक्तियों के चरित्र में अपेक्षित लचीलापन कम ही देखने को मिलता है; क्योंकि वे चतुर, चालाक अवश्य होते हैं, परन्तु उनमें दूसरे लोगों-जैसी शीघ्रता से सोच पाने की क्षमता नहीं होती। हाथों का मध्यम लचीलापन मस्तिष्क के मध्यम लचीले रूप को और विपरीत स्थिति में भी सन्तुलन बनाये रखने की प्रवृत्ति का सूचक है। ऐसा व्यक्ति शान्त, संयत और सन्तुलित स्वभाव वाला होता है। ऐसा व्यक्ति उच्च मंगल पर्वत के प्रबल होने पर भी उग्र, क्रोधी एवं असन्तुलित होने नहीं पाता। हां, निम्न

पर्वत का बड़ा होना व्यक्ति को आक्रामक बना देता है।

मंगलप्रधान व्यक्ति के हाथों की कठोरता उसे मन्दबुद्धि और मन्दगति के साथ-साथ दुराग्रही बना देती है। झगड़ालू, हठी, ज़िद्दी और अड़ियल व्यक्तियों का हाथ कठोर ही होता है। हाथ के सामञ्जस्य से व्यक्ति के सक्रिय—संघर्ष-विरोध करने के गुणों के होने अथवा निष्क्रिय—इन गुणों के न होने—का पता चल जाता है। शिथिल हाथों वाला व्यक्ति अधिकांशत: आलसी, कभी-कभी भड़कने वाला परन्तु क्षण-भर में ही शान्त हो जाने वाला होता है। निचले पर्वत की प्रबलता का अर्थ है—व्यक्ति का उत्साह-स्फूर्ति सम्पन्न और आक्रामक वक्ता होना, परन्तु ऐसे वक्ता का वक्तव्य न तो नियमित होता है और ही क्रमबद्ध।

मंगलप्रधान व्यक्तियों के हाथ प्राय: शिथिल-सामञ्जस्य वाले नहीं होते। उनके हाथों की कोमलता निष्क्रियता का संकेत देती है, जिसे दृढ़ संकल्प से सक्रियता में ढाला जा सकता है। मंगलप्रधान व्यक्ति के हाथों की लचीली संगति सर्वाधिक वाञ्छनीय स्थिति है; क्योंकि ऐसा व्यक्ति सोच-समझकर काम करता है। वह अपने गुणों का उपयोग एक निश्चित सीमा में करता है। आलस्य से दूर रहने वाला ऐसा व्यक्ति आदर्श पुरुष होता है, जो श्रम को ही अपनी शक्ति मानकर उसकी एक प्रकार से उपासना करता है। हाथों की कठोरता इन गुणों को क्षीण कर देती है। कठोर हाथ बुद्धि की जड़ता और व्यक्ति की परिस्थितियों के अनुरूप ढलने की असमर्थता के सूचक हैं। निचले पर्वत का विकसित होना तो व्यक्ति की आक्रामकता को प्रचण्ड रूप देने वाला होने से स्थिति को शोचनीय एवं भयंकर बना देने वाला होता है।

हाथों का रूप-रंग भी विशेष संकेतक होता है। हृष्ट-पुष्ट व्यक्तियों के हाथों की लाली उनके शरीर में रक्त की पर्याप्तता, हृदय की दृढ़ता और ऊर्जा की सशक्तता का संकेत देती है। हाथों के गहरे लाल रंग का होने का अर्थ है—व्यक्ति का अत्यन्त उग्र और सभी सीमाओं का अतिक्रमण करने वाला एवं प्रचण्ड क्रोधी होने के अतिरिक्त कामुक के रूप में भी अतिवादी होना। इन लक्षणों—गहरे लाल हाथ—वाले व्यक्ति के बुरे श्रेणी का होने पर तो वह स्वार्थपूर्ति के लिए अपराध करने में भी संकोच न करने वाला होता है। हां, गुलाबी रंग इन गुण-दोषों की भीषणता को और इनसे होने वाले ख़तरों को कम कर देता है। गुलाबी रंग के हाथों वाला व्यक्ति अपेक्षाकृत कोमल, शान्त, संयत और सन्तुलित होता है।

मंगलप्रधान व्यक्ति के हाथों की सफ़ेदी का अर्थ है—व्यक्ति की शक्ति का समाप्तप्राय हो जाना। सफ़ेद रंग सशक्त मंगल को भी दुर्बल बना देता है। वस्तुत: सफ़ेद रंग के गुण लाल रंग के उत्कृष्ट गुणों के नितान्त विपरीत निकृष्ट होते हैं। वे हैं—निरुत्साह, निराशा, कुण्ठा और उदासीनता। रंग की यह सफ़ेदी रक्त-प्रवाह में कमी और उसके कारण स्वास्थ्य की विकृति की सूचक है। यहां पर पर्वत का

आकार भले ही विस्तृत और विकसित हो, परन्तु व्यक्ति की शिथिलता प्रचण्डता का रूप नहीं ले पाती। उसकी प्रतिरोध और आक्रमण करने की शक्तियां मन्द ही बनी रहती हैं।

मंगलप्रधान व्यक्तियों के हाथों का पीलापन कम ही देखने को मिलता है। यह रंग पित्त की अधिकता से उत्पन्न होने वाले स्नायु रोग का सूचक होता है। ऐसा पीले हाथों वाला व्यक्ति अत्यन्त नीच प्रकृति का होता है। वह एक प्रकार जन्मजात अत: शातिर अपराधी होता है। निचले पर्वत का सशक्त होना तथा मंगल की भूमि का उठा हुआ अथवा भरा हुआ होना व्यक्ति के कलहप्रिय (लड़ते-झगड़ते रहने वाला) होने का संकेत है। ऐसे व्यक्ति को सदैव लोगों से न्याय न मिलने, अपने प्रति अन्याय-अत्याचार करने तथा अपना दुरुपयोग करने की शिकायत बनी ही रहती है। वस्तुत: पित्त-विकार के विषम रूप ग्रहण करने पर रक्त विषाक्त हो जाता है और व्यक्ति परले दरजे का शैतान बन जाता है।

मंगलप्रधान व्यक्ति के नाख़ूनों का परीक्षण उसके चरित्र और स्वभाव को जानने में सहायक होता है। चौड़े नाख़ून व्यक्ति के शरीर के हृष्ट-पुष्ट होने का, पतले नाख़ून व्यक्ति के अधिक कोमल होने का और छोटे-कोमल नाख़ून व्यक्ति की कलह-प्रियता में उग्रता रहने का संकेत देते हैं। बहुत छोटे नाख़ूनों के साथ निचला पर्वत प्रबल रखने वाला व्यक्ति झगड़े का अवसर ढूंढ़ने वाला और प्रत्येक व्यक्ति से लड़ने के लिए कमर कसे रहने वाला होता है।

नाख़ूनों के रंग की भिन्नता भी व्यक्ति के चरित्र और स्वभाव की भिन्नता की द्योतक है। सभी रंग—लाल, गुलाबी, सफ़ेद, पीला और नीला—भिन्न-भिन्न गुण लिये रहते हैं। नाख़ूनों की रंगत से व्यक्ति के स्वास्थ्य की जानकारी में भी सहायता मिलती है। अत: रंग की जांच भी महत्त्वपूर्ण है। धारीदार और भुरभुरे नाख़ून व्यक्ति को स्नायु-विकार से ग्रस्त और ऐसे व्यक्ति से सम्बन्ध स्थापित करने को अत्यन्त कठिन बताते हैं। मंगलप्रधान व्यक्तियों का कण्ठ और श्वास के रोगों से ग्रस्त होना एक सामान्य स्थिति होने के कारण धारीदार और भुरभुरे नाख़ूनों वाले व्यक्तियों के इन रोगों की जांच करनी चाहिए और उन्हें सर्दी-ज़ुक़ाम आदि से बचने के लिए सावधान करना चाहिए।

हाथ पर उगे बालों का रंग भी व्यक्ति के चरित्र और स्वभाव की जानकारी में सहायक होता है। बालों का लाल रंग इस तथ्य का प्रमाण है कि व्यक्ति शीघ्र ही क्रोध के आवेश में आ जाने वाला तथा अपने ऊपर संयम रखने में असमर्थ होता है। निचले पर्वत के सशक्त होने पर तो लाल बालों वाला व्यक्ति अत्यन्त भयंकर सिद्ध होता है। ऐसा व्यक्ति हिंसक भी बन सकता है। बालों का कपिश रंग यह संकेत देता है कि व्यक्ति का स्वभाव उग्र तो है, परन्तु उसमें लाल रंग वाली प्रचण्डता नहीं।

सुनहरा रंग उग्रता और क्रोध में न्यूनता होने का सूचक है। यह अन्य किसी भी रंग की अपेक्षा व्यक्ति को अपने क्रोधावेश पर संयम करने में अधिक समर्थ होने का संकेत देता है। बालों का श्याम वर्ण व्यक्ति के उत्साही, स्फूर्तिवान् और सजीव होने का तथा मंगल के सहज गुणों को तीव्र-प्रचण्ड बनाने का सूचक है।

इस प्रकार पूरे हाथ के परीक्षण से व्यक्ति के स्वभाव, चरित्र, स्वास्थ्य, अच्छे-बुरे गुणों के साथ-साथ उसकी मानसिकता और व्यावहारिकता आदि की जानकारी के रूप में व्यक्ति को उसके समग्र रूप में समझना सरल हो जाता है।

चारों अंगुलियों के विभिन्न पर्वों के सम्बन्ध में मस्तक रेखा, अंगुलियों की लम्बाई और हाथ के सामान्य स्तर पर भी ध्यान देना चाहिए। समग्र हाथ द्वारा मानसिकलोक के प्रभावी सूचित करने वाली चारों अंगुलियों के प्रथम पर्व से पुष्टि हो जायेगी। इसके उपरान्त मस्तक रेखा पर विचार करना चाहिए कि वह स्पष्ट, सुचिह्नित और रंगीन है अथवा नहीं। यदि है, तो ऐसा संयोजन यह सिद्ध करता है कि व्यक्ति मानसिकलोक के वश में रहने वाला है, अर्थात् उसकी बौद्धिकता पूर्ण रूप से विकसित है और वह वकील, मन्त्री, राजनेता अथवा उच्च स्तर का वक्ता अथवा इस प्रकार के अन्यान्य व्यवसायों में सफलता और ख्याति प्राप्त करने वाला होगा। हाथ के मध्य भाग का सर्वाधिक विकास व्यक्ति के व्यवहार जगत् की प्रबलता का संकेत है। ऐसा व्यक्ति व्यापार-धन्धे में अपने गुणों—उत्साह, स्फूर्ति, लगन और परिश्रम आदि—से अत्यधिक सफलता प्राप्त करने वाला होगा। वह निराशा और असफलता-जैसे शब्दों से नितान्त अपरिचित होगा। हाथ के निचले-तृतीय भाग के विकास का अर्थ व्यक्ति की निकृष्टता और तुच्छता का इस परिणाम में बढ़ जाना है कि व्यक्ति नीचता के स्तर तक पहुंच जाता है। ऐसा व्यक्ति अपराध करने में भी संकोच नहीं करता। वह व्यापार में सफल तो रहता है, परन्तु उसकी रुचियां निम्न स्तर की ही होती हैं, जिससे वह लोगों के तिरस्कार का पात्र ही बनता है। इसी प्रकार अन्य गौण पर्वतों के सर्वाधिक तथा सामान्य रूप से विकसित तथा अविकसित पक्षों पर ध्यान देने से व्यक्ति के सशक्त गुणों को सक्रिय बनाने वाली शक्तियों की जानकारी पाना सम्भव हो जायेगा। इस अध्ययन में पर्वतों और अंगुलियों के पर्वों पर एक समान ध्यान देना अपेक्षित है।

मंगलप्रधान व्यक्ति के पैने छोर उसके बुरी तरह से आदर्शवाद से ग्रस्त होने, अर्थात् अव्यावहारिक और कम विश्वसनीय होने के सूचक हैं। ऐसा व्यक्ति बिना भली प्रकार सोच-विचार किये ही किसी उद्यम को अपना लेता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि बिना विचार किये छलांग लगाने का परिणाम कदापि सुनिश्चित नहीं होता। सशक्त मंगलप्रधान व्यक्तियों की अंगुलियों के छोर प्रायः पैने-नुकीले नहीं होते। नुकीले छोर कहीं-कहीं इसलिए दिखाई दे जाते हैं; क्योंकि मंगलप्रधान

व्यक्ति सुन्दरता का उपासक और सुन्दर पदार्थों में रुचि लेने वाला होता है, अन्यथा अधिकांश मंगलप्रधान व्यक्तियों की अंगुलियों के अग्रभाग वर्गाकार ही मिलते हैं, जो किसी भी व्यवसाय में उसके व्यावहारिक होने का स्पष्ट संकेत देते हैं। चमचाकार छोर उसके अत्यधिक क्रियाशील और इस उतावलेपन के कारण उसे कभी-कभी ख़तरा मोल लेने वाला सिद्ध करते हैं। निचले मंगल पर्वत और चमचाकार छोरों के अन्य गुणों को मौलिकता के साथ जोड़ देने पर एक ऐसे व्यक्ति की छवि उभर कर सामने आयेगी, जो न केवल क्रियाशील और आक्रामक होगा, अपितु अपने बल-सामर्थ्य को बढ़ाने के लिए सदैव नये व मौलिक तरीक़े खोज निकालने वाला तथा पुराने कामों को नये ढंग से करने की अपनी सनक में अपने आस-पास के पदार्थों को बिगाड़ लेने वाला भी होगा। हां, चमचाकार छोरों के साथ उत्तम मस्तक रेखा की स्पष्ट स्थिति होने पर व्यक्ति इस स्तर पर संयमी और विवेकशील होता है कि वह एक महान् अनुसन्धाता, प्रतापी लोकनायक, प्रभावी सेनाध्यक्ष तथा सफल व्यापारी के रूप में प्रसिद्ध-प्रतिष्ठित होता है।

गांठदार अंगुलियों से व्यक्ति के तर्क और विश्लेषण के प्रभाव में होने का संकेत मिलता है। विकसित प्रथम गांठों वाला व्यक्ति असाधारण बुद्धिमान् विकसित मानसिकता वाला और उत्कृष्ट ज्ञान का धनी होता है। विकसित द्वितीय गांठों वाला व्यक्ति अपनी वेशभूषा, अपने परिवेश तथा कार्यस्थल की स्वच्छता और सुव्यवस्था पर विशेष ध्यान देने वाला तथा अपने प्रत्येक कार्य एवं प्रत्येक गतिविधि में नियम और शालीनता को अपनाने वाला होगा। दोनों—प्रथम और द्वितीय—ही गांठों के विकसित रूप को लिये रहने वाला व्यक्ति जीवन में आवेश के स्थान पर सोच-समझ और सूझ-बूझ को महत्त्व देने वाला होगा।

चिकनी अंगुलियां व्यक्ति को सौन्दर्य-प्रेम में अग्रसर, आवेगशील और द्रुतगामी बनाने वाली होती हैं। ऐसा व्यक्ति अधिक सोच-विचार करने के झंझट में न पड़कर अपने मन में आये विचार को कार्यरूप देने में जुट जाने वाला होता है। वह सुन्दर वस्त्रों, पुष्पों और युद्धों को सजीव रूप देने वाले चित्रों और भावों को उद्वेलित करने वाले संगीत में रुचि लेने वाला होगा।

मंगलप्रधान व्यक्ति के लिए चिकनी अंगुलियां अवाञ्छनीय मानी जाती हैं; क्योंकि इस वर्ग का व्यक्ति स्वभाव से स्वतन्त्र एवं स्वेच्छाचारी होता है। उसकी इस प्रवृत्ति में उत्तरदायित्वहीनता के जुड़ते ही उसके उद्दण्ड और निरंकुश बनने की सम्भावना को नकारा नहीं जा सकता। अंगुलियों का चिकनी होने के साथ उनका मंगल पर्वत भरपूर विकसित होने पर व्यक्ति के हाथ में आत्मसंयम प्रदान करने वाली मस्तक रेखा बहुत ही स्पष्ट दिखाई देती है।

मंगलप्रधान व्यक्ति के लिए गंठीली अंगुलियां (अंगुलियों पर गांठों का होना)

इसलिए शुभ माना जाता है; क्योंकि ऐसा व्यक्ति सावधान रहने वाला और सूझ-बूझ से कार्य करने वाला होता है, परन्तु इस वर्ग (मंगलप्रधान) के व्यक्ति के स्वभाव से ही आवेगशील होने के कारण इसकी अंगुलियां प्राय: चिकनी ही मिलती हैं।

लम्बी अंगुलियों वाला मंगलप्रधान व्यक्ति छोटी-से-छोटी बात की भी उपेक्षा न करने वाला व अत्यन्त सावधान प्रकृति का होता है। एक सैनिक के रूप में वह अपनी योजनाओं में सावधानी बरतने वाला, अपने तथा अधीनस्थों के शस्त्रास्त्रों की गहरी जांच-परख करने वाला तथा सहकर्मियों के लिए आवश्यक सुख-सुविधाएं जुटाने वाला होगा। कार्यकुशलता से जुड़ा कोई भी तथ्य उसके ध्यान में छूट नहीं पायेगा। वह दूसरों पर विश्वास करने अथवा निर्भर रहने की अपेक्षा स्वयं प्रत्येक गतिविधि के सञ्चालन की व्यवस्था करेगा और समय-समय पर व्यवस्था की समीक्षा करेगा।

इस प्रकार लम्बी अंगुलियों वाला मंगलप्रधान व्यक्ति कभी आवेश-आवेग को नहीं अपनाता, वह प्रत्येक कार्य को सोच-समझकर और धीमी गति से करता है तथा अपनी ओर से पूरी सावधानी बरतता है। प्रत्येक विवरण की गहरी छान-बीन करने की प्रवृत्ति वाला होने के कारण उसकी आक्रामकता में भी प्रचण्डता नहीं होती। छोटी-से-छोटी बात को पूरा करने की चिन्ता लिये रहने के कारण लम्बी अंगुलियों वाला मंगलप्रधान व्यक्ति निचले पर्वत के सशक्त गुणों का उपयोग करने में भी पिछड़ जाता है।

छोटी अंगुलियों वाला मंगलप्रधान व्यक्ति बिना सोचे-समझे किसी भी कार्य को निपटाने में लग जाने वाला, अत: या तो एक के बाद एक ग़लतियां करने वाला या फिर असफलता का मुंह देखने से उग्र-प्रचण्ड रूप धारण कर लेने वाला होता है। बहुत छोटी अंगुलियों के साथ बड़ा निम्न पर्वत रखने वाला व्यक्ति केवल लक्ष्य पर दृष्टि केन्द्रित करने वाला, बीच की किसी भूल-भुलैया में न पड़ने वाला, त्वरित सोच पाने वाला, आवेगशील और आक्रामक प्रवृत्ति का होता है। वह कभी दूसरों की भावनाओं की परवाह नहीं करता। वह तो अपने से छोटे-दुर्बल साथियों को आवश्यकता के अनुरूप डरा-धमकाकर अथवा मनुहार-पुचकार कर अपना उल्लू सीधा करने में विश्वास रखता है। आवश्यकता से अधिक उत्साह, स्फूर्ति और ऊर्जा से परिपूर्ण तथा स्वार्थी होने के कारण ऐसा व्यक्ति ख़तरनाक समझा जाता है। ऐसे व्यक्ति को अपने प्रतिद्वन्द्वी के अधिक शक्तिशाली, संयत और सोच-समझकर कार्य करने वाला, अत: किसी भी समय पटकनी दे सकने वाला होने की आशंका सदैव सताती रहती है। इस प्रकार छोटी अंगुलियों वाला मंगलप्रधान व्यक्ति किसी भी समय घुटने टेकने को विवश हो सकता है।

छोटी अंगुलियों वाले मंगलप्रधान व्यक्ति का अंगूठा व्यक्ति की संकल्पशक्ति

का सूचक होता है। उत्तम क़िस्म का अंगूठा व्यक्ति के सभ्य-शालीन होने का तथा पशु बल का प्रयोग न करके युक्ति से काम लेने वाला होने का संकेत देता है। मंगल-प्रधान व्यक्ति का अंगूठा सामान्य रूप से कोमल न होकर सुदृढ़ और शक्तिशाली ही होता है। अंगूठे का प्रथम पर्व चप्पू-जैसा चौड़ा और द्वितीय पर्व कटि के आकार का होता है। उच्च कोटि के मंगलप्रधान व्यक्तियों के पर्व यह संकेत देते हैं कि व्यक्ति तार्किक, व्यावहारिक और दृढ़निश्चयी है। निम्न पर्वत का बड़ा होना व्यक्ति की पशुवृत्ति को तो घटा देता है, परन्तु उसकी आक्रामकता में कमी नहीं ला पाता। छोटे अंगूठे जहां व्यक्ति के छोटी-मोटी बात पर भड़कने और धौंस देने वाला, परन्तु अपने से अधिक बलवान् के आगे तत्काल हथियार डाल देने वाला होने का संकेत देते हैं, वहां बड़े-लम्बे अंगूठे व्यक्ति के बलवान् होने के सूचक होते हैं। पैने-नुकीले अंगूठे व्यक्ति को एक ओर प्रभावशाली और दूसरी ओर भौतिक दृष्टि से दुर्बल सिद्ध करते हैं। अंगूठे का पैनापन निम्न पर्वत की प्रबलता को भी विफल कर देता है।

अंगूठे के अग्रभाग का वर्गाकार अथवा चमचाकार रूप सूझ-बूझ को बढ़ाने वाला तथा इच्छाशक्ति को सक्रिय एवं मौलिक रूप देने वाला होने का सूचक है। कुन्देदार अंगूठा पाशविकता का द्योतक होता है। ऐसा अंगूठा निर्दयता और नृशंसता के सजीव उदाहरण हत्यारों के हाथ में देखने को मिलता है। यहां यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि हाथ के कठोर और लाल रंग वाला होने तथा अंगुलियों के और उनके प्रथम पर्वों के छोटा होने के साथ ही अंगूठे का कुन्दाकार होना व्यक्ति के अत्यन्त क्रूर, थोड़ी-सी बात से भड़कने और जघन्य अनर्थ करने वाला होने के लक्षण हैं। सभी प्रकार के हाथों पर पाये जाने वाला कुन्दाकार अंगूठा व्यक्ति के पशु स्तर पर नीच होने का पक्का प्रमाण है। यह बात अलग है कि वह पशुता उसे विरासत में मिली है अथवा उसकी यह निजी विशेषता अथवा उपलब्धि है। इतना तो निश्चित है कि वह एक अत्यन्त भयंकर स्थिति है। अत: ऐसे व्यक्ति से यथासम्भव बचकर रहने में ही भलाई है।

व्यक्ति की मस्तक रेखा का स्पष्ट, सीधा और एक रंग वाली होने का अर्थ है—व्यक्ति में इतना अधिक विवेक और संयम है कि वह अपने इन सद्गुणों से प्रचण्ड एवं क्रूर स्वभाव वाले मंगलप्रधान व्यक्ति को नियन्त्रित करने में सफल होता है। यहां केवल विचारणीय यह होता है कि व्यक्ति में स्पष्ट मस्तक रेखा वाले गुण विद्यमान हैं भी कि नहीं?

मंगलप्रधान व्यक्ति सदैव लड़ने के लिए तत्पर रहता है। वह दोनों—शारीरिक तथा मानसिक-स्तरों पर अपना विरोध दर्ज करता है—यह एक निर्भ्रान्त तथ्य है। इन्हीं तथ्यों के सन्दर्भ में मुख्य बातों को ध्यान में रखते हुए ही सम्बद्ध व्यक्ति में मंगल के प्रभाव की सीमा का निर्धारण करना चाहिए। इससे उसकी गतिविधि को समझना और बताना सरल एवं सुगम हो जायेगा।

*

24
चन्द्र पर्वत

छठा पर्वत-प्रकार चन्द्रमा में वास करने वाला चन्द्र पर्वत है। इसकी पहचान कराने वाले हाथ के भाग के चन्द्र पर्वत कहलाने के कारण ही इस पर्वत-प्रकार का उक्त नाम पड़ा है। इसकी शक्ति को बढ़ाने वाले तत्त्व हैं—अलग-अलग अथवा मिले-जुले चिह्न, नक्षत्र, त्रिकोण, वृत्त, एकमात्र उठती हुई रेखा, वर्ग अथवा त्रिशूल। इस पर्वत के दोषों के सूचक तत्त्व हैं—जाल, गुणनचिह्न, तिरछी रेखाएं, द्वीप, बिन्दु अथवा नक्षत्रों के विकृत रूप। इन तत्त्वों का सम्बन्ध हाथ के रंग, नाख़ून तथा अन्यान्य भागों में होता है, जिनसे सम्बद्ध व्यक्ति के स्वास्थ्य और चरित्र सम्बन्धी विकारों-दोषों का पता चलता है (रेखाचित्र-119)।

चन्द्र पर्वत की पहचान एवं परख के लिए हाथ के बाहर की ओर उसके मोड़ अथवा घुमाव पर तथा हथेली के भीतर बनी गद्दी के आकार को देखना चाहिए। बाहर की ओर उभार का दीखना पर्वत का सुविकसित होना है (रेखाचित्र-120)। हाथ के भीतरी भाग पर बड़ी-सी गद्दी बनने की अथवा हाथ के भीतरी भाग का मोटा होने की स्थिति पर्वत की अत्यधिक प्रबलता की सूचक है। दोनों—बाहर के उभार का तथा मोटी गद्दी—का सामान्य से कहीं अधिक बड़ा होने को व्यक्ति पर चन्द्र के प्रभाव की व्यापकता का संकेत समझना चाहिए (रेखाचित्र-121)। पर्वत पर रेखाओं का उठाव व्यक्ति में चन्द्र की शक्ति की वृद्धि का सूचक है। इसी प्रकार पर्वत पर रेखाओं का होना दोषों को उजागर करता है। पर्वत की लम्बाई तक अथवा उसके समीप तक पहुंचती प्रगाढ़ रेखा तो अतिरिक्त शक्ति देने वाली होती ही है, लम्बाई तक चलती कई रेखाएं भी शक्ति में वृद्धि करने वाली होती हैं। इसके अतिरिक्त पर्वत में सुविकसित एवं शक्तिशाली रहने वाली रेखाएं हथेली में सपाट पर्वत पर भी उसी रूप में, अर्थात् विकसित तथा शक्तिशाली रहती हैं। बाहर की ओर उभार तथा हथेली के भीतर बड़ी गद्दी पर गहरी और सुस्पष्ट रेखा अथवा रेखाओं का होना यह संकेत देता है कि व्यक्ति विकास की चरम सीमा तक जा सकता है।

चन्द्र पर्वत को तीन भागों में विभाजित किया जाता है—उच्च, मध्यम तथा
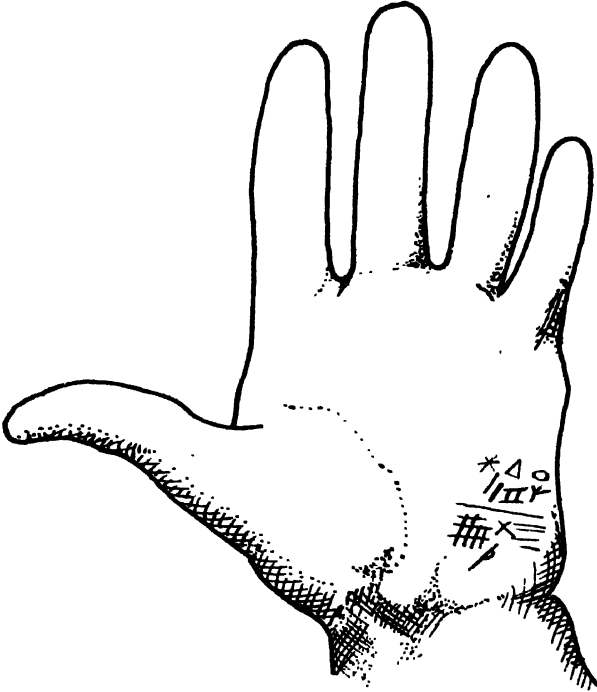
रेखाचित्र-119 व 120
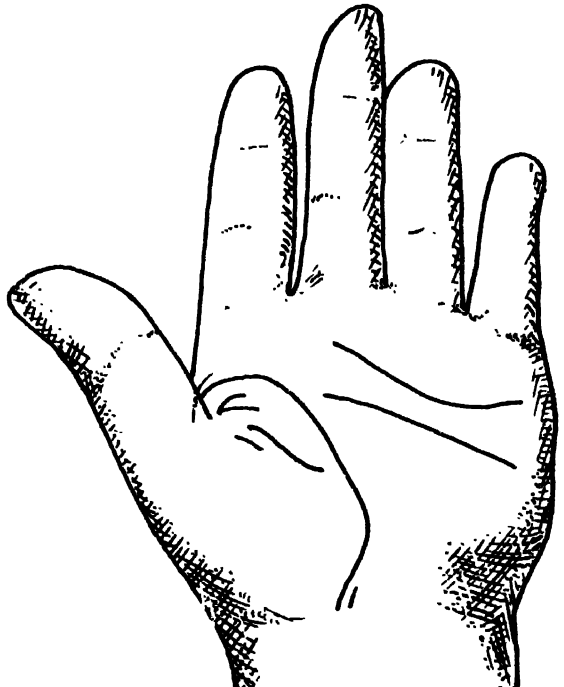
निम्न। इस विभाजन का आधार है—गुणों का स्वरूप तथा अंगुलियों के तीन लोक। ये तीनों भाग अपने-अपने वर्ग के व्यक्तियों के स्वास्थ्य एवं चरित्र-सम्बन्धी स्थिति की जानकारी कराने में सहायक होते हैं।

निम्नोक्त तत्त्व व्यक्ति के स्वास्थ्य में दोष-विकार के सूचक हैं—पर्वत पर जाल अथवा आड़ी-तिरछी रेखाएं, विकृत नक्षत्र, विकृत द्वीप, विकृत बिन्दु तथा शृंखला के समान अथवा लहरदार रेखाएं। इन लक्षणों को देखने के उपरान्त स्वास्थ्य की सूचना देने वाले अन्य तत्त्वों—हाथों का रूप-रंग, नाख़ून, जीवन रेखा तथा बुध रेखा की परख भी अवश्य करनी चाहिए। स्त्री रोगों के चन्द्र से सीधे प्रभावित होने के कारण स्त्रियों के रोगों की स्थिति को जानने के लिए चन्द्र पर्वत से जुड़े स्वास्थ्य-विकारों की जानकारी आवश्यक है।

चन्द्र पर्वत के तीनों—उच्च, मध्यम तथा निम्न—भाग स्वास्थ्य सम्बन्धी पृथक्-पृथक् समस्याओं की जानकारी कराते हैं। जिस किसी भाग में दोष-विकार के दिखने पर पर्वत के उस भाग से जुड़ी स्वास्थ्य समस्या के होने का निश्चय हो जाता है। इससे व्यक्ति के स्वास्थ्य में आये विकार का ही नहीं, अपितु विकार के कारण का भी पता चल जाता है।

हाथ के किनारे पर विद्यमान आड़ी रेखाओं को यात्रा रेखाएं मानने की ग़लती प्रचलित रही है। इसी सन्दर्भ में खड़ी रेखाओं को जलमार्ग से और तिरछी रेखाओं को भू-मार्ग से व्यक्ति के पर्यटन का संकेत माना जाता रहा है। इस मान्यता का आधार प्राचीन हस्तरेखाशास्त्रियों की चन्द्र प्रकार के व्यक्ति की जल में विशेष रुचिशील होने के कारण स्वभाव से ही उसके स्नायविक एवं अधीर होने तथा फलत: परिवर्तन के लिए पर्यटन-प्रेमी मानने की अवधारणा थी। उनकी इस अवधारणा के अनुसार चन्द्र पर्वत पर अवस्थित गाढ़ी रेखाएं व्यक्ति को पर्यटन के लिए उत्तेजित करती हैं और अवसर पाते ही व्यक्ति यात्रा को निकल पड़ता है। इस प्रकार चन्द्र पर्वत पर अवस्थित खड़ी रेखाएं व्यक्ति की स्थलमार्ग की अपेक्षा जलमार्ग से यात्रा को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति को पुष्ट करती हैं। प्राचीन हस्तरेखाशास्त्रियों द्वारा सीधी तथा खड़ी रेखाओं को यात्रा का संकेत मानने के पीछे उनकी उपर्युक्त धारणा ही उत्तरदायी रही है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति का स्वास्थ्य प्राय: शिथिल ही रहता है। प्राचीन हस्तरेखाविदों ने जिस प्रकार पुरुषों के सम्बन्ध में तिरछी-खड़ी रेखाओं का यात्रा का सूचक मान लिया, उसी प्रकार स्त्रियों के सम्बन्ध में भी रोग-सूचक इन रेखाओं को कहीं यात्रा का सूचक नहीं मान लेना चाहिए। अभिप्राय यह है कि वस्तुत: तिरछी अथवा खड़ी रेखाएं स्वास्थ्य की विकृति को दर्शाती हैं। अन्य वैसे किसी चिह्न के न होने पर भी केवल हाथ के समूचे बाहरी भाग के तिरछी रेखाओं से भरा मिलने को व्यक्ति के

अनेक—एक से अधिक—रोगों से ग्रस्त होने का, सदैव रोगों से घिरने से शंकित एवं आकुल-पीड़ित रहने का पुष्ट प्रमाण समझना चाहिए। वस्तुतः इस स्थिति—हाथ के बाहरी भाग पर तिरछी रेखाओं का घेराव—को रोगों के आने की पूर्व-सूचना ही समझना चाहिए। वैसे बूढ़े लोगों के हाथों पर दीखने वाली ये रेखाएं उनके प्रायः रोग-पीड़ित होने का ही प्रमाण हैं। युवकों के प्रायः स्वस्थ-पुष्ट होने के कारण ये रेखाएं दिखाई नहीं देतीं, परन्तु व्यक्ति की आयु बढ़ने पर और शरीर के क्षीण-दुर्बल होने पर इन रेखाओं का उभार स्पष्ट दिखाई देने लगता है।

ऊपरी मंगल पर उभरी तिरछी रेखाएं मंगल पर्वत से सम्बद्ध रोगों—कास (गले), श्वास, आन्त्रशोथ और रक्त-विकार आदि दोषों—को तथा चन्द्र पर्वत पर उभरी ये तिरछी रेखाएं चन्द्र से जुड़े रोगों—कण्ठ से गुर्दों एवं मूत्राशय तक, अर्थात् पूरी संरचना में आये विकारों—को व्यक्त करती हैं। हथेली के किसी भाग पर तिरछी रेखाओं की अधिकता और जीवन रेखा का फैलाव होने पर नाख़ूनों का आकार और रूप-रंग स्वास्थ्य में आने वाले विकार का संकेत दे देते हैं। इस प्रकार चन्द्र पर्वत के अधिक स्पष्ट चिह्नों वाले भागों को भली प्रकार से देखने पर यह भविष्यकथन करना सम्भव हो जाता है कि कौन-सा कोमल अंग पहले प्रभावित होने वाला है। इस सम्बन्ध में 'रेखाओं के अध्ययन' में विस्तृत चर्चा की जायेगी।

निस्सन्देह चन्द्रप्रधान व्यक्ति का शुद्ध रूप विरलता से मिलता है, परन्तु उसका नितान्त अभाव नहीं होता। इसके प्रतीकात्मक गुण तो लगभग सभी प्रकारों में पाये जाते हैं। चन्द्रप्रधान व्यक्ति यथार्थ जगत् की अपेक्षा कल्पनालोक में विचरण करने वाला तथा संसारी बनने में अधिक रुचि न रखने वाला, एक प्रकार से अन्तर्द्रष्टा होता है। यह एक उत्कृष्ट चिन्तन शैली है, जो साधारण प्राणियों के जीवन में नहीं पायी जाती। इसी गुण से व्यक्ति मानसिक चित्रों की रचना में समर्थ हो पाता है। चन्द्र पर्वत अपने चिह्नों से व्यक्ति को अर्थग्रहण में सक्षम बनाता है और इसी क्षमता से मनुष्यों में बोलने और विचार-विनिमय की योग्यता आती है। विभिन्न भाषाओं में उच्चरित छवियों के संयोजन से अस्तित्व में आने वाले अक्षरों, संकेतित भाषा तथा तार आदि की प्रक्रिया के पीछे भी यही क्षमता कार्यरत है। रेखाओं तथा संकेतों को सम्प्रेषणीय विचार अथवा धारणा के साथ जोड़ने पर ही भाषा का रूप देना सम्भव होता है। उदाहरणार्थ, 'घर' शब्द का उच्चारण करते ही मस्तिष्क में एक ऐसे आवासीय भवन का चित्र उभरता है, जिसकी अपनी चारदीवारी है, छत है, सर्दी-गरमी के प्रकोप से बचाव की व्यवस्था है आदि-आदि। शब्द के उच्चारण के साथ मस्तिष्क में एक चित्र को उभारने वाली शक्ति का नाम ही 'कल्पनाशक्ति' है। यह कल्पनाशक्ति ही हमें बोलने, विचारों का आदान-प्रदान करने तथा अपने कथ्य को सम्प्रेष्य बनाने में समर्थ बनाती है। इस कल्पनाशक्ति अथवा सम्प्रेषण प्रक्रिया को सम्भव बनाने का
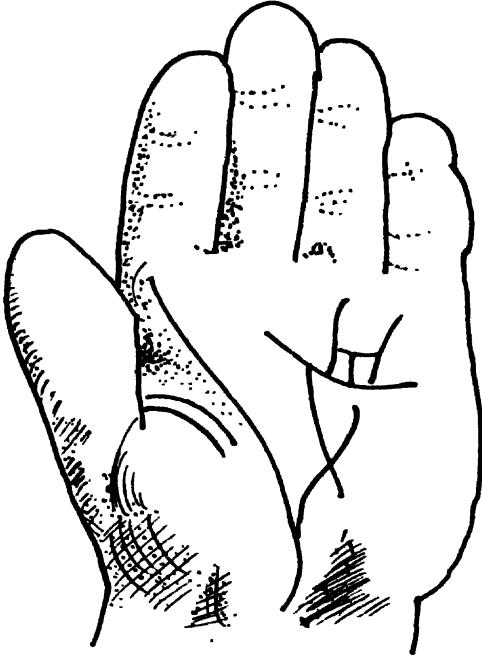
रेखाचित्र-121 व 122
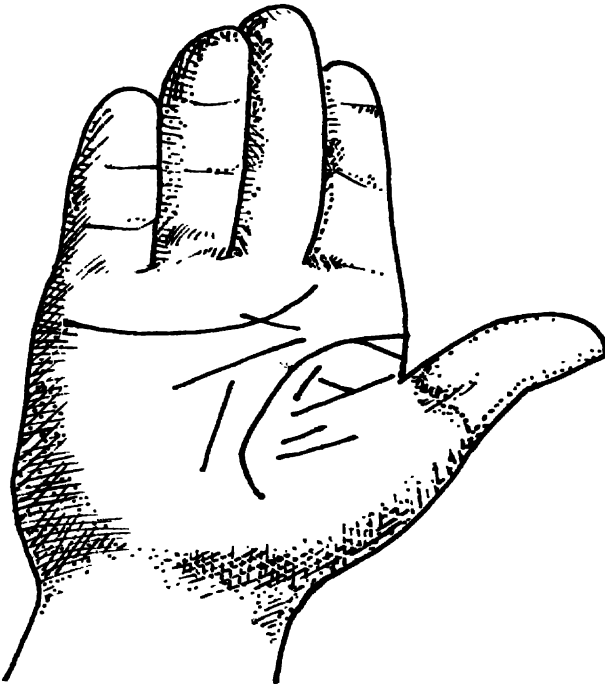
श्रेय चन्द्रमा को है। इस दृष्टि से इसे पर्वत-प्रकार माना गया है तथा इसकी प्रधानता स्वीकार की गयी है। व्यक्ति की कल्पनाशक्ति के अनुपात में ही उसका शब्द-भण्डार समग्र होता है तथा उसकी चिन्तन-क्षमता विकसित होती है। मन्दबुद्धि व्यक्ति ऊंची कल्पनाएं रखने पर भी अपने सीमित शब्द-भण्डार रखने के कारण ही ऊंची बातों को समझ नहीं पाता। उसे ठोक-पीठकर, दोहरा कर और सरल बनाकर समझाना पड़ता है। इसके विपरीत ऊंची कल्पना के साथ उसे वाणी (अभिव्यक्ति) देने की सामर्थ्य रखने वाला उच्चकोटि का चन्द्रप्रधान व्यक्ति कुशाग्रबुद्धि कहलाता है। वस्तुतः अपने कथ्य को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्ति देने में असमर्थ व्यक्ति कभी उन्नत हो ही नहीं सकता। यह गुण—अभिव्यक्ति का कौशल—उस व्यक्ति को प्राप्त होता है, जिसका चन्द्र पर्वत सुविकसित होता है (रेखाचित्र-121-122)। अभिव्यक्ति में कुशल-समर्थ व्यक्ति ही कल्पनालोक में विचरण करने का आनन्द प्राप्त कर सकता है। चन्द्र पर्वत के विकसित रूप को न लिये रहने वाला व्यक्ति (रेखाचित्र-123) कल्पनाशक्ति से रहित होता है। वस्तुतः अभिव्यक्ति की अपूर्णता अथवा अक्षमता कल्पनाशक्ति को कुण्ठित कर देती है। अतः धीरे-धीरे उसके सोचने की प्रवृत्ति ही समाप्त हो जाती है।
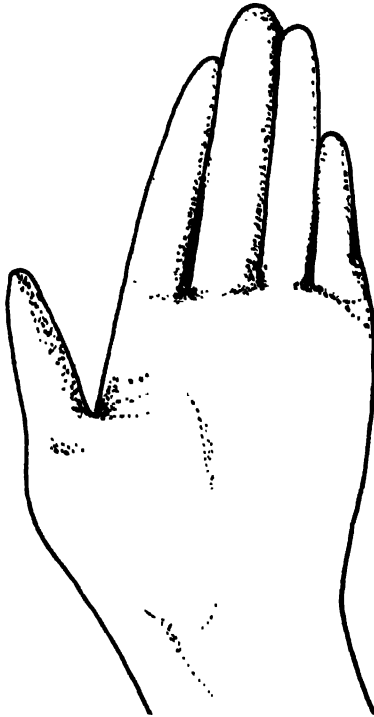
रेखाचित्र-123

अत्यधिक विकसित चन्द्र पर्वत वाला व्यक्ति (रेखाचित्र-122) सदैव पूर्ण रूप से कल्पनालोक में खोया रहता है। यहां तक कि कभी ऐसी स्थिति भी आ जाती है कि वह अपने मस्तिष्क पर नियन्त्रण न रख पाने के कारण वह उन्मत्त-विक्षिप्त-सा हो जाता है। स्पष्ट है कि जहां चन्द्र पर्वत का विकसित न होना एक अवाञ्छनीय स्थिति है, वहां उसका अत्यधिक विकसित होना कभी वाञ्छनीय नहीं। उसका मध्यम रूप ही सदैव ठीक रहता है; क्योंकि यह मध्यम रूप से विकसित चन्द्रमा ही व्यक्ति को स्वस्थ एवं सन्तुलित मानसिक शक्ति प्रदान करता है। प्रतिष्ठित भाषाशास्त्रियों, संगीतकारों, प्रेमाख्यान लेखकों तथा प्रेमियों के हाथों में प्राय: प्रबल चन्द्र पर्वत होता है। कल्पना के बल पर ही कथाकार पात्रों को गढ़ते हैं और उनमें गुण-दोषों के समावेश से उन्हें यथार्थलोक का विश्वसनीय प्राणी बनाकर पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं। कल्पनाशक्ति के अभाव में हमारा सम्बन्ध केवल दृश्य जगत् तक सीमित रह जायेगा। फिर हम नितान्त नीरस और अरोचक यथार्थ से बंधकर रह जायेंगे। हमारे लिए सुन्दर दृश्यों, पशु-पक्षियों, वृक्षों-वनस्पतियों, पुष्पों-कलियों तथा रूपों-रंगों आदि का तो कोई महत्त्व ही नहीं रह जायेगा। क़ल्पना के आधार पर ही व्यक्ति भविष्य की योजना बनाता है। आज के दु:ख को भावी सुख की कल्पना में सहर्ष झेलता है। कल्पना ही निराश, असफल एवं कुण्ठित व्यक्ति को सुनहरे सपने एवं सब्ज़बाग़ दिखाकर जीवन को जीने योग्य बनाती है। कल्पना के न होने का अर्थ है—आशा, विश्वास तथा आस्था-निष्ठा आदि का नितान्त अभाव। फिर जीवन में क्या शेष रहेगा ? बालक आज किसलिए शिक्षा ग्रहण करेगा और युवक किसलिए श्रम करेगा। चन्द्रप्रधान गुणों से रहित अथवा न्यूनता वाला व्यक्ति तो जीवन में कुछ भी सत्य न मानकर श्रम-संघर्ष को छोड़कर निठल्ला हो जायेगा। यह ठीक है कि कोरी कल्पना के सहारे नहीं जिया जा सकता और यह भी सत्य है कि कल्पना पर आधृत निष्कर्ष कभी-कभी भ्रामक भी सिद्ध होते हैं, परन्तु अपने को एक संकीर्ण दायरे में बांध लेना भी तो बुद्धिमत्ता नहीं है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति का आकार-प्रकार इस प्रकार होता है—क़द लम्बा-ऊंचा, शरीर पुष्ट-ठोस न होकर गद्दे-जैसा मांसल, निचले अंग और पांव मोटे, चेहरे का रंग फीका सफ़ेद, हृदय की दुर्बलता, रक्त की अल्पता, गुर्दों में विकार तथा जलोदर आदि रोगों से आक्रान्त होने का सूचक, सिर गोल, कनपटियां मोटी और आंखों के ऊपर उभार लिये रहता है। उसका मस्तिष्क नीचा, बाल उत्तम क़िस्म के और छितरे हुए, बालों का रंग भूरा-सुनहरी, भृकुटियां छोटी और ऊंची-नीची तथा नाक के ऊपर तक उग आने वाली, आंखें गोल, बाहर को निकली, पनीली-सी लगने वाली तथा सफ़ेद, हलके-नीले रंगवाली, दृष्टि निर्मल, पुतली चमकदार, पलकें भारी और शिथिल होने के कारण सूजी हुई, नाक छोटी, सिरे से ऊपर उठी हुई और नथुनों को

साफ़ दिखाई देने योग्य बनाने वाली, मुंह छोटा और झुर्रीदार, दांत पीले, अव्यवस्थित और कोमल, इस कारण जल्दी गिर जाने वाले, ठोड़ी भारी, शिथिल और परतों वाली, गर्दन मोटी और झुर्रियों वाली तथा सीना थुलथुल होता है। उसका पेट बड़ा और बाहर को निकला हुआ, टांगें मोटी-भारी, पांव बड़े और चपटे तथा चाल रेत पर पांव घसीट कर चलने-जैसी होती है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति के हाथ दिखने में शिथिल और सफ़ेद रंग वाले, हाथों की अंगुलियां छोटी-चिकनी तथा उनके अग्रभाग नुकीले-पैने होते हैं। अंगूठा आकार में छोटा और उसका प्रथम पर्व नुकीला और अधूरी लम्बाई वाला होता है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति कल्पनाजीवी होने के कारण स्वप्नद्रष्टा, आदर्शवादी, हवाई क़िले बनाने तक सीमित रहने वाला, अर्थात् अपनी कल्पनाओं को व्यावहारिक न बना सकने वाला, अत्यधिक आलसी और धरती पर रहता हुआ अपने को आकाश में उड़ता अनुभव करने वाला, अपनी पहुंच से परे की पाने की कामना करने वाला, अस्थिरचित्त, खिन्न और व्याकुल रहने वाला तथा अपने को सदैव रुग्ण-जैसा अनुभव करने वाला होता है। चन्द्र पर्वत पर रेखाओं की संख्या के अनुपात में ही व्यक्ति अधीर तथा आकुल-व्याकुल रहने वाला होगा तथा उसकी अन्यान्य नये स्थानों पर घूमने-फिरने की इच्छा भी उसी अनुपात में बलवती होगी। चन्द्र पर्वत पर विद्यमान रेखाएं व्यक्ति के यात्रा-प्रेम से प्रत्यक्षत: सम्बन्धित न होने पर भी चन्द्र सम्बन्धी गुणों की सशक्तता को अवश्य द्योतित करती हैं और इस रूप में उसे अपनी पर्यटन सम्बन्धी इच्छा को पूरी करने के लिए उत्तेजित करती हैं। उसकी अधीरता और आकुलता उसे पर्यटक बनाकर ही शान्त होने का नाम लेती है। किसी भी कारण—धनाभाव आदि—वश यात्रा सम्बन्धी अपनी इच्छा को कार्य रूप न दे पाने वाला व्यक्ति अपने मन में गहरी छटपटाहट अनुभव करता रहता है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति का शरीर सुगठित होने पर सफ़ेदी लिये रहता है। वह उत्साहहीन, खोया-खोया, शिथिल, भावशून्य, मन्दगति और आत्मकेन्द्रित होता है। स्वप्नजीवी होने के कारण वह शारीरिक दृष्टि से आलसी और मानसिक दृष्टि से निराश एवं कुण्ठित होता है। उसे संसार में कुछ भी अच्छा नहीं लगता। श्रम से तो वह कोसों दूर भागता है। उसके चेहरे का मटियालापन और आंखों की शून्यता उसे निस्तेज और अप्रभावी व्यक्ति बना देती है। उसका एकाकीपन और रहस्यपूर्ण स्वभाव उसे अन्धविश्वासी—शकुनों तथा चिह्नों को सत्य मानने वाला—जड़ बना देता है। वह इस प्रकार भ्रमित हो जाता है कि सदैव रहस्य-रोमांच के संसार को ही वास्तविक समझकर उसे पाने की ललक से उस दिशा में थोड़ा-बहुत क्रियाशील होता है, परन्तु अपने आलस्य, उत्साहीनता तथा मन्द कार्यशक्ति के कारण कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाता और इसके फलस्वरूप निराश और उदास हो जाता है। वह दूसरों

से सम्बन्ध जोड़ने पर उनसे अपेक्षित सम्मान न मिलने की आशंका से त्रस्त होकर अपने में ही सिमट जाता है। इस प्रकार उसके मित्रों-परिचितों का क्षेत्र अत्यन्त संकुचित-सीमित होता है। लोगों से अलग एकान्त में रहने को पसन्द करने वाला चन्द्रप्रधान व्यक्ति धीरे-धीरे समाज से कट जाता है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति अपनी कल्पना को सहलाने वाली प्रकृति—वनों, पर्वतों, पक्षियों, पशुओं और पुष्पों से प्रेम करने और अपना अधिक-से-अधिक समय उनके साथ बिताने लगता है। इसी आधार पर वह काव्य-प्रेमी भी होता है; क्योंकि कविता में प्राय: ही कल्पना की ऊंची उड़ान रहती है। वह सामान्यतया नये विषयों को प्रस्तुत करने वाली और व्यवहार जगत् से स्वप्नलोक में ले जाने वाली कविताओं का पढ़ना-सुनना ही पसन्द करता है। संगीत—विशेषत: शास्त्रीय—में भी उसकी रुचि ही नहीं गति भी होती है। वह एक अच्छा संगीतकार होता है, परन्तु उसे इस संगीत-साधना को भी एकान्त में करना अच्छा लगता है। उसे सस्ते-बाज़ारू संगीत से घृणा होती है। उसे सागर की लहरों के तर्जन-गर्जन, मेघों की गड़गड़ाहट और तूफ़ान की प्रचण्ड ध्वनि को सुनना बहुत ही अच्छा लगता है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति पर्यटन-प्रेमी होने के कारण एक अच्छा नाविक भी होता है। वह एकदम स्वार्थी, अनुदार, पेटू और प्रणय से अपरिचित होता है। वह अपनी यौनक्षुधा की निवृत्ति के लिए विपरीतलिंगी के शरीर की ऊष्मा की अपेक्षा नहीं रखता। उसकी कल्पनाशक्ति ही उसकी यौनवासना को जागृत, उद्दीप्त और शान्त करती है। आत्मविश्वास, दृढ़ता, धैर्य और कार्यशक्ति के अभाव के कारण वह न केवल व्यापार के क्षेत्र में असफल रहता है, अपितु उसमें किसी भी कार्य को कर पाने में असमर्थ-अयोग्य होने की प्रवृत्ति भी घर कर जाती है। अत: उसके लिए जीवन भार-रूप हो जाता है। सामान्य चन्द्रप्रधान व्यक्ति तो सदैव ही बुझा-बुझा-सा रहता है। हां, उच्चकोटि का चन्द्रप्रधान व्यक्ति रोमांचक घटनाओं का चतुर चितेरा कथाकार और कभी-कभी तो कोई कुशल इतिहासकार भी बन जाता है। बुध की लम्बी अंगुली को चन्द्रप्रधान व्यक्ति के लेखक बनने का उत्तम संकेत समझना चाहिए। अंगुलियों के अग्रभागों का नुकीलापन लेखक-रूप में व्यक्ति के कल्पना के क्षेत्र में उड़ानें भरने वाला होने का सूचक है। अंगुलियों के अग्रभागों का वर्गाकार रूप व्यक्ति के कुछ-कुछ व्यावहारिक होने का और इन अग्रभागों का चमचाकार रूप व्यक्ति की कल्पना के सक्रिय और मौलिक होने का संकेत होता है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति सदैव कल्पना और स्वप्नलोक में खोया रहने वाला विलक्षण प्राणी होता है, परन्तु ऐसा विशुद्ध प्रतीक कम ही मिलता है। चन्द्रप्रधान व्यक्तियों का किसी-न-किसी अंश तक कल्पनाशील होना सुनिश्चित है। चन्द्रप्रधान व्यक्तियों के विशुद्ध प्रतीकों की अधिकता का अर्थ होता है—पागलख़ानों की संख्या में वृद्धि।

यहां यह भी विचारणीय है कि स्वस्थ कल्पना और उन्माद अथवा विक्षिप्तता के स्तर की कल्पना में एक मौलिक अन्तर है। स्वस्थ कल्पना का जीवन निश्चित रूप से महत्त्वपूर्ण है, जबकि उन्मत्त कल्पना एक सीमा तक ही ग्राह्य होती है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति अन्य प्रकारों के व्यक्तियों के समान विवाह के लिए उत्सुक तो नहीं होते, परन्तु वे इसे टालते भी नहीं हैं। स्वभाव में जोशीलापन न होने के कारण चन्द्रप्रधान व्यक्तियों के प्रेम-अनुराग में गहराई, तीव्रता और प्रचण्डता का अभाव होता है। अपेक्षित शारीरिक शक्ति न रखने के कारण वे न तो शीघ्र उत्तेजित होते हैं और न ही अपनी उत्तेजना को लम्बे समय तक बनाये रख सकते हैं। वे अपने से काफ़ी बड़ी तथा काफ़ी छोटी स्त्री से भी विवाह करने को उद्यत रहते हैं। इस प्रकार वे अपने जीवनसाथी के चुनाव में अनाड़ी होते हैं। वस्तुतः अस्थिर स्वभाव, क्षीण शारीरिक शक्ति और कल्पनाजीवी होने के कारण वे अच्छे पति-पत्नी बन ही नहीं पाते। अंगुलियों के पैने-नुकीले अग्रभाग तो इस तथ्य की और भी अधिक पुष्टि करते हैं, जबकि वर्गाकार अथवा चमचाकार अग्रभाग व्यक्ति के वैवाहिक जीवन के अंशतः सफल रहने के सूचक होते हैं। कुल मिलाकर चन्द्रप्रधान व्यक्ति का वैवाहिक जीवन किसी भी अन्य प्रकार के व्यक्ति के वैवाहिक जीवन की अपेक्षा असफल और निराशाजनक ही होता है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति स्वास्थ्य के विषय में भी अभागा होता है। वह एक नहीं, अनेक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से पीड़ित रहता है। उसका रक्त पतला, रक्त-सञ्चार क्षीण, रंग सफ़ेद-फीका तथा मांसपेशियां पोली होती हैं। इतने अधिक विकारों के कारण वह आये दिन किसी-न-किसी रोग के चंगुल में फंसा मिलता है। उदर-शोथ, अपेण्डिसाइटस तथा हैज़ा आदि उसके लिए सामान्य रोग हैं। इसीलिए चन्द्रप्रधान व्यक्ति का पेट बढ़ा-फूला हुआ, अंतड़ियां और मांसपेशियां ढीली-फूली हुई और ऊतक अत्यन्त दुर्बल होते हैं। पर्वत के ऊपरी तीसरे भाग में दोषपूर्ण चिह्न—आड़ी रेखाएं, जाल, अनगढ़ नक्षत्र, बिन्दु, द्वीप, गुणनचिह्न तथा इसी प्रकार के अन्य निकृष्ट चिह्न—अंतड़ियों में विकार के द्योतक हैं। इनसे आंतों की दुर्बलता का अनुमान मिलता है। जीवन रेखा की जांच से तत्काल इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है। टूटी-फूटी तथा द्वीप-नक्षत्र चिह्नित जीवन रेखा को अंतड़ियों में गम्भीर रोग होने का निश्चित प्रमाण समझना चाहिए।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति का शरीर इस प्रकार शिथिल, क्षीण और थुलथुल होता है कि गठिया तथा वात रोग आदि से उसका किसी भी समय ग्रस्त होना कोई अनोखी बात नहीं होती। पर्वत के मध्य एवं तृतीय भाग में विद्यमान गुणनचिह्नों तथा जाल आदि से इन रोगों के आक्रमण की जानकारी प्राप्त हो जाती है। कुछ अन्य चिह्न भी इस तथ्य की ओर संकेत देते हैं, जैसे शनि पर्वत से जीवन रेखा तक फैली एक रेखा

कभी-कभी चन्द्र रेखा को काट रही होती है अथवा वहां जाकर रुक जाती है अथवा उसमें एक द्वीप होता है (रेखाचित्र-124)। इन संकेतों को देखकर यह निश्चित करना चाहिए कि व्यक्ति शनि से जुड़े स्वास्थ्य-विकारों से ग्रस्त तो नहीं है। गठिया रोग का सम्बन्ध शनि से है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि चन्द्र पर्वत के मध्य भाग से निकली एक रेखा शनि पर्वत से आती रेखा द्वारा जीवन रेखा के काटने के बिन्दु पर या मार्ग में ही किसी स्थान पर उससे मिल जाती है (रेखाचित्र-124)। इस दोहरे संकेत को व्यक्ति के भूत में अथवा वर्तमान में अथवा भविष्य में गठिया रोग से ग्रस्त होने का पक्का प्रमाण समझना चाहिए। यह संकेत व्यक्ति में गठिया रोग से वंशानुगत होने का सूचक भी है। पर्वत के निचले तृतीय भाग पर अवस्थित विकारचिह्न पुरुषों में गुर्दे और मूत्राशय की समस्याओं को तथा स्त्रियों में इन समस्याओं के साथ-साथ उनकी शारीरिक दुर्बलता को दर्शाते हैं। पर्वत के निचले भाग पर निम्नोक्त दोषपूर्ण लक्षण—हाथों की सफ़ेदी तथा नाख़ूनों की सूजन और ढीलापन—गुर्दों और मूत्राशय की समस्या तथा जलोदर की सम्भावना के सूचक हैं।

जलोदर रोग सर्वप्रथम चन्द्रप्रधान व्यक्ति के पहले से ही सूजे हुए दीखते पैरों और जंघाओं पर आक्रमण करता है। पर्वत पर तिरछी रेखाएं गुर्दे की बीमारी की सूचक हैं। पर्वत पर विद्यमान ऐसे किसी अशुभ चिह्न से निकलती और जीवन रेखा की ओर जाती कांटेदार रेखा को व्यक्ति के गठिया आदि रोगों से आक्रान्त होने के ख़तरे की सूचना समझना चाहिए।

पर्वत के निम्न और तृतीय भाग में मस्तक रेखा के निकट अथवा बुध रेखा द्वारा मस्तक रेखा को पार करने वाले बिन्दु पर नक्षत्र का बनना स्त्रियों की गम्भीर दुर्बलता का संकेत है (रेखाचित्र-125)। यह संकेत स्त्री के गर्भधारण करने वाले अवयवों में विकार का तथा इसके फलस्वरूप स्त्री के जननी न बन सकने की सूचना देता है। सन्तान उत्पन्न न करने वाली स्त्री के हाथ के इन लक्षणों की जांच से पता लगाया जा सकता है कि स्त्री के प्रजनन-अंगों में विकार है अथवा अन्य कोई कारण है। एक कुशल हस्तरेखाशास्त्री सावधानीपूर्वक स्त्री के हाथों का अध्ययन करके एक निश्चित निष्कर्ष निकाल सकता है और फिर समुचित उपाय से अभागिन बन्ध्या को सौभाग्यवती मातृत्व में बदल सकता है, सूनी कोख को हरा-भरा और सूने घर को बच्चों की किलकारियों से सुखमय बना सकता है।

चन्द्र पर्वत के तीनों खण्डों से मिलने वाले स्वास्थ्य सम्बन्धी संकेतों को अधिकांश हाथों में पाये जाने के कारण नितान्त विश्वसनीय ही समझना चाहिए। केवल चन्द्रप्रधान व्यक्ति के हाथ में स्वास्थ्य-विकार के चिह्नों का होना आवश्यक तो नहीं, फिर भी ये संकेत सम्बद्ध भाग के विकारग्रस्त होने को दर्शाते हैं। उदाहरणार्थ, उच्च तृतीय भाग से आंतों की समस्या का, मध्यम तृतीय भाग से गठिया तथा वात
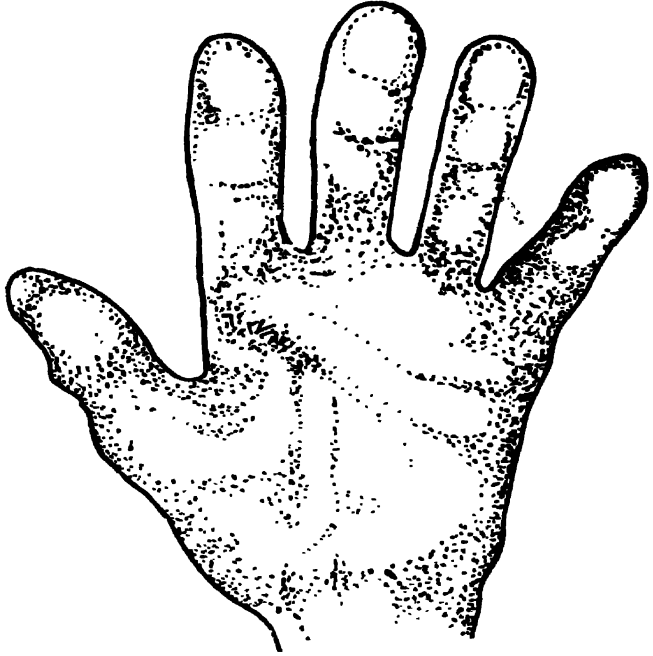
रेखाचित्र-124 व 125
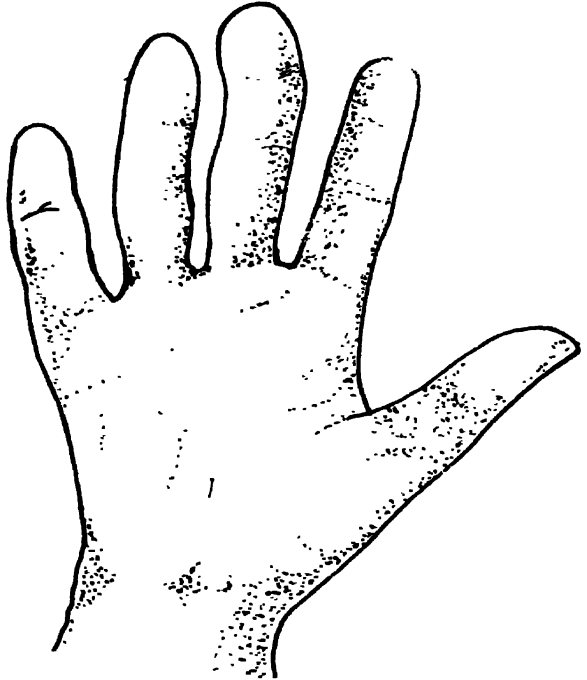
रोग का तथा निम्न तृतीय भाग का सम्बन्ध गुर्दों, मूत्राशय तथा स्त्रियों की प्रजनन-सम्बन्धी रोगों-समस्याओं से होता है।

अन्य सभी प्रकारों के व्यक्तियों के समान ही चन्द्रप्रधान व्यक्ति भी अपने पूर्ण विकसित बुरे रूप में मिलते हैं। इसकी पहचान के लक्षण इस प्रकार से हैं—उसका क़द छोटा, बाल टूटते-सख़्त और त्वचा एकदम सफ़ेद तथा धब्बेदार और गन्दा पसीना उगलने वाली होती है। वह बातूनी और झूठा, काल्पनिक बातों में दूसरों को उलझाने और स्वयं उलझे रहने वाला, स्वार्थी, अधम, कायर, उत्तेजनारहित होने पर भी अपनी कल्पना की तुष्टि-तृप्ति के लिए कामोपभोग की तलाश में रहने वाला होता है। निम्न श्रेणी के चन्द्रप्रधान व्यक्ति प्रायः कामोन्माद से ग्रस्त रहने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति अक्खड़, लम्पट और इतने अधिक झगड़ालू होते हैं कि लोग इनसे दूर रहना ही अधिक पसन्द करते हैं।

ऐसे निम्नकोटि के व्यक्तियों के चन्द्र पर्वत का अतिशय विकसित होने का अर्थ है—इनका पागलों-जैसा व्यवहार करना। चन्द्र पर्वत का बहुत बड़ा होना, बाहर की ओर निकलता हुआ होना, हथेली पर स्पष्ट रूप से मोटे-से नक्षत्र का या फिर उस नक्षत्र पर रेखाओं का उठना, व्यक्ति की कल्पनाशीलता को इस प्रकार अनियन्त्रित बना देता है कि व्यक्ति के पागल बनने में कोई कसर नहीं रहती। वस्तुतः चन्द्र पर्वत का अतिशय विकास कल्पना को इस सीमा तक पहुंचा देता है कि व्यक्ति संयम और सन्तुलन खो बैठता है और उसकी मानसिकता विक्षिप्तता का रूप ले लेती है।

मनोवैज्ञानिकों के इस कथन में पर्याप्त सत्य है कि व्यक्ति के पागलपन का एक प्रमुख तथा निश्चित कारण उसकी जन्मजात अनियन्त्रित कल्पनाशीलता है, जिसकी पहचान तो चन्द्र पर्वत की अधिकता से हो जाती है, परन्तु उसका उपचार इसलिए सम्भव नहीं, क्योंकि जन्मजात स्वभाव को बदला नहीं जा सकता।

चन्द्र पर्वत के अतिशय विकसित रूप से एक जानकारी यह मिलती है कि मासिक धर्म आने के दिनों में स्त्रियों के रोग की तीव्रता प्रचण्ड रूप धारण कर लेती हैं और वे खिन्न-उदास रहने लगती हैं। मासिक धर्म के दिनों में अच्छी-भली स्वस्थ महिलाएं भी थोड़ी-बहुत खिन्नता अनुभव करने लगती हैं। वस्तुतः इन दिनों उन्हें पुरुष की सहानुभूति और सद्भावना की आवश्यकता होती है। इन दिनों पुरुषों द्वारा की गयी उनकी उपेक्षा अथवा साधारण-सी उग्रता भी उन्हें मानसिक आघात पहुंचाने वाली सिद्ध होती है।

नारी की दुर्बलता के सूचक चन्द्र पर्वत के निम्न तृतीय भाग-जैसे हाथ कुछ समय के लिए अनियन्त्रित-असंयत हो जाने वाले आत्मघातियों के हाथ भी देखने को मिलते हैं। पागलख़ानों में चिकित्साधीन अनेक रोगियों के हाथों पर इस चिह्न को देखा जा सकता है। वस्तुतः चन्द्रप्रधान व्यक्ति के हाथ द्वारा संकेतित विभिन्न गुणों से

अत्यधिक प्रभावित होना स्वाभाविक ही है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति की त्वचा के रूप-रंग से ही उसके गुणों की उत्कृष्टता-निकृष्टता का पता चलता है। कोमल, बढ़िया त्वचा की बनावट शिथिल होगी, जिससे व्यक्ति कल्पनाएं तो ऊंची करेगा, परन्तु आलसी इतना होगा कि एक तिनका भी तोड़ने में दु:ख अनुभव करेगा। उसके आदर्श, रुचियां और सपने बढ़िया होंगे, परन्तु व्यावहारिकता नाममात्र की भी नहीं होगी। वस्तुत: सुविकसित चन्द्र पर्वत के साथ त्वचा का मध्यम रूप-रंग उत्तम होता है; क्योंकि इससे व्यक्ति के कर्मठ, व्यवहारकुशल, सूझ-बूझ वाला तथा भौतिक आकर्षणों से न बंधने वाला होना सूचित होता है। त्वचा व रूप-रंग के घटिया होने और हाथ की बनावट की कठोरता से व्यक्ति तुच्छ, अधम, अन्धविश्वासी, अत्यधिक रहस्यदर्शी, आलसी तथा निर्बुद्धि होना सिद्ध होता है। ऐसा व्यक्ति जितना अधिक मन्दबुद्धि होगा, उतना ही वह अधिक अन्धविश्वासी भी होगा। व्यक्ति के हाथ की संगति उसके बढ़े हुए आलस्य को दर्शा देती है।

चन्द्रप्रधान के शुद्ध प्रतीक व्यक्तियों के हाथों की संगति प्राय: शिथिल होती है। उसकी आदर्शवादिता तथा स्वप्नों को देखने की प्रवृत्ति उन्हें आलसी, निकम्मा और अव्यावहारिक बना देती हैं। ऐसे लोग समाज से इस प्रकार अलग-थलग पड़े रहते हैं कि दूसरों को उनके होने-न होने की जानकारी ही नहीं हो पाती। हाथों की लचीली संगति से ऐसा लगता है कि व्यक्ति की ऊर्जा उसे उसके मानसिक चिन्तन को उपयोग में लाने के लिए प्रेरित करेगी तथा वह अद्‌भुत प्रतिभा का धनी, निश्छल, मौलिक चिन्तक, उत्कृष्ट वक्ता, कर्मठ, समय का सदुपयोग करने वाला तथा अपनी कल्पना के अच्छे परिणामों को पाने वाला होगा।

ऐसा व्यक्ति व्यापारी के रूप में अपने व्यवसाय को बुलन्दी पर पहुंचाने के लिये नित्य-प्रति नयी-नयी योजनाओं को बनाने वाला, लेखक के रूप में अपनी बुद्धि और कार्यशक्ति—का सदुपयोग करके उत्कृष्ट लेखन का सर्जन करने वाला (कुछ लब्धप्रतिष्ठ लेखक इस वर्ग से ही सम्बन्ध रखते हैं) संगीतकार एवं ललित कलाकार होने के नाते वह अपनी दोनों—ऊर्जा, अर्थात् स्वाभाविक योग्यता और कार्यकुशलता—का आदर्श उपयोग करने वाला होगा।

हाथों की कठोर संगति को असामान्य स्थिति ही समझना चाहिए। कठोरता अत्यधिक क्रियाशीलता तो देती है, परन्तु साथ ही व्यक्ति को अन्धविश्वासी, विकल, स्वार्थी और रहस्यमय भी बना देती है। ऐसे व्यक्ति कुछ पाकर भी कभी सन्तुष्ट नहीं होते। वे सदैव अभाव का ही रोना रोते रहते हैं और अपने साथ दूसरों को भी अशान्त बनाये रखते हैं। निस्सन्देह उनकी कल्पनाशक्ति प्रौढ़ और क्रियाशील रहने वाली होती है, परन्तु वह उच्चचिन्तन न कर पाने से वाञ्छित परिणाम प्राप्त नहीं कर पाते

और फिर स्वयं तो असन्तोष की ज्वाला में जलते ही हैं, दूसरों को भी अपने इसी असन्तोष का शिकार बनाते रहते हैं। कठोर हाथों वाला चन्द्रप्रधान व्यक्ति जीवन के समान ही धर्म के सम्बन्ध में भी विकृत दृष्टिकोण रखने वाला होता है। वह परले दरजे का अन्धविश्वासी तो होता ही है, अपने अलौकिक प्रेम की सन्तुष्टि के लिए भूत-प्रेतों का सहारा लेने वाला भी होता है। वह घुमक्कड़, संसार से असन्तुष्ट-रुष्ट और शिकायतों का गट्ठर लिये रहने वाला तथा उत्तेजना और परिवर्तन की खोज में व्यस्त रहने वाला होता है।

इसके विपरीत लचीली संगति व्यक्ति के मन और बुद्धि के लचीलेपन की प्रतीक और उसकी कल्पनाशक्ति के अत्यधिक विकसित होने की सूचक होती है। ऐसा व्यक्ति 'क्षणे रुष्टः क्षणे तुष्टः' अर्थात् 'पल में तोला और पल में माशा' का सजीव उदाहरण होगा। वह अभी उछलता-कूदता, तो अगले क्षण मुंह लटकाये बैठा मिलेगा। वह कुशाग्रबुद्धि होने पर भी परिश्रमी न होने के कारण अपनी प्रतिभा का सही उपयोग नहीं कर पाता। बातचीत में कुशल होने पर भी वह सारगर्भित कुछ कहने की योग्यता से रहित होता है। कल्पनाशक्ति के नियन्त्रित हो जाने के कारण वे अपनी कल्पना को व्यावहारिक बनाने का अवसर तो पाते हैं, परन्तु योग्यता के अभाव के कारण अवसर का लाभ नहीं उठा पाते। वस्तुतः चन्द्रप्रधान व्यक्ति के लिए मध्यम लचीली संगति ही सर्वोत्तम होती है।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, हाथों की कठोरता चन्द्रप्रधान व्यक्ति में बुद्धि और समझ की न्यूनता का लक्षण है। ऐसा व्यक्ति अपने वर्ग के सभी निकृष्ट गुणों को लिये रहता है। वह कृपण, सहानुभूतिरहित, मौलिक कल्पनाशक्ति न रखने वाला, विचित्र रहस्यों की खोज में भटकने वाला, कायर, भयाक्रान्त, निष्ठुर, क्रूर, स्वार्थी, आत्मकेन्द्रित और किसी के साथ निर्वाह न कर सकने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति के हाथों का रूप-रंग भी विचारणीय होता है। सामान्यतः पक्के चन्द्र-प्रधान व्यक्ति के हाथों का रंग सफ़ेद होता है और इससे उसके स्वभाव और चरित्र के विश्लेषण में सहायता मिलती है।

हाथों के रंग की अत्यधिक सफ़ेदी न केवल उसके निस्तेज, निष्ठुर और उदासीन होने की, अपितु उसके स्वास्थ्य के भी विकृत होने का संकेत है। इसके विपरीत हाथों का गुलाबी रंग व्यक्ति के उत्तम स्वास्थ्य, ऊर्जा- उत्साहसम्पन्न, सुदृढ़ हृदय और उत्कृष्ट रक्त-धारक होने का सूचक है। ऐसा व्यक्ति रहस्य, रोमांस और आदर्श के चक्कर में न पड़कर कुछ-न-कुछ व्यावहारिक ही होता है। स्फूर्ति और उत्साहसम्पन्न होने के कारण उसमें अस्थिरता और व्यग्रता तथा स्वार्थपरता और छिछोरेपन की मात्रा कम होती है। हाथों का लाल रंग तो गुलाबी रंग के गुणों को और अधिक विकसित करने वाला होता है। हाथ का, रेखाओं का और नाख़ूनों का

रंग गहरा लाल होने पर व्यक्ति उत्साही, ऊर्जस्वी, स्वस्थ तथा सुरुचिसम्पन्न होता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आन्त्रशोथ से पीड़ित रहने वाला, अधिक कामुक, असहनशील तथा शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाला होता है। इस प्रकार गहरा लाल रंग भी एक साथ गुण-दोषों को लिये हुए होता है।

हाथों-नाख़ूनों आदि का पीला रंग अवाञ्छनीय होता है; क्योंकि इस रंग वाला चन्द्रप्रधान व्यक्ति न केवल कुरूप, निष्ठुर, स्वार्थी और सदैव दुखी रहने वाला होता है, अपितु वह दुष्टता और तुच्छता की ओर निरन्तर बढ़ते रहने वाला भी होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन और समाज के प्रति विकृत दृष्टिकोण को लिये रहने वाला होता है। उसका मस्तिष्क विषैले रक्त से प्रभावित रहता है। अत: वह प्रत्येक व्यक्ति और स्थिति को ग़लत ढंग से देखता है। वह अपने इसी दृष्टिकोण के कारण समाज से कट जाता है और अकेला पड़ जाने पर पागल हो जाता है। पीला रंग व्यक्ति के गठिया और वात रोग से पीड़ित होने का संकेत भी देता है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति के हाथों व नाख़ूनों का नीला रंग प्राय: ही देखने में आता है; क्योंकि ऐसे व्यक्तियों में रक्त की अपर्याप्तता के कारण उनका हृदय दुर्बल होता है और फिर इससे रक्त का रंग नीला हो जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति, विशेषत: स्त्रियां यौन रोगों से ग्रस्त हो जाने से सम्भोग से विरत हो जाती हैं। इस प्रकार का भविष्यकथन करते समय व्यक्ति की आयु और मन:स्थिति आदि पर विचार करना अत्यन्त ही आवश्यक होता है।

चौड़े नाख़ून अच्छे स्वास्थ्य के परिचायक हैं। अत: ऐसे व्यक्ति को स्वास्थ्य सम्बन्धी विकारों से ग्रस्त होने की कम सम्भावना वाला ही समझना चाहिए। चौड़े नाख़ून को उत्तम किस्म और गुलाबी रंग को व्यक्ति के स्वास्थ्य, स्वभाव और मानसिकता का सूचक मानना चाहिए। तंग-सिकुड़ा हुआ नाख़ून स्वास्थ्य की शिथिलता को बताता है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति के स्वास्थ्य की जानकारी के लिए नाख़ूनों के रूप-रंग के साथ-साथ पर्वत और नाख़ूनों के नीचे के रंग की जानकारी में भी पूरी सावधानी बरतनी चाहिए। यहीं पर सफ़ेद, गुलाबी, लाल, पीले तथा नीले रंग से जुड़ी स्वास्थ्य सम्बन्धी गड़बड़ियों का पता चलता है। पर्वत पर आड़ी-तिरछी रेखाओं का होना तथा नाख़ूनों का धारीदार-भुरभुरा होना इस तथ्य का संकेत है कि व्यक्ति गर्ममिज़ाज, असहनशील, असन्तुष्ट रहने वाला, चिड़चिड़ा, उग्र तथा [illegible] है। हृदय रोग के सूचक नाख़ून अशुभ माने जाते हैं; क्योंकि ये व्यक्ति के अत्यधिक कामुक होने और इसके फलस्वरूप गुर्दे के रोग का शिकार होने के सूचक होते हैं। छोटे-कोमल नाख़ूनों से व्यक्ति कलहप्रिय, चिड़चिड़ा, परछिद्रान्वेषी और सदैव दूसरों की आलोचना करने वाला सिद्ध होता है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति के हाथों पर उगे काले बालों से व्यक्ति के शरीर के बलिष्ठ और रक्त में लौहतत्त्व की पर्याप्तता की जानकारी मिलती है। ऐसा व्यक्ति उद्दण्ड, उच्छृंखल, मनमानी करने वाला, झूठा और धूर्त होता है। भूरे, सुनहरे बालों वाले व्यक्ति कम निरुत्साही, कम अस्थिरचित्त, कम चञ्चल और किसी-न-किसी रूप में शक्तिसम्पन्न होते हैं। ऐसे लोग मन्दगति वाले होने पर भी विश्वसनीय होते हैं तथा संयत रूप से कल्पनाशील होने के कारण बहुत अंशों में व्यावहारिक भी होते हैं।

पर्वत के सन्दर्भ में समग्र हाथ का अध्ययन करके तीनों लोकों में अधिक प्रभावी लोक की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। विकसित पर्वत वाली अंगुली से मानसिकलोक की सत्ता-प्रधानता का और भाषा में कल्पनाशक्ति के मुखरित रहने का संकेत मिलता है। ऐसे लोग—विकसित पर्वत वाली अंगुली रखने वाले—भाषा-विज्ञान, साहित्य तथा अन्यान्य—भौतिक, रसायन आदि—विज्ञान के क्षेत्र में विशिष्टता और ख्याति प्राप्त करने वाले होते हैं। हाथ के विकसित मध्य भाग व्यक्ति के व्यावसायिक योग्यता-सम्पन्न होने का सूचक है। ऐसे व्यक्ति अपने व्यवसाय में सदैव शीर्षस्थ रहने वाले तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं। हाथ के निचले भाग के बड़ा होने का अर्थ निकृष्ट लोक का प्रभावी होना है। ऐसे व्यक्ति की कल्पना का स्तर तुच्छ-निकृष्ट ही होता है।

पर्वत को तीन खण्डों में विभाजित करके अंगुलियों और उनके विभिन्न पर्वों पर लागू किये जाने वाले नियमों के परिप्रेक्ष्य में उनका अध्ययन करना चाहिए। पर्वत के ऊपरी भाग के पूर्ण विकास का यह नियम न केवल व्यक्ति की कल्पनाओं के उच्च होने के सम्बन्ध में, अपितु समग्र हाथ के विषय में लागू होगा। ऐसा व्यक्ति सफल एवं प्रतिष्ठित प्राध्यापक, लेखक, संगीतकार, भाषाशास्त्री तथा कलाकार आदि कुछ भी बन सकता है। दोनों—ऊपरी तथा मध्य तृतीय—भाग का विकसित होना व्यक्ति को निजी प्रयासों से धनोपार्जन में सफल रहने वाला सिद्ध करता है। इसका कारण यहां दोनों—मानसिक और व्यावसायिक—शक्तियों का एकजुट होकर कार्य करना है। दोनों ऊपरी लोकों की अपूर्णता और निम्नलोक का घुण्डी की तरह का होना निचले लोक की प्रभविष्णुता का सूचक है, जिसका अर्थ है—व्यक्ति के विचारों और कल्पनाओं का निकृष्ट होना। पर्वत के निचले तृतीय भाग के विकास के साथ ही शुक्र पर्वत का त्रुटिपूर्ण होना तथा उस पर जाल का होना अथवा शुक्र के घेरे का दुगुना-तिगुना होना, हृदय रेखा का शृंखलाकार-सफ़ेद होना और हथेली का दलदली होना व्यक्ति के गुप्त व्यसनों से ग्रस्त होने के निश्चित प्रमाण हैं (रेखाचित्र-126)। इससे वह स्नायु रोग-मूर्च्छा से बुरी तरह ग्रस्त सूचित होता है। अंगुली के छोरों को पर्वत के अग्रणी भाग पर लागू करके देखना चाहिए।

रेखाचित्र-126

अंगुलियों के छोरों का नोकदार होना व्यक्ति के महान् आदर्शवादी, धर्म में रुचि लेने वाला तथा नितान्त व्यावहारिक होने का सूचक है, परन्तु फिर भी व्यक्तियों का जीवन अन्धविश्वास, अध्यात्म और रूढ़ियों के कारण दयनीय बनकर रह जाता है; क्योंकि वे असम्भव की प्राप्ति में प्रयत्नशील होने के कारण सहज प्राप्त को भी नष्ट कर बैठते हैं। यों अंगुली के छोरों का नुकीलापन व्यक्ति के स्वभाव के अनुकूल, उसकी अन्तर्दृष्टि, उत्साह और उमंग में वृद्धि करने वाला होता है, परन्तु साथ ही नुकीलापन व्यक्ति को आलसी और कामचोर भी बनाने वाला होता है। अंगुली के वर्गाकार छोर व्यक्ति के व्यावहारिक होने के सूचक हैं। ऐसा व्यक्ति आदर्श को महत्त्व देते हुए भी व्यावहारिकता का पल्ला नहीं छोड़ता और अपने जीवन में तारतम्य और नियमितता को बनाये रखता है। इस प्रकार वह अपने वर्ग का एक उत्कृष्ट उदाहरण बन जाता है। वर्गाकार छोर वाले और इन्हीं गुणों से युक्त व्यक्ति सफल रचनाकार, संगीतकार, इतिहासकार एवं निबन्ध लेखक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले होते हैं; क्योंकि इनके हाथों में इन गुणों का अच्छा संयोजन पाया जाता है। इसीलिए इनकी कल्पना स्वस्थ और सार्थक होती है और इनके विचार सुलझे हुए, स्पष्ट और परस्पर सम्बद्ध होते हैं।

पर्वत पर जाल एवं तिरछी रेखाएं होने पर अंगुली के वर्गाकार छोर स्वभाव से ही अधीर और उद्विग्न रहने वाले व्यक्ति को और अधिक सक्रिय बना देते हैं। ऐसे

व्यक्ति के विचारों में मौलिकता, क्रमबद्धता और विश्वसनीयता के गुणों का समावेश हो जाता है। ऐसे व्यक्ति रूढ़ियों से पूर्णतः मुक्त होते हैं और भटकने की आशंका से कल्पना से कोसों दूर रहने वाले होते हैं।

पर्वत के समतल हृदय रेखा के उत्तम और अंगुलियों के पार्श्व में कुछ वर्गाकार होने का अर्थ है—व्यक्ति का विशिष्ट प्रतिभाशाली होने के कारण लेखक, कलाकार एवं संगीतकार के रूप में प्रतिष्ठित होना। अंगुलियों का गठीलापन व्यक्ति की अव्यावहारिकता को पर्याप्त मात्रा में घटाने वाला और व्यक्ति को समझदार तथा सूझ-बूझ वाला बना देता है। यही कारण है कि कुछ चन्द्रप्रधान व्यक्ति गम्भीर विचारक, उत्कृष्ट लेखक तथा उच्च स्तर पर सफल रहने वाले शिक्षक भी पाये जाते हैं। ऐसे लोग अत्यन्त जटिल, दुर्गम और दुर्बोध विषय को भी सरल-सुबोध बनाकर उसे रोचक शैली में प्रस्तुत करने की कला में दक्ष होते हैं। वे किसी भी विषय को अपने तर्कों और युक्तियों से विश्वसनीय और सहज ग्राह्य बनाने में विशेष कुशल होते हैं। उनका विषय-विवेचन तर्कसम्मत होने के कारण प्रामाणिक एवं मान्य बन जाता है। वे भौतिकवादी होते हुए भी कठोर नहीं होते। वस्तुतः उनके चिन्तन में लोच और लचक होती है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति की चिकनी अंगुलियां कभी-कभी व्यक्ति में आवेग, अन्तःप्रेरणा, कलाबोध और विश्लेषण के प्रति अरुचि को उपजाती हैं। इससे एक ऐसी संगति और तारतम्य की सृष्टि होती है, जिससे व्यक्ति चन्द्र के गुणों को उनके पूर्ण उत्कर्ष में प्रकट करने में समर्थ हो जाता है। इस स्थिति में व्यक्ति की कल्पना उदात्त हो जाती है और वह सौन्दर्य के स्थान पर उपयोगिता को महत्त्व देने लगता है, फलतः वह एक आदर्श कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित होता है। बहुत सारे कवि. चित्रकार, संगीतज्ञ एवं वास्तुकार इसी कोटि के चन्द्रप्रधान व्यक्ति हैं। कुछ लोगों के काल्पनिक आदर्शों में चिकनी अंगुलियों के सहज-अनुभूत कलात्मक गुणों के जुड़ते ही व्यक्ति के चिन्तन और चिन्तनशैली दोनों में परिवर्तन आ जाने से ये शीघ्र निर्णय लेने लगते हैं और फिर अपनी सहज प्रतिभा और योग्यता का समुचित उपयोग कर ही नहीं पाते। बस, इससे इनका जीवन जड़ हो जाता है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति की लम्बी अंगुलियां उसमें चन्द्र के गौण तत्त्वों को जोड़ देती हैं, जिससे वह छोटी-से-छोटी बात पर ध्यान देने वाला, स्वार्थी, मन्दबुद्धि, संशयालु और भयाक्रान्त रहने वाला बन जाता है। वह न केवल अपने पहनावे और परिवेश के प्रति विशेष सावधान रहता है, अपितु अपनी अरुचि की हर छोटी-बड़ी स्थिति, घटना और तथ्य से यथाशीघ्र विचलित हो जाता है। ऐसा व्यक्ति कथाकार के रूप में कथा के विस्तार को संभालने में असमर्थ रहता है, निबन्धकार के रूप में आवश्यक के ग्रहण और अनावश्यक के परित्याग के विवेक से वञ्चित रहता है,

चित्रकार के रूप में चित्र में कुछ उपयोगी छूटने न पाये की चिन्ता से ग्रस्त रहता है तथा वक्ता के रूप में इतना अधिक बातूनी होता है कि सुनने वाला थकने-ऊबने लगता है।

छोटी अंगुलियों वाला व्यक्ति प्रदर्शन में विश्वास न रखने वाला होने से अपनी वेशभूषा और कार्यशीलता के प्रति ही बेपरवाह नहीं होता, अपितु आवेगशील और स्वेच्छाचारी भी होता है। वह बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाता है, जो सदैव अव्यावहारिक सिद्ध होती हैं। बहुत शीघ्र कुछ कर दिखाने की सनक वाला यह व्यक्ति ग़लतियों पर ग़लतियां करता जाता है और इसके फलस्वरूप असफल होने से निराश-खिन्न रहता है। उसके पास कोई-न-कोई नयी योजना रहती है, जिसकी सफलता में और उससे अपने सम्पन्न होने में उसका पक्का विश्वास होता है, जबकि उसकी कोई भी योजना कभी सफल नहीं होती। इस प्रकार वह अपने आपको धोखा देता रहता है।

ऐसे व्यक्ति का अंगूठा उसे शान्त (निष्क्रिय) अथवा स्वप्नजीवी बनाने वाला होता है। अंगूठे का बड़ा होना व्यक्ति में इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति की प्रबलता का और व्यक्ति के भौतिक दृष्टि से समर्थ होने का सूचक है। इसके विपरीत छोटा अंगूठा व्यक्ति की दोनों—इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति—को कम करने वाला तथा व्यक्ति को स्वप्नजीवी, टाल-मटोल करने वाला और असमर्थ बनाने वाला होता है। नुकीला अंगूठा छोटे अंगूठे के दोषों को और अधिक पुष्ट करता है। छोटे अंगूठे का पैने-नुकीलेपन की अपेक्षा वर्गाकार, चमचाकार तथा चप्पू के आकार का होना कहीं अधिक अच्छा होता है, क्योंकि पैनापन जहां अंगूठे की शक्ति को घटा देता है, वहां दूसरे रूप में यह व्यक्ति को सुदृढ़, समर्थ और आत्मविश्वास-सम्पन्न बनाने वाला होता है।

अंगूठे के प्रत्येक पर्व में दोनों—इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति—में से एक की प्रबलता और दूसरे की दुर्बलता की जांच-परख की शैली का प्रयोग चन्द्र सम्बन्धी गुणों की परख के लिए भी करना चाहिए। मोटा-घटिया अंगूठा जहां कल्पनाशक्ति को अव्यावहारिक बना देता है, वहां उत्तम प्रकार का कोमल अंगूठा कल्पनाशक्ति को व्यावहारिक बनाकर व्यक्ति को आदर्शों की ऊंचाई पर पहुंचाता है। मस्तक रेखा द्वारा हाथ को सीधा पार करने का अर्थ है—आदर्शों का व्यावहारिक रूप ग्रहण करना। इस मस्तक रेखा का स्पष्ट, सुचिह्नित और उत्तम रंग वाली होने पर तो व्यक्ति स्वस्थ कल्पनाशील, आत्मनियन्त्रित, संयत और साथ ही हाथ में आये कार्य को निपटाने में सशक्त-समर्थ होता है। हां, इसका टूटा हुआ, लहरदार, अस्पष्ट, द्वीप अथवा शृंखला का आकार का, खराब रंग लिये होना तथा मार्ग में किसी नक्षत्र का होना यह इंगित करता है कि व्यक्ति अस्थिर, अधीर, दुर्बल मस्तिष्क, क्षीण कल्पनाशील तथा कभी अपने चित्त को एकाग्र न रख पाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति कभी अपने

विचारों पर स्थिर-अडिग नहीं रहता। नित्य-नयी योजनाएं बनाता-मिटाता रहता है। संकल्प-विकल्प में डूबे रहने वाला इस वर्ग का व्यक्ति किसी बात से सन्तुष्ट हो ही नहीं पाता और न ही वह कभी किसी की बात मानने को उद्यत होता है। ऐसे व्यक्ति को भले ही पागल न कहा जाये, परन्तु सत्य तो यह है कि उसमें पागलपन के सभी लक्षण अपने विकसित रूप में ही विद्यमान रहते हैं।

समग्रत: चन्द्रप्रधान व्यक्ति जहां एक ओर अत्यन्त प्रतिभाशाली होता है, वहां दूसरी ओर उन्मादग्रस्त और विक्षिप्त भी होता है। इन तथ्यों की जानकारी पर्वत के आकार, स्वरूप और चिह्नों से प्राप्त होती है। पर्वत का सर्वथा अभाव जहां नितान्त जड़ता का लक्षण है, वहां उसका अत्युन्नत रूप व्यक्ति को पागलपन के स्तर तक अनियन्त्रित कल्पनाजीवी तथा असंयत स्वप्नद्रष्टा बना देता है। अत: चन्द्रप्रधान व्यक्ति के हाथ का परीक्षण करते समय उसके मस्तिष्क के स्वस्थ होने-न होने की जानकारी कराने वाले माध्यम की खोज करनी होगी। वस्तुत: चन्द्रप्रधान व्यक्ति पूर्णत: न सही, अंशत: तो अवश्य ही कल्पनाजीवी तथा स्वप्नद्रष्टा, दूसरे शब्दों में उन्मत्तता के लक्षण लिये रहने वाला अवश्य होगा। अन्तर होगा, तो कल्पनाशक्ति के स्तर अथवा उसकी मात्रा का, हस्तरेखाशास्त्री द्वारा एक बार चन्द्रप्रधान व्यक्ति की कल्पनाशक्ति के स्तर का सही निर्धारण कर लेने पर उसके शुभ-अशुभ संयोगों और उनके परिणाम की भविष्यवाणी करने में किसी कठिनाई का अनुभव नहीं होगा।

*

शुक्र पर्वत

शुक्र पर्वत को हाथ में लिये रहने वाला व्यक्ति शुक्रप्रधान कहलाता है। शुक्र पर्वत की स्थिति अंगूठे के मूल में होती है। शुक्र पर्वत को शक्ति प्रदान करने वाले लक्षण हैं—पृथक्-पृथक् अथवा संयुक्त चिह्न, त्रिकोण, वृत्त, वर्ग अथवा एकल तथा उठती हुई रेखाएं। इसके दोषों के सूचक लक्षण हैं—गुणनचिह्न, जाल, द्वीप अथवा बिन्दु (रेखाचित्र-127)।
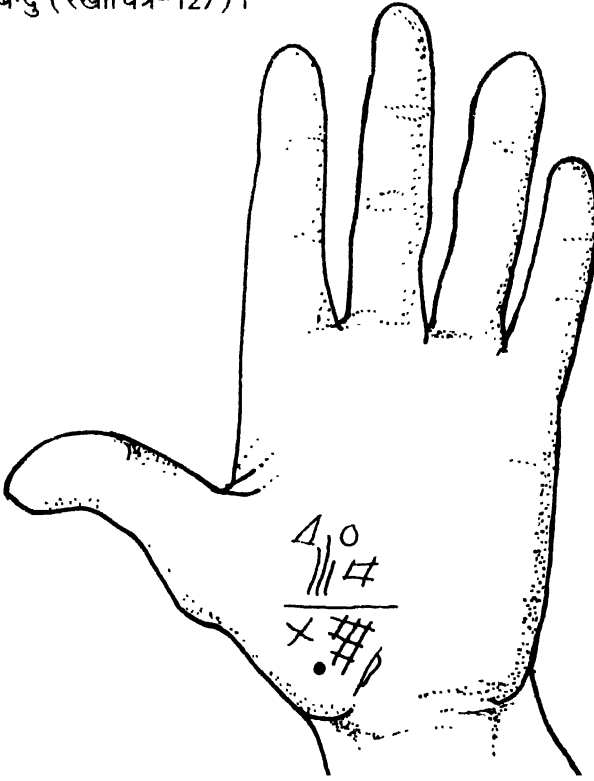
रेखाचित्र-127

शुक्र पर्वत हथेली में उभरता है तथा अन्य पर्वतों की अपेक्षा कहीं अधिक

और विस्तृत स्थान घेरता है। इसके आकार से तथा चिह्नों से शुक्रप्रधान व्यक्ति में शुक्र के गुणों की संख्या की स्थिति का और उसकी प्रकृति का पता चलता है। इस पर्वत के अतिशय विकसित रूप की पहचान है—पूरा उभार, अत्यधिक गहरा रंग तथा लम्बी-लम्बी रेखाओं के जाल का घेराव। विकसित शुक्र पर्वत वाले व्यक्ति में शुक्र सम्बन्धी गुणों की प्रबलता रहती है (रेखाचित्र-128)। इसी प्रकार सामान्य पर्वत की पहचान यह है कि वह शेष हाथ के अनुपात से बाहर नहीं होता, अतः इसमें शुक्र सम्बन्धी गुणों की मात्रा भी सामान्य होती है। अपूर्ण शुक्र पर्वत की पहचान यह है—पर्वत का बिल्कुल उठा हुआ न होना, अर्थात् नितान्त सपाट होना और दीखने में शिथिल लगना। निश्चित है कि अपूर्व शुक्र पर्वत में शुक्र के गुणों का अभाव होता है (रेखाचित्र-129)। यहां यह उल्लेखनीय है कि इन दोनों चरम अवस्थाओं—अतिशय विकसित तथा अपूर्ण, अर्थात् सर्वथा अविकसित—के मध्य में अनेक स्तर हैं।

शुक्रप्रधान व्यक्ति स्वस्थ, प्रसन्न तथा आनन्दित रहने वाला होता है। उसका रूप मोहक तथा आकर्षक लगता है तथा उससे मिलने पर मन को एक अनोखी प्रसन्नता की अनुभूति होती है। शुक्रप्रधान व्यक्ति नैतिक दृष्टि से पतित होने पर भी अवाञ्छनीय नहीं लगता, अपितु वह प्रिय एवं मोहक ही लगता है। शुक्रप्रधान व्यक्ति प्रणय और रति-भोग में अत्यन्त उत्साही और प्रचण्ड शक्तिसम्पन्न होते हैं—उनके हस्तपरीक्षण में इस तथ्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। कभी-कभी अधकचरे हस्तरेखाशास्त्री ऊपरी और सतही परीक्षण के आधार पर शुक्रप्रधान व्यक्तियों के उत्तम गुणों को निकृष्ट और इसके नितान्त विपरीत उनके निकृष्ट दोषों को गुण बताने की मूर्खता कर बैठते हैं। वस्तुतः विधाता का शुक्र पर्वतप्रधान व्यक्तियों को उत्पन्न करने का उद्देश्य ही यह रहा है कि सृष्टि-योजना में उपेक्षित प्रेम, सहानुभूति और आकर्षण के बन्धन को सुदृढ़ बनाया जा सके, ताकि मानव-परिवार एक-दूसरे के निकट आ सके। इसी प्रकार अनुत्साह, स्वार्थ-भाव और आत्मीयता की शून्यता-जैसे दोषों को दूर करके उदारता, प्रेम और एक-दूसरे को सहयोग देने की भावना को पनपाया जा सके, ताकि लोग अपने जीवन को सुखी, शान्त, निश्चिन्त और समृद्ध बना सकें।

शुक्रप्रधान व्यक्ति प्रेम, करुणा, उदारता और सहानुभूति-जैसे उत्तम गुणों से सम्पन्न होता है। वह न केवल अपने लिए, अपितु अपने संगी-साथियों के लिए भी उपयोगी एवं वाञ्छनीय सिद्ध होता है। निरुत्साह, उपेक्षा, भावशून्यता तथा ठण्डापन आदि विकर्षण और वितृष्णा के जनक होने के कारण अवाञ्छनीय दोष-रूप हैं, जबकि सजीवता, सक्रियता और तत्परता आदि ऊष्मा की अपेक्षा रखते हैं और शुक्र पर्वत व्यक्ति में इसी ऊष्मा का सञ्चार करता है। शुक्र से प्राप्त होने वाली ऊष्मा का
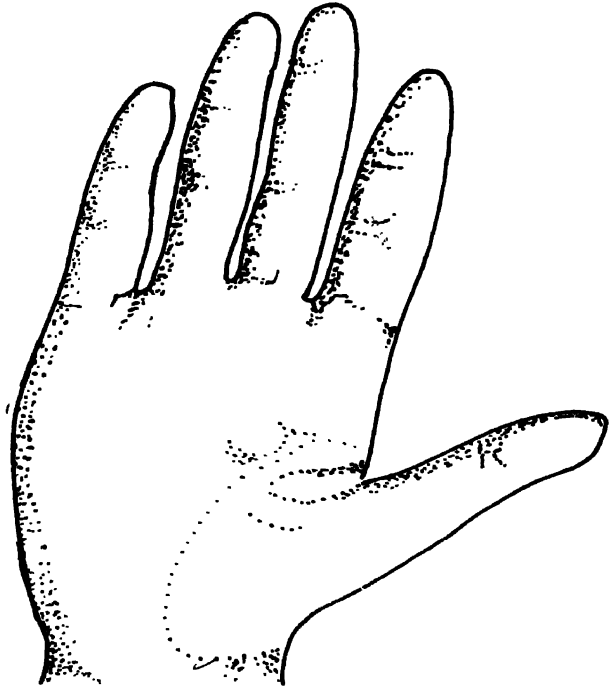
रेखाचित्र-128 व 129
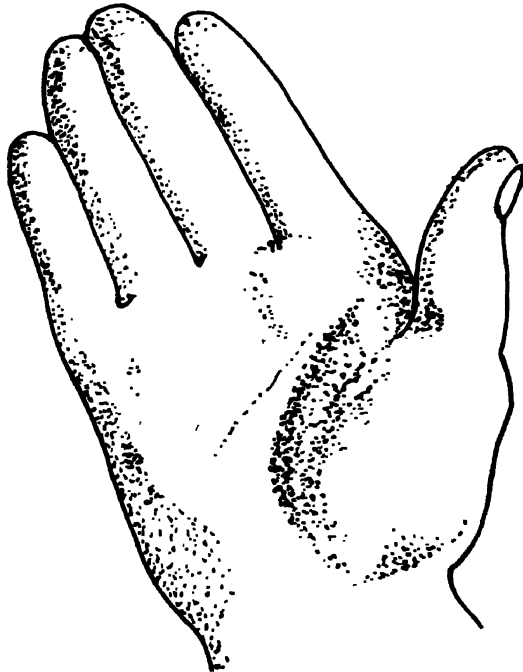
अर्थ है—हृदय द्वारा उत्तम कोटि के विशुद्ध रक्त की पर्याप्त और सशक्त आपूर्ति। इस प्रकार के रक्त वाले व्यक्ति का स्वस्थ, सुन्दर होने के साथ-साथ उत्साही और सक्रिय होना स्वाभाविक है। उत्तम स्वास्थ्य ही व्यक्ति को न केवल सुन्दर-आकर्षक बनाता है, अपितु उसे ऊर्जा और स्फूर्ति प्रदान कर उत्साह-सम्पन्न और सचेष्ट भी बनाता है। इस प्रकार व्यक्ति के गुणों को विकास और सदुपयोग का अवसर मिलता है। ऐसा व्यक्ति ही अपने आप से और दूसरों से प्रेम करता है और इस प्रकार उसका जीवन जीने योग्य तथा संसार स्वर्ग-तुल्य बन जाता है। वस्तुतः शुक्रप्रधान व्यक्ति उदासी, पित्त-विकार, चिड़चिड़ापन, स्वार्थभावना तथा तेजोहीनता आदि दोषों से तो परिचित ही नहीं होता। उसकी ऊष्मा, सजीवता, सुन्दरता, शालीनता तथा सक्रियता आदि विशेषताएं तो उसके सम्पर्क में आने वाले विपरीतलिंगी को उसका दीवाना बना देती हैं।

शुक्रप्रधान व्यक्ति की प्रचण्ड ऊष्मा को संयत-नियन्त्रित तथा क्षेत्र-विशेष तक सीमित रखने के लिए दो तत्त्वों—विवेक और आत्मसंयम—की प्रतीक मस्तक रेखा का उत्तम होना तथा दृढ़संकल्प से अंगूठे का बड़ा होना की अपेक्षा रहती है। शुक्र पर्वत मूलतः पुरुषप्रधान होने पर भी वह कतिपय स्त्रैण (स्त्रियों में पाये जाने वाले) गुणों को लिये हुए है। उदाहरणार्थ, कोमलता, सुकुमारता, सुन्दरता और आकर्षण आदि मूल रूप से स्त्रियों की ही विशेषाताएं हैं। पुरुष का मूल तत्त्व उसका संघर्षप्रिय होना है और संघर्ष का सम्बन्ध कठोरता, परिश्रम, उग्रता तथा निर्ममता आदि से है। प्रेम, करुणा, सहिष्णुता आदि कोमल भावनाएं तो स्त्री की सम्पत्ति हैं और यही गुण स्त्री को पुरुष की अपेक्षा कहीं अधिक उदार और सुशील बना देते हैं। निस्सन्देह पुरुष भी प्रेम करता है, परन्तु स्त्री के प्रेम में जो गहराई, कोमलता और पूर्ण समर्पण आदि विशेषताएं रहती हैं, पुरुष वे सब विशेषताएं कहां से ला सकता है? इस प्रकार स्त्री ईश्वरप्रदत्त दिव्य गुणों का उत्कृष्ट रूप है। इस रूप में प्रेम के उदात्त और आदर्श गुण को लिये रहने वाले शुक्रप्रधान व्यक्ति को भी स्त्री प्रकृति का ही मानना चाहिए।

पुरुषों के चरित्र की अपेक्षा स्त्रियों का चरित्र कहीं अधिक उच्चकोटि का होता है। स्त्री का पुरुष के प्रति यौन-आकर्षण जितना प्रबल होता है, वैसा आकर्षण पुरुष में स्त्री के प्रति नहीं होता। शुक्रप्रधान पुरुष के हाथ में निम्नोक्त तत्त्वों की स्थिति उसमें स्त्रियोचित गुणों की अधिकता-प्रबलता की सूचक है—शुक्र पर्वत का सशक्त और विकसित होना, अंगुलियों का चिकना होना, अंगलियों के छोरों का नुकीला होना तथा कोमल संगति। ये तत्त्व पुरुष के भावावेश, अनुराग और काम-भाव को उद्दीप्त, उत्तप्त और प्रचण्ड बनाने वाले हैं। हाथ की संगति के कठोर होने पर तो व्यक्ति अपनी इच्छाओं में लिप्त होने से अपने को रोक ही नहीं सकता। इसके

विपरीत इन तत्त्वों वाली स्त्री संयम से काम लेने से समर्थ हो जाती है। किसी-किसी व्यक्ति के हाथ में तो अतिशय विकसित पर्वत त्वचा को फाड़कर बाहर निकलता प्रतीत होता है (रेखाचित्र-128)। ऐसे अतिशय विकसित पर्वत के चिकने और निष्कोण होने का अर्थ है—व्यक्ति काम-भोग सम्बन्धी सभी चेष्टाओं और गतिविधियों का पूरे उत्साह और प्रचण्ड स्फूर्ति से आनन्द लेने का इच्छुक तो होता है, परन्तु प्रणय सम्बन्ध में इसी आकार के पर्वत पर रेखाजाल लिये रहने वाला व्यक्ति जिस सीमा तक जाता है, वहां तक नहीं पहुंच पाता (रेखाचित्र-130)। रेखाजाल से पर्वत के ऊपर से प्रवहणशील विद्युत्-तरंगों द्वारा भावावेश और कामोन्माद को प्रचण्ड
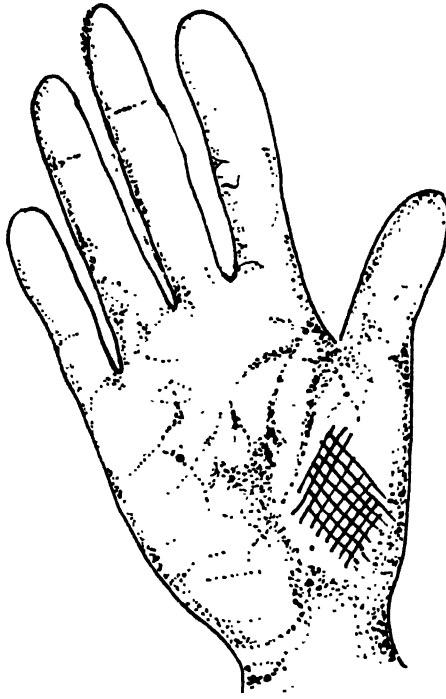
रेखाचित्र-130

बनाना द्योतित होता है। शुक्र पर्वत का चिकना तथा समतल होने पर व्यक्ति सौन्दर्य-प्रेमी—चित्रों, पुष्पों, संगीत तथा सुन्दर दृश्यों और मोहक स्त्रियों में रुचि लेने वाला—तो होता है, परन्तु अधिक कामुक एवं वासनाप्रिय नहीं होता। हां, इसी पर्वत के जालदार होने का अर्थ व्यक्ति में यौनाकर्षण का अत्यधिक बढ़ा हुआ होना होता है। विकसित शुक्र पर्वत पर रेखाजाल रखने वाली स्त्री पुरुष के प्रति उत्कट-प्रगाढ़ आकर्षण रखती है। ऐसे लक्षणों वाला पुरुष तो कामुकता के स्तर पर ख़तरनाक हो जाता है। उसमें यौनाकर्षण इतना प्रचण्ड और प्रबल होता है कि पुरुष के लिए तो

अपने ऊपर संयम-नियन्त्रण रखना कठिन हो जाता है। स्त्री इस सम्बन्ध में भाग्यशाली होती है; क्योंकि वह अपने ऊपर संयम रख पाती है—इसका उल्लेख किया जा चुका है। शुक्र पर्वत पर गहरा, प्रबल और लाल रंग का रेखाजाल पर्वत के जोश के साथ संकट (नियन्त्रण न कर पाना) की सम्भावना में अत्यधिक वृद्धि करने वाला होता है। जालीदार रेखाओं से भरा यह पर्वत अपनी ढीली त्वचा से पूर्ण विकसित-जैसा प्रतीत होता है और इसी शिथिलता के कारण उसका रूप-रंग चूसे गये सन्तरे-जैसा प्रतीत होता है। यह इस तथ्य का संकेत होता है कि व्यक्ति अपनी कामवासना की तृप्ति में इस उच्छृंखता से व्यग्र रहा है कि उसकी सम्भोग-शक्ति समाप्तप्राय ही हो चुकी है। यह सचमुच दुःख का विषय है कि शुक्र पर मानवीय चरित्र को निकृष्ट स्तर तक गिराने का दोष तो मढ़ा जाता है और इसे ख़ूब उछाला भी जाता है, परन्तु ऐसा करते हुए उसके उदात्त गुणों को अनदेखा कर दिया जाता है। सच कहा जाये, तो वस्तुतः चरित्रहीनता और व्यभिचार-जैसे शब्दों से कलंकित कामेच्छा ही विपरीतलिंगियों में एक-दूसरे के प्रति आकर्षण, विवाह, सन्तानोत्पत्ति तथा व्यापक रूप में देखा जाये, तो सृष्टि के अस्तित्व और विस्तार का आधारभूत कारण है। यदि कामवासना न होती, तो क्या आज हम सब का कोई अस्तित्व होता? स्पष्ट है कि इसकी निश्चित और सार्थक उपयोगिता है।

बच्चे को जन्म देने की पीड़ा को असह्य मानकर गर्भधारण और प्रसव से विरक्ति को न पनपने देने के लिए ही तो सन्तानोत्पत्ति को विवाह का आदर्श माना गया और गर्भधारण को महिमामण्डित किया गया। प्रेम और आकर्षण के साथ विवाह का स्थायी सम्बन्ध जोड़कर इसी तथ्य की पुष्टि की गयी। कुछ अवाञ्छित तत्त्वों द्वारा कामोपभोग का दुरुपयोग करने और इसे निम्न स्तर पर लाने के प्रयत्न के कारण तो इसकी महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। शुक्र पर्वत की कामुकता को उसके यथावत् रूप में देखना ही वाञ्छनीय होता है।

हस्तरेखाशास्त्री को शुक्रप्रधान व्यक्ति के हाथ का अध्ययन करते समय इस तथ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि सम्बद्ध व्यक्ति ने प्राप्त दुर्लभ गुणों का अच्छे प्रयोजनों में सदुपयोग किया है अथवा उन्हें कामुकता की भट्टी में झोंककर अपने पैरों पर आप ही कुल्हाड़ी मारी है। वस्तुतः शुक्रप्रधान व्यक्ति में ऐसे विरल गुण—प्रेम, उदारता, सहिष्णुता, सुन्दरता, शालीनता, सजीवता, दृढ़ता, सामर्थ्य, उत्तम स्वास्थ्य, हार्दिक प्रसन्नता तथा लोककल्याण की प्रवृत्ति आदि हैं, जो एक ओर उसे आकर्षण का केन्द्र बना देते हैं, तो दूसरी ओर उसे प्रलोभनों, दूसरे शब्दों में संकटों के जाल में भी फंसा देते हैं। शुक्रप्रधान व्यक्ति स्वस्थ, सुन्दर, आकर्षक व मोहक होता है। उसका शरीर सुगठित, मन उत्फुल्ल, व्यवहार सुमधुर और आचरण स्पृहणीय होता है। उसकी सुन्दरता, कोमलता, शालीनता, सरलता तथा मोहकता आदि विशेषताएं

उसे पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के समीप ही ले जाने वाली हैं। सूर्य और बृहस्पति प्रधान पुरुषों का सौन्दर्य पुरुषोचित होता है, परन्तु शुक्रप्रधान पुरुषों के सौन्दर्य में नारीसुलभ कमनीयता और कामुकता पायी जाती है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति का क़द मध्यम, सिर से पांव तक सारा शरीर मोहक और सुन्दर ढंग से सुगठित, त्वचा श्वेत, धवल, कोमल, दर्पण के समान चमकीली एवं पारदर्शी तथा छूने में मख़मली, त्वचा का रंग स्वस्थ एवं पर्याप्त रक्त की आपूर्ति का द्योतक, चमकता-दमकता गुलाबी चेहरा, गोल अथवा अण्डे के आकार का, आंख, नाक, कान, जबड़ा और दांत आदि सब-के-सब आनुपातिक रूप में व्यवस्थित होने से सौन्दर्य को द्विगुणित करते हुए, मस्तक ऊंचा, गोल और अनुपात में सर्वथा जंचता हुआ, गाल अत्यन्त ही मोहक रूप में गोल, हंसते समय कहीं-कहीं गड्ढों का पड़ना, ललाट उन्नत, अर्थात् माथे की खाल का एकदम तना हुआ होना, युवावस्था में ही नहीं, अपितु वृद्धावस्था में भी झुर्रियों का नितान्त अभाव लिये रहता है। शुक्रप्रधान व्यक्ति की आयु के अत्यधिक बढ़ जाने पर तथा शुक्र-भण्डार के लगभग ह्रास हो जाने पर और उसके फलस्वरूप ऊर्जा के समाप्त हो जाने पर, उसके चेहरे पर थोड़ी-बहुत झुर्रियां देखने को मिलती हैं।

शुक्रप्रधान व्यक्ति की युवावस्था में तो उसके माथे पर शुक्र का चिह्न होता है, जो नेत्रों के बीचों-बीच नासादण्ड पर तीन ऊंची सिलवटों से बना है। उसके केश भरपूर, लम्बे, रेशमी, पतले और लहरदार होते हैं। शुक्रप्रधान व्यक्ति के गंजा होने का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। यदि ऐसा होता है, तो उसका कोई दूसरा विशेष कारण होता है। उसकी भृकुटियां स्पष्ट, भरपूर और घुमावदार रेखाओं से ललाट की शोभा को बढ़ाने वाली होती हैं, भौंहों के छोर पैने और तीखे होते हैं। व्यक्ति को घटिया प्रवृत्ति की ओर ले जाने की संकेतक भौंह नाक पर नहीं उगती है। आंखें बादाम-जैसी अथवा गोल तथा भूरा अथवा नीला रंग लिये रहती हैं, जिनमें दया, करुणा और ममता झांकती दीखती हैं। भावनाओं के उमड़ने पर इन आंखों में कामोत्तेजना स्पष्ट झलकती है। समग्रतः शुक्रप्रधान व्यक्ति सुन्दर, सुशील, सभ्य और सुरुचि-सम्पन्न होता है। उसकी त्वचा का रूप-रंग उत्तम प्रकृति का, नाक सुघड़ तथा उसके नथुनों के शीघ्र सिकुड़ने-फैलने से उत्तेजना के समय उसके स्वभाव में आ रहे परिवर्तन की जानकारी मिलती है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति के मुख की रचना धनुष के आकार की और सुन्दर होती है। उसके अधर लाल, निचला होंठ कुछ अधिक निकला हुआ, दांत उज्ज्वल, मध्यम आकार वाले, सुदृढ़ तथा स्वस्थ मसूड़ों में ठीक से जमे हुए, हंसते समय गालों में गड्ढों का पड़ना तथा आंखें अर्थपूर्ण होती हैं। इस प्रकार गहरे लाल होंठों के बीच चमकते, दूध-जैसे उजले दांतों से सुशोभित एक अत्यन्त सुन्दर-मोहक चेहरा उभरकर

आंखों के सामने आता है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति की ठोड़ी गोल-पूरी, ठोड़ी के सिरे पर गड्ढा, गर्दन लम्बी, पूरी और सुघड़, कन्धे सुन्दरता से झुके रहने वाले, चौड़े तथा विशाल, वक्षःस्थल भरा हुआ, विशाल एवं गोल, फेफड़ों का सही कार्य कर सकना, वाणी संगीतमय एवं कर्णप्रिय, स्वर में दुर्बलता तो नहीं होती, परन्तु मंगलप्रधान व्यक्ति की वाणी में मिलने वाली शक्ति का अभाव, टांगें सुन्दर-सुडौल, नितम्ब ऊंचे-गोल तथा जंघाएं समुचित अनुपात में लम्बी होती हैं। उसके पांव छोटे-सुघड़, पिंडलियां धनुष के आकार वाली और ऊंची होने के कारण चाल को सुन्दरता और लोच प्रदान करती हैं। इस प्रकार समग्र रूप से शुक्रप्रधान व्यक्ति सुन्दर, सुशील, सौम्य, मोहक तथा आकर्षक होता है। वह अपने रूप और गुणों के सम्मोहन से दूसरे लोगों को हर्षोल्लास से आनन्दित बनाने वाला होता है। उसके अस्तित्व से ही यह संसार रहने-जीने योग्य बनता है। इसकी अनुपस्थिति का अर्थ होता है—संसार में स्वार्थपरता, नीरसता और कुरूपता का एकछत्र साम्राज्य। इसे तो पृथ्वी पर विधाता का वरदान ही समझना चाहिए।

शुक्रप्रधान व्यक्ति का हाथ कोमल, शुभ, बढ़िया, गुलाबी रूप-रंग वाला, अंगुलियां मध्यम स्तर की लम्बी अथवा छोटी, अंगुलियों के छोर नुकीले और कुछ-कुछ वर्गाकार अथवा चमचाकार, नाख़ून भरे-पूरे गुलाबी, अंगूठे का आकार मध्यम अथवा लघु और शुक्र पर्वत विशाल, चिकना, समतल अथवा रेखाजाल से घिरा होता है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति कोमलता और स्निग्धता का अजस्र स्रोत होता है। उसके हृदय में दया, करुणा और ममता की उच्छल धाराएं निरन्तर प्रवाहित होती रहती हैं, जिसके कारण लोग अनायास उसकी ओर खिंचे चले आते हैं और वह लोगों के हृदय पर राज्य करता है। शनिप्रधान व्यक्ति के समान शुक्रप्रधान व्यक्ति न तो स्वयं लोगों से दूर रह पाता है और न ही लोग उससे दूर रह पाते हैं। वस्तुतः शुक्रप्रधान व्यक्ति शनिप्रधान व्यक्ति के समान लोगों से अकारण एवं सहज भाव से घृणा करता ही नहीं है। वह तो लोगों पर स्नेह उंड़ेलता रहता है और किसी के भी दुःख में द्रवित होकर उसकी सहायता को आगे बढ़ता है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति का अंगूठा कठोर न होकर लचीला होता है, जो उसके जीव मात्र के प्रति उदार, कारुणिक तथा ममतामय होने का सूचक है। उसकी इन उदात्त प्रवृत्तियों के कारण सहायता के इच्छुक अनेक लोग सदैव उसे घेरे रहते हैं, उसे अपनी करुण-कथा सुनाकर उसकी सहृदयता का लाभ उठाते रहते हैं। वह अपने मित्रों-परिचितों को कभी निराश नहीं करता और उनके दुःख-संकट में कभी मुंह नहीं मोड़ता, अपितु सदैव उदार-हृदय और मुक्त हाथ से उनकी सहायता करता है।

वस्तुत: वह इतना अधिक संवेदनशील होता है कि दूसरों के दु:ख-कष्ट को सहन कर ही नहीं पाता। कुछ धूर्त लोग उसकी संवेदनशीलता का अनुचित लाभ भी उठाते हैं, परन्तु इतने पर भी न तो वह अपनी उदारता को छोड़ता है और न ही कभी किसी को निराश करता है। वस्तुत: उसे दूसरों से ठगा जाना स्वीकार है, परन्तु किसी को दु:ख-संकट में विलखता देखना कदापि स्वीकार नहीं। यही कारण है कि उसकी सदैव यही चेष्टा रहती है कि कोई ज़रूरतमन्द उसकी सहायता से वञ्चित न रहने पाये।

शुक्रप्रधान व्यक्ति कभी अधीर, चञ्चल तथा अस्थिर स्वभाव का नहीं होता। वह तो जीवमात्र के प्रति नि:स्वार्थ प्रेमभाव को लिये रहने वाला होता है। वह जीवन को आनन्द समझने वाला आशावादी व्यक्ति है, जो दूसरों की सचाई और ईमानदारी पर विश्वास रखता है और उनके लिए कुछ कर सकने को अपना सौभाग्य मानता है। वह न तो कभी पित्त-विकार से ग्रस्त रहता है और न ही किसी के प्रति घृणा अथवा द्वेष का भाव लिये रहता है। उसका स्वस्थ शरीर उसके मन को भी स्वस्थ रखता है और इससे वह दूसरों के दोष न देखकर उनके गुणों को ही देखता है। उसे संसार के अच्छा होने का विश्वास होता है। वह संसार में सुन्दरता, शान्ति, सुख, आनन्द, सज्जनता और कृतज्ञता के अस्तित्व में विश्वास होता है।

जिन परिस्थितियों शुक्रप्रधान व्यक्ति हर्षोल्लास से उन्मत्त हो रहा होता है, उन्हीं परिस्थितियों में शनिप्रधान व्यक्ति निराशा, कुण्ठा, विषाद और उद्विग्नता से चीत्कार कर रहा होता है। शुक्रप्रधान व्यक्ति के लिए चारों ओर आशा और विश्वास का साम्राज्य फैला होता है। अत: वह अपने साथियों में सुख, शान्ति और आनन्द को बांटता है। वस्तुत: उसका हृदय सदैव निर्मल और प्रेम से छलकता रहता है। यही कारण है कि लोग उसे प्यार करते हैं और उसके प्रति खिंचे चले आते हैं। वह प्रेम का प्रत्युत्तर तो प्रेम में देता है, घृणा के बदले भी प्रेम ही उंड़ेलता है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति पिकनिक, सैर-सपाटा, नृत्य-गीत-आयोजन तथा मौज-मस्ती के अन्यान्य कार्यक्रमों में गहरी रुचि लेने वाला होता है। कभी-कभी तो वह मौज-मस्ती के लिए अपने व्यवसाय-धन्धे की भी उपेक्षा करने लगता है। यही कारण है कि वह अधिक धन-सम्पन्न नहीं बन पाता। वस्तुत: वह धन-सम्पत्ति को विशेष महत्त्व ही नहीं देता और इसी कारण किसी भी उत्तरदायित्व को संभालने से कतराता है। फिर भी वह ऐसा भाग्य का धनी होता है कि अपने क्षेत्र में निरन्तर प्रगतिशील बना रहता है। इसी से वह फ़ुज़ूलख़र्च और लापरवाह होने पर भी आनन्द-प्रसन्न रह पाता है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति कभी आत्मकेन्द्रित नहीं होता। वह तो किसी को दुखी देखकर अपने सुख-दु:ख की चिन्ता न करके उसकी सेवा-सहायता करने में जुट

जाता है। वह न तो गहन प्रकृति का अध्ययनशील, न ही कठोर परिश्रमी और न ही महत्त्वाकांक्षी होता है। वह तो केवल मौज-मस्ती से जीवन को जीने में विश्वास रखता है। सौन्दर्योपासक होने के कारण अपने उपयोग में आने वाले प्रत्येक पदार्थ—घर, कार्यालय, वेशभूषा, रहन-सहन, आचार-विचार और व्यवहार—में सुन्दरता, सुरुचि और व्यवस्था देखने का आदी होता है। सुन्दरता, संगति, सुरुचि और सामञ्जस्य आदि सहज ही उसके मन को मोह लेते हैं। भावुक, कामुक और उत्कट शुक्रप्रधान व्यक्ति प्रेम की प्रचण्डता और काम की उत्तेजना को लिये रहता है। वह अपनी सशक्त-से-सशक्त इच्छाओं की भी अभिव्यक्ति में विश्वास नहीं रखता। वह तो अपनी इच्छाओं को इस ख़ूबी से दबाये रखता है कि लोग उसके अन्तर्द्वन्द्वों को जान ही नहीं पाते।

शुक्रप्रधान व्यक्ति न तो धनलोलुप और न ही महत्त्वाकांक्षी होता है। वह सच्चा और ईमानदार होने से कभी किसी को धोखा नहीं देता। झूठ बोलना और किसी को भरोसा देकर मुकर जाना तो वह जानता ही नहीं। वह स्थायी मित्रता रखने वाला होता है। वह दूसरों द्वारा किये अपमान और उपेक्षा को संभाले नहीं रखता, अपितु भूलने और क्षमा करने में विश्वास रखता है। वह लड़ाई-झगड़े को भी पसन्द नहीं करता। वह सदैव दूसरों को प्रसन्न रखना चाहता है और उसके लिए प्रयत्नशील भी रहता है। हां, वह यह अवश्य चाहता है कि लोग उसे ठीक ढंग से समझें और उसकी अच्छाई के लिए उसकी प्रशंसा करें।

शुक्र पर्वत का एक नाम ग्वर पर्वत भी है। अत: शुक्र-प्रकार के व्यक्ति संगीत-कला में बाहरी रुचि रखने वाले होते हैं। संगीतकारों के हाथ के परीक्षण में इस तथ्य का विस्मरण नहीं करना चाहिए। शुक्र पर्वत के विकसित होने पर तो व्यक्ति संगीतप्रेमी ही नहीं, अपितु इस विद्या में विचक्षण होता है। संगीतज्ञ की स्पष्ट पहचान यह है कि उसकी हाथ की त्वचा उत्कृष्ट कोटि का रूप-रंग लिये रहती है तथा सूर्य, बुध और मस्तिष्क की रेखाएं भी उत्तम होती हैं। उसकी अंगुलियां चिकनी और बग़ल से वर्गाकार तथा अंगुलियों के छोर नुकीले, वर्गाकार अथवा चमचाकार होते हैं और साथ ही चन्द्र पर्वत उपयुक्त रूप में पूर्ण होता है। यह अलग बात है कि इस कोटि के सभी व्यक्ति (संगीतज्ञ) अपनी प्रतिभा को निखारने की सुविधा एवं अवसर जुटा नहीं पाते, अर्थात् सभी को इस क्षेत्र में निपुणता और प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती। हां, समुचित प्रशिक्षण मिलने और अभ्यास करने पर इनका कुशल होना सुनिश्चित होता है। संगीत से सम्बन्ध न रखने वाले व्यक्तियों के हाथ में उपर्युक्त संकेतों को देखकर यही अनुमान लगाना चाहिए कि इस अभागे को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के अवसर ही नहीं मिले।

शुक्रप्रधान व्यक्ति मधुर संगीत को अधिक पसन्द करता है। शास्त्रीय संगीत

की गम्भीरता को वह झेल नहीं पाता। चन्द्र पर्वत के विकसित होने पर तो व्यक्ति संगीत का दीवाना हो जाता है। वस्तुतः चन्द्र पर्वत के साथ दोनों—सुरीलापन और स्वर-संगति का सुन्दर संयोग रहता है। शुक्रप्रधान व्यक्ति सामान्यतः रूप, रंग और कला का प्रेमी तो होता है, परन्तु उसका यह प्रेम हाथ में सूर्य रेखा के उत्तम होने, सूर्य पर्वत के विकसित होने, सूर्य की अंगुली के प्रथम पर्व के अधिक लम्बा तथा बृहस्पति पर्वत के सुविकसित होने पर दीवानेपन का रूप ग्रहण कर लेता है। शुक्र-प्रधान व्यक्ति प्राकृतिक दृश्यों, चमकीले रंग, सुन्दर वेशभूषा तथा ललित-कलाओं से प्रभावित होता है और उनमें रुचि भी लेता है, परन्तु इस सम्बन्ध में अपनी किसी सृजन-क्षमता का परिचय नहीं दे पाता। उसकी लिखाई स्वच्छ-सुन्दर होती है। प्रसन्नचित्त रहने वाला शुक्रप्रधान व्यक्ति अपनी रचनाओं में उदासी का चित्रण करता है और दुखान्त नाटकों में गम्भीरपना का ऐसा सशक्त और सजीव अभिनय करता है कि दर्शकों के आंसू थमने में नहीं आते। वस्तुतः वह कला के प्रत्येक क्षेत्र—लेखन, संगीत, चित्र, अभिनय तथा नृत्य आदि—में अपनी प्रतिभा के सर्वोच्च रूप का प्रदर्शन करता है। उसकी कला-सम्बन्धी अभिव्यक्ति मार्मिक, हृदयस्पर्शी तथा अत्यन्त प्रभावी होती है, जो सीधे हृदय में गहरी उतर जाती है। वह अपने दर्शकों, श्रोताओं एवं पाठकों को मन्त्रमुग्ध, द्रवित एवं भावप्रवण बनाने की विलक्षण क्षमता लिये रहता है। शनिप्रधान व्यक्तियों की रुचि की हास्य-भूमिका को निभाना शुक्रप्रधान व्यक्ति के स्वभाव एवं चरित्र के सर्वथा विपरीत होती है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति सामान्यतः छोटी आयु में ही विवाह कर लेता है; क्योंकि वह बचपन में ही परिपक्व लगने वाला होता है और इसी अतिशय परिपक्वता के कारण युवावस्था में तो वह काफ़ी बड़ा लगता है। वह विवाह के सम्बन्ध में टाल-मटोल की नीति नहीं अपनाता तथा अपने जीवनसाथी के रूप में आकर्षक, चरित्रवान्, स्वस्थ, सुशील एवं समझदार व्यक्ति को अपनाने के पक्ष में रहता है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति दुखी-पीड़ितों एवं अभावग्रस्तों के प्रति करुणा-संवेदना के भाव अवश्य रखता है, उनकी सहायता में भी कभी पीछे नहीं रहता, परन्तु वह उनसे प्रेम नहीं कर पाता। उनसे एक दूरी बनाये रखता है। मंगल की शक्ति एवं उसका उत्साह शुक्रप्रधान व्यक्ति को अपनी ओर आकृष्ट करने वाले होते हैं। अतः शुक्रप्रधान व्यक्ति मंगलप्रधान व्यक्ति के प्रति आकृष्ट रहता है। शुक्रप्रधान व्यक्ति में कामोन्माद की प्रचण्डता रहने के कारण उसके यहां बच्चे का होना स्वाभाविक होता है। शुक्र-प्रधान व्यक्ति स्वभाव से निश्चिन्त, प्रसन्न, उत्फुल्ल एवं आनन्दित रहने वाला होने के कारण घर-परिवार के लोगों और अपने वैवाहिक जीवन को भी सुखी-प्रसन्न बनाये रखने वाला होता है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति आशावादी और जीवन के प्रति विश्वास का भाव रखने

वाला होने के कारण आत्महत्या के सम्बन्ध में कभी सोचता तक नहीं है। सदा आनन्द में विचरण करने वाला ऐसा व्यक्ति एक प्रकार से दार्शनिक ही होता है। वह गम्भीर विचार न रखने पर भी जीवन को सहजता से जीने वाला होता है। उत्तम स्वास्थ्य रखने वाले शुक्रप्रधान व्यक्ति को रोगों से कुछ लेना-देना नहीं रहता। रोग तो उसके पास फटकने नहीं पाते। साधारण रोगों की बात अलग है, अन्यथा वह कभी किसी गम्भीर रोग का शिकार नहीं होता। शुक्र पर्वत से जुड़े रोगों की जानकारी अन्य पर्वतों में दिये निर्देशों से प्राप्त की जा सकती है। घटिया श्रेणी के शुक्रप्रधान व्यक्ति प्रायः यौन रोगों से आक्रान्त रहते हैं, जिसके संकेत हाथ के पिछले भाग पर काले बिन्दुओं अथवा भूरे धब्बों अथवा चकत्तों के रूप में मिलते हैं। विषाक्त रक्त से बनने वाले ये धब्बे हाथ को दूषित बना देते हैं।

कुछ शुक्रप्रधान लोगों का बुरा होना तथा कुछ अच्छों का भी थोडी-बहुत बुराई लिये रहना एक सामान्य स्थिति है। ऐसे लोगों की अच्छाई पर बुराई इस प्रकार प्रभावी होती है कि अच्छाई दब जाती है और फिर बुराई उभरकर अपना दबदबा बनाये रहती है। ऐसे लोगों की पहचान के लक्षण कुछ इस प्रकार से हैं—क़द छोटा, शरीर हृष्ट-पुष्ट और पेट बढ़ा हुआ होता है। इनमें सुन्दरता और शालीनता तो नाममात्र को भी नहीं होती, न इनमें लचीलापन होता है और न ही इनकी आंखों में चमक होती है। बाल लाल रंग के, नाक औंधी और आंखें लाल होती हैं। इनके अंग-अंग से चञ्चलता और धूर्तता झलकती है। इनके होंठ मोटे और लाल, चेहरे की त्वचा मोटी तथा रूखी-सूखी, गर्दन, शरीर और हाथों का रंग गन्दा-मटमैला होता है। गन्दी इच्छाओं और दूषित वासनाओं के शिकार इन लोगों के चेहरे से इनकी कामुकता झलकती है।

निचले स्तर के शुक्रप्रधान व्यक्ति के हाथ विशेष रूप से हाथों की अंगुलियों के तृतीय पर्व बहुत मोटे होते हैं। हाथ का मूल और शुक्र पर्वत लाल रंगत और कठोरता लिये रहता है। अंगुलियां छोटी-चिकनी होती हैं और उनके प्रथम पर्व अधूरे होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की त्वचा का लाल रंग घटिया क़िस्म का होता है तथा हाथ में लचीलापन भी नहीं होता। अंगूठे का पहला पर्व तो ख़ास कर छोटा और नोकदार होता है। घटिया रुचियों वाले ऐसे व्यक्ति घटिया ढंग का जीवन जीते हैं। वस्तुतः ये लोग अच्छे और बुरे में अन्तर ही नहीं कर पाते और पाशविक आनन्द को ही वास्तविक आनन्द मानने की ग़लती करते हैं। इस प्रकार पापाचरण, भ्रष्टाचार, दुराचार और छल-कपट इनके जीवन के सामान्य रूप है; क्योंकि ये लोग स्वेच्छाचारी तथा विवेकभ्रष्ट होने से शुभ और अशुभ में अन्तर करने का सामर्थ्य ही खो चुके होते हैं।

उपर्युक्त दुष्ट प्रकृति तथा उत्तम प्रकृति शुक्रप्रधान व्यक्तियों के बीच की अनेक

श्रेणियां हैं, जिसकी जानकारी के लिए व्यक्ति के हाथ की गहरी और सूक्ष्म जांच अपेक्षित होती है। कभी-कभी व्यक्ति की कामुकता के आधार पर उसे अधम कोटि का मान लेना और इसी प्रकार व्यक्ति की जड़ता और अधमता की उपेक्षा करते हुए उसे उत्तम कोटि का मान लेना सर्वथा ग़लत सिद्ध होता है, जिसके प्रति हस्तरेखाशास्त्रियों को सावधानी बरतने की भारी आवश्यकता है।

व्यक्ति के सांस्कृतिक स्तर के बढ़िया अथवा घटियापन को जानने का आधार है—त्वचा और उसका रूप-रंग। परिष्कृत गुणों वाला व्यक्ति उच्च स्तर का और निकृष्ट प्रवृत्तियों वाला निम्न स्तर का होता है। ऊंची क़िस्म की त्वचा को देखकर व्यक्ति के उच्च पक्ष पर विचार करना चाहिए। उत्तम कोटि के व्यक्ति में करुणा, ममता और सहानुभूति-जैसे गुण समृद्ध परिमाण में और कामुकता न्यून मात्रा में होती है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर रूप-रंग वाले विपरीतलिंगी के सम्पर्क में आने पर हर्षोत्फुल्ल तो होता है, परन्तु उसके साथ सम्भोगेच्छा को नहीं पनपने देता। उत्तम त्वचा के साथ पर्वत की विशालता अथवा अधिकता का अथवा पूर्णत: जाल वाला होना व्यक्ति के मनोभावों के सुसंस्कृत होने का तथा प्रेम के सम्बन्ध में उसके आदर्शवादी होने का सूचक है। ऐसा व्यक्ति प्रबल यौन-वासना रखते हुए भी सामाजिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से केवल अपने स्तर के अथवा अत्यन्त सुसंस्कृत विपरीतलिंगी के साथ ही सम्बन्ध जोड़ने को उद्यत होता है। इसके विपरीत घटिया त्वचा व्यक्ति के निकृष्ट, गंवार और जड़ होने का संकेत देती है। ऐसा घटिया व्यक्ति तो किसी भी घटिया कार्य में प्रवृत्त हो सकता है। वह तो यह कभी सोचता ही नहीं कि वह जिसके प्रति आकृष्ट हो रहा है, उसका सामाजिक, मानसिक तथा बौद्धिक स्तर किस कोटि का है ? उसे तो केवल शारीरिक मिलन से प्राप्त होने वाले सुख से प्रयोजन होता है। वस्तुत: उत्तम त्वचा व्यक्ति के मनोभाव, स्वभाव और चरित्र के शालीन होने की सूचक है, वहां घटिया त्वचा व्यक्ति के पशु-प्रवृत्ति का होने की सूचक है। घटिया त्वचा वाला शुक्रप्रधान व्यक्ति इस प्रकार स्वार्थी होता है कि वह दूसरों की सुविधा-असुविधा तथा उसके मान-अपमान की चिन्ता न करके केवल अपने सुख-भोग और मौज-मस्ती से प्रयोजन रखने वाला होता है। हाथ के अंगूठे में लोच के न होने को इस तथ्य का पुष्ट प्रमाण मानना चाहिए।

हाथों की उपयुक्तता से व्यक्ति में विद्यमान ऊर्जा और कर्मशक्ति की स्थिति-मात्रा आदि की जानकारी मिलती है। शिथिल और पिलपिले हाथों वाला व्यक्ति जीवन में कुछ उपयोगी कार्य करने अथवा उन्नति करने की न सोचकर मौज-मस्ती को ही जीवन का उद्देश्य मानकर उसी में डूबा रहता है। इस मौज-मस्ती को पाने में भी उसकी कोई सक्रिय भूमिका नहीं रहती। मौज-मस्ती के अवसर उसके पास चलकर आते हैं, तो ठीक, नहीं आते, तो वह अपनी ओर से कुछ भी सार्थक नहीं

करता। इसके विपरीत हाथों की कोमलता से व्यक्ति में अधिक कर्मशक्ति होने का और उसके द्वारा जीवन में उपयोगी कार्य सिद्ध करने का तथा थोड़े-बहुत आलसी होने का पता चलता है। लचीला हाथ सबसे अच्छा माना जाता है। ऐसे हाथों वाले शुक्रप्रधान व्यक्ति उत्कृष्ट गुणों से सम्पन्न होते हैं और इन गुणों के समुचित प्रयोग से जीवन में अत्यन्त उपयोगी कार्य करने वाले अपने वर्ग के उत्कृष्ट उदाहरण होते हैं। वे विलासी कम और व्यावहारिक तथा सूझ-बूझ वाले अधिक होते हैं। इस प्रकार लचीली संगति न केवल व्यक्ति को सक्रिय बनाती है, अपितु उसके निकृष्ट गुणों अथवा दोषों को भी सिर नहीं उठाने देती।

शिथिल संगति वाले हाथों पर—'ख़ाली दिमाग शैतान का घर'—जैसी कहावत खरी उतरती है, जबकि लचीले हाथ अपनी निकृष्ट इच्छाओं को दबाकर उत्कृष्ट, उपयोगी एवं सार्थक कार्यों को निपटाने में अपनी शक्ति का उपयोग करते हैं। हाथों की कठोरता व्यक्ति के अपेक्षाकृत कम सुसंस्कृत होना और अपनी शक्तियों की गरिमा की उपेक्षा करके अधिक उत्साही होना सूचित करती है। उत्साह के पीछे अपेक्षित साधन और शक्ति के अभाव के कारण ऐसे व्यक्ति का असफल रहना तो निश्चित होता है, फिर भी वह अड़ियल ढंग से अपनी बलवती, परन्तु कुछ इच्छाओं की पूर्ति में संलग्न रहता है। ऐसे व्यक्तियों के परिवार बड़े व बच्चों की संख्या अधिक होती है। अत: निर्धनता छायी रहती है। उनके मन में सद्‌गुण—करुणा, सहानुभूति और उदारता आदि—होते तो हैं, परन्तु इनका स्फुरण (प्रदर्शन), उनकी आर्थिक स्थिति एवं मानसिकता पर निर्भर रहता है।

लचीले हाथों वाले व्यक्ति की बुद्धि में भी लचीलापन होता है। इस प्रकार लचीली बुद्धि वाला व्यक्ति उच्च स्तर का प्रतिभाशाली होता है और साथ ही अस्थिरचित्त एवं अतिवादी प्रकृति का होने के कारण प्रशसा में ही आनन्द अनुभव करने वाला व दूसरे शब्दों में प्रशंसा का भूखा होता है। हां, यदि उसके हाथ में सन्तुलन-चक्र हो, तो वह संयम रखने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति आकर्षक एवं मोहक रूप-सौन्दर्य के धनी होते हैं। अत: सदैव अनेक प्रशंसकों से घिरे रहते हैं तथा उन्हें अनेक प्रलोभन भी सुलभ हो जाते हैं, जिससे उनमें अहंकार की प्रवृत्ति भी घर कर जाती है। इन गुणों वाले व्यक्ति की पहचान के लक्षण हैं—हाथ में मस्तक रेखा का स्पष्ट, गहरा तथा सुव्यक्त होना और अंगूठे का अश्वेत तथा उत्तम प्रकार का होना। इन्हीं चिह्नों के होने पर वे जीवन को गम्भीरता से लेते हैं और मर्यादा का पालन करते हैं। सामान्य रूप में लचीले हाथ वाला व्यक्ति सन्तुलित, संयमी और आत्मनिर्भर होता है और यही शुक्र के प्रबल गुणों की स्थिति के लक्षण हैं। ऐसे व्यक्ति इन गुणों से सम्पन्न होने पर भी सर्वदा मर्यादा से बंधे नहीं रहते, कभी-कभार मौज-मस्ती भी कर लेते हैं, जिसे अपवाद ही समझना चाहिए। ऐसा करते हुए भी लचीली संगति वाले

शुक्रप्रधान व्यक्ति अपने आकर्षक व्यक्तित्व और उत्तम गुणों के बल पर जीवन में बड़े-बड़े कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं और उन्नति के शिखर पर पहुंचते हैं। लचीला हाथ अपने आकार-प्रकार तथा रूप-रंग में कैसा भी क्यों न हो, परन्तु यह व्यक्ति के संयमी और सन्तुलित होने का एक निश्चित लक्षण है।

इसके विपरीत कठोर हाथों से बुद्धि की कठोरता और व्यक्ति के स्वभाव में भी कठोरता—लचीलेपन का अभाव—द्योतित होता है। ऐसे व्यक्ति के न केवल विचार घटिया होते हैं, अपितु वह सदैव विषयों में आसक्त रहने वाला भी होता है। उसकी न केवल इच्छाएं तुच्छ होती हैं, अपितु उन इच्छाओं की पूर्ति के लिए उसके द्वारा किये गये प्रयास भी घटिया होते हैं। उसके मन में जहां दया, करुणा और उदारता आदि क्षीण रूप में ही मिलते हैं, वहां प्रकृति के सुन्दर तत्त्वों—वनों, पर्वतों, नदियों, पुष्पों तथा प्रकृति के मोहक दृश्यों के प्रति भी लचीले हाथ वाले व्यक्ति जैसा लगाव नहीं होता। उसकी रुचियां निकृष्ट होती हैं और वह एक सीमा तक जड़, रूढ़िग्रस्त, कृपण तथा स्वार्थी होता है। समग्रत: ऐसे संकीर्ण मनोवृत्ति वाले व्यक्ति को वाञ्छनीय एवं उत्तम गुणों से रहित मानना ही उपयुक्त है।

हाथों का रूप-रंग भी व्यक्ति के चरित्र एवं स्वभाव का द्योतक होने के कारण महत्त्व रखता है। शुक्रप्रधान व्यक्ति के हाथों का रंग सामान्यत: गुलाबी होता है। इससे भिन्न किसी भी अन्य रंग को स्वास्थ्य और स्वभाव की गड़बड़ी का सूचक समझना चाहिए। सफ़ेद रंग रक्त-प्रवाह में शक्ति की क्षीणता का और इसके फलस्वरूप व्यक्ति की ऊर्जा और उत्साह के मन्द पड़ जाने का और व्यक्ति के उदासीन एवं भावशून्य हो जाने का सूचक है। सफ़ेद रंग व्यक्ति के उत्साह और आकर्षण को घटा तो अवश्य देता है, परन्तु उसके इन गुणों को पूर्णत: समाप्त नहीं कर देता। ऐसे व्यक्ति के आवेग और सहानुभूति की मात्रा घट जाती है, परन्तु वह अपने सौन्दर्य-प्रेम को स्थिर रखने वाला होता है। उसकी कामाग्नि में प्रचण्डता का अभाव होता है। यहां तक कि सफ़ेद हाथ वाले व्यक्ति का पर्वत भले ही प्रबल अथवा जालदार हो, परन्तु फिर भी विपरीतलिंगी के प्रति उसका आकर्षण प्रचण्ड रूप नहीं ले पाता।

इसके विपरीत गुलाबी रंग सामान्य दशा—उत्तम स्वास्थ्य और रक्त के समुचित प्रवाह के कारण व्यक्ति का उत्साह, स्फूर्ति सम्पन्न और उल्लसित होना—का सूचक है। ऐसा व्यक्ति आदर्श एवं उत्कृष्ट गुणों से सम्पन्न होता है। वह सुकुमार- सुन्दर, सुशील, आकर्षक और सच्चा प्रेमी होता है। वह कामुक और विषय-प्रेमी कदापि नहीं होता। वह अपनी उदारता, सज्जनता तथा शालीनता से जीवन के किसी भी क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त करने में सफल रहता है। हाथों का लाल रंग इन गुणों की अतिशयता का सूचक है। गहरा रंग व्यक्ति की उग्रता की प्रचण्डता का, इससे कामुकता में वृद्धि का और फिर इसके फलस्वरूप बुद्धि पर परदा पड़ जाने, अर्थात्

विनाश का लक्षण है। गहरे लाल रंग के साथ पर्वत का पूर्ण और जालदार रूप तो व्यक्ति के प्रत्येक विषय में अतिवादी होने का लक्षण है। इसके साथ-साथ अंगुलियों के तृतीय पर्वों का मोटा और हथेली का अधिक विकसित रूप, तो इस अधिकता को पराकाष्ठा पर पहुंचा देता है। ऐसा व्यक्ति अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए कुछ भी कर सकता है। प्रेमियों-प्रेमिकाओं तथा पतियों-पत्नियों पर घोर अत्याचार करने वाले अस्सी प्रतिशत व्यक्तियों के हाथों में यही चिह्न मिले हैं। क्रोधावेश में आकर अथवा ईर्ष्या, द्वेषवश तो ये किसी की हत्या तक करने में भी संकोच नहीं करते।

शुक्रप्रधान व्यक्ति के पित्त-विकार से ग्रस्त न होने के कारण उसके हाथों का रंग पीला कदापि नहीं होता। हाथों के पीलेपन को तो एक सर्वथा असामान्य स्थिति ही समझन चाहिए। पीलेपन का कारण पित्त-विकार होता है, जिससे रक्त के विषाक्त हो जाने से व्यक्ति के उत्तम गुण नष्ट हो जाते हैं और व्यक्ति के स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। शुक्रप्रधान व्यक्ति हृदय रोग का शिकार यथाशीघ्र होता रहता है। अतः उसके हाथ का रंग प्रायः नीला पाया जाता है। हथेली और नाख़ूनों के रंग (गहरा, हलका तथा मद्धम) से रोग की स्थिति का अनुमान लगाना सम्भव होता है। अतः नाख़ूनों की परख विशेष सावधानी से करनी चाहिए।

गुलाबी रंग और उत्तम रूप वाले चौड़े नाख़ून अच्छे स्वास्थ्य और निश्छल, सीधे-सादे स्वभाव की जानकारी कराते हैं। नाख़ूनों पर श्वेत धब्बों का पाया जाना व्यक्ति के स्नायु रोग से बुरी तरह ग्रस्त होने का सूचक है। पतले नाख़ूनों से व्यक्ति के शरीर के दुबले-पतनेपन का संकेत मिलता है। शुक्रप्रधान व्यक्ति के स्वभाव से सुविधाभोगी तथा संघर्ष की अपेक्षा आनन्दोन्मुखी होने के कारण उसके बहुत पतले तथा तंग नाख़ून तो यदा-कदा ही मिलते हैं। धारीदार नाख़ून व्यक्ति को अधीर और शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाला सूचित करते हैं। धारीदार नाख़ूनों के साथ हाथ का लचीला होना, अंगुलियों का लम्बी-चिकनी होना तथा अंगुलियों के छोरों का नोकदार होना व्यक्ति को अत्यधिक उत्तेजित, अनियन्त्रित तथा मनमौजी दर्शाता है। नाख़ूनों का भुरभुरा और पीछे की ओर मुड़ा होने से व्यक्ति के स्नायुविकार तथा पक्षाघात से ग्रस्त होने की सम्भावना का तथा लट्टू-जैसे नाख़ून व्यक्ति के गले तथा श्वास रोग से आक्रान्त होने के संकेत हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि क्षय रोग से पीड़ित शुक्रप्रधान व्यक्ति की यौनवासना अत्यधिक बढ़ जाती है। वस्तुतः बढ़ती भोगेच्छा को क्षय रोग के आने का संकेत समझना चाहिए।

हाथों पर उगे बालों का रंग सिर के बालों के रंग-जैसा काला होना व्यक्ति के प्रचण्ड शक्तिशाली होने का सूचक है। वस्तुतः काले रंग से लौहतत्त्व की पर्याप्त आपूर्ति का पता चलता है और इससे उग्रता में भी वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बलवान्, ऊर्जस्वी, स्फूर्त और चञ्चल होता है। वस्तुतः बालों का कालापन सशक्त

पर्वत को और अधिक सशक्त बना देता है।

बालों का लाल रंग व्यक्ति के स्वभाव से ही प्रचण्ड और शीघ्र उत्तेजित होने वाला सूचित करता है। इन दोनों—श्याम और रक्त—रंगों वाले बाल उत्तम कोटि के होते हैं। घटिया बाल विकसित पर्वत के साथ मिलकर व्यक्ति को यौन-सुख-भोग की ओर प्रवृत्त करते हैं, जबकि उत्तम कोटि के काले-लाल बाल व्यक्ति को चञ्चल अवश्य बनाते हैं, परन्तु उसकी चञ्चलता में भी सुरुचि बनी रहती है।

शुक्रप्रधान व्यक्तियों के केश प्राय: उनकी युवावस्था में ही सफ़ेद-मटमैले हो जाते हैं। वस्तुत: प्रचण्ड रति-भोग से शक्ति नष्ट हो जाने के फलस्वरूप शुक्र पर्वत शिथिल हो जाता है तथा रेखाओं के जाल से भरा होता है। इससे बाल सफ़ेद-धूसर हो जाते हैं। भूरा-सुनहरी रंग नैसर्गिक गुणों का द्योतक होने से सामान्य एवं सहज माना जाता है। शुक्रप्रधान व्यक्ति के सुनहरे बालों में एक अनोखी लालिमा होने के कारण बालों का रंग हलका पीला अथवा भूसे-जैसा हो ही नहीं सकता।

व्यक्ति के पूरे हाथ में तीन लोक अवस्थित हैं। शुक्र पर्वत के सन्दर्भ में इन तीनों से प्राप्त होने वाली जानकारी पर अन्य पर्वत प्रकारों का प्रभाव भी पड़ता है। लम्बी और लम्बे प्रथम पर्व वाली अंगुलियां व्यक्ति पर मानसिक जगत् के प्रभाव की सूचक हैं। उदात्त प्रेम, विवेक, उदारता और दया-करुणा का सजीव एवं आदर्श रूप ऐसा व्यक्ति साहित्य, संगीत और रोमांस में गहरी रुचि रखने वाला होता है। लम्बी और लम्बे प्रथम पोर वाली अंगुलियों के साथ अंगूठे का लचीला होना व्यक्ति को मिलनसार, अत्यधिक उदार, उत्कट प्रेमी तथा गहरी सूझ-बूझ वाला सिद्ध करता है। ऐसे व्यक्ति पर न तो उच्चलोक का आदर्शवाद और न ही निचले लोक का भोगवाद प्रभावी हो पाता है। वे शुक्र के प्रबल गुणों को लिये रहने पर भी उन पर संयम रखने में समर्थ होते हैं। हथेली के आधार के पूर्ण और विशाल होने का अर्थ है—उच्चलोक की अपेक्षा निचले लोक का अधिक विकसित एवं सशक्त होना, अर्थात् व्यक्ति का उत्कृष्ट गुणों की अपेक्षा अधम इच्छाओं के वश में रहने वाला होना। उसमें उत्तेजना का प्रचण्ड रूप लिये रहता है तथा वह दूसरों को तुच्छ दृष्टि से देखता है और उनमें अपनी इच्छाओं को पूरा करने की योग्यता पर सन्देह करता है। अत्यधिक विकसित हथेली का आधार, मोटे, किन्तु आकार में छोटे अंगुलियों के तृतीय पर्व, लाल एवं घने जाल वाला शुक्र पर्वत तथा अशक्त अंगूठा रखने वाला व्यक्ति अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये हत्या-जैसा निकृष्ट कार्य भी कर सकता है। हत्या, डकैती और बलात्कार करने वाले आततायियों के हाथों में ये सारे चिह्न पाये जाते हैं।

प्रकारों के प्रमुख तथा गौण रूपों एवं प्रथम, द्वितीय स्थानों के निश्चय के लिए अंगुलियों और पर्वतों की जांच आवश्यक होती है। शुक्रप्रधान व्यक्ति में बृहस्पति

प्रकार की उच्चाकांक्षा, शनि-प्रकार की बुद्धि तथा गम्भीरता तथा बुध-प्रकार की चतुराई न होने पर वह सांसारिक अथवा व्यावसायिक गतिविधियों में सफल नहीं हो पाता। शुक्रप्रधान व्यक्ति का केवल आकर्षक एवं करुणाशील होना पर्याप्त नहीं। उसे यदि अपना समुचित विकास अभीष्ट है, तो उसे अन्य पर्वत-प्रकारों के संयोजन को अपनाना ही होगा। भले ही वे पर्वत-प्रकार द्वितीय अथवा तृतीय कोटि के ही क्यों न हों, वे शुक्र के गुणों को आगे बढ़ाने वाले प्रेरक तत्त्व के रूप में अपनी विशिष्ट महत्ता रखते हैं।

शुक्रप्रधान और सूर्यप्रधान व्यक्तियों में कुछ समानताएं होने से उन दोनों का अच्छा संयोजन हो जाता है, परन्तु चन्द्रप्रधान व्यक्ति के अतिशय कल्पनाशील व भावुक होने के फलस्वरूप उसके अकर्मण्य और आलसी हो जाने के कारण शुक्र-प्रधान व्यक्ति से उसकी संगति नहीं बैठती। हां, शेष प्रकारों—बृहस्पति, शनि, बुध तथा मंगल—की कुछ विशेषताओं के संयोजन से शुक्रप्रधान व्यक्ति अपने गुणों को पूर्ण बना पाता है।

हस्तरेखा के अध्ययन में अंगुलियों के छोरों की भी विशिष्ट भूमिका रहती है। छोरों का पैनापन व्यक्ति के आदर्शवादी, स्वप्नद्रष्टा और व्यावहारिक रूप में अनाड़ी होने पर भी आकर्षण और प्रेम का केन्द्र होता है। ऐसे व्यक्ति अपनी बैठक में सुन्दर कलाकृतियों को सजाकर रखने के शौक़ीन होते हैं। छोरों का नुकीलापन व्यक्ति को कलात्मक रुचि सम्पन्न बताता है, तो वर्गाकार छोर एक सीमित स्तर पर आदर्शवादी, व्यवस्थित तरीक़ों से जीवन बिताने में विश्वास रखने वाला तथा वेशभूषा पर विशेष ध्यान देने वाला सूचित करते हैं। चमचाकार छोर व्यक्ति को कर्मशक्ति, ऊर्जा, उत्साह और मौलिक गुणों से सम्पन्न होने की जानकारी देते हैं। ऐसा व्यक्ति न केवल प्रत्येक स्थिति का सामना करने, अपितु प्रत्येक स्थिति के अनुरूप अपने को ढालने तथा यथासमय अपने विचारों को प्रकट करने में पूर्ण समर्थ होता है। इस प्रकार चमचाकार छोर सर्वोत्तम माने जाते हैं; क्योंकि ऐसा व्यक्ति न केवल उत्तम गुणों का स्वामी होता है, अपितु दया, करुणा और संवेदना की प्रतिमूर्ति होने के कारण सहज मानवीय भी होता है। पालतू पशुओं के रखने के शौक़ीन ऐसे व्यक्तियों का प्रेम सदा छलकता प्रतीत होता है। वे बच्चों से भी प्यार करते हैं, खेलों में रुचि लेते हैं और अपने सम्पर्क में आने वालों के साथ सज्जनता और विनम्रता का व्यवहार करते हैं।

अंगुलियों का गठीलापन शुक्रप्रधान व्यक्ति के आवेश को घटा देता है। अत: अंगुलियों में गांठों का न होना ही वाञ्छनीय होता है, परन्तु मनुष्य का चाहा-सोचा तो नहीं होता। गंठीली अंगुलियां भी मिलती हैं। अत: इन पर चर्चा आवश्यक हो जाती है।

अंगुली के प्रथम छोर का गठीला होना व्यक्ति का बुद्धिमान्, सन्तुलित मानसिकता

वाला तथा सीमित रूप में उच्छृंखल होना सूचित करता है। दूसरे छोर का गठीलापन व्यक्ति के साफ़-सुथरा रहने और व्यवस्थित जीवन बिताने के स्वभाव का संकेत देता है। ऐसा व्यक्ति सदैव सज-धज कर रहता है और प्रदर्शन में अधिक विश्वास रखता है। दोनों—प्रथम और द्वितीय—छोरों पर गांठों का होना व्यक्ति को प्रत्येक तथ्य का विश्लेषण करके अनुपयुक्त का त्याग और उपयुक्त का ग्रहण करने वाला बताता है, परन्तु बहुत थोड़े उत्साही एवं ऊर्जस्वी व्यक्तियों की ही ये दोनों गांठें पूर्ण विकसित देखने को मिलती हैं।

शुक्रप्रधान गुणों—कलात्मक चिन्तन, स्वत: स्फूर्त प्रेरणा तथा आवेगपूर्ण प्रवर्तन, अर्थात् अपने सुन्दर विचारों को उत्तम-साधनों से यथाशीघ्र कार्यरूप देने की प्रवृत्ति—की जानकारी अंगुलियों से ही मिलती है। अत: अंगुलियों का चिकना और सुघड़ होना ही वाञ्छनीय होता है। दूसरी गांठ के थोड़ा-बहुत उभरे होने पर भी चिकनी अंगुलियों को चिकना ही मानना चाहिए। इस प्रकार की अंगुलियों वाले व्यक्ति सुन्दर पोशाक पहनने के तथा साफ़-सुथरे, सजे-धजे रहने के शौक़ीन होते हैं। शुक्रप्रधान व्यक्ति किसी भी तथ्य की छोटी-मोटी बातों में रुचि लेने वाले नहीं होते। अत: उनकी अंगुलियां लम्बी नहीं होनी चाहिए। शुक्रप्रधान व्यक्ति स्वभाव से मौज-मस्ती करने वाले होने के कारण किसी भी विषय के स्थूल तथ्यों पर ध्यान देने का कार्य दूसरों पर छोड़ देते हैं। वे तो पकी-पकायी खाने वाले और अपने शिष्ट-मधुर व्यवहार से दूसरों से अपनी प्रशंसा सुनकर आनन्दित होने की प्रवृत्ति वाले होते हैं। घण्टों श्रम करने से शान्त-क्लान्त व्यक्ति भी लम्बी अंगुलियों वाले शुक्रप्रधान व्यक्ति से अपनी प्रशंसा सुनकर न केवल अपनी सारी थकावट भूल जाता है, अपितु अपने श्रम के सार्थक हो जाने के विचार से फूला भी नहीं समाता है, परन्तु सामान्यतया लम्बी अंगुलियों वाले शुक्रप्रधान व्यक्ति की प्रवृत्ति के अनुकूल नहीं होता।

शुक्रप्रधान व्यक्ति की अंगुलियां प्राय: छोटी होती हैं, जो उसकी शीघ्र चिन्तन और तत्काल क्रियान्वयन की प्रवृत्ति की सूचक होती है। अंगुलियों का बहुत छोटा होना भी अच्छा नहीं; क्योंकि इससे व्यक्ति का आवेग प्रचण्ड रूप ले लेता है। अंगुलियों के गुण व्यक्ति की स्वाभाविक रुचि से सीधा सम्बन्ध रखते हैं। अंगुलियों के छोटी होने पर व्यक्ति शुक्र सम्बन्धी गुणों के साथ तत्परता और सतर्कता बनाये रखने पर ही सही परिणाम पा सकता है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति का अंगूठा तो उसके चरित्र का दर्पण होता है। छोटे आकार का अथवा नोकदार अथवा दोनों तरह का होने को व्यक्ति के असमर्थ और ढुलमुल स्वभाव का होने का निश्चित संकेत समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति इच्छाओं के अधीन रहने वाला तथा इच्छाओं की पूर्ति से आनन्द-लाभ करने वाला होता है। इस

प्रकार का मौज-मस्ती करने वाला व्यक्ति शीघ्र ही दूसरों के बहकावे में आ जाता है और फिर आलसी, अस्थिरचित्त तथा शिथिल प्रकृति का बन जाता है।

हस्तरेखाशास्त्री को शुक्रप्रधान व्यक्ति के अंगूठे के दोनों पर्वों की तुलना करके उसकी दोनों—इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति—में अधिक प्रबल का निर्णय करना चाहिए। इच्छाशक्ति की प्रबलता का अर्थ है—व्यक्ति अपेक्षित विवेक के अभाव के कारण अनियमित गति से काम करने वाला होगा। इच्छापर्व की तीक्ष्णता के प्रभाव से इच्छाशक्ति प्रबल हो जाती है। इच्छापर्व का वर्गाकार होना इच्छाशक्ति का स्वतः दृढ़ हो जाना सूचित करता है। हां, वर्गाकार इच्छापर्व के साथ उत्तम द्वितीय पर्व एवं उत्तम मस्तक रेखा के होने पर विवेक-रहित इच्छाशक्ति नियन्त्रित रहती है, वह उच्छृंखल रूप से क्रियाशील नहीं हो पाती। शुक्रप्रधान व्यक्ति का अंगूठा प्रायः सुन्दर नहीं होता। उत्तम कोटि का शुक्रप्रधान व्यक्ति न तो क्रोधावेश का शिकार होता है और न ही कभी किसी की हत्या के सम्बन्ध में सोचता है। अत्यधिक ईर्ष्या-द्वेष अथवा असफल प्रेम आदि के कारण किसी के प्राण लेने वाले शुक्रप्रधान व्यक्ति को अधम कोटि का ही समझना चाहिए। उत्तम कोटि का एवं परिष्कृत रुचि वाला शुक्रप्रधान व्यक्ति तो कभी ऐसा सोच भी नहीं सकता।

उत्तम कोटि के सुसंस्कृत शुक्रप्रधान व्यक्ति का मूठ के आकार के अंगूठे से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति को पाशविक प्रवृत्तियां उत्तराधिकार में मिली हैं। उसकी पिछली पीढ़ियां दुष्कर्मों में लिप्त रही हैं। इसके विपरीत चप्पू के आकार के इच्छापर्व को उत्कृष्ट समझते हुए भी इस तथ्य को नहीं भूलना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति की प्रवृत्तियां इतनी प्रचण्ड होती हैं कि उन पर संयम-नियन्त्रण रखना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि सन्तुलित इच्छाशक्ति ही कल्याणकारी होती है। द्वितीय पर्व का लम्बा और सन्तुलित रूप सर्वोत्तम परिणाम देने वाला होता है; क्योंकि यह इच्छाशक्ति के मर्यादित, विवेक-सम्मत एवं तर्कपूर्ण रहने का सूचक है। द्वितीय पर्व की अपूर्णता अथवा त्रुटिपूर्णता से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति अपनी इच्छाओं से तीव्रता पर नियन्त्रण रखने में असमर्थ होता है। विवेक और सूझ-बूझ के अभाव के कारण वह सही दिशा में नहीं बढ़ पाता, जिसके फलस्वरूप अभीष्ट परिणाम उसे प्राप्त नहीं होता। द्वितीय पर्व का कटि-जैसा रूप होना सर्वोत्तम है, क्योंकि यह व्यक्ति की व्यवहारकुशलता का सूचक है। ऐसा व्यक्ति कभी किसी के प्रति अशिष्ट व्यवहार नहीं करता।

इस प्रकार शुक्रप्रधान व्यक्ति का बड़ा अंगूठा उसके सद्विवेक, दृढ़ता और सबल इच्छाओं को भी नियन्त्रण में रखने की क्षमता आदि गुणों का सूचक है। अंगूठे से सम्बद्ध अध्याय में यह स्पष्ट किया गया है कि ऐसा व्यक्ति विश्व की तीन नैतिक शक्तियों—इच्छा, विवेक और प्रेम से सम्पन्न होता है, जिसका सर्वोत्तम संयोजन

शुक्र के इस पूर्ण एवं विशुद्ध प्रतिरूप में देखने को मिलता है।

शुक्रप्रधान व्यक्ति के सुन्दर-आकर्षक और सुशील होने के कारण चारित्रिक पतन से बचने के लिए सद्विवेक और संयम को अपनाने की भारी आवश्यकता होती है। अतः उसकी मस्तक रेखा का स्पष्ट, सुरचित, सुरञ्जित और अखण्डित होना ही वाञ्छनीय है; क्योंकि मूलतः शुक्रप्रधान व्यक्ति को संयम और विवेक-जैसे तत्त्व उत्तम अंगूठे के गुणों को लिये रहने वाली हृदय रेखा से ही प्राप्त होते हैं।

सातों प्रकारों के व्यक्तियों में एकमात्र शुक्रप्रधान व्यक्ति ही विश्व को अपने प्यार, सौन्दर्य, सुरुचि और उदात्त मानवीय गुणों से आनन्दरूप और स्वर्गतुल्य बनाता है। स्वस्थ और स्वस्थ मन वाला ऐसा व्यक्ति दूसरों को भी स्वास्थ्य और प्रसन्नता बांटता है। वह दूसरों के दु:खों के निवारण में प्रयत्नशील रहता है और उनके कष्टों में उन्हें ढांढ़स बंधाता है। सर्वथा निर्दोष न होने पर अनेक गुणों से सम्पन्न शुक्रप्रधान व्यक्ति को वास्तव में ईश्वर को सृष्टि की वरदान ही समझना चाहिए। *

भाग दो

1

जीवन-चक्र : कतिपय सुझाव

''घटने वाली प्रत्येक घटना अपने में ही समाविष्ट होती है, उसका घटित होना तो मात्र अदृश्य का ही एक दृश्य रूप है।''—**इमर्सन**

हाथ की रेखाओं के सूक्ष्म और गहन अध्ययन तथा उसके आधार पर सावधानीपूर्वक निकाले निष्कर्षों से स्पष्ट हो जाता है कि हाथ के निश्चित स्थानों पर उभरी रेखाएं सम्बद्ध वस्तुओं के उत्कृष्ट-निकृष्ट तथा सबल-दुर्बल होने का निश्चित संकेत हैं। वस्तुतः प्रत्येक घटना व्यक्ति के मस्तिष्क पर अपने स्मृति-चिह्न अंकित कर देती है। व्यक्ति के मस्तिष्क पर पड़ने वाले इस प्रभाव के अनुरूप हाथ में रेखाओं का उभार होता है। इसी प्रभाव के कारण अच्छा-बुरा होने के अनुरूप कुछ रेखाओं के गिरने, तो कुछ के उभरने और फिर कुछ के टूटने-जुड़ने का क्रम चलता रहता है। विभिन्न हाथों (रेखाओं) के अध्ययन से विभिन्न अच्छे-बुरे प्रभाव की द्योतक रेखाओं की पहचान सम्भव हो जाती है। रेखाएं तो सभी आयु के व्यक्तियों—नवजात शिशु को लेकर मरणासन्न वृद्ध तक—के हाथों में होती हैं और प्रायः चिकनी-सपाट त्वचा पर स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। निरन्तर सतर्क रहने पर कुछ घनी-गहरी रेखाओं का धुंधलाना और फिर धुंधलाते-धुंधलाते मिट जाना भी देखने को मिलता है। कभी-कभी तो कुछ गहरे चिह्न भी इस प्रकार लुप्त हो जाते हैं, मानो वे वहां कभी थे ही नहीं। कुछ रेखाएं अत्यधिक गहरी-लम्बी और पूरे हाथ को पार कर जाने वाली होती हैं। ये रेखाएं कालान्तर में भले ही मिट जायें, परन्तु अपनी स्थितिकाल में व्यक्ति के मन-मस्तिष्क को अत्यधिक प्रभावित करती हैं।

आस्थावान् दार्शनिकों के अनुसार—ईश्वर ने प्रत्येक प्राणी की सृष्टि प्रयोजन-विशेष की सिद्धि के लिए ही की है और इस उद्देश्य को प्राणी के हाथ की रेखाओं में निर्दिष्ट किया है। विधाता के इस श्रम को निष्फल एवं निरर्थक न होने देने के लिए इस दैवी भाषा को समझना आवश्यक ही नहीं, अपितु हमारा कर्तव्य भी है।

आज से कुछ समय पहले चिकित्सा-वैज्ञानिकों को शरीर-रचना के सम्बन्ध में सीमित जानकारी थी, आज भी वे मानव-शरीर के कुछ अंगों के कार्यों से परिचित

नहीं, परन्तु इन अंगों की अनुपयोगिता की चर्चा तो वे भी नहीं करते। वे आशावादी हैं और स्वीकार करते हैं कि आज नहीं, तो कल, अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ ही लिये जायेंगे और फिर इन अनसुलझी समस्याओं का समाधान पाना सम्भव हो जायेगा।

चिकित्सा-विज्ञान के वर्तमान स्वरूप में बहुमुखी विकास से पूर्व शरीर-विज्ञान तथा औषध-विज्ञान की साधारण एवं सीमित जानकारी रखने वाले वैद्य, हकीम ही चिकित्सक के रूप में उपलब्ध थे। निश्चित है कि शरीर के सभी अंगों के सम्बन्ध में तथा विभिन्न औषधियों के गुण-दोषों और प्रभाव के सम्बन्ध में उनकी जानकारी सतही थी। शल्य-चिकित्सा तो नितान्त अविकसित थी। इधर जब शरीर के अंग-प्रत्यंग, नेत्र, कर्ण, नासिका तथा त्वचा आदि का विस्तृत अध्ययन होने लगा, अनुसन्धान को प्रोत्साहन मिलने लगा, चिकित्सा-जगत् में विशेषज्ञता का पदार्पण हुआ, तो इस क्षेत्र में अनेक रहस्यों का उद्घाटन हुआ और चमत्कृत करने वाली जानकारियों से लोगों का परिचय हुआ। वस्तुत : गहराई से सोचा जाये, तो स्पष्ट हो जायेगा कि शरीर-विज्ञान की समस्त जानकारी प्राप्त करना किसी एक व्यक्ति के बूते की बात नहीं थी। अत: अनेक शोधार्थियों के प्रयासों के फलस्वरूप हमने आज इस क्षेत्र में आशातीत प्रगति की है और सफलता के शिखर पर पहुंच गये हैं, परन्तु यहां एक शोचनीय तत्त्व यह है कि शरीर-वैज्ञानिकों, चिकित्सकों तथा औषध-शोधकों ने शरीर के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं विशिष्ट अंग—हाथ पर विशेष ध्यान नहीं दिया। फलत: यह क्षेत्र अब तक उपेक्षित रहा है, परन्तु अब वैज्ञानिकों का इस ओर ध्यान जाना सचमुच सन्तोष का विषय है। अब कतिपय विशेषज्ञ व्यक्ति के हाथों के वर्गीकरण और उसके प्रत्येक भाग—वर्ग, श्रेणी, पर्वत-प्रकार तथा पूरे जीवन का लेखा-जोखा आदि—के अध्ययन की ओर प्रवृत्त हुए हैं। वस्तुत: शरीर-विज्ञान के क्षेत्र में किसी एक व्यक्ति द्वारा शरीर के सभी अंगों-प्रत्यंगों का सूक्ष्म और गहन अध्ययन सम्भव नहीं था। इसके लिए अनेक अनुसन्धाताओं का दीर्घ जीवन इस कार्य में समर्पित रहने से ही आज हम इस क्षेत्र में पूर्ण ज्ञाता होने का दावा कर पा रहे हैं। इसी प्रकार हस्तरेखा-विज्ञान के क्षेत्र में दो-चार व्यक्तियों के प्रयास से प्रगति भले ही हो, पूर्णता प्राप्त नहीं की जा सकती। यहां भी अनेक विद्वानों की लगन और परिश्रम अपेक्षित है।

इस सम्बन्ध में विद्वानों को सफलता मिली है कि हाथ में रेखाएं क्यों बनती हैं और उनका क्या प्रयोजन है ? यह सर्वजन विदित तथ्य है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में तब तक एक बंधी-बंधायी लकीर पर चलता है जब तक उसे बदलाव के लिए परिस्थितियां बाध्य न कर दें अथवा वह स्वयं इसके लिए कृत-संकल्प न हो जाये। इसका अर्थ यह हुआ कि सामान्यतया व्यक्ति के जन्म के समय ही उसके

जीवन की रूपरेखा और सीमाओं आदि का निर्धारण हो जाता है। व्यक्ति सहज भाव से इस निर्धारित पथ पर चलता है। इसे और अधिक स्पष्ट शब्दों में कहें, तो कहना होगा कि व्यक्ति के प्रतीक गुणों के संयोजन का आधार स्वयं वह है। यह वह संयोग है, जिन्हें व्यक्ति करना चाहता है।

इस तथ्य का प्रमाण यह है कि उसका स्वास्थ्य ऐसा होगा, जिससे कि वह अपने गुणों का उपयोग कर सकेगा, अपने जीवन को वैसा चला सकेगा अथवा मोड़ दे सकेगा और फिर परिणाम तो वही होगा, जो उसकी हस्तरेखाओं में निहित है एवं संकेतित हो रहा होता है। सामान्यतया शारीरिक्र स्थिति अथवा मानसिक प्रवृत्ति में किसी महत्त्वपूर्ण एवं विस्फोटक परिवर्तन अथवा दुर्घटना के घटित होने-जैसी परिस्थितियों के उपस्थित न होने पर तो व्यक्ति निर्धारित पथ पर ही चलता रहता है; क्योंकि हाथ की रेखाएं निरर्थक अथवा ऊलजुलूल कल्पना न होकर सर्वशक्तिमान् विधाता की सृष्टि है, जो सोद्देश्य और सार्थक है। हां,स्रष्टा के रहस्यों को समझने के लिए थोड़ी बुद्धि लगाने की आवश्यकता होती है और फिर इस बुद्धि के द्वारा व्यक्ति के जीवन के सम्बन्ध में सत्य का जानना और कहना सम्भव हो जाता है। रेखाओं से घटित घटना की ही नहीं, अपितु भविष्य में घटने वाली घटना की जानकारी भी मिल जाती है। यह दूसरी बात है कि इस अद्‌भुत जानकारी के रहस्य का स्पष्टीकरण सम्भव नहीं हो पाया है।

आज यह तथ्य सिद्ध हो चुका है कि व्यक्ति की मानसिकता में परिवर्तन आने के साथ ही उसके हाथ की रेखाएं भी परिवर्तित हो जाती हैं। अतः रेखाओं के बदलाव का कारण निश्चित रूप से व्यक्ति के स्वभाव और उसकी सोच में परिवर्तन को ही मानना चाहिए। अब देखना यह होता है कि व्यक्ति की प्रकृति और मानसिकता में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी परिस्थितियां और घटनाएं कौन सी हैं ? व्यक्ति के स्वास्थ्य और शारीरिक स्थिति में आने वाला परिवर्तन व्यक्ति के स्वभाव और उसकी मानसिकता को बदल देता है। स्वस्थ और पुष्ट शरीर वाला व्यक्ति जहां आशावादी होता है, वहां रुग्ण और कृश शरीर वाला व्यक्ति जीवन और संसार के प्रति निराशा और विषाद का दृष्टिकोण लिये रहता है। इस प्रकार मानसिकता में परिवर्तन का कारण शारीरिक स्थिति और घटने वाली घटनाएं होंती हैं और फिर इससे हाथ की रेखाओं के स्वरूप में परिवर्तन आता है। इस प्रकार हाथ की रेखाओं को व्यक्ति की मनःस्थिति का सजीव एवं प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब ही मानना चाहिए; क्योंकि व्यक्ति की मनोदशा के अनुसार ही ये रेखाएं बनती-बिगड़ती तथा मिटती-उभरती रहती हैं। अतः हाथ पर उभरी रेखाओं से व्यक्ति के अतीत की सही-सही जानकारी प्राप्त की जा सकती है, इस रूप में रेखाओं का महत्त्व असन्दिग्ध है। व्यक्ति का मन-मस्तिष्क घटनाओं से प्रभावित-नियन्त्रित होता है। उनका सीधा प्रभाव उसके स्वास्थ्य और

शरीर की स्थिति पर पड़ता है। मन और शरीर का सापेक्ष सम्बन्ध है और दोनों एक-दूसरे को बहुत गहरे रूप में प्रभावित करते हैं और इस सन्दर्भ में ही हाथ की रेखाएं अस्तित्व में आती हैं और रूप ग्रहण करती हैं। मन-मस्तिष्क को प्रभावित कर चुकी घटनाएं अतीत का अंग होने के और रेखाओं में तदनुरूप परिवर्तन आने के सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में रेखाओं से अतीत के सम्बन्ध में सत्य कथन सम्भव है। शत-प्रतिशत सत्य कथन की सम्भावना का दावा न करते हुए भी इसे एक विश्वसनीय आधार तो मानना ही पड़ता है।

वैज्ञानिकों ने प्रयोग से पाया है कि मानव-मस्तिष्क में एक-साथ दोहरी चेतना अथवा मनोवृत्ति कार्यरत होती है। चेतना का एक रूप जहां व्यक्ति के शरीर से सम्बन्ध रखता है तथा ऐन्द्रिय विषयों—दृश्य, श्रव्य आदि का बोध कराता है, वहां दूसरा रूप भौतिक सत्ता से परे आध्यात्मिक तत्त्व, अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों की पहुंच से परे की अदृश्य-अश्रव्य वस्तुओं-पदार्थों का बोध कराता है। आध्यात्मिक चेतना के यथार्थ अथवा भौतिक स्वरूप न लिये रहने के कारण उसका अस्तित्व सहज-प्रकाश्य नहीं होता। इस प्रकार प्रथम चेतना का सम्बन्ध सांसारिक घटनाओं—भूत में घटित अथवा वर्तमान में घट रहीं—से है, भविष्य से इसे कुछ लेना-देना नहीं। इस प्रकार उसकी अपनी एक सीमा है, जबकि द्वितीय चेतना किसी सीमा में बंधी नहीं है। इसे न केवल भूत में घटित की, अपितु भविष्य में सम्भावित की भी जानकारी रहती है। जब हमने यह स्वीकार कर लिया कि हाथ में रेखाओं का बनना, मिटना, बिगड़ना-सुधरना, उभरना-धुंधलाना, अर्थात् अनेक रूपों में परिवर्तन होना व्यक्ति की मनोदशा पर निर्भर करता है, तो फिर यह मानना पड़ेगा कि रेखाएं केवल चेतना के एक पक्ष—सांसारिक मनोवृत्ति से ही नहीं, अपितु उसके दूसरे पक्ष—आध्यात्मिक चेतना—से भी प्रभावित होती हैं। इन दोनों चेतनाओं से हमारे तीनों काल—भूत, वर्तमान और भविष्य—प्रभावित होते हैं, जिसका सजीव एवं प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब व्यक्ति के हाथ की रेखाएं हैं।

व्यक्ति की प्रथम प्रवृत्ति—मनोवृत्ति के प्रभाव से ही उसके हाथ में रेखाओं का सृजन, नियन्त्रण और परिवर्तन होता है और द्वितीय प्रवृत्ति—जिसके दो रूप-भेद हैं—(1) वस्तुनिष्ठ तथा (2) आत्मनिष्ठ—से भविष्य की सूचना मिलती है। इस प्रकार इन दोनों प्रवृत्तियों पर ही इस धारणा—हाथ की रेखाओं का उभरना और उनका भविष्यसूचक होना—की वास्तविकता निर्भर करती है।

सामान्य तौर पर हाथ में पुरानी रेखाओं के लुप्त होने और नयी रेखाओं के बनने की प्रवृत्ति पायी जाती है। सूक्ष्म निरीक्षण से इस तथ्य की पुष्टि सहज ही हो जाती है। इसके अतिरिक्त अनुसन्धाता वैज्ञानिकों ने अपने शोधों के आधार पर मनोवृत्ति के दो रूप-भेद होने की भी पुष्टि की है। अतः इस सम्बन्ध में किसी सन्देह

अथवा आशंका के लिए कोई अवकाश नहीं है। सत्य तो यह है कि भौतिक परिवेश मनोवृत्तियों के कार्य-निर्वहण में बाधक नहीं बनता और फिर इन शक्तियों में अज्ञात-अदृश्य भविष्य को प्रत्यक्षवत् देखने की विलक्षण शक्ति होती है। यहां हम विषय के अन्यान्य पक्षों की चर्चा में न उलझकर केवल प्रमाणित सिद्ध हो चुके तत्त्व की चर्चा तक अपने को सीमित रखना ही उचित समझते हैं। इसके अन्तर्गत हम कह सकते हैं कि हमारे विवेचन का निश्चित आधार दो मान्यताएं हैं—प्रथम, मनोदशा रेखाओं का सृजन, नियन्त्रण और परिवर्तन करती है। द्वितीय, मनोदशा ही अतीत, वर्तमान और भविष्य की जानकारी कराती है।

हाथ की रेखाएं व्यक्ति के जीवन का एक ऐसा सजीव और प्रत्यक्ष चित्र है, जिसे कोई भी जानकार आसानी से पढ़-समझ सकता है। इस चित्र को बदला नहीं जा सकता—यह कहना सत्य नहीं। किसी भी व्यक्ति की जीवन-योजना को परिवर्तित करने में परिस्थितियों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। परिस्थितियों के जन्म के मूल कारण हैं—व्यक्ति पर सामाजिक सम्पर्कों का प्रभाव, विलक्षण घटना-दुर्घटना, परिवर्तन की सशक्त इच्छा तथा स्वास्थ्य की विकृति आदि। इन स्थितियों में नयी-नयी परिस्थितियों का जन्म होता है और इन परिस्थितियों के फलस्वरूप घटित हो चुके, घटित हो रहे अथवा घटित होने वाले परिवर्तनों की सूचक नयी रेखाएं हाथ पर उभरने लगती हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि परिवर्तन की सूचक ये नयी उभरती रेखाएं मौलिक अथवा मुख्य रेखाओं को आवश्यकता के अनुसार काटती-मिटाती, अशक्त अथवा सशक्त बनाती रहती हैं। दूसरे शब्दों में—मनोदशा में परिवर्तन के आते ही रेखाओं के स्वरूप में परिवर्तन आने लगता है। वे कभी सशक्त, तो कभी अशक्त हो जाती हैं, कभी मन्द पड़ जाती हैं, तो कभी पूर्णतः विलुप्त हो जाती हैं। तन्त्रिका शक्ति के समाप्त होते ही व्यक्ति की रेखाओं का मिटना यही सिद्ध करता है कि मूलतः मानव-मस्तिष्क ही हाथ की रेखाओं का निर्माता तथा नियन्त्रक है। सभी प्रकार के पक्षाघात (अधरंग) में सभी रेखाएं लुप्त नहीं होतीं, वे केवल मन्द पड़ जाती हैं, जो जीवन के क्रमशः मिटते जाने का संकेत है। वस्तुतः मस्तिष्क की क्षीणता के अनुरूप रेखाएं पहले मन्द पड़ जाती हैं और फिर अन्ततः मिट जाती हैं; क्योंकि वस्तुतः मन-मस्तिष्क के चुक जाने पर रेखाओं को बनाये रखने वाली शक्ति का भी पूर्णतः अभाव हो जाता है। अतः रेखाओं के बने रहने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। वस्तुतः दोनों—मन और मस्तिष्क—के स्वस्थ रहने पर ही रेखाओं का अस्तित्व निर्भर करता है। यही कारण है कि पक्षाघात में शरीर की शक्ति के समाप्त हो जाने पर भी मन-मस्तिष्क के स्वस्थ-सशक्त बने रहने पर, हाथ की रेखाएं भी बनी रहती हैं। पागलपन में भी मस्तिष्क की कोशिकाओं के जीवित रहने तथा मानसिक सन्तुलन के समाप्त हो जाने पर व्यक्ति के हाथ में रेखाओं के बने रहने के

पीछे यही कारण कार्य कर रहा है। इस प्रकार यह आवश्यक नहीं कि बुद्धिहीन अथवा मन्द-बुद्धि व्यक्ति में मानसिक सन्तुलन का भी नितान्त अभाव हो। हां, जहां मनोवृत्ति कुण्ठित हो जाती है, वहां रेखाएं अवश्य मिट जाती हैं। वस्तुतः मुख्य रेखाएं व जीवन की स्वाभाविक दिशा की ओर नयी बनने वाली रेखाएं व्यक्ति के हृदय में उत्पन्न होने वाले नये विचारों-मनोभावों को प्रकट करती हैं। मनुष्य अपने आप में एक पहेली है, उससे बातचीत करके उसके हृदय की गहराई को नहीं मापा जा सकता। सत्य तो यह है कि वह स्वयं अपने आपको ठीक ढंग से नहीं जानता-समझता। इस स्थिति में कोई दूसरा उसे पूर्णतः जानने का दावा ही कैसे कर सकता है ? वैज्ञानिक मानव-मन के रहस्यों को खोलने वाली किसी कुञ्जी की खोज में आज भी लगे हुए हैं, ताकि वह स्वयं तथा दूसरे उसके मस्तिष्क में झांककर उसके विचारों की थाह पा सकें।

हमारे विचार में मनुष्य को समझने की एक कुञ्जी उसका हाथ है, जो उसके अपने ही मस्तिष्क द्वारा सञ्चालित होता है। अतः हाथ की रेखाओं के द्वारा व्यक्ति के मनोगत भावों को जाना जा सकता है। इसे तो सर्वाधिक विश्वसनीय कुञ्जी ही मानना चाहिए; क्योंकि चतुर व्यक्ति अपने चेहरे के भावों को छिपाने में सफल हो सकता है, परन्तु रेखाओं की भाषा को तो नहीं बदल सकता। इस प्रकार हाथ की रेखाओं से व्यक्ति की वास्तविक मनोवृत्ति, व्यक्तित्व तथा गुण-दोषों की जानकारी ही प्राप्त नहीं की जा सकती, अपितु सम्भावित परिणामों को जानकर यथासमय बचाव, उपचार आदि भी किया जा सकता है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक हाथ की न रेखाएं एक-जैसी होती हैं और न ही उनसे एक-जैसी घटनाओं की सूचना मिलती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक हाथ का पृथक्-पृथक् एवं भली प्रकार निरीक्षण करने के पश्चात् ही भविष्यकथन करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति का हाथ जहां उसके निजी चरित्र और स्वभाव की जानकारी कराता है, वहां उत्तराधिकार में अथवा वंश-परम्परा से प्राप्त प्रवृत्तियों तथा मन को प्रभावित करने वाली कतिपय घटनाओं की जानकारी भी कराता है। अतः भविष्यकथन से पूर्व इन सब तथ्यों पर विचार करना आवश्यक होता है। हाथ का परीक्षण किये बिना ही व्यक्ति का भविष्य—प्रेम, विवाह, धन-सम्पत्ति, सुख-दुःख तथा हानि-लाभ आदि—को बताने का दावा करने वाले हस्तरेखावेत्ता को तो मूर्ख अथवा ढोंगी ही समझना होगा; क्योंकि हाथ से व्यक्त होने वाले तथ्यों को बताने के लिए तो अब परीक्षण करना ही होता है। रेखाओं का अध्ययन ही तो हस्तरेखाशास्त्र का मूल विषय है, जिसमें अधिकाधिक प्रवीणता प्राप्त करने वाला ही इस क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। इसके लिए श्रम के साथ धैर्य की आवश्यकता भी रहती है, जिसका अधकचरे और नौसिखिया हस्तरेखाविदों में

अभाव रहता है। वे अध्ययन, परीक्षण में अपेक्षित श्रम किये बिना भी कुशल हो जाने का दावा करने लगते हैं और उनके खोखले ज्ञान के कारण ही हस्तरेखाशास्त्र की विश्वसनीयता को गहरा धक्का लगता है। एक ईमानदार हस्तरेखाशास्त्री को सर्वप्रथम मुख्य रेखाओं, फिर आकस्मिक रेखाओं और फिर रेखासमूहों का मनोयोग, एकाग्रता और सावधानी से अध्ययन-परीक्षण करना चाहिए। इसके पश्चात् कुछ व्यक्तियों के हाथों की रेखाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए। इस प्रकार इस विषय में निपुणता प्राप्त करने के उपरान्त ही भविष्यकथन में प्रवृत्त होना चाहिए।

प्रत्येक हस्तरेखाशास्त्री के हस्तपरीक्षण की अपनी-अपनी शैली होती है। कुछ विद्वान् हाथ के व्यावसायिक पक्ष के, तो कुछ कलात्मक पक्ष के और कुछ दूसरे वैज्ञानिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी पक्ष के सन्दर्भ में हस्तपरीक्षण करते हैं। इसी प्रकार कुछ विद्वान् दिशाओं के, तो कुछ परिस्थितियों और कुछ मुद्राओं के माध्यम से भविष्यकथन करते हैं। कोई विद्वान् किस तत्त्व को वरीयता, अर्थात् महत्त्व देता है— यह उसकी रुचि-प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। इस सम्बन्ध में प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र है। हां, ध्यान देने योग्य तथ्य केवल यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मनोवृत्ति एवं योग्यता के अनुरूप ही भविष्यकथन में प्रवृत्त होना उचित होता है। प्रारम्भ में सम्बद्ध व्यक्ति के जीवन के दो-तीन घटनाओं के सम्बन्ध में भविष्यकथन करके यह निर्णय लेना चाहिए कि हस्तरेखाशास्त्री सही दिशा में आगे बढ़ रहा है अथवा नहीं। वस्तुतः ज्ञान-वृद्धि के साथ अनुभव की प्रचुरता के जुड़ जाने पर भविष्यकथन में ग़लती होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। *

2

दोनों हाथों में विद्यमान मुख्य, गौण तथा आकस्मिक रेखाओं के कार्य का सापेक्ष अध्ययन

प्रत्येक व्यक्ति के हाथ की रेखाएं भिन्न-भिन्न होती हैं। किसी एक व्यक्ति के हाथ की रेखाएं किसी दूसरे व्यक्ति के हाथ की रेखाओं से मेल नहीं खातीं। एक हज़ार लोगों के हाथों का परीक्षण करने पर यह परिणाम निकला कि प्रत्येक हाथ में रेखाओं का संयोजन नितान्त भिन्न है। फिर दस हज़ार लोगों के हाथों की रेखाओं का मिलान किया गया, तो परिणाम यही निकला कि सर्वत्र भिन्नता-ही-भिन्नता है। ऐसे कोई दो हाथ नहीं मिले, जिनकी रेखाओं में पूर्ण समानता तथा नितान्त एकरूपता हो। इस सम्बन्ध में घोषित एक हज़ार डॉलर के पुरस्कार को पाने के लिए कोई हस्तरेखाविद् आज तक सामने नहीं आया; क्योंकि स्पष्ट है कि समान रेखाओं वाले दो हाथ आज तक किसी को मिले ही नहीं। संयोग की बात तो यह है कि इस क्षेत्र में कोई इस प्रकार की अप्रत्याशित घटना भी नहीं घटी। इस दिशा में किये गये हज़ारों प्रयास, प्रयोग तथा परीक्षण किसी अपेक्षित परिणाम को नहीं दे पाये। इससे यही सिद्ध होता है कि स्वास्थ्य, शरीरगठन, स्वभाव और चरित्र में दो व्यक्ति कभी एक समान नहीं हो सकते। इसका स्पष्ट प्रमाण प्रत्येक व्यक्ति के हाथ की रेखाओं की प्रत्येक दूसरे व्यक्ति के हाथ की रेखाओं से भिन्नता है। विश्व के किसी भाग से रंचमात्र भी अन्तर न रखने वाले दो व्यक्तियों को ढूंढ़ पाना अभी तक असम्भव बना हुआ है। निष्कर्षतः इस सत्य को नितान्त प्रमाणित और अन्तिम मानना होगा कि **सर्वथा समान रेखाओं वाले दो हाथों का मिलना असम्भव है।**

हां, इस सत्य से मेल खाता एक दूसरा सत्य यह भी है—दो व्यक्तियों में जितनी अधिक समानता होगी, उनके हाथों की रेखाएं भी उतनी अधिक मिलती-जुलती होंगी। बच्चों तथा माता-पिता के हाथों के परीक्षणों से इस तथ्य की पुष्टि हुई है, परन्तु साथ ही कुछ-न-कुछ अन्तर भी स्पष्ट देखने को मिले हैं। हाथ की रेखाओं में इतने व्यापक अन्तरों के कारण हस्तरेखाओं की सुनिश्चित तालिका बनाना कदापि सम्भव नहीं। यह सब होने पर भी यह तो निश्चित है कि हस्तरेखाज्ञान को एक

सुनिश्चित और व्यवस्थित रूप देने के लिए किसी एक कार्यसाधिका परिकल्पना अथवा सामान्य नियम-तालिका को मान्यता देनी ही होगी, जिसके आधार पर हाथ की रेखाओं के अध्ययन में विश्वस्तरीय एकरूपता लायी जा सके। मेरा यह निश्चित मत है कि निरन्तर परीक्षणों और अथक प्रयासों के उपरान्त प्रत्येक हाथ पर विश्वसनीय ढंग से लागू की जा सकने वाली सक्षम एवं प्रभावी कार्यसाधिका परिकल्पना को अस्तित्व में लाना सम्भव है। जब ईमानदारी, श्रम और साधना पर टिकी इस प्रकार की परिकल्पना स्थापित हो जायेगी, तो फिर उसका आधार लेकर किसी भी हस्तरेखाविद् के लिए भविष्यकथन सम्भव हो जायेगा। यहां एक अन्य तथ्य की ओर संकेत करना अनुचित न होगा। प्रारम्भ में कोई भी नया नियम अथवा व्यवस्था सहज-ग्राह्य नहीं होती। कोई भी नयी परिकल्पना एकदम विश्वसनीय नहीं बन जाती, परन्तु व्यवहार में उसका प्रयोग होने, प्रयोगों से प्राप्त परिणामों तथा परिणामों का विश्लेषण सही उतरने पर नयी परिकल्पना न केवल सर्वथा विश्वसनीय बन जाती है, अपितु पूर्ण प्रामाणिकता का रूप भी ले लेती है। इस प्रकार गहन चिन्तन-मनन से गढ़ी परिकल्पना को केवल प्रयोग में लाने की आवश्यकता होगी और फिर यह अपनी उपयोगिता स्वत: सिद्ध कर देगी।

हाथ की एकमात्र बृहस्पति की अंगुली ही बिना किसी दूसरी अंगुली के सहारे के सीधी खड़ी हो सकने का सामर्थ्य रखती है। शेष अंगुलियां एक-दूसरे से इस प्रकार बंधी-उलझी रहती हैं कि बिना किसी दूसरी अंगुली का सहारा लिये स्वतन्त्र रूप से सीधी खुल ही नहीं सकतीं। वस्तुत: बृहस्पति की अंगुली शरीर में जीवनधारा का प्रवेश एवं उसे प्रवाहित करने वाला चुम्बक है।

यह भी एक सुनिश्चित तथ्य है कि व्यक्ति के चारों ओर विद्युत्-जैसी कोई अतिसूक्ष्म और भारहीन होने के साथ-साथ विद्युत् न होते हुए भी विद्युत्-जैसा कार्य करने वाली शक्ति प्रवाहित होती रहती है। इस शक्ति का क्षेत्र जहां विस्तृत, व्यापक है, वहां अदृश्य भी है और साथ ही उसका सामर्थ्य भी असीम है। यही शक्ति व्यक्ति की जीवनधारा को ऊर्जा प्रदान करती है और उस अज्ञात के साथ सम्पर्क स्थापित करती है। सर्वथा अदृश्य ही नहीं, अपितु अनुभव से भी नितान्त परे वाली इस शक्ति के अस्तित्व को तो केवल उसके परिणामों से ही स्वीकार किया जा सकता है। जन्म-काल से बृहस्पति की अंगुली के द्वारा शरीर में प्रविष्ट होने वाली यह शक्ति विद्युत्-धारा के रूप में हमारे जीवनकाल में निरन्तर प्रवाहित होती रहती है। इसके प्रवाह का अवरुद्ध होना ही व्यक्ति की मृत्यु है। पुस्तक के प्रथम भाग के द्वितीय अध्याय में इस जीवनी शक्ति का उल्लेख किया जा चुका है।

जीवनधारा के अस्तित्व और औचित्य के सम्बन्ध में किसी विस्तृत चर्चा का कोई लाभ नहीं। यह निश्चित रूप से एक उत्कृष्ट कोटि की कार्यसाधिका है और

इसका प्रयोग दोनों—सिद्धान्त और व्यवहार—क्षेत्रों में अवश्य करना चाहिए। वस्तुत: यही परिकल्पना—विद्युत्-जैसी अतिसूक्ष्म और सारहीन शक्ति का व्यक्ति के चारों ओर प्रवाहित होना—हाथ की रेखाओं के रहस्य को जानने-समझने की कुञ्जी है। इसकी सिद्धान्त-रूप में अस्वीकृति का अर्थ होगा—हस्तरेखाओं के मूल तत्त्व को समझने से वञ्चित रहना। बृहस्पति की अंगुली का एकदम सीधापन भी इसी तथ्य का संकेत है कि एक ऐसी प्रबल शक्ति है, जो जीवनधारा को बाह्य आवरण से खींचकर उसे शरीर के भीतर प्रवेश देती है। शरीर का विस्तृत अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि इसी जीवनी शक्ति द्वारा सञ्चालित होने वाले डायनमो के रूप-आकार वाले अनेक छोटे-छोटे अंग हैं। यह शक्ति बृहस्पति की अंगुली के द्वारा हमारे शरीर में निरन्तर प्रवहमान रहती है। सर्वप्रथम यह जीवनधारा हृदय में पहुंचकर रक्त-सञ्चार को गतिशील बनाती हुई मस्तक रेखा तक जाती है और मन-मस्तिष्क को जाग्रत करती है। रक्त के सञ्चार और मन-मस्तिष्क के जाग्रत होने का नाम ही जीवन है। इस प्रकार जीवन का प्रारम्भ करके यह शक्ति जीवन रेखा से मिलती है तथा उसमें से गुज़रती हुई आगे बढ़ जाती है। यहां से यह जीवनधारा शनि, सूर्य एवं बुध रेखाओं को लांघकर फिर और आगे बढ़ती है, इन्हीं अंगुलियों से होकर ही उसे बाहर निकलने का मार्ग मिलता है। इसीलिए बृहस्पति की अंगुली के नीचे से आरम्भ होने वाली हृदय रेखा हाथ की दूसरी ओर बुध रेखा तक जा पहुंचती है। यही मस्तक रेखा का उद्गम-स्थल है। मणिबन्ध अथवा शुक्र पर्वत से निकलती जीवन रेखा बृहस्पति की अंगुली के नीचे तक एक सेतु बनाती है। इस प्रकार जीवन के प्रारम्भिक वर्ष इन तीनों रेखाओं का आरम्भकाल है। जीवन के अन्तिम वर्ष इनका अन्तकाल है तथा जीवन के मध्य के वर्ष ही इनका मध्यकाल है। यही इन तीनों रेखाओं का संक्षिप्त लेखा-जोखा है।

शनि रेखा जीवन के अन्त से जीवनधारा को प्राप्त करती है। अत: इसका अध्ययन नीचे से ऊपर की ओर किया जाता है। शनि रेखा के तीनों—निम्न, शीर्ष तथा मध्य—भाग क्रमश: जीवन के आरम्भिक, परवर्ती और मध्यवर्ती वर्षों को घेरे रहते हैं। सूर्य रेखा की और बुध रेखा की दिशा भी शनि रेखा की दिशा-जैसी ही है।

हाथ में छ: प्रमुख रेखाओं की स्थिति मानी जाती हैं—हृदय रेखा, मस्तक रेखा, जीवन रेखा, शनि रेखा, सूर्य रेखा और बुध रेखा। प्रत्येक रेखा शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों से सम्बन्ध रखती है तथा भिन्न-भिन्न गुणों की सूचक है। उदाहरणार्थ—बुध रेखा का सम्बन्ध यकृत (जिगर) से है। इसे स्वास्थ्य रेखा भी कहा जाता है, परन्तु इसके बुध पर्वत की ओर बढ़ने के कारण इसे बुध रेखा नाम देना कहीं अधिक उपयुक्त है।

उपर्युक्त छ: मुख्य रेखाओं के समान ही सात गौण रेखाएं भी हैं। रेखा के

स्थान पर इसके पर्याय के रूप में 'मुद्रिका' और 'मेखला' प्रयोग भी प्रचलित हैं। वे हैं—न्याय मुद्रिका, शनि मुद्रिका, शुक्र मेखला, स्नेह रेखा, मंगल रेखा, अन्तर्ज्ञान रेखा तथा (तीन आवेष्टनों वाली) मणिबन्ध रेखा।

इन सात गौण रेखाओं के अतिरिक्त एक अन्य महत्त्वपूर्ण रेखा है—वासना रेखा, जिसे बुध रेखा की सहोदर ही समझना चाहिए। गौण रेखाओं में कोई निश्चित स्थान न मिलने के कारण इसे एक नये वर्ग— आकस्मिक रेखा में स्थान दिया जाता है।

हाथों के आकस्मिक बिन्दु और दिशाएं भिन्न हो सकती हैं, परन्तु उपर्युक्त तेरह—छः मुख्य और सात गौण—रेखाओं के स्थान निश्चित ही रहते हैं। थोड़े-से अभ्यास से इन रेखाओं को ढूंढ़ना तथा इनके होने-न होने को निश्चित करना सरल हो जाता है। यह तथ्य ध्यान में रखने योग्य है कि सभी मुख्य रेखाएं सभी हाथों में नहीं होतीं। कुछ हाथों में कुछ, तो दूसरे कुछ हाथों में कुछ दूसरी रेखाएं होती हैं। अपवादस्वरूप कुछ हाथों में तो हृदय रेखा दिखाई नहीं देती और कुछ हाथों में जीवन रेखा दिखाई नहीं देती। मस्तक रेखा छोटी अवश्य होती है, परन्तु लगभग सभी (99/100) हाथों में स्पष्ट दिखाई देती है। जीवन रेखा तो शारीरिक रूप से पूर्णतः अस्वस्थ और केवल अपनी तन्त्रिका-शक्ति की प्रबलता से जीवित रहने वालों के हाथों में भी विद्यमान पायी जाती है। शनि रेखा अधिकांश हाथों में अनुपस्थित तथा सूर्य और बुध रेखाएं कतिपय हाथों में दिखाई ही नहीं देतीं। निजी गुणों की अभिव्यञ्जक गौण रेखाएं प्रायः सभी हाथों में विभिन्न दिशाओं में और विभिन्न दशाओं में देखने को मिल जाती हैं। सम्बन्धित ग्रहों की प्रधानता लिये रहने वाले कुछ व्यक्तियों में ये रेखाएं अपेक्षाकृत अधिक रूप में मिलती हैं।

दो हाथों के अध्ययन के अन्तर्गत—कुछ अथवा अधिकांश रेखाओं के न मिलने की स्थिति में प्रथम तो विद्यमान रेखाओं पर और पुनः अविद्यमान रेखाओं के कारण व्यक्ति में किसी न्यूनता के होने-न होने के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। व्यक्ति के हाथ में विभिन्न रेखाओं—आकस्मिक, चिन्ता तथा मनोभाव सूचक—का एक जमघट-सा होता है। मुख्य तथा गौण रेखाओं को छोड़कर शेष सभी रेखाएं इन तीन—आकस्मिक, चिन्ता-सूचक तथा मनोभावों की अभिव्यंजक—वर्गों से सम्बन्ध रखती हैं। रेखाओं की यह अनेकता व्यक्ति के चिन्ताग्रस्त रहने और उसके मन में सदैव परस्पर विरोधी भावों के उमड़ते रहने की सूचक है। इस प्रकार के व्यक्तियों—चिन्ताग्रस्त अथवा विरोधी विचारों से आहत—के हाथ में विद्युत्-धारा टेढ़े-मेढ़े मार्गों से गुज़रती हुई प्रत्येक दिशा में प्रवाहित होती रहती है, जिससे व्यक्ति कभी तीव्र उत्तेजना, तो कभी अवसाद का शिकार होता है। इस स्थिति में हस्तरेखाविद् को सर्वप्रथम आकस्मिक रेखाओं द्वारा मुख्य रेखाओं को पहुंची क्षति का आकलन

करना चाहिए। प्रारम्भ में तो व्यक्ति की भारी बेचैनी के लिए उत्तरदायी रेखाओं की बहुलता की पहचान ही पर्याप्त होती है। वस्तुतः प्रत्येक आकस्मिक रेखा किसी-न-किसी मनोभाव की व्यञ्जक तो होती है, परन्तु इन आकस्मिक रेखाओं के उभरने और मिटने का स्थान अनिश्चित रहता है और इसके अतिरिक्त ये रेखाएं व्यक्ति के क्षणिक आवेश को भी प्रकट करती हैं। ऐसा व्यक्ति उत्साहित होकर भागने तो लगता है, परन्तु थोड़ी ही देर में, मानो थक जाता है तथा अपने प्रयास से विरत हो जाता है। यही कारण है कि इन रेखाओं को विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता। हां, कुछ आकस्मिक रेखाएं अवश्य ऐसी हैं, जो एक पर्वत से आरम्भ होकर दूसरे पर्वत पर समाप्त होती हैं तथा इन दोनों पर्वतों के बीच एक ऐसा सम्बन्ध बनाती हैं, जिसका महत्त्वपूर्ण अर्थ होता है। इसके अतिरिक्त कुछ आकस्मिक रेखाएं ऐसी भी हैं, जो किसी एक मुख्य अथवा गौण रेखा से निकलकर या तो दूसरी मुख्य या गौण रेखा में मिल जाती हैं अथवा किसी पर्वत पर जाकर समाप्त होती हैं। इन सभी रेखाओं का अपना महत्त्व है। क्षणिक आवेश को प्रकट करने वाली रेखाओं तथा महत्त्वपूर्ण रेखाओं में अन्तर समझने की योग्यता प्राप्त करने के लिए मुख्य रेखाओं के अध्ययन और अर्थबोध में निपुणता अपेक्षित है। इस क्षेत्र में कुशल हस्तरेखाशास्त्री के लिए तो फिर आकस्मिक रेखाओं के रहस्य को हस्तामलक करने की क्षमता अपने आप ही आ जाती है। आवश्यकता है, तो मुख्य रेखाओं का सही अर्थ समझने की। यह समझ आते ही न केवल मुख्य रेखाओं और गौण रेखाओं की पहंचान, अपितु गौण रेखाओं के साथ-साथ आकस्मिक रेखाओं के तत्त्व को भी समझने में कोई कठिनाई सामने नहीं आती।

हस्तरेखाशास्त्री को सर्वप्रथम हाथ और रेखाओं के अनुपात की जांच-परख करनी चाहिए और यह निश्चित करना चाहिए कि रेखाएं हाथ के अनुपात में हैं अथवा नहीं, अर्थात् हाथ चौड़े हैं, तो रेखाएं गहरी-बड़ी होनी चाहिए और इसके विपरीत कोमल-छोटे हाथ की रेखाएं तदनुरूप छोटी-कोमल होनी चाहिए। इस अनुरूपता—बड़े-छोटे हाथ के अनुसार अंगुलियों का बड़ा-छोटा होना—की आवश्यकता का कारण यह है कि बड़े-चौड़े हाथ में बृहस्पति की अंगुली शरीर के लिये विद्युत्-धारा को अधिक मात्रा में खींचती है। अतः इस विद्युत्-धारा को प्रवाहित करने वाली रेखाओं का अपेक्षाकृत अधिक गहरा और अधिक बड़ा होना ठीक इसी प्रकार आवश्यक है, जिस प्रकार लोक में बड़ी विद्युत्-धारा को प्रवाहित करने के लिये विद्युत्कर्मियों को बड़े मोटे-तारों की अपेक्षा रहती है। कल्पना कीजिये कि बड़े हाथ में कोमल-पतली, अर्थात् छोटे हाथ के आकार वाली रेखाएं बड़े हाथ द्वारा खींचे जाने वाले विद्युत्-प्रवाह के भार को कैसे झेल सकती हैं? छोटी-संकरी रेखाओं के लिए अधिक प्रवाह विस्फोटक रूप धारण कर सकता है।

इस प्रकार की स्थिति—बड़े हाथ में छोटी-पतली रेखाओं—को तो किसी घोर अनिष्ट की सूचना ही समझना चाहिए।

एक डॉक्टर के लम्बे-चौड़े हाथ में पतली-संकरी रेखाएं देखने को मिलीं। उसके जीवन की जानकारी प्राप्त करने पर यह तथ्य भी उजागर हो गया कि उन रेखाओं में जीवनधारा का अपेक्षित सञ्चार नहीं हो पा रहा था, जिसके फलस्वरूप वह थोड़े-से श्रम से ही अपने को शान्त-क्लान्त अनुभव करने लगता था। उसका व्यवसाय ऐसा था, जिसमें मानसिक श्रम (चिन्तन) की आवश्यकता पड़ती थी। उसे अधिक श्रम न करने की सलाह दी गयी। उसने इसकी उपेक्षा की और फलतः एक ही वर्ष की अल्प अवधि में वह पागलपन का शिकार हो गया। वस्तुतः मस्तक रेखा में पर्याप्त जीवनधारा का सञ्चार न होने के कारण वह सशक्त न हो सकी और इससे डॉक्टर काम के बोझ को संभाल न पाया। इस प्रकार बड़े हाथ में छोटी रेखाएं भी सर्वथा अवाञ्छनीय स्थिति है। इसके विपरीत छोटे हाथ में बड़ी-गहरी रेखाएं बड़ी अथवा थोड़ी मात्रा में प्रवाहित विद्युत्-धारा को आसानी से अपने में समेट लेती हैं, जिससे मानसिक शक्तियां भली प्रकार से अपना कार्य करती रहती हैं।

रेखाओं के प्रारम्भिक स्थल का तथा प्रारम्भ से अन्तिम बिन्दु तक, उनके द्वारा ग्रहण किये गये मार्ग का, रेखाओं के मार्ग में होने वाले परिवर्तनों का, रेखाओं की गहराई, आकार, रंग, स्पष्टता, निष्कलंकता, अखण्डता अथवा खण्डित-टूटने-फूटने, कटने-फटने-जैसे अन्यान्य दोषों का गहन विवेचन उपयुक्त तथा आवश्यक रहता है। प्रमुख तथा आकस्मिक रेखाओं के सूक्ष्म-गहन अध्ययन-परीक्षण से जीवन की घटनाओं और सम्भावित परिवर्तनों का यथासम्भव पता लगाना सुलभ हो जाता है। यहां केवल ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि रेखाओं का अध्ययन-परीक्षण करते समय उनकी समग्र लम्बाई तक विचार करना अपेक्षित होता है।

रेखाओं के अध्ययन का एक स्थायी क्रम—हृदय रेखा से आरम्भ करके मस्तक रेखा, जीवन रेखा तथा अन्यान्य रेखाओं का अध्ययन—बना लेने का एक लाभ तो यह होगा कि अध्ययन सुनिश्चित और व्यवस्थित हो जायेगा, दूसरे आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण कुछ भी छूटने नहीं पायेगा।

मुख्य रेखाओं का स्पष्ट एवं प्रबल रूप में होना तथा आकस्मिक रेखाओं का नाममात्र होना व्यक्ति के सन्तुलित स्वभाव का होने का सूचक है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सहज और सुखमय होता है। आकस्मिक रेखाओं की अधिकता और मुख्य रेखाओं का स्थान-स्थान पर कटना व्यक्ति को प्रभावहीन, बिखरा हुआ (अव्यवस्थित) तथा सदैव अपने कार्यक्षेत्र को बदलते रहने वाला सूचित करता है।

रेखाओं का अध्ययन-परीक्षण करते समय सिद्धान्तों की अधिक चिन्ता न करके व्यक्ति के दोनों हाथों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। प्रायः व्यक्ति

अपनी जीवन-दिशा को तो सहजता से बदल लेते हैं, परन्तु अपनी जाति अथवा वर्ग की विशेषताओं अथवा सबलताओं-दुर्बलताओं को शीघ्रता एवं सरलता से कदापि नहीं बदलते। उदाहरणार्थ, बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति परिस्थितियों अथवा घटनाओं में आये परिवर्तनों के कारण अपनी स्वाभाविक जीवन-दिशा को भले बदल लें और फिर इसके फलस्वरूप अपनी हृष्ट-पुष्ट काया को क्षति भी पहुंचा सकता है अथवा उसकी महत्त्वाकाक्षाएं भी उसे डुबो सकती हैं, परन्तु फिर भी उसके हाथ की रेखाओं से उसके पर्वत-प्रकार अथवा जाति का परिचय, जीवन-वृत्त एवं परिणाम आदि का बोध हो ही जाता है। रेखाओं की योजना से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति के बायें हाथ में उसके जीवन का मानचित्र है और उसके जीवन में आये परिवर्तन का लेखा-जोखा उसके दायें हाथ में है। कुछ हाथ ऐसे भी देखने को मिले हैं, जहां बायां हाथ विकास और उज्ज्वलता का सूचक है, तो दायां हाथ विनाश, ह्रास और अन्धकार की ओर संकेत करता है। इसके विपरीत कुछ व्यक्तियों के बायें हाथ जहां अधीरता, अशक्तता और अस्थिरता को दर्शाते हैं, वहां दायें हाथ उन्हें सशक्त और सही दिशा में जा रहे सूचित करते हैं। इस प्रकार की विरोधी स्थिति में यह समझना चाहिए कि एक हाथ की अशक्त, त्रुटिपूर्ण और तुच्छ रेखाएं दूसरे हाथ में अशक्त, त्रुटिहीन और उच्च रेखाओं में परिवर्तित हो रही है। यह व्यक्ति के जीवन का बुराई से अच्छाई की ओर जाने का संकेत भी हो सकता है। इसकी विपरीत स्थिति को परिणाम का पलटना, अर्थात् अच्छाई से बुराई की ओर जाना समझना चाहिए।

व्यक्ति के भविष्यकथन को नितान्त शुद्ध और निर्भ्रान्त बनाने के लिए सभी रेखाओं की तीन अवस्थाओं—आरम्भ-स्थान, गमन-मार्ग और समामन-बिन्दु की सही जानकारी का होना अत्यन्त आवश्यक है। रेखा के मूल से व्यक्ति के जन्म की विशेषता का, गमन-मार्ग (घुमाव आदि) से जीवन की घटनाओं में विचलन-अविचलन का तथा समापन-बिन्दु से घटनाओं के अन्तिम परिणामों का परिचय मिलता है।

रेखाओं के प्रत्येक दोष और उसके प्रभाव का गहन चिन्तन भी आवश्यक होता है। इसके साथ-साथ अतिरिक्त तथा सहायक रेखाओं अथवा रेखाओं को सशक्त बनाने वाले अथवा उन्हें सुधारने वाले भिन्न-भिन्न चिह्नों पर भी ध्यान देना चाहिए। किसी भी रेखा पर विचार करने से पूर्व यह निर्धारण करना आवश्यक होता है कि क्या वह रेखा उत्तम है अथवा दोषपूर्ण ? यदि दोषपूर्ण है, तो किस आधार पर, अर्थात् उसमें कौन-सा दोष है ? दोष के स्वरूप और उसके सुधार के सम्भावित उपाय पर भी विचार करना चाहिए—इन सभी बातों की चर्चा अगले अध्याय में की जायेगी। इसके साथ वहां दोषपूर्ण रेखाओं के कारण बनने वाले चिह्नों अथवा दोषपूर्ण समझी जाने वाली रेखाओं पर भी विचार किया जायेगा। इन प्रारम्भिक

अध्यायों में रेखाओं के नियन्त्रक सामान्य सिद्धान्तों को स्पष्ट करने का प्रयास भी किया जायेगा। हमें आशा है कि इस सारे प्रयास का यह सुनिश्चित परिणाम निकलेगा कि इन सिद्धान्तों का आधार लेने से रेखाओं का अध्ययन और विश्लेषण सरल-सुगम ही नहीं, अपितु व्यवस्थित और सुनिश्चित भी बन जायेगा। *

3

रेखाएं : स्वरूप, दोष, सुधार-चिह्न, सशक्तता

रेखाओं के परीक्षण के अन्तर्गत सर्वप्रथम उनके स्वरूप—शुद्ध-सम्पूर्ण अथवा दोषपूर्ण होना—पर विचार करना चाहिए। रेखाओं की स्पष्टता, गहराई और एकरूपता उनकी शुद्धता की परिचायक हैं और विपरीतता से उनका दोषपूर्ण होना सूचित होता है। रेखाओं के दूषित होने पर यह देखना होता है—(1) दोष कौन-सा है ? (2) क्या पूरी रेखा दोषग्रस्त है अथवा उसका कोई एक भाग ? (3) क्या दोष को हटाया और रेखा को सुधारा जा सकता है अथवा नहीं ? (4) क्या दोष-निवृत्ति पर रेखा का अपनी मौलिक गहराई और स्पष्टता को पुन: प्राप्त करना सम्भव होगा अथवा क्या इसकी शक्ति ह्रास की ओर बढ़ती-बढ़ती क्रमश: पूर्ण लुप्त हो गयी है ?

रेखाओं के स्वरूप की जानकारी के सामान्य सिद्धान्त निम्नोक्त हैं—

1. रेखाओं का एकसार अथवा समान प्रवाह के साथ आगे बढ़ने का अर्थ है—उनके आकार की स्पष्टता।

2. (क) रेखाओं का कटा-फटा न होना, (ख) रेखाओं में द्वीपों अथवा शृंखलाओं का न होना तथा (ग) रेखाओं के रंग का गुलाबी होना-जैसी विशेषताएं रेखाओं की सक्रियता और सशक्तता के लक्षण हैं।

इन दोनों—(i) स्पष्ट आकार तथा (ii) सक्रिय-सशक्त—गुणों वाली रेखाओं के माध्यम से विद्युत्-धारा निर्बाध रूप से प्रवाहित होती है। इस विद्युत्-धारा का प्रवेश और निर्गम अंगुली के छोरों से होता है। खड़ी रेखाएं जहां विद्युत्-धारा के मार्ग को सुगम बनाती हैं, वहां आड़ी-तिरछी रेखाएं इसे दुर्गम बना देती हैं। इस आधार पर सीधी-खड़ी रेखाओं को अनुकूल एवं उत्तम तथा आड़ी-तिरछी रेखाओं को प्रतिकूल तथा निकृष्ट माना जाता है। एक गुण-रूप हैं, तो दूसरी दोष-रूप। एक को शुभ, तो दूसरी को अशुभ माना जाता है। एक का किसी पर्वत पर मिलना शक्तिवर्धक है, तो दूसरे का शक्तिनाशक। एक साधक है, तो दूसरी बाधक। एक व्यक्ति के उत्तम स्वास्थ्य को, तो दूसरी उसमें विकार को सूचित करती हैं। इस विपरीत स्थिति से इस नियम की प्रतिष्ठा होती है—विद्युत्-धारा के प्रवाह के अबाध रहने पर ही रेखाएं

सही अर्थों में कार्य कर पाती हैं। इस प्रवाह में बाधा अथवा अड़चन के आने का अर्थ ही है—व्यक्ति के जीवन, स्वास्थ्य, स्वभाव और चरित्र आदि में विकृति की उपस्थिति। बाधाओं—दोषों की न्यूनता-अधिकता—के अनुरूप ही परिणाम की अशुभता की न्यूनता-अधिकता भी होगी।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है—स्वच्छ, स्पष्ट, गहरी और गुलाबी रेखाएं उत्कृष्टता की प्रतीक हैं, तो कहीं से छिन्न-भिन्न, द्वीप, शृंखला आदि से आकीर्ण तथा अत्यन्त फीका होना निकृष्टता का द्योतक है। निकृष्टता का तात्पर्य है—रेखाओं के गुणों का ठीक तरह से अपना कार्य न कर पाना। इन दो तत्त्वों के अतिरिक्त यह भी देखना होता है कि (1) रेखा की गहराई पर्याप्त है या वह सतही तौर पर (नाममात्र की) गहरी है? (2) यदि रेखा दोषपूर्ण है, तो किस रूप में और किस स्तर तक दोषग्रस्त है? (3) रेखा का स्वरूप हाथ की अन्य रेखाओं के समान है अथवा उनसे भिन्न। यहां यह उल्लेखनीय है कि आकार-प्रकार में तो हाथ की अन्य सामान्य रेखाओं से समानता रखने वाली, परन्तु गहरी, स्पष्टता और रंगत में उनसे कहीं आगे बढ़ी हुई रेखा अन्य रेखाओं पर भारी पड़ने वाली होती है। गहरी, सुस्पष्ट और रंगीन रेखाओं के बीच तीनों रूप में न्यूनता लिये रहने वाली, अर्थात् कम गहरी, कम उभरी और कम गुलाबी रेखा व्यक्ति के स्वाभाविक रूप से दुर्बल होने को सूचित करती है। इस प्रकार रेखाओं के इस अनुपात पर भी विचार करना आवश्यक होता है। सन्तुलित रेखाएं जहां व्यक्ति के स्वभाव और व्यवहार में सन्तुलन का संकेत देती हैं, वहां असन्तुलित रेखाएं उसे व्यग्र, असन्तुलित, अधीर और अस्थिरचित्त सिद्ध करती हैं।

हाथ की रेखाएं भले ही विस्तृत और सतही हों, परन्तु यदि वे गहरी और स्पष्ट नहीं हों, तो उनसे विद्युत्-धारा के प्रवाह में बाधा होना निश्चित ही है। वस्तुतः विस्तृत (चौड़ी) एवं सतही रेखाएं शिथिल-अशक्त होने के रूप में अनेक दोषों-बाधाओं से ग्रस्त होती हैं। इनसे सर्वथा भिन्न साफ़-सुथरे ढंग से गढ़ी हुई, गहरी, गुलाबी रंगत से सुशोभित, बिना कटी-फटी एवं किसी भी दोष से सम्बन्ध न रखने वाली रेखाएं व्यक्ति के उत्साह, स्फूर्ति और ऊर्जा से सम्पन्न अध्यवसायी होने को सूचित करती हैं। ऐसी रेखाओं वाला व्यक्ति दृढ़चरित्र, कृतसंकल्प, कठिनाइयों से जूझने वाला और अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफलता प्राप्त करने वाला होता है। इसके विपरीत चौड़ी, विस्तृत, सतही, अस्पष्ट, रंग-रौनक़ न रखने वाली रेखाएं रखने वाला व्यक्ति कायर, दुर्बल, टालमटोल करने वाला तथा पल-भर में ही अपने निश्चय से भटक जाने वाला होता है। यदि ऐसा व्यक्ति कभी संयोगवश श्रम करता भी है, तो भी उसे अभीष्ट फल प्राप्त नहीं होता। रेखाओं में होने वाले तथा हो सकने वाले परिवर्तनों, बाधाओं और दोषों के नाम, कारण तथा प्रभाव आदि की चर्चा अलग से

की जायेगी।

रेखाचित्र-1

प्रथम दोषग्रस्त रेखा (रेखारेखाचित्र-1) ऊबड़-खाबड़, ऊंची-नीची तथा टेढ़ी-मेढ़ी होती है। सरसरी तौर पर ऐसी रेखा भले ही ठीक-ठाक और सीधी लगे, परन्तु सूक्ष्मता और गहराई से जांचने पर स्पष्ट हो जाता है कि सम्बद्ध रेखा के कुछ अंश अधिक गहरे, कुछ अंश अधिक चौड़े, कुछ अंश सतही, तो कुछे स्थलों पर यह रेखा क्षीण होती है और फिर सहसा विलीन हो जाती है। यही इसकी अनियमितता-नियम का पालन न होना है।

ऐसी अनियमित रेखा कहीं (प्राय: प्रारम्भ में) चौड़ी-सतही, कहीं प्राय: कुछ आगे चलकर—गहरी और उभरी हुई और फिर कहीं—प्राय: अन्त में—अदृश्य-विलीन हो जाती है। इसकी एक विशेषता यह अवश्य होती है कि यह न तो कहीं छिन्न-भिन्न होती है और न ही इस पर कहीं द्वीप अथवा शृंखला-जैसे चिह्न पाये जाते हैं। इसका ऊबड़-खाबड़ रूप इसे दूसरी रेखाओं से अलग करने में सहायक होता है। ऐसी रेखा के आरम्भ में क्षीण होने का अर्थ है—इसके क्षीण बने रहने तक विद्युत्-धारा के प्रवाह का भी क्षीण बने रहना। आगे चलकर इस रेखा का पुन: गहरी हो जाना व्यक्ति की संकल्पशक्ति के चुक जाने का संकेत है और इस चुक जाने का कारण है—रेखा में दोष आना और उसके रक्त-प्रवाह का क्षीण होना। गहराई के उपरान्त रेखा का पुन: क्षीण होना इस तथ्य को उजागर करता है कि रेखा जीवनधारा के भारी दबाव से गहरी और पुन: क्षीण दबाव से क्षीण बनी है। इस प्रकार की अनियमित-ऊबड़-खाबड़ रेखा का प्रारम्भ से अध्ययन करके और उस पर आयुसूचक मानदण्डों को लागू करके यह निश्चित किया जा सकता है कि व्यक्ति में कब शक्ति-सामर्थ्य और उत्साह, कब कायरता, दुर्बलता और असमर्थता आदि रहे। इसके अतिरिक्त यह स्थिति कब तक रही और इसमें परिवर्तन कब और क्यों आया—इन तथ्यों का भी पता लगाया जा सकता है। यह तो निश्चित है कि अनियमित, टेढ़ी-मेढ़ी एवं ऊबड़-खाबड़ रेखा जीवन में असमान-अनियमित गतिविधियों की सूचक है। यह सिद्धान्त सामान्य रेखाओं के सन्दर्भ में है, इसे विशेष रेखाओं पर लागू नहीं करना चाहिए। यहां सामान्य रूप से सभी हाथों में सुलभ असमान-अनियमित रेखाओं के विभिन्न रूपों को उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

ऊंची-नीची, ऊबड़-खाबड़ रेखाओं की चर्चा के उपरान्त अब हम विभक्त-विखण्डित (रेखाचित्र-2) रेखाओं पर विचार करने जा रहे हैं। खण्डित का अर्थ खण्ड-खण्ड में होना, अर्थात् टुकड़ों में बंटा होना है। ऐसी कटी-कटी रेखा मूल

रेखा की शक्ति को घटाती है और उसे विकृत बनाती है, जिससे वह (मूल रेखा) इस प्रकार क्षीण-अशक्त हो जाती है कि उसके लिए विद्युत्-धारा को प्रवाहित करना ही सम्भव नहीं हो पाता।

विखण्डित अथवा विभाजित रेखाओं के एक तो मूल रेखा से अलग हो जाने के उपरान्त पुनः उसमें न जुड़ने वाली और दूसरे उलटे अपनी स्थिति से मूल रेखा को दुर्बल बनाने वाली होने के कारण उन्हें सहायक रेखाएं अथवा द्वीप मानना उचित नहीं।

रेखाचित्र-2

कभी-कभार अत्यन्त छोटी और नितान्त पतली बन जाने वाली खण्डित रेखा की स्थिति का निश्चय न हो पाने पर उसका गहराई से परीक्षण करना चाहिए और दो बातों का ध्यान रखना चाहिए—एक बार मुख्य रेखा को छोड़ चुकी गौण रेखा न तो लौटकर आती है और न ही वह पुनः जुड़ती है। वह तो विद्युत्-धारा के एक अंश को मुख्य रेखा से अलग करके उसे किसी नयी दिशा में प्रवाहित कर देती है। इस प्रकार खण्डित रेखा तो एक प्रकार से मुख्य रेखा में आयी एक ऐसी दरार है, जो क्रमशः उसकी शक्ति को बिखेरती और उसे क्षीण करती है। इस प्रकार विखण्डित अथवा विभाजित रेखाओं को व्यक्ति के जीवन में किसी नयी दिशा में मुड़ने, अर्थात् अपने उदय के समय से ही उसके जीवन में आये परिवर्तन के सूचक संकेत समझना चाहिए।

व्यक्ति के जीवन में आये परिवर्तन के स्थायी, अर्थात् परिवर्तन लाने में रेखा के सफल होने पर नयी रेखा लम्बाई में न केवल अपना विस्तार करती रहती है, अर्थात् लम्बाई में बढ़ती रहती है, अपितु मूल रेखा से विद्युत्-प्रवाह को भी खींचती रहती है। इसके विपरीत ऐसी विभक्त रेखा के थोड़ी दूरी पर रुक जाने का तथा मुख्य रेखा के सशक्त बने रहने का, अर्थात् विखण्डित रेखा द्वारा विद्युत्-प्रवाह को न खींच पाने का यह अर्थ निकालना चाहिए कि जीवन की स्वाभाविक दिशा को बदलने के प्रयास में यह रेखा असफल हो गयी है। इस प्रकार विभाजित-विखण्डित रेखाएं व्यक्ति द्वारा अपने जीवन की दिशा को बदलने के प्रयास की सूचक होती हैं। हां, इनका छोटा रह जाना प्रयासों की असफलता को दर्शाता है। इन रेखाओं की मुख्य रेखाओं की निकटता से यह संकेत मिलता है कि ये रेखाएं विद्युत्-धारा के प्रवाह में साधारण रूप से ही बाधक हैं। इसके विपरीत मुख्य रेखा से अधिक दूर, परन्तु प्रगाढ़ एवं स्पष्ट रेखाएं जीवन की दिशा को परिवर्तित करने में अधिक सहायक रहने वाली होती हैं। इसी प्रकार किसी खण्डित रेखा का मुख्य रेखा से हटकर किसी पर्वत की ओर बढ़ने का अर्थ है—व्यक्ति का उस पर्वत के प्रति विशेष आकर्षण है। व्यक्ति की
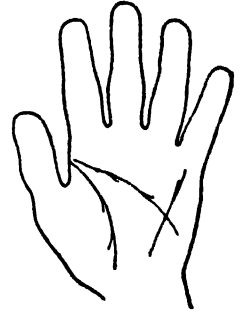
ग्रह-राशि आदि की परख करने पर स्पष्ट हो जायेगा कि उसके ग्रह उसी पर्वत के गुणों को लिये रहने वाले अथवा अपनाने को आतुर होंगे। ऐसी रेखाओं—हृदय रेखा से अलग होकर पर्वत-विशेष तक जाने वाली—से सम्बद्ध व्यक्ति के उसी पर्वत विशेष के गुणों से सम्पन्न व्यक्ति से परिणय-सूत्र में बंधने का भी संकेत मिलता है।

यह एक विचित्र, परन्तु सत्य स्थिति है कि आज की अपेक्षा पहले पर्वत-प्रकारों के प्रतिरूप कहीं अधिक शुद्ध रूप में सुलभ थे। अत: उस समय हस्तरेखाशास्त्री के लिए व्यक्ति की विभक्त-विखण्डित रेखा के अन्तिम छोर पर अवस्थित पर्वत के गुणों के आधार पर व्यक्ति के भावी जीवनसाथी के केशों, नेत्रों और रूप-रंग आदि के सम्बन्ध में स्पष्ट निर्देश करना सम्भव होता था। ऐसा असाधारण भविष्यकथन आज भी सम्भव है, परन्तु इसके लिए दो—(1) रेखाओं का स्पष्ट और प्रभावशाली होना तथा (2) प्रकार-प्रतिरूप का शुद्ध होना आवश्यक है। खण्डित रेखाओं के समापन-स्थल वाले पर्वत-प्रकार के प्रति ऐसी रेखाओं वाले व्यक्ति के स्वाभाविक आकर्षण का होना सुनिश्चित होता है। यही कारण है कि शुद्ध पर्वत-प्रकार के व्यक्ति के गुणों, आकार-प्रकार और रूप-रंग आदि का भविष्यकथन अक्षरश: सत्य सिद्ध होता है। वस्तुत: विभक्त रेखा से जीवन की अनेक घटनाओं का सत्य पता चलता है, जिसमें किसी शंका अथवा सन्देह के लिए कोई अवकाश ही नहीं रहता। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि किसी रेखा का साधारण-सा दोष भी व्यक्ति के जीवन को पक्के तौर पर आमूल-चूल बदल सकता है। रेखा के दोषों की पहचान के लिए तो केवल थोड़ी-सी सोच-समझ और थोड़ी-सी सावधानी अपेक्षित होती है। इस अध्याय में निर्दिष्ट विवरण के आधार पर हाथों में सुलभ लक्षणों, चिह्नों तथा रेखाओं का विश्लेषण करके परिणाम पर पहुंचा जा सकता है। यहां इस तथ्य को कभी नहीं भूलना चाहिए कि खण्डित रेखा मुख्य रेखा की शक्ति को लगभग आधा कर देती है।
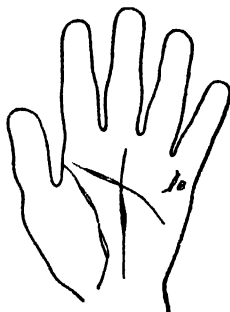
रेखाचित्र-3क व 3ख

विभक्त-विखण्डित रेखा के समान द्वीपचिह्न भी दोष-रूप है (रेखाचित्र-3)। अनेक हस्तरेखाशास्त्री इस चिह्न को सही ढंग से नहीं समझ पाये। अत: उनके द्वारा की गयी व्याख्या भी ग़लत बन पड़ी है। इस सम्बन्ध में प्रथम उल्लेखनीय तथ्य यह है कि द्वीप पृथक् अस्तित्व रखने वाला कोई चिह्न नहीं, यह तो मुख्य रेखा के दूर करने पर उससे किसी रेखा का पहले अलग होने और फिर घूम-फिरकर उस रेखा का निचले सिरे से पुनः मूल रेखा में जुड़ जाने पर बनने वाला चिह्न है। यही कारण है कि आकस्मिक रेखाओं के एक-दूसरे को काटने पर बनने वाले द्वीप-जैसे चिह्न (रेखाचित्र-4) को द्वीप नहीं माना जाता; क्योंकि ऐसी आकस्मिक रेखाओं के सिरे जब एक-दूसरे पर चढ़ जाते हैं, तो दोनों ही रेखाओं की क्रिया अथवा गतिविधि गड़बड़ा जाती है। इस प्रकार से बनने वाली दोषपूर्ण आकृति को सही अर्थों में द्वीप नहीं माना जा सकता। निष्कर्षत: द्वीप तब बनता है, जब मुख्य रेखा चटखती है और एक रेखा उससे अलग होती है और घूम-फिर कर नीचे की ओर से पुन: जुड़ती है, तो इस जोड़ के चिह्न का नाम ही द्वीप हो जाता है। ये द्वीप बहुत छोटे बिन्दु से बड़े-बड़े वृत्तों के आकार में पाये जाते हैं और अपनी उपस्थिति का तुरन्त ही एहसास करा देते हैं। इस प्रकार किसी द्वीप को देखते ही तत्काल यह समझ लेना चाहिए कि किसी रेखा ने टूटकर यह रूप ले लिया है।

रेखाचित्र-4

एक अन्य ध्यान देने योग्य महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि दो रेखाओं द्वारा एक-दूसरे को काटने अथवा किसी आकस्मिक रेखा द्वारा मुख्य अथवा गौण रेखा के दोनों छोरों पर काटने से उभरने वाली आकृति को द्वीप समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। वास्तव में यह आकृति भी आकस्मिक ही होती है।

द्वीप को सदैव दोष, विघ्न-बाधा अथवा चुनौती का संकेत ही समझना चाहिए। यह मूल रेखा की विद्युत्-धारा को बाधित करके उसकी क्षमता को क्षीण कर देता है। बाधित विद्युत्-धारा की कुछ मात्रा द्वीप की ओर, तो कुछ मात्रा दूसरी ओर बहने लगती है। बंटी हुई धाराएं द्वीप के नीचे की ओर जब पुन: मिल जाती हैं, तो उनकी यात्रा पुन: सुचारू रूप ले लेती हैं।

'द्वीप' के नामकरण का आधार भौगोलिकता है। जिस प्रकार जलस्रोतों के मध्य में कहीं उभरे भू-तल को द्वीप कहा जाता है, ठीक उसी प्रकार हाथ की विखण्डित-विभक्त रेखा से घिरी सतह पर उभरा चिह्न द्वीप कहलाता है। इसका यह स्वरूप वस्तुत: इसके नाम को सार्थक करता है। हम पहले उल्लेख कर चुके हैं कि द्वीप रेखा के मार्ग की बाधा होता है; क्योंकि यह विद्युत्-धारा को विभाजित करने

के रूप में उसकी शक्ति को ही बांट देता है और यह बंटवारा क्षीणता का प्रतीक होता है। बाधा के परिमाण और उसकी काल-सीमा के निर्णय के लिए द्वीप के आकार-प्रकार और उसकी लम्बाई-चौड़ाई पर ध्यान देना चाहिए। रेखा पर विद्यमान् द्वीप के संसूचक बिन्दु से शक्ति-क्षीणता की अवधि को जानना सम्भव होता है।

इस अध्याय में हमने केवल द्वीप के अर्थ पर विचार किया है। रेखाओं के सन्दर्भ में इसके विशिष्ट प्रभाव की चर्चा बाद में की जायेगी। किसी द्वीप के दिखाई देने पर विभक्त धारा और उससे होने वाले शक्ति-अवरोध पर विचार अपेक्षित है; क्योंकि जब तक द्वीप की स्थिति है, तब तक मुख्य रेखा की शक्ति का क्षीण होना निश्चित है और यह व्यक्ति के लिए संकट की सूचना है।

रेखाओं के बीच में दरारें तथा फ़ासिले भी देखने को मिलते हैं। ये दोनों भी अव्यवस्था के सूचक हैं। जिस प्रकार सन्देशवाहक तार के टूटने पर सञ्चार-प्रणाली अप्रभावी हो जाती है, उसी प्रकार रेखाओं के छिन्न-भिन्न होते ही विद्युत्-प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है। दो रेखाओं के अन्तराल (फ़ासिला) से परिणाम की विषमता का अनुमान लगाया जा सकता है। वस्तुतः विद्युत्-प्रणाली के सन्दर्भ में अन्तराल की गम्भीरता को समझना सरल हो जाता है। जिस प्रकार तार के टूटने पर विद्युत्-प्रवाह रुक जाता है और सुधार अथवा मरम्मत किये बिना उसे पूर्वस्थिति में लाना सम्भव नहीं होता, ठीक इसी प्रकार रेखा अथवा रेखाओं में अन्तराल आ जाने पर विद्युत्-धारा वहीं रुक जाती है और यदि समय पर उपयुक्त उपचार नहीं किया जाता, तो वह धारा अनियमित माध्यमों से होकर बाहर निकलने लगती है या फिर तटबन्धों को तोड़कर बहने वाली नदी के समान विनाश का दृश्य उपस्थित करने लगती है। हां, अन्तराल को पाट दिये जाने पर नियमित यात्रा यथापूर्व चल पड़ती है। इस प्रकार रेखा का अन्तराल गम्भीर और विषम स्थिति का सूचक होता है, परन्तु स्थिर अथवा स्थायी कदापि नहीं होता। हां, स्थिति की गम्भीरता का परिमाण (न्यूनता-सामान्यता अथवा अधिकता) अन्तराल के विस्तार के अनुरूप ही होगा। अन्तराल की अधिकता का अर्थ है— दो टूटे सिरों का न जुड़ना और फिर विद्युत्-धारा का उनके बीच में से होकर आगे न बढ़ पाना। धारा के गमन-मार्ग को नियमित बनाये रखने की अथवा अन्तराल को पाटकर प्रवाह को अबाध बनाये रखने की स्थिति के सम्भव होने तक खण्डित रेखा के परिणामों पर अंकुश लाया जा सकता है। स्थिति तो केवल तब ही गम्भीर होती है, जब विद्युत्-धारा के मार्ग में आयी बाधा को दूर करना सम्भव ही नहीं हो पाता। वस्तुतः जब दो टूटे छोर एक-दूसरे को ढक देते हैं
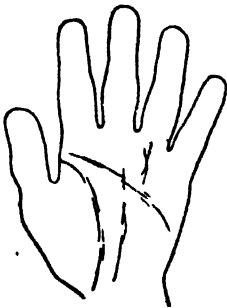
रेखाचित्र-5

या फिर कोई छोटी आड़ी-तिरछी रेखा दोनों रेखाओं के छोरों को जोड़ देती है या फिर उन छोरों (रेखा और अन्तराल) के साथ चलने वाली सहायक रेखाएं या वर्गचिह्न उन्हें जोड़ देते हैं, तो अन्तराल भर जाता है और टूटी रेखाएं सुधर जाती हैं (रेखाचित्र-5)।

रेखा के सिरों का टूटा होना और उन टूटे हुए सिरों से विद्युत्-प्रवाह का नियमित होना इस तथ्य का सूचक है कि व्यक्ति के जीवन में संकट अवश्य आया हुआ है, परन्तु वह स्थायी विकार कदापि नहीं; क्योंकि उपाय द्वारा उस पर विजय पाना सर्वथा सम्भव है। इस प्रकार अन्तराल को संकट का पक्का संकेत मानकर उसके आकार-प्रकार का, इनमें उपस्थित रहने वाले सुधार-चिह्नों का सूक्ष्म-गहन अध्ययन-विश्लेषण करने पर सही और प्रामाणिक परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।

टूटी रेखा का विकृततम रूप है—टूटी रेखा के छोर का अपने स्रोत की ओर मुड़ते हुए हुक अथवा कांटे का रूप धारण कर लेना (रेखाचित्र-6)। प्राचीन हस्तरेखा-शास्त्रियों ने अपने अनुभव के आधार पर तो इस स्थिति—जीवन रेखा का टूटना और उसका अंगूठे की ओर मुड़ना—को मृत्यु की पूर्वसूचना माना है; क्योंकि इस स्थिति में विद्युत्-धारा का प्रवाह आगे न बढ़ पाने के कारण पीछे की ओर लौटने लगता है, जिससे रेखा फैल जाती है और यह फैलाव किसी दरार अथवा फ़ासिले की अपेक्षा कहीं अधिक घातक होता है। विद्युत्-धारा को मूल-स्रोत तक ले जाने के किसी उपाय का न होना विषम आपत्ति को लाने वाला होता है।
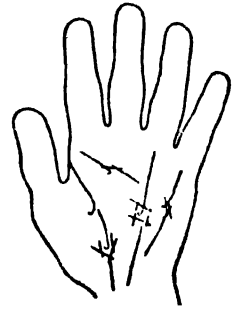
रेखाचित्र-6

कतिपय रेखाएं मुख्य रेखा के पीछे की ओर मुड़े छोर से या तो जुड़ जाती हैं, या फिर मुड़कर वर्गाकृति बना लेती हैं। इससे व्यक्ति का आधा संकट टल जाता है। मुड़कर वर्गाकृति बनाने वाली रेखाएं सहायक रेखाओं को, वर्गों को अथवा विद्युत्-धारा को अपनी ओर आकर्षित करने वाली होती हैं। संकट टलने का कारण यह होता है कि जुड़ने अथवा वर्गाकृति बनाने वाली रेखाएं मुख्य रेखा को वापस उसके नियमित मार्ग पर ले आती हैं। वस्तुतः पीछे मुड़ी हुई कोई भी रेखा व्यक्ति के जीवन, स्वास्थ्य और उसकी आजीविका में उपस्थित रुकावट की सूचना है। मुड़ी हुई रेखा से ही रुकावट की दिशा का ज्ञान हो जाता है (रेखाचित्र-6)। इस स्थिति में किसी प्रकार का सुधार न आना अथवा रेखा का विलुप्त हो जाना इससे भी अधिक भयंकर व घातक सिद्ध होता है। यदि रेखा अकस्मात् लुप्त हो जाती है, तो विद्युत्-धारा को
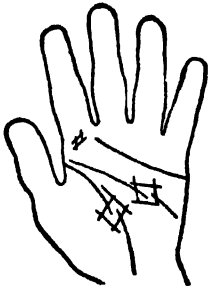
रेखाचित्र-7

नये मार्गों से प्रवाहित किया जा सकता है और इस प्रकार वह धारा अपने लिए नया मार्ग बना लेती है, परन्तु रेखा के अपने स्रोत की ओर लौटने पर तो उसके अपनी नियत दिशा की ओर बढ़ने की सम्भावना पूर्णतः समाप्त हो जाती है। वर्गाकार चिह्न को सुधार का निश्चित तथा सर्वोत्तम लक्षण समझा जाता है (रेखाचित्र-7)।

अनुभवी हस्तरेखाशास्त्री इस वर्गाकार चिह्न को किसी आसान संकट से रक्षा का सूचक, अतः शुभ एवं अतिविशिष्ट संकेत मानते हैं। अनुभव से पाया गया है कि रेखा में कैसा भी अन्तराल क्यों न हो, व्यक्ति के लिए कैसे (भयंकर) संकट का संकेत क्यों न हो, यह वर्गाकार चिह्न अन्तराल को ढंक लेगा, रेखा को सुधार देगा और फलतः संकट का प्रथम तो पूर्ण निवारण कर देगा, नहीं तो संकट को घटा अवश्य ही देगा। वस्तुतः वर्गाकार चिह्न रेखा के अन्तराल-संकट-सूचक-स्थल को घेरकर एक ऐसा घेरा अथवा चौकोर कोठा बना देता है कि उसमें विद्युत्-धारा के प्रवाह को संयत-नियन्त्रित किया जा सकता है। इस प्रकार यह वर्गाकार चिह्न वर्ग के भीतर की सारी हलचल व अव्यवस्था को नियमित कर संकट के घातक प्रभाव को रोक देता है।

किसी पर्वत पर वर्गाकार चिह्न के मिलने से व्यक्ति पर सम्बद्ध पर्वत के दोषों के प्रभावी न होने का संकेत मिलता है। रेखाएं विद्युत्-धारा के प्रवाह को कितने सुचारु रूप से ले जाती हैं—हस्तरेखाशास्त्री के लिए इस तथ्य की जानकारी का रखना भी आवश्यक होता है। जीवनधारा के निर्बाध सञ्चरण से व्यक्ति के जीवन में कोई संकट नहीं आता। जीवनधारा के प्रवाह के बाधित होने पर वर्गचिह्न का उभार व्यक्ति में आत्मचेतना और अन्तःप्रेरणा को जगाकर उसे संकट का सामना करने की विलक्षण शक्ति प्रदान करता है। वर्गचिह्न द्वारा दूषित स्थान को अपने घेरे में ले लेने पर विद्युत्-धारा का प्रवाह घूम जाता है, जिससे विराम अथवा क्षणिक अवरोध (रुककर प्रवाहित होना) आ जाता है। यह स्थिति निर्बाध प्रवाह-जैसी नहीं, परन्तु यह वह स्थिति है, जब व्यक्ति को विश्लेषण और चिन्तन-मनन का अवसर सुलभ होता है। यहीं पर व्यक्ति जीवनधारा के नियमित मार्ग की जानकारी पाने के लिए विश्लेषण करता है। निष्कर्षतः वर्गचिह्न व्यक्ति को आसन्न संकट को सहने में समर्थ बनाने वाला, जीवनधारा को यति (विराम) न देकर उसे घुमाकर प्रवाहित करने के रूप में उसके वेग को रुकने न देने वाला होने से निश्चित रूप से महत्त्वपूर्ण है। अनेक हाथों के परीक्षण से इस तथ्य की पुष्टि हुई है।

रेखाओं के अन्त में गोपुच्छ अथवा झब्बा अथवा फुंदने-जैसे कुछ चिह्न भी मिलते हैं, जिन्हें सामान्य सिद्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में समझना कठिन नहीं होता (रेखाचित्र-8)। किसी रेखा का विलोप व्यक्ति के विशिष्ट गुणों के अन्त का सूचक होता है। व्यक्ति पर इसके प्रभाव को आंकने के लिए निम्नोक्त तथ्यों पर विचार करना चाहिए।
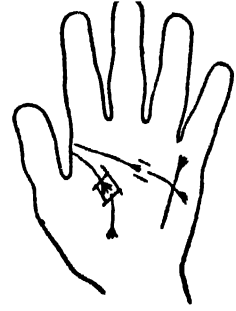
रेखाचित्र-8

कुछ रेखाएं त्वचा की कोशिकाओं पर अवस्थित रेखाओं तक जाती हैं और फिर धीमी गति से विलीन हो जाती हैं। कभी-कभी कोई रेखा सहसा विलीन हो जाती है और कभी-कभी किसी रेखा के समाप्ति-काल में गुणनचिह्न, नक्षत्र, बिन्दु अथवा द्वीप का आकार उभर आता है, जो गोपुच्छ और फुंदने-जैसा होता है। सम्बद्ध व्यक्ति की शक्ति के नष्ट होने के अथवा उसकी शक्ति में अत्यधिक विस्तार होने के सूचक ये फुंदने दोनों—छोटी जीवन रेखा तथा मस्तक अथवा हृदय रेखा—रेखाओं के अन्त में दृष्टिगोचर होते हैं। यह विद्युत्-धारा की शक्ति के टूटने के फलस्वरूप उसके बिखराव का संकेत होता है। हां, किसी रेखा की समाप्ति पर टूटन का सूचक दो रेखाओं वाला कांटा अथवा गोपुच्छ फुंदने-जैसा अशुभ नहीं माना जाता। वस्तुत: ऐसी टूटन एक द्वीप बन सकता है और रेखा को स्थिर बनाये रख सकता है, परन्तु अनेक रेखाओं से बनने वाला फुंदना विद्युत्-धारा के बहुत बड़े भाग के बिखराव का संकेत होता है और यह एक ऐसी स्थिति होती है जब धारा के बिखराव को रोकना तथा उसे शक्तिशाली रेखा में समेटना सम्भव नहीं होता। हां, यदि फुंदने का उभार रेखा के अन्त में नहीं, अपितु प्रारम्भ में बनता है, तो फिर इस फुंदन के पश्चात् आगे बढ़ती मात्र एक सूक्ष्म रेखा दिखाई देती है। कभी-कभी तो वर्ग में घिरा फुंदना सुरक्षित भी दिखाई पड़ जाता है।

फुंदना प्रत्येक रूप और स्थिति में एक दोष ही है। इस दोष पर कभी-कभी क़ाबू पाना सम्भव तो हो जाता है, परन्तु जाते-जाते भी यह अपना रंग दिखा ही जाता है। वैसे तो फुंदना रेखा की उपयोगिता के समाप्त होने का सूचक है, परन्तु फिर भी यह और अधिक विषम व गम्भीर दोष भी उत्पन्न कर सकता है, जिसके सुधार की सम्भावना का और परिणाम का अनुमान जीवनधारा को देखकर ही लगाया जा सकता है।

सामान्यत: कम पाया जाने वाला बिन्दु का चिह्न भी उपेक्षा का विषय नहीं (रेखाचित्र-9)। रेखाओं पर अथवा रेखाओं से अलग छोटे अथवा पेंसिल की नोक जितने बड़े धब्बों को अशुभ ही समझना चाहिए; क्योंकि ये विद्युत्-धारा के प्रवाह में बाधक होते हैं। बड़े आकार का धब्बा तो गहरा छेद बनाने के रूप में रेखा को नष्ट

रेखाचित्र-9

कर देता है और विद्युत्-धारा के प्रवाह में बाधा बन जाता है। हां, किसी गम्भीर रोग के उपरान्त दृष्टिगोचर होने वाले बहुत छोटे धब्बे अवश्य विशेष चिन्ताजनक नहीं होते। जीवन रेखा पर स्थित धब्बों से व्यक्ति को गम्भीर रूप में आन्त्र ज्वर से ग्रस्त होना समझना चाहिए। ऐसे धब्बे मूक-बधिर लोगों के हाथों में शनि पर्वत के नीचे, मस्तक रेखा पर व हृदय रोगियों के हाथों में सूर्य पर्वत के नीचे बुध रेखा पर देखे जाते हैं। हाथ के अन्य भागों में भी ऐसे धब्बों का दीखना किसी रोग अथवा समस्या का सूचक होता है।
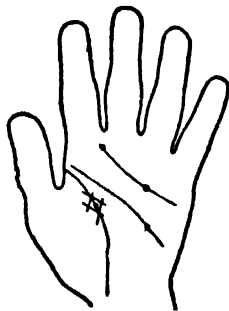
इन धब्बों अथवा बिन्दुओं का रंग नीला, सफ़ेद, लाल अथवा पीला हो सकता है। रंग की भिन्नता धब्बों के स्थल अथवा रेखा से जुड़ी समस्या की भिन्नता की सूचक होती है। हां, एक अच्छा एवं वर्गाकार चिह्न स्थिति में सुधार ला सकता है।

रेखाचित्र-10
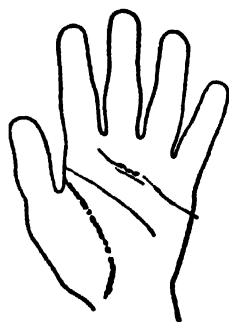
अनेक कड़ियों के एक-दूसरे से जुड़ने से बनने वाली रेखा 'शृंखलाकार रेखा' कहलाती है, जो न स्पष्ट होती है, न ही गहरी और न ही समतल होती है (रेखाचित्र-10)। साथ ही यह प्रारम्भ से बाधाओं की निरन्तर चलने वाली शृंखला का तथा सम्बद्ध रेखा की कार्यशक्ति के क्षीण हो जाने का संकेत देती है। मस्तक रेखा का शृंखलाकार होना व्यक्ति की मानसिकता के अस्त-व्यस्त होने, मस्तिष्क में विकार आ जाने, पीड़ा उत्पन्न होने तथा व्यक्ति में आत्मसंयम के चुक जाने-जैसे दोषों का संकेत होता है। रेखा के आंशिक रूप से शृंखलाकार होने पर व्यक्ति का चिन्तन आदि शृंखलित अंश की सीमा तक प्रभावित—क्षीण एवं शक्तिहीन—होता है। यह तो निश्चित है कि ये शृंखलाएं विद्युत्-धारा के सन्तुलित-स्वच्छन्द प्रवाह में बाधा उत्पन्न करती हैं। यही कारण है कि शृंखलाकार रेखा को सदैव गम्भीर दोषों की एक जननी के रूप में देखा जाता है। वर्गाकार चिह्न भी अपनी सीमा में बंधे होने के कारण शृंखलाबद्ध रेखा को अपनी परिधि में नहीं समेट पाते। केवल सहायक रेखा अथवा रेखाएं शृंखलाबद्ध रेखाओं में सुधार ला सकती हैं, अन्य कोई उपाय नहीं। शृंखलाकार रेखा स्नायविक रेखाओं, अधूरी हृदय रेखाओं और कभी-कभी मस्तक रेखाओं पर तो मिलती है, परन्तु अन्य मुख्य, गौण अथवा आकस्मिक रेखाओं पर नहीं पायी जाती।

शृंखलाकार रेखा को देखकर भविष्यकथन करते हुए हस्तरेखाशास्त्री को यह

कदापि नहीं भूलना चाहिए कि इस भाग में विद्युत्-धारा का प्रवाह क्षीण और दुर्बल हो जाता है। सहायक रेखाओं द्वारा इस स्थिति में कुछ सुधार हुआ है अथवा नहीं ? यदि हुआ है, तो किस रूप में और किस स्तर तक। इस तथ्य की उपेक्षा कदापि नहीं करनी चाहिए।

त्रिकोण अकेला पाया जाने वाला चिह्न होता है (रेखाचित्र-11), जो रेखा के मार्ग में दिखाई देता है। यहां देखना यह होता है कि द्वीप ही की तरह यह कहीं रेखा के टूटने से तो नहीं बना अथवा रेखा के ऊपर बना अपने आप में अलग चिह्न तो नहीं। कभी-कभी मुख्य रेखाओं के एक-दूसरे को काटने से भी त्रिकोण बन तो जाते हैं, परन्तु इनमें अकेले त्रिकोणों में पायी जाने वाली शक्ति नहीं होती। मुख्य अथवा गौण रेखा से न बनकर तीन रेखाओं के संयत मिलान से बनने वाला और स्पष्ट नोक लिये रहने वाला त्रिकोण अपने से सम्बन्ध रखने वाली रेखा, पर्वत अथवा अंगुली के मानसिक गुणों को उजागर करता है। बृहस्पति पर्वत पर दिखाई देने वाला त्रिकोण का चिह्न बृहस्पति के मानसिक गुणों को तथा ऊंची महत्त्वाकांक्षाओं को प्रकट करता है और इसी प्रकार चन्द्र पर्वत पर दृष्टिगोचर होने वाला त्रिकोण व्यक्ति की प्रखर कल्पनाशीलता को अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार यह चिह्न मानसिक गुणों की प्रखरता का संकेत है। इस चिह्न का स्वास्थ्य से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है।
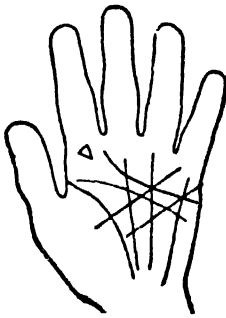
रेखाचित्र-11
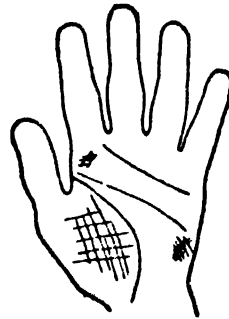
रेखाचित्र-12

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि आकस्मिक रेखाओं के एक-दूसरे को काटने से बनने वाला त्रिकोण अकेले चिह्न के समान शक्तिशाली तो नहीं होता, पुनरपि यह व्यक्ति के गुणों को अधिक प्रभावशाली अवश्य बनाता है। त्रिकोण सदैव अपने पर्वत के उच्चलोक पर ही बनाता है। यहां यह स्पष्ट कर देना अनुचित न होगा कि हमारा उद्देश्य यहां विभिन्न चिह्नों को पर्वतों, अंगुलियों तथा अलग-अलग पर्वों पर लागू

करके किसी परिणाम अथवा निष्कर्ष पर पहुंचना नहीं है, इसकी चर्चा तो हम अगले अध्याय में करेंगे। यहां तो हम अपने को केवल चिह्नों के नियन्त्रक सामान्य नियमों के उल्लेख तक ही सीमित रख रहे हैं।

एकल त्रिकोण का चिह्न सर्वाधिक शक्तिशाली होने से शुभ माना जाता है। स्वास्थ्य से इसका कुछ लेना-देना नहीं होता। यह तो अपने से सम्बन्ध रखने वाले स्थान के प्रबल मानसिक पक्ष को और अधिक प्रबल बनाता है।

रेखाओं द्वारा एक-दूसरे को काटने से बनने वाला जाल विद्युत्-धारा के प्रवाह में बाधक होता है। उदाहरणार्थ, विद्युत्-धारा के तारों के सूक्ष्म जाल का रूप ले लेने पर विद्युत्-धारा का प्रवाह एक तो बंट जाता है और दूसरे, उसका मार्ग इस प्रकार बाधित हो जाता है कि वह सही दिशा में बढ़ ही नहीं पाता। वह प्रवाह तार के छोरों को फाड़कर बाहर निकलने को विवश हो जाता है। फलत: धारा बिखर जाती है और बिखराव-स्थल प्रचण्ड रूप से विद्युत्-मय हो जाता है। हाथ में गहरी रेखाओं के साथ-साथ जाल की आकृति का होना विद्युत्-धारा के प्रवाह की अधिकता के साथ-साथ भारी रुकावट का स्पष्ट संकेत है। इस प्रकार जाल को एक गम्भीर एवं ख़तरनाक दोष ही समझना चाहिए। गहरी लाल रेखाओं से बना जाल तो किसी भयंकर आपत्ति के आने का सूचक होता है। हां, कुछ छोटी-छोटी और पतली रेखाओं से बना जाल अवश्य सामान्य होता है। वह ख़तरे के स्तर तक गम्भीर नहीं होता। पर्वतों पर स्थित जाल को भी अशुभ संकेत समझना चाहिए। इससे व्यक्ति के स्वास्थ्य में गड़बड़ी का आभास मिलता है। किसी पर्वत पर जाल की आकृति के दिखने पर सर्वप्रथम यह निश्चित करना चाहिए कि यह जाल पर्वत प्रकार का विकृत रूप है अथवा व्यक्ति का स्वास्थ्य पर्वत-प्रकार की विकृति का शिकार है। जाल को घेरने वाले वर्गचिह्न भले ही थोड़े हैं और यह जाल भले ही वर्गचिह्न (शुभ माना जाने वाला) से घिरा होता है, फिर भी इस जाल के संकट से पूर्णत: मुक्त होना सम्भव नहीं हो पाता। जाल की सबलता-दुर्बलता की पहचान रेखाओं के गहरी अथवा सतही अथवा अन्य रेखाओं के समान होने से की जाती है। गहरी-लाल रेखाओं से बना शक्तिशाली जाल अपने दुष्प्रभाव को पूर्ण स्पष्टता से उजागर करता है। इसके विपरीत अन्य रेखाओं की तुलना में जाल बनाने वाली रेखाओं के कम गहरी होने पर बनने वाला अथवा बना जाल कम ख़तरनाक होता है। इसी प्रकार खड़ी रेखाओं द्वारा सपाट रेखाओं को काटकर बना जाल भी कम अशुभ होता है; क्योंकि खड़ी रेखाओं द्वारा सपाट रेखाओं को काटने पर बने जाल से जीवनधारा का प्रवाहित होना सम्भव होता है, जबकि गहरी कटी आड़ी-तिरछी रेखाएं जीवनधारा के प्रवाह को पूरे तौर पर रोक लेती हैं। जाल की रेखाओं का पूर्णत: खड़ा अथवा सपाट न होना जहां जाल से होने वाले ख़तरे को कम कर देता

है, वहां खड़ी-सपाट रेखाओं से बना जाल निश्चित रूप से बहुत ही ख़तरनाक होता है। इस प्रकार जाल के आधार पर किसी प्रकार की भविष्यवाणी करने से पूर्व जांच के स्वरूप, प्रकार और प्रत्येक की पृथक्-पृथक् शक्ति का परीक्षण-आकलन करना चाहिए। ऐसा करने पर ही भविष्यकथन निर्भ्रान्त हो सकता है।

जाल के अत्यन्त समीप आ जुटने वाली तिरछी (सपाट) रेखाएं जाल से तथा जाल को अस्तित्व में लाने वाली रेखाओं से कहीं अधिक अशुभ एवं ख़तरनाक होती हैं; क्योंकि इनके कारण विद्युत्-धारा केवल आस-पास के भागों के ऊपर से बह जाती है, शेष स्थानों पर पूर्णत: अवरुद्ध हो जाती है; क्योंकि उसके प्रवाह को कोई मार्ग मिल ही नहीं पाता। अलग-अलग मिलने वाले चिह्नों को ही 'तिरछी रेखाओं का समूह' मान लिया गया है। कभी-कभार दिखाई देने वाली ये तिरछी रेखाएं पर्वत प्रकार के अशुभ पक्ष—स्वास्थ्य-विकार तथा चरित्र-भ्रष्टता आदि—की सूचक होती हैं (रेखाचित्र-13)। इस चिह्न के दिखते ही तिरछी रेखाओं की गहराई, शक्ति तथा अन्य रेखाओं से भिन्नता आदि पर विचार करना अपेक्षित होता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि अत्यधिक गहरी-गाढ़ी रेखाओं का प्रभाव अधिक गम्भीर तथा सतही-हलकी रेखाओं का प्रभाव कम गम्भीर होता है। गम्भीरता की न्यूनता-अधिकता का कारण विद्युत्-धारा के प्रवाह का बाधित-अबाधित होना है।
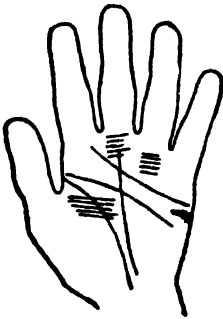
रेखाचित्र-13
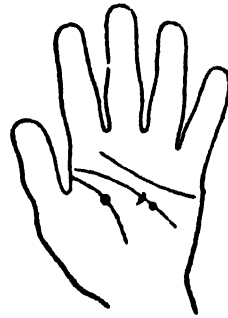
रेखाचित्र-14

जीवन रेखा पर अथवा सूर्य पर्वत के ऊपर-नीचे मस्तक रेखा पर दीखने वाला वृत्त एक महत्त्वपूर्ण, असाधारण और दुर्लभ चिह्न माना जाता है (रेखाचित्र-14)। सूर्य से सम्बन्धित यह चिह्न नेत्र रोग का संकेत है। परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है। नेत्रशक्ति की दुर्बलता का सूचक यह संकेत सभी नेत्रहीनों अथवा क्षीण दृष्टिवालों के हाथों में नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त यह चिह्न प्राय: स्पष्ट भी नहीं होता। यह वृत्त अपूर्ण अथवा त्रुटिपूर्ण स्थिति में अपने कोणों को सिकोड़ लेता है और फिर जिस

क्रम में दृष्टि मन्द होती जाती है, इसका स्वरूप स्पष्ट और उजागर होता जाता है।

त्रिशूल का चिह्न रेखा के ऊपरी सिरे पर रहता है (रेखाचित्र-15), परन्तु यह विरलता से मिलता है। कभी यह शनि, तो कभी सूर्य और कभी बुध रेखा के ऊपर से गुज़रती किसी आकस्मिक रेखा के साथ जुड़ा होता है। इसके रेखा के ऊपरी सिरे पर होने से विद्युत्-धारा को उचित मार्गों से प्रवाहित होने के अवसर सुलभ हो जाते हैं, इससे यह स्थिति शुभ संकेत मानी जाती है। यदा-कदा विरलता से मिलने वाला और शुभ माना जाने वाला त्रिकोण का चिह्न सूर्य रेखा को शक्ति देता है, व्यक्ति को कुशाग्र बुद्धि और सफलता प्राप्त करने वाला बनाता है। यह चिह्न पूर्ण स्पष्ट होने पर 'त्रिशूल' की आकृति ग्रहण कर लेता है।
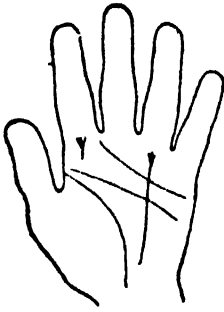
रेखाचित्र-15
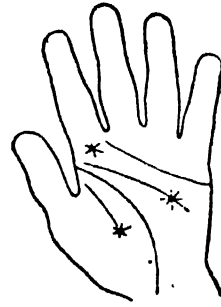
रेखाचित्र-16

अनेक हाथों में मिलने वाला नक्षत्र एक ओर असामान्य एवं महत्त्वपूर्ण चिह्न है (रेखाचित्र-16)। इसका अच्छा-बुरा होना इसके स्थान पर निर्भर करता है। वस्तुत: जिस प्रकार विद्युत्-धारा विद्युत्-प्रकाश को जन्म देती है, ठीक उसी प्रकार जीवनधारा प्रकाश-स्थलों को जन्म देती है। नक्षत्र हस्तरेखाशास्त्र का एक प्रकार से विद्युत्-प्रकाश है। रेखाओं के साथ प्रवहमान जीवनधारा किसी भी समय प्रकाश-किरण बनकर अपने चारों ओर के क्षेत्र को प्रकाशित कर सकती है। जीवनधारा इसी नक्षत्रचिह्न से अपने सामान्य केन्द्र से प्रकाश-बिन्दुओं का सञ्चार करती है। छोटा अथवा अनुपात में विषम नक्षत्र 'प्रकाश' और बड़ा नक्षत्र 'विस्फोट' कहलाता है, परन्तु यह सदैव प्रकाश को फैलाने-बढ़ाने वाला होता है। नक्षत्र सम्बन्धी भविष्य-कथन के लिए नक्षत्र के स्वरूप, आकार, रेखाओं का स्थान तथा गहरापन शेष रेखाओं के अनुपात में उनका बड़ा-छोटा होना आदि पर ध्यान देना चाहिए। एक-समान लम्बी प्रत्येक किरण रखने वाले तथा किसी भी रेखा अथवा पर्वत को समान रूप से प्रकाशित करने वाले नक्षत्र पूर्ण होते हैं और इसीलिए उत्कृष्ट समझे जाते हैं।

अपूर्ण और असंकेन्द्रित नक्षत्र दोषपूर्ण कहलाते हैं। इनमें जाल के दोष आ जाते हैं और फिर उनकी किरणों से प्रकट होने वाला प्रकाश क्षीण-धुंधला पड़ जाता है। स्पष्ट है कि क्षीण प्रकाश वाला, अपूर्ण एवं दोषग्रस्त नक्षत्र तीव्र प्रकाश वाले पूर्ण तथा उत्कृष्ट नक्षत्र की समता नहीं कर सकता। विशाल आकार, गहरी लाल रेखाओं और केन्द्र-स्थल पर एक गहरे बिन्दु को लिये रहने वाला नक्षत्र विस्फोटक होता है। यह विस्फोट किसी बायलर के फटने पर होने वाले धमाके-जैसा ही होता है। जीवन रेखा पर इसका दीखना मृत्युसूचक होने से अशुभ समझा जाता है। मस्तक रेखा पर भी इसका होना अच्छा नहीं माना जाता; क्योंकि यह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों में विस्फोट होने, अर्थात् व्यक्ति में पागलपन के सञ्चार होने का सूचक है। असल बात तो यह है कि इस नक्षत्र का किसी भी स्थान पर सामान्य से अधिक बड़ा, अधिक गहरा तथा आकार-प्रकार में अधिक विशाल होना संकट का संकेत ही होता है। इस नक्षत्र के प्रभाव की जानकारी के लिए पहले यह देखना होता है कि यह किस स्थान पर स्थित है, फिर यह देखना चाहिए कि विद्युत्-धारा के प्रवाह में यह किस स्तर तक बाधक है और फिर अन्त में यह देखना चाहिए कि उसकी बनावट विस्फोटात्मक है अथवा प्रकाशात्मक। इन्हीं तीन तथ्यों—जिनका सम्बन्ध स्थान से है—के सन्दर्भ में ही व्यक्ति पर इसके प्रभाव के सम्बन्ध में भविष्यकथन किया जा सकता है। जहां इसका प्रकाशक रूप व्यक्ति को बौद्धिक उत्कर्ष के शिखर पर पहुंचाता है, वहां इसका विस्फोटक रूप उसके सर्वस्व का हरण कर लेता है। अत: सर्वप्रथम तो नक्षत्र की सही पहचान करनी चाहिए, फिर उसके स्थान के सन्दर्भ में उसकी तेजस्विता अथवा विस्फोटात्मकता के अन्तर को समझना चाहिए—यही इसके अध्ययन एवं विश्लेषण का सरल और सीधा उपाय है। इस चिह्न का महत्त्व इसी एक तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि यह इतनी अधिक बार दीखता है कि इसके आधार पर भविष्यकथन सम्भव हो पाता है। विभिन्न रेखाओं और पर्वतों के सन्दर्भ में इस नक्षत्र से जुड़े सिद्धान्त की चर्चा आगे चलकर ही की जायेगी। यहां तो केवल इतना समझना चाहिए कि नक्षत्रचिह्न का शुभ रूप—प्रकाश देने वाला एवं चमकीला विद्युत्-प्रकाश जहां व्यक्ति को विशिष्ट प्रतिभाशाली बना देता है, वहां इसका अशुभ रूप—गहरा, लाल एवं विस्फोटक—व्यक्ति को इस प्रकार क्षति पहुंचाता है कि उसकी पूर्ति हो ही नहीं पाती।

एक अन्य सामान्य चिह्न है—गुणन अथवा क्रास। यह चिह्न कभी अकेला होता है, तो रेखाओं के आपसी कटाव का परिणाम होता है। इसलिए सर्वप्रथम एक-दूसरे को काटती रेखाओं के अनुपात पर दृष्टिपात करना उपयुक्त होता है। यह चिह्न भी दोष-रूप है, जो व्यक्ति के स्वास्थ्य में विकृति अथवा उसके जीवन-क्रम में परिवर्तन लाता है (रेखाचित्र-17)। रेखा के सहारे बहती जीवनधारा ज्यों ही

गुणनचिह्न के पास पहुंचती है, त्यों ही फ्यूज़ उड़ जाता है और फिर सञ्चरण के व्यवस्थित होने तक प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है। दोबारा फ्यूज़ लगाने का कार्य व्यक्ति की जीवन-दिशा में बदलाव का सूचक होता है। इस प्रकार किसी भी स्थान पर स्थित गुणनचिह्न को दोष-रूप और अशुभ ही समझना चाहिए।
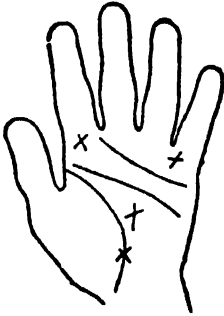
रेखाचित्र-17
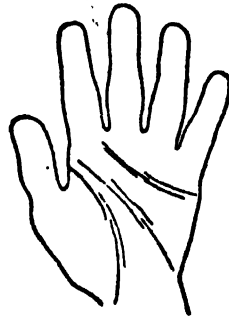
रेखाचित्र-18

सहायक रेखाएं अशक्त रेखाओं को सशक्त बनाने तथा खण्डित रेखाओं को जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं (रेखाचित्र-18)। अत: किसी रेखा को दुर्बल अथवा दोषपूर्ण देखकर यह पता लगाना चाहिए कि उसे शक्ति देने वाली अथवा उसमें सुधार लाने वाली कोई सहायक रेखा उसके साथ चल रही है अथवा नहीं? यदि चल रही है, तो यह समझ लेना चाहिए कि सहायक रेखा के योग से अशक्त रेखा पूर्ण शक्ति-सम्पन्न रेखा-जैसी बन जाती है। सशक्त रेखाओं को तो सहायक रेखाएं और अधिक उत्कृष्ट बना देती हैं। इस प्रकार सहायक रेखाएं सभी दूसरी रेखाओं के लिए लाभप्रद होने से वरदान-रूप हैं।

रेखाओं और चिह्नों का यह अध्ययन—गुण-दोषों का विवेचन—रेखाओं और चिह्नों के पृथक्-पृथक् रूप को अथवा इनके संयोजन को समझने में आधार का कार्य देगा—ऐसा हमारा विश्वास है। हमने रेखाओं और चिह्नों के परिवर्तनों, दोषों और निर्माण-प्रक्रिया आदि को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। हमने यह विस्तार से बताया है कि अलग-अलग चिह्न किस प्रकार और कैसे अस्तित्व में आते हैं। यह सब जीवनधारा के सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में ही किया गया है। जीवनधारा के सिद्धान्त को विभिन्न रेखाओं के सन्दर्भ में रखकर चमत्कृत करने वाले परिणाम पाये जा सकते हैं, जिससे अनेक रहस्यों का उद्घाटन हो जाता है। विद्युत्-धारा के इसी सिद्धान्त के आधार पर रेखाओं के सम्भव-असम्भव एवं व्यावहारिक-अव्यावहारिक संयोजनों और प्रभावों आदि पर विचार प्रस्तुत किया जायेगा।

*

4

व्यक्ति की आयु

व्यक्ति के हाथ पर तथा हाथ पर बनी रेखाओं पर ऐसा कोई चिह्न नहीं होता, जिससे कि व्यक्ति की वर्तमान आयु की सही गणना की जा सके, फिर भी हाथ अथवा रेखाओं के रूप-रंग तथा त्वचा के आकार-प्रकार के आधार पर व्यक्ति की आयु का लगभग सही अनुमान लगाना सम्भव होता है। युवा पुरुष की त्वचा सुन्दर, लचीली, अच्छी रंगत वाली तथा शक्ति और ऊर्जा का भण्डार होती है। आयु की वृद्धि के अनुपात में त्वचा की लाली घटने लगती है और उसका स्थान साटन-जैसी चमक ले लेती है। समय बीतने तथा आयु बढ़ने पर वह चमक भी धुंधली पड़ते-पड़ते भूरी हो जाती है। पचास वर्ष से छोटी आयु वाले व्यक्ति की त्वचा का रंग लाल, पचास और उससे ऊपर की आयु वाले व्यक्ति की त्वचा का रग साटन-जैसा चिकना-चमकीला, तो बढ़ती आयु वालों की त्वचा का रंग भूरा-फीका होता है। युवा, अधेड़ और वृद्ध व्यक्तियों के हाथों को उनके आकार और रूप-रंग के आधार पर पहचानना तो कोई कठिन कार्य नहीं होता, परन्तु हाथों के आधार पर पच्चीस और पचास वर्ष की मध्य आयु को समझ पाना और विभिन्न आयु-स्तरों में अन्तर कर पाना सम्भव नहीं होता। हां, त्वचा के आकार-प्रकार, रूप-रंग, चमक-दमक तथा खिंचाव-सिकुड़ाव आदि पर गहराई से विचार करने पर आयु के अन्तर को पहचाना जा सकता है। इसमें निपुणता के लिए निरन्तर अभ्यास अपेक्षित होता है।

हाथ के परीक्षण के समय तक व्यक्ति के जीवन में घट चुकी और घटने वाली घटनाओं को सही तौर पर जानने के लिए वर्तमान आ[illegible]गणन में हस्तरेखाशास्त्री का कुशल होना आवश्यक है। जब तक हस्तरेखाशास्त्री इस क्षेत्र में निपुणता प्राप्त नहीं कर पाता, तब तक व्यक्ति से उसकी आयु पूछकर और उसके उत्तर को आधार बनाकर अनुमान से काम चलाना होगा। यहां यह उल्लेखनीय है कि सभी व्यक्तियों को अपनी आयु की सही जानकारी होती नहीं अथवा वे देते नहीं, फिर भी उनके द्वारा दी गयी जानकारी सही आयु के आस-पास अवश्य ले जाती है। इस आधे-अधूरे सत्य अथवा अनुमान की पुष्टि के लिए त्वचा के रूप-रंग, आकार-प्रकार तथा संगति आदि का परीक्षण करना चाहिए।

हस्तपरीक्षण के आधार पर आयु-गणना का एक सुलभ उपाय—व्यक्ति की जीवन रेखा को ऊपर से नीचे की ओर बार-बार दबाना है। ऐसा करने से रक्तप्रवाह की लाली में क्षण-भर के लिए एक सफ़ेद बिन्दु-जैसा कुछ उभर आता है। यह उभार सही आयु के निर्देशक स्थल पर होता है, परन्तु इस प्रयोग के निर्भ्रान्त परिणाम के लिए दो तत्त्वों—कमरे के तापमान का और सम्बद्ध व्यक्ति के स्वास्थ्य का सही होना—पर ध्यान देना आवश्यक होता है। इन दोनों तत्त्वों की विपरीतता में परिणाम की भिन्नता का आ जाना स्वाभाविक है। यही कारण है कि इस उपाय को आयु की सही जानकारी का विश्वसनीय उपाय तो नहीं माना जाता, परन्तु फिर भी इसका उपयोग निरन्तर किया जाता है। इस उपाय का निर्भ्रान्त बन पाना हस्तरेखाशास्त्र के लिए एक उपलब्धि होगी।

"हाथ की रेखाओं से जीवन की सही दिशाओं की जानकारी मिलती है"—इस सिद्धान्त के सन्दर्भ में रेखाओं के विभिन्न अंश जीवन के विभिन्न भागों का संकेत देते हैं। रेखा का प्रारम्भिक स्थान व्यक्ति के जीवन के प्रारम्भिक वर्षों का हिसाब-किताब रखता है और फिर रेखा के अगले स्थानों में परवर्ती वर्षों का लेखा-जोखा जुड़ता चला जाता है। इस प्रकार रेखाओं का आरम्भिक-स्थल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है, जिसकी जानकारी का होना आवश्यक है।

हस्तरेखाशास्त्री अपने गहन चिन्तन, सूक्ष्म दृष्टि, सही परख और लम्बे अनुभव के आधार पर ही व्यक्ति की आयु के विभिन्न वर्षों में घटी घटनाओं के समय की सही जानकारी करा सकते हैं। कुछ विद्वान् एक वर्ष के भीतर घटी अथवा घटने वाली घटना के सम्बन्ध में सही जानकारी दे सकते हैं, किन्तु ऐसे कुशल महानुभावों की संख्या नगण्य है। वास्तव में यह एक निश्चित सत्य है कि हस्तरेखाशास्त्र के नियमों की शुद्धता के प्रति आस्थावान् हस्तरेखाशास्त्री भी घटित अथवा घटने वाली घटना का अधिक-से-अधिक वर्ष बता सकता है, मास तथा दिन बताना तो सर्वथा असम्भव ही है। इसी प्रकार हाथ को देखकर किसी व्यक्ति का नाम अथवा नाम के प्रथम अक्षर अथवा हस्ताक्षर के संक्षिप्त रूप (इनीशल्स) को बताना भी सम्भव नहीं। आजकल इस सम्बन्ध में तमाशा चला हुआ है। हस्तरेखाशास्त्री होने का दम्भ भरने वाले कुछ धूर्त भोले-भाले लोगों को काग़ज़ पर गुप्त रूप से अपना नाम लिखने को कहते हैं और फिर वे अपनी गिद्ध दृष्टि से लिखित नाम बताकर इसे हस्तरेखाशास्त्र का चमत्कार कहते हैं, जिसके पीछे किसी प्रकार की कोई वैज्ञानिकता नहीं। इसी प्रकार हस्तरेखाओं के आधार पर किसी व्यक्ति के लिए किसी दिन का भाग्यशाली अथवा दुर्भाग्यपूर्ण बता सकना भी कदापि सम्भव नहीं। भविष्य की इस प्रकार की सुनिश्चित जानकारी दी ही नहीं जा सकती, परन्तु लोगों के भोलापन को क्या कहा जाये। वे तो ऐसी बातें सुनना चाहते हैं और ऐसी बातों पर सहज ही विश्वास भी कर

लेते हैं। लोग तो सपनों को भी भावी मंगल-अमंगल की पूर्व-सूचना मान लेते हैं। ऐसे लोगों को तो समझाया ही नहीं जा सकता, परन्तु सत्य यह है कि कोई भी हस्तरेखाशास्त्री बीती घटनाएं बता सकता है और व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव और स्वास्थ्य के आधार पर सही भविष्यकथन कर सकता है। व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव और स्वास्थ्य आदि की सही और पूरी जानकारी न रखने वाला हस्तरेखाविद् उसके भविष्यकथन के साथ न्याय नहीं कर पाता और अकुशल अथवा असफल माना जाता है।

दैनिक जीवन में घटित अथवा घटने वाली छोटी-मोटी घटनाओं के चिह्न हाथों में उभरते ही नहीं हैं। अत: इस प्रकार का कुछ बताने का दावा करना दूसरों को मूर्ख बनाने की चेष्टा के सिवा और कुछ नहीं। हाथ में जीवन का मानचित्र अवश्य बना होता है, परन्तु यह केवल महत्त्वपूर्ण घटनाओं, गम्भीर रोगों, भयंकर कष्टों, मन-मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ने वाली परिस्थितियों, जीवन में आये बिभिन्न परिवर्तनों, जीवन को नयी दिशा देने वाली कुछ अतिविशिष्ट दशाओं तथा जीवन को गहरे प्रभावित करने वाले व्यक्तियों की छाप लिये रहता है।

रेखाओं के आधार पर व्यक्ति की आयु की गणना करते समय सर्वप्रथम उसकी औसत आयु पर विचार करना चाहिए। किसी व्यक्ति की आयु के सौ वर्षों का अथवा उससे अधिक का होने के मानदण्ड निर्धारित करना सदैव ग़लत सिद्ध होता है; क्योंकि प्राय: लोग इतनी लम्बी आयु तक पहुंच ही नहीं पाते।

इस सम्बन्ध में बीमा कम्पनियों द्वारा बनायी गयी आयु-सीमा सम्बन्धी तालिकाओं का उपयोग करना चाहिए; क्योंकि ये तालिकाएं लम्बे अनुभव का परिणाम होने के कारण वास्तविकता के निकट और विश्वसनीय हैं।

इन कम्पनियों ने व्यक्ति की बीमा योग्य औसत आयु 65 वर्ष निर्धारित की है। यदि इसमें थोड़ी छूट ले लें, तो भी मनुष्य की अधिक-से-अधिक औसत आयु 70 वर्ष ही माननी चाहिए। इस प्रकार रेखा के प्रारम्भ से अन्त के स्थल को 1-70 में विभाजित करते हुए बीच के अन्तर को गणित के हिसाब से बांटकर जीवन के मध्यवर्ती वर्षों की सही जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

जीवन रेखा का बंटवारा बृहस्पति की अंगुली के नीचे रेखा के प्रारम्भिक स्थल से प्रारम्भ होकर मणिबन्ध पर समाप्त होता है (रेखाचित्र-19ए)। इन दोनों के मध्यवर्ती खण्डों में शेष वर्षों का लेखा-जोखा रहता है। रेखा के परीक्षण को सुविधाजनक और सरल बनाने की दृष्टि से रेखा को मध्यबिन्दु से काटते हुए केन्द्र-बिन्दु पर 36 वर्ष की आयु निर्धारित की गयी है, जो औसत 70 वर्ष की आयु से आधी के लगभग है। इस केन्द्र-बिन्दु के ऊपर के स्थान को प्रस्तुत रेखाचित्र में 4, 6, 12, 18, 24 तथा 30 वर्षों में और फिर केन्द्र-बिन्दु के पिछले भाग को 43, 51,
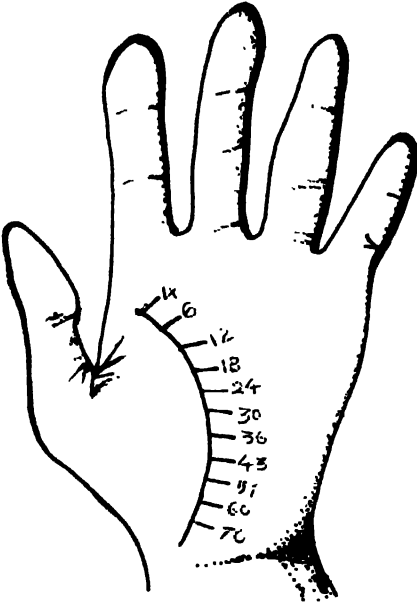
रेखाचित्र-19

60 और 70 वर्षों की आयु बनाने वाले खण्डों में विभाजित किया गया है। इस सीढ़ी पर पहुंचने के लिये 4-70 वर्षों की आयु के मध्य एक-एक वर्ष अवधि (समय-सीमा) का विभाजन किया गया है। थोड़े-से अभ्यास से ही रेखा पर 4, 6, 12, 18, 24, 30, 36, 43, 51, 60 और अन्त में 70 वर्ष की आयु को जाना जा सकता है। अभ्यास से कालावधि की जानकारी पूर्णत: सही और अतिशीघ्र सुलभ हो जायेगी।

हाथ में आयु के किसी चिह्न के दिखाई न देने पर रेखा को ही वर्षों में बांटकर पूर्वोक्त विधि से सही तिथि जाननी चाहिए। रेखा को पेंसिल आदि से चिह्नित किये बिना ही हाथ के लम्बे-छोटे आकार को ध्यान में रखकर लम्बाई के अनुपात में केन्द्र-बिन्दु पर 36 वर्ष की आयु मानकर मन में कई स्थान नियत कर लेने चाहिए। प्रत्येक 6 वर्ष की अवधि के लिए लम्बे हाथ में अधिक और छोटे हाथ में कम अन्तर होता है। जीवन रेखा का इस रूप में विभाजन अन्य सभी विभाजनों की अपेक्षा कहीं अधिक शुद्ध पाया गया है। हां, परिणाम की शुद्धता अवश्य हस्तरेखाशास्त्री की योग्यता पर निर्भर करती है, पुनरपि अभ्यास और परिश्रम से सही परिणाम प्राप्त कर पाना कठिन नहीं।

जीवन रेखा के चिह्नों के परिप्रेक्ष्य में हृदय रेखा और मस्तक रेखा पर चिह्नित घटनाओं की प्रासंगिकता के निर्णय के लिए कालावधि का उपयोग करना चाहिए। इन रेखाओं से कालावधि को जानने के लिए नियमों के अनुसरण के अतिरिक्त इन रेखाओं के लिए जीवन रेखा पर लागू होने वाली युक्तियों-टिप्पणियों की प्रासंगिकता को मान्य करना होगा। जीवन रेखा बृहस्पति की अंगुली के नीचे से प्रारम्भ होकर हाथ के एक सिरे से दूसरे सिरे पर जाती है। रेखाओं की भिन्न-भिन्न दिशा होने के कारण कालावधि की गणना के लिए किसी काल्पनिक रेखा को आधार बना लेना अनुपयुक्त नहीं। ऐसा मान लेना चाहिए कि वह काल्पनिक रेखा बृहस्पति पर्वत के मध्य से प्रारम्भ होकर हाथ के पार तक जाती है। हृदय रेखा अथवा मस्तक रेखा के परीक्षण के लिए इस काल्पनिक रेखा (रेखाचित्र-20) पर 6, 12, 18, 24, 30, 36,
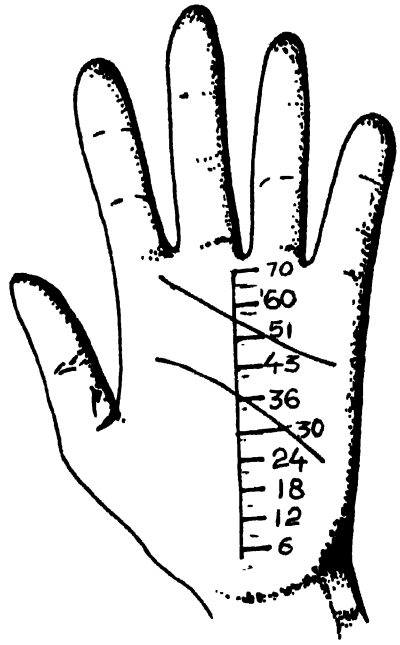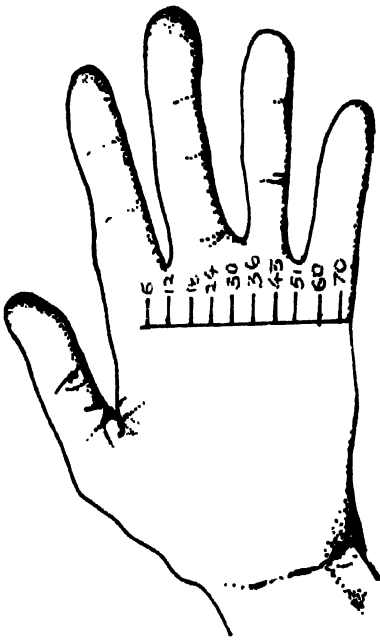
रेखाचित्र-20, 21, 22, 23
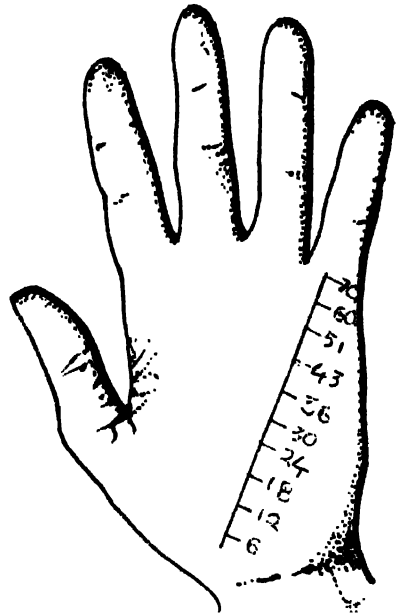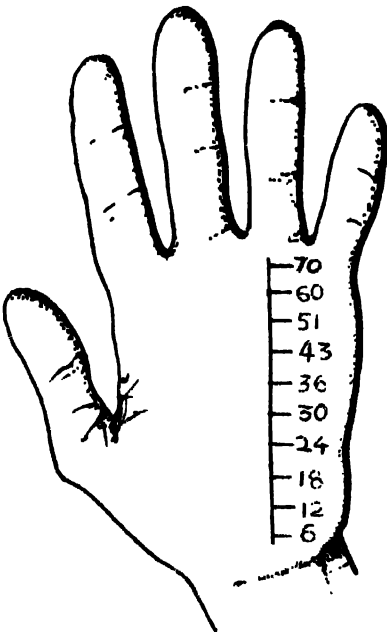
43, 51, 60 और 70 जैसी अवधियों को अंकित किया जाता है। अवधिसूचक इन खण्डों के अध्ययन पर आयु की गणना बिल्कुल सही निकलती है। इससे भी अधिक समीप की गणना के लिए हृदय अथवा मस्तक रेखाओं को एक वर्ष की सूचक कालावधियों में बांटना चाहिए। जीवन रेखा के सम्बन्ध में भी इसी प्रक्रिया को अपनाया जाता है। इन माप तालिकाओं का सही उपयोग सही परिणाम दिखाता है।

शनि रेखा के सन्दर्भ में तो आयु जानने के लिए इस रेखा का नीचे से ऊपर की ओर अध्ययन किया जाता है (रेखाचित्र-21)। कालावधियों के विभाजन की रूपरेखा इस प्रकार से है—(1) 0-30 वर्ष मणिबन्ध रेखा से मस्तक रेखा तक, (2) 30-45 वर्ष मस्तक रेखा से हृदय रेखा तक तथा (3) 45-50 वर्ष हृदय रेखा से शनि की अंगुली तक। इन तीन विभाजनों पर ध्यान केन्द्रित किया जाये, तो प्रमुख कालावधियों को समझना सरल हो जाता है। एक वर्ष के भीतर के किसी समय-विशेष को जानने के लिए रेखा को चिह्नित करके उसे जीवन रेखा मान लिया जाता है। हाथ के आर-पार विभिन्न दिशाओं से आने वाली मस्तक रेखा और हृदय रेखा को शनि रेखा सदैव एक स्थान पर नहीं काटती। इन रेखाओं के ग़लत स्थान पर चले जाने से किसी चौड़े अथवा तंग चतुष्कोण के बन जाने पर बीच की दूरी को 30-45 आयु का सूचक नहीं मानना चाहिए। इस स्थिति में सही तिथियों की जानकारी के लिए शनि रेखा की पूरी माप लेनी चाहिए।

शनि रेखा के समान ही सूर्य रेखा को भी नीचे से ऊपर पढ़ा जाता है। सारे नियम और माप भी दोनों पर एक समान लागू होते हैं। यहां दोनों से सही तिथियां निकालने की विधि भी एक ही है (रेखाचित्र-22)।

बुध रेखा को भी नीचे से ऊपर की ओर पढ़ा जाता है (रेखाचित्र-23)। यहां भी वही—शनि और सूर्य रेखाओं पर लागू होने वाले—नियम और माप लागू होते हैं। अन्तर केवल इतना है कि यह रेखा; क्योंकि लम्बी नहीं होती, छोटी होती है, इसलिए यहां कालावधि-सूचक-चिह्नों का अन्तर कम होता है, दूसरे शब्दों में चिह्न पास-पास होते हैं। जीवन रेखा के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण इस रेखा का अध्ययन प्रायः वाञ्छनीय ही होता है।

आकस्मिक रेखाओं पर आयु का अध्ययन आवश्यक नहीं; क्योंकि ये रेखाएं या तो मुख्य रेखाओं को कांटने वाली या उनसे आरम्भ होने वाली या फिर उनके इतनी समीप होती हैं कि इन रेखाओं पर अंकित आयु को मुख्य रेखा द्वारा पढ़ना सम्भव होता है। वस्तुतः जीवन के परिवर्तनों की अथवा परिवर्तनों की सम्भावनाओं की सूचक ये आकस्मिक रेखाएं विभिन्न दिशाओं तथा ऐसे अप्रत्याशित स्थानों से आती हैं कि उन पर अंकित रहने वाली आयु को पढ़ने के लिए किसी नियम का बनाना सम्भव ही नहीं, पुनरपि मुख्य रेखाओं की गणना द्वारा इनसे भी सही तिथियों

का निकालना सम्भव हो जाता है। वस्तुतः सही तिथियों को जानने के लिए अभ्यास की सर्वाधिक आवश्यकता है। अभ्यास द्वारा इस विषय में निपुणता प्राप्त की जा सकती है। यदि प्रारम्भ में असफलता मिलती है, तो इसे नियम की त्रुटि न मानकर और अधिक अभ्यास करना चाहिए और गहरे पैठने का प्रयास करना चाहिए, फिर आपको नियम की निर्दोषता का पता चल जायेगा। प्रायः नौसिखिए हस्तरेखाविदों में धैर्य नहीं होता और जल्दबाज़ी के कारण वे ग़लतियां कर बैठते हैं, जिससे न केवल उनका, अपितु इस विद्या का भी अवमूल्यन होने लगता है। इसकी विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। इसके विपरीत धैर्य और सावधानी बरतने तथा घटनाओं के सही स्थानों का परीक्षण करने से आशानुरूप उत्तम परिणाम निकलते हैं। रोग आदि के परीक्षण के समय न केवल जीवन रेखा, मस्तक रेखा, हृदय रेखा तथा बुध रेखा के अतिरिक्त पर्वतों की जांच की जाती है, अपितु रेखाओं के आकलन के नियमों के सन्दर्भ में तिथियों का भी परीक्षण किया जाता है। *

5

हृदय रेखा

बृहस्पति की अंगुली से शरीर में प्रविष्ट विद्युत्-धारा सर्वप्रथम हृदय रेखा—हृदय की स्थिति और गतिविधि की सही सूचना देने वाली रेखा—पर पहुंचती है। हृदय रेखा का सम्बन्ध उस केन्द्रीय रचना-तन्त्र से है, जो जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने वाले रक्त-प्रवाह को सुनिश्चित और नियन्त्रित करता है। हमारा स्वभाव और स्वास्थ्य रक्त-प्रवाह की मात्रा और गुणवत्ता पर ही निर्भर है। हृदय रेखा का प्रारम्भ बृहस्पत्ति की अंगुली के नीचे से अथवा उसके समीपवर्ती स्थान से होता है तथा अन्त पर्वत-क्षेत्रों के पार हांथ के दूसरे छोर पर होता है। वैसे तो इसके आरम्भ और समाप्ति का एक सामान्य स्थान होता है, परन्तु एक व्यक्ति के लिए स्थिति की सामान्यता दूसरे व्यक्ति के लिए असामान्य भी हो सकती है। अत: हृदय रेखा के अध्ययन में सदैव व्यक्ति को ही ध्यान में रखना चाहिए। किसी व्यक्ति के 'जोशीला' अथवा 'बड़े दिल वाला' होने का अभिप्राय उसे मिलनसार और उदार बताना होता हैं। इसी प्रकार 'सशक्त हृदय' कहने का अर्थ व्यक्ति को स्वस्थ, सुन्दर और सहनशील बताना है। वस्तुत: हृदय की शक्ति ही व्यक्ति को हंसमुख, मिलनसार और सहृदय बनाती है। हृदय के स्वस्थ होने पर शरीर नीरोग और त्वचा गुलाबी तथा चेहरा आकर्षक होता है। रक्त की मात्रा की प्रचुरता और उसे पम्प करने के लिए सामर्थ्य होने पर ही व्यक्ति स्वस्थ हृदय, तेजस्वी और मोहक बन पाता है। इस सन्दर्भ में ही 'जोशीलापन' का अर्थ अच्छी रक्त-आपूर्ति के कारण ऊर्जा और ऊष्मा से सम्पन्न हृदय है। स्वस्थ हृदय न केवल व्यक्ति को शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ और समर्थ बनाता है, अपितु उसे उत्साह-स्फूर्ति से सम्पन्न, प्रसन्नचित्त और कार्यशील भी बनाता है। व्यक्ति के निस्तेज, अस्वस्थ, मन्दगति और निरुत्साहित होने के पीछे रक्त-प्रवाह की मन्दता और ऊष्मा के अभाव को ही कारण समझना चाहिए। इसी का दूसरा नाम दुर्बल अथवा शिथिल हृदय है। ऐसे दुर्बल हृदय को रखने वाला व्यक्ति निराशा, उदासी और कुण्ठा का शिकार होता है।

हृदय रेखा से ही व्यक्ति के विभिन्न विषयों के प्रति दृष्टिकोण—जीवन के प्रति

मोह-निर्मोहिता, आकर्षण-विकर्षण तथा अनुराग-विराग आदि—को न समझने वाला हस्तरेखाशास्त्री व्यक्ति के शारीरिक अंगों और मनोभावों के बीच बनने वाले सम्बन्धों का पता ही नहीं लगा पाता। हृदय रेखा से ही व्यक्ति के कार्य-कलाप सञ्चालित होते हैं और उसकी स्थिति में परिवर्तन के अनुरूप व्यक्ति के स्वास्थ्य, स्वभाव और कार्यक्षमता में परिवर्तन आता है। इस प्रकार हृदय रेखा हृदय की क्रियाशीलता, शरीर की स्थिति और तदनुरूप मनोभावों में आने वाले परिवर्तन की जानकारी कराती है।

किसी हाथ में अपवाद रूप में हृदय रेखा मिलती ही नहीं। पर्वतों के नीचे से हाथ के आर-पार जाने वाली अकेली रेखा को हृदय रेखा अथवा मस्तक रेखा मानना भ्रम को पालना है। ऐसे भी अनेक हाथ देखने को मिलते हैं, जिनमें हृदय रेखा कभी पूर्णत: लुप्त, तो कभी प्रकट मिलती है। एक व्यक्ति के हाथ को जब मैंने पहली बार देखा, तो मस्तक रेखा थी ही नहीं, परन्तु एक वर्ष के पश्चात् दूसरी बार देखा, तो उसे बना हुआ पाया। यहां यह उल्लेखनीय है कि रेखाएं हृदय से नहीं, अपितु मस्तिष्क से नियन्त्रित होती हैं। अत: मस्तिष्क के प्रतीक के रूप में हृदय रेखा का रहना—प्रारम्भिक रूप में ही सही—तो निश्चित ही है। इस प्रकार मस्तक रेखा के स्थान पर अकेली दीखने वाली रेखा को मस्तक रेखा मानकर हृदय रेखा की अनुपस्थिति की कल्पना कर लेनी चाहिए। एकाकी रेखा को मस्तक रेखा के स्थान पर हृदय रेखा मानना तो तभी उचित होगा, जब यह रेखा बृहस्पति पर्वत पर या उसके आस-पास के क्षेत्र में ऊंची चढ़ी हुई हो और पर्वतों के एकदम नीचे के क्षेत्र को पार करके हाथ के दूसरी ओर जा रही हो। इसके अतिरिक्त किसी भी स्थिति में यह मस्तक रेखा के स्थान जितनी नीची न हो। हृदय रेखाविहीन व्यक्ति प्राय: सहानुभूति, स्नेह और करुणा आदि गुणों से रहित, नितान्त स्वार्थी तथा आत्मकेन्द्रित होता है। ऐसा व्यक्ति केवल अपनी सफलता की चिन्ता करता है और इसके लिए दूसरों को हानि पहुंचाने में भी संकोच नहीं करता। इस प्रकार हृदय रेखा की अनुपस्थिति एक अशुभ चिह्न है, जो व्यक्ति के झूठा, छली, कपटी, धूर्त और पाखण्डी होने का एक पक्का संकेत है।

अशुभ बुधप्रधान व्यक्ति के हाथ में इस चिह्न का होना उस व्यक्ति को धूर्तता और बेईमानी के प्रति गहरा लगाव रखने वाला बताता है। बुध की अंगुली टेढ़ी और साथ ही मुड़ी हुई होने तथा नाख़ून तंग-छोटे होने पर व्यक्ति को कदापि विश्वसनीय नहीं मानना चाहिए। ऐसा व्यक्ति स्वार्थसिद्धि के लिए झूठ बोलना, झांसा देना, धोखाधड़ी करना तथा विश्वासघात करना-जैसा कुछ भी कर सकता है। प्राय: क्रूर और भ्रष्टचरित्र व्यक्ति का हाथ ऐसा ही होता है। मंगलप्रधान व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा न मिलने का अर्थ है—व्यक्ति न केवल निष्ठुर, निर्मम और आततायी होता है,

अपितु उत्तेजित होने पर रक्तपात करने पर भी उतारू हो जाता है। ऐसे व्यक्ति में प्रायः शारीरिक बल प्रचण्ड होता है और इससे वह धूर्त, उद्यत और दूसरों को उत्पीड़ित
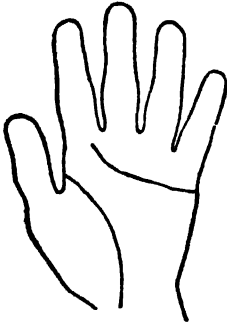
रेखाचित्र-24
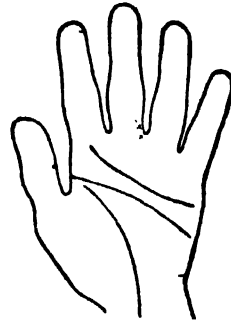
रेखाचित्र-25

करने वाला होता है। उसे दूसरों के सुख-दुःख और हानि-लाभ आदि से कोई सरोकार नहीं होता। शनिप्रधान व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा की अनुपस्थिति उस पर विपत्ति आने का सूचक है। ऐसा व्यक्ति मानव-जाति से घृणा करने वाला, प्रतिहिंसक, प्रतिशोधप्रिय, धनलोलुप होने के साथ बेईमान होता है। बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति के साथ में हृदय रेखा की अनुपस्थिति को एक विशिष्ट घटना के रूप में लेना चाहिए। यह व्यक्ति की वंशानुगत विशेषताओं का परिचायक भी होता है। सूर्यप्रधान तथा शुक्रप्रधान व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा दोषपूर्ण तो हो सकती है, परन्तु उसका न होना सम्भव नहीं। इन दोनों प्रकारों—सूर्यप्रधान तथा शुक्रप्रधान—का हृदय करुणा, दया, ममता और अनुभूति आदि गुणों से सर्वथा शून्य हो ही नहीं सकता। चन्द्रप्रधान व्यक्ति के स्वभावतः उदासीन और स्वार्थी होने के कारण उसके हाथ में अवश्य पूर्णतः विलुप्त अथवा नितान्त दोषपूर्ण हो सकती है। निष्कर्षतः हृदय रेखा की अनुपस्थिति एक ऐसे व्यक्ति की छवि को उजागर करती है, जो निपट स्वार्थी, आत्मकेन्द्रित, कायर, डरपोक, अनैतिक, झूठा तथा मक्कार है। ऐसा व्यक्ति केवल बड़ी-बड़ी डींगें मारता है, करता-कराता कुछ नहीं।

प्रायः हृदय रेखा बृहस्पति के किसी स्थान अथवा उसके समीपवर्ती किसी स्थान से निकलकर शनि पर्वत पर आ जाती है और उसके ऊपर भी चढ़ जाती है। यह रेखा कभी-कभी अपनी प्रारम्भिक स्थिति में दो शाखाओं वाली अथवा गाय की पूंछ-जैसी होती है। दो शाखाओं वाली सभी रेखाएं बृहस्पति पर्वत से निकलती हैं। गोपुच्छ कभी-कभी एक पंखे की तरह फैल जाते हैं और शनि पर्वत तक भी चले जाते हैं।
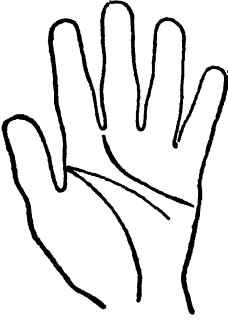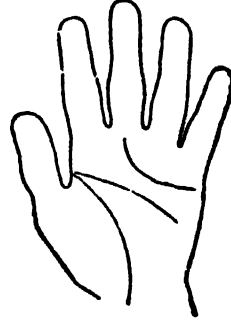
रेखाचित्र-26 *रेखाचित्र-27*

प्रारम्भिक स्थलों से सम्बद्ध तथा पूर्णतः सत्यापित निम्नोक्त तीन अवधारणाओं का उपयोग वैसे तो कार्य के आधार के रूप में करना होता है, पुनरपि प्रारम्भिक स्थलों की भिन्नता के अनुरूप उनमें यथोचित परिवर्तन किया जा सकता है। ये तीन अवधारणाएं हैं—

1. बृहस्पति पर्वत से आरम्भ होने पर स्नेह- अनुराग-जैसे भावात्मक पक्ष का विकास होता है (रेखाचित्र-25)। ऐसा व्यक्ति प्रेम को पूजा और आदर्श के रूप में अपनाने वाला होता है। वह अभाव और दरिद्रता में भी प्रेम के आकर्षण का संवरण नहीं कर पाता। वह सच्चे अर्थों में प्रेम का पुजारी होता है।

2. बृहस्पति और शनि के बीच से रेखा के उदय होने का अर्थ है—व्यक्ति प्रेम को महत्त्व तो देता है, परन्तु व्यावहारिक बुद्धि रखने वाला और समझदार है। वह भावनाओं में बहने वाला भावुक न होकर उपयोगिता और व्यावहारिकता को अपनाने वाला है (रेखाचित्र-26)। वह कोमल भावनाओं को महत्त्व देते हुए भी यह नहीं भूलता कि जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं—रोटी, कपड़ा और मकान—की पूर्ति के बिना प्रेम-प्यार कोरी कल्पना है। इस प्रकार ऐसा व्यक्ति प्रणयशील होने पर भी कल्पना के पंखों पर आकाश में नहीं उड़ता, अपितु धरती के ठोस सत्य को महत्त्व देता हुआ सदैव सोच-समझ से काम लेता है।

3. शनि पर्वत से प्रारम्भ होने वाली रेखा का अर्थ है कि व्यक्ति अनुराग को विषय-भोग के रूप में लेता है (रेखाचित्र-28)। अतः वह यौन-सुख भोगने के लिए सदैव आतुर-उत्सुक रहता है। इस रेखा के साथ जाल अथवा गुलाबी रंग के बड़े शुक्र पर्वत का दिखाई देना और जीवन रेखा तथा बुध रेखा का भी प्रबल होना उपर्युक्त तथ्य—व्यक्ति का विषयासक्त होना—को पक्का ही समझना चाहिए। हृदय रेखा के प्रारम्भिक-स्थल के संकेत व्यक्ति के शारीरिक सुख-भोग की वासना को तथा अन्य संकेत इस वासना को पूरा करने के लिए शारीरिक सामर्थ्य को प्रकट

करते हैं।

इन तीनों स्रोतों से हृदय रेखा का प्रारम्भ व्यक्ति की भावना, सहज बुद्धि और अनुरक्ति में एकात्मकता, अर्थात् तीनों की पारस्परिक सहयोगी वृत्ति को प्रकट करता है (रेखाचित्र-28)। ऐसे व्यक्ति के व्यक्तित्त्व के निर्माण में उसके चरित्र और व्यवहार की महत्त्वपूर्ण भूमिका तो रहती है, परन्तु यह सब तभी हो पाता है, जब उसकी मस्तक रेखा अत्युत्तम हो तथा हृदय पर मस्तिष्क को प्रभावी न होने देने वाला सशक्त अंगूठा हो। व्यक्ति की भावना, बुद्धि तथा अनुरक्ति में किसी एक की प्रबलता के अनुमान के लिए आरम्भिक-स्थल पर तीनों रेखाओं में सर्वाधिक गहरी रेखा का निर्णय करना चाहिए। तीनों गहरी रेखाओं वाला व्यक्ति न केवल बड़ा-भारी अनुरागी होता है, अपितु अत्यन्त उत्साही भी होता है। वह अपने मित्रों, परिचितों, सम्बन्धियों, यहां तक सभी प्राणियों से सच्चा प्यार करता है। ऐसा उदार हृदय व्यक्ति परहित-साधन के लिए निजी हित को बलि चढ़ाने की चिन्ता तक नहीं करता। बृहस्पति से बनने वाले गोपुच्छ के प्रबल होने पर तो ऐसे व्यक्ति की उदारता सनक का रूप ले लेती है। हां, मध्य शाखा के प्रबल होने पर व्यवहारपक्ष के प्रबल हो जाने के कारण इस ख़तरे में कमी आ जाती है।
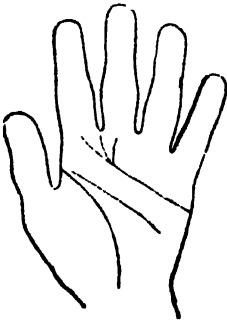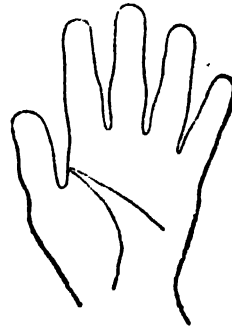
रेखाचित्र-28 *रेखाचित्र-29*

हृदय रेखा का गोपुच्छ सदैव चित्रांकित सीमा तक व्यक्त नहीं होता, फिर भी अध्ययन और विश्लेषण के द्वारा निर्दिष्ट संकेतों के आधार पर प्रत्येक परिवर्तन को समझा जा सकता है। यदि यह रेखा बृहस्पति पर्वत पर कई गुच्छों में आरम्भ होती है, तो व्यक्ति की भाव-प्रवणता में वृद्धि समझनी चाहिए। यही नियम अन्यान्य स्थलों पर भी लागू होते हैं। उदाहरणार्थ, इष्ट-मित्रों से अत्यधिक अनुराग रखने वाला व्यक्ति आत्मसंयमी होगा। वह बिना सोचे-समझे प्रत्येक व्यक्ति से घुलना-मिलना पसन्द नहीं करेगा। हृदय रेखा आरम्भ में गोपुच्छ वाली हो, तो व्यक्ति केवल सबसे प्रेमपूर्वक मिलता-जुलता है। रेखा के आरम्भ में गहरी और स्पष्टता की

अधिकता के अनुरूप ही व्यक्ति में स्नेह भावनाओं की गहराई तो होती है, परन्तु उनमें स्वार्थ की गन्ध आती है। रेखा से निकलने वाली शाखाओं की संख्या में अधिकता के अनुरूप ही व्यक्ति अधिक मिलनसार होता है। गोपुच्छ वाली रेखा व्यक्ति को अनेक मित्रों वाला व जीवन में सफल रहने वाला सूचित करती है।

हृदय रेखा का आरम्भ में ही मस्तक रेखा की ओर गिरता दीखना (रेखाचित्र-29) यह संकेत देता है कि व्यक्ति की बुद्धि पहले तो पूरे वेग से आगे बढ़ती है, परन्तु फिर वह भावना के साथ उपयोगिता पर भी विचार करने लगता है और अन्ततः भावना पर उपयोगिता को अधिक महत्त्व देने लगता है।
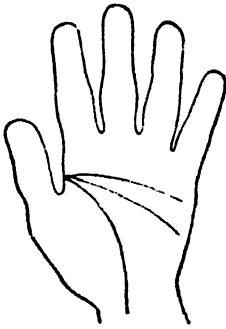
रेखाचित्र-30
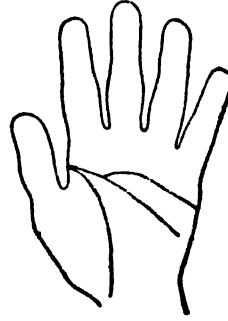
रेखाचित्र-31

किन्हीं हाथों में यह हृदय रेखा मस्तक रेखा से आरम्भ होती है (रेखाचित्र-30), जो हृदय के मस्तिष्क द्वारा नियन्त्रित होने का सूचक है। ऐसा व्यक्ति भावुक न होकर व्यावहारिक होता है; क्योंकि उसकी बुद्धि उसकी भावना पर शासन करती है। मस्तक रेखा का हृदय रेखा से अधिक गहरा और स्पष्ट होना इस तथ्य को और अधिक पुष्ट करता है। इस स्थिति में तो छाती ठोककर हृदय को बुद्धि के नियन्त्रण में होना बताया जा सकता है। इस प्रकार के व्यक्ति को सदैव हृदय (भावना) और बुद्धि (चिन्तन-व्यावहारिकता) के मध्य द्वन्द्व को झेलना पड़ता है और सदैव हृदय को मस्तिष्क से पराजित होना पड़ता है। हृदय रेखा का मस्तक रेखा से निकलना अथवा वहां गिरना इसी तथ्य का संकेत देता है। हस्तरेखाशास्त्री को व्यक्ति के हाथ का परीक्षण करते समय उसकी सर्वाधिक प्रभावी शक्तियों के साथ-साथ उसे सर्वाधिक प्रभावित करने वाली शक्तियों की भी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। हृदय और मस्तिष्क, अर्थात् भावना और तर्क के द्वन्द्व में हृदय रेखा के स्रोत का और साथ ही दोनों—हृदय रेखा और मस्तक रेखा—की सापेक्ष शक्ति की भी गहरी जांच-परख करनी चाहिए। इससे नियन्त्रक शक्ति रखने वाली रेखा की जानकारी प्राप्त हो जायेगी।

मस्तक रेखा की ओर से उठने वाली हृदय रेखा का दूर तक जाना सम्भव रहता है (रेखाचित्र 31)। इस स्थिति में रेखा के प्रारम्भिक दख़ल को देखकर हृदय रेखा पर मस्तक रेखा के नियन्त्रण के तथ्य को समझा जा सकता है। चतुर्थ अध्याय में निर्दिष्ट नियमों के आधार पर घटित घटनाकालीन आयु की जानकारी पाना भी सम्भव है। यह सारी जांच-परख व्यक्ति के प्रबल पर्वत-प्रकार की जांच के उपरान्त ही करना उचित है।

प्रबल शनि पर्वत वाले व्यक्ति पर बुद्धि का सर्वाधिक नियन्त्रण रहता है। शनि पर्वत के उपरान्त बुद्धि का शासन कुछ न्यून मात्रा में चन्द्रप्रधान व्यक्ति पर, उससे कुछ कम बुधप्रधान, उससे कुछ कम बृहस्पतिप्रधान और उससे भी कुछ कम मंगलप्रधान व्यक्तियों पर देखा जाता है। इधर सूर्यप्रधान और शुक्रप्रधान व्यक्ति अपने हृदय के वश में रहने वाले, अर्थात् भावुक प्रकृति के होते हैं। इस प्रकार निर्दिष्ट चिह्नों पर आधृत अनुमानों को व्यक्ति के पर्वत-प्रकारों से जुड़े लक्षणों के साथ रखकर निष्कर्ष निकालना चाहिए। रेखा की लम्बाई से व्यक्ति के हृदय के बड़ा-छोटा होने का पता चलता है। सामान्य रूप से आरम्भ होने वाली, किन्तु थोड़ी ही दूर जाने
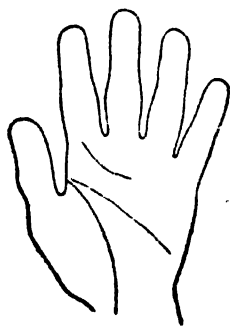
रेखाचित्र-32
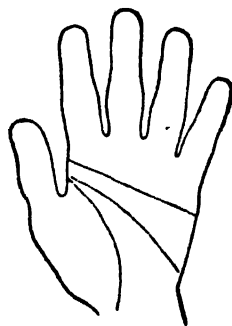
रेखाचित्र-33

वाली रेखा से यह संकेत मिलता है कि रेखा की समाप्ति के समय व्यक्ति को गम्भीर समस्या का सामना करना पड़ सकता है (रेखाचित्र-32)। अन्य सभी रेखाओं का सामान्य लम्बाई की होने का भी इस निष्कर्ष पर कोई अन्तर नहीं पड़ता। रेखा के लुप्त होने का अर्थ है—हृदय की गति का अचानक बन्द होना अथवा व्यक्ति के प्रणय सम्बन्धों में सहसा शिथिलता का आ जाना। इस अध्याय में निर्दिष्ट संकेतों से वस्तुस्थिति स्पष्ट हो जायेगी। यहां इतना समझ लेना चाहिए कि यह चिह्न अपने सभी रूपों में एक अशुभ एवं निकृष्ट स्थिति ही है।

हृदय रेखा का पूरे हाथ को पार करती दीखना व्यक्ति के भावुक और विशाल हृदय वाला होने का संकेत है (रेखाचित्र-33)। ऐसा व्यक्ति व्यवसाय के लिए

कर्मचारियों के चयन का अधिकार पाने पर चयन करते समय कर्मचारियों की योग्यता और कार्यकुशलता की अपेक्षा उनकी आवश्यकता को वरीयता देता है। वस्तुतः ऐसा व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भावना द्वारा सञ्चालित होता है। वह संवेदनशील और सहज द्रवित हो जाने वाला होता है। बहुत अधिक प्रेम करने वाला ऐसा व्यक्ति बदले में प्रेम न मिलने पर व्यथित हो उठता है। अनुभवी हस्तरेखाशास्त्रियों के अनुसार बृहस्पति की अंगुली से निकलकर हाथ के पार जाने वाली रेखा सभी उद्यमों में विफलता दिलाने वाली होती है। वस्तुतः ऐसा व्यक्ति अपने विरोधी क्रूर षड्यन्त्रकारियों का सफलतापूर्वक सामना नहीं कर पाता और यही वह कारण है कि वह व्यावहारिक सूझ-बूझ वाले व्यक्ति के समान जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफल नहीं रहता। बस, इसी अर्थ में उसे 'असफल' माना जाता है।

रेखा की लम्बाई पर विचार करने के उपरान्त हाथ में एक किनारे से उस किनारे तक जाने वाली इस रेखा की दिशा और उसके मार्ग पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। रेखा के मुड़ने की दिशाओं, मार्ग की दूरी, मार्ग परिवर्तन का समय और स्वरूप, परिवर्तन का समय (व्यक्ति की आयु) परिवर्तन के एकाधिक होने की स्थिति में प्रत्येक परिवर्तन की अवधि तथा विभिन्न परिवर्तनों के समय रेखा के साथ घटने वाली घटनाओं आदि का विस्तृत अध्ययन करना चाहिए। रेखा का इस प्रकार सूक्ष्म विश्लेषण करने पर व्यक्ति के जीवन में घट चुकी, घट रही और घटने वाली घटनाओं के समय और स्वरूप की जानकारी हो जाती है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत विवेचन रेखा के मार्ग तक सीमित है। यही कारण है कि हमने यहां मार्ग में आने वाले दोषों की व्याख्या न करके केवल उस दिशा की ओर संकेत किया है, जिसे यह रेखा एक छोर से दूसरे छोर पर जाते समय अपनाती है। सामान्यतः हृदय रेखा बृहस्पति पर्वत से प्रारम्भ होकर शनि, सूर्य और बुध पर्वतों की निचली सीमा को नियत करती है। पर्वतों के मूल में चलकर बुध पर्वत के ठीक नीचे जाकर समाप्त होने वाले सीधे समतल पथ को रेखा का सामान्य मार्ग से हटना नहीं समझना चाहिए। मार्ग में किसी एक पर्वत तक चले जाने का अर्थ उस पर्वत के आकर्षण का प्रबल होना है और उसका स्पष्ट अभिप्राय व्यक्ति का उस पर्वत-प्रकार के गुणों वाले व्यक्तियों को सर्वाधिक पसन्द करना है (रेखाचित्र-34)। विद्युत्-धारा हाथ में अपने निर्धारित मार्ग में निरन्तर प्रवाहित होकर विभिन्न दिशाओं में जाती रहती है। प्रस्तुत रेखाचित्र में एक पर्वत इस रेखा को मोड़ दे रहा है।

यह रेखा प्रायः एक से अधिक पर्वतों तक उठी हुई नहीं मिलती। किसी पर्वत के नीचे इसका उठाव व्यक्ति के मन में इस दिशा में उत्पन्न प्रगाढ़तम आकर्षण के समय (व्यक्ति की आयु) का सूचक होता है। हृदय रेखा से निकलकर आने वाली

अन्य कोई रेखा अथवा आकस्मिक रेखा अन्य अवस्थाओं में व्यक्ति के मन में उत्पन्न आकर्षण के समय को बताती है। प्रायः रेखा के आकर्षण केन्द्र पर्वत को देखना
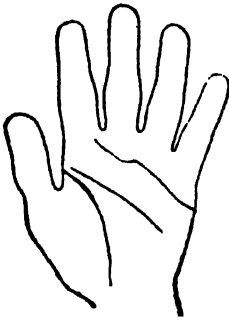
रेखाचित्र-34
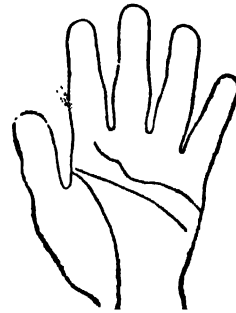
रेखाचित्र-35

चाहिए; क्योंकि पर्वत के गुणों वाली तथा उसकी ओर झुकने वाली हृदय रेखा व्यक्ति के आकर्षण के स्रोत और समय (आयु) की जानकारी कराती है। रेखा के उठकर पर्वत की ओर झुकने और लुप्त हो जाने से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति की स्नेह-भावना उस पर प्रभावी हो गयी है और उसके हृदय ने पूर्णतः आत्मसमर्पण कर दिया है। रेखा का एक बार ऊपर उठना, परन्तु फिर सामान्य मार्ग पर आ जाना सूचित करता है कि व्यक्ति के मन में आकर्षण पनपता तो है, परन्तु वंह व्यक्ति को पूर्णतः अपने वश में नहीं कर पाता। इस आकर्षण के समय और व्यक्ति की आयु को जानने के लिए रेखा के मोड़ वाले बिन्दु और क्षेत्र पर ध्यान देना चाहिए। आकर्षण की गम्भीरता को आंकने के लिए सामान्य मार्ग अथवा दिशाक्रम से रेखा के विचलन की स्थिति का अध्ययन अपेक्षित होता है। ध्यान देने की बात यह है कि रेखा में अधिक विचलन अथवा झुकाव आने से पहले ही आकस्मिक रेखा मुख्य रेखा से पृथक् हो जाती है तथा आकर्षण-स्थल तक चली जाती है। इसीलिए मुख्य रेखा के विचलन का पता ही नहीं चल पाता, जबकि इस प्रक्रिया में होने वाले परिवर्तन पर्याप्त महत्त्वपूर्ण होते हैं। रेखा को उसकी दिशा से बाहर खींच लाने वाला आकर्षण तो अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण होता है।

हृदय रेखा का किसी पर्वत की ओर मुड़ने या झुकने का अर्थ है—व्यक्ति का उस पर्वत-प्रकार के लोगों से अत्यधिक प्रभावित होना, उनके आकर्षण से बच न पाना। रूप, रंग, गुण तथा चरित्र आदि की दृष्टि से इन पर्वत-प्रकारों को अपना आदर्श मानना। हस्तरेखाशास्त्री रेखा के झुकाव वाले पर्वत के प्रकार से जुड़े व्यक्तियों के आकार-प्रकार, चरित्र, स्वभाव और गुणों का वर्णन करके सम्बद्ध व्यक्ति के उनके प्रति आकर्षण और लगाव आदि के सम्बन्ध में भविष्यकथन कर सकता है।

रेखा का अपनी निश्चित दिशा से नीचे की ओर झुकना यह बताता है कि बुद्धि ने हृदय को अपने नियन्त्रण में ले रखा है तथा भावुकता को तर्क ने बुरी तरह से प्रभावित कर रखा है (रेखाचित्र-35)। इस स्थिति में व्यक्ति दूसरों की उपेक्षा करने वाला, अनुदार, निष्ठुर और स्वार्थी बन जाता है। हृदय रेखा का अपने मार्ग की दिशा में ऐसा झुकाव तो किसी भी समय हो सकता है। झुकाव का आरम्भ-स्थान ही व्यक्ति में इस प्रवृत्ति के प्रारम्भ होने की आयु का सूचक होता है। इसी प्रकार हृदय रेखा का मस्तक रेखा में विलीन होना यह बताता है कि बुद्धि ने मनोभावों को पूर्णरूप से लील लिया है (रेखाचित्र-36)।
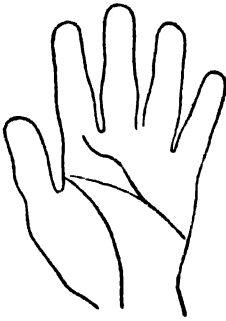
रेखाचित्र-36
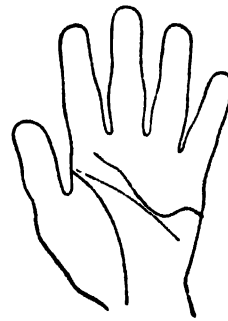
रेखाचित्र-37

गम्भीर विचलन के उपरान्त हृदय रेखा का अपनी पहले वाली दिशा को अपना लेने से यह सूचित होता है कि व्यक्ति में पूर्व की प्रणय भावना किसी-न-किसी रूप में अभी जीवित है, तर्क और बौद्धिकता उसे पूर्णत: निश्शेष नहीं कर पाये (रेखाचित्र-37)। इस प्रकार का व्यक्ति अधिकांशत: तर्क, बौद्धिकता और व्यावहारिकता को ही महत्त्व देता है, वह अपने हृदय की बात को तो बहुत कम सुनता है।

हृदय रेखा में आने वाले झुकावों के स्तर तो अनेक हैं, परन्तु वे सब अभी तक अज्ञात हैं। झुकावों की विभिन्न श्रेणियों में रेखा के नाममात्र को टेढ़ी होने से लेकर एकदम नीचे लटक जाने तक की स्थितियां होती हैं। हृदय रेखा के झुकाव का रूप कोई भी क्यों न हो, इतना तो स्पष्ट ही है कि इन सब स्तरों पर हृदय पर बुद्धि का आकर्षण-नियन्त्रण रहता है। नियन्त्रण की यह शक्ति व्यक्ति के भावना पक्ष को निश्शेष एवं पराभूत करने का प्रयास करती है। इस प्रयास की सफलता के रूप-स्तर को जानने के लिए झुकाव के स्वरूप—बड़ा अथवा छोटा—को जानना आवश्यक होता है। रेखा पर अवधि का निर्धारण कर लेने के उपरान्त व्यक्ति के जीवन में घटित अथवा घटने वाली घटनाओं के समय तथा व्यक्ति की आयु का भविष्यकथन करना

सम्भव हो जाता है। व्यक्ति के पर्वत-प्रकार सम्बन्धी जानकारी का उपयोग करने पर तो इस सम्बन्ध में किसी सन्देह के बने रहने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। प्रबल शनिप्रधान व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा के अधोमुखी झुकाव उसके सर्वाधिक प्रबल पक्ष के सूचक होते हैं। अन्य पर्वत-प्रकारों पर भी विचार करते समय किसी पूर्वाग्रह को नहीं पालना चाहिए; क्योंकि शायद ही कोई शुक्रप्रधान व्यक्ति ऐसा मिले, जो हृदय की नितान्त उपेक्षा करने वाला और केवल बुद्धि से काम लेने वाला हो। रेखा को नियन्त्रित करने वाले सामान्य सिद्धान्तों की जानकारी के होने पर तथा बाधा के आने अथवा भिन्नता के दिखाई देने पर अपने विवेक का प्रयोग करके विभिन्न भिन्नताओं से होने वाले सभी परिवर्तनों को सही ढंग से समझना और उनका सही अर्थ निकालना सम्भव होता है।

अपने सामान्य मार्ग से हटकर नीचे की ओर जाती हृदय रेखा का मस्तक रेखा में विलीन न होकर अथवा अपनी मूल दिशा में न लौटकर मस्तक रेखा को दो भागों में बांट देना मस्तक रेखा के गम्भीर रूप से क्षतिग्रस्त होने का सूचक है (रेखाचित्र-38)। रेखा के कटने पर व्यक्ति की मानसिक शक्तियों में गहरा असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है और इसके फलस्वरूप व्यक्ति गम्भीर मस्तिष्क विकृति (ब्रेन-हैमरेज) का शिकार होकर मृत्यु का ग्रास बन सकता है। इस प्रकार हृदय रेखा की यह स्थिति गम्भीर विपत्ति के आने की सूचना है।
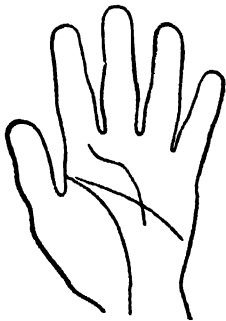
रेखाचित्र-38
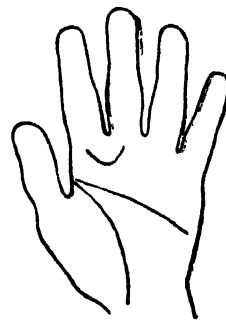
रेखाचित्र-39

हृदय में प्रवाहित होने वाली दो शक्तिशाली विद्युत्-धाराएं जब एक-दूसरे को इस प्रकार काटती हैं कि विस्फोट होने-जैसी घटना घट जाती है, तो यह गम्भीर संकट के टल जाने का सूचक होता है, परन्तु फिर भी इस स्थिति में बीते संकट की छाया स्थाई रूप लिये रहती है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि हृदय रेखा का सम्बन्ध मस्तक रेखा के साथ होने के कारण यह विस्फोट भी मस्तिष्क में ही होता है। अत: इस स्थिति में बृहस्पतिप्रधान व्यक्तियों के रक्ताघात से, शनिप्रधान व्यक्तियों

के पक्षाघात से तथा सूर्यप्रधान व्यक्तियों के नेत्रान्धता और हृदय रोग से आक्रान्त होने की पूरी सम्भावना बनी रहती है। सूर्यप्रधान व्यक्तियों में हृदय-गति के रुकने की तो आशंका प्रबल रूप लिये रहती है। अन्धत्व का सम्बन्ध भी मस्तिष्क से है, परन्तु यह रोग हृदय रोग के उपरान्त ही आता है। इस स्थिति में व्यक्ति को स्नायु रोग, पित्त-विकार और लकवा भी हो सकता है। मंगलप्रधान व्यक्तियों में रक्त की मात्रा अधिक होती है। अत: इस स्थिति में उनके रक्ताघात का शिकार होने की आशंका बढ़ जाती है। चन्द्रप्रधान और शुक्रप्रधान व्यक्तियों के सामने तो यह स्थिति उपस्थित ही नहीं होती।

इन सभी प्रकारों के व्यक्ति रक्ताघात के शिकार भले ही न हों, परन्तु वे मस्तिष्क-विकार, आघात एवं क्षति आदि से मुक्ति नहीं पा सकते। इस प्रकार हृदय रेखा द्वारा मस्तक रेखा के काटने को एक गम्भीर समस्या के रूप में ही देखना चाहिए। हृदय रेखा द्वारा मस्तक रेखा के काटे जाने पर जीवन रेखा और शनि रेखा या तो मुड़ जाती है या फिर रुक जाती है। यह अत्यन्त भयंकर स्थिति होती है। हृदय रेखा किसी भी समय अपने स्थान से विचलित हो सकती है और मस्तक रेखा को काट सकती है। कटाव के समय की आयु की जानकारी रेखा से मिल जाती है। दोनों रेखाओं के कटाव वाले स्थान का गहरा हो जाना और रेखाओं की लाली का बढ़ जाना गम्भीर परिणाम की सूचक स्थिति है। इस स्थिति में नाख़ूनों से अथवा धारियों से हृदय रोग अथवा लकवे के लक्षण जाने जा सकते हैं। आड़ी रेखाएं तो संकट की अत्यधिक गम्भीरता का संकेत देती हैं।

हृदय रेखा के मार्ग का प्रत्येक परिवर्तन उसकी विशेषताओं में आने वाले परिवर्तन का सूचक होता है। परिवर्तन होने के समय का और उस परिवर्तन की काल-सीमा का निश्चय हृदय रेखा द्वारा लगाया जा सकता है; क्योंकि इस रेखा में परिवर्तनों के सूचक संकेत स्पष्ट अथवा अस्पष्ट रूप में विद्यमान रहते हैं। अत: इन संकेतों से न केवल परिणाम, अपितु प्रभाव को भी जानना सम्भव हो जाता है। अभ्यास से अनुमान को सर्वथा सत्य सिद्ध किया जा सकता है।

हृदय रेखा के उद्गम-स्थल तथा मार्ग पर विचार करने के उपरान्त उसके समापन-स्थल का अध्ययन करना चाहिए। हृदय रेखा के उत्पत्ति-स्थान से गुणों का उद्गम होता है, तो समापन-स्थल से इन गुणों के विकास और परिणाम की जानकारी मिलती है। बृहस्पति के नीचे से रेखा की उत्पत्ति और शनि पर्वत के नीचे उसकी समाप्ति से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति अपने जीवन के प्रारम्भ में स्नेह और प्यार की भावनाओं को धारण करने वाला था, परन्तु कालान्तर में शनि के प्रभाव से उसके वे कोमल भाव मानव-जाति के प्रति घृणा और उदासीनता-जैसे दोषों में बदल गये। इस प्रकार शनि ने व्यक्ति की उत्कृष्टता को निकृष्टता का रूप दे दिया (रेखाचित्र-

39)। नाख़ूनों के रूप और उनकी रंगत के अध्ययन-निरीक्षण के अतिरिक्त जीवन रेखा में लकवे अथवा हृदय रोग के चिह्नों की स्पष्टता के आधार पर आयु की अल्पता का भविष्यकथन सम्भव होता है।

हृदय रेखा का शनि पर्वत के नीचे समाप्त होने का अर्थ है—व्यक्ति पच्चीस वर्ष से अधिक जीने वाला नहीं। सूर्य पर्वत के नीचे हृदय रेखा की समाप्ति व्यक्ति के सूर्य सम्बन्धी गुणों—सौन्दर्यानुराग एवं कलात्मक सुरुचि—के प्रति झुकाव की सूचक है (रेखाचित्र-40)। ऐसा व्यक्ति प्रबल अथवा प्रबल-जैसे सूर्य गुण वाले व्यक्ति से विवाहित होने पर सदैव असन्तुष्ट ही बना रहता है। हां, सूर्य पर्वत पर समाप्त होती रेखा का बृहस्पति पर्वत पर चढ़ जाना यह संकेत देता है कि व्यक्ति प्रेम के विषय में आदर्शवादी है, वह सौन्दर्य और प्रेम जैसे विषयों में मृदुता, सुरुचि और सौष्ठव को अपनाने वाला है।
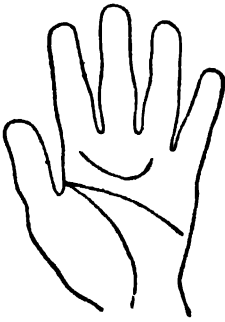
रेखाचित्र-40
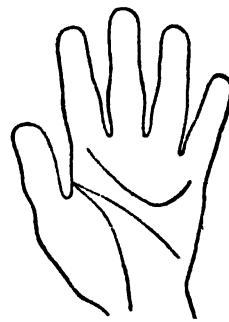
रेखाचित्र-41

हृदय रेखा की सूर्य पर्वत पर समाप्ति और नाख़ूनों, हृदय रेखा, जीवन रेखा तथा हृदय रेखा पर किसी रोग के संकेत का अभाव व्यक्ति के स्वास्थ्य के ठीक-ठाक रहने का सूचक है। पर्वत-प्रकारों से सम्बन्ध रखने वाले नाख़ूनों के रूप-रंग से प्राप्त होने वाले संकेतों के आधार पर व्यक्ति के स्वास्थ्य में आने वाले दोषों की पहचान की जा सकती है। हृदय रेखा जब सूर्य पर्वत पर समाप्त हो रही हो, तो उस समय यह देखना आवश्यक होता है कि वहां हृदय रोग का सूचक संकेत तो विद्यमान नहीं है। स्वास्थ्य ठीक-ठाक होने पर भी व्यक्ति को रोग-पीड़ित होने पर यह समझना चाहिए कि वह केवल वहम का शिकार है। इसी वहम के कारण वह अपने को रोगी मान बैठा है, जबकि उसे कोई शारीरिक रोग है ही नहीं।

हृदय रेखा का बुध पर्वत पर ऊंचा उठना और फिर वहीं उसकी समाप्ति व्यक्ति को प्रेम सम्बन्धों को रुपये-पैसे से तौलने वाला सिद्ध करती है (रेखाचित्र 41)। इस स्थिति का अर्थ है कि हृदय रेखा का नियन्त्रण बुध के हाथ में है। अत: व्यक्ति प्रणय

के क्षेत्र में आगे बढ़ने से पहले आर्थिक पक्ष का आकलन करता है, अर्थात् वह इस मामले में भी वणिक वृत्ति वाला होता है। बुध पर्वतप्रधान व्यक्ति का यह सौभाग्य होता है कि हृदय रोग उसके पास तक नहीं फटकता। इसके अतिरिक्त बुधप्रधान व्यक्ति स्वास्थ्य-सम्बन्धी किसी अन्यान्य विकार से भी ग्रस्त नहीं होता। कभी-कभार अप्रत्याशित स्थानों पर मिलने वाले स्वास्थ्य-विकार सम्बन्धी संकेत तो अपवाद रूप होते हैं, पुनरपि उन पर विचार अवश्य करना चाहिए।

हृदय रेखा की दिशा की स्वाभाविकता एवं मार्ग की उपयुक्तता की जांच का आधार विद्युत्-धारा का प्रवाह है। विद्युत्-धारा के प्रवाह में आने वाले परिवर्तन उसे उसके सामान्य मार्ग से विचलित करके अनुपयोगी एवं निरर्थक स्थान पर ले जाकर छोड़ देते हैं। हृदय रेखा का अपने उचित मार्ग की ओर न बढ़कर दुगुने प्रवाह को मस्तिष्क में उंड़ेल देने का परिणाम यह होता है कि सम्बद्ध व्यक्ति निरुत्साही और निष्ठुर बन जाता है। इस स्थिति में ऐसा लगता है, मानो व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा है ही नहीं (रेखाचित्र-42)। बृहस्पति पर्वत से नीचे की ओर हृदय रेखा इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि व्यक्ति महत्त्वाकांक्षी है और अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के प्रति सतर्क भी है, परन्तु अपने लक्ष्य की सिद्धि में वह दूसरे के हित-अहित की कोई चिन्ता नहीं करता।
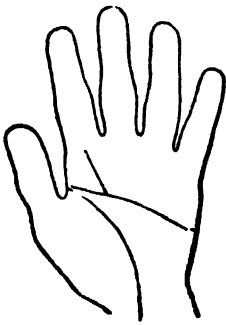
रेखाचित्र-42
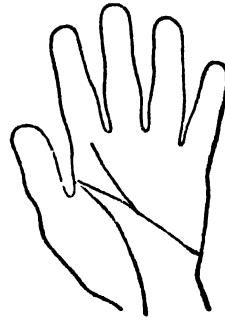
रेखाचित्र-43

हृदय रेखा द्वारा कुछ दूरी तक अपने स्वाभाविक मार्ग पर चल लेने के उपरान्त ही उसकी मस्तक रेखा से मिलकर आगे बढ़ने तथा उसमें विलीन होने की स्थिति आती है (रेखाचित्र-43)। यहां मस्तक रेखा गोपुच्छ से प्रारम्भ हो रही है और हृदय रेखा अनुपस्थित है, जबकि हृदय रेखा की उपस्थिति वाञ्छनीय प्रभाव के लिये अपेक्षित होती है।

ऊपरी मंगल क्षेत्र पर समाप्त होने वाली हृदय रेखा पर्वतों के नीचे व्यापक क्षेत्र को छोड़ती है (रेखाचित्र-44)। इस स्थिति में यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति मंगलप्रधान

व्यक्तियों से स्नेह-सम्बन्ध जोड़ता है। इनका प्रेम प्रचण्ड और दुःखद होता है; क्योंकि इनके प्रेम में मंगल की शक्ति के साथ अशिष्टता भी जुड़ी रहती है। इस स्थिति में लगे चतुष्कोण का बनना व्यक्ति द्वारा अपने प्रेम सम्बन्धों में दुराव-छिपाव रखने का सूचक है।
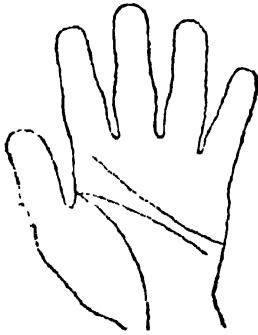
रेखाचित्र-44
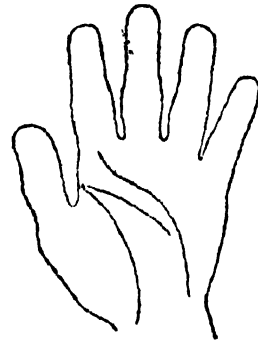
रेखाचित्र-45

हृदय रेखा का झरने के समान नीचे गिरना और सूर्य पर्वत पर समाप्त हो जाना यह संकेतित करता है कि व्यक्ति प्रेम के विषय में कल्पनाजीवी होने के साथ-साथ ईर्ष्या और शंकाग्रस्त रहने वाला भी है (रेखाचित्र-45)। ऐसा व्यक्ति तो अपने प्रेमपात्र पर भी विश्वास नहीं करता। हृदय रेखा द्वारा मस्तक रेखा को पार करना किसी संकट का सूचक न होने के कारण इस स्थिति को भी किसी संकट का संकेत नहीं समझना चाहिए।

हृदय रेखा का एक मोड़ का रूप लेना और मंगल क्षेत्र पर समाप्त होना गम्भीर संकट का सूचक है (रेखाचित्र -46)। इस स्थिति में विद्युत्-धारा मस्तक रेखा को चक्र के आकार में काटकर सीधी हृदय रेखा में प्रवाहित होने लगेगी। इस प्रकार मस्तक रेखा का कटना जीवन का संकट में पड़ना है। इस स्थिति में व्यक्ति शीघ्र उत्तेजित होने वाला, अधीर, अस्थिरचित्त और चिड़चिड़ा बन जाता है।

तीन रेखाओं—जीवन, मस्तक और बुध—की जांच-परख से परिणाम की सामान्य अथवा अधिक गम्भीरता का निश्चय हो जाता है। इन रेखाओं में मस्तक रेखा को काटने वाली आयु पर अशुभ चिह्नों का मिलना परिणाम की गम्भीरता का सूचक है। इस प्रकार के अशुभ चिह्न को मंगल क्षेत्र पर उभरने वाली मंगल रेखा समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। रेखा का सीधे ऊपर बृहस्पति पर्वत तक आना उसे हृदय रेखा सिद्ध करता है। हां, इसके शनि पर्वत अथवा बृहस्पति पर्वत के मात्र किनारे तक जाना अवश्य इसे शनि रेखा बताता है। यह स्थिति हृदय रेखा को अनुपस्थित बताती है।
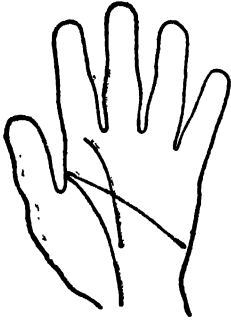
रेखाचित्र-46

रेखाचित्र-47

गोलाई में मुड़ने और शुक्र पर्वत पर समाप्त होने वाली हृदर रेखा के दोनों मस्तक रेखा और जीवन रेखा के काटने वाली होने से एक गम्भीर स्थिति मानी जाती है (रेखाचित्र-47)। इस विरल चिह्न के दीखने पर रेखाओं के कटने की स्थिति को तथा दोनों—मस्तक और जीवन—रेखाओं को पूरे ध्यान से देखना चाहिए। उनमें से किसी एक के भी दूषित पाये जानें को मस्तिष्क के क्षतिग्रस्त हो चुकने तथा जीवन के संकट में पड़े होने का संकेत है। इस कटाव के उपरान्त जीवन रेखा की समाप्ति अथवा विलीनता को जीवन की समाप्ति ही मानना चाहिए।

हमारे विचार में हृदय रेखा के सभी सम्भावित परिवर्तनों की जानकारी देने के स्थान पर हृदय रेखा के नियन्त्रक-नियामक सामान्य नियमों तथा संयोजक साधनों के संकेतों को प्रस्तुत करना कहीं अधिक उपयुक्त होगा। इस सन्दर्भ में प्रस्तुत उदाहरणों से सशक्त बनी तर्कशक्ति का उपयोग सार्थक सिद्ध होगा। इसके अतिरिक्त रेखाओं से मिलते-जुलते रूपों, संयोग और अन्तर आदि की जानकारी हो जाने पर सन्दर्भ ग्रन्थों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं रहेगी।

हृदय रेखा के आकार- प्रकार—स्रोत से अन्तिम छोर तक—का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। गहरी, निर्बाध, अखण्डित तथा द्वीप आदि किसी भी दोष से सर्वथा एवं पूर्णत: निर्दोष होने के साथ-साथ उचित परिमाण में लम्बी और साथ-ही-साथ रंजित (लालिमायुक्त) हृदय रेखा ही श्रेष्ठ व पूर्ण कहलाती है। ऐसी उत्कृष्ट हृदय रेखा व्यक्ति की शारीरिक दशा की उत्तमता का, रक्तसञ्चार के सुव्यवस्थित होने का तथा विचारों में स्थिरता-स्पष्टता की सूचक होती है। प्रेम सम्बन्ध में ऐसा व्यक्ति चञ्चल-भावुक न होकर विश्वसनीय होता है। वह एकनिष्ठ और उत्कट प्रेम करने वाला होने के साथ-साथ धीर, वीर, साहसी तो होता है, परन्तु प्रदर्शनप्रिय नहीं होता। न वह अपनी भावनाओं का प्रदर्शन करता है और न ही दुसरों से ऐसी आशा रखता है। उसकी संयत प्रकृति के कारण कभी-कभी उसे रूखा और बेपरवाह तक

समझ लिया जाता है, जबकि उसके चरित्र का अध्ययन करने पर यह सब कोरा भ्रम ही सिद्ध होता है। वास्तव में वह सच्चा, एकनिष्ठ और गम्भीर प्रेमी होता है।

हृदय रेखा का गहरा होना हृदय की स्थिति की गम्भीरता का द्योतक अवश्य है, परन्तु इस स्थिति में हृदय रोग का संकट उपस्थित नहीं होता। अतः इस स्थिति को देखकर स्वास्थ्य सम्बन्धी किसी आशंका को कभी नहीं पालना चाहिए। ऐसा व्यक्ति कभी और किसी एक-आध से प्रेम करता है, परन्तु उसकी विशेषता यह होती है कि वह इस प्रेम का जीवन-भर निर्वाह करता है। वह अपने परिचितों और प्रियजनों पर विश्वास करता है और कहीं से भी निराश होने पर विचलित हो जाता है। यद्यपि ऐसा व्यक्ति शान्त, संयत और सन्तुलित होता है, किसी प्रकार के ढोंग अथवा दिखावे में विश्वास नहीं करता, तथापि प्रचण्ड विद्युत्-धारा उसकी भावनाओं को तीव्र और गहरा बना देती है। अतः वह न तो मैत्री बनाने में उतावले होता है और न ही किसी पर अपना रोब गांठता है। अपने परिजनों एवं मित्रों के प्रति उसका प्रेम सच्चा, स्थायी, एकरस और निष्ठापूर्ण होता है। रेखा के स्वच्छ और स्पष्ट होने पर हृदय रेखा को निर्बाध प्रवाहित होने का अवसर मिलता है और फिर इससे हृदय ठीक ढंग से अपना कार्य करता है, जिसके फलस्वरूप हृदय में उठने वाले प्रणय-भाव सच्चे और सहज होते हैं।

छोटी-पतली हृदय रेखा वाले व्यक्ति को दूसरों की कोई चिन्ता नहीं होती। वह भीरु, कायर, कृपण, असहनशील और असंवेदनशील होता है। वह कभी किसी से सच्चा प्रेम नहीं करता। उसका प्रेम कोरा प्रदर्शन ही नहीं, अपितु उसके किसी स्वार्थ की सिद्धि का मात्र साधन होता है।

हाथ की अन्य रेखाओं की अपेक्षा वास्तव में ही अधिक पतली हृदय रेखा को ही पतली समझना चाहिए। इस प्रकार यह रेखा हाथ की अन्य रेखाओं की तुलना में अधिक सूक्ष्म अथवा पतली होती है। सभी प्रकार की हृदय रेखाओं को भली प्रकार समझने के उपरान्त ही सम्बद्ध व्यक्ति की हृदय रेखा के सम्बन्ध में भविष्यकथन करना चाहिए।

बृहस्पतिप्रधान और शुक्रप्रधान व्यक्तियों की हृदय रेखा सर्वोत्तम होती है। सूर्यप्रधान व्यक्ति को केवल तभी हृदय रोग से पीड़ित समझना चाहिए, जब रेखा पर ऐसे संकेत स्पष्ट दिखाई देते हों। हृदय रेखा पर संकेतों के मिलने पर भी यदि बाहर की रेखा उत्तम हो, तो इसका अर्थ होगा कि व्यक्ति के मनोभाव स्थिर और परिपक्व हैं। मंगलप्रधान व्यक्तियों की हृदय रेखा भी बढ़ी-चढ़ी होती है, जिससे उनके द्वारा न किये जाने वाले कुछ कार्य भी हो जाते हैं। बुधप्रधान व्यक्तियों की हृदय रेखा अन्य रेखाओं के शुभ संयोग से उत्तम बन जाती है। अन्य रेखाओं का शुभ संयोग न होने पर हृदय रेखा यह संकेत देती है कि बुधप्रधान व्यक्ति दूसरों के प्रति उपेक्षा और

अनादर के भाव रखता है। उसे अपनी स्वार्थपूर्ति से अधिक महत्त्वपूर्ण कुछ भी नहीं लगता। शनिप्रधान व्यक्ति के अन्य लक्षणों के उत्कृष्ट होने पर तो उसकी हृदय रेखा उत्तम होगी, परन्तु अन्यान्य लक्षणों के उत्तम न होने पर यह रेखा पतली होगी और स्थिति की विपरीतता की सूचना देगी। चन्द्रप्रधान व्यक्ति स्वभाव से ही स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित होते हैं। अत: उनकी हृदय रेखा पतली अथवा शृंखला के आकार वाली, सतही और सफ़ेद रंग की होती है।

पतली हृदय रेखा होने की सम्भावना से परे के वर्ग-विशेष के व्यक्ति के हाथ में पतली हृदय रेखा के मिलने पर किसी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए; क्योंकि इसमें किसी अनिष्ट की कोई सम्भावना नहीं होती। उदाहरणार्थ, शुक्रप्रधान व्यक्ति के हाथ में पतली हृदय रेखा चन्द्रप्रधान व्यक्ति के हाथ की पतली हृदय रेखा के समान ख़तरनाक नहीं होती।

चौड़ी और सतही रेखा न केवल हृदय की कार्यक्षमता को दुर्बल बनाती है, अपितु उसके मनोभावों को भी प्रभावित करती है। इस प्रकार सतही-चौड़ी हृदय रेखा वाला व्यक्ति चञ्चल स्वभाव का होता है। हां, शेष हाथ के उत्तम होने पर व्यक्ति भावुक, संवेदनशील और स्नेह करने वाला होता है। वह अपने प्रियजन से वैसे तो उत्कट और निश्छल प्रेम करता है, परन्तु उसका प्रेम स्थिर नहीं होता। किसी अन्य सुन्दर व्यक्ति के सम्पर्क में आते ही उसका मन बदल जाता है। वस्तुत: उसके भाव सतही और बिखरे हुए होते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति केवल अच्छे दिनों के साथी होते हैं, किसी के दिनों के फिरते ही वे उसका साथ छोड़ने में देर नहीं लगाते। इसके अतिरिक्त ये लोग इतनी तारीफ़ और ख़ुशामद से अपना काम निकलवाने में विश्वास रखते हैं। इनकी न मित्रता स्थाई होती है और न ही शत्रुता; क्योंकि इनका मुख्य उद्देश्य तो केवल अपना स्वार्थ साधना होता है।

उपर्युक्त विवेचन के सन्दर्भ में हमारा प्रबुद्ध पाठकों से अनुरोध है कि मित्रों का चुनाव करते समय ऐसे व्यक्तियों को दूर से ही प्रणाम करना अच्छा रहता है। ऐसे व्यक्तियों के साथ तो विवाह सम्बन्ध तथा अन्य किसी प्रकार का समझौता करने में भी विशेष सावधानी बरतनी चाहिए; क्योंकि ऐसे लोगों से विपत्ति पड़ने पर सहायता की आशा रखना व्यर्थ है।

चौड़ी-सतही हृदय रेखा वाले व्यक्ति के प्रधान पर्वत का निरीक्षण भी आवश्यक होता है; क्योंकि इससे अनेक जानकारियां मिलती हैं। उदाहरणार्थ, सूर्यप्रधान व्यक्ति के हाथ में सतही-चौड़ी हृदय रेखा का होना व्यक्ति के स्वास्थ्य में गड़बड़ी का सूचक होता है। यह स्थिति केवल तभी चिन्तनीय होती है जब नाख़ूनों की बनावट और रंगत दोषपूर्ण हो तथा जीवन रेखा पर अशुभ चिह्न हों। इसी प्रकार सभी रेखाओं की एकरूपता अथवा समानता भी व्यक्ति के अनेक दोषों से ग्रस्त होने का संकेत है।

शृंखलाकार रेखा विद्युत्-धारा के प्रवाह से सभी मार्गों में लगातार बाधा उपस्थित करती है, जिससे हृदय की क्रिया प्रभावित होती है। रक्तसञ्चार में विकार आने से हृदय की क्रिया में भी विकार आ जाता है। उन्नत कोटि—प्रथम, द्वितीय अथवा तृतीय वर्ग—की सूर्य की प्रधानता व्यक्ति के हृदय के रोगग्रस्त होने की निश्चित सम्भावना लिये रहती है। हृदय रेखा का शृंखलाकार होना तथा जीवन रेखा का दोषपूर्ण—पतला, द्वीपाकार, विशृंखलित तथा विभाजित आदि होना—हृदय रोग से मृत्यु की सम्भावना का सूचक है। इसी प्रकार हृदय रेखा का किसी एक स्थान पर बहुत गहरा प्रविष्ट होना भी विशेष चिन्ता का विषय होता है। जीवन रेखा पर नक्षत्र चिह्न होने का अर्थ तो व्यक्ति की अचानक हृदय-गति के रुकने और मृत्यु होने का संकेत है। दोनों हाथों में सूर्य पर्वत के नीचे इस संकेत—नक्षत्र—का होना सम्भावना को निश्चितता का रूप दे देता है।

शृंखलाकार हृदय रेखा से व्यक्ति अस्थिरचित्त तथा किसी भी विषय में निश्चय न ले पाने वाला डांवाडोल प्रवृत्ति का होता है। अभी-अभी किसी महानुभाव के प्रति प्रेम तथा सम्मान का प्रदर्शन करने वाला ऐसा व्यक्ति सहसा उसकी उपेक्षा ही नहीं, अपितु उससे घृणा करने लगता है। वस्तुत: वह व्यक्ति—''पल में तोला और पल में माशा''—का जीता-जागता उदाहरण होता है। संकोच, कृपणता, दुर्बलता, निर्लज्जता और अनिश्चितता उसके चरित्र के अंग बन जाते हैं। इसका कारण है—विद्युत्-धारा के प्रवाह का निरन्तर बाधित होना, जिससे उसके स्वास्थ्य, स्वभाव और चरित्र में निरन्तर परिवर्तन आता रहता है। हृदय रेखा के शृंखलाकार होने पर अन्य रेखाओं का गहरा और स्पष्ट होना भी विचारणीय बन जाता है। यदि सभी रेखाएं शृंखलाकार हों, तो उनके समान ही हृदय रेखा को भी दोषग्रस्त समझना चाहिए। हां, दोष के अनुपात में थोड़ा-बहुत अन्तर हो सकता है।

सभी प्रकार रेखाओं के फल को जानने के लिए रेखाओं का परीक्षण—दृढ़ता-शिथिलता, गहरी-सतही तथा शृंखलाकार-सीधी आदि—किया जाता है। सामान्यतया हृदय रेखा आरम्भ में तो स्पष्ट और गहरी होती है, परन्तु हाथ के दूसरे छोर तक पहुंचते-पहुंचते अपनी बनावट में कई मोड़ ले लेती है।

रेखाओं के गुण-दोष परिवर्तनों के सन्दर्भ में ही अपना प्रभाव दिखाते हैं। ज्यों ही रेखा की बनावट बदलती है, त्यों ही व्यक्ति का स्वभाव और चरित्र भी बदल जाता है। किसी रेखा में अचानक परिवर्तन आने से व्यक्ति के हृदय में भी परिवर्तन आ जाता है। अत: रेखा की काल-सीमा की जानकारी प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति की आयु और उसके स्वभावगत परिवर्तन के सम्बन्ध में भविष्यकथन सम्भव हो जाता है।

हृदय रेखा के निम्नोक्त गठन—(i) शनि की अंगुली के नीचे पहुंचने तक ज्यों

का त्यों बने रहना, (ii) इससे आगे सूर्य की अंगुली के नीचे तक चौड़ी-सतही बनी रहना, (iii) तत्पश्चात् पतली होकर बुध तक पहुंचना तथा (iv) अन्त में शृंखलाकार बन जाना—से व्यक्ति के स्वभाव-चरित्र सम्बन्धी निम्ननोक्त जानकारी प्राप्त होती है।

(i) व्यक्ति की 24-25 वर्षों की आयु तक उसके गुण पूर्ण विकसित रहे, (ii) 43 वर्षों की आयु तक गुणों में विस्तार के साथ-साथ बिखराव आया, (iii) 60 वर्षों की आयु तक इनमें से सार-तत्त्व—कुछ करने का उत्साह—जाता रहा तथा (iv) परवर्ती आयु में तो गुणों में संकोच आता गया (रेखाचित्र-48)। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जो व्यक्ति प्रथम आयु में स्नेह, सहृदयता, एकनिष्ठता और विश्वास की प्रतिमूर्ति था, जो परिपक्व अवस्था में परिवर्तित होकर दुर्बल, अस्थिरचित्त और आत्मनिष्ठ बन गया, तीसरी अवस्था में वह नितान्त निष्ठुर और पूर्णतः स्वार्थी हो गया और उससे अगली और अन्तिम—साठ से ऊपर की आयु—अवस्था में रक्तसञ्चार की अपर्याप्तता और शरीर की शिथिलता के कारण उसमें आत्मविश्वास का तत्त्व लुप्त हो गया और वह सर्वथा असमर्थ और पराश्रित बनकर रह गया।
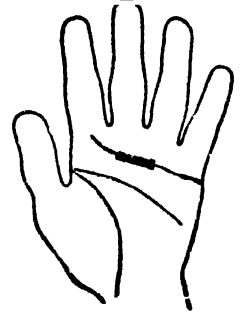
रेखाचित्र-48

इस उदाहरण से स्पष्ट है कि विभिन्न रूप लिये रहने वाली रेखा पर नियमों-लक्षणों को लागू करने पर कुछ स्पष्ट भविष्यकथन करना सरल नहीं होता; क्योंकि इन बनती-मिटती रेखाओं के कारण व्यक्ति के स्वभाव और चरित्र में अनेक ऐसे परिवर्तन आते हैं, जिन्हें किन्हीं नियमों के अन्तर्गत रखा ही नहीं जा सकता। हां, गहरी-सतही तथा पतली अथवा शृंखलाकार रेखाओं की पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति की प्रत्येक स्थिति के सम्बन्ध में भविष्यकथन करना सरल हो जाता है। किसी भी स्थिति का भविष्यकथन करते समय अतीत में घटी घटनाओं को रेखा की वर्तमान स्थिति से पूर्व भागों के लिए प्रासंगिक माना जाता है। इस प्रकार रेखाओं की सही जानकारी बीती घटनाओं की जानकारी पाने में सहायक होती है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि रेखा पर हुए परिवर्तनों और उनसे व्यक्त संकेतों से भावी घटनाओं का अनुमान लगाया जा सकता है। रेखा के विवेचन से पूर्व उसके स्वरूप पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। यह सुनिश्चित तथ्य है कि प्रायः सभी हृदय रेखाएं प्रारम्भ में गहरी और स्पष्ट होती हैं और अन्त में चौड़ी, सतही, शृंखला के आकार वाली अथवा झब्बेदार हो जाती हैं। इस परस्पर विरोधी स्थिति का कारण यह है कि जीवन के प्रारम्भिक बीस वर्षों में हृदय की गति सशक्त एवं तीव्र होती है, जबकि आयु के बढ़ने के साथ उसकी शक्ति धीरे-धीरे और क्रमशः क्षीण होती जाती है। इस प्रकार रेखा की गहराई और सुगढ़ता उसकी शक्ति का तथा

रेखा का सतही-संकरी होना शक्ति की क्षीणता का संकेत है। व्यक्ति अपने जीवन की प्रारम्भिक आयु में उत्साही, आशावादी तथा मानव-जाति के प्रति अनुराग की भावना लिये रहने वाला होता है, परन्तु आयु बढ़ने के साथ उसकी पहले वाली प्रवृत्तियां मन्द पड़ने लगती हैं, वह अधिक किये बिना ही दूसरों से प्रशंसा और मान-सम्मान पाने के लिये उत्सुक रहता है। इस अवस्था में वह दूसरों से प्यार और विश्वास पाने की भूख-सी लिये रहता है।

किसी भी रेखा का परीक्षण करते समय उसके रूप-रंग पर ध्यान देना आवश्यक होता है। इसके लिए रेखा के उद्‌गम-स्थल से उसके अन्त तक के विभिन्न स्थानों को अंगुली से दबाना चाहिए और देखना चाहिए कि इस दबाव से रक्त के प्रवाह की क्या स्थिति है। रक्तप्रवाह की शक्ति की जानकारी से रेखा की रंगत का परिचय मिल जाता है। रेखा में रक्त का निर्बाध प्रवाह रक्त की पर्याप्तता का सूचक है और इस स्थिति में रेखा का रंग लाल होगा। रेखा के रंग का सफ़ेद मिलना रक्त की मात्रा में कमी का और इसके फलस्वरूप प्रवाह के बाधित होने का सूचक है।

हृदय रेखा की उत्तमता-अनुत्तमता की जानकारी में रंग का बड़ा भारी महत्त्व होता है। रंग से ही व्यक्ति के सजीव-निर्जीव, उत्साही-अनुत्साही, ऊर्जा-सम्पन्न-ऊर्जाविहीन तथा आशावादी-निराशावादी होने का पता चलता है। रेखा के गहरी और स्पष्ट होने पर भी रंग की सफ़ेदी व्यक्ति के पूर्ण स्वस्थ होने की सूचक नहीं। इससे तो यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति के हृदय के विकास की सम्भावना होने पर भी कुछ ऐसा अवश्य घटा है, जिससे उसमें अवरोध अथवा क्षीणता आ गयी है। दोनों हाथों को देखने पर बायें हाथ की रेखा का रंग लाल और दायें हाथ की रेखा का रंग सफ़ेद मिलने पर यह समझना चाहिए कि मूलतः सुदृढ़ हृदय को किसी घटना से क्षति पहुंची है और अब वह पहले-जैसा सशक्त नहीं रहा। यह तो निश्चित ही है कि हृदय रेखा की सफ़ेद रंगत हृदय की सामान्य क्रिया के बाधित होने का और उसके फलस्वरूप व्यक्ति के मनोभावों के शिथिल होने का संकेत है। चन्द्रप्रधान व्यक्ति सर्वाधिक, उससे कुछ कम शनिप्रधान व्यक्ति और उससे और अधिक कम बुधप्रधान व्यक्ति उदासीन प्रकृति का होता है। सूर्यप्रधान, शुक्रप्रधान और बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति तो निराशा और उदासीनता को अपने पास ही नहीं फटकने देते। वे उत्साह, ऊर्जा, स्फूर्ति और शक्ति से सम्पन्न होते हैं। इन तीनों—सूर्य, शुक्र और बृहस्पति—पर्वत-प्रकारों को छोड़कर शेष पर्वत-प्रकारों के व्यक्तियों की रेखा की सफ़ेदी उत्साह को पर्याप्त मन्द करने वाली होती है।

रेखाओं का पतला, बारीक, चौड़ा, सतही और शृंखलाकार होने के साथ-साथ सफ़ेद रंग व्यक्ति की निस्तेजता और उत्साहशून्यता में और अधिक वृद्धि करने वाला होता है, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति अस्थिरचित्त, टाल-मटोल करने वाला

और स्वार्थी बन जाता है। स्थिति में सुधार अथवा बिगाड़ को देखने के लिए दोनों हाथों का निरीक्षण करना चाहिए।

गहरी रेखा का गुलाबी होना उसकी क्रिया के सामान्य एवं स्वस्थ होने का सूचक है, अर्थात् उसमें पर्याप्त ऊष्मा, दृढ़ता और विश्वसनीयता होती है। वस्तुत: गुलाबी रंगत लिये रहने वाली रेखा व्यक्ति को उत्साही और कार्यशील बनाती है। उसमें ऊर्जा और स्फूर्ति का सञ्चार करती है। यहां तक कि यदि निरुत्साही और उदासीन प्रकृति के पर्वत-प्रकार के व्यक्तियों की रेखा भी गुलाबी रंगत लिये हुए हो, तो समझना चाहिए कि उनमें स्फूर्ति और उत्साह का सञ्चार हो रहा है। वस्तुत: गुलाबी रंग पतली-महीन रेखा की स्वार्थपरता और संकीर्णता को चौड़ी-सतही अथवा शृंखलाकार रेखा की अस्थिरता और चञ्चलता को कम कर देती है। इस प्रकार लाल रंग रक्त की पर्याप्तता, प्रचुरता और उष्णता का संकेत देता है। अत: हृदय रेखा की लाली व्यक्ति के स्नेह-सम्बन्धों में दृढ़ता और प्रगाढ़ता को दिखाती है। यह रंगत व्यक्ति को आक्रामक स्तर तक प्रचण्ड शक्तिशाली बनाने के रूप में स्थिति के भयंकर होने को सूचित करती है। बुधप्रधान व्यक्तियों की हृदय रेखा का लाल रंग तो निरापद है, परन्तु अन्य पर्वत-प्रकारों के व्यक्तियों के लिए यह शुभ नहीं; क्योंकि लाल रंगत की हृदय रेखा वाले व्यक्तियों के भोजनभट्ट होने के कारण उनके रक्ताघात तथा हृदयाघात-जैसे रोगों से आक्रान्त होने का ख़तरा बना रहता है। अत: इसे वाञ्छनीय नहीं माना जाता। इसी प्रकार बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति की हृदय रेखा का लाल रंग लिये रहना किसी संकट का सूचक होने से ख़तरनाक होता है। बुधप्रधान व्यक्ति की हृदय रेखा की लाली व्यक्ति की प्रेम भावनाओं में प्रगाढ़ता और उत्तेजना लाने वाली होती है। चन्द्रप्रधान व्यक्ति की लाल हृदय रेखा व्यक्ति की उदासीनता, स्वार्थपरता और उत्साहशून्यता को दूर करती है तथा उसमें स्फूर्ति और ऊष्मा का सञ्चार करती है। इसी प्रकार शनिप्रधान व्यक्ति की हृदय रेखा की लाली मानव-जाति के प्रति उसकी घृणा की भावना को कम करती है, परन्तु इन सबके विपरीत शुक्रप्रधान और सूर्यप्रधान व्यक्तियों की हृदय रेखा को लाली उनके स्वभाव में उग्रता और प्रचण्डता लाने वाली होती है। यह लाली जितनी अधिक गहरी होती है, उतनी ही उग्र व प्रचण्ड होती है, जिसे अच्छा नहीं समझा जाता। यह बात अलग है कि पतली-बारीक, चौड़ी-सतही अथवा शृंखलाकार हृदय रेखाओं का लाल रंग प्राय: विरल रूप में ही मिलता है और जहां मिलता भी है, वहां उसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

उत्तम और गहरी रेखा का रंग पीला होने पर व्यक्ति अपने निकट सम्बन्धियों के प्यार पर सन्देह करने लगता है। उत्तम हृदय रेखा के होने पर भी पित्त-विकार से

प्रेम में उदासीनता आ जाती है। जिस व्यक्ति की हृदय रेखा अधिक पीली होती है, वह ढोंगी, धोखेबाज़ और दोमुंहा होता है। सफ़ेदी उदासीनता को और पीलापन दृष्टिकोण में विकृति को लाता है। पीली हृदय रेखा तो शनिप्रधान व्यक्ति को भी इस प्रकार ओछा, स्वार्थी और नीच बना देती है कि थोड़ा-सा अवसर पाते ही वह जघन्य अपराध करने से भी नहीं चूकता। पीली हृदय रेखा रखने वाले बुधप्रधान व्यक्ति का बुध पर्वत भी शिथिल हो, तो वह छली, धूर्त और पाखण्डी बन जाता है और कहीं से साधारण-सा प्रोत्साहन पाते ही खलनायक की भूमिका निभाने लगता है। वस्तुत: हृदय रेखा का पीलापन व्यक्ति के हृदय के दूषित और विषैला होने का सूचक है।

हृदय रेखा का नीलापन हृदय-गति के मन्द होने का संकेत है। सूर्यप्रधान व्यक्ति के लिए यह एक गम्भीर स्थिति है। यहां नाख़ूनों के आकार-प्रकार के दोषों, दूषित रक्तसञ्चार के कारण नाख़ूनों पर पड़ने वाले प्रभाव आदि पर विचार करना अपेक्षित होता है। इसके अतिरिक्त जीवन-वृत्ति के अन्त का संकेत देने वाले चिह्नों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे कि नीले रंग से हृदय रेखा को होने वाले संकट के परिमाण का अनुमान लगाया जा सके।

हृदय रेखा पर विद्यमान चिह्नों से किसी घटना अथवा आचरण से स्वास्थ्य की दशा को तथा जीवन में आने वाले दोष आदि को जाना तो जाता है, परन्तु यहां अधिकांश हस्तरेखाशास्त्री प्राय: उलझ जाते हैं और इस आधार पर किसी समस्या को सुलझा नहीं पाते; क्योंकि वास्तव में हृदय रेखा व्यक्ति की कार्य-दिशा को नया मोड़ देने वाले मनोभावों, मन:स्थितियों तथा गुणों के कारण घटित घटनाओं को उजागर करती है। इस प्रकार प्रत्येक हाथ से केवल इन दोनों—मनोभावों और घटित घटनाओं—की ही जानकारी मिलती है, किसी अन्य तीसरे तथ्य की जानकारी नहीं मिलती। रेखाओं में परिवर्तन आने का कारण मस्तिष्क पर गहरे प्रभाव का पड़ना होता है। इस प्रकार जहां किसी घटना का व्यक्ति के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा होता है, केवल वहां किसी तीसरे तथ्य की जानकारी सम्भव होती है। रेखा को अलग तौर पर देखने पर तो यह भी पता नहीं चलता कि यह स्वास्थ्य का संकेत है अथवा स्वभाव का सूचक है? माना तो यही जाता है कि हृदय रेखा व्यक्ति के हृदय की कार्य-शक्ति को प्रकट करती है। अत: इसे स्वास्थ्य का सूचक ही समझना उपयुक्त है। यदि व्यक्ति रुग्ण जाति अथवा वर्ग से सम्बन्धित नहीं, तो उसके स्वास्थ्य में विकार आने की कोई सम्भावना तो नहीं रहती, परन्तु नाख़ूनों के परीक्षण से यह देखा जाता है कि उनकी बनावट से तो कहीं हृदय रोग का संकेत नहीं मिलता अथवा नाख़ून अपने मूल में तो नीलापन लिये नहीं हैं; क्योंकि इन दोनों स्थितियों—दोषपूर्ण

बनावट तथा मूल में नीलापन—में से एक का भी होना स्वास्थ्य-दोष का सूचक है। रेखा का निरीक्षण करते समय इन तथ्यों—अनिश्चितता, विशृंखलता, विभक्तता, द्वीपाकारिता, आड़ा-तिरछा होना आदि—पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इन दोषों के मिलने पर यह देखना चाहिए कि हृदय रेखा पर अवस्थित दोष-चिह्न से निकलकर कोई रेखा जीवन रेखा तक तो नहीं जाती। वस्तुतः ये सभी दोष हृदय की कार्य-शक्ति में शिथिलता आने के परिणाम हैं। यदि शनि रेखा दो शाखाओं में बंटती है अथवा अन्य कोई दोष आते हैं, तो इन्हें जीवन-वृत्ति में रुकावट आने का संकेत समझना चाहिए। जीवन रेखा पर किसी दोष के सूचक आयु-बिन्दु पर बुध रेखा का रुकना व्यक्ति की आजीविका में रुकावट पड़ने का संकेत है। ऐसी स्थिति व्यक्ति के स्वास्थ्य सम्बन्धी दोष को अथवा विचारों एवं प्रेम सम्बन्धों में आने वाले परिवर्तनों के विशिष्ट प्रभाव की द्योतक होती है। यह लक्षण व्यक्ति के स्वभाव में परिवर्तन आने के सूचक हैं अथवा स्वास्थ्य में विकार के सूचक हैं—इसके सही निर्णय में दक्षता के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। हृदय रेखा की आमूल-चूल—प्रारम्भ से अन्त तक—जांच करने से दोषों की जानकारी का होना निश्चित है।

इस दोष का प्रथम रूप है—रेखा का द्विशाखी बन जाना। इसके निदान का वर्णन पहले ही किया जा चुका है। स्वास्थ्य में विकार के आते ही मुख्य रेखा दो भागों में बंट जाती है और फिर इससे जीवनधारा का विभाजन हो जाता है, जो गम्भीर परिणाम का सूचक है। इससे दोनों—रक्तसञ्चार और हृदय—की दुर्बलता उजागर होती है। अतः बंटी हुई रेखाओं पर उनके बदले हुए मार्ग के सन्दर्भ में विचार करना चाहिए।

द्विशाखी रेखा के स्थल, आकार और दूसरी शाखा के निकलने पर अपनाये गये मार्ग की जांच-परख करना भी अपेक्षित होता है। कोई विखण्डित रेखा मूल रेखा की ऊर्ध्वगामी होती है, तो कोई उसकी अधोगामी होती है। सभी ऊर्ध्वगामी रेखाएं अधोगामी रेखाओं की अपेक्षा व्यक्ति के अधिक अनूकूल होती हैं। ऊर्ध्वगामी रेखाएं व्यक्ति के स्वास्थ्य की उत्तमता का संकेत देती हैं। हृदय रेखा से अलग हुई और किसी पर्वत के ऊपर अथवा समीप पहुंचने वाली रेखाएं व्यक्ति के सम्बन्धित गुणों-विशेषताओं आदि को प्रकट करती हैं। वस्तुतः विशिष्ट पर्वत का आकर्षण ही हृदय रेखा के विभाजित और द्विशाखी होने का कारण बनता है। इस प्रकार बृहस्पति पर्वत के नीचे हृदय रेखा का विभाजित होकर द्विशाखी होना बताता है कि सम्बद्ध व्यक्ति बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति के प्रति अनुरक्त और आकृष्ट होता है (रेखाचित्र-49)। वस्तुतः ऐसे व्यक्ति धन की अपेक्षा प्रतिष्ठा के अधिक भूखे होते हैं; क्योंकि मूलतः वे महत्त्वाकांक्षी होते हैं।
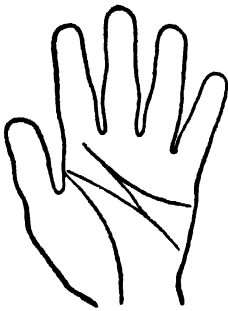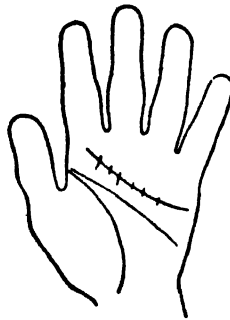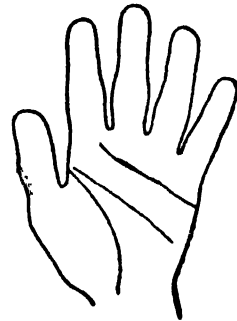
रेखाचित्र-49 *रेखाचित्र-50* *रेखाचित्र-51*

दो-दो शाखाओं में बंटी और शनि पर्वत की ओर बढ़ती हृदय रेखा व्यक्ति के शनिप्रधान होने पर अथवा न होने पर शनि सम्बन्धी गुणों के प्रति उसके प्रबल आकर्षण को प्रकट करती है। ऐसे व्यक्ति के मानसिकलोक के विकसित होने पर उसका आकर्षण का केन्द्र शनिप्रधान परिश्रमी विद्वान् होता है। मध्यलोक के प्रभावी होने पर उसके आकर्षण का केन्द्र कृषि-वैज्ञानिक, खनन-विशेषज्ञ अथवा वनस्पतिशास्त्री होता है और निम्नलोक के सर्वाधिक शक्तिशाली होने पर उसके आकर्षण का केन्द्र शनि की आदर्श चित्तवृत्ति, (रेखाचित्र-50) सौम्यता, विवेक और गहरी सूझ-बूझ वाला व्यक्ति होता है। इस तथ्य की पुष्टि शनि की सन्तुलन-चक्र की आवश्यकता के इच्छुक व्यक्तियों के हाथों की परख से हो चुकी है। इसी प्रकार सूर्य पर्वत के नीचे से आरम्भ होने वाली द्विशाखी रेखा वाले व्यक्ति का आकर्षण सूर्यप्रधान व्यक्ति के प्रति होता है। विकसित मानसिक लोक वाले व्यक्ति के लिए कलाकार आदर्श एवं आकर्षण केन्द्र होते हैं, तो विकसित मध्यलोक वाले व्यक्ति के आदर्श उत्कृष्ट एवं सुरुचिपूर्ण वेशभूषा धारण करने वाले व्यक्ति होते हैं। इस प्रकार हृदय रेखा से निकली और विभक्त रेखा व्यक्ति को सूर्य के गुणों के प्रति आकृष्ट करती है। इसी सन्दर्भ में सूर्यप्रधान गुणों-विशेषताओं की तालिका को भी देखा जा सकता है (रेखाचित्र-51)।

विभक्त हृदय रेखा का बुध पर्वत पर जाने का अर्थ—व्यक्ति का बुध सम्बन्धी गुणों के प्रति आकृष्ट होना (रेखाचित्र-52) है। बुध पर्वत के विकसित होने पर उसके आकर्षण का केन्द्र वक्तृत्व कलाकुशल व्यक्ति होते हैं, मध्यलोक के विकसित होने पर उसके लिए आदर्श होते हैं—वैज्ञानिक और निम्नलोक के विकसित होने पर वह धन कमाने वाले व्यक्तियों को अपना आदर्श बनाता है।

रेखा दो पर्वतों में से किस पर्वत पर द्विशाखी होकर पहुंचती है—इसका निर्णय स्पष्ट स्थिति के आधार पर करना चाहिए (रेखाचित्र-53)। हृदय रेखा से

अधोगामी रेखाओं से हृदय और मस्तिष्क के बीच संघर्ष का तथा मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ने का पता चलता है। सूक्ष्म (महीन) रेखाएं व्यक्ति की संकल्प-विकल्प
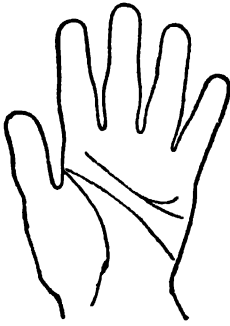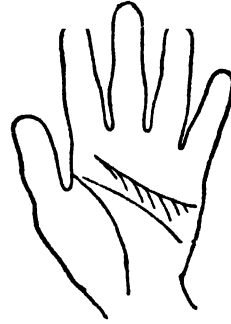
रेखाचित्र-52 रेखाचित्र-53

में उलझी मन:स्थिति की द्योतक हैं। पहले के हस्तरेखाशास्त्री इन अधोगामी रेखाओं को 'प्रेम', 'व्यथा' एवं 'निराशा' का संकेत मानते थे। उनकी इस धारणा का आधारभूत तथ्य था—भावनाप्रधान हृदय और चिन्तनप्रधान मस्तिष्क—में प्रेम के सम्बन्ध में आशा-निराशा की स्थिति का चलना स्वाभाविक है। ऐसे व्यक्तियों के हृदय से भावुक और मस्तिष्क से चिन्तक होने के कारण पुरातन हस्तवेत्ताओं का ऐसा सोचना कदाचित् सार्थक ही था।

किसी बड़ी रेखा के हृदय रेखा से अलग होने और धीरे-धीरे मस्तक रेखा की ओर झुकने तथा फिर उसमें मिल जाने का अर्थ होता है—मस्तिष्क से प्रभावित हृदय द्वारा अपनी भावुकता का पूर्ण परित्याग करना (रेखाचित्र-54)। रेखा के प्रकट होने के स्थल से भावुकता की समाप्ति के समय व्यक्ति की आयु का और मस्तक रेखा में विलीन होने के बिन्दु से व्यक्ति की भावुकता पर पूर्ण नियन्त्रण लगने के समय व आयु का पता चलता है।
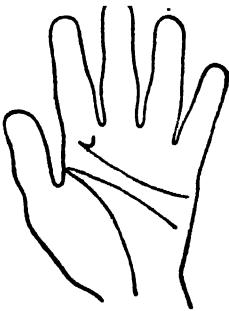
रेखाचित्र-54 रेखाचित्र-55 रेखाचित्र-56
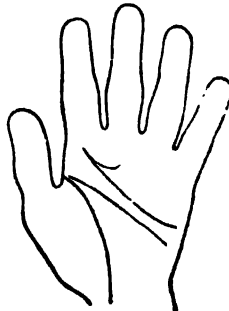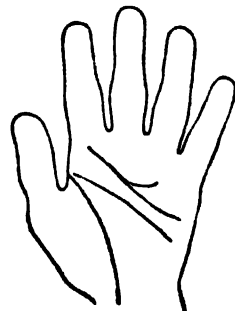
हृदय रेखा को काटकर जाती आड़ी रेखाएं हृदय को क्षुब्ध करती हैं, अर्थात् व्यक्ति या तो अस्वस्थ-चित्त हो जाता है या फिर प्रेम सम्बन्धों में चिन्तित हो उठता है (रेखाचित्र-55)। इन दोनों—स्वास्थ्य अथवा प्रेम सम्बन्ध—के निणर्य के लिए विचार करने की आवश्यकता होती है। रेखाओं की गहराई स्वास्थ्य सम्बन्धी दोष की तथा रेखाओं की लघुता हृदय सम्बन्धी चिन्ता की सूचक होती हैं। अत्यधिक गहरी रेखाएं स्वास्थ्य-विकार की गम्भीरता की ओर संकेत करती हैं। अनर्थ की प्रभविष्णुता के लिए रेखाओं का परीक्षण करना होता है।

हृदय रेखा को अनेक स्थानों पर काटती हुई आड़ी रेखाएं व्यक्ति के निरन्तर कष्ट-ग्रस्त रहने का संकेत देती हैं। हृदय रोग की स्थिति में आड़ी रेखाएं स्पन्दन सम्बन्धी और कपाल सम्बन्धी कष्टों की सूचना देती हैं। प्राय: देखा जाता है कि इन रेखाओं के होने पर हृदय रेखा अन्त तक पहुंचने पर मन्द तथा दोषपूर्ण हो जाती है। व्याधि से जुड़ी इन रेखाओं से यह पता चलता है कि हृदय रेखा में जहां-जहां भी ये रेखाएं होंगी, व्यक्ति को उस आयु में अपने प्रेम सम्बन्धों में निरन्तर मनमुटाव झेलना पड़ेगा।

हृदय पर्वत पर विद्यमान दोषों का सूर्य पर्वत के नीचे होना स्थिति को गम्भीर बना देता है। हृदय रेखा में द्वीप तो सदैव ही दोष-रूप होते हैं (रेखाचित्र-56); क्योंकि वे सदैव विद्युत्-धारा के प्रवाह में अवरोध बनते हैं तथा प्रवाह को क्षीण कर देते हैं, जिससे हृदय की शारीरिक क्रिया दुर्बल हो जाती है। द्वीप का आकार ही समस्या की गम्भीरता का पता देता है। बिन्दु-जैसे छोटे द्वीप अस्थाई गड़बड़ी के और गहरे तथा बड़े आकार वाले द्वीप जीवन पर भारी ख़तरे के सूचक होते हैं। हृदय रेखा में पर्वतों के नीचे मिलने वाले द्वीपचिह्न पर्वत-प्रकार के दोषों में वृद्धि करने के साथ-साथ हृदय रोग की आशंका को भी पुष्ट कर देते हैं। इन चिह्नों के दृष्टिगोचर होने पर व्यक्ति के पर्वत-प्रकार का और विशिष्ट रोग का तथा हृदय की दुर्बलता का पता लगाना चाहिए। हाथ के किसी अन्य भाग में आकस्मिक रेखाओं के हृदय रेखा पर बने द्वीप तक अथवा द्वीप के समीप तक जाने पर रेखाओं के उद्गम-स्थल से ही इनकी गहरी जांच-परख करनी चाहिए। विभक्त रेखाओं के हृदय रेखा से उठते-गिरते हुए द्वीप तक पहुंचने पर इनके समाप्ति-बिन्दु से द्वीप के परिणाम की यत्किञ्चित् जानकारी पायी जा सकती है। द्वीप के दीखने पर इसके स्वास्थ्य सम्बन्धी दोष होने-न होने का निर्णय करना चाहिए। अधिकांशत: तो यह स्वास्थ्य-दोष ही होता है; परन्तु फिर भी द्वीप बनने के स्थान तथा आकस्मिक एवं अन्यान्य रेखाओं से प्रेम-प्रसंगों में निराशा का पता भी चल जाता है।

सूर्य पर्वत के नीचे हृदय रेखा पर अवस्थित द्वीपचिह्न निश्चित रूप से स्वास्थ्य का सूचक होता है। नाख़ूनों की जांच-परख से इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है। हृदय

रेखा पर बिन्दुओं का मिलना भी स्वास्थ्य-दोष (हृदय रोग) का संकेत है। बिन्दुओं के आकार से विकार की दशा—सामान्यता अथवा गम्भीरता आदि—का पता चलता है (रेखाचित्र-57)। यदि अन्यत्र कहीं हृदय रोग के लक्षण दिखाई न दें और बिन्दु का आकार भी लघु हो, तो स्थिति को सामान्य समझना चाहिए। इसके विपरीत हृदय रोग के अन्यत्र अन्यान्य लक्षण भी उपलब्ध हों और बिन्दु का आकार भी बड़ा हो, तो लक्षणों के अनुरूप रोग की गम्भीरता का अनुमान लगाना चाहिए।
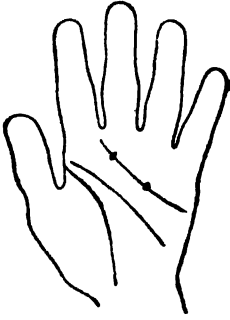
रेखाचित्र-57
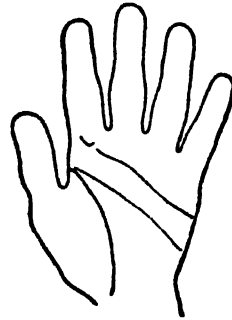
रेखाचित्र-58

हृदय रेखा में प्राय: स्थान-स्थान पर छोटी-बड़ी टूट-फूट अबाध अथवा थोड़ी-थोड़ी दूरी पर अथवा रेखा के एक छोर का अपने मार्ग से हटकर चलना—किसी गम्भीर घटना के घटित होने का परिणाम होता है (रेखाचित्र-58)। विशृंखलित रेखाएं सदैव गम्भीर चिन्ता का विषय होती हैं। टूट-फूट का अन्तर अधिक हो अथवा लम्बाई अधिक हो, तो इसे गम्भीरता से लेना चाहिए। निम्नोक्त लक्षण गम्भीर समस्या के घातक प्रभावों में कमी ला देते हैं— (i) रेखा को गोलाई में लपेटने वाले सुधार-चिह्न, (ii) अन्तराल को ढंकती सहायक रेखाएं, (iii) टूटी हुई रेखा को चारों ओर से घेरता हुआ वृत्त तथा (iv) धारा के प्रवाह को नियत दिशा में बनाये रखने में सहायक किसी अन्य चिह्न की उपस्थिति।

स्वास्थ्य-दोषसूचक रेखा का विशृंखलन अथवा अन्तराल (अन्तर, दूरी) आदि स्वास्थ्य में विकृति को उजागर करने वाले दोष होने के कारण अस्वास्थ्य-संकेत कहलाते है। इन दोषों के होने पर भी स्वास्थ्य के ठीक-ठाक होने पर इन्हें प्रेम सम्बन्धों में सम्भावित बाधा के संकेत मानने चाहिए। टूटी हुई रेखा के एक सिरे के बृहस्पति पर्वत तक चले जाने को व्यक्ति की प्रेम में असफलता का अथवा विरह से व्यथित होने का निश्चित प्रमाण समझना चाहिए। हृदय रेखा का अथवा किसी विभक्त रेखा का बृहस्पति की ओर झुकाव वैसे तो व्यक्ति द्वारा बृहस्पति के गुणों से आकृष्ट होना है, परन्तु रेखा में आने वाली दरार अथवा दूरी के स्वास्थ्य-विकार

सूचक होने पर व्यक्ति के भोजनभट्ट होने के कारण उसका हृदय रोग से ग्रस्त होना सम्भव है। हृदय रोग की गड़बड़ी के कारण को जानकर और फिर आवश्यक सुधार करके हृदय को क्रियाशील बनाया जा सकता है। विशृंखलित हृदय रेखा के स्वास्थ्य-विकार का सूचक न होने पर इस कटाव को किसी बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत की जा रही बाधा का अथवा व्यक्ति की अत्यधिक महत्त्वाकांक्षा (आपूर्ति के कारण उत्पन्न निराशा) का अथवा उसके अभिमान का सूचक समझना चाहिए। अतः रेखा टूटने के समय और उसकी परवर्ती स्थिति पर तथा आये परिवर्तनों पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। इन तथ्यों से विशृंखलन के परिणाम की जानकारी हो जाती है। रेखा के पतली अथवा शृंखलाकार अथवा अन्य किसी दोष से ग्रस्त होने को समस्या की निरन्तरता का और इसके विपरीत रेखा के आगे चलकर गहरा हो जाने को विषम स्थिति के टलने का संकेत समझना चाहिए। हृदय रेखा के द्वारा प्रत्येक परिवर्तन की आयु-विशेष को जानना सम्भव होता है।

हृदय रेखा का शनि पर्वत के नीचे टूटना और फिर टूटी हुई रेखा के शनि पर्वत पर चढ़ने पर सर्वप्रथम स्वास्थ्य-विकार पर विचार करना उचित है (रेखाचित्र-59)। शनि के कारण इस स्थिति में व्यक्ति गठिया और गांठों के उभरने, जोड़ों में दर्द और हृदय की गतिविधि में अव्यवस्था-जैसे रोगों से आक्रान्त हो सकता है।

जीवन रेखा की स्थिति से व्यक्ति के स्वास्थ्य में गड़बड़ी की तीव्रता अथवा मन्दता का अनुमान भी लगाया जा सकता है। जीवन रेखा की दूरी के स्वास्थ्य को प्रभावित न करने पर टूट के लिए उत्तरदायी कारण—शनिप्रधान व्यक्ति अथवा शनि के गुण—पर विचार करना अपेक्षित होता है। पर्वत-प्रकार की स्थिति के भी स्वास्थ्य पर अथवा प्रेम सम्बन्धों पर पड़ने वाले प्रभाव की सूचक होने के कारण उसका निरीक्षण भी आवश्यक हो जाता है।
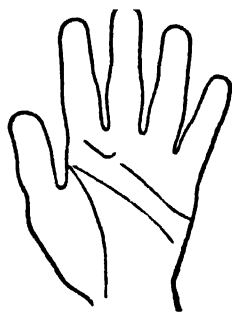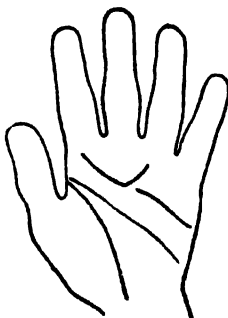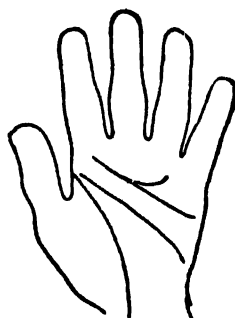
रेखाचित्र-59 *रेखाचित्र-60* *रेखाचित्र-61*

सूर्य पर्वत के नीचे वाले क्षेत्र में हृदय रेखा में आयी टूट-फूट को निश्चित रूप

से स्वास्थ्य-विकार का लक्षण समझना चाहिए (रेखाचित्र-60)। इस स्थिति में हृदय रोग के सूचक अन्यान्य लक्षणों की जांच-परख करना भी आवश्यक होता है; क्योंकि इस टूट-फूट के होने पर भी सभी सूर्यप्रधान व्यक्तियों का हृदय रोग से पीड़ित होना आवश्यक नहीं। हां, सूर्य पर्वत के ऊपर चढ़ने की स्थिति में टूटी हुई हृदय रेखा का गहरा तथा लाल रंग का हो जाना रोग के सुनिश्चित होने का सूचक है। यदि ऐसे कोई स्वास्थ्य सम्बन्धी संकेत नहीं हों, तो इन लक्षणों को व्यक्ति के प्रेम सम्बन्धों पर सूर्यप्रधान गुणों वाले किसी व्यक्ति के प्रभाव का संकेत समझना चाहिए। व्यक्ति के तैंतालीस वर्ष की आयु का होने पर सूर्य पर्वत के नीचे हृदय रेखा में यह दूरी देखने को मिलती है। इससे कम आयु में सूर्यप्रधान व्यक्ति के प्रबल आकर्षण का केन्द्र बनने पर हृदय रेखा में स्थित बिन्दु से आने वाली और सूर्य पर्वत तक जाने वाली आकस्मिक रेखा उसी अनुपात में कम आयु को दर्शाती है (रेखाचित्र-61)।

बुध पर्वत के नीचे हृदय रेखा की टूट-फूट एक तो बुध पर्वत के गुणों से उत्पन्न होने वाली अथवा हृदय रेखा पर अवस्थित बुध की स्थिति के व्यक्ति को साठ वर्ष की आयु की संकेतक होने और दूसरे इस अवस्था में हृदय की कार्यक्षमता में शिथिलता अथवा गड़बड़ी आ जाने के स्वाभविक होने के कारण इसे स्वास्थ्य-दोष नहीं मानना चाहिए (रेखाचित्र-62)। रेखा के इस विशृंखलन के स्वास्थ्य से सम्बन्धित होने-न होने के निर्णय के लिए समय, आयु तथा हृदय की दुर्बल स्थिति से उत्पन्न होने वाले परिणाम आदि पर विचार करना चाहिए। यौवन के आवेश के साथ प्रेम सम्बन्धों की आतुरता के भी मन्द पड़ जाने के कारण इस आयु में रेखा के विशृंखलन का कारण प्रेम सम्बन्ध नहीं हो सकता। व्यक्ति के किसी अन्य बुधप्रधान व्यक्ति द्वारा प्रभावित होना भी बुध के नीचे की रेखा के टूटने से नहीं, अपितु रेखाचित्र-61 में प्रदर्शित आकस्मिक रेखा की टूटन से स्पष्ट होता है।

उपर्युक्त सभी प्रकार के टूटनों का एकमात्र कारण हृदय रेखा का किसी पर्वत की ओर जाना है। कभी-कभी हृदय रेखा की टूटन केवल अवधि में टूट के कारण होती है (रेखाचित्र-63)। इस प्रकार हृदय रेखा की स्थान-स्थान पर टूटन के दो ही अर्थ हैं—स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार अथवा प्रेम सम्बन्धों में दरार। इस विकार अथवा दरार की सामान्यता अथवा गम्भीरता के निर्णय के लिए हृदय रेखा की टूट अथवा दूरी का अध्ययन किसी एक निर्धारित योजना के आधार पर करना चाहिए। एक से अधिक स्थानों पर खण्डित हृदय रेखा को व्यक्ति के हृदय की कार्यशीलता में निरन्तर और बार-बार क्षीणता के आने का अथवा प्रेम सम्बन्धों में निरन्तर दरार पड़ने का संकेत समझना चाहिएं (रेखाचित्र-64)। विशृंखलित रेखाओं के सिरों का पर्वतों के नीचे की ओर मुड़ने का अर्थ है—व्यक्ति के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ना और इसके फ़लस्वरूप उसके उत्साह और उदासीनता में संघर्ष की स्थिति का पनपना।
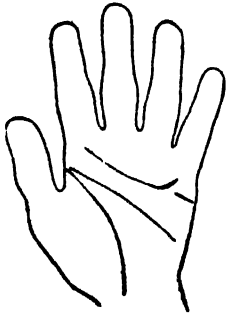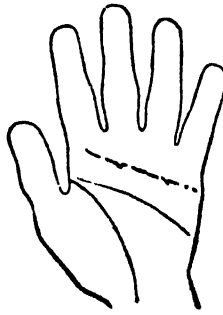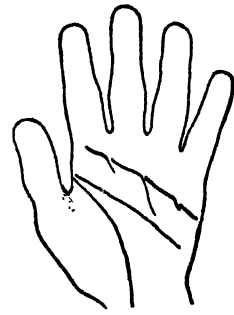
रेखाचित्र-62 *रेखाचित्र-63* *रेखाचित्र-64*

विश्रृंखलित रेखाओं का लम्बा न होना, अर्थात् कम लम्बा होना यह संकेत देता है कि हृदय पर मस्तिष्क का प्रभाव तो अत्यन्त साधारण है, परन्तु हृदय रेखा मस्तिष्क में विलीन हो रही है, अर्थात् धीरे-धीरे चिन्तन भावना को शून्य कर रहा है। इस स्थिति नें रेखा में आयी टूट से बीच की दीवार का अधिक हो जाना यह दर्शाता है कि व्यक्ति मस्तिष्क के प्रभाव से मुक्त होने की कभी सोच ही नहीं सकता। इसके विपरीत अन्तराल के थोड़ा होने पर वह उदार होता है (रेखाचित्र-65)। विवेकशील हस्तरेखाविद् प्रत्येक विश्रृंखलन अथवा विच्छेदन पर विचार करके घटनाओं के रूपों और कारणों की सही-सही जानकारी दे सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि भिन्नताएं अनन्त और असीम हैं, परन्तु फिर भी कुशल हस्तरेखाविद् के लिए सामान्य और विशेष नियमों-सिद्धान्तों के आधार पर तथ्यों का परीक्षण करके प्रत्येक भिन्नता के अन्तर को समझना और फिर सही परिणाम निकालना कठिन नहीं होता।
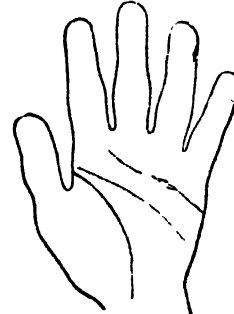
रेखाचित्र-65 *रेखाचित्र-66* *रेखाचित्र-67*

विश्रृंखलित हृदय रेखा के नीचे गिरने वाले सिरे के तेज़ी से मस्तक रेखा को

काटने का कारण स्वास्थ्य विकार अथवा प्रेम सम्बन्धों में असफलता आदि कुछ भी हो सकता है, परन्तु इतना निश्चित है कि व्यक्ति का मस्तिष्क बुरी तरह से आहत हुआ है (रेखाचित्र-66)।

मस्तक रेखा के कटने पर दोनों रेखाओं के मिलन-स्थल पर किसी नक्षत्र का दीखना यह संकेत देता है कि व्यक्ति मस्तिष्क पर हुए घातक विस्फोट के परिणामस्वरूप तीव्र ज्वर अथवा असह्य शिरोवेदना से दुखी है (रेखाचित्र- 67)। इस स्थिति में मृत्यु की सम्भावना को सुनिश्चित करने से पूर्व दोनों—जीवन और मस्तिष्क रेखाओं की कटाव के बाद—की स्थिति पर ध्यान देना चाहिए (रेखाचित्र-68)। मस्तक रेखा में
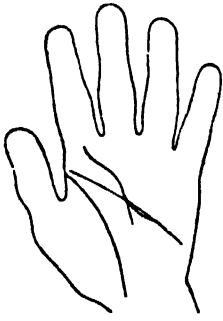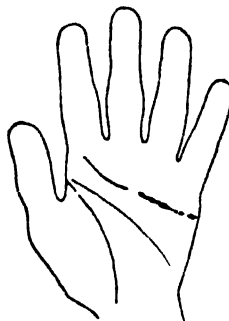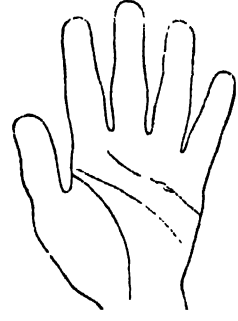
रेखाचित्र-68 *रेखाचित्र-69* *रेखाचित्र-70*

द्वीपचिह्न का दीखना स्थिति की भयंकरता का सूचक है और इस भयंकरता का सम्बन्ध द्वीपचिह्न के अस्तित्व से है, अर्थात् जब तक यह द्वीपचिह्न बना रहेगा, तब तक स्थिति भी विषम बनी रहेगी। मस्तक रेखा का अध्ययन करके इस द्वीप के बनने के समय का, अर्थात् व्यक्ति की आयु का अनुमान लगाया जा सकता है। हृदय रेखा टूटकर शृंखलाकार हो जाती हो, तो समझना चाहिए कि व्यक्ति पर घटना का भाव स्थाई ही नहीं, अपितु चिरस्थाई है (रेखाचित्र-69)। टूटने के उपरान्त एक अथवा एकाधिक द्वीपों के बने रहने से स्थिति की विषमता की अवधि की जानकारी मिलती हैं (रेखाचित्र-70)।

रेखा के विशृंखलित होने पर मध्यवर्ती रिक्त स्थान से नक्षत्र का स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होना बड़ा ही ख़तरनाक संकेत है। इससे व्यक्ति की या तो अचानक मृत्यु हो जाती है और या वह गम्भीर रूप से हृदय रोग का शिकार होता है (रेखाचित्र-71)। विशृंखलित रेखा के दोनों छोरों पर आड़ी रेखा की स्थिति तो व्यक्ति की हृदय रोग से मृत्यु को निन्यानवे प्रतिशत की मात्रा तक सुनिश्चित करती है। इसके अतिरिक्त इससे पञ्चानवे प्रतिशत व्यक्तियों की हृदय-गति का अचानक रुकना और उनका मृत्यु का ग्रास बनना निश्चित हो जाती है। इस नक्षत्र का सूर्य पर्वत के नीचे

होना इस संकट की पुष्टि करता है (रेखाचित्र-72)। वस्तुतः रेखा का भंग होना अथवा किसी आड़ी रेखा द्वारा कटने से विद्युत्-धारा का प्रवाह बाधित हो जाता है
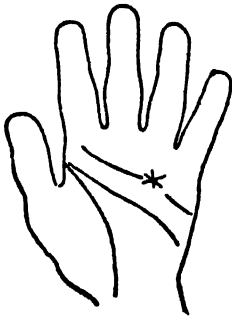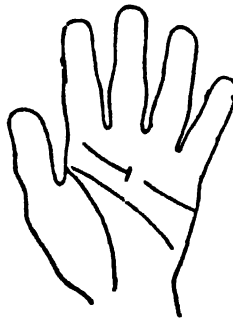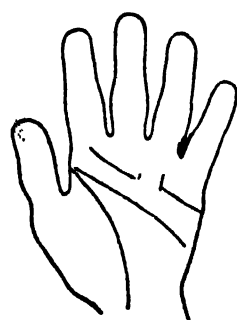
रेखाचित्र-71 *रेखाचित्र-72* *रेखाचित्र-73*

तथा इससे अचानक मृत्यु का संकेत भी मिलता है। विषय की गम्भीरता का पता लगाने के लिए रेखा की विशृंखलता में सुधार की तथा विद्युत्-धारा के प्रवाह को सही दिशा मिलने की स्थिति को देखना चाहिए। इसी से वस्तुस्थिति उजागर हो जाती है। किसी सहायक रेखा द्वारा आड़ी रेखाओं के सिरों के जुड़ाव को सुधार का एक उत्तम लक्षण एवं प्रयास समझना चाहिए(रेखाचित्र-73)। इस प्रकार के प्रयास में विशृंखलन के समय किसी भयंकर संकट की सम्भावना को तो नकारा नहीं जा सकता, पुनरपि सहायक रेखा द्वारा विद्युत्-धारा के प्रवाह को सही मार्ग पर पहुंचा देना सर्वथा उत्तम ही माना जाता है (रेखाचित्र-74)।
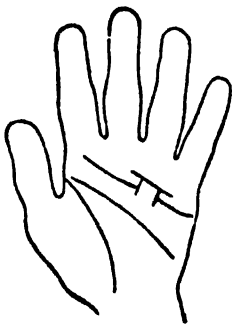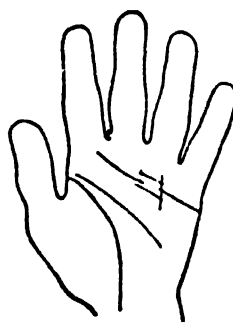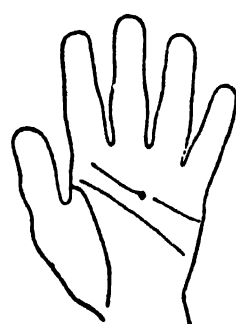
रेखाचित्र-74 *रेखाचित्र-75* *रेखाचित्र-76*

एक वर्गचिह्न विशृंखलन से होने वाली गम्भीर क्षति—हृदय की कार्यक्षमता में बाधा—को संयत करने के रूप में उसकी पूर्ति कर लेता है (रेखाचित्र-75)। वर्गचिह्न की उत्तमता तो विद्युत्-धारा के हृदय में पुनः प्रवेश की सम्भावना को बल प्रदान करती है।

विशृंखलित हृदय रेखा के सिरे पर एक अत्यन्त स्पष्ट बिन्दु का उभार इस रेखा से संकेतित आयु में व्यक्ति के गम्भीर रूप से हृदय रोग का शिकार होने की सूचना है (रेखाचित्र-76)। जहां अत्यन्त बड़ा और अत्यन्त गहरा बिन्दु हृदय रोग की भयंकरता तथा असाध्यता का संकेत है, वहां छोटा और उथला बिन्दु साधारण एवं साध्य हृदय रोग का सूचक है।

हृदय रेखा पर नक्षत्र के चिह्न की उपस्थिति उत्थान की सूचक भी हो सकती है और पतन की भी। जब इसका सम्बन्ध अस्वास्थ्य से होता है, तो इसका अर्थ हृदय रोग को ही समझना चाहिए। छोटा और बनावट में अटपटा नक्षत्र व्यक्ति के हृदय के भीषण आघात से ग्रस्त होने का सूचक है (रेखाचित्र-77)। इस नक्षत्र का शनि पर्वत के नीचे दीखना हृदय रोग के साथ जटिल सन्धिवात—जोड़ों के दर्द—से भी जुड़ जाना समझना चाहिए।
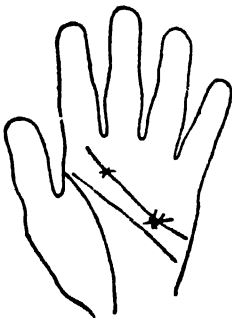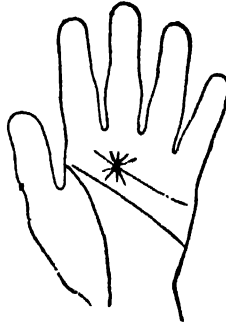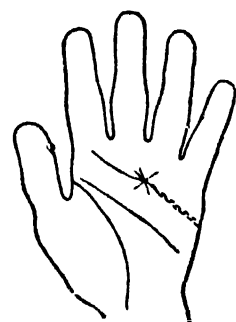
रेखाचित्र-77 *रेखाचित्र-78* *रेखाचित्र-79*

आकार में बड़ा, बनावट में सुगढ़ और ठीक रेखा पर केन्द्रित नक्षत्र विस्फोट का सूचक होता है (रेखाचित्र-78)। नक्षत्र द्वारा चिह्नित रेखा द्वारा संकेतित आयु में व्यक्ति की हृदय-गति सहसा रुक जाती है और वह नामशेष हो जाता है।

नक्षत्र के पश्चात् रेखा का शृंखला का आकार ले लेना व्यक्ति के हृदय के गम्भीर आघात का शिकार होना और इससे पूर्ण रूप से कभी न उभर पाना दर्शाता है (रेखाचित्र-79)। नक्षत्र के उपरान्त द्वीपचिह्न व्यक्ति के हृदय रोग के भयंकर आघात से पीड़ित होने को दर्शाता है (रेखाचित्र-80) और साथ ही यह भी संकेत देता है कि द्वीपचिह्न के विद्यमान रहने तक स्थिति का विषम बने रहना सुनिश्चित है। जीवन रेखा से घटना के घटित होने के समय व्यक्ति की आयु की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। नक्षत्र के पश्चात् रेखा का पतलापन और उसकी संकीर्णता से पता चलता है कि नक्षत्र द्वारा संकेतित रोग से व्यक्ति के हृदय की कार्यक्षमता के पूर्णतः नष्ट हो जाने के कारण उसका हृदय स्थायी रूप से दुर्बल हो गया है और इसके

फलस्वरूप वह न केवल प्रेम सम्बन्धों से विरत एवं उदासीन हो गया है, अपितु उसके विचारों में भी संकीर्णता, तुच्छता और अस्थिरता आ गयी है (रेखाचित्र-81)।
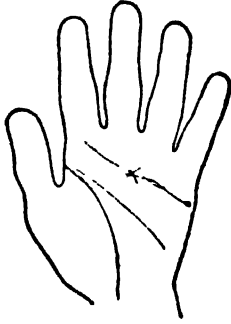
रेखाचित्र-80
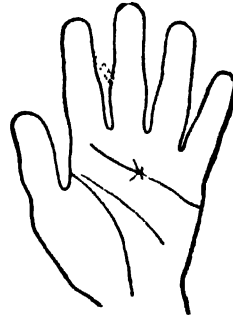
रेखाचित्र-81

हृदय रेखा के विभिन्न भागों में विभिन्न परिवर्तनों की सम्भावना रहती है और इन सभी परिवर्तनों के प्रारम्भ से अन्त तक हृदय रेखा की क्रिया में भी भिन्नता रहती है। हृदय रेखा की सभी बनावटों की विशेषताएं पहले ही लिखी जा चुकी हैं। हृदय रेखा की विशेषताओं और घटनाओं के आधार पर व्यक्ति की आयु का निर्धारण किया जाता है। तथ्यों की पुष्टि के लिए हाथ के रूप-रंग का भी उपयोग करना चाहिए। सफ़ेद नक्षत्रों की अपेक्षा लाल नक्षत्र अधिक तीव्रता को और पीले नक्षत्र विकलता, रुग्णता-जैसे घृणित विकारों के सूचक होते हैं। हृदय रेखा के सभी दोषों का सम्बन्ध या तो व्यक्ति के स्वास्थ्य से या फिर प्रेम सम्बन्धों में गड़बड़ी से होता है। इन दोनों में से किसी एक की जानकारी के लिए पूर्वोक्त नियमों को आधार बनाना चाहिए। यह देखना चाहिए कि विद्युत्-धारा के प्रवाह की क्या स्थिति है? क्या वह निर्बाध है अथवा किसी दोष के कारण बाधित है? पर्वत-प्रकारों के अध्ययन के आधार पर वस्तुस्थिति को जानना सम्भव हो जाता है, फिर रेखा द्वारा संकेतित घटना के अभिप्राय, प्रभाव तथा सुधार-बिगाड़ की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। रेखा को समझने में असावधानी अथवा जल्दबाज़ी से भविष्यकथन ग़लत हो सकता है। अतः कुछ भी कहने से पूर्व गहन अध्ययन और पर्याप्त चिन्तन-मनन अत्यन्त आवश्यक है। सिद्धान्त को भली प्रकार समझना, उसका विश्लेषण करना, उसकी व्यावहारिकता को देखना तथा अपवादों की समीक्षा के उपरान्त कुछ कहना सही रहता है। इस अध्याय में हमने नियमों और लक्षणों को रेखाओं पर लागू करने की कार्यविधि का विस्तृत और सरल वर्णन किया है। यहां हमने अपने अध्ययन को केवल हृदय रेखा के परिवर्तनों तक सीमित रखा है। हमारा निश्चित मत है कि मुख्य

रेखा को भली प्रकार से समझ लेने के उपरान्त मिलते-जुलते रूपों तथा हाथों को समझने में कोई कठिनाई नहीं आयेगी। हस्तरेखाविद् अभ्यास के लिए अनेक मिलते-जुलते रेखाचित्र उकेर कर अपने अध्ययन को विशिष्ट एवं विशुद्ध बना सकते हैं। हम तो केवल यही सुझाव देना चाहते हैं कि किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व किसी भी रेखा की परख करते समय तर्क और विवेक का पल्ला नहीं छोड़ना चाहिए।

*

6

मस्तक रेखा

यह हम पहले कई बार उल्लेख कर चुके हैं कि प्राणियों की विद्युत्-धारा बृहस्पति की अंगुली के द्वारा ही शरीर में प्रवेश करती है। इस विद्युत्-धारा के प्रवाह से चलने वाली हृदय रेखा के नीचे और हाथ के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाने वाली रेखा ही **मस्तक रेखा** है (रेखाचित्र-82)। प्रयोगों की निरन्तरता और अनन्तता से मानसिक एकाग्रता और आत्मसंयम की क्षमता प्रदान करने वाली इस रेखा की महत्ता और विशिष्टता सिद्ध हो चुकी है। व्यक्ति के भाग्य-निर्माण में व मस्तिष्क के योगदान के महत्त्व के सन्दर्भ में मस्तक रेखा का महत्त्व स्वत: सिद्ध है। व्यक्ति के मस्तिष्क के अस्वस्थ होने पर हृष्ट-पुष्ट एवं बलिष्ठ शरीर भी उपयुक्त कार्य करने में समर्थ नहीं होता। मस्तिष्क के स्वस्थ न होने का अर्थ है—व्यक्ति का एकाग्रचित्त न हो पाना तथा जीवन को निश्चित दिशा की ओर अग्रसर न कर पाना। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन दोनों स्थितियों का स्पष्ट अर्थ है—जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल न हो पाना।

वस्तुत: व्यक्ति की मानसिकता ही तो उसके नैसर्गिक गुणों का विकास करती और उसे जीवन-पथ पर अग्रसर करती है। प्रत्येक व्यक्ति की मानसिकता अथवा मन:स्थिति ही उसके भावी जीवन की आधारशिला रखती है। वही उसके शरीर को पुष्ट-समर्थ तथा चिन्तन को स्वस्थ-सशक्त बनाती है। दुर्बल मानसिकता व्यक्ति को कहीं का नहीं रखती। शरीर से स्वस्थ-बलिष्ठ व्यक्ति भी मन:स्थिति के क्षीण-विकृत होने पर प्रगति करने में सर्वथा असमर्थ एवं असफल सिद्ध होता है। व्यक्ति की मन:स्थिति ही उसे उन्नति करने की प्रेरणा-प्रोत्साहन देती है। इसी सन्दर्भ में मन को मनुष्य के उत्थान-पतन का मूल कारण माना गया है। मानसिक शक्ति की गुणवत्ता तथा मात्रा की सही जानकारी का एकमात्र आधार मस्तक रेखा है (रेखाचित्र-82)। अत: व्यक्ति की मनोदशा को जानने के लिए मस्तक रेखा का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।
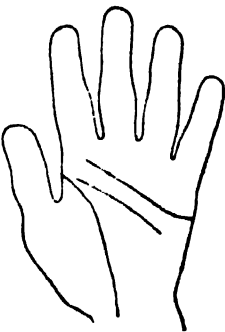
रेखाचित्र-82

'मस्तिष्क' शरीर का एक अंग होने के साथ-साथ शरीर की सभी नस-नाड़ियों में धड़कन पैदा करने वाली तथा शरीर के सभी अंगों के भौतिक स्वरूप को उजागर करने वाली प्राणशक्ति का सञ्चार करने वाला केन्द्र भी है। इसी प्राणाधार शक्ति से स्नायु रोग कहलाने वाले विकारों का भी पता चलता है। मानव का यह मस्तिष्क कपाल (खोपड़ी) के भीतर बन्द रहने के कारण भौतिक जांच-परख का विषय बन ही नहीं पाता। हां, जब कभी किसी दुर्घटना के कारण इस अतिकोमल एवं संवेदनशील मस्तिष्क के कुछ भाग खुल जाते हैं, तब कभी इसके अध्ययन का सुयोग सुलभ हो पाता है। उत्तम प्रकृति के प्रतिभासम्पन्न एवं उज्ज्वल चरित्र के व्यक्तियों के तथा अधम प्रकृति के उजड्ड एवं अपराधी मनोवृत्ति वाले व्यक्तियों के मस्तिष्क की बनावट में किसी अन्तर को ढूंढ़ पाना तो सर्वथा असम्भव ही है, अर्थात् मस्तिष्क की बनावट के आधार पर किसी को उदात्त चरित्र अथवा पशुवृत्ति का बताना कदापि सम्भव नहीं है। शव-परीक्षा से भी वैज्ञानिक इसी परिणाम और निष्कर्ष पर पहुंचे हैं। वस्तुत: मस्तिष्क ऐसा गुप्त और अन्तर्हित अंग है कि व्यक्ति के जीवनकाल में इसका सूक्ष्म अध्ययन-परीक्षण किया ही नहीं जा सकता। मस्तिष्क में अच्छाई अथवा बुराई के आधार-केन्द्र (निवासंस्थल) का पता भी अभी तक नहीं लगाया जा सका है। हां, हाथ में विद्यमान मस्तक रेखा के अध्ययन द्वारा इस दिशा में कुछ बढ़ पाना सम्भव हुआ है। इस सन्दर्भ में मस्तिष्क के कार्य-कलाप की सही जानकारी प्राप्त करने का एकमात्र साधन हाथ में स्थित मस्तक रेखा का अध्ययन है। इस अध्याय में मस्तक रेखा से सम्बन्धित जिस सामग्री को और जिन आंकड़ों को प्रस्तुत किया गया है, वह वर्षों की साधना और श्रम का परिणाम है। निरन्तर किये गये असंख्य निरीक्षणों-परीक्षणों के उपरान्त ही आज हम यह कहने की स्थिति में हैं कि "हाथ पर खिंची मस्तक रेखा व्यक्ति की मानसिकता का दर्पण है।" हाथ पर चिह्नित मस्तक रेखा मस्तिष्क को पहुंची किसी क्षति से उत्पन्न होने वाले रोगों की भी सही जानकारी कराती है।

हस्तरेखाशास्त्री को सर्वप्रथम तो हाथ में स्थित मस्तक रेखा की खोज करनी चाहिए। इतना तो निश्चित ही है कि मस्तिष्क के रूप में प्रसिद्ध बुद्धि का सभी रेखाओं पर सीधा प्रभाव पड़ता है, जिसका अर्थ है कि यह रेखा प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में अवश्य होती है। सत्य तो यह है कि हाथ के सही स्थान पर मस्तक रेखा के न मिलने को भी इसकी अनुपस्थिति अथवा लोप मानना ग़लत धारणा को जन्म देना है। हाथ में एक छोर से दूसरे छोर तक जा रही किसी एक रेखा को हृदय रेखा मानने की भूल नहीं करनी चाहिए, अपितु उसे मस्तक रेखा ही मानना चाहिए।

सामान्य रूप से मस्तक रेखा की खोज के उपरान्त उसकी लम्बाई पर ध्यान देना चाहिए। मस्तक रेखा हृदय रेखा के समान हथेली के एक सिरे से दूसरे सिरे तक

नहीं जाती, परन्तु किसी हाथ में इतनी अधिक लम्बाई मिलने का अर्थ व्यक्ति के मनोबल का पर्याप्त रूप से शक्तिसम्पन्न होना है। रेखा के रूप-रंग से इस तथ्य की जानकारी हो जाती है।

इसके विपरीत इस रेखा का कम लम्बा होना व्यक्ति के मनोबल अथवा संकल्पशक्ति में कमी का द्योतक है (रेखाचित्र-83)। इस रेखा के छोटेपन से व्यक्ति का अल्पायु होना भी सूचित तो होता है, परन्तु रोग और जीवन की अवधि के सम्बन्ध में सुनिश्चित भविष्यकथन से पूर्व इस रेखा के साथ-साथ अन्य सम्बद्ध रेखाओं पर भी विचार करना अपेक्षित है।
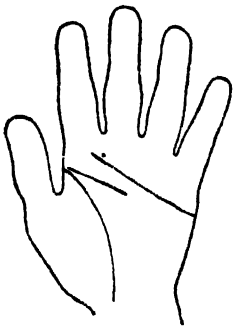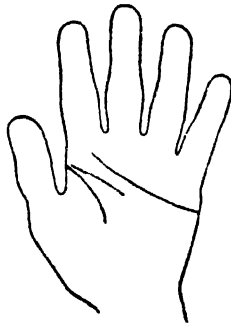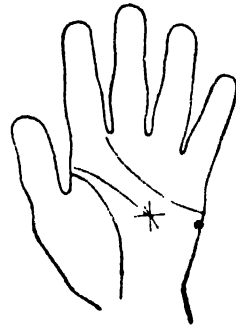
रेखाचित्र-83 *रेखाचित्र-84* *रेखाचित्र-85*

मस्तक रेखा के छोटेपन के साथ-साथ जीवन रेखा के भी कम लम्बा होने को व्यक्ति की किसी दुर्घटना में मृत्यु का निश्चित संकेत समझना चाहिए (रेखाचित्र-84)। इसी प्रकार छोटी मस्तक रेखा के सिरे पर नक्षत्रचिह्न के बनने को व्यक्ति की अचानक मृत्यु होने का संकेत समझना चाहिए; क्योंकि यह नक्षत्रचिह्न सदैव विस्फोटक होता है (रेखाचित्र-85)। इसी प्रकार दायें हाथ पर दोनों—मस्तक और जीवन—रेखाओं के कम लम्बा होने के अतिरिक्त दोनों के ही सिरे पर नक्षत्रचिह्न का होना व्यक्ति की दुर्घटना में मृत्यु का पुष्ट प्रमाण है (रेखाचित्र-86)। बायें हाथ में यही स्थिति—दोनों रेखाओं की कम लम्बाई और दोनों के सिरों पर नक्षत्रचिह्न—व्यक्ति की दुर्घटना में मृत्यु का पक्का संकेत है। नक्षत्रचिह्नों की स्पष्टता और सुगढ़ता के अनुरूप ही परिणाम की भयंकरता सुनिश्चित होती है। वस्तुत: छोटी मस्तक रेखा के सिर पर उभरे गुणनचिह्न विद्युत्-धारा के प्रवाह को बाधित कर देते हैं, जिससे व्यक्ति का मनोबल क्षीण हो जाता है। इसके फलस्वरूप काफ़ी गहरी रेखाओं से बने नक्षत्र के कारण होने वाले रक्ताघात से व्यक्ति अचानक मृत्यु का शिकार तो नहीं बनता, परन्तु दोनों—मस्तक और जीवन—रेखाओं का छोटा होने और उन दोनों पर गुणनचिह्न का परिणाम ठीक नक्षत्र के परिणाम-जैसा ही होता है (रेखाचित्र-87)।

कारण स्पष्ट है कि दोषों के रहने पर विद्युत्-धारा के प्रवाह का रुकना निश्चित है और फिर इसके फलस्वरूप प्राण-हानि की सम्भावना को नकारा नहीं जा सकता। इन चिह्नों के दीखने पर व्यक्ति के पर्वत-प्रकार तथा रेखा, चिह्न आदि के रूप-रंग पर भी ध्यान देना चाहिए। व्यक्ति के रक्ताघात की प्रवृत्ति वाले बृहस्पतिप्रधान, पक्षाघात की प्रवृत्ति वाले शनिप्रधान तथा अत्यधिक रक्त की आपूर्ति करने वाले मंगलप्रधान वर्ग का होने के साथ-साथ इनके रंग का गहरा लाल-पीला होना अत्यन्त गम्भीर स्थिति के सूचक लक्षण हैं। इस प्रकार छोटी मस्तक रेखा का अध्ययन करते समय तीनों—जीवन, बुध तथा हृदय—रेखाओं, इनसे जुड़े चिह्नों व पर्वतों आदि पर ध्यान केन्द्रित करना भी आवश्यक होता है। समग्र रूप से इन सबका अध्ययन करने के पश्चात् ही यह सुनिश्चित करना सम्भव होता है कि व्यक्ति मानसिक दुर्बलता का शिकार है अथवा रोगों की प्रवृत्ति से ग्रस्त है।
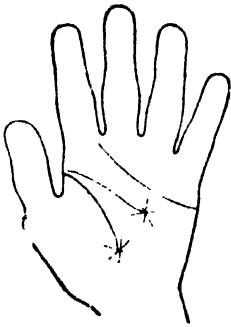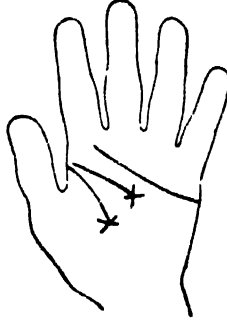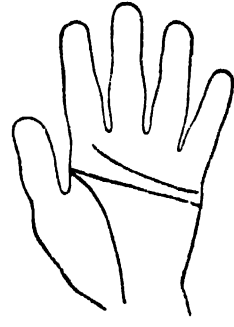
रेखाचित्र-86 *रेखाचित्र-87* *रेखाचित्र-88*

निष्कर्ष रूप में यह कहना उपयुक्त एवं सार्थक होगा कि लम्बी मस्तक रेखा व्यक्ति के मनोबल की समृद्धि की और छोटी मस्तक रेखा मानसिक शक्ति की क्षीणता अथवा उसके अभाव की सूचक है।

रेखा की इस लम्बाई की जांच-परख के समय दोनो—मस्तक और हृदय--रेखाओं के अनुपात पर भी ध्यान देना चाहिए। मस्तक रेखा के हाथ के एक छोर से दूसरे छोर तक ठीक सीधी व लम्बी होना और इसके विपरीत हृदय रेखा का सामान्य स्वरूप का होना व्यक्ति के मस्तिष्क के तीव्र होने का संकेत है (रेखाचित्र- 88)। ऐसा व्यक्ति धनलोलुप, स्वार्थी, उतावला, व्यवहारकुशल, हृदयहीन तथा केवल अपने मस्तिष्क के नियन्त्रण में रहने वाला होता है। मस्तक रेखा का ऐसी लम्बी होना, परन्तु हृदय रेखा का न होना व्यक्ति के नितान्त क्रूर, निर्मम, कुटिल, आततायी, आत्मकेन्द्रित, अर्थपिशाच और अपने स्वार्थ के लिए सदैव लड़ने--मरने को उतारू होने का सूचक है। अत: सभी रेखाओं की सापेक्ष गहराई पर और उनके रूप-रंग पर

विचार करना आवश्यक हो जाता है।

सीधी, लम्बी और गहरी मस्तक रेखा एक उत्तम और प्रबल संयोग है, परन्तु इस संयोग के साथ हृदय रेखा न रखने वाला व्यक्ति भौतिक उपलब्धियों को महत्त्व देने वाला, स्वार्थी, नीच, संकीर्ण-हृदय, आत्मकेन्द्रित तथा नितान्त धनलोलुप होता है। मस्तक रेखा का लाल रंग का होना व्यक्ति के आक्रामक स्तर, लेकिन कृपण होने का संकेत है। रेखा का पीलापन व्यक्ति के कृपण होने के अतिरिक्त नीच होने का भी सूचक है। मस्तक रेखा का लम्बी, परन्तु अन्य रेखाओं की अपेक्षा अधिक छोटी और अधिक पतली होने का अर्थ है—व्यक्ति के मन-मस्तिष्क का सदैव कार्य के दबाव से तनावग्रस्त रहना, यहां तक कि अधिक बोझ पड़ने से टूटने वाला होना।

छोटी, पतली और सतही मस्तक रेखा मनोबल की क्षीणता की द्योतक है, मस्तक रेखा का छोटी, पतली और सतही होना, परन्तु अन्यान्य सभी रेखाओं का गहरा और सुगढ़ होना इस तथ्य का संकेत है कि व्यक्ति का मन अत्यन्त ही दुर्बल है, जिससे वह न केवल आसानी से दूसरों के बहकावे में आ जाता है, अपितु दूसरों के इशारों पर नाचता भी रहता है। अत: मस्तक रेखा की लम्बाई की अन्यान्य रेखाओं से तुलना करते हुए आकार और अनुपात की जांच-परख करना आवश्यक होता है। व्यक्ति के स्तर—सन्तुलन सामान्य, अधिक अथवा निम्न—के निर्धारण का यही एक आधार है। दोनों हाथों की जांच-परख करते समय बायें हाथ में मस्तक रेखा का छोटी होना और दायें हाथ में उसका लम्बी होना यह संकेत देता है कि व्यक्ति ने अपने क्षीण मनोबल को विकसित-सबल बना लिया है। इसके विपरीत बायें हाथ में मस्तक रेखा का लम्बी और दायें हाथ में उसका छोटी होना मनोबल के क्षीण-दुर्बल हो जाने का संकेत है। छोटी मस्तक रेखा तो कभी-कभी अपमृत्यु—जैसी विपत्ति लाने वाली भी सिद्ध होती है। वस्तुस्थिति के यथार्थ रूप को जानने के लिए जीवन रेखा के आकार-प्रकार के साथ-साथ स्वास्थ्य-संकेतों की जानकारी भी लेनी चाहिए। हम ऊपर इस तथ्य को अंकित कर चुके हैं कि जहां बायें हाथ में पतली और सूक्ष्म, परन्तु दायें हाथ में सुगढ़ मस्तक रेखा व्यक्ति की मनोदशा में विकास की सूचक है, वहां इसकी विपरीत स्थिति विपरीत परिणाम की सूचक है, अर्थात् बायें हाथ में सुगढ़ और दायें हाथ में पतली मस्तक रेखा व्यक्ति के क्षीण मनोबल की सूचक है।

दोनों—दायें और बायें—हाथों में लम्बी-सीधी मस्तक रेखा, परन्तु दायें हाथ में हृदय रेखा की अनुपस्थिति व्यक्ति को स्वार्थी और लम्पट सिद्ध करती है। उसके स्वार्थी और कृपण बन जाने पर ही उसके गुणों का विकास सम्भव हो पाता है। व्यक्ति के दोनों हाथों की रेखाओं में आये परिर्वतनों के विश्लेषण के आधार पर ही व्यक्ति के जीवन में भूतकाल में तथा वर्तमानकाल में आये परिवर्तनों को समझा जा

सकता है और उसके परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति के अतीत के और वर्तमान के दृष्टिकोण के सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से कुछ कहा जा सकता है।

मस्तक रेखा के अध्ययन के परिणाम के सम्बन्ध में कुछ कहने से पूर्व मानसिक रोगों और मानसिक क्षमता के स्तर के अन्तर को भली प्रकार समझना चाहिए। इस अन्तर को समझने के लिए निम्नोक्त तथ्यों पर ध्यान देना होता है—

(i) रेखा का विशृंखलन, विच्छेदन एवं विभाजन, (ii) बिन्दुओं और द्वीपों की स्थिति से अत्पन्न होने वाले दोष, (iii) रेखा का गहरा अथवा बारीक होना तथा (iv) रेखा का अनुपात, अर्थात् अन्य रेखाओं की तुलना में मस्तक रेखा का लम्बा अथवा छोटा तथा मोटा अथवा पतला होना।

मस्तक रेखा से व्यक्ति की मानसिकता की जानकारी के साथ-साथ इस मानसिकता के स्वरूप की, परिमाण की और मन से सम्बन्ध रखने वाले रोगों की जानकारी भी मिल जाती है। रेखा में दोषों के मिलने पर सर्वप्रथम यह निर्णय लेना चाहिए कि व्यक्ति के मनोबल में कुछ न्यूनता-क्षीणता है अथवा वह मानसिक विक्षिप्तता से ग्रस्त है ? वैसे तो मस्तक रेखा पर विद्यमान कोई भी दोष व्यक्ति की शारीरिक अथवा मानसिक रुग्णता से सम्बद्ध होने के कारण उसके अस्वस्थ होने का सूचक है। हां, व्यक्ति के स्वास्थ्य में उत्पन्न विकार के समय की जानकारी के लिए दोष के स्थल-विशेष-बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। मस्तक रेखा पर दोष की उपस्थिति के कारण जीवन रेखा की असामान्यता रोग का निश्चित संकेत है। मस्तक रेखा पर विचार करते समय नाख़ूनों पर भी विचार करना चाहिए; क्योंकि नाख़ूनों का मस्तिष्क से सीधा सम्बन्ध है। जहां अत्यधिक धारीदार नाख़ून स्नायुसम्बन्धी गड़बड़ी के सूचक हैं, वहां धारीदार और भुरभुरे नाख़ूनों से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति अपनी स्नायु-क्षमता का अनाप-शनाप अपव्यय कर रहा है, जिसके फलस्वरूप वह पक्षाघात का शिकार हो सकता है। शनि, बुध और चन्द्रप्रधान व्यक्तियों के लिए तो सम्भावना निश्चितता का रूप ले लेती है। इस जांच में हाथ का और रेखाओं के रंग का भी विशेष महत्त्व रहता है। हाथों की सफ़ेदी से ख़ून की कमी का और उससे मस्तिष्क की क्रिया की क्षीणता का और इसके विपरीत हाथों के अत्यधिक लाल होने से रक्त की मात्रा की अत्यधिकता का और उससे मस्तिष्क में रक्त-प्रवाह की तीव्रता से प्रवेश का पता चलता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये दोनों ही स्थितियां असामान्य स्वास्थ्य की सूचक हैं। इस प्रकार हाथों की सफ़ेदी, दुर्बलता और रक्त की अल्पता का और लालिमा रक्ताधात की सम्भावना का संकेत है। हाथों की लालिमा पर विचार करते समय लाल रंग के नक्षत्रों, बिन्दुओं और गुणनचिह्नों की उपस्थिति के अतिरिक्त रेखा की गहराई पर भी ध्यान देना चाहिए।

मस्तक रेखा के दूषित होने पर नाख़ूनों के आकार-प्रकार और रंगत आदि के

जीवन रेखा पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का, व्यक्ति के पर्वत-प्रकार का तथा बुध रेखा पर पड़ रहे प्रभाव आदि का अध्ययन करना चाहिए। इस सामूहिक एवं समग्र अध्ययन के आधार पर स्वास्थ्य-विकारों और मानसिक दोषों की पृथक् पहचान सम्भव हो जाती है।
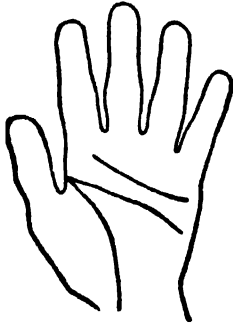
रेखाचित्र-89
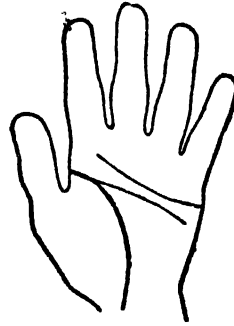
रेखाचित्र-90

मस्तक रेखा का प्रारम्भ-स्थल ध्यान देने योग्य होता है। अधिकांश हाथों में मस्तक रेखा के जीवन रेखा से ही आरम्भ होने के कुछ दूरी तक ये दोनों रेखाएं जुड़ी-हुई रहती और साथ-साथ चलती हैं (रेखाचित्र-89)। किन्हीं हाथों में यह मस्तक रेखा आरम्भ से ही जीवन रेखा से अलग हो जाती है (रेखाचित्र-90)। मस्तक रेखा का आरम्भ-स्थल जीवन के प्रारम्भकाल का सूचक है और मस्तक रेखा का जीवन रेखा से जुड़ा होना उस समय-विशेष में अपने विषय में चिन्तन करना व्यक्ति के युवा होने का संकेत है।

मस्तक रेखा का जीवन रेखा से अधिक दूरी तक जुड़ना व्यक्ति में आत्मविश्वास की न्यूनता को तथा दूसरों पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति को दर्शाता है। जब तक ये दोनों रेखाएं जुड़ी रहती हैं, तब तक व्यक्ति में आत्मविश्वास का अभाव बना ही रहता है।

मस्तक रेखा बारहवें वर्ष के उपरान्त जीवन रेखा से जुड़ी नहीं रह पाती। अनेक हाथों की मस्तक रेखाएं तो जीवन रेखा से आरम्भ से ही दूरी बनाकर चलती हुई सम्बद्ध व्यक्तियों के बचपन से ही आत्मनिर्भर होने की पुष्टि करती हैं।

मस्तक रेखा के उद्गम-स्थल की पहचान के लिए मस्तक और जीवन रेखाओं द्वारा बने कोण के अध्ययन से सहायता मिलती है। इस कोण की तीक्ष्णता के अनुपात में ही व्यक्ति संवेदनशील होता है (रेखाचित्र-90)। अंगुलियों के सिरों पर संवेदी गद्दियों का अस्तित्व व्यक्ति की संवेदनशीलता के चरम स्थिति पर होने का सूचक है। ऐसा व्यक्ति दूसरों की भावनाओं को तो ठेस नहीं पहुंचाता, परन्तु अनचाहे अपमानों के कारण उस बेचारे का जीवन नरकमय बन जाता है। ऐसे व्यक्ति के

पर्वत-प्रकार और अंगुलियों के सिरों पर विचार करना आवश्यक होता है। सिरों का नोकदार होना तथा मस्तक रेखा और जीवन रेखा पर न्यून कोण का होना व्यक्ति में आत्मनिर्भरता के अभाव को दर्शाते हैं। ऐसा व्यक्ति स्वभाव से भीरु और कायर ही नहीं होता, अपितु सदैव परमुखापेक्षी—किसी का सहारा चाहने वाला—भी होता है। ऐसा व्यक्ति सहारा न मिलने पर कुछ भी करने में अपने को पूर्ण असमर्थ पाता है। मोटी अंगुलियां और उनके वर्गाकार अथवा चमचाकार अग्रभाग व्यक्ति के समझदार और सतर्क होने के सूचक हैं। कुछ लोगों का इन्हें व्यक्ति के अत्यधिक संवेदनशील होने के सूचक मानना सर्वथा ग़लत धारणा है। मस्तक रेखा का आरम्भ में ही जीवन रेखा मे मिला हुआ होना व्यक्ति को सुव्यवस्थित होने पर भी परमुखापेक्षी उजागर करता है। इससे यही संकेत मिलता है कि व्यक्ति मस्तक रेखा के जीवन रेखा से अलग होने तक आत्मनिर्भर नहीं बन पाया। इसी मस्तक रेखा का काफ़ी दूरी तक जीवन रेखा से जुड़े रहना, अर्थात् अलग न हो पाना व्यक्ति के मन के दूर से सक्रिय होने का संकेत है (रेखाचित्र-91)।
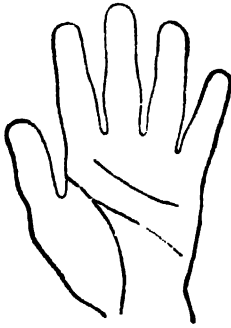
रेखाचित्र-91
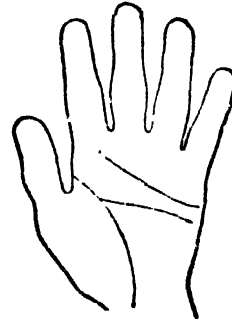
रेखाचित्र-92

कभी-कभी मस्तक रेखा और जीवन रेखा के सन्धि-स्थल पर अवस्थित संयुक्त बिन्दु पर गन्दा-सा कोण दीखता है (रेखाचित्र-92)। यह वह स्थिति है, जब व्यक्ति के लिए साधारण-सा अपमान झेलना भी असह्य हो जाता है। अंगुलियों के अग्रभागों का वर्गाकार अथवा चमचाकार होना तथा हथेली का छोटा और लाल होना व्यक्ति के मन्दबुद्धि होने का सूचक है। हाथ में तीनों—मस्तक, हृदय और जीवन रेखाओं—की विद्यमानता व्यक्ति को सतर्क, परन्तु दूसरों पर आश्रित रहने वाला बताती है। ऐसे व्यक्ति न तो अपना अधिकार जतलाने की योग्यता रखते हैं और न ही इनके विचारों में मौलिकता व स्पष्टता होती है। ये तो परले दर्जे के अशिष्ट, असभ्य एवं मुंहफट होते हैं।

जीवन रेखा से पृथक् होकर मस्तक रेखा का स्वतन्त्र रूप से आगे बढ़ना यह

सूचित करता है कि व्यक्ति आरम्भ में अवश्य आत्मनिर्भर रहा है (रेखाचित्र -93)। ऐसा व्यक्ति विचारों में मौलिक, स्वतन्त्र निर्णय ले सकने में सक्षम तथा सोच-विचार कर आगे पग बढ़ाने वाला होता है। वह न तो कभी दूसरों का मुंह जोहता है और न ही कभी किसी का अन्धानुगमन करता है। स्वतन्त्र और निर्भीक विचारों का धनी ऐसा व्यक्ति आत्मविश्वास से सम्पन्न, योजनाबद्ध कार्य करने की प्रवृत्ति वाला तथा विवेकशील होता है। इस प्रकार मस्तक रेखा के अधिक फैलाव न होने को एक शुभ लक्षण ही समझना चाहिए।
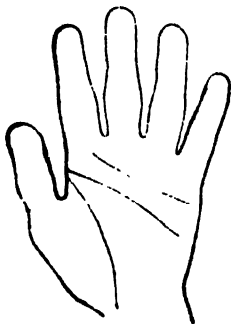
रेखाचित्र-93
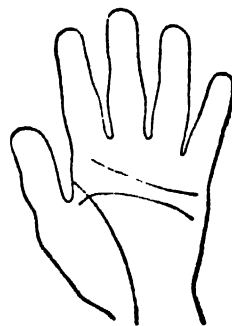
रेखाचित्र-94

जीवन रेखा से मस्तक रेखा की दूरी ही व्यक्ति की आत्मनिर्भरता की कोटि का निर्धारक तत्त्व होती है। हां, यह बात अलग है कि आत्मनिर्भरता की अत्यधिकता व्यक्ति को निर्भीक और अहंकारग्रस्त ही नहीं, अपितु दुःसाहसी और आक्रामक भी बना देती है। जीवन रेखा से अलग हुई मस्तक रेखा वाले व्यक्ति के हाथ की अंगुलियों के छोरों के पैना अथवा नोकदार होने पर व्यक्ति आत्मनिर्भरता का आदर्श रूप होता है। अंगुलियों के छोरों का चमचाकार होना तो व्यक्ति को उत्साही, स्फूर्त, मौलिक, चिन्तनशील तथा कुशल योजनाकार सिद्ध करता है। उसका आत्मविश्वास इतना बढ़ा हुआ होता है कि वह किसी भी विषय में किसी के परामर्श की आवश्यकता नहीं समझता और फिर इसके फलस्वरूप भूल-चूक और असफलता का शिकार भी बनता रहता है। अंगुलियों के वर्गाकार छोर व्यक्ति की बुद्धि को संयत और अनुशासित करने वाले होने से सर्वोत्कृष्ट माने गये हैं। छोटी अंगुलियां क्षिप्रकारिता (जल्दबाज़ी) की सूचक हैं। हृदय रेखा से मस्तक रेखा के अलगाव से व्यक्ति में आत्मनिर्भरता की मात्रा भयंकर परिणाम लाने की कोटि तक बढ़ जाती है। चिकनी अंगुलियां व्यक्ति की आवेगशीलता और प्रचण्डता में भारी वृद्धि करने वाली होती हैं। गांठदार अंगुलियां आत्मनिर्भरता को नियन्त्रित रखती हैं। रेखाओं के अलगाव—भले ही वह न्यून हो अथवा अधिक—से व्यक्ति का व्यक्तित्व सदैव स्पष्ट झलकता है। ऐसा

व्यक्ति यदि साधारण प्रकृति का नहीं हो, तो फिर हाथ में विद्यमान संकेतों से यह जानने की चेष्टा करनी चाहिए कि व्यक्ति का स्वाभिमान और उसकी आत्मनिर्भरता आदि उसे कहीं किसी ख़तरे में तो नहीं डाल रहे।

जीवन रेखा के नीचे से आरम्भ होती मस्तक रेखा से बनने वाले न्यून कोण को प्राय: व्यक्ति के कम संवेदनशील होने का संकेत माना जाता है, जो सही नहीं है। वस्तुत: केवल अलग-अलग मस्तक रेखा और जीवन रेखा रखने वाले व्यक्ति ही अत्यधिक संवेदनशील पाये जाते हैं। यह बात अलग है कि ऐसे व्यक्ति अपनी संवेदनशीलता को भले ही प्रकट न करें अथवा अपने को संवेदनशील होना स्वीकार न करें, परन्तु सत्य यह है कि वे निश्चित रूप से संवेदनशील ही होते हैं। वास्तव में बात यह है कि आत्मनिर्भरता को महत्त्व देने वाले व्यक्ति जहां अपनी योग्यता के प्रति आश्वस्त होते हैं, अर्थात् उन्हें अपने योग्य होने का पूरा विश्वास होता है, वहां वे दूसरों के द्वारा योग्य न समझे जाने पर अथवा विश्वास न किये जाने पर आकुल-व्याकुल हो उठते हैं।

किन्हीं हाथों में मंगल पर्वत पर स्थित जीवन रेखा के भीतर से उदय होने वाली मस्तक रेखा दूसरे सिरे तक चली जाती है। ऐसी रेखा वाले व्यक्तियों का यह दुर्भाग्य होता है कि उन्हें जीवन में सफलता का मुंह देखने को नहीं मिलता (रेखाचित्र-94); क्योंकि ऐसे व्यक्ति सुस्त, आलसी, ढीले-ढाले और अस्थिर स्वभाव के होते हैं। ये लोग बड़े उत्साह से बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाते हैं, परन्तु न केवल अपनी सोच में, अपितु उन योजनाओं में भी निरन्तर परिवर्तन करते रहते हैं। किसी एक निर्णय पर स्थिर न रहने के कारण सफलता उनसे कोसों दूर रहती है। वस्तुत: ये लोग संकल्प अथवा निर्णय लेने में जितने उतावले होते हैं, परिवर्तन करने में भी उतने ही उतावले होते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि स्थिरता का अभाव सफलता को सन्दिग्ध बना देता है। इसके अतिरिक्त निचले मंगल क्षेत्र से मस्तक रेखा के उदय होने की स्थिति में तो वे सदैव किसी-न-किसी समस्या से ग्रस्त रहते हैं और साथियों से झगड़ा-तकरार करते रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि इनके शान्तिप्रिय साथी इनसे किनारा करने में ही अपना हित समझने लगते हैं। वास्तव में मन की विचलता और लड़ाकू प्रवृत्ति का संयोग कभी अच्छा नही समझा जाता; क्योंकि ऐसा व्यक्ति कब क्या कर बैठे—यह कहा ही नहीं जा सकता। ऐसे व्यक्तियों के हाथों और रेखाओं का लाल रंग तो जलती आग में घी का काम करता है। हाथों और रेखाओं का पीलापन व्यक्ति के अशिष्ट और निकृष्ट व्यवहार करने वाला होने के कारण अलोकप्रिय तथा उपेक्षित होने का संकेत है। क्षीण मनोबल रखने के कारण ये लोग किसी भी समस्या को सुलझा नहीं पाते। हां, निम्नोक्त लक्षणों वाले व्यक्ति अपनी अस्थिर मनोवृत्ति पर नियन्त्रण रखने में सफल हो जाते

हैं—(i) अंगुलियों के प्रथम पर्वों का उत्तम होना तथा (ii) अंगूठे के दूसरे पर्व का लम्बा और साथ-साथ प्रथम पर्व की अपेक्षा पतला अथवा चप्पू-जैसा होना।

मस्तक रेखा का वृहस्पति पर्वत से आरम्भ होना (रेखाचित्र-95) व्यक्ति को नेतृत्व गुणों के लिए अपेक्षित योग्यता से सम्पन्न सिद्ध करता है। ऐसा व्यक्ति न केवल आत्मविश्वास से भरा होता है, अपितु दूसरों पर अधिकार जमाने और उनसे आसानी से अपना काम निकलवाने की कला में भी कुशल होता है। वस्तुत: मस्तक रेखा का यह स्वरूप मनोबल की दृढ़ता-सशक्तता को उजागर करता है। इस प्रकार की मस्तक रेखा वाले व्यक्ति प्रतिभाशाली, विवेकशील और कठोरता को अपनाये बिना ही दूसरों से काम लेने की कला में पारंगत होते हैं। बृहस्पति पर्वत के अविकसित होने पर व्यक्ति की व्यवहारकुशलता तथा रणनीतिनिपुणता जाती रहती है। हां, उत्तम कोटि का हाथ रखने वाले व्यक्ति अवश्य ऐसे सौभाग्यशाली होते हैं कि वे दूसरों को अपना मनचाहा करने को प्रेरित-विवश भी करने में सफल हो जाते हैं, जबकि उन्हें चाहे-अनचाहे यह सब करते हुए बुरा भी नहीं लगता।
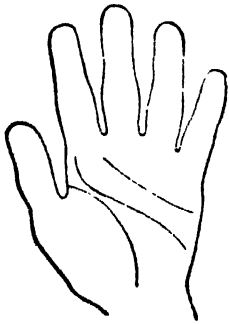
रेखाचित्र-95
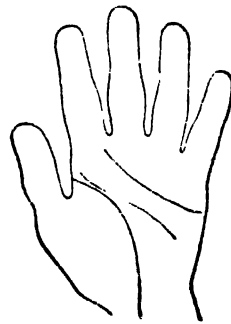
रेखाचित्र-96

किन्हीं हाथों में मस्तक रेखा बृहस्पति पर्वत के ठीक नीचे से आरम्भ होती हुई कभी सीधी बृहस्पति वाली अंगुली के मूल तक पहुंच जाती है (रेखाचित्र-96)। इन दोनों स्रोतों के मध्य में अन्य कतिपय बिन्दुओं से निकलती मस्तक रेखा की शक्ति के अनुमान के लिए पर्वत पर बने चिह्नों की उत्तमता, मध्यमता तथा अधमता को ही आधार मानना चाहिए।

किन्हीं हाथों में जीवन रेखा से निकलती मस्तक रेखा की एक शाखा बृहस्पति पर्वत तक पहुंच जाती है (रेखाचित्र-97), जिसमें व्यक्ति के बड़ा आदमी बनने तथा यशस्वी-कीर्तिमान बनने की प्रबल महत्त्वाकांक्षी होने का संकेत मिलता है। इस स्थिति—रेखा की शाखा का बृहस्पति पर्वत तक पहुंचना—में यदि हाथ मनोदशा की विशुद्धता को दिखाता है, तो समझना चाहिए कि व्यक्ति केवल बौद्धिक क्षेत्र में हो

प्रसिद्धि पाने का इच्छुक है। सामान्यत: वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने को उत्साहित रहता है और आगे बढ़ भी जाता है, परन्तु उसका विशेष झुकाव केवल बौद्धिकता की ओर ही होता है।
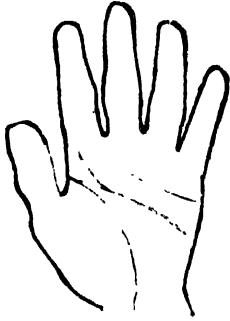
रेखाचित्र-97
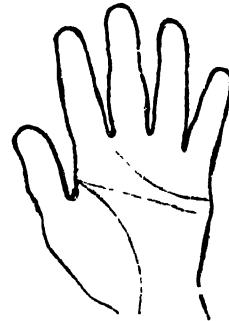
रेखाचित्र-98

इन सब तथ्यों की जानकारी के लिए मस्तक रेखा की दिशा को देखना भी आवश्यक होता है। रेखा के प्रवाह का मार्ग जितना सीधा होगा, दिशा-परिवर्तन उतना कम होगा, जिसका अर्थ यह होगा कि व्यक्ति स्थिर, चिन्तनशील, सन्तुलित मस्तिष्क, सहज बुद्धि और व्यवहारकुशल है। इसके अतिरिक्त इस रेखा से यह भी सूचित होता है कि व्यक्ति अपने चुने हुए मार्ग पर अडिग रहने वाला है और बाहरी प्रभावों को नकारने में पूर्ण समर्थ है। वह शान्तचित्त होकर सभी तथ्यों पर चिन्तन-मनन करता है और उपयुक्त का ग्रहण तथा अनुपयुक्त का त्याग करने में देर नहीं लगाता, परन्तु इस रेखा के अत्यधिक प्रभावी हो जाने पर व्यक्ति के प्रभावशून्य, स्वार्थी और अधम प्रकृति का बन जाने की सम्भावना भी बढ़ जाती है (रेखाचित्र-98)। अपने विचारों को ही महत्त्व देने वाले और अपने द्वारा चुने हुए मार्ग पर चलने वाले ऐसे व्यक्तियों के प्राय: अधिक मित्र नहीं होते; क्योंकि ये लोग इतने अधिक संकीर्ण और संकुचित वृत्ति के होते हैं कि दूसरों के विचारों और आदर्शों को अनदेखा ही नहीं करते, अपितु उनके प्रति अवज्ञा का भाव भी दिखाते हैं।

सीधी रेखा को आधार बनाकर सभी रेखाओं की जांच करना उपयुक्त रहता है। मस्तक रेखा के बृहस्पति पर्वत के ऊपर अथवा नीचे से निकलने पर व्यक्ति पर्वत के गुणों से गहरे रूप में प्रभावित रहता है। मस्तक रेखा के सम्बन्ध में एक उल्लेखनीय अपवाद-रूप तथ्य यह है कि बृहस्पति पर्वत से शायद ही कोई अधिक ऊंचा स्थान हो, जहां से मस्तक रेखा नीचे की ओर झुकती हो, जबकि अन्य पर्वतों के नीचे ऐसा झुकाव एक सामान्य प्रवृत्ति है। इस रेखा के सम्बन्ध में यह देखा जाता है कि यह प्रारम्भ में अपनी ही दिशा में थोड़ा ऊपर की ओर मुड़ती है और यह मोड़ अधिकांशत:

बृहस्पति और शनि के मध्य होता है।

शनि के नीचे की ओर आये प्रत्यक्ष मोड़ से रेखा की दिशा में भारी परिवर्तन आ जाता है (रेखाचित्र-99)। ऐसा व्यक्ति विचारों में शनि के गुणों की प्रधानता को लिये रहता है। वस्तुतः रेखा का झुकाव जब पर्वत की ओर होता है, तब वह व्यक्ति के प्रधान ग्रह की ओर संकेत देती है। रेखा शनि पर्वत की ओर जितना अधिक झुकेगी, व्यक्ति शनि के विचारों से उतना ही अधिक प्रभावित होगा। ऐसे चिह्नों वाले व्यक्ति के उच्चलोक के प्रभावी होने पर वह अध्ययन एवं अनुसन्धान में रुचि रखने वाला होता है; क्योंकि यही शनि के विशिष्ट गुण हैं। मध्यलोक के प्रभावी होने पर व्यक्ति कृषि, खनन और बागवानी में रुचि लेने वाला होता है। निचले लोक के प्रभावी होने पर व्यक्ति धन की बचत के प्रति विशेष चिन्ता करने वाला होता है।
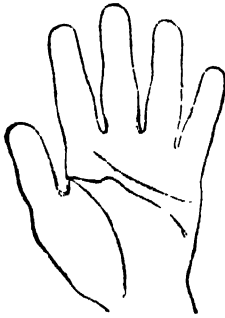
रेखाचित्र-99
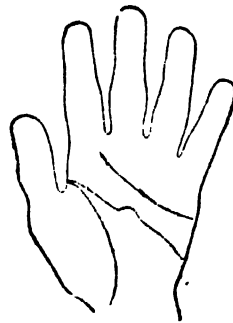
रेखाचित्र-100

रेखा का झुकाव सूर्य पर्वत की ओर होने पर व्यक्ति सूर्य के गुणों से प्रभावित होता है। उच्चलोक के प्रभावी होने पर वह ललित कलाओं में रुचि लेने वाला होता है। मध्यलोक के प्रभावी होने पर वह धन कमाने में प्रवृत्ति रखने वाला और सौन्दर्य प्रेमी होता है। निम्न लोक के प्रभावी होने पर व्यक्ति तुच्छ प्रवृत्ति का, प्रदर्शनप्रिय और निकृष्ट विचारों वाला होता है (रेखाचित्र-100)। स्पष्ट है कि रेखा का झुकाव जितना अधिक होगा, सूर्य का प्रभाव भी उसी अनुपात में व्यक्ति पर अधिक पड़ेगा। यही तथ्य सभी पर्वतों और रेखा के झुकावों पर लागू होता है।

बुध की ओर रेखा का झुकाव होने पर व्यक्ति बुध के गुणों से प्रभावित होता है (रेखाचित्र-101)। उच्च शक्ति की प्रमुखता से व्यक्ति वाणी का धनी, अभिव्यक्ति की कला में कुशल तथा दूसरों को प्रेरणा देने में सक्षम होता है। मध्यलोक की प्रबलता से व्यक्ति वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन और अनुसन्धान में विशेष रुचि रखने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः एक अच्छा चिकित्सक अथवा शिक्षक अथवा वकील बनता है। निम्न लोक की प्रधानता से व्यक्ति के धन के अर्जन में

कुशल होने का परिचय मिलता है। रेखा के इस पर्वत के प्रति झुकाव होने पर तथा सम्बन्धित अंगुली के मुड़े रहने पर व्यक्ति के अत्यन्त धूर्त होने का संकेत मिलता है। पर्वत के गुणों की उत्तमता, मध्यमता और निकृष्टता की जानकारी अंगुलियों के सिरों की बनावट से होती है।
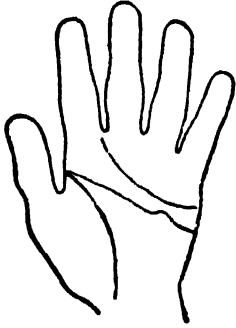
रेखाचित्र-101
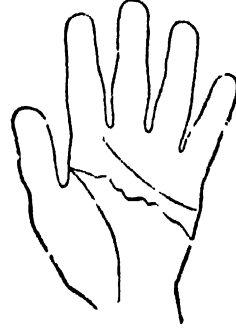
रेखाचित्र-102

आरम्भ से अन्त तक लहरदार मस्तक रेखा व्यक्ति को अस्थिर एवं परिवर्तनशील विचारों वाला सूचित करती है (रेखाचित्र-102)। इस प्रकार लहरदार रेखा परिवर्तन की अनेकरूपता को सूचित करती है। रेखा के आरम्भ को देखकर मानसिकता में परिवर्तन की दिशा और आयु को जाना जा सकता है। रेखा के विभिन्न लोकों में प्रभाव का क्रमिक अध्ययन करने पर मानसिक परिवर्तनों की विस्तृत एवं ब्योरेवार जानकारी मिल जाती है।

लहरदार रेखा से सामान्यतया यह समझा जाता है कि व्यक्ति किसी भी दिशा में निरन्तर अपने विचारों पर स्थिर नहीं रह पाता, वह सदैव अपने उद्देश्य तथा प्रयास की दिशा बदलता रहता है। सबसे बड़ी बात यह है कि वह इस प्रकार दुविधाग्रस्त रहता है कि न कुछ निश्चय कर पाता है और न ही किसी निर्णय पर स्थिर रह पाता है। इस प्रकार लहरदार रेखा विचारों में अस्थिरता, अनिश्चितता तथा आत्मविश्वास-हीनता की द्योतक होती है।

हृदय रेखा के समीप ले जाने वाला इस रेखा का झुकाव प्राय: ऊपर की ओर एक अर्धवृत्त के रूप मे मिलता है (रेखाचित्र-103) और यह व्यक्ति के मस्तिष्क की अपेक्षा हृदय से अधिक प्रभावित होने, अर्थात् व्यक्ति के भावुक एवं संवेदनशील होने का सूचक है। मस्तक रेखा का प्रारम्भ से अन्त तक हृदय रेखा की ओर झुकाव से यह सूचित होता है कि हृदय प्रारम्भ से ही मस्तिष्क से कहीं अधिक सशक्त रहा है। मस्तक रेखा का यह झुकाव प्रारम्भ से न होकर बाद में होता है, तो यह आयु-विशेष में व्यक्ति के हृदय के परिवर्तित होने का सूचक है।

मस्तक रेखा के झुकाव अथवा मोड़ का कम रहना हृदय के प्रभाव में कमी को दिखाता है और इसके विपरीत अधिक झुकाव हृदय को अधिक प्रभावी सूचित करता है। इस संकेत को देखने के साथ अधिक गहरी और सशक्त रेखा की जांच-परख करना भी आवश्यक हो जाता है। हृदय रेखा के गहरेपन और सशक्तता से व्यक्ति का अधिक भावुक और तर्क के क्षेत्र में पिछड़ा होना सूचित होता है और इसके विपरीत मस्तक रेखा के गहरी और प्रबल होने पर व्यक्ति तर्क के क्षेत्र में तो बढ़ा-चढ़ा होता है, परन्तु अधिकांशत: वह मानसिक पीड़ा का शिकार बना रहता है।
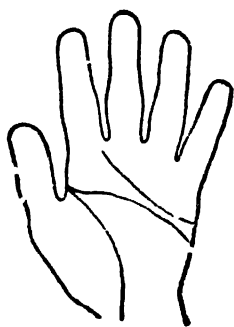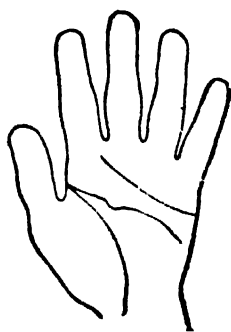
रेखाचित्र-103 *रेखाचित्र-104*

किन्हीं हाथों में मस्तक रेखा का झुकाव नीचे की ओर भी देखने को मिलता है (रेखाचित्र-104)। सीधी मस्तक रेखा मध्यम स्थिति के परिणाम की और नीचे की ओर झुकती मस्तक रेखा निकृष्ट, अर्थात् पतनोन्मुखी परिणाम की सूचना देती है। इस प्रकार सीधी मस्तक रेखा स्वस्थ मानसिकता और व्यवहार-कुशलता की प्रतीक है। नीचे की ओर झुकी मस्तक रेखा इस अवधि में व्यक्ति की मानसिकता में पतन के आने को निश्चित करती है। मस्तक रेखा का नीचे की ओर मुड़ने का अर्थ इस अवधि में व्यक्ति की सोच का बाधित होना है। बाधा के समय की जानकारी भी रेखा से मिल जाती है।

चन्द्र पर्वत को कल्पनाशक्ति का आधार माना जाता है और वह हाथ के मूल में स्थित होता है तथा उसमें आकर्षण की शक्ति होती है। चन्द्र पर्वत की इसी शक्ति से मस्तक रेखा नीचे की ओर खिंचती है। खिंचाव के साधारण होने पर व्यक्ति केवल कुछ समय के लिए उस दिशा में मुड़ता है। रेखा का सीधा हो जाना और फिर अपने मार्ग पर लौट आना यह दर्शाता है कि व्यक्ति के विचारों में पुन: व्यावहारिकता आ गयी है। रेखा का झुकाव व्यक्ति के विचारों के स्वप्निल और व्यावहारिक रूप ग्रहण करने के मध्य द्वन्द्व का संकेत देता है। अन्तत: रेखा का सीधी स्थिति में आना

व्यावहारिकता की विजय का द्योतक है (रेखाचित्र-105)।
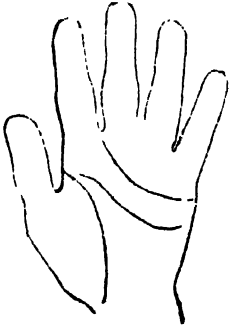
रेखाचित्र-105 रेखाचित्र-106 रेखाचित्र-107

रेखा के पर्वत के नीचे झुककर अधोमुखी हो जाने का अर्थ है—सम्बद्ध पर्वत के गुणों द्वारा व्यक्ति के विचारों का परिवर्तित-प्रभावित हो जाना, अधोमुखी मोड़ से इस तथ्य की जानकारी हो जाती है (रेखाचित्र-106)। तीनों लोकों की जांच-परख से प्रभाव डालने वाले लोक का भी पता चल जाता है।

सभी प्रकार के झुकावों अथवा मोड़ों में झुकाव आदि को पूर्व की स्थिति, झुकाव के समय की स्थिति और झुकाव की परवर्ती स्थिति में रेखा द्वारा धारण किये गये स्वरूप का अध्ययन किया जाता है और फिर इसी अध्ययन के आधार पर परिणाम का अनुमान लगाया जाता है। उदाहरणार्थ, झुकाव से पूर्व मस्तक रेखा के गहरी और सुस्पष्ट रहने का अर्थ है—व्यक्ति का अत्यधिक क्रियाशील रहना, झुकाव के विद्यमान रहने पर रेखा के पतली रहने का अर्थ है—व्यक्ति की क्रियाशीलता का मन्द पड़ जाना तथा झुकाव के उपरान्त रेखा के शृंखलाकार बन जाने का अर्थ है—व्यक्ति का नितान्त टूट जाना। रेखा को सावधानीपूर्वक देखने से इन अवस्थाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। मस्तक रेखा का आरम्भ में पतला, झुकाव के समय शृंखलाकार तथा झुकाव के उपरान्त नक्षत्र-चिह्नित होने से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति का मस्तिष्क किसी चोट के कारण आहत-दुर्बल हुआ और इससे रेखा में झुकाव आ गया और अन्त में स्थिति ने विस्फोटक रूप ले लिया (रेखाचित्र-107)। इस विस्फोट से व्यक्ति की मृत्यु होने अथवा उसके विक्षिप्तताग्रस्त होने की प्रबल सम्भावना होती है। सही निर्णय के लिए जीवन रेखा, नाख़ून, रूप-रंग तथा आकार-प्रकार आदि का अध्ययन अपेक्षित होता है। यहां तो विचार और विवेचन को प्रोत्साहन देने के लिए बानगी-रूप में केवल एक-दो उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं। रेखा का उद्गम व्यक्ति की मानसिक क्रिया की, हाथ के आर-पार की दिशा व्यक्ति को प्रभावित करने वाले परिवर्तनों की तथा छोटी अथवा शीघ्र नष्ट होने वाली रेखा

मानसिक शक्ति की सूचना देता है। अन्त का अर्थ मृत्यु अथवा मस्तिष्क की क्षति है, जिसका विवेचन 'रेखा की लम्बाई' शीर्षक अध्याय में पहले ही किया जा चुका है। अत: पिष्टपेषण से बचने के लिए उसका पुन: वर्णन नहीं किया है।

मस्तक रेखा का शनि की ओर मुड़ने वाली तथा अत्यन्त छोटी होना व्यक्ति के शनि के प्रभाव में होने का सूचक है, जिसका अर्थ—उसका किसी गम्भीर रोग से पीड़ित होना, यहां तक कि मृत्यु का शिकार बनना—है; क्योंकि इस प्रकार के स्वास्थ्य-विकार का सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है (रेखाचित्र-108)। शनि का यह विशेष स्वास्थ्य-दोष होने से व्यक्ति पक्षाघात अथवा लकवा का शिकार भी हो सकता है। निम्नोक्त शनि सम्बन्धी लक्षण शनि सम्बन्धी स्वास्थ्य-विकार के सूचक होते हैं—(i). धारीदार अथवा पीछे की ओर मुड़े अथवा अत्यन्त कोमल नाख़ून, (ii). हाथों, नाख़ूनों का पीलापन, (iii) हाथ में अनेक आकस्मिक रेखाओं का होना, (iv) जीवन रेखा का सूक्ष्म होने के साथ-साथ शृंखलाकार अथवा द्वीपाकार अथवा विशृंखलित अथवा अन्य किसी दोष से ग्रस्त होना।

अनुभवी हस्तरेखाशास्त्री तो ऐसी रेखा को आकस्मिक मृत्यु की पूर्व-सूचना मानते हैं। मस्तक रेखा का शनि पर्वत के ऊपर चढ़ना तो अचानक मृत्यु की आशंका को सर्वथा एवं पूर्णत: पुष्ट कर देता है (रेखाचित्र-109)।
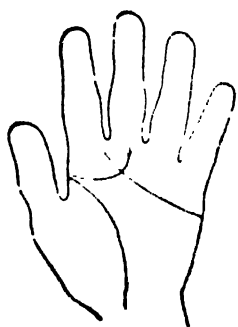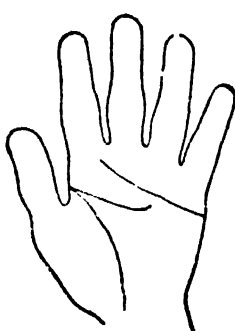
रेखाचित्र-108 *रेखाचित्र-109* *रेखाचित्र-110*

जीवन रेखा के अन्त में नक्षत्र का अथवा गुणनचिह्न का अथवा एक बिन्दु का होना मानसिक शक्ति के ह्रास और अचानक प्राणान्त होने का पक्का लक्षण है (रेखाचित्र-110)। इस रेखा पर गोपुच्छ की स्थिति मनोबल के क्रमिक (धीरे-धीरे) ह्रास एवं क्षीणता का लक्षण है। यद्यपि इस प्रकार मस्तक रेखा पर गुणनचिह्न, बिन्दु अथवा नक्षत्रचिह्न की सत्ता व्यक्ति की अचानक मृत्यु की सूचक है, तथापि ऐसी रेखा के आगे गोपुच्छ के होने का अर्थ है—व्यक्ति का वात-विकार से पीड़ित होकर लकवा का शिकार होना व उसके मनोबल का क्षीण-कुण्ठित होना। नक्षत्र

आदि चिह्नों के अभाव में भी मस्तक रेखा के अन्तिम स्थान पर गोपुच्छ का होना भी इसी परिणाम—लकवा से ग्रस्त होना तथा मनोबल का ह्रास—का संकेत देता है (रेखाचित्र-111)।

अनुभवी हस्तरेखाशास्त्रियों का यह अनुभवसिद्ध मत है कि शनि से जुड़े सभी लक्षण गम्भीर परिणाम के ही सूचक होते हैं। सूर्य की ओर मुड़ती मस्तक रेखा व्यक्ति का विचारों के सूर्य सम्बन्धी गुणों से प्रभावित होना सूचित करती है। व्यक्ति के विचार तीनों लोकों में सर्वाधिक प्रभावी लोक से ही प्रभावित होंगे (रेखाचित्र-112)।
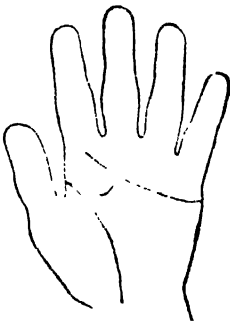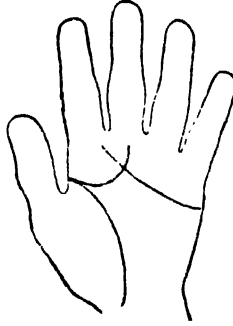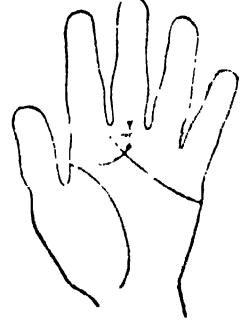
रेखाचित्र-111 *रेखाचित्र-112* *रेखाचित्र-113*

उपर्युक्त सभी उदाहरणों से इसी एक तथ्य की पुष्टि होती है कि किसी पर्वत की ओर ऊपर उठती मस्तक रेखा यह संकेत देती है कि व्यक्ति की मानसिक क्षमता विशेष प्रबल नहीं है। इसके विपरीत रेखा का किसी एक पर्वतप्रधान रहना व्यक्ति की मानसिक शक्ति की प्रबलता का सूचक है। यहां उल्लेखनीय यह है कि प्रधान पर्वत-प्रकार होने पर व्यक्ति उससे जुड़े विशिष्ट पदार्थों के प्रति उत्कट आकर्षण तो रखता है, परन्तु फिर भी अपने संयम से हाथ नहीं धो बैठता। इसका अर्थ है कि व्यक्ति सम्बद्ध पर्वत गुणों से अपने को पराभूत नहीं होने देता, परन्तु मस्तिष्क के किसी पर्वत-विशेष की ओर लिये जाने पर व्यक्ति का आत्मसंयम जाता रहता है। रेखा का खिंचाव ऊपर की ओर होने, परन्तु पर्वत तक उसके पहुंच न पाने का परिणाम यह होता है कि भावना मस्तिष्क से अधिक प्रबल हो जाती है, जिससे व्यक्ति द्वारा तर्क के स्थान पर आसक्ति को अथवा भावना के स्थान पर बुद्धि को वरीयता देना संकेतित होता है।

मस्तक रेखा के उदय और हृदय रेखा में जा मिलने का अर्थ है—व्यक्ति का विवेक की अपेक्षा भावना के वशीभूत होना (रेखाचित्र-113)। कतिपय हस्तरेखा-शास्त्रियों के अनुसार यह अपराधी प्रवृत्ति का संकेत है, परन्तु परीक्षणों से यह सिद्ध

हुआ है कि ऐसी स्थिति वाला व्यक्ति मूलतः अपराधी मनोवृत्ति का तो नहीं होता, परन्तु मनोभावों, मनोवृत्तियों, आकांक्षाओं तथा उत्सुकताओं के उत्तेजित हो जाने पर वह अचानक एवं एकाएक—जाने-अनजाने—अपराध कर सकता है अथवा कर बैठता है, अन्यथा दुर्बल मानसिकता वाला ऐसा व्यक्ति अपराध करना तो दूर रहा, अपराध करने की सोच भी नहीं सकता।

निम्नोक्त लक्षणों वाला व्यक्ति अपने भीतर उमड़ते-भड़कते उन्माद पर नियन्त्रण रखने में असमर्थ होने के कारण अपने मन में संजोयी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपराधी बन ही नहीं सकता, अपितु हत्या-जैसा जघन्य कार्य भी कर सकता है। (i) पाशविक हाथ, (ii) विशाल तथा लाल शुक्र पर्वत, (iiii) लाल तथा गहरी हृदय रेखा, (iv) छोटे नाख़ून तथा (v) विस्तृत क्षेत्र वाला मंगल पर्वत।

मस्तक रेखा के सूर्य पर्वत को काटते हुए ऊपर की ओर जाने तथा सूर्य पर्वत के ठीक नीचे हृदय रेखा को काटने से संकेतित होता है कि सूर्यप्रधान व्यक्ति का हृदय जटिल है और वह मनोरोग—विशेषतः रक्ताघात—से पीड़ित है। इस स्थिति में सम्मिलित रूप से रोग की पुष्टि करने वाले तत्त्वों—बृहस्पति पर्वत, हाथ, हाथों पर उभरी रेखाओं, नाख़ूनों तथा अन्यान्य सभी लक्षणों—पर विचार करना आवश्यक होता है (रेखाचित्र-114)। दोनों रेखाओं के एक-दूसरे के काटने के स्थान पर हाथ का लाल रंग और गहरी रेखाएं स्थिति की विषमता—गम्भीर संकट—को सूचित करने वाले चिह्न हैं। रेखाओं के कटाव पर नक्षत्रचिह्नों का होना संकट को अत्यधिक गम्भीर रूप दे देता है; क्योंकि इस स्थिति में विस्फोट की सम्भावना प्रबल रूप ले लेती है (रेखाचित्र-115)।
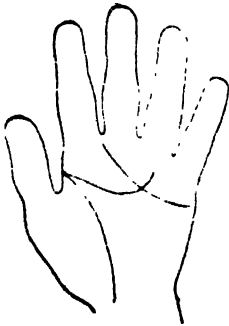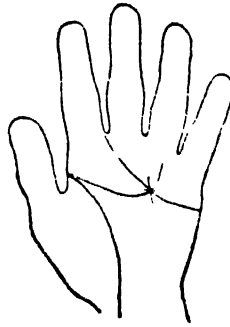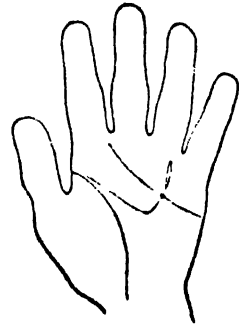
रेखाचित्र-114 *रेखाचित्र-115* *रेखाचित्र-116*

नक्षत्रचिह्न के उपरान्त द्वीपचिह्न की उपस्थिति का अर्थ है—गहरे आघात के कारण व्यक्ति के मस्तिष्क का अशक्त हो जाना तथा मस्तिष्क ज्वर का शिकार बन जाना (रेखाचित्र-116)।

मस्तक रेखा का बुध की ओर झुकाव व्यक्ति के बुध सम्बन्धी गुणों से अत्यधिक आकृष्ट होने का सूचक है (रेखाचित्र-117)। बुध के किसी भी पक्ष के विकसित होने पर इतना तो निश्चित होता है कि व्यक्ति में धन के प्रति केवल प्रबल आकर्षण ही नहीं है, अपितु उसमें धन कमाने की योग्यता भी है। ऐसे व्यक्ति की धन-प्राप्ति की इच्छा इतनी उत्कट होती है कि वह इसके लिए अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा तो करता ही है, किसी भी अन्य पदार्थ की बलि चढ़ाने को भी सदैव उद्यत रहता है। ऐसे व्यक्ति न केवल उच्छृंखल होते हैं, अपितु शोषक एवं पररक्तोपजीवी भी होते हैं। वे अपने अधीनस्थों से अपेक्षा करते हैं कि वे न्यूनतम पारिश्रमिक लेकर श्रम का अधिकतम मूल्य चुकता करें, अर्थात् वेतन से कई गुना अधिक काम करें। वे सदैव सौदेबाज़ी तथा भाव-ताव करने में विश्वास रखते हैं और दो पैसों की बचत के लिए मीलों का चक्कर लगाने को भी बुरा नहीं मानते। इन लोगों की दृष्टि में रुपया ही सब कुछ होता है। यहां तक कि इनके जीवन में व्यक्तिगत सम्बन्धों का आधार भी रुपया-पैसा ही होता है।

बुध की ओर मुड़ती मस्तक रेखा दीखने पर व्यक्ति के प्रकार पर विचार करना चाहिए। अधम शनि पर्वत-प्रकार वाले व्यक्ति के लिए बुध पर्वत तक जाती मस्तक रेखा दुःख और संकट लाने वाली होती है। व्यक्ति का प्रकृति से ही धूर्त होना और इधर बुधप्रधान होना यह निश्चित करता है कि व्यक्ति का एकमात्र उद्देश्य धन कमाना है। उसे साधनों के अच्छे-बुरे होने की कोई चिन्ता नहीं। पाप हो या पुण्य, ईमानदारी से हो अथवा बेईमानी से, जैसे-तैसे, बस, धन आना चाहिए। व्यक्ति की अंगुली का टेढ़ा अथवा मुड़ा हुआ होना और उसके नाख़ूनों का छोटा होना तो इस
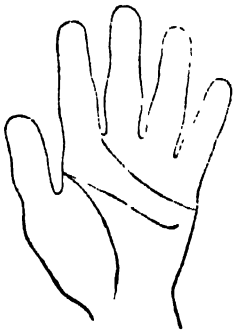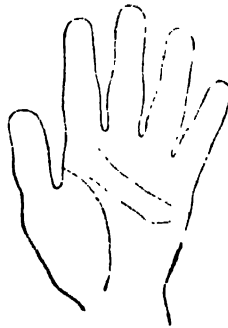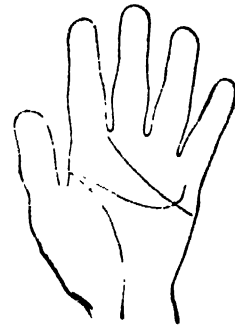
रेखाचित्र-117 रेखाचित्र-118 रेखाचित्र-119

तथ्य—धनप्राप्ति की दीवानगी—को पुष्ट कर देता है। इन लक्षणों के अतिरिक्त हृदय रेखा का न होना, तो व्यक्ति को धन के पीछे ऐसा पागल बना देता है कि उसकी प्राप्ति के लिए वह किसी भी रास्ते—चोरी-डाका तथा हत्या आदि—को अपनाने में भी

कोई संकोच नहीं करता।

यहां कुछ अपवाद भी हैं। उदाहरणार्थ, किसी अच्छे हाथ में इस रेखा की उपस्थिति का केवल इतना अर्थ होता है कि व्यक्ति धन से प्यार करने वाला है। हां, इस संयोग के साथ वैद्यक के प्रति रुचि के चिह्न की उपस्थिति से भी यही अर्थ लेना चाहिए कि व्यक्ति चिकित्सा के व्यवसाय से धन कमाने को महत्त्व देने वाला है, अर्थात् वह अपने व्यवसाय को धनोपार्जन का साधन बनाने वाला है (रेखाचित्र-118)।

मस्तक रेखा के बुध की ओर झुकाव के साथ-साथ अंगुली के तीसरे पर्व का अत्यधिक लम्बा होना व्यक्ति के धन कमाने में रुचि लेने, सफल व्यापरी होने का संकेत है। समग्रत: यह कहना उचित एवं पर्याप्त होगा कि बुध की ओर मुड़ती हुई मस्तक रेखा के साथ कोई भी संयोग व्यक्ति के धन के प्रति उत्कट लगाव का सूचक होता है।

मस्तक रेखा के सूर्य पर्वत क्षेत्र में सीधे ऊपर की ओर चले जाने को स्वास्थ्य के लिए एक चेतावनी समझना चाहिए (रेखाचित्र 119)। इस स्थिति में व्यक्ति को पित्त-दोष, उदर-विकार, अधीरता और बेचैनी (घबराहट) का शिकार बने रहना पड़ता है। इन स्वास्थ्य-दोषों का व्यक्ति के मस्तिष्क पर ऐसा आघात लगता है कि उसका सिर चकराने लगता है। यहां सन्तोष की बात यह है कि यह सब होते हुए भी व्यक्ति को स्वास्थ्य सम्बन्धी किसी गम्भीर संकट का सामना नहीं करना पड़ता। यहां उल्लेखनीय यह भी है कि यह स्थिति व्यक्ति के जीवन में केवल उस समय आती है, जब वह आयु के सत्तरवें वर्ष के आस-पास होता है, अर्थात् जीवन की सान्ध्यवेला आ चुकी होती है। हां, रेखा के अन्त में नक्षत्रचिह्न का होना आकस्मिक मृत्यु का संकेत होता है (रेखाचित्र-120)।
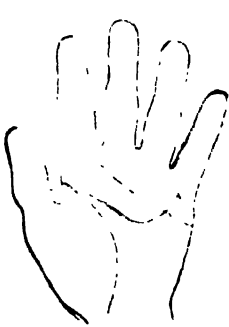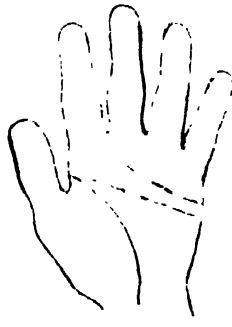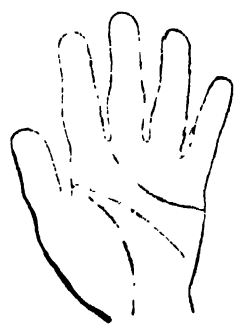
रेखाचित्र-120 *रेखाचित्र-121* *रेखाचित्र-122*

मस्तक रेखा के ऊपर उठने तथा मंगल पर्वत क्षेत्र में जाकर समाप्त होने से

व्यक्ति के व्यावहारिक सूझ-बूझ वाला होने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-121)। इसे मध्यम स्थिति ही मानना चाहिए; क्योंकि यह वह स्थिति है जहां मानसिक गुणों का सन्तुलन बना रहता है। यदि व्यक्ति का ऊपरी मंगल सुविकसित है, तो वह किसी भी आक्रमण की सम्भावना के जन्म लेते ही अपना बचाव ठीक ढंग से कर सकता है। वह बिना किसी घबराहट अथवा बेचैनी का सामना किये, पूरे धैर्य तथा आत्मविश्वास के साथ स्थिति से निपट सकता है, परन्तु पर्वत के अपूर्ण होने का अर्थ है—व्यक्ति में इन गुणों—आक्रमण का सामना करने की, धैर्य, स्थिरता तथा साहस आदि विशेषताओं—का अभाव होता है। ऐसा व्यक्ति साधारण-सा संकट उत्पन्न होने पर सहसा अधीर, अस्थिर और हतोत्साहित हो जाता है, फिर अवाञ्छनीय स्थिति उसे दबोच लेती है। यहां इस तथ्य को कभी नहीं भूलना चाहिए कि पर्वत पर लागू होने वाले सभी तत्त्व रेखा पर भी लागू होते हैं। प्रत्येक लक्षण में पर्वत-क्षेत्र में समाप्त होने वाली मस्तक रेखा व्यक्ति को प्रत्येक विषय में व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने वाला ही सिद्ध करती है।

अनेक हाथों में मस्तक रेखा का चन्द्र पर्वत की ओर न्यूनाधिक झुकाव अवश्य होता है और यह झुकाव व्यक्ति के कल्पनाशील होने का संकेत माना जाता है (रेखाचित्र-122)। कुछ लोगों ने ढलवां मस्तक रेखा को पागलपन का लक्षण मानने की भ्रान्ति फैलायी है, जबकि वास्तविकता इसके सर्वथा विपरीत है। अब यह प्रमाणित हो चुका है कि ऐसी (ढलवां) रेखा तो अत्यन्त प्रबुद्ध, विवेकशील, संयमी तथा व्यवहारकुशल व्यक्तियों के हाथों में ही पायी जाती है। कल्पनाशीलता को अव्यावहारिकता का अथवा पागलपन का संकेत मानना तो कदापि उचित नहीं है। इस प्रकार उत्तम, गहरी, सुगढ़ और सुस्पष्ट मस्तक रेखा के चन्द्र पर्वत की ओर झुकाव को चिन्ता का विषय मानने की भूल कभी नहीं करनी चाहिए। यह ठीक है कि व्यक्ति का आवश्यकता से अधिक कल्पनाशील होना अच्छा नहीं होता, पुनरपि यह चिन्तनीय स्थिति कदापि नहीं है। रेखा के साथ अन्य संयोजन अथवा स्वयं रेखा के स्वरूप से व्यक्ति में विकृति का आना सम्भव है, पुनरपि चन्द्र पर्वत की ओर जाने वाली रेखा के विषय में सामान्य धारणा यह है कि व्यक्ति व्यावहारिक कम और कल्पनाशील अधिक है, परन्तु यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इसी कल्पना को लेखकों, वक्ताओं और भाषाशास्त्रियों के लिए एक अनिवार्य गुण माना जाता है। इस प्रकार के प्रतिभाशाली एवं सफल विद्वानों—लेखकों, वक्ताओं आदि—के हाथों में मस्तक रेखा के और उसके झुकाव के विविध रूप देखने को मिलते हैं। कुछ हाथों में यह रेखा एकदम नीचे की ओर झुककर पर्वत क्षेत्र में दूर तक चली जाती है। इस प्रकार के व्यक्ति काव्य-सृजन और कथा-लेखन के क्षेत्र में विशेष समर्थ-सफल सिद्ध होते हैं (रेखाचित्र-123)। यहां केवल एक ही शर्त है—चन्द्र पर्वत पर पहुंचने वाली रेखा का लम्बा होना। उपर्युक्त तथ्यों से यह कदापि संकेतित नहीं होता कि इन
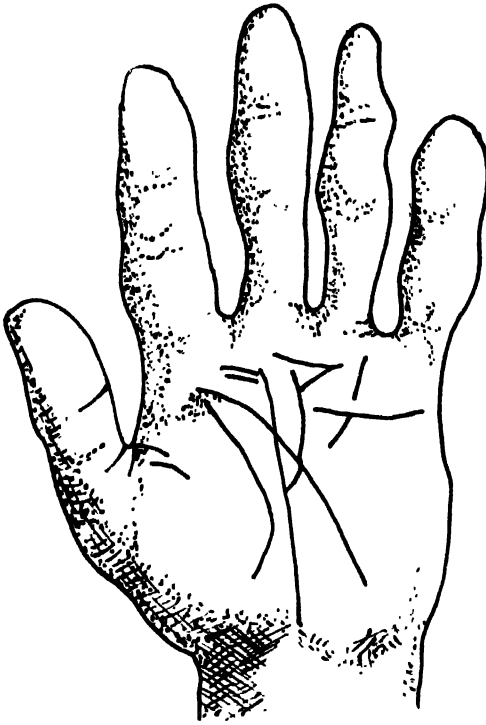
रेखाचित्र-123

व्यक्तियों में मानसिकता का अभाव है। जब ऐसा नहीं, तो फिर इस रेखा को प्रतिकूल रेखा मानने को कैसे न्यायसंगत कहा जा सकता है ? हां, किसी घटिया पर्वत-प्रकार वाले हाथ में इस रेखा का सूक्ष्म एवं दोषपूर्ण रूप दिखाई देना अलग बात है। ढलवां
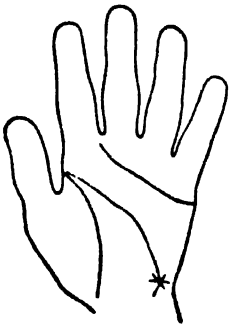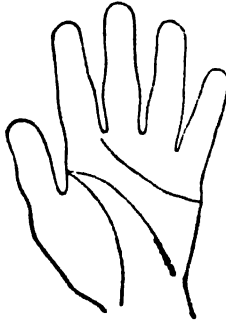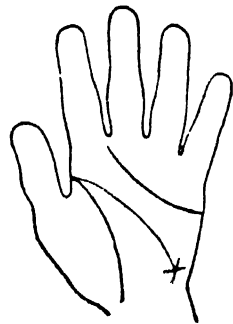
रेखाचित्र-124 *रेखाचित्र-125* *रेखाचित्र-126*

मस्तक रेखा अन्य प्रतिकूल चिह्नों के साथ होने पर व्यक्ति को चरम स्थिति का

कल्पनाशील बना देती है और यह स्थिति मानसिक विक्षिप्तता के आस-पास की होने के कारण निश्चित रूप से अवाञ्छनीय होती है।

पर्वत से नीचे की ओर गिरती और एक नक्षत्र में समाप्त होती मस्तक रेखा से पागलपन का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-124)। चन्द्र पर्वत की ओर झुकती और गुणनचिह्न में समाप्त होती मस्तक रेखा से मानसिकता में आये अवरोध का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-126)। यदि मस्तक रेखा चन्द्र पर्वत की ओर झुकते हुए शृंखलाकार समाप्त हो रही हो, तो यह मानसिक क्षति का संकेत होता है। झुकती हुई
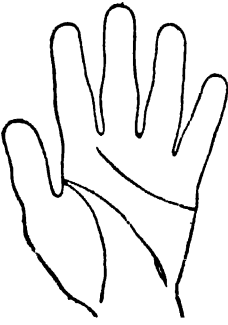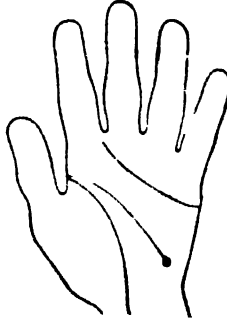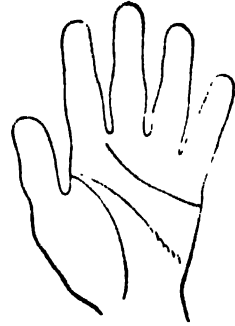
रेखाचित्र-127 *रेखाचित्र-128* *रेखाचित्र-129*

मस्तक रेखा के अन्त में अवस्थित द्वीप का अथवा बिन्दु का चिह्न मानसिक गड़बड़ी के ख़तरे की सूचना देता है। ख़तरे की सामान्यता अथवा गम्भीरता का निर्णय द्वीप के अथवा बिन्दु के आकार से होता है (रेखाचित्र-127-128)। चन्द्र पर्वत पर अवस्थित और बीच-बीच में टूटती हुई मस्तक रेखा से भी मानसिक गड़बड़ी संकेतित होती है (रेखाचित्र-129)। चन्द्र पर्वत की कल्पनात्मक प्रवृत्तियों से प्रभावित होने वाले मस्तक की रेखा के ये चिह्न न केवल व्यक्ति की समस्या का कारण बन जाते हैं, अपितु उसके लिए अधिक हानिकारक एवं संकट-पूर्ण भी सिद्ध होते हैं। अतः मस्तक रेखा के चन्द्र पर्वत की ओर झुकाव की प्रत्येक स्थिति को ध्यानपूर्वक देखना आवश्यक होता है।

मस्तक रेखा में आरम्भ में झुकाव की प्रवृत्ति का मिलना व्यक्ति का प्रारम्भ से ही कल्पनाशील होने का संकेत है (रेखाचित्र-130)। मस्तक रेखा का पहले तो सीधा चलना और फिर पीछे ढलवां हो जाना व्यक्ति का प्रारम्भ में व्यावहारिक और कालान्तर में कल्पनाशील हो जाने का सूचक है (रेखाचित्र-131)। इस प्रकार मस्तक रेखा का झुकाव-बिन्दु व्यक्ति के जीवन, व्यवहार और दृष्टिकोण में परिवर्तन आने के समय का सूचक होता है। वस्तुतः इस रेखा के साथ प्रचण्ड परिवर्तनों अथवा चिह्नों के संयोग को अच्छा नहीं समझना चाहिए।
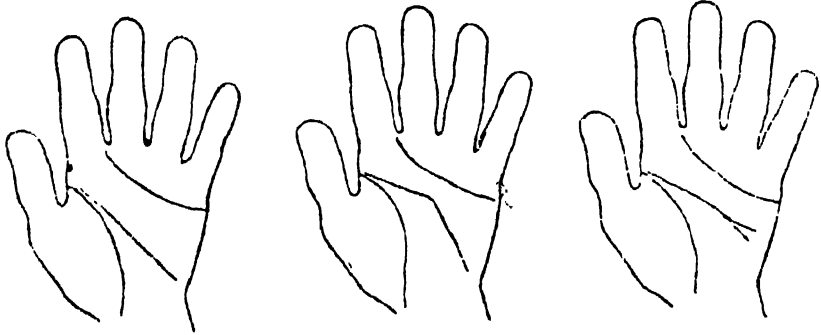
रेखाचित्र-130 *रेखाचित्र-131* *रेखाचित्र-132*

नीचे की ओर धीरे-धीरे वृत्ताकार रूप में झुकती मस्तक रेखा किसी अशुभ घटना की सूचक नहीं। इस मस्तक रेखा का अपने अन्त में द्विशाखी होना व्यक्ति के बहुमुखी प्रतिभा का धनी, सन्तुलित विचारों वाला, व्यवहारकुशल और कल्पना-प्रवण होने का संकेत है (रेखाचित्र-132)। यह संकेत प्राय: कला, विज्ञान, रंगमंच और साहित्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठित एवं अत्यन्त लोकप्रिय व्यक्तियों के हाथों में देखने को मिलता है।

साधारण रूप से द्विशाखी मस्तक रेखा व्यक्ति को बहुमुखी प्रतिभाशाली सूचित करती है, परन्तु साथ ही उसका अत्यधिक विस्तृत होना व्यक्ति को अंशत: व्यावहारिक और अंशत: कल्पनाजीवी बनाती है (रेखाचित्र-133)। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक विषय में दोहरा—कुछ व्यावहारिक और कुछ काल्पनिक—दृष्टिकोण अपनाता है। इस दोहरे दृष्टिकोण के कारण एक तो उसके विचारों में संकीर्णता नहीं आ पाती, दूसरे उसके निर्णय में पक्षपात अथवा एकांगिता के लिए कोई स्थान नहीं रहता।

द्विशाखी रेखा की दोनों शाखाओं में से अधिक गहरी एवं प्रबल शाखा को देखकर यह निर्णय लेना सरल हो जाता है कि कौन-सा दृष्टिकोण—व्यावहारिक अथवा काल्पनिक—अधिक प्रभावी है। यद्यपि एक अच्छे हाथ पर ऐसे चिह्न को शुभ माना जाता है, तथापि इतना तो निश्चित है कि व्यक्ति का दोहरा दृष्टिकोण उसे कभी-कभी अस्थिर और असत्यवादी भी सिद्ध करता है। यह बात अलग है कि स्वयं वह यह नहीं जान पाता कि वह झूठ बोल रहा है अथवा सत्य बोल रहा है अथवा विनोद के रूप में कपोलकल्पित (मनगढ़न्त) कहानी सुना रहा है। हां, इतना निश्चित होता है कि उसकी कल्पना सदैव नवीनता और विविधता लिये रहती है और वह प्राय: यथार्थ से हट जाता है, जिसकी जानकारी उसे बाद में होती है।

अशुभ और ग़लत हाथों में मस्तक रेखा के द्विशाखी होने को तो व्यक्ति के मिथ्याभाषी होने का पक्का प्रमाण समझना चाहिए। स्वार्थ और द्वेष के कारण सदैव

झूठ बोलने के अभ्यस्त लोगों के हाथों में मस्तक रेखा अवश्य ही द्विशाखी मिलेगी। कभी-कभार और विनोद के रूप में असत्य भाषण करने वालों की स्थिति अलग है।
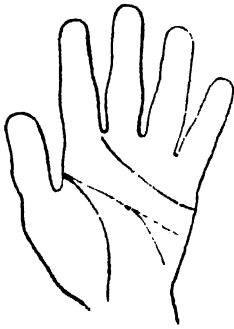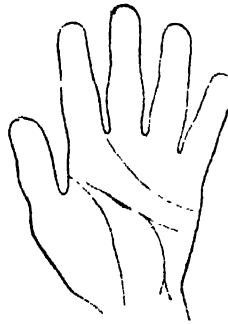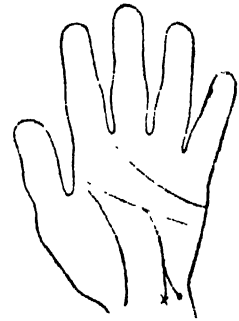
रेखाचित्र-133 *रेखाचित्र-134* *रेखाचित्र-135*

द्विशाखी मस्तक रेखा के एक भाग का उच्च मंगल की ओर जाना तथा दूसरे भाग का चन्द्र पर्वत की ओर जाकर वहां फिर से दूसरी शाखा का फूटना, अर्थात् उस रेखा का पुन: द्विशाखी हो जाना बताता है कि व्यक्ति दोहरी कल्पना का धनी है, वह प्रत्येक विषय को विचार देने की कला में कुशल है तथा वहां भी असत्य भाषण करता है जहां सत्य बोलना उसके हित में होता है (रेखाचित्र-134)। उसकी कल्पनाशक्ति प्रत्येक विषय को उसके वास्तविक स्वरूप से द्विगुणित करने में समर्थ होती है, परन्तु ऐसा करते समय वह विशुद्धता का ध्यान रख ही नहीं पाता और इससे उसके प्रत्येक वर्णन में एक प्रकार से विकृति की दुर्गन्ध आती है।

चन्द्र पर्वत क्षेत्र में द्विशाखी मस्तक रेखा के अन्त में नक्षत्रचिह्न के अथवा गुणनचिह्न के अथवा एक बिन्दु के होने को व्यक्ति की कल्पनाशक्ति के उन्माद की स्थिति तक पहुंचने का निश्चित संकेत समझना चाहिए (रेखाचित्र-135)। ऐसा व्यक्ति प्रथम स्थिति में कल्पनाजीवी होता है और फिर धीरे-धीरे यथार्थ से उसका नाता टूटता जाता है। यहां तक कि कल्पना की अतिशयता उसे मनोरोगी बना देती है। इस प्रकार की स्थिति—नक्षत्रचिह्न अथवा गुणनचिह्न अथवा एक बिन्दु की विद्यमानता—में चन्द्र पर्वत पर रेखाजाल का होना तो व्यक्ति की आकुलता, अधीरता और अस्थिरता को अत्यधिक बढ़ा देता है। इसके अतिरिक्त यह स्थिति अत्यन्त झुकी हुई एवं द्विशाखी मस्तक रेखा पर दीखने वाली अशुभ लक्षणों की अशुभता को और अधिक अशुभ बना देती है। हस्तरेखाविद् को साफ़-सुथरी और दोषपूर्ण मस्तक रेखा को देखकर तदनुसार व्यक्ति की मानसिक स्थिति तथा उसकी कल्पना के स्वरूप के उपयुक्त-अनुपयुक्त होने का अन्तर करना चाहिए। स्वस्थ एवं स्वच्छ रेखा वाला व्यक्ति अद्वितीय लेखक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करता है और उसे सनकी

अथवा उन्मत्त कहने का तो कोई साहस ही नहीं जुटा पाता।

कभी-कभी मस्तक रेखा तीन स्पष्ट रेखाओं—बुध की ओर, मंगल की ओर तथा चन्द्र पर्वत की ओर जाती—में विभाजित दिखाई देती है (रेखाचित्र-136)। यह लक्षण बहुमुखी प्रतिभा, विकसित चिन्तन तथा उपयुक्त कार्य-परता का सूचक होने के कारण उत्तम एवं श्रेष्ठ माना जाता है। इस प्रकार की मस्तक रेखा के होने का अर्थ है—व्यक्ति में जहां चन्द्र की कल्पना है, मंगल का अनुशासन है, वहां बुध की कार्यक्षमता भी है, अर्थात् तीनों गुणों का अद्भुत एवं विरल संयोजन है। यह संयोजन सफल जीविका प्रदान करने वाला होता है और सत्य तो यह है कि व्यक्ति के आलस्य, उपेक्षा तथा महत्त्वाकांक्षा का अभाव आदि कुछ दोषों के व्यक्ति के चरित्र पर प्रभावी न होने तक तो व्यक्ति अपने मनोऽभिलषित को पाने में सदैव सफल ही रहता है।
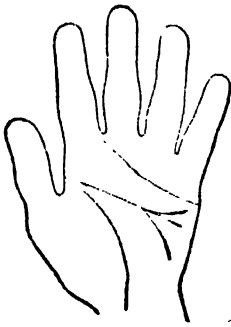
रेखाचित्र-136

रेखाचित्र-137

कुछ व्यक्तियों की मस्तक रेखा को चन्द्र पर्वत के आस-पास गोलाई में मुड़ता और चन्द्र पर्वत पर ही समाप्त होता देखा जाता है (रेखाचित्र-137)। ऐसे व्यक्तियों का झुकाव सहज रूप से ही कल्पना के प्रति होता है। इसी प्रकार लम्बी रेखा मानसिक शक्ति की प्रचुरता की तथा स्पष्ट रेखा मानसिक स्वास्थ्य की स्थिरता की सूचक होती है।

मस्तक रेखा व्यक्ति की मानसिक क्षमता का तथा अपनी ओर दूसरों का ध्यान केन्द्रित करने की निपुणता का बोध भी कराती है। गहरी, स्पष्ट और स्वच्छ रेखा से व्यक्ति की उत्कृष्ट मानसिक शक्ति, उच्च स्तर के आत्मसंयम, उद्देश्य की स्थिरता, स्मृति की विशिष्टता, स्वास्थ्य की उत्तमता तथा विकसित मानसिकता की जानकारी मिलती है। विद्युत्-धारा के अबाध प्रवाह से व्यक्ति के विचारों में अनोखा संयम और सन्तुलन पाया जाता है। उसके जीवन में किसी प्रकार की उथल-पुथल, अव्यवस्था अथवा गड़बड़ की कोई सम्भावना ही उत्पन्न नहीं होती। वस्तुतः ऐसी

रेखा वाला व्यक्ति बड़ा ही संयत, सन्तुलित और अनुशासित होता है। यही कारण है कि उसमें अपने संकल्पों को कार्यरूप में परिणत करने की विलक्षण योग्यता तथा अनोखी शक्ति होती है। मस्तक रेखा का लम्बा, गहरा और सुस्पष्ट होना व्यक्ति के मन का विशाल, उदार तथा स्वच्छ होना है। यह रेखा जितनी अधिक गहरी होती है, व्यक्ति में गुणों की शक्ति उतनी ही अधिक विकसित होती है। लम्बी रेखाएं विशृंखलित और दोषपूर्ण भी होती हैं। अतः केवल रेखा की लम्बाई को देखकर व्यक्ति को कुशाग्रबुद्धि नहीं समझ लेना चाहिए, अपितु समीपता और सूक्ष्मता से इसका अध्ययन करना चाहिए। ऐसा करने पर स्पष्ट हो जायेगा कि व्यक्ति तीव्रबुद्धि तो है, परन्तु उसके संकल्पों एवं विचारों में दृढ़ता नहीं। उसके स्वभाव में विक्षिप्तता और चपलता है। वस्तुतः रेखा की लम्बाई मात्रा को तथा गहराई-स्पष्टता गुणवत्ता को उजागर करती है। गहरी-सुगढ़ मस्तक रेखा वाले व्यक्ति निर्णय लेने में जल्दबाज़ी नहीं करते, अपितु ख़ूब सोच-विचार करने के उपरान्त ही अन्तिम परिणाम पर पहुंचते हैं। उनकी यह भी एक विशेषता होती है कि एक बार जो निर्णय ले लेते हैं, उस पर अडिग रहते हैं। वे किसी भी कठिनाई अथवा बाधा के आने पर अपने निर्णय से टस से मस नहीं होते। ऐसे लोग एकाग्रचित्त होकर लक्ष्य-प्राप्ति में प्रयत्नशील होते हैं तथा अपने सभी साधनों, स्रोतों एवं शक्तियों को एक ही दिशा में मोड़ देते हैं। उनकी एक उल्लेखनीय विशेषता यह होती है कि वे किसी भी प्रकार के संकट के आने पर भी विचलित-खिन्न न होकर शान्त-संयत बने रहते हैं।

मस्तक रेखा के गहरी एवं सुस्पष्ट होने के साथ अंगूठे का बलिष्ठ होना व्यक्ति को संकल्प का धनी, शान्त-संयत और सम्मोहक व्यक्तित्व वाला सूचित करता है। अंगूठे का बड़ा होना व्यक्ति की दूसरों पर अपनी प्रधानता को बनाने की इच्छा का तथा मस्तक रेखा का गहरा और सुस्पष्ट होना व्यक्ति की उस इच्छा को नियन्त्रित रखने का सूचक है। इन दोनों के संयोग--बड़े आकार का अंगूठा तथा गहरी-सुस्पष्ट मस्तक रेखा—वाला व्यक्ति अपने प्रत्येक कार्य को सिद्ध-सम्पन्न करने की क्षमता रखने वाला होता है। इस प्रकार रेखाओं के आपसी अनुपात पर हाथ के आकार पर भी विचार करना आवश्यक होता है।

अन्य रेखाओं की अपेक्षा मस्तक रेखा का अधिक गहरा और अधिक स्पष्ट रूप व्यक्ति में प्रधान पर्वत के गुणों की प्रधानता होने का सूचक है। अंगुलियों के प्रथम पर्वों से इस तथ्य का समर्थन हो जाता है। हाथों के और रेखाओं के सामान्यतः छोटा होने को और इसके साथ मस्तक रेखा के गहरा और स्पष्ट होने को गम्भीर संकट का लक्षण समझना चाहिए; क्योंकि यह स्थिति बताती है कि व्यक्ति की शारीरिक शक्ति की अपेक्षा उसकी मानसिक शक्ति अत्यधिक विकसित एवं बढ़ी-चढ़ी है। असाध्य मानसिक रोगियों के हाथ जहां लालिमा लिये रहते हैं, वहां उनके

हाथों में मस्तक रेखा भी इसी प्रकार की मिलती है। इस प्रकार यह सुनिश्चित होता है कि अन्य तत्त्वों के समान होने पर जहां सुगढ़ मस्तक रेखा उत्तम एवं शुभ होती है, वहां इस रेखा का विषम रूप अवश्य चिन्ता का विषय होता है।

गहरी मस्तक रेखा मस्तिष्क की सुदृढ़ता का लक्षण है। इस प्रकार की रेखा वाले व्यक्ति कभी सिरदर्द अथवा अन्य किसी दिमाग़ी गड़बड़ी के शिकार नहीं होते। हां, अन्य रेखाओं की अपेक्षा मस्तक रेखा के अत्यधिक विकसित होने एवं अरुणिमा लिये रहने वाले व्यक्ति अवश्य मूर्च्छा अथवा अचेतनता से ग्रस्त रोगी हो सकते हैं। यहां तक कि वे रक्ताघात और पागलपन के शिकार भी हो सकते हैं। बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति की बृहस्पति की अंगुली के तृतीय पर्व का मोटा होना उपर्युक्त आशंका को और भी अधिक पुष्ट करता है। प्रबल मस्तक रेखा मस्तिष्क के कार्य करने, अर्थात् यथोचित चिन्तन करने की क्षमता की सूचक है। ऐसा व्यक्ति चिन्तन-सक्षम होने के कारण कार्य के भार का वहन तथा उत्तरदायित्व का निर्वहण भली प्रकार से कर सकता है। इसके विपरीत दुर्बल अथवा अस्वस्थ मस्तिष्क साधारण से कार्य के भार को देखते ही घबरा जाता है। स्वस्थ-सबल मस्तिष्क न कभी दूसरों के बहकावे में आता है और न ही किसी से अनावश्यक रूप से प्रभावित होता है। दूसरे अर्थों में उसमें भरपूर एवं सुदृढ़ आत्मविश्वास होता है। गहरी और सुस्पष्ट मस्तक रेखा वाला व्यक्ति अपने विचारों को कार्य रूप देने में सक्षम होता है।

मस्तक रेखा का पतलापन और उथलापन व्यक्ति में चिन्तनशक्ति की क्षीणता को दर्शाता है। क्षीण मानसिकता वाला व्यक्ति धूर्त और उद्धत होता है। रेखा का लम्बापन व्यक्ति के मनोबल की शून्यता का लक्षण है। ऐसा व्यक्ति अधिक समय तक दिमाग़ी काम नहीं कर सकता, वह शीघ्र ही थकावट महसूस करने लगता है। किसी भी समस्या का सामना होने पर अथवा उलझन में फंस जाने पर वह सिरदर्द से पीड़ित हो जाता है। यही कारण है कि वह सभी प्रकार के तनावों और अधिक श्रम की अपेक्षा रखने वाले अनुसन्धान अथवा आविष्कार-जैसे दिमाग़ी कामों से दूर रहना चाहता है। वास्तव में वह अपने ध्यान को तथा मन को किसी एक विषय पर न केन्द्रित करना चाहता है और न ही कर पाता है। आत्मविश्वास तथा आत्मसंयम से रहित ऐसा व्यक्ति अपनी भावनाओं एवं संवेदनाओं से किनारा कर लेता है, जिसके परिणामस्वरूप उसके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। इतना ही नहीं, उसे भूख भी कम लगने लगती है और उसमें आलस्य-जैसे दोष भी घर कर लेते हैं। इस प्रकार बारीक मस्तक रेखा को निष्कर्ष रूप में मानसिक निष्क्रियता, कार्य करने की अनिच्छा, अयोग्यता, अस्थिरता तथा एकाग्रता के अभाव की सूचक समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति हलके-फुलके मानसिक श्रम से ही सन्तुष्ट हो जाता है; क्योंकि उसमें निरन्तर अथवा श्रमसाध्य कार्य करने की न तो शक्ति होती है और न ही इच्छा

तथा रुचि होती है। वस्तुत: महीन मस्तक रेखा को सन्तुलन में रख पाना कठिन होता है। विद्युत्-धारा के तीव्र प्रवाह के वहन की क्षमता के अभाव में उसके विशृंखलित होने की आशंका उत्पन्न हो जाती है। हाथ के आकार के साथ-साथ अन्य रेखाओं के लम्बा होने को, परन्तु मस्तक रेखा के पतला होने को उपर्युक्त सम्भावना—विशृंखलन—का पूर्व संकेत ही समझना चाहिए। ऐसे व्यक्तियों को अपनी उत्तेजना पर नियन्त्रण के प्रति विशेष सावधान रहने की आवश्यकता होती है। इन्हें मादक औषधियों एवं उत्तेजक द्रवों के सेवन की अपेक्षा विश्राम पर अधिक ध्यान देना चाहिए और कभी किसी भी विषय में अपनी शक्ति-सीमा का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए। इन्हें न तो अधिक समय तक भूखा-प्यासा रहना चाहिए और न ही अपने आपको अधिक थकाना चाहिए। इन्हें थोड़ी-सी थकावट होते ही तत्काल पूरा-पूरा आराम लेना चाहिए; क्योंकि उसे यह मानकर चलना चाहिए कि ऐसा न करने पर उसे टूटने से कोई नहीं बचा सकता। सूक्ष्म रेखाओं वाले और अधिक मानसिक श्रम करने वाले व्यक्तियों के हाथों में मस्तक रेखा प्राय: स्थान-स्थान पर अधिक गहरी और कटी हुई दीखती है (रेखाचित्र-138)। गहरे कटावों से अत्यधिक दबाव रहने के समय का पता चलता है। इन दबावों के निरन्तर बने रहने का दुष्परिणाम यह होता है कि मस्तिष्क में विस्फोट हो सकता है और उससे व्यक्ति पक्षाघात अथवा लकवे का शिकार हो सकता है। रेखा पर वर्तमान चिह्नों से व्यक्ति पर मानसिक दबाव पड़ने के समय उसकी आयु का अनुमान लगाया जा सकता है। कार्यशील व्यापारियों तथा विभिन्न व्यवसायों से जुड़े व्यक्तियों के हाथों पर ऐसे चिह्न प्राय: देखने को मिलते हैं। ऐसे लोगों के अपने कार्य के समय में कुछ कमी करने तथा विश्राम को महत्त्व देने के लिए सावधान किया जा सकता है। इन्हें ऐसा न करने पर भयंकर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहने की चेतावनी भी दी जा सकती है।
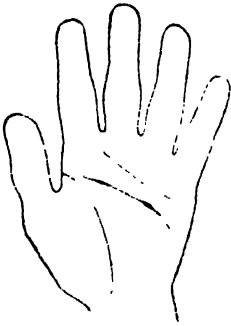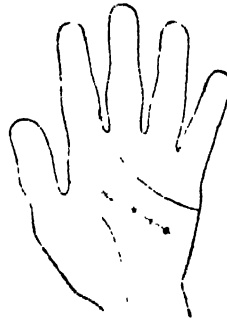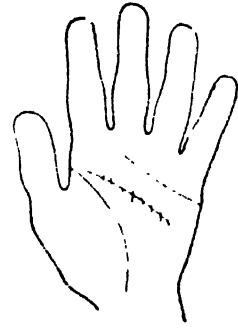
रेखाचित्र-138 *रेखाचित्र-139* *रेखाचित्र-140*

मस्तक रेखा की गहराई से जुड़ी विभिन्नताओं पर विचार करने के उपरान्त

यह जानना-समझना सम्भव होता है कि व्यक्ति का मस्तिष्क उसकी किस आयु में सर्वाधिक सक्रिय था, अर्थात् व्यक्ति किस आयु में स्वस्थ चिन्तन करने में समर्थ था। मस्तक रेखा से व्यक्ति की इस स्थिति की आयु की जानकारी मिल जाती है।

पतली-महीन मस्तक रेखा पर नक्षत्रों, गुणनचिह्नों और बिन्दुओं की विद्यमानता मस्तिष्क में संकट की सूचक होती है, अर्थात् ऐसा व्यक्ति सोचने-समझने में असमर्थ-असफल होता है (रेखाचित्र-139)। यदि ऐसा व्यक्ति सावधान नहीं रहता, तो उसके मस्तिष्क में विस्फोट हो सकता है तथा उससे उत्पन्न होने वाले विकार उसके जीवन को दु:ख-संकटग्रस्त बना सकते हैं। मस्तक रेखा पर विद्यमान चिह्नों के स्थान से विस्फोट होने के समय व्यक्ति की आयु का अनुमान लगाना भी सम्भव होता हैं।

थोड़ी-थोड़ी दूरी पर और फिर अनेक स्थानों पर मस्तक रेखा में कटाव का मिलना व्यक्ति के शिरोवेदना से व्यथित रहने का सूचक है (रेखाचित्र-140)। इसी प्रकार मस्तक रेखा की सूक्ष्मता और कटाव-चिह्नों के गहरेपन से मस्तिष्क में खलबली, स्नायु रोग, अवसाद (डिप्रैशन) तथा पक्षाघात-जैसे रोगों के पनपने की आशंका बढ़ जाती है (रेखाचित्र-141)। मस्तक रेखा का बायें हाथ में गहरा और दायें हाथ में सूक्ष्म रूप मिलना यह बताता है कि व्यक्ति की सुदृढ़ मानसिक शक्ति को किसी षड्यन्त्र के अन्तर्गत क्षीण कर दिया गया है। ऐसे व्यक्ति को अधिक मानसिक श्रम करने से यथासम्भव बचना चाहिए; क्योंकि बायें हाथ की प्रबल मानसिकता दायें हाथ की क्षीण मानसिकता की क्षतिपूर्ति नहीं कर सकती। यही कारण है कि ऐसे व्यक्ति सावधान किये जाने पर भी संभल नहीं पाते। इसके विपरीत मस्तक रेखा का बायें हाथ में पतलापन और दायें हाथ का गहरापन व्यक्ति की मानसिक शक्ति में
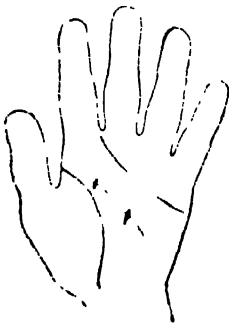
रेखाचित्र-141

रेखाचित्र-142

वृद्धि को सूचित करता है। ऐसा व्यक्ति अधिक मानसिक श्रम करने में सक्षम होता है। अभ्यास और प्रयास द्वारा मानसिक शक्ति की दुर्बलता को सबलता में बदला तो

जा सकता है, परन्तु यहां ध्यान देने की बात यह है कि ग़लत दिशा में किये गये अथवा अनियमित प्रयास लाभ को हानि में भी बदल सकते हैं। दोनों हाथों का सूक्ष्म और गहन अध्ययन-निरीक्षण करने पर शुभ-अशुभ, उत्तम-अधम तथा सबल-दुर्बल परिवर्तनों को जानना-समझना सम्भव हो जाता है।

चौड़ी-सतही मस्तक रेखा मानसिक शक्ति की प्रबलता का संकेत कदापि नहीं होती (रेखाचित्र-142)। ऐसी मस्तक रेखा वाले व्यक्ति में दृढ़ता, स्थिरता, साहस और निर्भीकता आदि गुण तो अंश-रूप में भी नहीं मिलता। वह तो नितान्त कायर, भीरु, अस्थिर और अनिश्चित मनःस्थिति वाला होता है। उसमें न तो आत्मविश्वास होता है और न ही आत्मनिर्भरता। सत्य तो यह है कि वह 'संकल्प' और 'निश्चय' आदि शब्दों से परिचित ही नहीं होता।

लम्बी मस्तक रेखा वाला व्यक्ति प्रतिभाशाली अवश्य होता है, परन्तु उसकी मानसिक शक्ति दुर्बल-क्षीण होती है। मस्तक रेखा का चौड़ा-सतही होना मनोबल की दृढ़ता के अभाव का संकेत है। अंगूठे के बड़ा होने पर ही व्यक्ति आत्मनिर्भरता के गुण से सम्पन्न होता है। ऐसा न होने पर दृढ़ता दीखती भले हो, परन्तु वास्तव में वह होती नहीं है; क्योंकि व्यक्ति अपने ऊपर नियन्त्रण रखने में प्रायः असमर्थ-असफल रहता है। उसकी स्मरणशक्ति इस प्रकार क्षीण होती है कि वह दूसरों को प्रभावित कर ही नहीं सकता। उलटे वह तो सहज दूसरों के प्रभाव में ही नहीं आ जाता, अपितु आत्मसमर्पण भी कर देता है। लोभ-लालच के सामने भी वह हथियार डालने में देर नहीं लगाता। वस्तुतः ऐसा व्यक्ति मानसिक रूप से आलसी, स्वयं सोचने में असमर्थ, अतः दूसरों के चिन्तन पर निर्भर रहने वाला तथा यथास्थिति से सन्तुष्ट रहने वाला होता है।

दोनों हाथों में चौड़ी-सतही मस्तक रेखा वाला व्यक्ति जीवन-भर मानसिक रूप से अशक्त रहता है। बायें हाथ में रेखा का गहरा और स्पष्ट होने तथा दायें हाथ में रेखा में सुधार दिखाई देने से व्यक्ति की निष्क्रिय मानसिकता के सक्रिय होने का संकेत होता है। बायें हाथ की मस्तक रेखा का चौड़ी-सतही होना और दायें हाथ की रेखा का खण्डित होना यह सूचित करता है कि व्यक्ति अस्थिर, डांवांडोल, शिथिल और दुर्बल मानसिकता वाला है। उत्तम मस्तक रेखा वाले व्यक्ति जीवन में आने वाली सभी जटिलतम समस्याओं का वीरता, साहस एवं सफलता से सामना करते हैं। यहां तक कि कुछ अपेक्षित गुणों के अभाव की भी पूर्ति कर लेते हैं, वहां इसके विपरीत सतही-चौड़ी मस्तक रेखा सबल-सशक्त व्यक्ति को भी दुर्बल बना देती है। उसका जीवन निरर्थक और सारे प्रयास विफल हो जाते हैं; क्योंकि ऐसी रेखा शक्तिशाली रेखा की शक्ति को भी शून्य कर देती है। बृहस्पति की महत्त्वाकांक्षा भी घट जाती है, मंगल की शक्ति भी न्यून हो जाती है। वस्तुतः प्रत्येक पर्वत में मानसिक

आलस्य छा जाता है।

बहुत से व्यक्तियों की प्रारम्भिक आयु में चौड़ी-सतही रहने वाली मस्तक रेखा परवर्ती आयु में बदलकर गहरी और स्वच्छ रूप ग्रहण कर लेती है (रेखाचित्र-143)। मस्तक रेखा का परिवर्तित रूप आयु के उस समय की सूचना देता है, जब व्यक्ति ने जीवन में संघर्ष करने का संकल्प किया और तदनुसार चिन्तन का अभ्यास डाला। यह स्थिति—प्रारम्भिक आयु की सतही रेखा का परवर्ती वर्षों में गहरा हो जाना—जीवन में अत्यधिक लाड-प्यार में पलने और कुछ काम न करने की प्रवृत्ति के कारण बिगड़ी, परन्तु फिर सहसा परिवर्तित परिस्थितियों के कारण अपने पैरों पर खड़ी होने को विवश, परन्तु साथ ही सौभाग्यवश सफल स्त्रियों के हाथों में भी प्राय: ही देखने को मिलती है। ऐसी स्त्रियों में जिस परिमाण में आत्मविश्वास, दृढ़ता एवं तत्परता आदि गुणों का विकास होता जाता है, उसी परिमाण में उनकी मस्तक रेखा अधिकाधिक गहरी स्पष्ट और सीधी होती जाती है।

रेखाचित्र-143
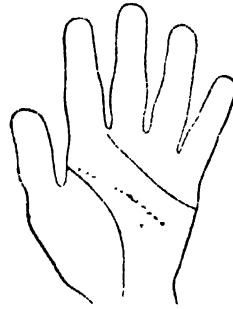
रेखाचित्र-144

शृंखलाकार मस्तक रेखा अशुभ मानी जाती है (रेखाचित्र-144)। इसका सतही-चौड़ा मार्ग विद्युत्-धारा के प्रवाह की दिशा के अतिरिक्त अन्य बाधाओं से भी घिरा रहता है, जो इस तथ्य का संकेत होता है कि व्यक्ति की मानसिक शक्ति अत्यन्त क्षीण है और उसे किसी कार्य के लिए प्रेरित करने के लिए भारी प्रयत्न करना पड़ेगा। ऐसा व्यक्ति कायर, ढीला-ढाला और डांवांडोल मन का होने के कारण कभी अपनी चित्तवृत्ति को एकाग्र ही नहीं कर पाता। ऐसे व्यक्तियों की स्मरणशक्ति दुर्बल, कल्पना शिथिल और अनुमान ग़लत होते हैं। वे निरन्तर सिरदर्द और अन्यान्य मानसिक रोगों से घिरे रहते हैं। उनके लिए किसी भी प्रकार का मानसिक कार्य कर पाना सम्भव ही नहीं होता। इससे उन्हें विश्वसनीय ही नहीं माना जाता। हृदय रेखा के प्रबल होने पर वे भावना के वशीभूत हो जाते हैं और फिर व्यावहारिक स्तर पर कुछ सोच ही नहीं सकते। यदि संयोगवश उनका अंगूठा भी

शिथिल हुआ, तो फिर यह निश्चित समझना चाहिए कि वे न तो कोई योजना बना सकते हैं और न ही किसी योजना को कार्यरूप दे सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों को किसी भी प्रकार के मानसिक आघात से बचना चाहिए; क्योंकि इससे न केवल उनका मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है, अपितु यह उनके लिए प्राणघातक भी सिद्ध हो सकता है। मानसिक आघात उनके स्वास्थ्य को भी बुरी तरह से प्रभावित करता है। कल्पनालोक में जीने वाले ये अव्यावहारिक व्यक्ति सदैव भ्रान्तियों और ग़लतफहमियों के शिकार रहते हैं। मानसिक आघात तो इन्हें कहीं का नहीं छोड़ता।

चन्द्र पर्वत की ओर झुकती मस्तक रेखा वाले व्यक्ति अत्यधिक कल्पनाशील—पागलपन के स्तर तक—और सनकी होते हैं, अत: वे सट्टे के व्यवसाय में जम नहीं पाते। इसी प्रकार शृंखलाकार मस्तक रेखा वाले व्यक्तियों को मानसिक चेतना से जुड़े व्यवसायों—साहित्य, विज्ञान, ललित-कला तथा गणित आदि—से लगाव नहीं रखना चाहिए; क्योंकि यहां उनके लिए सफलता की सम्भावना कम होती है। उन्हें तो ऐसे धन्धे अपनाने चाहिए, जिनमें हाथ-पैरों के चलाने का पर्याप्त अवकाश रहता है। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से आलसी और कामचोर होते हैं। उनसे काम लेने के लिए तो ज़ोर-ज़बरदस्ती करनी पड़ती है।

मस्तक रेखा के एक भाग का शृंखलाकार होना यह संकेतित करता है कि व्यक्ति शृंखलाकार वाले भाग के समय तक क्षीणता से ग्रस्त रहेगा, उसके उपरान्त वह सामान्य स्थिति में आ सकता है। शृंखलाकार रेखा के स्थान पर उभरती गहरी स्पष्ट रेखा व्यक्ति की मानसिक दुर्बलता को सबलता में बदलने वाली तो होती है, परन्तु बदलाव की यह प्रक्रिया अत्यन्त ही मन्द-शिथिल होती है (रेखाचित्र-145)।
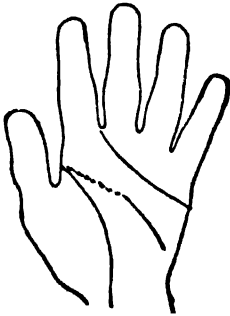
रेखाचित्र-145
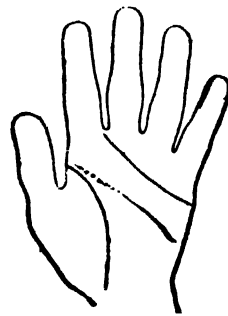
रेखाचित्र-146

अधिकांश हाथों में शृंखलाकार रेखा के बाद वाली रेखा प्राय: होती तो सूक्ष्म और पतली है, परन्तु धीरे-धीरे वह गहरी होती जाती है, जो मानसिक विकलता-दुर्बलता का स्थान सफलता-सबलता द्वारा लेने की सूचक होती है (रेखाचित्र-

मानसिक गतिविधि और क्रियाशीलता अनियमित और दुर्बल हो गयी है। दोष-चिह्नों के आकार और महत्त्व से तथा रेखा की दोषपूर्ण स्थिति से बाधा के स्वरूप का, उसके प्रारम्भ के समय का तथा अस्तित्व में रहने की अवधि आदि का अनुमान लगाया जा सकता है।

ऊंची-नीची रेखा ही विषम रेखा कहलाती है। कुछ दूरी तक सूक्ष्म-पतली, मध्य में स्थूल और अन्त में पुनः पतली-बारीक हो जाने वाली रेखा भी विषम रेखा ही कहलाती है। अभिप्राय यह है कि निरन्तर स्वरूप बदलने वाली रेखा का नाम ही विषम रेखा है (रेखाचित्र-147)। यहां यह उल्लेखनीय है कि समग्र रूप से पूरी रेखा में परिवर्तन से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति की मानसिकता कुछ वर्षों तक अशक्त रहने के उपरान्त पुनः सशक्त हो गयी। जितनी बार रेखा में ऐसे परिवर्तन दिखाई देते हैं, उतनी ही बार मानसिकता का दुर्बल-सबल होना समझना चाहिए।

जब रेखाएं गहरी बनती हैं, तब विचारों में एकाग्रता आ जाने के साथ-साथ मस्तिष्क पर दबाव भी अत्यधिक बढ़ जाता है। मस्तक रेखा के आरम्भ की समय-सीमा को व्यक्ति के दुर्बल चित्त और अस्थिर मानसिकता वाला तथा रेखा के गहरा होने से दबाव के अधिक बढ़ जाने का पता चलता है। गहरे स्थानों में बारीक-महीन रेखा का अन्यान्य अनेक स्थानों से घिरा होना ख़तरे का संकेत ही है। इस प्रकार की रेखाओं वाले व्यक्ति उत्साह-निरुत्साह तथा आशा-निराशा के बीच झूलते और सदैव दिशा बदलते रहते हैं। ऐसे लोगों से मार्गदर्शन की तो क्या, उचित सलाह मिलने की भी आशा नहीं की जा सकती। सत्य तो यह है कि ऐसे लोगों को तो विश्वसनीय ही नहीं समझना चाहिए। विषम रेखा के मार्ग में नक्षत्र अथवा गुणनचिह्न अथवा बिन्दु को व्यक्ति के लकवा, रक्ताघात अथवा पागलपन से ग्रस्त होने की सम्भावना के संकेत समझकर इन्हें गम्भीरता से लेना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को जीवन में फूंक-फूंक कर क़दम रखना चाहिए। उन्हें भरपूर नींद लेनी चाहिए और आवश्यकता के अनुसार विश्राम करना चाहिए। उन्हें कभी उत्तेजित एवं असंयत नहीं होना चाहिए।

किन्हीं हाथों में मस्तक रेखा पर अनेक आकारों की और अनेक दिशाओं में छितरी-छिटकी हुई असंख्य रेखाएं देखने को मिलती हैं। सामान्य मान्यता यह है कि मस्तक रेखा से नीचे की ओर गिरती रेखाओं की अपेक्षा रेखा के ऊपर की ओर निकली छिटपुट रेखाएं कहीं अधिक शुभ होती हैं।

ऊपर की ओर जाती रेखाएं—छिटकी अथवा बंटी हुई—एक के बाद एक छोटी होती जाती हैं। यदि ये रेखाएं मस्तक रेखा को न तो काटती हों और न ही किसी प्रकार की हानि पहुंचाती हों, तो इन्हें व्यक्ति द्वारा अपने हाथ में आये अवसर का लाभ उठाने, अर्थात् जीवन में उन्नति करने तथा ऊपर उठने का पूरा-पूरा प्रयास

कर रहा मानना चाहिए (रेखाचित्र-148)। सभी पर्वतों के नीचे से ऊपर की ओर उठती हुई विभक्त रेखाएं यही संकेत करती हैं।
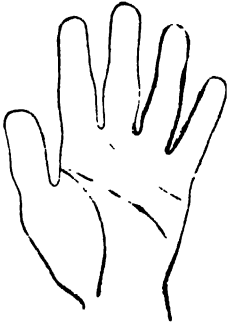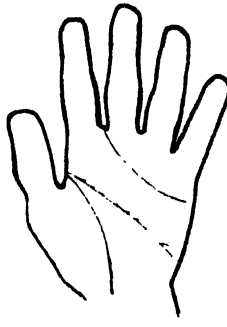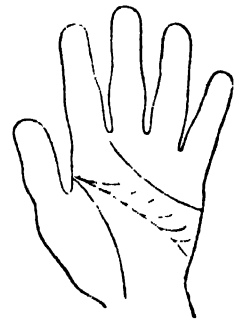
रेखाचित्र-147 *रेखाचित्र-148* *रेखाचित्र-149*

जिन व्यक्तियों के हाथों में विभक्त रेखाएं बड़ी और लम्बी होती हैं, उनसे व्यक्ति के मस्तिष्क पर अत्यधिक दबाव पड़ता है और इसके कारण व्यक्ति सदैव इस प्रकार दुविधा में ग्रस्त रहता है कि किसी भी विषय में निर्णय ले ही नहीं पाता (रेखाचित्र-149)। ऐसे व्यक्ति कभी इधर, तो कभी उधर भटकते रहते हैं। जिनकी मस्तक रेखा चन्द्र पर्वत की ओर झुक जाती है, उनकी तो बुद्धि इस प्रकार भ्रमित हो जाती है कि वे दिन में भी सपने देखने लगते हैं।

विभक्त रेखाओं के मस्तक रेखा से नीचे की ओर झुकने से यह संकेत मिलता है कि ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही निरुत्साहित हो जाने वाला, जीवन-संघर्ष में न टिक पाने वाला और बात-बात में अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहाने वाला होता है (रेखाचित्र-150)। ऐसी स्थिति वाले केवल वही व्यक्ति जीवन में सफल होते हैं, जो कार्य को आरम्भ करते ही अपनी सफलता के प्रति आश्वस्त होकर चलते हैं तथा निरन्तर आशावादी दृष्टिकोण को अपनाये रखते हैं।

प्राचीन हस्तरेखाशास्त्री तो इस स्थिति को 'निराशा' और 'अवसाद' के रूप में देखते हैं और व्यक्ति को सदैव आशावादी-उत्साही बने रहने, स्थिति से जूझने और कभी हथियार न डालने का परामर्श देते हैं।

बृहस्पति पर्वत के नीचे उगती एकमात्र विभक्त रेखा से संकेत मिलता है कि व्यक्ति महत्त्वाकांक्षी है तथा उसकी इच्छाएं बृहस्पति से प्रभावित हैं। अतः वह आगे बढ़ना तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने का इच्छुक है (रेखाचित्र-151)। इस रेखा के साथ बृहस्पति पर्वत का विशाल रूप लिये रहना यह उजागर करता है कि व्यक्ति केवल महत्त्वाकांक्षी ही नहीं, अपितु अहंकारी भी है।

विभक्त रेखा का शनि पर्वत के नीचे उदय होना व्यक्ति के विचारों का शनि से

प्रभावित होने का तथा शनि सम्बन्धी गुणों से आकृष्ट होने का सूचक है (रेखाचित्र-152)। विभक्त रेखाएं पूरी रेखा को मोड़ने में तो समर्थ नहीं होतीं, हां, वे उसके एक भाग को अलग अवश्य कर सकती हैं। इस प्रकार इन रेखाओं से विभक्त रेखाओं के मुड़ने के स्थान के आकर्षण एवं बल की जानकारी मिलती है।
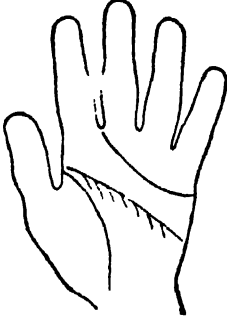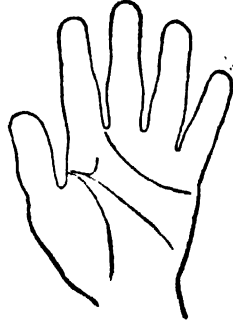
रेखाचित्र-150 *रेखाचित्र-151* *रेखाचित्र-152*

यदि विभक्त रेखा एक नक्षत्र में जाकर समाप्त होती है, तो इससे संकेत मिलता है कि व्यक्ति अपनी कामनाओं की सिद्धि में समर्थ है (रेखाचित्र- 153)। अन्य पर्वतों के आकार और स्वरूप के उत्तम होने पर यह सिद्धान्त उन पर भी लागू होता है।
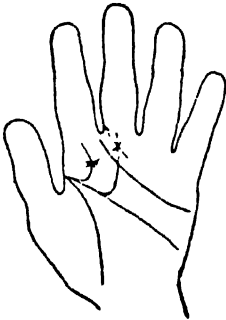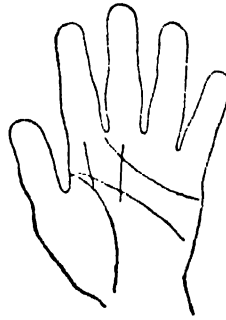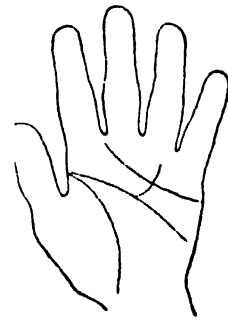
रेखाचित्र-153 *रेखाचित्र-154* *रेखाचित्र-155*

मस्तक रेखा से छिटकी विभक्त रेखा को काटने वाली आकस्मिक रेखा मानने की भूल कभी नहीं करनी चाहिए (रेखाचित्र-154)।

मस्तक रेखा से निकलती और सूर्य पर्वत तक जाती विभक्त रेखा यह उजागर करती है कि व्यक्ति में सूर्य गुणों की प्रधानता है, अर्थात् उसमें स्वाभिमान, सौन्दर्य, प्रदर्शन, धन-सम्पत्ति, प्रसिद्धि तथा कला-प्रेम आदि गुणों के प्रति गहरी ललक है

(रेखाचित्र-155)। इस रेखा के अन्त में नक्षत्रचिह्न का मिलना जहां एक शुभ लक्षण है, वहां बिन्दु, क्रास अथवा द्वीपचिह्न का मिलना उन्नति-सफलता के अवसरों को नकारा करने का सूचक है (रेखाचित्र-156)। अन्य पर्वतों के सम्बन्ध में भी इसी नियम को लागू समझना चाहिए।
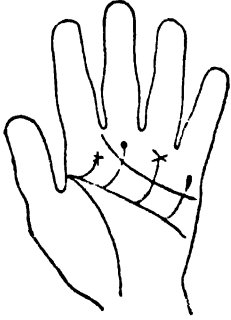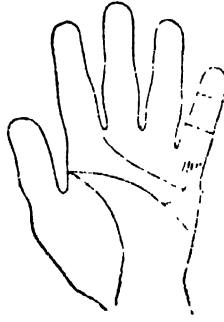
रेखाचित्र-156 *रेखाचित्र-157* *रेखाचित्र-158*

विभक्त रेखा का बुध पर्वत के नीचे प्रकट होना व्यक्ति के विचारों का बुध से प्रभावित होना सूचित करता है (रेखाचित्र-157)। इसके साथ-साथ अंगुली के दूसरे पर्व का लम्बा होना तथा पर्वत पर चिकित्सावृत्ति के सूचक चिह्न का होना व्यक्ति द्वारा चिकित्सा व्यवसाय को अपनाने के निश्चित संकेत हैं। अंगुली के तृतीय पर्व के सर्वाधिक विकसित होने पर व्यक्ति के व्यापारी बनने की सम्भावना प्रबल होती है।

मस्तक रेखा से निकलकर हृदय रेखा को स्पर्श करती सभी विभक्त रेखाएं व्यक्ति के भावुक, स्नेही, संवेदनशील और प्रेमी होने की पुष्टि करती हैं (रेखाचित्र-158)।

यदि रेखा गहरी और स्पष्ट है, तो समझना चाहिए कि व्यक्ति अपने हित-साधन की चिन्ता तक सीमित रहने वाला नहीं होगा। वह दूसरों के हितों को भी महत्त्व देने वाला तथा करुणा और सहानुभूति से परिपूर्ण होगा। मस्तक रेखा से निकलती विभक्त रेखाओं के हृदय रेखा में विलीन होने का अर्थ है—व्यक्ति के मस्तिष्क पर हृदय का अत्यधिक प्रभाव पड़ना।

इन रेखाओं का शनि की रेखा को काटते हुए जाना भी देखने को मिलता है (रेखाचित्र-159)। यह स्थिति भावनाओं (भावुकता) के कारण व्यवसाय की सफलता में बाधा पडने को सूचित करती है।

मस्तक रेखा को काटती हुई आड़ी रेखाएं कभी-कभी मस्तक रेखा का एक भाग-जैसी तो लगती हैं, परन्तु बाद में पाया जाता है कि उनसे तो सारी रेखा ही कट

गयी है (रेखाचित्र-160)। ऐसी छोटी रेखाओं का कोई निश्चित आरम्भ-स्थान तथा अन्त-स्थान तो नहीं होता, परन्तु इनकी लम्बाई मस्तक रेखा को काट सकने योग्य
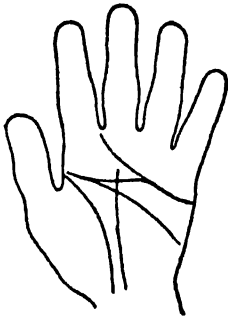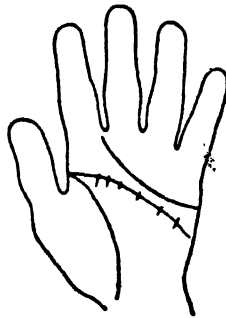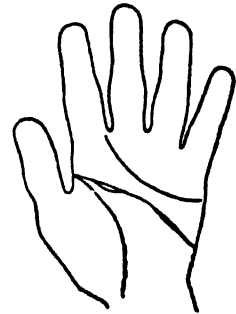
रेखाचित्र-159 *रेखाचित्र-160* *रेखाचित्र-161*

अवश्य होती है। इन्हें आकस्मिक रेखाएं कहना तो अनुपयुक्त लगता है, अतः 'आड़ी रेखाएं' कहना ही सही है। इन आड़ी रेखाओं की लाल रंगत भी अच्छी नहीं होती; क्योंकि उससे व्यक्ति के मस्तिष्क-विकार, ज्वर तथा/अथवा शिरोवेदना-जैसे रोगों से ग्रस्त होने की आशंका होती है। रेखाओं की गहराई और लालिमा के अनुपात में ही रोगों की सम्भावना की न्यूनता-अधिकता का अनुमान लगाया जाता है। रोगों के समय की निश्चित आयु की जानकारी मस्तक रेखा से प्राप्त की जा सकती है।

गहरी रेखाओं में से किसी एक रेखा द्वारा मस्तक रेखा को काटने का अर्थ है—मस्तिष्क रोग के ख़तरे की सूचना। यदि व्यक्ति बृहस्पतिप्रधान है, तो उसे रक्ताघात भी हो सकता है। आड़ी रेखाओं के छोटा-महीन हो जाने को व्यक्ति के मानसिक चिन्ताओं और सिरदर्द से पीड़ित होने का ही संकेत समझना चाहिए। इस स्थिति में व्यक्ति मस्तिष्क-ज्वर का शिकार नहीं होता। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि प्रायः अत्यन्त व्यग्र और आशंकित रहने वाले व्यक्तियों के हाथों में ही यह सब—आड़ी रेखाओं का लघु-सूक्ष्म रूप धारण करना—देखने को मिलता है।

रेखाओं पर द्वीपों का दीखना व्यक्ति की मानसिक शक्ति में क्षीणता आने का सूचक है (रेखाचित्र-161)। अनेक पागल व्यक्तियों की मस्तक रेखा पर द्वीपचिह्नों को देखा जाना इस तथ्य की पुष्टि करता है। परीक्षण से यह भी सिद्ध हुआ है कि जब तक द्वीपचिह्न रहे हैं, व्यक्ति में पागलपन रहा है। द्वीपचिह्नों के लुप्त होते ही पागलपन भी जाता रहा है। द्वीपचिह्नों के रहने पर विकृत मानसिक सन्तुलन वाले और द्वीपचिह्नों के मिटने पर मानसिकता के स्वस्थ हो जाने वाले कुछ व्यक्ति भी देखने को मिले हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि द्वीपचिह्न मानसिक दुर्बलता के सूचक हैं।

प्रेतात्माओं से सम्पर्क बनाने वाले व्यक्तियों के हाथों पर द्वीपचिह्नों का होना सामान्य बात है। रोगपीड़ित महिलाओं के हाथों में ऐसे द्वीपचिह्न उनकी चिन्तनशक्ति में सुधार न आने की अवधि तक देखने को मिलते हैं। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि ये द्वीपचिह्न मस्तिष्क की विकृति के सूचक हैं और जब तक ये अस्तित्व में रहते हैं, जब तक व्यक्ति का मस्तिष्क पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं रहता—यह तथ्य अनेक उदाहरणों द्वारा पुष्ट हो चुका है।

कुछ हस्तरेखाविशेषज्ञ इन द्वीपों को वंश-परम्परागत दोषों के सूचक भी मानते हैं, परन्तु परीक्षण से यह धारणा सही सिद्ध नहीं हुई। अनुभव से यह पाया गया है कि इन द्वीपों के रहने पर शरीर में कोई-न-कोई विकार बना ही रहता है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति को अनावश्यक रूप से उत्तेजित अथवा परेशान किये जाने पर उसका मस्तिष्क स्पष्ट रूप से अस्थिर एवं असन्तुलित हो ही जाता है। पचासी प्रतिशत व्यक्तियों में द्वीप की उपस्थिति मानसिक असन्तुलन को बनाये रखने वाली पायी गयी है। द्वीपचिह्न के गहरे-स्पष्ट होने पर तो व्यक्ति विभिन्न रोगों—मस्तिष्क-ज्वर, स्त्री रोग, आन्त्र-ज्वर, सन्निपात तथा स्नायु-पीड़ा—का अथवा गम्भीर मानसिक दबाव का शिकार हो सकता है। कभी कोई व्यक्ति धर्मान्तरण कर लेता है, तो उस स्थिति में भी उसके मानसिक सन्तुलन में विकार की सम्भावना उत्पन्न हो जाती है। प्रत्येक दिशा में परस्पर काटने वाली रेखाओं से भरे हाथ में स्थित द्वीप मानसिक असन्तुलन के समय की अवधि के सूचक होते हैं। यदि हाथ रेखाओं से रहित है, तो समझना चाहिए कि व्यक्ति मानसिक दबाव तथा उद्वेग आदि से पूर्णतः मुक्त है। ऐसा व्यक्ति अपनी शान्त-संयत मन:स्थिति के कारण किसी भी उपस्थित संकट का साहस के साथ सामना कर सकता है। इतना तो निश्चित है कि मस्तक रेखा में द्वीपों की उपस्थिति प्रत्येक रूप में भयंकर ख़तरे का संकेत है। इस स्थिति में मस्तक रेखा की द्वीप से पूर्ववर्ती और परवर्ती स्थिति के आधार पर परिणाम निकाला जा सकता है। द्वीप के बाद नक्षत्रचिह्न का, गुणनचिह्न का, बिन्दु का अथवा खण्डित रेखा का होना निश्चित रूप से गम्भीर मानसिक विकार का होना है और इसके विपरीत द्वीपचिह्न के उपरान्त रेखा का गहरा-स्पष्ट रूप परिणाम की गम्भीरता के कम होने का सूचक समझना चाहिए। मस्तक रेखा में द्वीप के रूप-रंग और गुणों पर भी विचार करना अपेक्षित होता है। रेखा का गहरा होना और साथ ही लालिमा लिये रहना संकट में और अधिक वृद्धि का कारण बनता है।

द्वीप से पूर्व रेखा के गहरा होने का अर्थ है—मस्तिष्क पर अधिक दबाव पड़ना और इसके फलस्वरूप मानसिकता में विकृति का आ जाना। द्वीपचिह्न इस तथ्य को स्वयं ही उजागर करता है (रेखाचित्र-162)। इस सम्बन्ध में हाथ के कुछ अन्य भागों से द्वीप को जोड़ने वाली रेखाओं की जांच-परख भी आवश्यक होती है;

क्योंकि इनसे इस तथ्य का पता चलता है कि पर्वत प्रकारों के किन निजी रोगों से द्वीप का जन्म हुआ है।
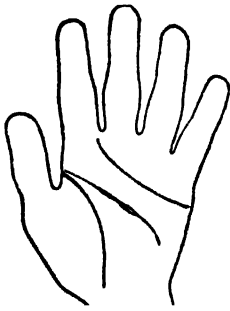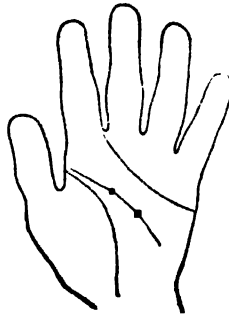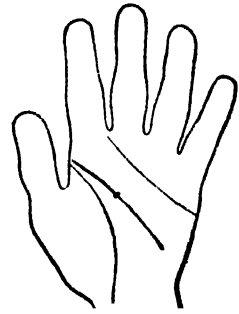
रेखाचित्र-162 *रेखाचित्र-163* *रेखाचित्र-164*

पर्वतों पर स्थित जाल से अथवा आड़ी रेखाओं से निकलकर मस्तक रेखा पर स्थित द्वीपचिह्न तक जाने वाली आकस्मिक रेखाओं को सर्वथा विश्वसनीय ही समझना चाहिए। नब्बे प्रतिशत मूक-बधिर लोगों के हाथों में मस्तक रेखा पर शनि के नीचे द्वीपचिह्न मिलता है।

मस्तक रेखा में बिन्दुचिह्नों के मिलने को मस्तिष्क में भयंकर विकार का संकेत समझना चाहिए (रेखाचित्र-163)। बिन्दु के आकार और रंग से गम्भीरता की मात्रा का अनुमान लगाया जा सकता है। आकार में छोटा और सफ़ेद अथवा हलके गुलाबी रंग का बिन्दु जहां अल्पकालीन रोग का सूचक है, वहां आकार में बड़ा और गहरा लाल अथवा बैंगनी रंग लिये रहने वाला बिन्दु मस्तिष्क रोग की गम्भीरता का सूचक होता है। इस बिन्दु के दीखते ही व्यक्ति को अत्यन्त सतर्क हो जाना चाहिए। बिन्दुओं के बाद वाली रेखा मस्तिष्क पर रोग के पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी देती है। रेखा के आगे तक गहरी और स्पष्ट होने पर रोग का प्रभाव अल्पकालिक होता है। रेखा का आगे चलकर बारीक हो जाना व्यक्ति की मानसिक शक्ति में क्षीणता के आ जाने को प्रकट करता है (रेखाचित्र-164)। बिन्दु के पश्चात् रेखा के शृंखलाकार हो जाने का अर्थ है—मस्तिष्क में विकार आ जाने के कारण व्यक्ति की मानसिकता का क्षीण एवं दुर्बल हो जाना (रेखाचित्र-165)। यह भी ध्यान देने की बात है कि शृंखला जब तक छोटी रहती है और उसके स्थान पर गहरी रेखा नहीं बन पाती, तब तक मस्तिष्क पूर्णत: स्वस्थ नहीं हो सकता (रेखाचित्र-166)। बिन्दु और शृंखला की अवधि में जब मानसिक अव्यवस्था स्पष्ट दीख रही हो, तो किन्हीं विशेष कार्यों-व्यवसायों को आगे बढ़ाने की चेष्टा करनी ही नहीं चाहिए।

सफ़ेद रंग के बिन्दु से व्यक्ति का बीती आयु में मस्तिष्क रोग से ग्रस्त होना सूचित होता है जब कि गहरे लाल अथवा बैंगनी रंग के बिन्दु से व्यक्ति की मानसिकता में वर्तमान समय में विकार आने का पता चलता है।
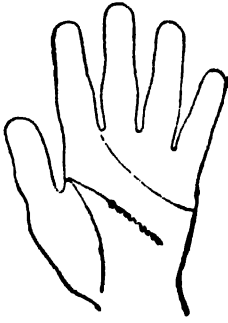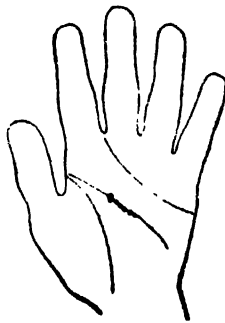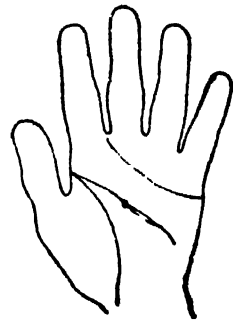
रेखाचित्र-165 *रेखाचित्र-166* *रेखाचित्र-167*

बिन्दु के पश्चात् द्वीपचिह्न का मिलना गम्भीर रोग के कारण व्यक्ति के मस्तिष्क-विकार का सुदीर्घकाल तक बने रहने का संकेत है (रेखाचित्र-167)। यह अशुभ संकेत इसके अतिरिक्त यह भी सूचित करता है कि रोग के कारण व्यक्ति का मानसिक सन्तुलन अत्यधिक बिगड़ ही नहीं सकता है, अपितु बिगड़ा हुआ भी रह सकता है।
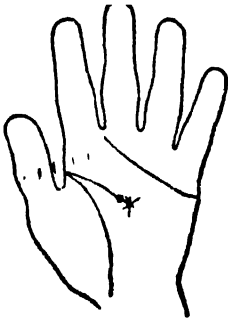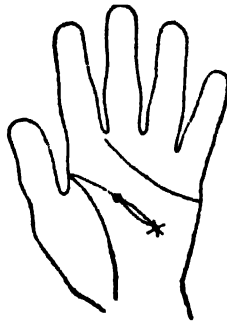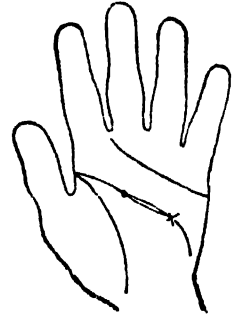
रेखाचित्र-168 *रेखाचित्र-169* *रेखाचित्र-170*

बिन्दु के पीछे नक्षत्रचिह्न के अथवा गुणनचिह्न के होने से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति का रोग प्राणलेवा सिद्ध हो सकता है (रेखाचित्र-168)। बिन्दु के पीछे द्वीप के और उसके अन्त में नक्षत्रचिह्न के दीखने के परिणाम क्रमश: निम्नोक्त रूप से होते हैं—बिन्दु दीखने के समय से मस्तिष्क के गम्भीर रोग के प्रारम्भ होने की आयु का, द्वीप की लम्बाई से मस्तिष्क में विकार के बने रहने की अवधि का तथा

द्वीप के अन्त में नक्षत्रचिह्न के दीखने से व्यक्ति के अचानक ही मृत्यु का ग्रास बनने का पता चलता है (रेखाचित्र-169)। नक्षत्रचिह्न के बाद आगे जाती मस्तक रेखा को व्यक्ति की मृत्यु का नहीं, अपितु उसके पागल होने का संकेत समझना चाहिए।

मस्तक रेखा के बीच-बीच में टूटना विद्युत्-धारा के प्रवाह की अनियमितता के अथवा उसके बाधित होने का सूचक है। यह अनियमितता मस्तिष्क की क्रिया अथवा गतिविधि को भी अनियमित कर देती है, जिसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति की दृढ़ता, एकाग्रता तथा संयम वृत्ति आदि उत्तरोत्तर क्षीण होते जाते हैं (रेखाचित्र-170)। रेखा में टूटन अनेक रोगों के जन्म लेने को सूचित करती है। मस्तक रेखा के अतिरिक्त नाख़ूनों, जीवन रेखा तथा अन्यान्य संकेतों से इस तथ्य की पुष्टि करनी चाहिए। चपल प्रकृति, अस्थिरचित्त तथा स्नायुरोगाक्रान्त व्यक्तियों के हाथों की रेखा में टूट-फूट प्राय: ही देखने को मिलती है (रेखाचित्र-171)। मस्तक रेखा का अनेक बार अथवा बार-बार टूटना भी किसी रोग का संकेत होता है। मस्तक रेखा से रोगों के आक्रमण के समय, अर्थात् व्यक्ति के रोगग्रस्त होने की आयु जानी जा सकती है।
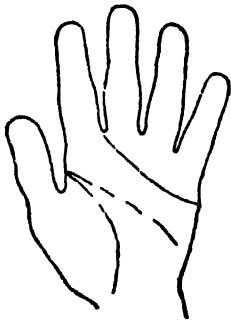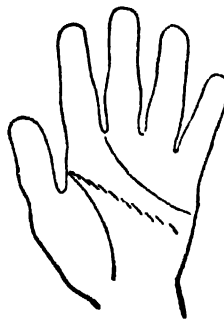
रेखाचित्र-171 *रेखाचित्र-172* *रेखाचित्र-173*

मस्तक रेखा का निरन्तर टूटना और सीढ़ी का आकार धारण कर लेना व्यक्ति में स्थिरता के नितान्त अभाव का सूचक है (रेखाचित्र-172)। ऐसा व्यक्ति अस्थिरचित्त, बड़बोला और बहानेबाज़ होता है। वह सदैव न केवल सिरदर्द से पीड़ित रहता है, अपितु उसका सामान्य स्वास्थ्य भी ख़राब रहता है। वह इस प्रकार सपनों और कल्पनाओं में डूबा रहता है कि किसी दूसरे का सहारा अथवा सम्बल न मिलने पर पागल भी हो सकता है। ऐसे व्यक्ति सदैव अपना जीवन-लक्ष्य बदलते रहते हैं और अप्राप्य की प्राप्ति के पीछे भटकते रहते हैं।

अंगुलियों के नुकीले-पैने छोरों वाले तथा चन्द्र पर्वत में दूर तक जाने वाली मस्तक रेखा रखने वाले व्यक्ति न केवल अव्यावहारिक होते हैं, अपितु क्षण-

प्रतिक्षण रंग बदलने वाले होने से सर्वथा अविश्वसनीय भी होते हैं।

मस्तक रेखा के टूटने के प्रत्येक स्थान को देखना चाहिए। सहायक रेखाओं, अन्यान्य रेखाओं के उलझे हुए सिरों, सिरों को जोड़ने वाली रेखाओं, वर्ग अथवा किसी अन्य चिह्न द्वारा इन टूटनों में सुधार लाये जाने पर रेखा के विशृंखलन के समय व्यक्ति को आघात अवश्य लगता है, परन्तु इस आघात की न्यूनता-अधिकता विच्छेद की तथा उसमें सुधार की मात्रा-न्यूनता अथवा अधिकता के अनुरूप ही होती है। अभिप्राय यह है कि यदि विच्छेद अधिक और सुधार कम है, तो आघात अधिक गहरा होगा और यदि विच्छेद साधारण और सुधार पर्याप्त है, तो आघात साधारण होगा। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि टूटी हुई मस्तक रेखा के छोर का किसी पर्वत की ओर मुड़ना ठीक विभक्त रेखाओं के टूटे हुए छोर-जैसा प्रभाव दिखाता है। वस्तुतः मस्तक रेखा में विच्छेदन के कारण ही यह प्रभाव होता है। रेखा के विशृंखलन की परवर्ती स्थिति इस तथ्य की जानकारी देती है कि टूट ने मानसिक शक्ति को स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त अथवा नाकारा कर दिया है अथवा कुछ सुधार हुआ है, अर्थात् क्षति की पूर्ति हो सकी है। अतः टूट अथवा अन्तराल के बाद के सभी चिह्नों—नक्षत्र, बिन्दु, गुणनचिह्न तथा द्वीप—पर इसलिए भी विचार करना आवश्यक होता है; क्योंकि ये सभी चिह्न व्यक्ति की मानसिक क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव के सूचक होते हैं। पूरी मस्तक रेखा की आद्योपान्त जांच-परख करने और उसमें हुए प्रत्येक परिवर्तन के स्वरूप और कारण पर विचार करने पर सम्बद्ध व्यक्ति पर पड़ने वाले अथवा पड़ रहे प्रभाव का अनुमान लगाया जा सकता है। यहां इतना जानना और आवश्यक है कि मस्तक रेखा पर नक्षत्रचिह्नों की स्थिति सदैव संकट का संकेत होने से अवाञ्छनीय होती है (रेखाचित्र-173)।

मस्तक रेखा पर विद्युत्-प्रकाश को दीप्ति (चमक अथवा प्रतिभा) का नहीं, अपितु विस्फोट का चिह्न ही समझना चाहिए। इसके फलस्वरूप व्यक्ति पागलपन अथवा रक्ताघात का और किन्हीं मामलों में तो मृत्यु का शिकार तक हो सकता है। इस स्थिति में व्यक्ति के स्तर आदि का अध्ययन भी अपेक्षित होता है। व्यक्ति के बृहस्पतिप्रधान अथवा मंगलप्रधान होने पर नक्षत्र की स्थिति व्यक्ति के रक्ताघात से पीड़ित होने का संकेत है, तो व्यक्ति के शनिप्रधान अथवा चन्द्रप्रधान होने पर उसके पक्षाघात अथवा पागलपन का शिकार होने का संकेत होता है। इस अध्याय में रोग-निदान सम्बन्धी निर्देशों का अनुसरण करने पर भविष्य के सम्बन्ध में सत्य कथन सम्भव हो जाता है। मस्तक रेखा पर नक्षत्रचिह्न की उपस्थिति को निश्चित संकट का संकेत मानते हुए उसके अध्ययन में प्रवृत्त होना चाहिए। मस्तक रेखा पर गुणनचिह्नों की उपस्थिति को भी भयंकर ख़तरे का संकेत समझना चाहिए। वस्तुतः गुणनचिह्न जितने अधिक बड़े होंगे, संकट भी उसी अनुपात में बड़ा होगा। मस्तक रेखा पर

गुणनचिह्न नक्षत्र के समान ही ख़तरनाक होते हैं। अतः नक्षत्र के समान ही गुणनचिह्नों पर भी विचार करना आवश्यक होता है।

मस्तक रेखा एक इतना व्यापक एवं विस्तृत विषय है कि उसके विवेचन को समेटना अथवा पूर्ण मान लेना सम्भव ही नहीं। इस सम्बन्ध में कुछ सिद्धान्तों एवं रीति-नीतियों की चर्चा की गयी है। पृथक् उदाहरणों के द्वारा असंख्य संयोगों एवं सम्भावनाओं के रहस्य को समझना सम्भव हो सकता है। हमारा यह भी मानना है कि विभिन्न स्थितियों पर किये गये विवेचन का विवेकसम्मत उपयोग करने से संयोग-विशेष के परिणाम की सत्य भविष्यवाणी भी की जा सकती है। हम यहां दोहराना चाहेंगे कि मस्तक रेखा मानसिकता का दर्पण है और इसका सही अध्ययन करने वाला हस्तरेखाविद् कभी भटकाव का शिकार हो ही नहीं सकता। आवश्यकता है, तो केवल मस्तिष्क की समग्र कार्यप्रणाली को प्रतिबिम्बित करने वाली मस्तक रेखा के सांगोपांग अध्ययन के आधार पर उसका सही विश्लेषण करने की। *

7

जीवन रेखा

हमारी अपनी कल्पना के आधार पर यह कहना उचित होगा कि बृहस्पति की अंगुली के माध्यम से शरीर में प्रविष्ट विद्युत्-धारा हृदय रेखा और मस्तक रेखा में प्रवाहित होने के पश्चात् जिस तृतीय रेखा में प्रवाहित होती है, उसी का नाम जीवन रेखा है। यह रेखा बृहस्पति की अंगुली से ठीक नीचे से निकलती है तथा निम्न मंगल पर्वत को और शुक्र पर्वत को घेरती हुई शुक्र पर्वत के ही लगभग नीचे हाथ के मूल में जाकर समाप्त होती है (रेखाचित्र-174)। इस रेखा की स्थिति और उसका स्वरूप विभिन्न कालों में व्यक्ति के स्वास्थ्य, सामान्य शारीरिक सामर्थ्य तथा स्नायु अथवा मांसपेशियों की दृढ़ता पर निर्भर रहता है। इस प्रकार यह रेखा व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का ऐसा ब्योरेवार विवरण तथा लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है, जिसे सर्वथा प्रामाणिक हाथ के अन्यान्य स्थानों पर मिलने वाले लक्षणों की पुष्टि का आधार बनाया जा सकता है, अर्थात् इस रेखा द्वारा प्रस्तुत विवरण को उन लक्षणों के सही-ग़लत होने का निर्णायक तत्त्व बनाया जाता है।

रेखाचित्र-174

जीवन रेखा न केवल व्यक्ति के उत्थान-पतन की दिशा को निर्देश करती है, अपितु व्यक्ति के सामर्थ्य के चरमोत्कर्ष पर रहने के समय व आयु को भी उजागर करती है। यहां तक कि यह रेखा जीवन के सम्भावित अन्त (मृत्यु) का कारण बनने

वाले रोगों-विकारों आदि को भी संकेतित करती है।

रेखाओं के जीवन का मानचित्र मानना तो सही धारणा है, परन्तु ऐसा क्यों है ? इस प्रश्न का उत्तर देना सम्भव नहीं। हां, प्रयोगों और परीक्षणों ने यह सिद्ध कर दिया है कि जीवन रेखा से जीवन सम्बन्धी समस्त जानकारी अपने यथार्थ रूप में प्राप्त होती है। जब यह रेखा भूतकाल और वर्तमानकाल की घटनाओं की सही और सुनिश्चित जानकारी देती है, तो फिर इसे भविष्य की जानकारी का विश्वसनीय स्रोत क्यों नहीं बनाया जा सकता ? जीवन रेखा से व्यक्ति के जीवन की जानकारी के सुलभ न होने पर कल्पना ही एकमात्र सहारा रह जाती है। इतना तो निश्चित है कि जीवन रेखा व्यक्ति के सामान्य स्वास्थ्य और उसके शारीरिक सामर्थ्य का सही ज्ञान कराती है और फिर इसी ज्ञान के आधार पर व्यक्ति की तेजस्विता तथा शारीरिक बलाबल आदि का ज्ञान सहज में हो जाता है। इसी परम्परा—जीवन रेखा से व्यक्ति के स्वास्थ्य और सामर्थ्य का, फिर इनसे व्यक्ति की प्रबलता-क्षीणता आदि का—के आधार पर परिणाम का अनुमान लगाना सरल हो जाता है।

किसी हाथ में जीवन रेखा का न होना अत्यन्त विरल अपवाद ही होगा, अन्यथा यह रेखा प्रायः सभी हाथों में पायी जाती है। हां, यह बात अलग है कि कहीं-कहीं इसकी उपस्थिति को सुनिश्चित करने के लिए काफ़ी प्रयास करना पड़ता है। कुछ मामलों में हस्तरेखाशास्त्री को इस रेखा की खोज में असफलता का मुंह भी देखना पड़ सकता है। ऐसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में यह भी पाया गया कि वे शारीरिक क्षमता के अभाव की पूर्ति स्नायविक शक्ति से करते हैं। वे अपने जीवन में विश्राम को तथा आहार-विहार में संयम-सन्तुलन को अधिक महत्त्व देकर अपनी मानसिक शक्ति में निरन्तर एवं उत्तरोत्तर वृद्धि करते रहते हैं और इसी से अपनी जीवन-ज्योति को असमय में निःशेष नहीं होने देते। यही उनकी जीवन-रक्षा का रहस्य है (रेखाचित्र-175)।

हाथ में जीवन रेखा की अनुपस्थिति भयंकर ख़तरे का संकेत होती है। ऐसे व्यक्ति के सिर पर तो मृत्यु को मंडराता हुआ ही समझना चाहिए। ऐसे व्यक्तियों का स्वास्थ्य सदैव शिथिल रहता है। परन्तु हां, यदि ऐसे व्यक्तियों का अंगूठा बड़ा और मस्तक रेखा उत्तम हो, तो वे जीवन रेखा की अनुपस्थिति अथवा अविकसित स्थिति के कारण सम्भावित संकट से उबरने में सफल हो जाते हैं, परन्तु फिर भी ऐसे व्यक्तियों का जीवन परिमित अवधि का ही होता है। जीवन रेखा की किसी भी प्रकार की विकृति में मृत्युकाल को निश्चित करना कभी सम्भव नहीं होता। वस्तुतः बात यह है कि जीवन रेखा के विकारग्रस्त होने पर भी अंगूठे और उत्तम मस्तक रेखा की सहायता से व्यक्ति द्वार पर आयी मृत्यु को टालने में सफल होता रहता है।

रेखाचित्र-175

वैसे तो जीवन रेखा-जैसी किसी रेखा का हाथ में होना आवश्यक ही होता है, भले ही वह कितनी ही सूक्ष्म-क्षीण अथवा पतली-बारीक क्यों न हो, रहती अवश्य है। ऐसी क्षीण रेखा भी व्यक्ति में जीवनी शक्ति के होने का आभास देती है। जीवन रेखा के नितान्त अभाव में व्यक्ति की सारी शक्ति का आधार तन्त्रिकाएं होती हैं और इन तन्त्रिकाओं में कहीं पर भी थोड़े-से अवरोध का अर्थ होता है—व्यक्ति की जीवनलीला का अन्त।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि कभी-कभी जीवन रेखा और शनि रेखा में भेद करना कठिन हो जाता है (रेखाचित्र-176)। इस अन्तर को समझने के लिए स्मरणीय तथ्य यह है कि भीतर वाली छोटी रेखा जीवन रेखा होती है, जिसकी बाहर से न्यूनतम लम्बाई की पूर्ति करने वाली दूसरी रेखा 'शनि रेखा' कहलाती है।

कभी-कभार ऐसा भी देखने को मिलता है कि जीवन रेखा बाहर होती है और उसके साथ-साथ चलती एक अन्य प्रभावकारी रेखा उसकी सहायक शक्ति का कार्य करने लगती है (रेखाचित्र-177)। जीवन रेखा कभी चन्द्र पर्वत पर आरूढ़

नहीं होती, अपितु सदैव एक चाप-सा बनाती है। इस आधार पर जीवन रेखा की अन्य रेखाओं से अलग पहचान सम्भव है। प्रायः जीवन रेखा को बृहस्पति पर्वत के
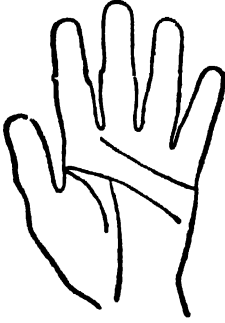
रेखाचित्र-176
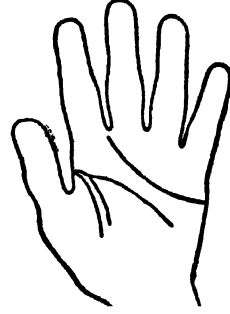
रेखाचित्र-177

नीचे से और हाथ के समीप से निकलता देखा जाता है (रेखाचित्र-178)। इसका यह सामान्य स्रोत जीवन के आरम्भ की सूचना देता है।

रेखाचित्र-178
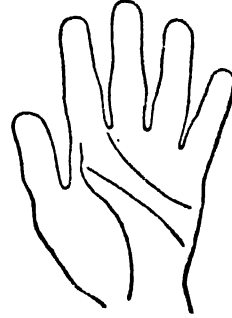
रेखाचित्र-179

इस सामान्य स्थिति—बृहस्पति पर्वत के नीचे से निकलना—से हटकर जीवन रेखा कभी-कभी बृहस्पति पर्वत से भी प्रकट होती है (रेखाचित्र-179)। ऐसी जीवन रेखा वाला व्यक्ति अत्यन्त उच्च महत्त्वाकांक्षी, धन-सम्पत्ति, यश-प्रतिष्ठा और मान-सम्मान की प्राप्ति तथा प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क-सौहार्द बढ़ाने की प्रबल इच्छा वाला होता है। शनिप्रधान होने पर तो व्यक्ति शनि के गुणों वाले क्षेत्रों—तन्त्र-विद्या, मन्त्र-विद्या, भौतिक-शास्त्र, रसायन-शास्त्र, चिकित्सा-विज्ञान, पशुपालन, कृषि-बाग़वानी तथा खनन आदि में प्रगति तथा सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

शनि की अंगुली के मोटे पर्वों वाला व्यक्ति धनलोलुप तथा सूर्य की अंगुली के मोटे पर्वों वाला व्यक्ति कलाकार के रूप में धन-प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान आदि पाने

का तथा बुध की अंगुली के प्रभावी पर्वों वाला बुधप्रधान व्यक्ति वक्ता, वैज्ञानिक अथवा अर्थशास्त्री के रूप में प्रसिद्धि पाने का अभिलाषी होता है। बुधप्रधान व्यक्ति प्राय: बहुत बड़ा अहंकारी होता है। इसी तथ्य को जीवन रेखा से निर्दिष्ट उद्गम स्रोत के अन्य पर्वतों के सम्बन्ध में भी लागू समझना चाहिए।

रेखाचित्र-178 में किसी अन्य स्रोत के दृष्टिगोचर होने पर उस स्रोत के गुणों के आधार पर ही जीवन रेखा पर विचार करना उपयुक्त होता है। कभी-कभी जीवन रेखा अपने मार्ग से भटकती भी दीखती है। अंगूठे के पास पहुंचने पर उसका झुकाव स्पष्ट होने लगता है (रेखाचित्र-180)। इस स्थिति में शुक्र पर्वत का आकार संकुचित होकर छोटा हो जाता है, जिसके फलस्वरूप यौनवासना इतनी घट जाती है कि व्यक्ति न तो विपरीतलिंगी के प्रति आकृष्ट हो पाता है और न ही सौन्दर्य उसे सम्मोहित कर पाता है। यौन-भोग के प्रति उदासीनता से व्यक्ति सन्तानोत्पत्ति में भी अक्षम हो जाता है तथा विवाह से दूर भागता है। वस्तुत: ऐसा व्यक्ति विपरीत-लिंगी के प्रति आकृष्ट होने के बदले उससे घृणा करने वाला होने के कारण विवाह की चर्चा में भी रुचि नहीं लेता। विवाह करने वाला ऐसा पुरुष नपुंसक और ऐसी स्त्री बांझ बनी रहती है। उन्हें सन्तान का मुंह देखने को नहीं मिलता—पुरातन हस्तरेखाशास्त्रियों का ऐसा अनुभवसिद्ध मत है।
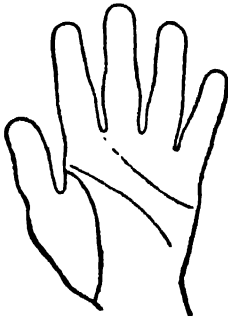
रेखाचित्र-180
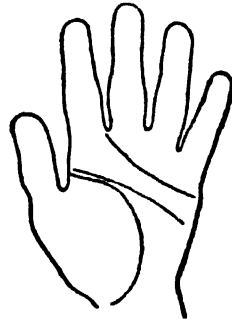
रेखाचित्र-181

जीवन रेखा की इस स्थिति से व्यक्ति के असामान्य रूप से रूखा—इच्छाशक्ति, उत्साह तथा स्वास्थ्य का नितान्त अभाव—होने का, दूसरे शब्दों में अल्पायु होने का संकेत भी है। वस्तुत: इच्छा तथा उत्साह के अभाव का दूसरा नाम ही तो मृत्यु है। सत्य तो यह है कि पार्थिव शरीर तो जीवन का साधन-मात्र है, अन्यथा मानसिकता के समाप्त होते ही व्यक्ति जीवन को भार के समान ढोता रहता है। हथेली की ओर व्यापक क्षेत्र में फैलती जीवन रेखा शुक्र पर्वत के क्षेत्र में और उसकी सीमा में वृद्धि कर देती है (रेखाचित्र-181)। पर्वत की शक्ति और प्रभाव में वृद्धि का अर्थ होता

है—व्यक्ति का उत्साह-सम्पन्न, ऊर्जस्वी, भावुक, उदार, कामुक, संवेदनशील तथा दूसरों के आकर्षण का केन्द्र होना। ऐसा व्यक्ति सौन्दर्य-प्रेमी और विपरीतलिंगी में रुचि लेने वाला होता है। वह शीघ्र ही विवाह के लिए सहमत हो जाता है और ऐसे अधिकांश व्यक्तियों का वैवाहिक जीवन पूर्ण सफल रहता है और उन्हें सन्तान-सुख भी सुलभ होता है। इस प्रकार की रेखा व्यक्ति के दीर्घायु, उत्तम शारीरिक गठन और विकसित मानसिकता को उजागर करती है। इस प्रकार इस रेखा को तेजस्विता, उत्साह-सम्पन्नता और सजीवता का प्रतीक समझना चाहिए।

जीवन रेखा की अधिकाधिक लम्बाई को सामान्यतया अधिकाधिक आयु होने का लक्षण माना जाता है। इस मान्यता के पर्याप्त रूप में सही होने पर इसमें कुछ 'किन्तु'-'परन्तु' लगे हुए हैं। अत: मात्र इस रेखा की लम्बाई के आधार पर आयु की लम्बाई का भविष्यकथन भ्रामक सिद्ध हो सकता है। कतिपय मृत व्यक्तियों के हाथों का अध्ययन करने पर किन्हीं हाथों में तो जीवन रेखा स्पष्ट रूप से मृतक की आयु से भी आगे निकल रही थी तथा किन्हीं हाथों की रेखाएं तो और भी अधिक चौंकाने वाली थीं। इस आधार पर यह कहना अनुचित न होगा कि केवल जीवन रेखा के अध्ययन के आधार पर आयु सम्बन्धी भविष्यकथन असत्य भी सिद्ध हो सकते हैं।

जीवन रेखा व्यक्ति की शक्ति, मनोबल एवं स्वास्थ्य आदि का परिचय अवश्य देती है, परन्तु जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में जानने के लिए तो इस रेखा के साथ-साथ हृदय रेखा, मस्तक रेखा, बुध रेखा, आकस्मिक रेखाओं तथा अन्यान्य चिह्नों का अध्ययन अपेक्षित होता है; क्योंकि इन सब पर भी मृत्यु के संकेत अंकित होते हैं। कभी-कभी तो जीवन रेखा के पूर्णत: अविश्रृंखलित रहने पर उपर्युक्त अन्यान्य रेखाओं व चिह्नों आदि पर कहीं-न-कहीं, किसी एक-न-एक स्थान पर मृत्यु का संकेत अवश्य ही देखने को मिल जाता है। केवल जीवन रेखा के अध्ययन को आधार बनाकर भयंकर दुर्घटना, गम्भीर रोग अथवा मृत्यु सम्बन्धी भविष्यकथन में निर्दोषता का आना तो सम्भव ही नहीं है। जीवन रेखा की सीमा को न समझना, अर्थात् उसकी सामर्थ्य का ग़लत आकलन करना भी तो हस्तरेखापरीक्षक की एक त्रुटि ही होगी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि रेखाओं से निर्दिष्ट होने वाले संकेत कभी ग़लत नहीं होते। इन संकेतों के अध्ययन के त्रुटिपूर्ण होने पर हस्तपरीक्षण अवश्य त्रुटिपूर्ण हो जाता है। मृत्यु के कारण—रोग, दुर्घटना, हिंसा, आत्महत्या, हत्या तथा बिजली का झटका आदि—का संकेत हाथों में अवश्य रहता है। अत: हस्तरेखाशास्त्री को अंकित सन्देशों के स्थान की खोज करनी चाहिए। थोड़ा-सा प्रयास करने पर ही वास्तविकता सामने आ जाती है।

कभी-कभी यह संकेत जीवन रेखा में न होकर अन्यान्य रेखाओं में होता है,

जिस पर ध्यान न देने से भविष्यकथन में त्रुटि हो सकती है। इस प्रकार की त्रुटि से बचने के लिए तथा विषय को पूर्णतः स्पष्ट करने के लिए चर्चा को थोड़ा विस्तार दिया गया है। आशा है कि सुधी पाठक इसकी उपयोगिता को समझेंगे। इसी सन्दर्भ में सर्वप्रथम यहां भविष्यकथन में ध्यान देने योग्य एवं उपयोगी कुछ विशेष बिन्दुओं का उल्लेख किया जा रहा है।

जीवन रेखा के उत्तम, सशक्त और लम्बी दीखने पर व्यक्ति को आजीवन स्वस्थ और सुदृढ़ शरीर वाला बताने (भविष्यकथन) में संकोच नहीं करना चाहिए. क्योंकि व्यक्ति के स्वस्थ, सशक्त तथा बलिष्ठ बने रहने तक ही रेखा की ऐसी सबल स्थिति बनी रहती है। जीवन रेखा के आधार पर भविष्यकथन से पूर्व दोनों हाथों की जांच-परख आवश्यक है। मान लीजिये कि बायें हाथ में तो रेखा लम्बी-गहरी है, जिससे व्यक्ति के स्वस्थ और उसके शरीर के सुगठित होने का संकेत मिलता है, परन्तु दायें हाथ में यही जीवन रेखा शृंखलाकार हो गयी है, जिससे अनिष्ट का संकेत मिलता है। अतः जहां सही और स्वाभाविक स्थिति की जानकारी बायें हाथ से मिलती है और वर्तमान स्थिति दायें हाथ से संकेतित होती है। इस तथ्य से यही सिद्ध होता है कि दोनों हाथों की एक साथ जांच-परख आवश्यक है, क्योंकि दोनों हाथों के अध्ययन से ही रेखा के स्वरूप द्वारा व्यक्त किये जा रहे परिवर्तनों का अता-पता चलता है। प्रायः ऐसा ही होता है कि एक हाथ में रेखा छोटी और दूसरे हाथ में बड़ी पायी जाती है। बड़ी-लम्बी रेखा जहां आयु की दीर्घता और शरीर की सुदृढ़ता को संकेतित करती है, वहां अधिक छोटी रेखा आयु की अल्पता और शरीर की क्षीणता को उजागर करती है। अतः दोनों हाथों की जीवन रेखा का निरन्तर गहन और तुलनात्मक परीक्षण करने और करते रहने से ही भविष्यकथन में निश्चितता और निर्भ्रान्त सत्यता आ पाती है। उत्तम और लम्बी जीवन रेखा वाले व्यक्ति दीर्घकाल तक ईश्वरप्रदत्त शक्ति से सम्पन्न रहते हैं, जबकि छोटी और सामान्य जीवन रेखा वाले व्यक्ति जीवन रेखा द्वारा निर्दिष्ट आयु तक ही प्राकृतिक शक्ति का उपभोग कर पाते हैं।

जीवन रेखा के स्वरूप से ही व्यक्ति की मांसपेशीय शक्ति तथा शारीरिक स्थिति—पुष्टता-क्षीणता आदि—का पता चलता है। इससे इस रेखा का महत्त्व स्वतः सिद्ध हो जाता है। जीवन रेखा की गहराई विद्युत्-धारा के प्रवाह की पर्याप्तता का सूचक होने से यह संकेतित करती है कि ऐसा व्यक्ति स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, शक्तिशाली, समर्थ तथा रोगों का सामना करने में सफल रहने वाला, अतः किसी बड़े रोग से आक्रान्त न होने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति विरल रूप से ही किसी छोटे-मोटे रोग का शिकार होता है। ऐसी रेखा निरुत्साही व्यक्ति के हाथ में दीखने पर यही परिणाम निकालना चाहिए कि व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ अवश्य है,

परन्तु उसका मस्तिष्क दुर्बल है। बौद्धिक शक्ति की न्यूनता के कारण ही उसमें उत्साह तथा संकल्पशक्ति का अभाव है। इस परिणाम से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि गहरी रेखाओं से संवेदनारहित व्यक्तियों के स्वरूप की जानकारी मिलती है। यही कारण है कि ऐसे व्यक्तियों के हाथों में गिनी-चुनी रेखाएं होती हैं। वस्तुत: ऐसे व्यक्ति शान्त, सरल, समरस और निश्चिन्त प्रकृति के होते हैं। वे अपने शरीर से कभी अधिक कार्य नहीं लेते। इससे न केवल इनका शरीर स्वस्थ रहता है, अपितु मन भी स्थिर-शान्त बना रहता है।

रेखा का गहरा अथवा कटा-फटा होना हाथों की संगति के परिप्रेक्ष्य में विशेष महत्त्व रखता है। हाथों की संगति के लचीला होने पर सतही तथा चौड़ी अथवा शृंखलाकार रेखा में भी गहरी रेखा-जैसी जीवनी शक्ति नहीं होती। वस्तुत: गहरी जीवन रेखा वाला व्यक्ति चिन्तामुक्त रहने की कला में निपुण होने के कारण उत्तेजना और आवेश के क्षणों में भी अपने को शान्त-संयत बनाये रखने में सफल रहता है। वह शरीर से स्वस्थ, सुगठित, उत्साह-सम्पन्न, आत्मविश्वास से परिपूर्ण तथा दूसरों में आत्मविश्वास की भावना को जगाने वाला होता है। वह जीवन के सभी पक्षों—अध्ययन, श्रम, खेल-कूद तथा मनोरंजन—को पूर्ण उत्साह और स्फूर्ति से अपनाता है। वस्तुत: जीवन रेखा के गहरा-लम्बा होने से व्यक्ति को जीवन-भर स्वस्थ-सुखी और नीरोग बने रहना का निश्चित संकेत समझना चाहिए।

हाथ के निचले सिरे पर पतली-महीन हो जाने वाले जीवन रेखा से व्यक्ति के जीवन के उत्तरार्द्ध में क्षीणशक्ति होना सूचित होता है। गहरी जीवन रेखा सभी उत्कृष्ट गुणों—शक्ति, क्षमता, उत्साह, ऊर्जा, संकल्पशक्ति, दृढ़ता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, आत्मविश्वास, महत्त्वाकांक्षा तथा आवेग आदि का प्रतिनिधित्व करती है। ऐसी जीवन रेखा सभी प्रकार के ग्रहप्रधान व्यक्तियों को निश्चित रूप से प्रभावित करती है। जहां यह रेखा बृहस्पतिप्रधान व्यक्तियों की सामर्थ्य और शक्ति में वृद्धि करती है, वहां उनकी निश्चिन्तता की प्रवृत्ति—''खाओ-पियो और मस्त रहो''—को भी बढ़ावा देती है। यही कारण है कि अधिकांश बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति मदिरा-सेवन की लत के शिकार होते हैं। बृहस्पति की अंगुली के तृतीय पर्व का भरा-पूरा होना और हाथ का तथा जीवन रेखा का लाल रंग लिये रहना व्यक्ति के पहले से ही मदिरा-सेवन के व्यसन में ग्रस्त होना सूचित होता है। सशक्त जीवन रेखा से व्यक्ति के अत्यधिक मदिरा-सेवन के अभ्यस्त होने का और उससे अनेक रोगों के पनपने का संकेत मिलता है। ऐसे व्यक्ति पर रोग प्रभावी तो नहीं हो पाते, परन्तु रक्ताघात से उसकी मृत्यु को टाला नहीं जा सकता। यही स्थिति लाल रंग और लाल केशों वाले मंगलप्रधान व्यक्तियों की होती है। ऐसी जीवन रेखा होने पर सूर्यप्रधान व्यक्ति इतने स्वस्थ और समर्थ हो जाते हैं कि जीवन के संघर्ष में उन्हें किसी के सहयोग अथवा

पथ-प्रदर्शन की आवश्यकता ही नहीं रहती। वे अपनी प्रगति का मार्ग आप ही प्रशस्त करते हैं। ऐसी रेखा होने पर शुक्रप्रधान व्यक्ति अपने उत्तम स्वास्थ्य, ऊर्जा, उत्साह और शक्ति की प्रबलता के कारण प्रचण्ड कामवासना लिये रहते हैं। इस प्रकार गहरी जीवन रेखा प्रत्येक प्रकार के व्यक्ति को अच्छा स्वास्थ्य और पर्याप्त जीवनी शक्ति प्रदान करने वाली होती है। इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुए विभिन्न संयोगों की व्याख्या की जा सकती है और की जानी चाहिए।

इसके विपरीत सूक्ष्म-बारीक जीवन रेखा व्यक्ति में ऊर्जा, उत्साह, स्वास्थ्य, सामर्थ्य, रोगप्रतिरोधक शक्ति आदि सभी गुणों के अभाव की सूचक है। ऐसी महीन जीवन रेखा वाले व्यक्ति का शरीर ढीला-ढाला और स्वास्थ्य शिथिल अवश्य होता है, परन्तु उसे रोगी अथवा रोगाक्रान्त समझने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए। हां, यह अवश्य है कि उसमें गहरी जीवन रेखा वाले व्यक्तियों-जैसी रोग-प्रतिरोधक शक्ति नहीं होती। वस्तुतः अन्य रेखाओं की तुलना में ही जीवन रेखा की आनुपातिक लम्बाई अथवा छोटेपन की जांच-परख करना उचित है।

जीवन रेखा के गहरा तथा अन्य सभी रेखाओं के पतला-बारीक—जिसे स्वाभाविक भी कहा जा सकता है—होने पर व्यक्ति प्रायः चिन्तामुक्त रहता है। वह यथास्थिति से ही सन्तुष्ट रहता है। जीवन रेखा के महीन-पतला तथा अन्य सभी रेखाओं के गहरा-स्पष्ट होना व्यक्ति के स्वास्थ्य के निरन्तर दबाव में होने का सूचक होता है; क्योंकि पतली जीवन रेखा जीवनी शक्ति की अपेक्षित मात्रा की पूर्ति कर ही नहीं पाती। अतः स्वास्थ्य का लड़खड़ाना तथा रेखा से उसके सम्बन्ध का टूटना स्वाभाविक ही है। इतना तो निश्चित है कि गहरी जीवन रेखा वाले व्यक्तियों की अपेक्षा महीन जीवन रेखा वाले व्यक्ति कहीं अधिक अधीर और विकल तथा सम्भावित संकटों से त्रस्त एवं आतंकित रहने वाले होते हैं। इसका एक मिला-जुला अच्छा-बुरा परिणाम यह होता है कि जहां उनकी चिन्तनशक्ति पर्याप्त मात्रा में बढ़ जाती है, वहां मस्तिष्क में उत्पन्न तनाव के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। वस्तुतः किन्हीं भी श्रमसाध्य एवं साहसिक कार्यों के लिए पतली-महीन जीवन रेखा वाले व्यक्तियों की अपेक्षा गहरी-सुस्पष्ट जीवन रेखा वाले व्यक्तियों को वरीयता एवं प्राथमिकता देनी चाहिए; क्योंकि पतली जीवन रेखा वाले व्यक्तियों का स्वास्थ्य साधारण, मांसपेशीयशक्ति क्षीण तथा सहनशक्ति निम्न स्तर की होती है। अतः वे न तो अपनी शक्ति-सामर्थ्य से अधिक कार्य कर सकते हैं और न ही उनसे उन्हें कुछ अधिक करने के लिए विवश करना चाहिए। जीवन रेखा के महीन होने पर तो बृहस्पतिप्रधान और मंगलप्रधान व्यक्तियों की अतिवादी प्रवृत्तियां घट जाती हैं और रक्ताघात होने की आशंका भले न हो, परन्तु वे स्नायविक रोग से आक्रान्त अवश्य हो जाते हैं। इसी प्रकार सूर्यप्रधान व्यक्तियों की गति मन्द हो जाती है, अर्थात् वे

किसी भी क्षेत्र में आशानुरूप उन्नति नहीं कर पाते। शुक्रप्रधान व्यक्तियों की भोग विलास और शारीरिक सुख-भोग की तृष्णा शिथिल पड़ जाती है। वस्तुतः जीवनी शक्ति में और उसके साथ-साथ अन्य सभी प्रकार की इच्छाशक्तियों में वृद्धि करने वाली जीवन रेखा का पतला होना शक्ति-सामर्थ्य और हृष्ट-पुष्टता में न्यूनता अथवा अभाव का सूचक है। यही स्थिति व्यक्ति की कार्यक्षमता को घटा देती है, उसे असमर्थ बना देती है और इसी के फलस्वरूप व्यक्तियों के शरीर में आलस्य घर कर जाता है। जीवन रेखा के पतली, परन्तु हाथों के लचीला होने पर यह अन्तर करना आवश्यक हो जाता है कि व्यक्ति की शारीरिक शक्ति दुर्बल है अथवा उसमें कर्मशक्ति का अभाव है।

रेखाचित्र-182

जीवन रेखा का चौड़ा-सतही होना व्यक्ति में जीवनी शक्ति के अभाव का सूचक है (रेखाचित्र-182)। स्वाभाविक है कि ऐसा व्यक्ति रोगनिरोधक शक्ति से रहित होता है और उसका न तो शरीर सुगठित-सुदृढ़ और न ही बल-शक्तिसम्पन्न होता है। अत: आये दिन वह किसी-न-किसी एक रोग से ग्रस्त रहता है, जिससे उसका शरीर शिथिल और दुबला-पतला हो जाता है। इसका सबसे बुरा परिणाम यह होता है कि उसके सहनशीलता और आत्मविश्वास-जैसे सद्‌गुण लुप्त हो जाते हैं।

शारीरिक गठन की दुर्बलता से व्यक्ति में उत्साह, ऊर्जा और प्रगति की चाह के अतिरिक्त दूसरों से स्पर्धा की भावना-जैसे तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। वह परिश्रम से मुंह मोड़ने वाला और कार्य में रुचि न लेने वाला बन जाता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि ऐसे व्यक्ति की उत्साहहीनता अथवा अरुचि को उसका जन्मजात आलस्य नहीं समझना चाहिए। वास्तव में बात यह है कि ऐसे व्यक्ति जब किसी कार्य को हाथ में लेते हैं, तो उसमें लगने वाले श्रम का आकलन करने लग जाते हैं और फिर श्रम-सापेक्ष कार्य के प्रति निरुत्साहित एवं उदासीन हो जाते हैं। वे अपने कार्यों की

सिद्धि के लिए अपने इष्ट-मित्रों का मुंह जोहने लगते हैं और फिर यह उनका जीवन-भर का चरित्र बन जाता है। पिछड़ जाने की आशंका से पीड़ित ऐसे व्यक्ति किसी भी प्रतियोगिता से कोसों दूर रहते हैं। इन लोगों में प्रहारशक्ति और सहनशीलता का नितान्त अभाव होता है। वस्तुत: ऐसे व्यक्ति दया के पात्र ही होते हैं।

ऐसी चौड़ी-सतही जीवन रेखा अत्यधिक अधीरता और अत्यन्त विकलता की सूचक होती है। ऐसे व्यक्तियों के जीवन का सम्बल उनका स्नायु-बल ही होता है। अत: इन्हें हलका-फुलका, कम ज़िम्मेदारी का और कम मेहनत वाला काम ही सौंपना चाहिए। यही इन्हें अच्छा लगता है और इसी को ये लोग निभा पाते हैं। ये लोग किसी बड़े उत्तरदायित्व और अधिक श्रमसाध्य कार्य को देखते ही दुखी हो जाते हैं और इनके हाथ-पैर फूलने लगते हैं।

यदि ऐसी चौड़ी-सतही जीवन रेखा के साथ व्यक्ति का हाथ भी शिथिल हो, तो उसे चरम स्थिति का आलसी समझना चाहिए। सत्य तो यह है कि चौड़ी-सतही जीवन रेखा की न्यूनता, जीवनी शक्ति और ऊर्जा के अभाव की पूर्ति हाथों के लचीलेपन से भी नहीं हो पाती। अंगुलियों के चमचाकार अग्रभाग भी ऐसी रेखा वाले व्यक्ति को केवल मनोबल (मानसिक समर्थन) ही दे पाते हैं। अंगुलियों के ऐसे उत्कृष्ट अग्रभाग व्यक्ति को जीवन-संघर्ष से जूझने तथा सभी प्रकार की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित तो करते हैं, परन्तु जीवन रेखा का चौड़ापन और सतही रूप इस प्रेरणा और प्रोत्साहन को नाकारा कर देते हैं, फलत: व्यक्ति शिथिल और उदासीन ही दिखाई देता है।

चौड़ी-सतही जीवन रेखा वाले बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति अपनी सीमा का अतिक्रमण करने का साहस ही नहीं जुटा पाते। मंगलप्रधान व्यक्ति तो संघर्ष करने में समर्थ ही नहीं होते। चन्द्रप्रधान व्यक्ति यौन-सुख-भोग के सम्बन्ध में सोच तक नहीं पाते। वे अधिकांशत: निस्सन्तान होते हैं, अत: उनके मस्तिष्क में यौन-सुख सम्बन्धी विचारों के उमड़ने-न उमड़ने से कोई अन्तर ही नहीं पड़ता।

जीवन रेखा के अनेक रूप-भेद देखने को मिलते हैं। कुछ रेखाएं इतनी अधिक चौड़ी-सतही होती हैं कि उनमें विद्युत्-धारा के प्रवाहित होने के लिए अपेक्षित गहराई नहीं होती। सभी रेखाओं की प्रगाढ़ता का अनुमान उनकी चौड़ाई और सतहीपन के आधार पर ही लगाया जा सकता है। बायें हाथ में रेखा का अच्छा रूप और दायें हाथ में उसका चौड़ा-सतही रूप इस तथ्य का सूचक होता है कि व्यक्ति का स्वास्थ्य विकृत होता जा रहा है। इसकी विपरीत स्थिति—दायें हाथ में रेखा का उत्तम रूप और बायें हाथ में उसका चौड़ा-सतही रूप—दुर्बल शरीर के शक्ति प्राप्त करने का संकेत है।

हाथ की अन्यान्य रेखाओं के उत्तम होने पर भी जीवन रेखा के चौड़ी अथवा

सतही रहने पर व्यक्ति सदैव रुग्ण, अस्वस्थ, उदासीन, निराश और असफल रहने वाला होता है; क्योंकि उसका शरीर जीवन-भार के वहन करने में सक्षम ही नहीं रहता। जीवन रेखा की इस स्थिति (चौड़ी-सतही) के साथ शनि पर्वत के आकार के बड़े होने को तो 'एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा' समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति तो परले दरजे का निराश, खिन्न, उदासीन रहने वाला और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सदैव अंधेरे पक्ष को देखने का इस स्तर तक अभ्यस्त होता है कि कभी-कभी आत्महत्या के लिए भी सोचने लगता है। इस प्रकार इस रेखा को व्यक्ति के प्रथम, द्वितीय अथवा तृतीय प्रकार के रोगों से आक्रान्त होने का संकेत समझना चाहिए।
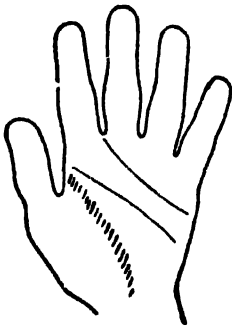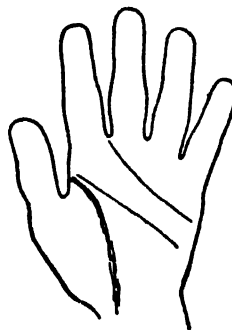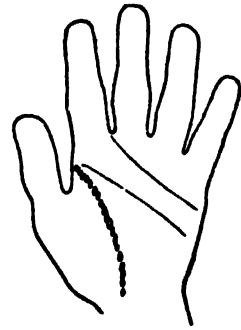
रेखाचित्र-183 *रेखाचित्र-184* *रेखाचित्र-185*

हाथ के किन्हीं अन्य भागों से भी व्यक्ति के स्वास्थ्य-सम्बन्धी विकारों के संकेत मिलते हैं। हाथों के विभिन्न भागों में बनने वाली आकस्मिक रेखाओं से ये संकेत प्राप्त किये जा सकते हैं। इस प्रकार की रेखाओं वाले व्यक्ति को विवाह नहीं करना चाहिए; क्योंकि ऐसा करने पर व्यक्ति को बिस्तर पकड़ना पड़ सकता है। ऐसे व्यक्तियों की देखभाल का दायित्व केवल माता-पिता ही निभा सकते हैं।

सीढ़ीनुमा जीवन रेखा भी चौड़ी-सतही जीवन रेखा के समान ही अशुभ एवं अनिष्ट फलदायक होती है (रेखाचित्र-183)। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य भी शिथिल रहता है। वह बार-बार और भिन्न-भिन्न रोगों का शिकार बनता है। इतना ही नहीं, अपितु उसका प्रत्येक रोग गम्भीरता लिये रहता है।

एक गहरी जीवन रेखा के स्थान पर विभिन्न महीन रेखाओं के आपस में गुंथ जाने से बनी जीवन रेखा स्वास्थ्य के लिए भयंकर खतरे का संकेत लिये रहती है (रेखाचित्र-184)। सभी प्रकार के व्यक्तियों—शक्ति और सामर्थ्य को निरन्तर क्षीण करने वाली होने से—के लिए ये रेखाएं घातक ही सिद्ध होती है। इन रेखाओं के कारण ही व्यक्ति का उत्साह और कार्यकुशलता मन्द पड़ जाते हैं। ऐसी घटिया जीवन रेखा दुर्बल पर्वत वाले व्यक्तियों के स्वास्थ्य-दोषों में उत्तरोत्तर वृद्धि कर देती है।

जीवनधारा के प्रवाह में बड़ी भारी बाधा का संकेत देने वाली रेखा शृंखलाकार रेखा कहलाती है, जिसके कारण व्यक्ति बार-बार रोगग्रस्त होता है (रेखाचित्र-185)। रेखा का पूर्णत: शृंखलाकार होना व्यक्ति के स्वास्थ्य को निरन्तर क्षीण बनाये रखने वाला होता है। रेखा के कुछ भाग के शृंखलाकार होने पर व्यक्ति एक निश्चित अवधि के लिए स्वास्थ्य-दोषों से पीड़ित रहता है।

चौड़ी-सतही जीवन रेखा से संकेतित स्वास्थ्य-दोषों को शृंखलाकार रेखा और अधिक गम्भीर-विषम बना देती है। जीवन रेखा की स्थिति के आद्यन्त परीक्षण से स्वास्थ्य के लिए अधिक कष्टकर समय का पता चल जाता है। व्यक्ति किस आयु में और किस अवधि तक तथा किस परिमाण तक कष्ट-पीड़ित रहेगा—यह सब जानना सम्भव हो जाता है। रेखा के स्वरूप से व्यक्ति की शारीरिक स्थिति की, व्याधिग्रस्त होने की तथा दुर्बलता से पीड़ित होने की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसी प्रकार आकस्मिक रेखाओं से आकस्मिक बीमारियों, दुर्घटनाओं एवं आघातों की जानकारी मिल जाती है।

प्राय: प्रत्येक रेखा में प्रारम्भिक वर्षों की अवधि शृंखलाकार होती है (रेखाचित्र-186) और इस चिह्न से बचपन के रोगों की अवधि सूचित होती है। रेखा की इस प्रारम्भिक बनावट के बहुत दूर तक शृंखलाबद्ध रहने का अर्थ होता है कि व्यक्ति विलम्ब से ही संकट की स्थिति से उबरा है। इसके विपरीत इस अशुभ संकेत के आरम्भ से थोड़ी दूर तक रहने का अर्थ है कि बचपन का संकट शीघ्र ही समाप्त हो गया है। इस अवधि के उपरान्त रेखा का गहरा रूप धारण करना और अन्त तक स्पष्ट बने रहने का अर्थ है—बचपन के रोगों से मुक्ति पाने के उपरान्त व्यक्ति का शरीर स्वस्थ, सबल और हृष्ट-पुष्ट बन गया है और ऐसा ही बना रहेगा।
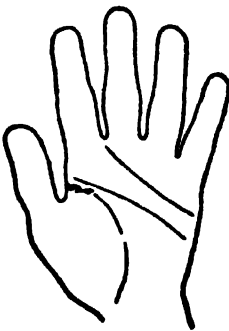
रेखाचित्र-186
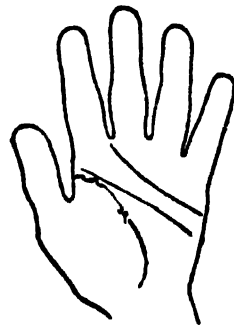
रेखाचित्र-187

प्रारम्भिक संकटकाल के बीतने पर जीवन रेखा के पतले-बारीक स्वरूप का अन्त तक बने रहना इस तथ्य का संकेत है कि व्यक्ति का स्वास्थ्य एक-समान स्थिर

और उसका शरीर समान रूप से सुगठित है। बचपन की आयु बीतने पर रेखा का श्रृंखलाकार, चौड़ा अथवा सतही रूप धारण करना अथवा किसी अन्य रेखा द्वारा विकृत किया जाना सूचित करता है कि व्यक्ति अपने जीवन में कभी बलिष्ठ बन ही नहीं पायेगा, उसका शरीर भी क्षीण तथा दुर्बल बना रहेगा। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक समय ऐसा अवश्य आता है, जब वह अन्य समय की अपेक्षा अपने उस समय को सर्वाधिक स्वस्थ, सबल एवं सफल अनुभव करने लगता है। उसे ऐसा लगता है कि दुर्बल शरीर में अचानक शक्ति का सञ्चार हो गया है। ऐसे असाधारण परिवर्तन का कारण रेखा का असमान रहना है। रेखाचित्र-187 में अंकित रेखा को ध्यानपूर्वक देखने से स्पष्ट हो जायेगा कि व्यक्ति के बारह वर्ष की अवस्था तक अस्वस्थ रहने के उपरान्त स्वास्थ्य में अचानक सुधार होने लगा है। ऐसा व्यक्ति शरीर के स्वस्थ तथा हृष्ट-पुष्ट होने पर भी तीस वर्ष की आयु में अचानक रुग्ण हो जाता है। उसकी यह रुग्णता तीन वर्षों तक चलती है, फिर वह स्वस्थ हो जाता है और उसका शरीर फिर से हृष्ट-पुष्ट बन जाता है। पचास वर्ष की आयु तक वह पूर्ण स्वस्थ-बलिष्ठ रहता है। इसके पश्चात् उसका स्वास्थ्य पुनः गिरने लगता है और शरीर क्षीण होने लगता है। जीवन के अन्त तक कृशता-रुग्णता की यह स्थिति बनी रहती है।

जीवन रेखा के संयोगों की विविधता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अनगिनत उदाहरणों को देख चुकने के उपरान्त भी इस विषय की जानकारी को नगण्य ही कहना पड़ता है। यदि फिर भी रेखा के प्रत्येक परिवर्तन पर ध्यान केन्द्रित किया जाये और विभिन्न रूपों को प्रभावित करने वाले सामान्य नियमों को लागू किया जाये (रेखाचित्र-187), तो प्रत्येक रेखा के भेद को सही रूप से समझना सम्भव हो सकता है। शरीर-गठन से सम्बन्धित सभी दुर्बलताओं का प्रमुख कारण अधिकांश मामलों में तो पुराने रोगों को प्रकट करने वाले स्वास्थ्य-विकार ही होते हैं। व्यक्ति के पर्वत-प्रकार से भी उसके शारीरिक गठन में क्षीणता के कारण को जाना जा सकता है। इससे स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या का पता लगाने में कोई कठिनाई नहीं आती। वस्तुतः सर्वप्रथम व्यक्ति के पर्वत-प्रकारों अथवा प्रकारों के संयोजन को जानना चाहिए और फिर उनमें विद्यमान रेखाजाल, आड़ी-तिरछी रेखाओं, गुणनचिह्नों अथवा स्वास्थ्य-विकार के सूचक चिह्नों का अध्ययन करना चाहिए। इस प्रकार के किन्हीं चिह्नों के रहने पर व्यक्ति के नाख़ूनों, नाख़ूनों के रंग और बुध रेखा का अध्ययन करके उनसे प्राप्त होने वाले संकेतों के आधार पर व्यक्ति के स्वास्थ्य-विकारों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। व्यक्ति के शारीरिक गठन की दुर्बलता के कारण को भी इस उपाय से जाना जा सकता है। व्यक्ति के पर्वत-प्रकार के किसी दोष के न मिलने पर दूसरे-तीसरे-चौथे पर्वतों की जांच करनी चाहिए। इस जांच से

सही स्थान पर पहुंचा जा सकता है और फिर दोषों का पता लग ही जाता है। कभी-कभी तो किसी आकस्मिक रेखा से भी संकट की और उसके कारण की जानकारी मिल जाती है, परन्तु इस स्थिति के आधारभूत कारण की जानकारी किसी एक पर्वत पर जाकर ही मिलती है। रेखा में मिलने वाले विभिन्न प्रकार के दोषसूचक चिह्न इन रूपों—(i) रेखा को काटने वाली आड़ी-तिरछी रेखाओं, (ii) द्वीपों, (iii) बिन्दुओं, (iv) अन्तराल, (v) दरार अथवा विच्छेद—में मिलते हैं। इन चिह्नों की विशिष्ट स्थिति से रोग के समय—भूतकाल (हो चुका) अथवा भविष्यकाल (होने वाला) और अवधि आदि—का पूरा और सही पता चल जाता है।

यह सर्वजन विदित तथ्य है कि जीनन रेखा को आर-पार काटती रेखाओं से विद्युत्-धारा अवरुद्ध अथवा विच्छिन्न हो जाती है और फिर इसमे शरीर की सञ्चालन प्रक्रिया प्रभावित होती है, जिसका स्वास्थ्य से सीधा सम्बन्ध है, अर्थात् विद्युत्-धारा में बाधा आने का अर्थ ही स्वास्थ्य में विकार का आना है। किन्हीं व्यक्तियों की छोटी-छोटी रेखाएं निरन्तर ही जीवन रेखा को काटती रहती हैं, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति स्नायविक रूप से असन्तुलित हो जाता है और उसकी मानसिकता में व्यग्रता आ जाती है। ये छोटी-छोटी रेखाएं अत्यन्त ही पतली होती हैं और वे जीवन रेखा को दो भागों में विभाजित भी नहीं करतीं (रेखाचित्र-188)। इन रेखाओं को विविध चिन्ताओं का प्रतीक ही समझना चाहिए। व्यक्ति की व्यग्रता और विकलता से चिन्ताओं को और चिन्ताओं से व्यग्रता को जन्म मिलता है। व्यग्रता से रोगों की उत्पत्ति होती है, जिससे व्यक्ति का स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित होता है।
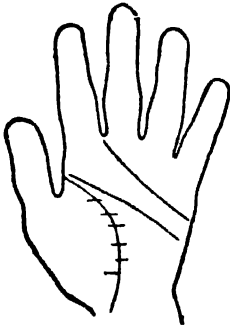
रेखाचित्र-188
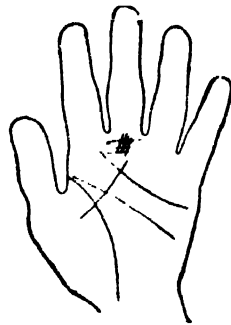
रेखाचित्र-189

महीन आड़ी-तिरछी रेखाओं से रोग के कष्टप्रद होने पर भी उसके गम्भीर न होने की तथा रेखाओं की संख्या के अनुपात से कष्ट की मात्रा की जानकारी प्राप्त होती है। काटने वाली ये रेखाएं अपनी गहराई के अनुपात में रोगों की गम्भीरता को सूचित करती हैं। रेखाओं की लालिमा (लाल रंग) व्यक्ति के ज्वर-ताप-जैसे

सामान्य रोगों से पीड़ित होने का परिचय देती है। ये आड़ी-तिरछी रेखाएं भी अपनी गहराई से रोगों की गम्भीरता को दर्शाती हैं। इनके समाप्ति-स्थल—पर्वत अथवा रेखा—को समस्या का स्वरूप ही समझना चाहिए। इतना ही नहीं, प्रयास करने पर तो जीवन रेखा से रोगग्रस्त रहने की अवधि की भी सही जानकारी प्राप्त हो जाती है।

किसी आड़ी रेखा द्वारा शनि रेखा को काटने तथा शनि के पर्वत पर ही जाल के रूप में जाकर उसके समाप्त होने से पता चलता है कि शनि के कारण व्यक्ति स्वास्थ्य-विकार का शिकार है (रेखाचित्र-189)। इसी प्रकार किसी आड़ी रेखा के सूर्य पर्वत के नीचे हृदय रेखा में किसी बिन्दु अथवा द्वीप अथवा विच्छेद तक जाने को हृदय रोग का लक्षण समझना चाहिए (रेखाचित्र-190)। जीवन रेखा अथवा हृदय रेखा की समाप्ति की स्थिति से रोग के परिणाम की जानकारी मिलती है। नाख़ूनों का रूप-रंग रोग के निदान के समर्थन में सहायक सिद्ध होता है।
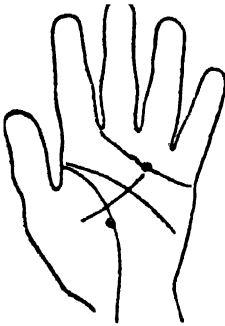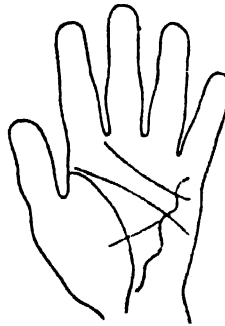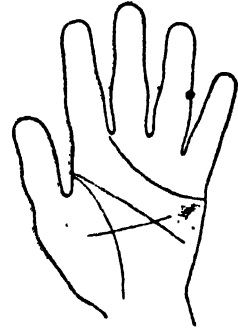
रेखाचित्र-190 *रेखाचित्र-191* *रेखाचित्र-192*

बुध की लहरदार रेखा तक जाती आड़ी रेखा से व्यक्ति के पाण्डु रोग अथवा पित्त-ज्वर से पीड़ित होने का संकेत मिलता है। आड़ी रेखा द्वारा जीवन रेखा को काटने के स्थान से व्यक्ति के रोगग्रस्त होने की आयु का पता चलता है (रेखाचित्र-191)।

ऊपरी मंगल पर निर्मित रेखाजाल तक आड़ी रेखा के जाने से व्यक्ति का रक्त-विकार से अथवा श्वास-विकार अथवा कण्ठ-रोग की समस्या से ग्रस्त होना सूचित होता है (रेखाचित्र-192)। नाख़ूनों के रूप-रंग से, बुध की रेखा पर द्वीपों की परवर्ती रेखा के रूप-रंग से गले और श्वास रोग के होने की पुष्टि हो जाती है। इसी प्रकार चन्द्र पर्वत के ऊपरी क्षेत्र पर बने जाल अथवा गुणनचिह्न तक आड़ी रेखा का पहुंचना अंतड़ी के रोग (आन्त्र-शोथ) को दर्शाता है (रेखाचित्र-193)। चन्द्र पर्वत के मध्य क्षेत्र पर बने रेखाजाल तक आडी रेखा के जाने को गठिया अथवा सन्धिवात

(जोड़ों का दर्द) का लक्षण समझना चाहिए (रेखाचित्र-194)। द्वीपचिह्नित किसी रेखा का शनि पर्वत तक जाना व्यक्ति के गठिया-सन्धिवात-जैसे रोगों से ग्रस्त होने
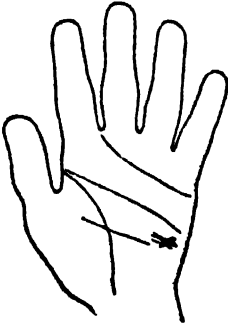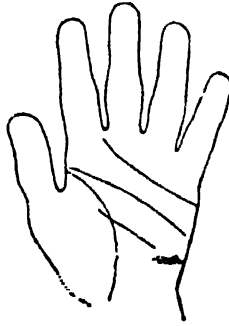
रेखाचित्र-193 *रेखाचित्र-194* *रेखाचित्र-195*
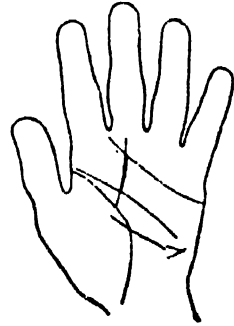
की पुष्टि करता है (रेखाचित्र-195)। इन दोनों संकेतों के मिलने पर चन्द्र पर्वत पर जाल अथवा गुणनचिह्न न होने पर भी रुग्णता को पक्का ही समझना चाहिए।

चन्द्र पर्वत के निम्न क्षेत्र पर स्थित जाल अथवा शृंखला अथवा गुणनचिह्न तक आड़ी रेखा के पहुंचने को व्यक्ति के गुर्दे अथवा मूत्राशय के रोग से ग्रस्त अथवा स्त्री को स्त्री रोग से पीड़ित होना समझना चाहिए (रेखाचित्र-196)। व्यक्ति के पारदर्शी, अत्यन्त सफ़ेद तथा कोमल अथवा शिथिल हाथ व्यक्ति के मूत्राशय अथवा गुर्दे के रोग से ग्रस्त होने की पुष्टि करते हैं, परन्तु आड़ी रेखा द्वारा मस्तक रेखा को न काटना और बुध रेखा पर नक्षत्रचिह्न का स्त्री रोग को निश्चित करने वाले संकेत हैं (रेखाचित्र-197)।
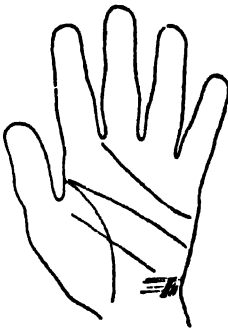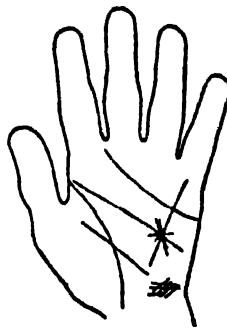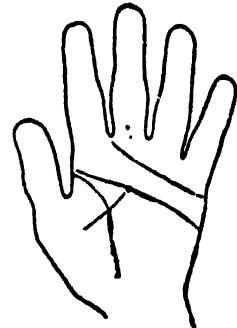
रेखाचित्र-196 *रेखाचित्र-197* *रेखाचित्र-198*

निर्दिष्ट सभी चिह्नों के मिलने पर भी जीवन रेखा की उत्तम स्थिति से यही संकेत मिलता है कि सभी दोषों का सम्बन्ध व्यक्ति के पर्वत-प्रकार से ही है,

जिसकी पुष्टि पर्वतों पर बने रेखाजाल अथवा अन्यान्य चिह्नों से करनी चाहिए। इन सबके बावुजूद सशक्त जीवन रेखा से यही संकेत मिलता है कि व्यक्ति में रोगों का सामना करने की विलक्षण शक्ति है। व्यक्ति की इस प्रतिरोधक शक्ति का परिणाम होता है कि कोई भी पुराना एवं गम्भीर रोग किसी भयंकर समस्या का रूप नहीं ले पाता। जीवन रेखा के महीन शृंखलाकार अथवा चौड़ी-सतही होने पर आड़ी रेखाएं बार-बार अपना अस्तित्व जतलाती हैं। वस्तुतः व्यक्ति का शरीर गहरी रेखा के सामर्थ्य के अनुरूप पूर्ण शक्ति से रोगों का प्रतिरोध करने में सफल हो ही नहीं पाता। अतः आड़ी रेखा द्वारा जीवन रेखा को काटे जाने पर जीवन रेखा के स्वरूप के अनुसार ही व्यक्ति के पूर्णतः स्वस्थ हो पाने की अशवा न हो पाने की भविष्यवाणी की जा सकती है।

निम्नोक्त लक्षण से व्यक्ति के मस्तिष्क का गहरे आघात से बुरी तरह से प्रभावित होना सूचित होता है (रेखाचित्र-198)। मस्तक रेखा पर बने द्वीप से व्यक्ति के इस रोग से मस्तिष्क के प्रभावित होने का संकेत मिलता है।

किसी आड़ी रेखा द्वारा सूक्ष्म जीवन रेखा को काटना और फिर उस आड़ी रेखा का मस्तक रेखा पर बने द्वीप अथवा बिन्दु अथवा गुणनचिह्न अथवा विच्छेद तक जाना, तत्पश्चात् जीवन रेखा पर किसी द्वीपचिह्न का तो बने रहना, परन्तु इसके आगे रेखा का चौड़ा-सतही रूप धारण कर लेना इस तथ्य का संकेत होता है कि व्यक्ति का मस्तिष्क इस आघात के कारण कभी पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो सकेगा।

जीवन रेखा को काटकर जाने वाली आड़ी रेखाएं कभी-कभी शुक्र पर्वत पर प्रभावी रेखाओं के उपरान्त आरम्भ होती हैं (रेखाचित्र-199)। इस स्थिति में आड़ी रेखा के प्रभाव से व्यक्ति चिन्तित हो उठता है और यही चिन्ता विभिन्न रोगों को जन्म देती है।
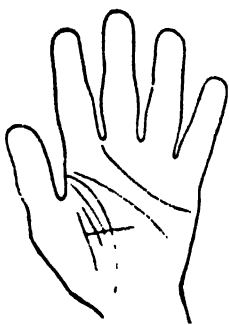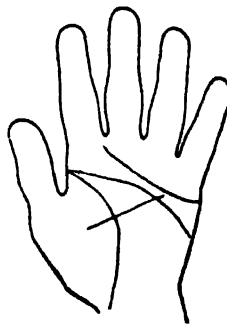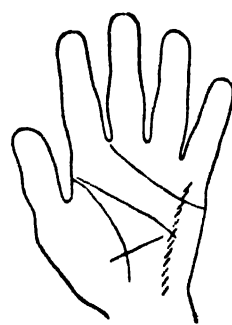
रेखाचित्र-199 *रेखाचित्र-200* *रेखाचित्र-201*

आड़ी रेखा का किसी सूक्ष्म चतुष्कोण से मिलना व्यक्ति के दमा से पीड़ित

होने का संकेत है। चतुष्कोण के सिकुड़ने के अनुपात से सांस रुकने-घुटने का तथा दमा के दौरे पड़ने का क्रम चलता रहता है (रेखाचित्र-200)।

बुध की सीढ़ीनुमा रेखा से मिलती हुई आड़ी रेखा से सूचित होता है कि रोग का मूल कारण उदर-विकार (पेट की गड़बड़ी) है (रेखाचित्र-201)। इसी प्रकार आड़ी रेखा का बुध की द्वीपाकार रेखा तक जाने से पता चलता है कि गले और फेफड़ों में आये विकार ही रोग के कारण हैं (रेखाचित्र-202)।
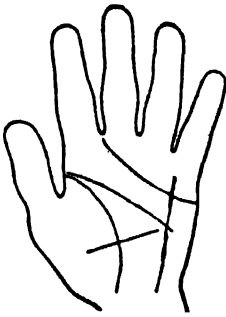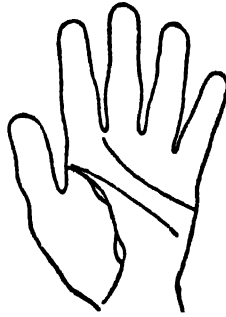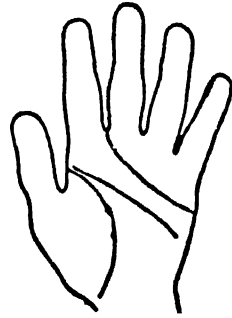
रेखाचित्र-202 *रेखाचित्र-203* *रेखाचित्र-204*

जीवन रेखा पर द्वीपों के रहने तक विद्युत्-धारा दो भागों में बंट जाती है और इससे व्यक्ति की कार्यक्षमता घट जाती है (रेखाचित्र-203)। द्वीप के चिह्नों से सदैव स्वास्थ्य की शिथिलता ही उजागर होती है। द्वीपचिह्न के आरम्भ-स्थल से ही स्वास्थ्य में विकृति प्रारम्भ होती है और इस विकृति की अवधि रेखा के स्वरूप के सही होने पर और फिर द्वीप के समाप्त होने पर हो जाती है।

द्वीप के अल्प रूप से केवल एक ही रोग होना सूचित होता है (रेखाचित्र-204)। रोग के प्रकार का पता लगाने के लिए पर्वतों, हृदय, मस्तक, बुध पर्वत आकस्मिक रेखाओं तथा अन्यान्य स्वास्थ्य-संकेतों की जांच-परख करनी होती है।

जीवन रेखा में अनेक द्वीपों की शृंखला का होना यह सूचित करता है कि शृंखलाकार रेखा के समान ही व्यक्ति एक के पश्चात् दूसरे रोग से पीड़ित रहने वाला है (रेखाचित्र-205)। रोग के कारण को जानने के लिए हाथ के दूसरे भागों की भी जांच-परख करनी चाहिए। रेखा में कई द्वीपों की शृंखला होने के अतिरिक्त प्रथम द्वीप छोटा हो, परन्तु बाद वाले द्वीपों का आकार निरन्तर बड़ा होते जाना रोग में निरन्तर वृद्धि होने का सूचक होता है। इसकी विपरीत स्थिति—प्रथम द्वीप का बड़ा होना और परवर्ती द्वीपों के आकार में संकुचितता का आना—रोग के घटने की सूचक होती है। अधिकतर द्वीपों के चिह्न अपने आकार में बिन्दुओं के आकार से बड़े होते हैं और वे प्राय: इस तथ्य के सूचक होते हैं कि व्यक्ति लम्बे समय से

अस्वस्थ चला आ रहा है।
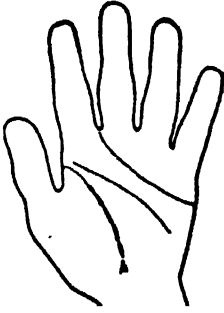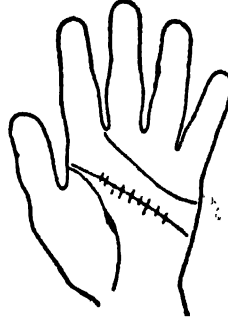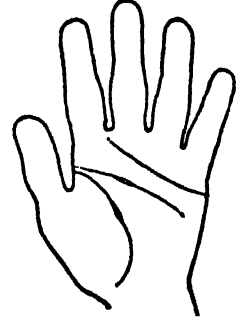
रेखाचित्र-205 रेखाचित्र-206 रेखाचित्र-207

द्वीप प्रमुख रूप से स्थिति की विषमता के सूचक होते हैं और वे रोग के निदान और उपचार के प्रति सतर्क रहने एवं सचेष्ट होने की चेतावनी देते हैं। कुछ व्यक्तियों के हाथों की जीवन रेखा पर द्वीपचिह्न मिलते हैं, अन्यथा शेष व्यक्तियों के हाथ आड़ी रेखाओं से ही भरे मिलते हैं। द्वीप को देखते ही पूरे हाथ की जांच-परख करना और स्वास्थ्य-दोषों की जानकारी प्राप्त करना अपेक्षित होता है। जांच-परख करने पर द्वीप के कारण की जानकारी कहीं-न-कहीं अवश्य मिल जाती है। जीवन रेखा में द्वीपचिह्न मिलने और मस्तक रेखा के असंख्य आड़ी-बारीक रेखाओं से कटने पर स्वास्थ्य में कोई और दोष-विकार भले ही मिले अथवा न मिले, परन्तु सिरदर्द की शिकायत तो अवश्य ही मिलती है (रेखाचित्र-206)। इस स्थिति में रेखाओं के गहरेपन से व्यक्ति गम्भीर मानसिक अशान्ति का शिकार होता है। जीवन रेखा के साथ ही मस्तक रेखा पर विद्यमान द्वीप का चिह्न मस्तिष्क-विकार का संकेतक होता है (रेखाचित्र-207)।
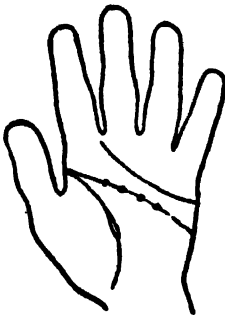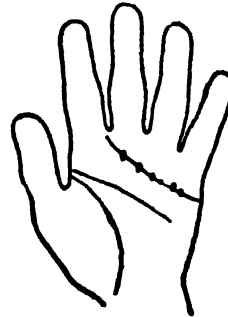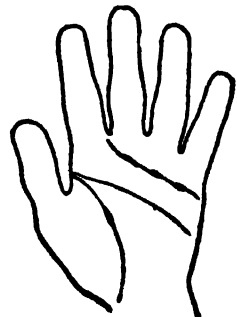
रेखाचित्र-208 रेखाचित्र-209 रेखाचित्र-210

जीवन रेखा पर द्वीप होने के साथ-साथ मस्तक रेखा पर बिन्दु होने से व्यक्ति

मस्तिष्क-ज्वर से ग्रस्त रहता है। यही उसके स्वास्थ्य की विकृति है। यह विकृति तब सुनिश्चित एवं परिपुष्ट होती है, परन्तु इसके लिए बिन्दुओं का रंग पक्के तौर पर बैगनी अथवा लाल होना आवश्यक है (रेखाचित्र-208)। इसी प्रकार हृदय रेखा पर बिन्दुओं की उपस्थिति से रोग के दौरे पड़ने का संकेत मिलता है। बिन्दु जितने अधिक होंगे, दौरे उतने ही अधिक और जल्दी-जल्दी पड़ेंगे, जिसका निश्चित परिणाम स्वास्थ्य का शिथिल होना है (रेखाचित्र-209)। नाख़ूनों और उनके रूप-रंग से इस तथ्य का समर्थन हो जाता है। हृदय रेखा में द्वीपों का उभरना हृदय की सामान्य दुर्बलता का लक्षण है (रेखाचित्र-210)। यहां भी नाख़ून और उनका रूप-रंग इस तथ्य की पुष्टि में सहायक सिद्ध होते हैं। इससे हृदय रेखा पर उभरे हुए बिन्दुओं द्वारा दिखाये गये दोषों की नहीं, अपितु सामान्य रूप से शरीर की संरचना में आयी किसी न्यूनता की सूचना मिलती है।

जीवन रेखा में द्वीपचिह्न का होना और इसके साथ-साथ बुध रेखा की बनावट का लहरदार होना व्यक्ति के भयंकर रूप से पित्त-दोष से पीड़ित होने का सूचक है (रेखाचित्र-211)।
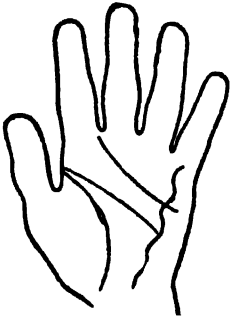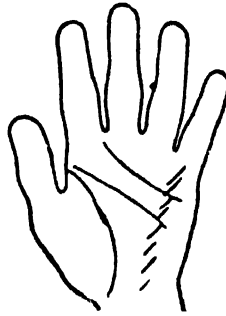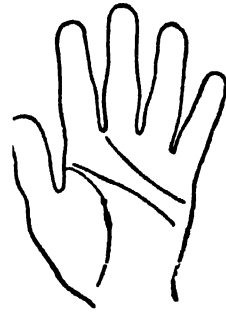
रेखाचित्र-211 *रेखाचित्र-212* *रेखाचित्र-213*

जीवन रेखा पर द्वीपचिह्न के साथ बुध रेखा की सीढ़ीनुमा बनावट से पेट के विभिन्न रोगों—मन्दाग्नि, अपच तथा अतिसार आदि— के होने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-212)। इन रोगों से स्वास्थ्य का विकृत होना स्वाभाविक ही है। पर्वतों पर दिखाई देने वाले जाल, गुणनचिह्न, आड़ी-तिरछी रेखाएं तथा अन्य इसी प्रकार के दोषों से भरे चिह्न स्वास्थ्य की शिथिलता के सूचक हैं। जिस पर्वत पर ये चिह्न मिलते हैं, स्वास्थ्य-दोष का उसी पर्वत प्रकार से सम्बन्धित होना निश्चित है।

जीवन रेखा पर द्वीप से पहले बिन्दु की स्थिति रोग के गम्भीर आक्रमण की परवर्ती दशा का व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए भयंकर ख़तरा होने का संकेत देती है (रेखाचित्र-213)। शेष हाथ के निरीक्षण-परीक्षण से समस्या की गम्भीरता के स्तर

को जाना जा सकता है। इस परीक्षण में किन्हीं हाथों में दोहरे लक्षणों का मिलना भी सम्भव है।
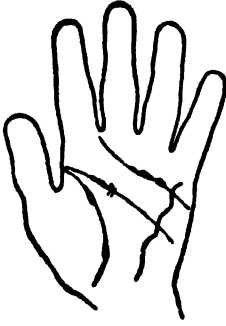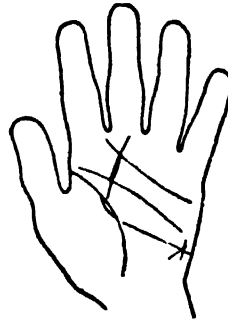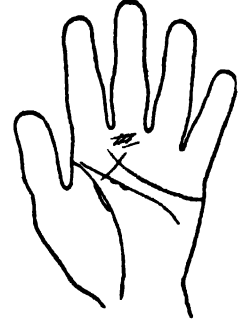
रेखाचित्र-214 *रेखाचित्र-215* *रेखाचित्र-216*

जीवन के आरम्भिक वर्षों में व्यक्ति की जीवन रेखा में द्वीपचिह्न के होने को मस्तक रेखा में किसी विकार का संकेत समझना चाहिए। जीवन रेखा में द्वीपचिह्न की स्थिति के साथ ही जीवन रेखा और हृदय रेखा पर भी द्वीपचिह्न का होना अथवा बुध की रेखा का लहरदार होना अथवा किसी पर्वत का विकसित होना आदि लक्षण स्वास्थ्य के लिए दोहरा संकट लाने वाले होते हैं (रेखाचित्र-214)। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि जीवन की पहली आयु में मस्तक रेखा में पनपने वाले विकार का सूचक द्वीपचिह्न आयु के बढ़ने पर जीवन रेखा पर एक बार फिर द्वीप बनकर अपना प्रभाव दिखाता है। यह दूसरा द्वीप दूसरे संकटकाल का सूचक होता है और इस संकट का कारण हृदय रेखा की गड़बड़ी होती है।

जीवन रेखा पर एक से अधिक द्वीपों की स्थिति व्यक्ति के भिन्न-भिन्न आयु में कष्ट भोगने की सूचक है। सभी द्वीप भिन्न-भिन्न रोगों को दर्शाने वाले हो सकते हैं। कौन-सा द्वीप किस रोग का प्रतीक है अथवा किस रोग को संकेतित करता है—इसकी जानकारी के लिए रेखाचित्र-214 में निर्दिष्ट विधि का उपयोग करना चाहिए। जीवन रेखा में एक द्वीप मिलना, द्वीप के आकार वाली किसी एक रेखा का शनि पर्वत से निकलकर जीवन रेखा तक जाने और फिर चन्द्र पर्वत के बीच में से निकलती एक अन्य रेखा के वहां तक पहुंचने से सूचित होता है कि व्यक्ति गठिया अथवा सन्धिवात-जैसे रोगों से पीड़ित है। इन रोगों ने उसके स्वास्थ्य को बुरी तरह से आक्रान्त कर रहा है (रेखाचित्र-215)।

निम्नोक्त लक्षण व्यक्ति को पक्षाघात-जैसे रोग से आक्रान्त होना संकेतित करते हैं—(i) जीवन रेखा में द्वीप का होना, (ii) शनि पर्वत पर जाल का होना, (iii) एक रेखा द्वारा जाल और द्वीप को एक-दूसरे से जोड़ना, (iv) शनि पर्वत के नीचे

मस्तक रेखा में बिन्दुओं अथवा द्वीपों का होना तथा (v) नाख़ूनों का धारीदार अथवा भुरभुरा होना (रेखाचित्र-216)।

निम्नोक्त लक्षणों से रक्ताघात की प्रवृत्ति सूचित होती है—(i) जीवन रेखा में द्वीप का होना, (ii) बृहस्पति पर्वत पर लाल अथवा बैंगनी रंग के बिन्दु से जुड़ती एक रेखा का होना, (iii) हाथों का और रेखाओं का लाल रंग होना तथा (iv) मस्तक रेखा का पतला होना।
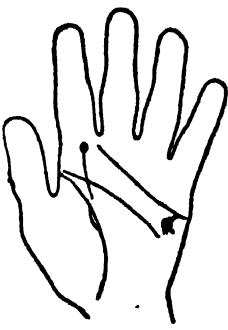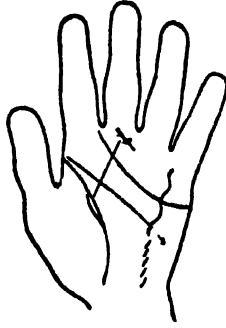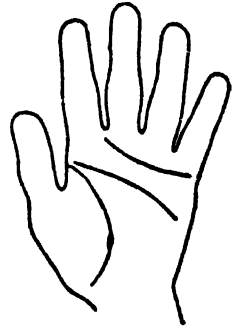
रेखाचित्र-217 *रेखाचित्र-218* *रेखाचित्र-219*

ऊपरी मंगल क्षेत्र पर जाल अथवा गुणनचिह्न के मिलने से भी उपरोक्त तथ्य की पुष्टि हो जाती है (रेखाचित्र-217)।

निम्नोक्त लक्षणों से व्यक्ति के गम्भीर रूप से पित्त-रोग तथा अजीर्ण से पीड़ित होना सूचित होता है—(i) जीवन रेखा में द्वीपचिह्न, (ii) शनि पर्वत पर जाल, (iii) शनि पर्वत पर जाल को द्वीप से जोड़ने वाली रेखा, (iv) लहरदार बुध रेखा।

जीवन रेखा का पीलापन पित्त-रोग तथा अजीर्णता की पुष्टि कर देता है।

निम्नोक्त लक्षणों से पित्त-दोष के फलस्वरूप व्यक्ति के शिरोवेदना से पीड़ित होना सूचित होता है—(i) मस्तक रेखा को पुनः-पुनः काटती आड़ी रेखाएं तथा (ii) इसके कारण प्रकट होने वाले छोटे-छोटे द्वीपचिह्न (रेखाचित्र-218)।

उपर्युक्त सभी उदाहरण यह सिद्ध करते हैं कि जीवन रेखा में द्वीपाकार चिह्न की उपस्थिति से ही व्यक्ति का स्वास्थ्य दुष्प्रभावित हो रहा है। इसमें वित्तीय स्थिति अथवा जीवन के अन्य किसी भी कार्यक्षेत्र का कोई योगदान नहीं। जीवन रेखा से रोग की स्थिति का तथा शनि रेखा और सूर्य रेखा से वित्तीय स्थिति का पता लगाया जाता है।

जीवन रेखा से विकृत स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति का विश्लेषण नहीं किया जाता। 42-46 वर्ष की स्त्रियों की जीवन रेखा में द्वीप का दीखना एक सामान्य स्थिति है (रेखाचित्र-219)। यह संकेत जीवन में परिवर्तन आने वाली आयु का

सूचक होता है और द्वीप की अवधि से परिवर्तन-प्रक्रिया की काल-सीमा की जानकारी मिलती है। महिलाओं के हाथों में इस स्थान पर उभरते द्वीपचिह्न उनके शारीरिक विकास (परिवर्तन) के सूचक होते हैं। द्वीप की परवर्ती रेखा की जांच-परख से महिला पर परिवर्तन के पड़ रहे प्रभाव की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

द्वीप के पश्चात् एक गहरी रेखा का मिलना परिवर्तन की अवधि में स्वास्थ्य के शिथिल हो जाने का सूचक है। रेखा का पतलापन, चौड़ापन तथा सतही अथवा शृंखलाकार होना अशुभ लक्षण है; क्योंकि इससे व्यक्ति के अपने खोयें बल-सामर्थ्य को कभी फिर से न पा सकना सूचित होता है। इस द्वीप के साथ ही चन्द्र पर्वत के निम्न क्षेत्र में रेखाजाल का दीखना यह संकेतित करता है कि महिला की सहज नारी-सुलभ दुर्बलता उसके जीवन में आने वाले परिवर्तन को बाधित कर रही है (रेखाचित्र-220)। अत: इस स्थिति में परिवर्तन की बाधा को दूर करने के लिए चिकित्सक का सहारा लेने का परामर्श देना ही उपयुक्त रहता है।
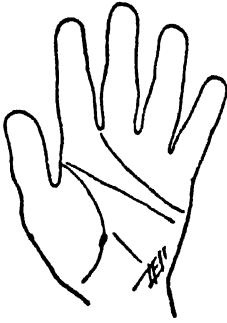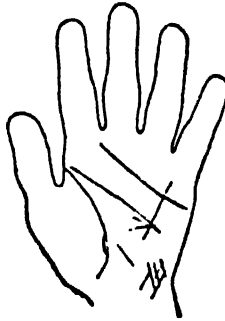
रेखाचित्र-220 *रेखाचित्र-221* *रेखाचित्र-222*

यदि इस चिह्न में कोई रेखा जाल और द्वीप को जोड़ देती है, तो परिवर्तन के अवरुद्ध होने को पक्का और सुनिश्चित ही समझना चाहिए। यदि मस्तक रेखा के मिलन-स्थल अथवा उसके आस-पास रहने वाली बुध रेखा दिखायी देती हो, तो नक्षत्र में परिवर्तन का बाधित होना द्वीप के साथ-साथ जीवन की अन्य दूषित स्थितियों से स्पष्ट होता है (रेखाचित्र-221)।

इस आयु में आकर गहरी-सशक्त जीवन रेखा के महीन हो जाने से समस्या-परिवर्तन के बाधित होने और उसके उपस्थित होने के साथ-साथ समस्या के अधिक चिन्तनीय न होने का भी पता चल जाता है। व्यक्ति के इस आयु का होने पर गहरी-सशक्त जीवन रेखा का चौड़ा-सतही हो जाना यह सूचित करता है कि शरीर की दुर्बलता का कारण परिवर्तन का बाधित होना है (रेखाचित्र-222)। इसके

पश्चात् रेखा के बनने वाले स्वरूप से दुर्बलता के स्वर—गम्भीरता अथवा सामान्यता आदि—की जानकारी मिलती है। रेखा के स्वरूप के अन्त तक चौड़ा, सतही अथवा शृंखलाकार बने रहने का अर्थ है—व्यक्ति पहले-जैसी शक्ति पुन: कभी प्राप्त कर ही नहीं सकता और जीवन की इस अवधि में उसे निरन्तर जटिलताओं का सामना करना पड़ता है।
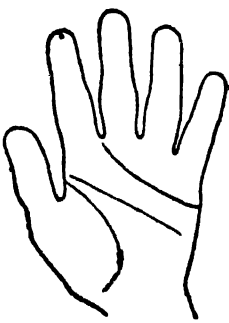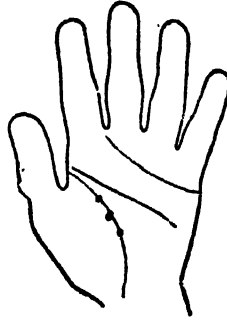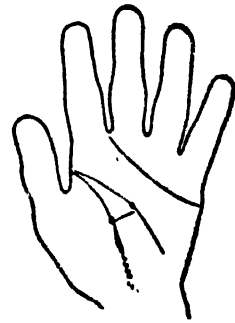
रेखाचित्र-223 *रेखाचित्र-224* *रेखाचित्र-225*

इस अवधि में मस्तक रेखा में बनने वाले द्वीपों अथवा विच्छेदों को व्यक्ति की मानसिक शक्ति के क्षीण होने के संकेत समझना चाहिए। जीवन रेखा में द्वीप के आकार वाले चिह्नों की संकटपूर्ण अवधि को जानना तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रत्येक संकेत को द्वीप के संयोग के सन्दर्भ में देखना उपयुक्त रहता है (रेखाचित्र-223)।

जीवन रेखा पर बिन्दु तो कभी-कभार ही मिलाते हैं (रेखाचित्र-224), परन्तु यदा-कदा मिलने वाले ये बिन्दु भयंकर रोग अथवा दुर्घटना के सूचक होने के कारण सर्वथा अवाञ्छनीय ही होते हैं। ये बिन्दु आकार में भी विभिन्नता लिये रहते हैं। कुछ इतने छोटे होते हैं कि दिखायी तक नहीं देते और कुछ इतने बड़े कि रेखा को ही इस प्रकार ढंक देते हैं कि वह दिखाई नहीं देती। ये बिन्दु आकार के समान रंग में भी विभिन्नता लिये रहते हैं। इनके आकार और रंग के आधार पर ही इन्हें महत्त्व देना चाहिए।

सफेद रंग वाले बिन्दु हानिकारक नहीं होते। रोग के लक्षणों की जांच के समान ही इनके रहस्य को जानने के लिए हाथ का परीक्षण अपेक्षित रहता है। बिन्दुओं का लाल रंग अपनी गहराई के अनुपात में ज्वर और उसकी तीव्रता-विकटता का संकेत देता है। किरमिजी और जामुनी रंग लिये रहने वाले बिन्दु आन्त्र-ज्वर-जैसे भयंकर रोगों के आने के सूचक होते हैं। इन रंगों वाले बिन्दु व्यक्ति के जीवन में आने वाले किसी घटना-विशेष की जानकारी देने में सहायक होते हैं। इन बिन्दुओं का द्वीपों, शृंखलाओं तथा अन्यान्य दोषों से पूर्व प्रकट होना रोग की

विषमता को और व्यक्ति के उस रोग से कभी न उभर पाने को सूचित करता है। इस स्थिति में व्यक्ति प्रयत्न करने पर भी कभी शरीर से हृष्ट-पुष्ट नहीं हो सका—यह तथ्य पुष्ट होता है।

निम्नोक्त लक्षणों—(i) जीवन रेखा पर बिन्दु, (ii) उसके पश्चात् एक द्वीप और (iii) फिर शृंखलाकार रेखा तत्पश्चात् (iv) मस्तिष्क रेखा पर छड़, (v) बिन्दु, (vi) छोटे आकार का एक द्वीप तथा (vii) गुणनचिह्न अथवा नक्षत्रचिह्न तक जाती रेखा से सूचित होता है कि तीव्र मस्तिष्क-ज्वर से व्यक्ति का शरीर इस प्रकार कृश-क्षीण इतना हो गया कि वह फिर स्वस्थ हो ही नहीं सका (रेखाचित्र-225)।
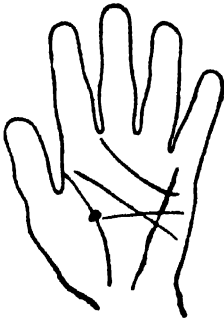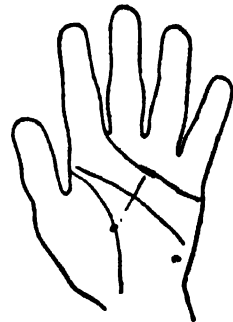
रेखाचित्र-226 *रेखाचित्र-227* *रेखाचित्र-228*

जीवन रेखा पर प्रकट बिन्दु को जब कोई रेखा मंगल और बुध की द्वीपाकार रेखा से जोड़ती दीखती है, तो उससे व्यक्ति की श्वासनली में शोथ का अथवा गले में विकार होने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-226)। इसी प्रकार जीवन रेखा पर प्रकट बिन्दु को यदि कोई एक रेखा ऊपरी चन्द्र पर्वत पर स्थित रेखाजाल से जोड़ती हो तथा एक अन्य रेखा बृहस्पति पर्वत पर जाती हो, तो व्यक्ति को आन्त्रशोथ (अंतड़ियों की सूजन) से पीड़ित समझना चाहिए (रेखाचित्र-227)।

जीवन रेखा पर स्थित बिन्दु का मंगल की लहरदार रेखा पर एक दूसरी बिन्दु/द्वीप/गुणन से चिह्नित रेखा से जुड़ना यह बताता है कि व्यक्ति गम्भीर ज्वर के प्रकोप से पीड़ित है (रेखाचित्र-228)।

इसी प्रकार जीवन रेखा पर स्थित बिन्दु का, बुध की लहरदार रेखा पर स्थित बिन्दु से तथा आड़ी रेखा अथवा गुणनचिह्न से जुड़ने का अर्थ है—व्यक्ति का पित्त-ज्वर से पीड़ित होना (रेखाचित्र-229)। वस्तुतः बुध की रेखा पर बिन्दु की स्थिति रोग की विषमता को दिखाती है। वहां लहरदार रेखा से पित्त-विकार का पुरानापन सूचित होता है।
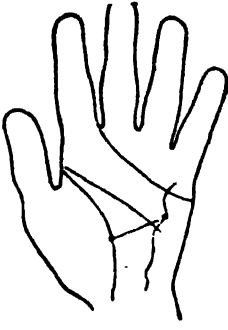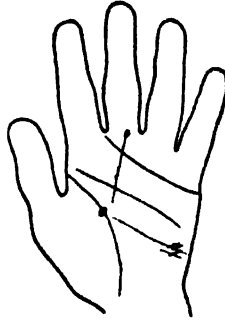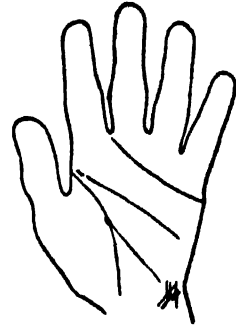
रेखाचित्र-229 रेखाचित्र-230 रेखाचित्र-231

जीवन रेखा पर एक बिन्दुचिह्न का होना, उसके साथ चन्द्र के मध्य क्षेत्र पर आड़ी रेखाओं का, एक गुणनचिह्न का अथवा एक अनगढ़ नक्षत्रचिह्न का मिलना सूचित करता है कि व्यक्ति गठिया रोग का शिकार है (रेखाचित्र-230)। बिन्दु से निकलती और शनि पर्वत पर जाती रेखा इस तथ्य को पुष्ट करती है।

किसी रेखा द्वारा जीवन रेखा पर स्थित बिन्दु को चन्द्र पर्वत पर प्रकट हो रहे जाल, आड़ी रेखाओं तथा गुणनचिह्न अथवा अनगढ़ नक्षत्र से जोड़ने को गुर्दे में अथवा मूत्राशय में गम्भीर विकार का संकेत समझना चाहिए (रेखाचित्र-231)। इसी प्रकार जीवन रेखा पर स्थित बिन्दु के गहरे पीले रंग के होने से पित्त-दोष से ज्वर की तीव्रता की पुष्टि होती है।
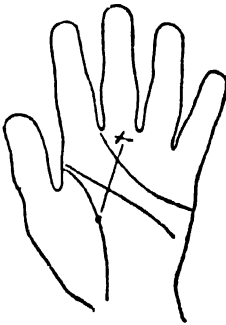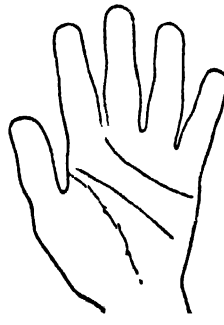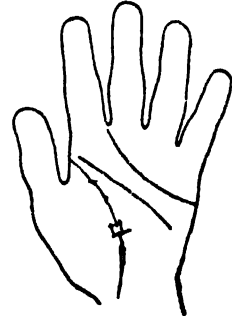
रेखाचित्र-232 रेखाचित्र-233 रेखाचित्र-234

जीवन रेखा पर स्थित बिन्दु को किसी रेखा द्वारा शनि पर्वत पर गुणनचिह्न के साथ जोड़ना किसी दुर्घटना का संकेत होता है। शनिप्रधान व्यक्तियों का दुर्घटनाग्रस्त होना एक सामान्य प्रवृत्ति है (रेखाचित्र-232)।

जीवन रेखा पर प्रायः पाये जाने वाले विच्छेदों की गम्भीरता के निर्धारण के

लिए सम्बद्ध रेखा के स्वरूप को, विच्छेद अथवा अन्तराल की स्थिति—गहराई आदि को तथा उसमें सुधार हुए-न हुए और हुए तो कितने हुए—आदि को देखा जाता है (रेखाचित्र-233)। वस्तुत: बात यह है कि जीवन रेखा के साथ चल रही विद्युत्-धारा रेखा को विशृंखलित पाकर अन्तराल अथवा विच्छेद को लांघकर पुन: उस रेखा में मिल जाती है। विद्युत्-धारा द्वारा विच्छेद को यथाशीघ्र लांघने के अनुपात में ही विच्छेद की गम्भीरता कम होती है। किसी गहरी सशक्त रेखा का विशृंखलन चौड़ी-सतही अथवा शृंखलाकार रेखा में मिलने वाले विच्छेद जितना गम्भीर नहीं होता; क्योंकि जहां गहरी रेखा से होकर पूरे वेग से आगे बढ़ती विद्युत्-धारा टूटती नहीं, अपितु उसे लांघकर आगे वाली रेखा में मिल जाती है, वहां सतही अथवा शृंखलाकार रेखा में विद्युत्-धारा का प्रवाह इस प्रकार मन्द और क्षीण पड़ जाता है कि उससे क्षतिपूर्ति हो ही नहीं पाती।

रेखा की टूटन से व्यक्ति के स्वास्थ्य में विकृति का संकेत मिलता है। इस प्रकार सभी विच्छेद सम्बद्ध व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले होते हैं। वस्तुत: स्वास्थ्य में किसी प्रकार की गड़बड़ी होने, बाधा-अड़चन आने, रोग फूटने अथवा दुर्घटना के घटने पर ही ऐसे विशृंखलन प्रकट होते हैं। कभी-कभी इन बाधाओं की सूचना विशृंखलन की बजाय किन्हीं अन्य संकेतों से भी मिलती है। फिर भी सब प्रकार से स्वस्थ दीखते हाथ में रेखा के कटाव को किसी दुर्घटना का निश्चित संकेत समझना चाहिए; क्योंकि अनेक हाथों के परीक्षण से इस तथ्य की पुष्टि हो चुकी है कि विच्छेदों का दुर्घटनाओं से पक्का सम्बन्ध होता है। आकस्मिक रेखाओं अथवा अलग चिह्नों से पर्वतों पर दृष्टिगोचर होने वाले स्वास्थ्य सम्बन्धी दोषों को पहचाना जा सकता है। यहां यह भी स्मरणीय है कि रेखा में यत्र-तत्र दीखने वाले छोटे-मोटे कटावों की तुरन्त भरपाई होती रहने से, उन्हें द्वीपों अथवा बिन्दुओं से अधिक गम्भीर नहीं माना जाता (रेखाचित्र-234)। हां, न सुधरने वाले रेखा के बड़े विच्छेद ज़ीवन के लिए अवश्य किसी गम्भीर संकट के सूचक होते हैं (रेखाचित्र-235)।

रेखा के टूटने के उपरान्त उसके सिरों का पीछे की ओर मुड़ना किसी अत्यन्त गम्भीर संकट का सूचक होता है (रेखाचित्र-236)। सिरों के अलगाव की तथा अंकुश-जैसे आकार की अधिकता के अनुपात में ही स्वास्थ्य सुधरने की सम्भावना न्यूनाधिक होती है। अत: हस्तरेखापरीक्षक को प्रत्येक बिन्दु के विस्तार और छोरों की विपरीतता के परिप्रेक्ष्य में सुधार की सम्भावना को अथवा संकट की सामान्यता-विषमता को समझना चाहिए।
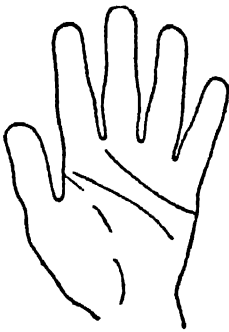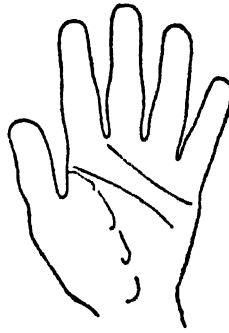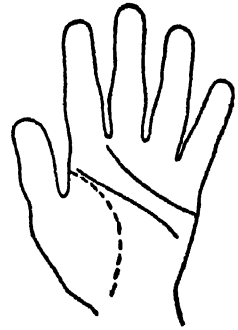
रेखाचित्र-235 *रेखाचित्र-236* *रेखाचित्र-237*

रेखा में एक-एक करके आने वाले छोटे-छोटे कटाव शृंखलाकार रेखा के समान ही व्यक्ति के स्वास्थ्य को विकृत-प्रभावित करने वाले होते हैं (रेखाचित्र 237)। इससे व्यक्ति की शक्ति क्षीण हो जाती है और फिर धीरे-धीरे उसका शरीर कृश-दुर्बल होता जाता है।
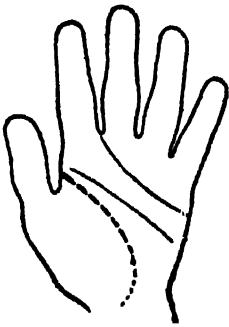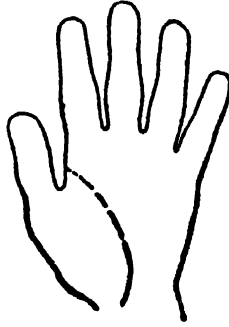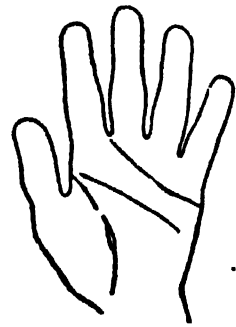
रेखाचित्र-238 *रेखाचित्र-239* *रेखाचित्र-240*

प्रत्येक विच्छेद के उपरान्त उत्तरोत्तर अधिक क्षीण और पतली होती रेखा व्यक्ति में शक्ति की निरन्तर हो रही क्षीणता और प्रतिरोध की क्षमता में आ रही न्यूनता का संकेत देती है (रेखाचित्र-238)। शक्ति के क्रमशः चुकते जाने पर व्यक्ति धीरे-धीरे दुर्बलता की ओर बढ़ता जाता है। वस्तुतः रेखा की यह स्थिति किसी विशेष प्रकार की शारीरिक दुर्बलता की और असामान्य आघातों की सूचक होती है। जीवन रेखा आरम्भ में पतली तथा प्रत्येक विच्छेद के बाद गहरी होती जा सकती है। यह इस तथ्य का संकेत होता है कि व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी कठिनाइयों पर क़ाबू पाता जा रहा है (रेखाचित्र-239)। द्वीपों, बिन्दुओं और विकारों के कारण की खोज में अपनाये जाने वाले ढंग को ही विच्छेदों के कारणों को जानने के कार्य में भी लाया

जाता है। विच्छेद के बाद रेखा के रूप पर विचार करना इसलिए भी आवश्यक हो जाता है; क्योंकि इसी से रेखा को पहुंची क्षति का निर्धारण सम्भव होता है। विच्छेद के उपरान्त बनने वाले द्वीप के आकार से ही व्यक्ति के स्वास्थ्य की संकटपूर्ण अवधि का पता चलता है (रेखाचित्र-240)। विच्छेद के उपरान्त शृंखलाकार रेखा भी यही संकेत देती है (रेखाचित्र-241) कि व्यक्ति के स्वास्थ्य-लाभ की कोई सम्भावना नहीं है और यदि है, तो नाममात्र की।
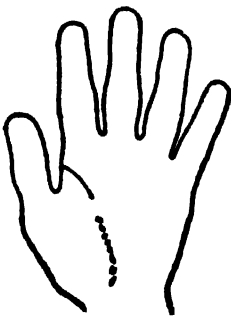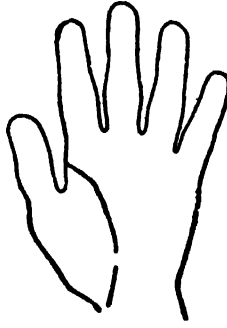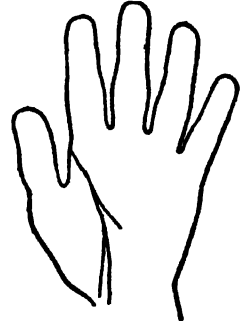
रेखाचित्र-241 *रेखाचित्र-242* *रेखाचित्र-243*

व्यक्ति द्वारा अपनी आयु के पचास वर्ष के आस-पास रेखा में विच्छेद उत्पन्न होने से पूर्व रेखा पतली होने लगती है और विच्छेद-बिन्दु तक बराबर पतली होती चली जाती है, जो इस तथ्य का संकेत है कि व्यक्ति की जीवनी शक्ति इस प्रकार समाप्त हो गयी है कि उसमें रोग का सामना करने की क्षमता ही नहीं रही और इसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति निरन्तर रोगग्रस्त रहता है, जिसका संकेत पहले विच्छेद ने ही दे दिया होता है (रेखाचित्र-242)।

विच्छेद के आरम्भ में रेखा का पतला-बारीक होना और फिर धीरे-धीरे स्थूलता ग्रहण करते जाना संकेतित करता है कि व्यक्ति में शक्ति का सञ्चार होने से उसके स्वास्थ्य में सुधार की सम्भावना बढ़ गयी है। रेखा के परस्पर गुंथे हुए सिरे, सहायक रेखाएं, वर्ग तथा अन्य चिह्न जीवन रेखा में आये विच्छेद के कुपरिणाम को दूर कर देते हैं अथवा इसमें कमी ला देते हैं। इस प्रकार जिस अनुपात में रेखा में सुधार होता है, उसी अनुपात में विद्युत्-धारा का प्रवाह नियमित होता जाता है।

जीवन रेखा से छिटक कर निकली रेखाओं से विद्युत्-धारा का एक अंश मुख्य मार्ग से अलग हो जाता है (रेखाचित्र-243)। ये रेखाएं कभी-कभार तो जीवन रेखा को केवल विभाजित करती हैं और फिर विभक्त हुई रेखा दोहरी रेखा बनकर जीवन रेखा के साथ-साथ बढ़ती रहती है (रेखाचित्र-244)। रेखा-विखण्डन के साथ ही व्यक्ति का शारीरिक सामर्थ्य भी क्षीण हो जाता है। यह सब स्वास्थ्य के

लिए भले ही कोई ख़तरा न हो, परन्तु इतना तो निश्चित है कि व्यक्ति अपने को स्वस्थ-प्रसन्न अनुभव नहीं करता।
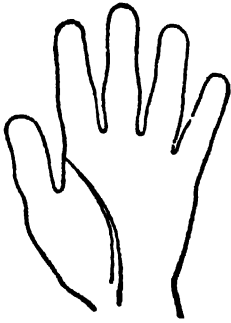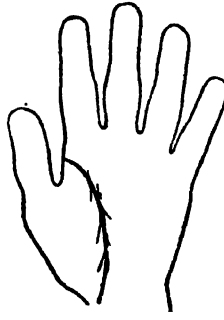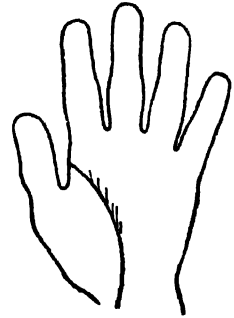
रेखाचित्र-244 *रेखाचित्र-245* *रेखाचित्र-246*

सामान्य रूप से तो यह रेखा बंटी हुई रेखा की लम्बाई तक उसके साथ चलती है, परन्तु कभी थोड़ी-दूर तक साथ जाती देखी जाती है। जब तक रेखा विभक्त रहती है, तब तक व्यक्ति की शक्ति भी विभक्त रहती है। विभक्त रेखाओं के कभी-कभार बाल के समान महीन होने पर भी मुख्य रेखा के आकार में कोई अन्तर नहीं आता (रेखाचित्र-245)। ये रेखाएं प्राय: एक गहरी रेखा के साथ दीखती हैं और इनसे रेखा की अतिरिक्त शक्ति का परिचय मिलता है।

बाल-जैसी अत्यन्त सूक्ष्म-पतली रेखाओं का जीवन रेखा के प्रारम्भिक भाग में दीखना व्यक्ति के जीवन के ऊर्ध्वगामी होने को सूचित करता है। ऐसा व्यक्ति सफलता पाने को उत्सुक और महत्त्वाकांक्षी होने के साथ-साथ दम्भी भी होता है। उठती हुई महीन रेखाओं से संकेत प्राप्त होता है कि अंगुलियों के नीचे पर्वतों की आकर्षण शक्ति ने रेखा से बाहर की विद्युत्-धारा को ऊपर की ओर खींच लिया है।

बाल-जैसी पतली रेखाएं शनि, सूर्य और बुध की अंगुलियों से बाहर निकलती हुई विद्युत्-धारा को उसकी उचित दिशा में खींचती हैं। पतली रेखाओं का आकर्षण इतना प्रबल होता है कि विद्युत्-धारा ऊपर की ओर खिंची चली जाती है। ऊपर उठती पतली रेखाओं द्वारा जीवन रेखा को ढंकने की सीमा ही व्यक्ति के उत्कर्ष की अवधि होती है। इस अवधि में ही व्यक्ति अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण कार्यों को निपटाता है (रेखाचित्र-246)।

कभी-कभी छोटी-छोटी रेखाएं जीवन के ऊपर की ओर न उठकर नीचे की ओर गिरती हैं (रेखाचित्र-247)। यह व्यक्ति के पतन, अवनति तथा बलहीनता के समय का सूचक है। बालों-जैसी पतली रेखाओं के झुकने अथवा गिरने का अर्थ है—जीवन की प्रेरक शक्ति, उत्साह एवं स्फूर्ति का घटना, अर्थात् व्यक्ति का कुछ भी

महत्त्वपूर्ण कार्य न कर पाना।
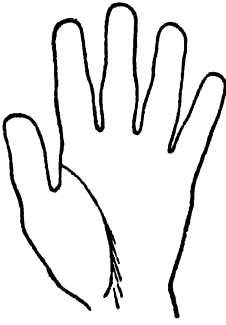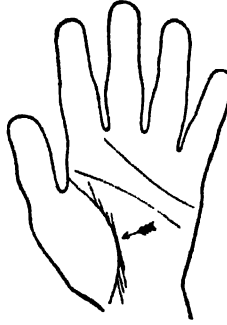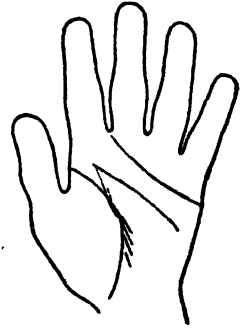
रेखाचित्र-247 *रेखाचित्र-248* *रेखाचित्र-249*

ऊपर उठती रेखाओं के प्राकट्य का रुकना और इसके सर्वथा विपरीत नीचे की ओर जाने वाली रेखाओं का प्रकट होना व्यक्ति के जीवन के चरम-उत्कर्ष के समय के आगमन को सूचित करता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि इस अवधि में व्यक्ति अपनी योग्यता के श्रेष्ठतम रूप का प्रदर्शन कर सकता है और कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण करने में सफल हो सकता है (रेखाचित्र-248)। इस संकेत से यह भी सूचित होता है कि इसके पश्चात् उसकी क्षमता धीरे-धीरे घटने लगती है।

जीवन के इस मोड़--कुछ रेखाओं का लोप और कुछ का प्राकट्य—का नाम ही संक्रान्तिकाल है, जिसका पर्याप्त अध्ययन हुआ और शत-शत पुरुषों और महिलाओं के सम्बन्ध में प्रभाव और परिणाम को सही पाया गया है। इसी समय व्यक्ति उन्नति के चरम शिखर पर पहुंचता है और वहां से धीरे-धीरे अवनति की ओर बढ़ने लगता है। यह बात अलग है कि कुछ हाथों के परीक्षण से चरम स्थिति के तत्काल आने की और कुछ व्यक्तियों के जीवन में विलम्ब से आने की जानकारी मिलती है। वस्तुत: चरम सफलता का समय व्यक्ति का अधिकतम शक्तिशाली और पूर्णत: सामर्थ्यवान् होने का समय होता है। इस अवधि की सूचक रेखा के समीप कभी-कभी किसी द्वीपचिह्न का उभरना भी देखने को मिलता है (रेखाचित्र-249)। यह द्वीपचिह्न व्यक्ति के शक्ति-साहस को इस प्रकार ग्रस लेता है कि व्यक्ति के लिए पुन: शक्ति-लाभ करना सम्भव ही नहीं होता। व्यक्ति की आयु के पचासवें वर्ष के आसपास ऐसे चिह्न का प्रकट होना एक ऐसे संक्रान्तिकाल के आने का सूचक है, जिसमें व्यक्ति की शारीरिक क्षमता में निरन्तर ह्रास आता रहता है।

जीवन रेखा से ऊपर की ओर जाने वाली रेखाओं अथवा एकमात्र रेखा के बृहस्पति पर्वत तक पहुंचने का अर्थ है—व्यक्ति अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए संघर्षशील है (रेखाचित्र-250)। अंगुली के प्रभावी पर्व से व्यक्ति के क्षेत्र-

विशेष में चमकने की इच्छा की जानकारी मिलती है
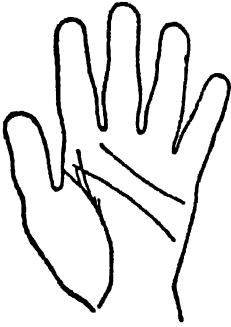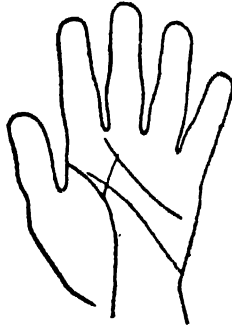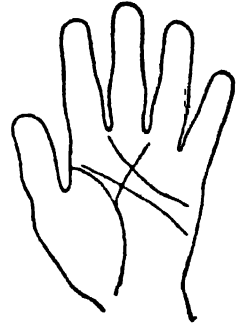
रेखाचित्र-250 रेखाचित्र-251 रेखाचित्र-252

शनि पर्वत पर इस रेखा के पहुंचने से सूचित होता है कि व्यक्ति शनि-गुण-प्रधान कार्यों में सफलता-प्राप्ति का इच्छुक है (रेखाचित्र-251)। रुचि के क्षेत्र-विशेष की जानकारी अंगुली के पर्वों से प्राप्त की जा सकती है। सर्वाधिक प्रभावी पर्व से निर्दिष्ट क्षेत्र में ही व्यक्ति की सफलता का योग समझना चाहिए। इसी परम्परा के अन्तर्गत सूर्य पर्वत की ओर जाने वाली रेखा अथवा रेखाओं से व्यक्ति के सूर्य की अंगुली के सर्वाधिक प्रभावी पर्व से सम्बन्ध रखने वाले क्षेत्र में प्रगति एवं सफलता पाने का तथा प्रेरित होने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-252)।

इसी प्रकार बुध पर्वत पर रेखा के पहुंचने से व्यक्ति के बुध की दिशा में प्रगति करने और सफलता पाने का इच्छुक होने का संकेत मिलता है। कार्य के क्षेत्र-विशेष को निश्चित करने में अंगुली के पर्वों की भी सहायता ली जानी चाहिए (रेखाचित्र-253)। जीवन रेखा की ओर जाने वाली रेखा को बुध रेखा समझने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए।
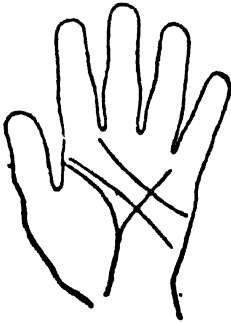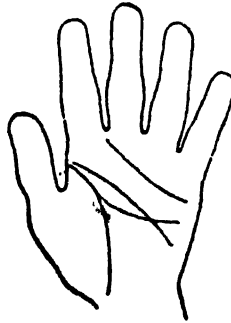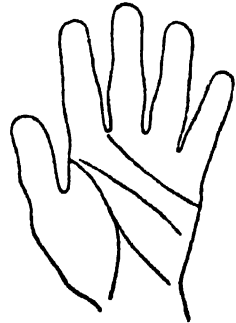
रेखाचित्र-253 रेखाचित्र-254 रेखाचित्र-255

जीवन रेखा से निकलती किसी रेखा के ऊपर मंगल क्षेत्र तक पहुंचने से

व्यक्ति के मंगल सम्बन्धी कार्यक्षेत्रों को अपनाने की प्रबल अभिलाषा उजागर होती है (रेखाचित्र-254)। इसी प्रकार किसी विभक्त रेखा के चन्द्र पर्वत पर पहुंचने से व्यक्ति के जीवन पर चन्द्र सम्बन्धी गुणों का व्यापक प्रभाव सूचित होता है (रेखाचित्र-255)। किसी भी प्रभाव की सुनिश्चितता के लिए जीवन रेखा से निकलने वाली सभी रेखाओं का उत्तम और गहरा होना आवश्यक है। जीवन रेखा को लांघकर अथवा काटकर जाने वाली रेखाएं प्रभावी नहीं होतीं।

जीवन रेखा का अध्ययन करते समय सर्वप्रथम उसके अन्त के स्वरूप को देखना आवश्यक है; क्योंकि इसी से (रेखा के समापन-स्वरूप से) व्यक्ति के अन्त के स्वरूप का पता चलता है। जीवन रेखा में दिखाई देने वाले समय-परिवर्तनों से व्यक्ति के जीवनकाल में उसके शारीरिक गठन का, स्वास्थ्य में आने वाले उत्थान-पतन अथवा बिगाड़-सुधार का, शक्ति-सामर्थ्य के विकास-ह्रास का तथा विभिन्न रोगों से संघर्ष और उस संघर्ष में जय-पराजय आदि का पता लगता है। विभिन्न व्यक्तियों के हाथों में जीवन रेखा की समाप्ति की कालावधि भिन्न-भिन्न होती है। कालावधि की भिन्नता के अनुरूप ही समाप्ति का ढंग भी भिन्न-भिन्न होता है। इस विषय की विस्तृत चर्चा 'रेखा का समापन' शीर्षक अध्याय में की जायेगी।

निम्नोक्त लक्षण उत्तम माने जाते हैं; क्योंकि इनसे व्यक्ति का जीवन के अन्तिम क्षणों तक स्वस्थ-सशक्त सुखी बना रहना सूचित होता है—(i) जीवन रेखा का किसी रोग से ग्रस्त होकर तिल-तिल करके न मरना, गहरी और सशक्त होना, (ii) उसका अपने गन्तव्य-स्थल पर अचानक समाप्त न होना, (iii) उसका स्वरूप अन्त तक एक-समान बना रहना तथा (iv) अन्त में किसी चिह्न का न बनना (रेखाचित्र 256)।
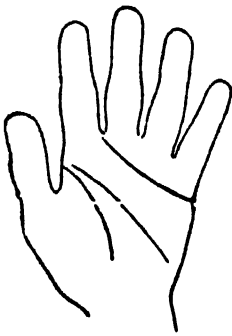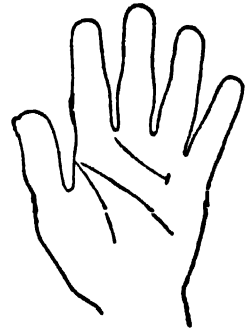
रेखाचित्र-256 *रेखाचित्र-257* *रेखाचित्र-258*

रेखा के इस प्रकार के अन्त के दीखने पर मस्तक रेखा, हृदय रेखा तथा व्यक्ति के प्रकार आदि पर भी पूर्ण सावधानी से विचार करना चाहिए। बृहस्पतिप्रधान तथा

मंगलप्रधान व्यक्ति भी जीवन के अन्त तक स्वस्थ, सुखी और समर्थ बने रहते हैं।

जीवन रेखा पर निम्नोक्त लक्षण—उस पर किसी भी चिह्न का न होना, परन्तु मस्तक रेखा पर गहरी काट का अथवा गुणनचिह्न का अथवा किसी बिन्दु का अथवा नक्षत्रचिह्न का दीखना—व्यक्ति के जीवन के अन्त का सूचक है। वस्तुत: ये लक्षण मृत्यु के ही प्रतीक हैं (रेखाचित्र-257)। जीवन रेखा की अचानक समाप्ति को तो व्यक्ति के अन्त को निकट ही समझना चाहिए। मस्तक रेखा पर किसी चिह्न के दीखने से यही संकेत मिलता है कि व्यक्ति की मृत्यु का कारण मस्तिष्क रोग ही है।

हृदय रेखा पर किसी चिह्न—काट, गुणन, बिन्दु अथवा नक्षत्र—के दीखने को सर्वथा अशुभ मानना चाहिए; क्योंकि यह व्यक्ति की हृदय गति के रुकने से उसकी अचानक मृत्यु होने का सूचक होता है (रेखाचित्र-258)।

जीवन रेखा की अचानक समाप्ति को देखकर उसके कारण की खोज के अन्तर्गत पुराने रोगों को ढूंढ़ने के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। इससे तो बिन्दु, गुणनचिह्न, आड़ी रेखा और नक्षत्र-जैसे किसी चिह्न से प्रकट होने वाले अचानक रोग के भीषण प्रभाव का अध्ययन करना चाहिए। कभी-कभी अचानक आये रोग की भीषणता के तीव्र प्रभाव की जानकारी रेखा की टूट-फूट से भी मिलती है।
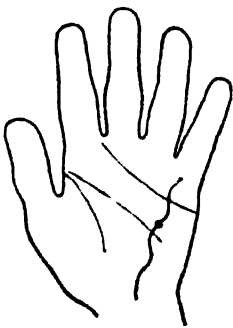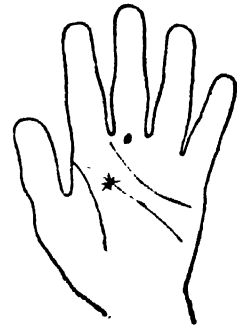
रेखाचित्र-259 *रेखाचित्र-260* *रेखाचित्र-261*

निम्नोक्त लक्षण—जीवन रेखा की सहसा समाप्ति तथा बुध की लहरदार रेखा पर गुणनचिह्न का अथवा आड़ी रेखा का मिलना—व्यक्ति की पित्तजन्य ज्वर से अचानक मृत्यु होने का संकेत होता है (रेखाचित्र-259)। जीवन रेखा के अन्त में किसी रेखा के इन चिह्नों पर पहुंचने से यह तथ्य पूर्णत: परिपुष्ट हो जाता है। एक बिन्दु और जीवन रेखा की किसी पर्वत पर अचानक समाप्ति से इस तथ्य का संकेत मिलता है कि किसी रोग के भीषण दौरे से व्यक्ति की मृत्यु होने वाली है। जिस पर्वत पर बिन्दुचिह्न मिलता है, स्वास्थ्य-विकार को उस पर्वत से जोड़कर देखना चाहिए।

किसी रेखा का जीवन रेखा के समापन-स्थल से निकलना तथा बिन्दु तक

पहुचंना इस संकेत—दौरे का घातक सिद्ध होना—को पुष्ट कर देता है। इस प्रकार जीवन रेखा से व्यक्ति की मृत्यु को देखना सदैव सम्भव न होने पर भी अन्य रेखाओं तथा पर्वतों पर मिलते संकेतों से बहुत कुछ जानना सम्भव हो जाता है। जीवन रेखा की सहसा समाप्ति तथा बृहस्पति पर्वत पर एक बिन्दु की उपस्थिति को व्यक्ति की रक्ताघात से मृत्यु होने का संकेत समझना चाहिए (रेखाचित्र-260)।

शनि पर्वत पर उभरा बिन्दु पक्षाघात का सूचक होता है। शनि पर्वत के नीचे मस्तक रेखा पर नक्षत्र, गुणनचिह्न अथवा बिन्दु का मिलना तो इस तथ्य की पूर्ण पुष्टि कर देते हैं (रेखाचित्र-261)। जीवन के अचानक अन्त को जानने के लिए अन्यान्य रेखाओं और पर्वतों पर भी विचार करना अपेक्षित होता है। यह स्मरणीय तथ्य है कि व्यक्ति की अचानक मृत्यु का कारण बनने वाले रोग का पुराना होना आवश्यक नहीं।

अचानक समाप्त होने वाली गहरी जीवन रेखा के पुन: उभरने की सम्भावना सदैव ही बनी रहती है। रेखा की लघुता इतनी चिन्तनीय नहीं, जितनी चिन्तनीय किसी गुणनचिह्न, नक्षत्र, गोपुच्छ तथा बिन्दु पर रेखा की समाप्ति है। किन्हीं व्यक्तियों के हाथों में जीवन रेखा गहरी और सशक्त होने के साथ-साथ छोटी भी होती है और किन्हीं हाथों में तो इस सबके साथ वह पतली भी होती है। ऐसी रेखा—गहरी-सशक्त, परन्तु लघु व सूक्ष्म—व्यक्तियों में जीने की इच्छा की प्रबलता-उत्कटता तथा संकल्पशक्ति की तीव्रता के कारण उनके हाथों में नये मार्ग बनाने के रूप में उनके जीवनकाल में वृद्धि करने वाली होती है। रेखा के दोषों से मुक्त होने पर भी सहसा समाप्त होने को किसी बड़ी बाधा अथवा संकट का संकेत नहीं समझना चाहिए; क्योंकि प्राय: ऐसे हाथों वाले व्यक्तियों की सतर्क रहने तथा दृढ़ संकल्प रखने की प्रवृत्ति के कारण उनका जीवन सामान्य रूप से चलता रहता है।

आरम्भ में किसी गहरी-सशक्त किसी रेखा का थोड़ा-सा आगे बढ़ते ही पतला हो जाने और फिर धीरे-धीरे कोशिका-रेखाओं में लुप्त हो जाने से सूचित होता है कि व्यक्ति प्रगति के पथ पर बढ़ता रहा है, परन्तु उसकी जीवनी शक्ति निरन्तर क्षीण हो रही है, जिससे एक ऐसे समय का आना निश्चित है, जब व्यक्ति की शक्ति पूर्णत: चुक जायेगी और वह अशक्त, असमर्थ और निढाल बनकर रह जायेगा (रेखाचित्र-262)। ऐसे व्यक्ति यदि अचानक मृत्यु का शिकार बनते हैं, तो उसका कारण रोग-विशेष न होकर जीवनी शक्ति की क्षीणता-समाप्ति ही होती है।

जीवन रेखा का मन्द पड़ जाना किसी पुराने रोग के पुन: उभरने का संकेत हो सकता है। हाथ की पूरी जांच से रोग का सही पता लग जाता है। मन्द-क्षीण पड़ती जा रही जीवन रेखा अपनी लम्बाई द्वारा संकेतित आयु से अधिक समय तक व्यक्ति को जीवित नहीं रख सकती। जीवन रेखा की लम्बाई के कम होने पर व्यक्ति का स्वास्थ्य शीघ्र ही बिगड़ने लगता है और व्यक्ति जीवन को जीने के लिए अपेक्षित दृढ़

संकल्प एवं शक्ति प्रदान करने वाली भावना के अभाव में रेखा द्वारा समाप्ति से सूचित आयु से अधिक नहीं जी पाता। हां, ऐसी जीवन रेखा के साथ मस्तक रेखा का उत्तम होना शुभ लक्षण होता है। जीवन रेखा का अन्त में द्विशाखी होना विद्युत्-धारा के दो दिशाओं में बंट जाने का सूचक है, जिसका अर्थ है—जीवन रेखा की समाप्ति- स्थल पर व्यक्ति के जीवन के बने रहने की सम्भावना का आधा रह जाना (रेखाचित्र-263)। द्विशाखी जीवन रेखा की दोनों शाखाओं का गहरी-सशक्त होना जहां जीवनकाल में वृद्धि का सूचक है, वहां उनका पतला होना अन्यथा रूप दिखाता है।
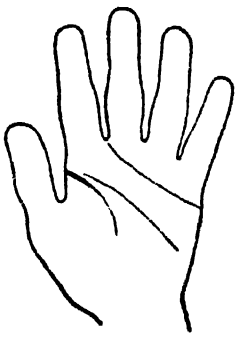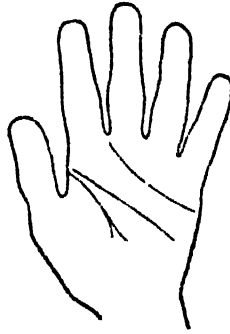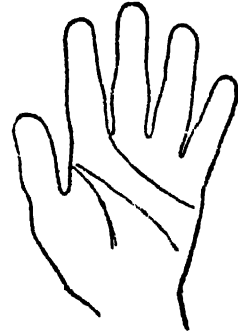
रेखाचित्र-262 *रेखाचित्र-263* *रेखाचित्र-264*

जीवन रेखा का अन्त में द्विशाखी होना व्यक्ति की जीवनी शक्ति में तीव्रता से ह्रास आने का सूचक है। द्विशाखी होने के साथ जीवन रेखा का छोटा होना तो व्यक्ति के दीर्घायु होने की सम्भावना को ही समाप्त कर देता है (रेखाचित्र-264)।
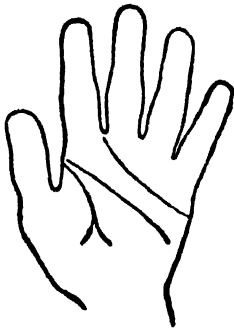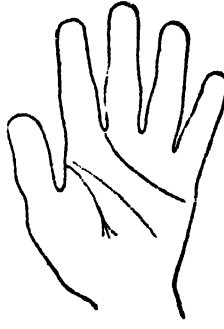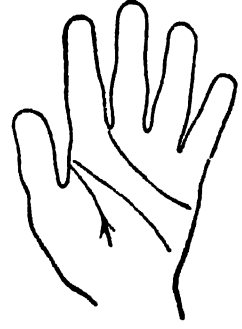
रेखाचित्र-265 *रेखाचित्र-266* *रेखाचित्र-267*

द्विशाखी रेखाओं की दोनों शाखाओं का एक- दूसरे के समीप होना कहीं अधिक अच्छा और उत्तम लक्षण है (रेखाचित्र-265)। जीवन रेखा का अपने समाप्ति-स्थल पर तीन शाखाओं में बंटने का अर्थ व्यक्ति की शक्ति का द्रुतगति से नष्ट

होना है। विभाजित तीनों शाखाओं का सूक्ष्म-पतला होना व्यक्ति के शक्ति-सामर्थ्य का पूर्णतया चुक जाना सूचित करता है (रेखाचित्र-266)। इस स्थिति से तो निश्चित हो जाता है कि इस आयु तक पहुंचते-पहुंचते ही व्यक्ति की सारी क्षमता सर्वथा निश्शेष हो चुकी है (रेखाचित्र-266)। हां, तीनों शाखाओं में से मध्यवर्ती शाखा की सशक्तता और गहरेपन से सूचित होता है कि व्यक्ति अपनी खोई हुई शक्ति पुन: प्राप्त करने, अर्थात् जीवन को नये सिरे से आरम्भ करने लगा है। इससे यह भी सूचित होता है कि रेखा के समाप्त हो जाने पर भी व्यक्ति का जीवन चलता रहने वाला है (रेखाचित्र-267)।
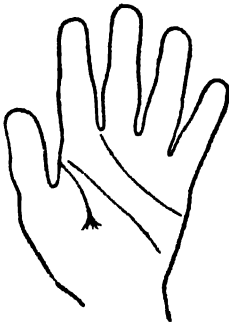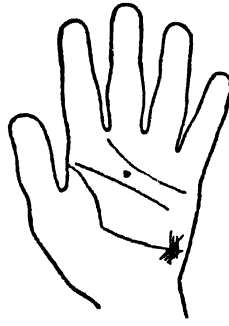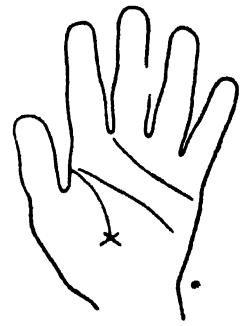
रेखाचित्र-268 *रेखाचित्र-269* *रेखाचित्र-270*

गोपुच्छ के रूप में समाप्त होने वाली जीवन रेखा व्यक्ति की पूरी शक्ति के साथ-साथ उसके जीवन की भी समाप्ति का संकेत देती है (रेखाचित्र-268)। वस्तुत: यह जीवन के स्वाभाविक अन्त को दिखाता है। रेखा के प्रारम्भ में ही गोपुच्छ के दीखने से दो संकेत मिलते हैं—(i) समय-पूर्व ही व्यक्ति का शक्तिहीन हो जाना तथा (ii) गोपुच्छ दीखने की आयु में ही व्यक्ति का नामशेष हो जाना। हस्त-रेखा विषयक अनेक पुस्तकों में जीवन रेखा पर गोपुच्छ की स्थिति को वृद्धावस्था में दरिद्रता का संकेत बतलाया गया है, जो सही नहीं है; क्योंकि हमने तो अनेक सम्पन्न व्यक्तियों के हाथों में भी इस स्थिति को देखा है और परीक्षण से इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि यह स्थिति निश्चित रूप से जीवनी शक्ति के समय से पूर्व ह्रास का लक्षण है।

किन्हीं हाथों में जीवन रेखा कुछ समय तक सामान्य गति से चलती हुई आयु-विशेष के आने पर हाथ को पार करके किसी पर्वत की ओर मुड़ जाती है। इसका अर्थ है कि पर्वत पर किसी प्रकार का कोई स्वास्थ्य-दोष नहीं। अत: पर्वत की गुणवत्ता व्यक्ति के जीवन की दिशा के निर्धारण में प्रभावी रही है। पर्वत पर रेखा सरल, गुणनचिह्न, बिन्दु, आड़ी रेखाएं अथवा अन्य इसी प्रकार के किसी विकार के

मिलने पर व्यक्ति के उस पर्वत से सम्बन्ध रखने वाले रोग से पीड़ित होना सूचित होता है। इस कारण से ही तो रेखा इस आयु में अपनी निर्धारित दिशा को छोड़कर दूसरी ओर मुड़ जाती है।

व्यक्ति के तीस वर्ष का होने पर रेखा के इस प्रकार मुड़ने से व्यक्ति के गठिया अथवा सन्धिवात-जैसे रोग से पीड़ित रह चुकना समझना चाहिए (रेखाचित्र 269)। किसी भी रेखा के दोष तक जाने और समाप्त होने पर स्थल-विशेष से सम्बन्धित रोगों का पता लगाना चाहिए।

स्त्री रोग-सूचक निचले चन्द्र पर्वत क्षेत्र तक जाने वाले इस चिह्न का महिलाओं के हाथों में प्राय: मिलना स्वाभाविक ही है। रेखा का गुणनचिह्न में अन्त होना, रोग के कारण व्यक्ति के जीवन के अन्त का सूचक है (रेखाचित्र-270)। हाथ के परीक्षण से इस तथ्य की जानकारी मिल जाती है। यह लक्षण व्यक्ति के किसी रोग से लम्बे समय तक पीड़ित न होने पर भी उसके अन्त का संकेत होता है। गुणनचिह्न की स्पष्टता और रेखाओं के गहरेपन के परिमाण से संकेत की सत्यता एवं निश्चितता को आंकना चाहिए।

जीवन रेखा का आड़ी रेखा से कटना जीवन के अचानक अन्त होने का संकेत है (रेखाचित्र-271)। ऐसे सभी मामलों में सामान्य परीक्षण की पद्धतियों से कारण स्पष्ट हो जाता है। जीवन रेखा के अन्त हो जाने की स्थिति में दोनों हाथों का परीक्षण अपेक्षित होता है। जीवन रेखा के अन्त में बिन्दु होना व्यक्ति की अकस्मात् मृत्यु होने का संकेत होता है।
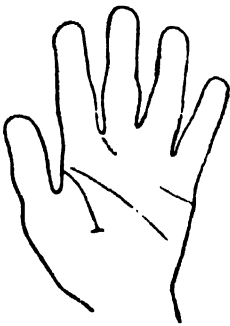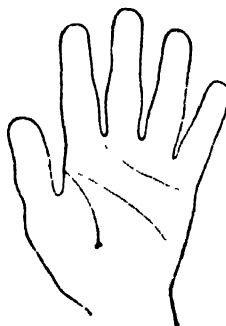
रेखाचित्र-271 *रेखाचित्र-272* *रेखाचित्र-273*

बायें हाथ में स्वस्थ-सशक्त जीवन रेखा का आड़ी रेखा द्वारा कटना और दायें हाथ का दोषपूर्ण अन्त व्यक्ति के जीवन की स्वाभाविक दिशा में बदलाव आने के निश्चित संकेत हैं (रेखाचित्र-272)। यह स्थिति व्यक्ति के किसी दुर्व्यसन में फंसने की और उसके फलस्वरूप आयु के क्षीण होने की अथवा किसी गम्भीर रोग से

घिरने की सूचना देती है। हस्तरेखाविद् को व्यक्ति के व्यसन अथवा रोग की जानकारी प्राप्त करके उसे उस व्यसन अथवा रोग के भयंकर परिणाम से अवगत ही नहीं, अपितु सावधान भी कर देना चाहिए। इस प्रकार के सभी मामलों में निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले दोनों हाथों की भली-प्रकार से जांच-परख करना आवश्यक है। रेखा के अन्त में बिन्दु का मिलना किसी गम्भीर दौरे से व्यक्ति की मृत्यु का सूचक है। स्वास्थ्य-परख सम्बन्धी सामान्य नियमों से रोग का पता लगाया जा सकता है। रेखा के अन्त में नक्षत्रचिह्न का मिलना व्यक्ति की अचानक मृत्यु का द्योतक है। हाथ में विद्यमान अन्य संकेतों से भी इस तथ्य को खोजा जा सकता है (रेखाचित्र-273)।

जीवन रेखा के समाप्ति-स्थल पर इन सभी चिह्नों के मिले-जुले विविध रूप दीखते हैं। जीवन रेखा पर विद्यमान गुणनचिह्न जीवनधारा के प्रवाह को बाधित करने वाले ही होते हैं। इस आयु में तो शनि रेखा पर अथवा सूर्य रेखा पर भी कुछ चिह्न दीखने लगते हैं (रेखाचित्र-274)। सामान्यत: किसी रोग अथवा दुर्घटना के कारण ये परिवर्तन अस्तित्व में आते हैं। गुणनचिह्नों को तो निश्चित रूप से दुर्घटनाओं के संकेत समझना चाहिए।
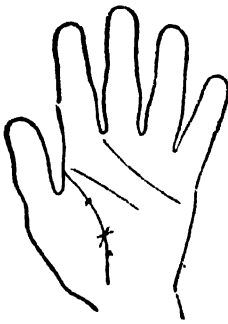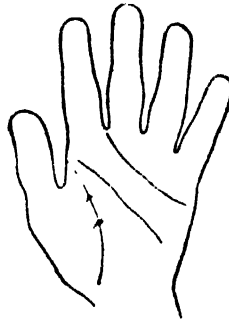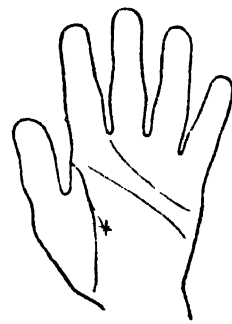
रेखाचित्र-274 *रेखाचित्र-275* *रेखाचित्र-276*

जीवन रेखा पर नक्षत्रचिह्नों की स्थिति को जीवन के लिए ख़तरे का मंडराना समझना चाहिए (रेखाचित्र-275)। इन चिह्नों से आकस्मिक मृत्यु का होना सिद्ध हो चुका है। व्यक्ति के प्रकार का भी इन चिह्नों से विशेष सम्बन्ध होता है।

जीवन रेखा से निकलकर आगे बढ़ती किसी पतली-महीन रेखा के अन्त में नक्षत्रचिह्न का मिलना भी अचानक होने वाली मृत्यु-जैसे किसी गम्भीर संकट को उजागर करता है (रेखाचित्र-276)। इसी प्रकार जीवन रेखा में विस्फोट अथवा प्रचण्ड ज्योति के रूप में प्रकट होने वाले नक्षत्र के भी अनिष्टमूलक होने से उसे अशुभ लक्षण माना जाता है।

जीवन रेखा के रूप-रंग से व्यक्ति के शारीरिक दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट अथवा कृश-

क्षीण होने की जानकारी सुलभ हो जाती है। गहरी और स्पष्ट रेखा का सफ़ेद रंग उसकी शक्ति को क्षीण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति गुलाबी व गहरी स्पष्ट रेखा वाले व्यक्ति के समान हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला नहीं हो सकता। तीनों—गहरी, सुस्पष्ट और गुलाबी—गुणों वाली जीवन रेखा सर्वोत्तम होती है। यह न तो जीवन में अशक्तता लाती है और न ही शक्ति की अधिकता। यह एक सन्तुलित स्थिति है।

रेखा का लाल रंग शक्ति की प्रचण्डता अथवा अत्यधिकता लाने वाला होने के कारण ऐसा व्यक्ति उच्च रक्तचाप तथा तीव्र ज्वर-जैसे रोगों से ग्रस्त रहता है। उसकी क्षुधा भी तीव्र होती है और उसके प्रत्येक कार्य-व्यवहार में अत्यधिक उत्साह तथा आतुरता मिलती है। अधिक खाने-पीने से वह उदर-विकारों का शिकार भी बना रहता है।

जीवन रेखा का अत्यधिक लाल होना तथा उस पर नक्षत्रचिह्न का अथवा गुणनचिह्न का अथवा बिन्दु का अथवा आड़ी रेखाओं का दीखना चिह्न द्वारा संकेतित आयु में व्यक्ति के किसी प्रचण्ड-गम्भीर दौरे का शिकार होना सूचित करता है। इसे जीवन के लिए अत्यन्त कष्टप्रद एवं संकटपूर्ण ही समझना चाहिए। जीवन रेखा का पीलापन व्यक्ति के पित्त-रोग से पीड़ित होने का सूचक है। पित्त दोष से सम्बन्धित रोगों से व्यक्ति का स्वास्थ्य बुरी तरह से प्रभावित होता है। ऐसे व्यक्तियों के हाथों में स्थित शनि एवं बुध पर्वतों तथा इन पर्वतों से जुड़े विषयों का अत्यन्त सावधानी से अध्ययन-विश्लेषण करना चाहिए। पित्त-दोष से आया पीलापन जहां स्वास्थ्य-दोष में वृद्धि करने वाला होता है, वहां लहरदार अथवा सीढ़ीनुमा बुध रेखा व्यक्ति के गम्भीर रूप से पित्त-रोग तथा अजीर्ण से ग्रस्त होने का पक्का प्रमाण प्रस्तुत करती है। बिन्दु रेखा में बिन्दु, गुणनचिह्न, कटाव, द्वीपचिह्न अथवा आड़ी रेखाओं के मिलने से तो व्यक्ति के पित्त-रोग अथवा ज्वर के भीषण प्रकोप से यकृत के बुरी तरह से प्रभावित होने का संकेत मिलता है। वस्तुतः जीवन रेखा का पीलापन व्यक्ति के समग्र जीवन को व उसके कार्य-व्यवहार को इस प्रकार प्रभावित करता है कि वह सदैव तनावग्रस्त रहता है, उसे अधीरता और विकलता घेरे रहती है। यहां तक कि वह अचेतनता एवं संज्ञाहीनता का शिकार भी हो जाता है। पीली जीवन रेखा के साथ व्यक्ति के पर्वत का निकृष्ट कोटि का होना तो व्यक्ति को चरित्रभ्रष्ट और आपराधिक वृत्ति का बनाने वाला होता है।

जीवन रेखा के पीलेपन के साथ निकृष्ट कोटि के शनि अथवा बुधप्रधान होने पर व्यक्ति न केवल धूर्त, ठग, धोखेबाज़ और मक्कार होता है, अपितु निर्दय, निर्मम, क्रूर एवं हत्यारा भी होता है। रेखा का रंग नीला होना रक्तसञ्चार की पर्याप्त आपूर्ति न होने का और उससे हृदय की दुर्बलता का पता चलता है। जीवन रेखा के नीलेपन के साथ-साथ हृदय रेखा का निकृष्ट नीलापन लिये रहना और नाखूनों का भी नीला

होना हृदय रोग के बढ़े होने के संकेत हैं। जीवन रेखा का नीलापन और उस पर नक्षत्रचिह्न का होना हृदय रोग से अचानक मृत्यु होने का सूचक है। रेखा के नीले होने के साथ-साथ गुणनचिह्न अथवा बिन्दु अथवा आड़ी रेखाओं के होने को अशुभ लक्षण ही मानना चाहिए। नीली रेखा पर नक्षत्र के होने को तो निकृष्टतम समझना चाहिए। यहां तक कि नक्षत्र का रेखा पर न होकर उसके आस-पास होना भी शुभ नहीं; क्योंकि वे इस स्थिति में भी बुरा प्रभाव डालते हैं। यहां तक कि बारीक-पतली तथा गहरी-स्पष्ट रेखा भी नक्षत्र के प्रभाव से बच नहीं पाती।

अत्यधिक लाल रंग वाली पतली जीवन रेखा सर्वाधिक ख़तरनाक होती है; क्योंकि वह लाल रंग से प्रकट होने वाली जीवनी शक्ति के वहन में सर्वथा असमर्थ होती है। पीले रंग वाली पतली जीवन रेखा व्यक्ति को निकृष्ट और अधम प्रकृति का बना देती है। सफ़ेद रंग की शृंखलाकार अथवा चौड़ी-सतही रेखाओं वाले व्यक्ति क्षीण-दुर्बल होते हैं; क्योंकि उनमें गुलाबी रंग से प्राप्त होने वाली शक्ति का अभाव होता है।

पतली रेखाओं वाले व्यक्ति शक्तिहीन होने के कारण रोगी, अस्थिरचित्त, अधीर और निस्तेज होते हैं। यहां तक कि उन पर किसी कार्य को सम्पन्न कर सकने का विश्वास ही नहीं किया जा सकता।

चौड़ी-सतही अथवा शृंखलाकार रेखा को लाल रंग शक्तिशाली बना देता है। इस प्रकार की रेखा वाले व्यक्ति जीवनी शक्ति से सम्पन्न होने के कारण सफ़ेद रंग की रेखा वाले व्यक्तियों के समान दुखी, खिन्न एवं उदास नहीं होते। लाल रंग अधिक शक्तिप्रद तो है, परन्तु यह संयोग विरल होता है। इस संयोग को रेखाओं के लिए संकट नहीं समझना चाहिए।

चौड़ी अथवा शृंखलाकार रेखाओं के साथ पीला रंग मेल नहीं खाता। इस संयोग से व्यक्ति निकम्मा, अधीर और आतुर ही नहीं, नीच प्रकृति का भी बन जाता है। वस्तुत: पीलापन रुग्णता, दुर्बलता और क्षुद्रता का प्रतीक है। अत: व्यक्ति का इन दोषों से आक्रान्त होना निश्चित ही है।

जीवन रेखा का अध्ययन एक रोचक विषय है। यह तो समुद्र में अधिकाधिक गहरे उतरने पर अधिकाधिक अमूल्य रत्नों की प्राप्ति-जैसा है। इसका जितना अधिक चिन्तन-मनन किया जाये, उतना अधिक रहस्यों का सुलझना सम्भव होता है। जीवन रेखा में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों तथा अन्यान्य रेखाओं एवं पर्वतों के साथ उसके नानाविध संयोगों के सामान्य सिद्धान्तों से भली-भांति परिचित होने पर ही इस रेखा को सही अर्थों में समझा जा सकता है। यह निश्चित है कि धैर्य तथा परिश्रम से इस रेखा के सिद्धान्तों में पारंगत होना तथा इसके आधार पर भविष्यकथन करना सम्भव है। अत: जिज्ञासु को यहां निराश नहीं होना पड़ता। *

8

प्रभावी रेखाएं

शुक्र प्रर्वत के और जीवन रेखा के भीतर मिलने वाली अनेक रेखाओं में से कुछ जीवन रेखा के साथ-साथ चलती हैं, तो कुछ शुक्र पर्वत को लांघ जाती हैं (रेखाचित्र-277)। व्यक्ति के जीवन को बाहर से प्रभावित करने वाली इन रेखाओं का नाम ही 'प्रभावी रेखाएं' हैं। इन्हें 'वातावरण' का पर्याय अथवा समानार्थवाची समझना चाहिए। इस अध्याय में केवल अध्ययन, अनुभव और अनुसन्धान की कसौटी पर खरे उतरे संकेतों की ही चर्चा की जायेगी। परम्परागत अथवा कल्पना पर आद्धृत संकेतों को छोड़ दिया गया है।
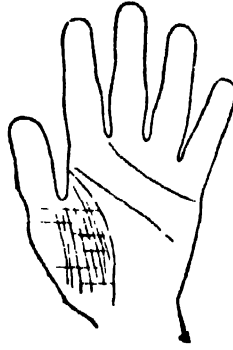
रेखाचित्र-277

हिन्दुओं में प्रभावी रेखाओं के उपयोग की एक सुदीर्घ परम्परा है, जिससे इन रेखाओं में उनकी आस्था झलकती है। जीवन रेखा के भीतर चलने वाली और व्यक्ति को अच्छे-बुरे कार्यों में प्रेरित करने वाली होने से ये रेखाएं प्रभावी रेखाएं कहलाती हैं और ये अपने परिवारजनों अथवा निकटतम इष्ट-मित्रों के प्रेरणा-प्रभाव को वहन करती हैं।

व्यक्ति रक्त-सम्बन्ध रखने वाले परिवारजनों के अतिरिक्त इष्ट-मित्रों और दूर-समीप के बन्धु-बान्धवों तथा अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों के जीवन से जाने-अनजाने कुछ-न-कुछ सीखता और प्रेरणा प्राप्त करता ही रहता है। इन प्रेरणा-

बिन्दुओं तथा प्रेरक-स्रोतों के व्यक्ति के जीवन पर प्रबल प्रभाव डालने वाला होने के कारण इन्हें 'प्रभावी' नाम देना उचित ही है।

प्रभावी रेखाओं की संख्या विभिन्न हाथों में विभिन्नता लिये रहती है। कुछ हाथों में यह संख्या कम, तो कुछ में अधिक होती है। संख्या के अनुपात में ही इनका प्रभाव होता है। प्रभावी रेखाओं की संख्या जितनी कम होगी, व्यक्ति उतना ही अधिक कम बोलने वाला और आत्मनिर्भर रहने वाला होगा। ऐसे व्यक्ति पर न तो रक्त-सम्बन्धियों का कोई प्रभाव पड़ता है और न ही उसके अधिक संख्या में घनिष्ठ मित्र होते हैं। इन रेखाओं से व्यक्ति के मन-मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी मिलती है।

प्रभावी रेखाएं भी दो—खड़ी और आड़ी—रूपों में मिलती हैं। इन्हीं रेखाओं द्वारा शुक्र पर्वत पर बनने-उभरने वाली आकृति 'जाल' कहलाती है। इस प्रकार जाल का चिह्न शुक्र सम्बन्धी गुणों—विशेषत: यौन-भोग की तृष्णा की वृद्धि—का सूचक होता है। शुक्र पर्वत पर प्रभावी रेखाओं का अधिक संख्या में प्रकट होना व्यक्ति में यौन-भोग में प्रबल वासना को प्रकट करता है। इन चिह्नों का यह संकेत पूर्णत: सिद्ध हो चुका है।

जाल की प्रत्येक रेखा व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले तत्त्व की सूचना देती है। रेखाओं की अधिकता से व्यक्ति की उत्तेजना स्पष्ट होती है। चन्द्र पर्वत पर इन रेखाओं का अभाव विद्युत्-धारा के प्रवाह के अभाव का सूचक होता है। ऐसा व्यक्ति शान्त प्रवृत्ति का होता है। वह अपनी ऊर्जा को यौन-भोग में नष्ट नहीं करता, अपितु उसका उपयोग सौन्दर्य, प्रेम, कला, साहित्य तथा अपने को सजाने-संवारने में करता है।

मंगल रेखा के जीवन रेखा के भीतर भी और उसके समानान्तर भी चलने के कारण ही इसे जीवन रेखा की सहायक रेखा कहा जाता है (रेखाचित्र-278)। यह रेखा वास्तव में प्रभावी होती है, किन्तु केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को ही प्रभावित करती है। यह रेखा व्यक्ति को स्वस्थ-सुदृढ़ बनाये रखने वाली होती है। यह रेखा दूसरे व्यक्तियों के प्रभाव से कोई सरोकार नहीं रखती। जहां जीवन रेखा के साथ चलने वाली अन्यान्य रेखाएं कम प्रभावी होती हैं, वहां मंगल रेखा के अपेक्षाकृत अपवाद-रूप होने के कारण उसे एक दुर्लभ चिह्न माना जाता है।

व्यक्ति के जीवन पर जीवन रेखा की समीपवर्ती रेखा का प्रभाव ही सापेक्ष रूप से सर्वप्रथम पड़ता है। इस प्रकार का प्रभाव माता-पिता, भाई-बहिन आदि रक्त-सम्बन्धी का ही हो सकता है। जीवन रेखा के प्रारम्भ के समीप से निकल कर उसके साथ चलने वाली रेखा को माता के प्रभाव का प्रतीक समझना चाहिए (रेखाचित्र-279)। कारण स्पष्ट है; क्योंकि वस्तुत: व्यक्ति के जीवन पर सर्वप्रथम

और सर्वाधिक प्रभाव माता का ही पड़ता है। इसकी परवर्ती रेखा पिता के प्रभाव को सूचित करती है। यह रेखा अन्य रेखाओं की अपेक्षा अधिक गहरी होती है। जीवन
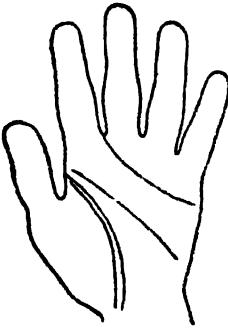
रेखाचित्र-278
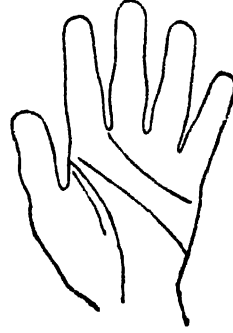
रेखाचित्र-279

रेखा से मिलती तीसरी-चौथी रेखाएं अन्यान्य सम्बन्धियों—दादा-दादी, नाना-नानी तथा चाचा-चाची के प्रभाव की सूचक होती हैं।

इन सभी रेखाओं की लम्बाई से सम्बन्धियों—माता-पिता, भाई-बहिन आदि के—व्यक्ति पर प्रभाव की सापेक्ष अधिकता का पता चलता है। अधिकांश व्यक्तियों के बीस और तीस वर्ष की आयु—विवाह की आयु—के बीच में एक नयी रेखा उभरती दीखती है (रेखाचित्र-280)। विवाह के शुभ और सुखी होने पर यह रेखा अपने उदयकाल से ही व्यक्ति को प्रभावित करने लगती है और इसका स्वरूप स्पष्ट-गहरा होता है। इसके विपरीत विवाह के अशुभ-अवाञ्छनीय होने पर यह रेखा अस्पष्ट, पतली और धुंधली होती है।
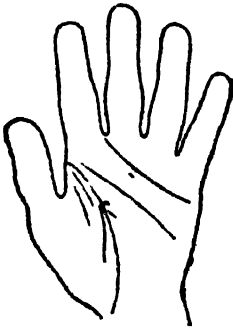
रेखाचित्र-280
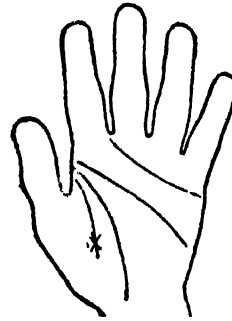
रेखाचित्र-281

बहुत-सारे हाथों में इस प्रभावी रेखा को एक महीन रेखा द्वारा जीवन रेखा से जोड़ते हुए देखा जाता है, जो व्यक्ति के जीवन पर प्रभाव की समाप्ति का सूचक होता

है। इस स्थिति में व्यक्ति के जीवन के गहरे प्रभाव शुक्र पर्वत पर एकत्रित मिलते हैं। प्रभावी रेखाओं से व्यक्ति के मन को गहरे तौर पर प्रभावित करने वाली घटनाओं की पूरी-पूरी जानकारी मिलती है।

प्रभावी रेखा के अन्त में नक्षत्रचिह्न का उदय प्रभाव की समाप्ति की सूचना देता है (रेखाचित्र-281)। व्यक्ति के मन को प्रभावित करने वाले व्यक्ति का अनुमान जीवन रेखा के मध्य की दूरी से लगाया जा सकता है। इस दूसरी से यह पता चल जाता है कि प्रभाव डालने वाला व्यक्ति दूर का सम्बन्धी है अथवा निकट का।

प्रभावी रेखा के अन्त में ऐसे चिह्न से किसी सम्बन्धी की मृत्यु की और उससे व्यक्ति की मन:स्थिति में आये परिवर्तन की जानकारी मिलती है। शनि और सूर्य रेखाओं के आपसी सम्बन्ध की जांच-परख इस प्रकार के भविष्यकथन में सहायक होती है। सम्बन्धियों की मृत्यु से भी कुछ व्यक्तियों का स्वास्थ्य बुरी तरह से प्रभावित होता है। इस प्रकार सभी दिशाओं से प्राप्त होने वाले संकेत अपने आप में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हैं।
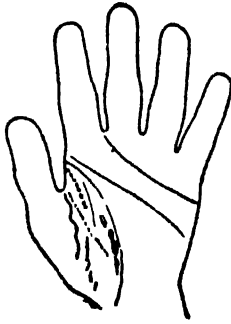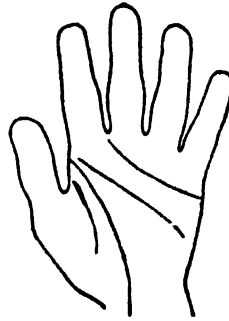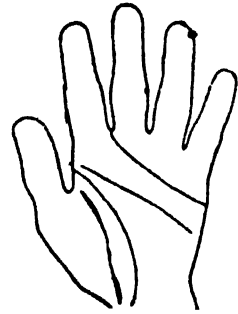
रेखाचित्र-282 *रेखाचित्र-283* *रेखाचित्र-284*

प्रभावी रेखाएं गहरी, प्रबल और अच्छी रूप-रंगत लिये रहने पर ही वास्तव में नामानुरूप प्रभाव डालने वाली होती हैं। इसके विपरीत पतली, सतही, शृंखलाकार ऊबड़-खाबड़ तथा विभाजित-विशृंखलित रेखाओं का प्रभाव सशक्त रूप नहीं ले पाता (रेखाचित्र-282)। क्रमश: लुप्त हो जाना, व्यक्ति पर किसी के प्रभाव का प्रारम्भ में प्रबल होने का और फिर कालान्तर में धीरे-धीरे क्षीण होते जाने और अन्त में पूर्णत: समाप्त हो जाने का सूचक होता है (रेखाचित्र-283)। इसके विपरीत इस रेखा का पुनर्जिवित होकर धीरे-धीरे अधिक शक्तिशाली बनना, व्यक्ति पर किसी के प्रभाव का फिर से बढ़ जाने का तथा इससे उसकी शक्ति में वृद्धि होने का सूचक होता है (रेखाचित्र-284)।

इसी प्रकार प्रभावी रेखा का क्षीण-दुबला होना और जीवन रेखा से दूर हो

जाना व्यक्ति पर दूसरे के पड़ रहे प्रभाव के न्यून होते-होते अन्त में समाप्त हो जाने का सूचक है (रेखाचित्र-285)। यह स्थिति व्यक्ति की अपने किसी निकट सम्बन्धी से दूरी बढ़ने का संकेत है। जीवन रेखा से प्रत्येक घटना के घटित होने के समय को तथा व्यक्ति की आयु को जाना जा सकता है।
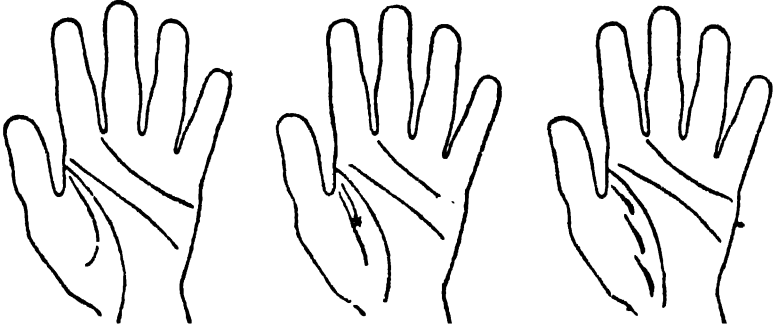
रेखाचित्र-285 *रेखाचित्र-286* *रेखाचित्र-287*

प्रारम्भिक जीवन में प्रभावी रेखा का उदय होना और शीघ्रता से नक्षत्रचिह्न में जाकर लुप्त होना, उस आयु में माता की अथवा पिता की मृत्यु होने का संकेत है, परन्तु जीवन रेखा से कुछ दूर इस रेखा के साथ एक और रेखा का चलना, नक्षत्रचिह्न के पश्चात् उसका अधिक गहरा और सुदृढ़ बन जाना दूर के किसी सम्बन्धी—चाचा, मामा, फूफा तथा मौसा आदि—की मृत्यु की सूचना देता है (रेखाचित्र-286)। रेखा का आरम्भ में पतला और बाद में गहरा हो जाना तथा अन्त में टूट जाना तथा किसी अन्य रेखा द्वारा इस रेखा का स्थान ले लेना भी यही—निकट-दूर के सम्बन्धी की मृत्यु—सूचित करता है (रेखाचित्र-287)। इस स्थिति से व्यक्ति के जीवन को विशेष प्रभावित करने वाले सम्बन्धियों के आते-जाते रहने (मृत्यु का ग्रास बनने) का पता चलता है।

जीवन रेखा के दोषपूर्ण, पतला, शृंखलाकार, चौड़ा, सतही, द्वीप के आकार वाला, विभाजित अथवा विशृंखलित होने, परन्तु प्रभावी रेखा के सशक्त होने से सूचित होता है कि व्यक्ति का स्वास्थ्य तो शिथिल रहता है, परन्तु उसे किसी-न-किसी सम्बन्धी का आश्रय सुलभ रहता है। यह सम्बन्धी उसकी भली प्रकार से देखभाल करता है (रेखाचित्र-288)। यह प्रभाव बुध रेखा के प्रभाव-जैसा, अर्थात् निरन्तर उपचार से व्यक्ति के जीवित होने का पता चलता है।

निम्नोक्त लक्षणों से व्यक्ति की मानसिक दशा की दुर्बलता की, किसी के सशक्त प्रभाव से उसे बल मिलने की, उसके फलस्वरूप मस्तिष्क के स्वस्थ होने की और फिर उस प्रभाव की आवश्यकता न रहने की सूचना मिलती है—

(i) आरम्भ में मस्तिष्क रेखा का ठीक न होना, (ii) उसका आगे चलकर धीरे-धीरे शक्तिशाली होना, (iii) एक प्रभावी रेखा का आरम्भ में शक्तिशाली होना तथा (iv) आगे चलकर जीवन रेखा से या तो दूर पड़ जाना या फिर क्षीण होते-होते समाप्त हो जाना (रेखाचित्र-289)।
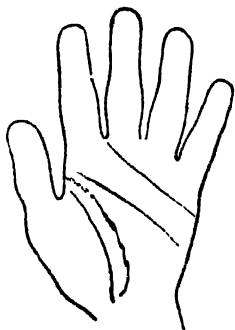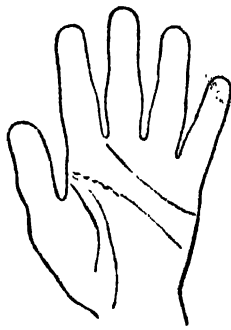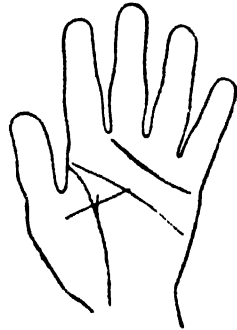
रेखाचित्र-288 *रेखाचित्र-289* *रेखाचित्र-290*

जीवन रेखा से ऊर्ध्वगामी शाखाओं को वैसे तो व्यक्ति प्रगति की ओर उन्मुख होना सूचित करता है, परन्तु कभी-कभी चिन्ता रेखाएं इन शाखाओं को काट देती हैं, जिससे व्यक्ति की प्रगति का बाधित होना संकेतित होता है (रेखाचित्र-290)।
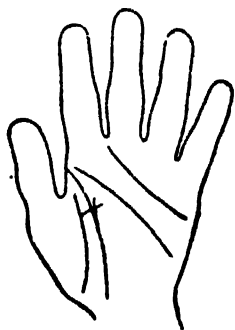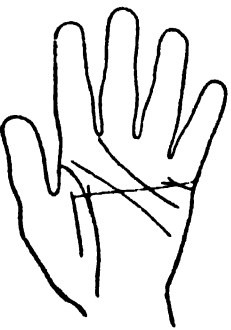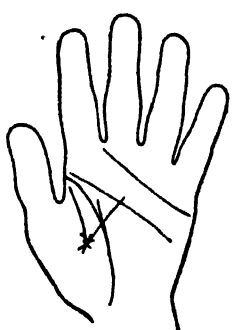
रेखाचित्र-291 *रेखाचित्र-292* *रेखाचित्र-293*

प्राय: चिन्ता रेखाएं प्रभावी रेखा से निकलती है और प्रभाव के बाधित होने का संकेत देती हैं (रेखाचित्र-291)। जीवन रेखा से निकली और ऊपर की ओर जाती रेखा का चिन्ता रेखाओं से कटना किसी क़ानूनी उलझन के सामने आने के तथ्य की पुष्टि अनेक उदाहरणों से हो गयी है। प्राचीन अनुभवी हस्तरेखाशास्त्री तो इस स्थिति को विवाद-विच्छेदसूचक मानते आये हैं, परन्तु हमारे विचार में इस चिह्न के साथ अन्य पोषक तत्त्वों—

(i) जीवन रेखा से निकली रेखा को काटने वाली रेखा का हाथ के पार जाना तथा (ii) उसके द्वारा द्विशाखी रेखा से विवाह-विच्छेद की सम्भावना को बल मिलता है (रेखाचित्र-292)। किसी प्रभावी रेखा से निकलना व्यक्ति की प्रगति में बाधा का ही सूचक होता है।

किसी प्रभावी रेखा के अन्त में चिन्ता रेखा का नक्षत्रचिह्न से प्रारम्भ होना और जीवन रेखा से निकलती किसी रेखा को काटने से किसी सम्बन्धी की मृत्यु की सूचना मिलती है (रेखाचित्र-293)। निम्नोक्त लक्षणों—(i) प्रभावी रेखा का गहरापन, (ii) इसका आगे चलकर पतला हो जाना तथा (iii) आगे चलकर यही फेर-बदल—गहरा-पतला-गहरा और फिर पतला, फिर गहरा—होते रहना—से प्रबल प्रभाव का क्षीण होना तथा व्यक्ति द्वारा अपनी शक्ति का अनियन्त्रित प्रयोग करना और फिर शक्ति के क्षीण होने पर प्रभाव की आवश्यकता अनुभव करना सूचित होता है (रेखाचित्र-294)।
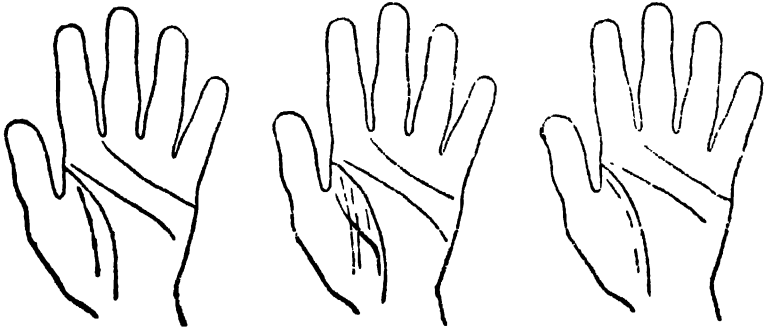
रेखाचित्र-294 *रेखाचित्र-295* *रेखाचित्र-296*

निम्नोक्त लक्षण—प्रभावी रेखा का जीवन रेखा से दूरी बनाये रखते हुए निकल जाना, प्रभावी रेखा का धीरे-धीरे जीवन रेखा की ओर आना तथा जीवन रेखा के पास पहुंचते ही शक्ति ग्रहण कर लेना—व्यक्ति पर किसी दूरस्थ सम्बन्धी का प्रभाव होना और उस प्रभाव के फलस्वरूप व्यक्ति की शक्ति का बढ़ने की सूचना देते हैं (रेखाचित्र-295)। ऐसी रेखा के जीवन रेखा के आस-पास की अन्य रेखाओं को काटकर आगे बढ़ने से प्रभाव की अत्यधिकता सूचित होती है।

प्रभावी रेखा का विखण्डन और कालान्तर में पुनः प्रारम्भ से यह सूचित होता है कि व्यक्ति ने एक समय अपने किसी सम्बन्धी के नाकारा प्रभाव को अब ग्रहण अथवा स्वीकार कर लिया है (रेखाचित्र-296)।

बीस से तीस वर्ष की आयु में निम्नोक्त लक्षणों से पत्नी के पति के अथवा पति के पत्नी के प्रभाव में आना संकेतित होता है—(i) प्रभावी रेखा का टूटना, (ii) एक

अन्य रेखा का उभरना तथा (iii) इस रेखा का तीन विच्छेदों का लांघकर आगे बढ़ते जाना। यह व्यक्ति के माता-पिता के प्रभाव में आने का संकेत भी हो सकता है (रेखाचित्र-297)। प्राय: इस प्रकार संकेतों के द्वारा विवाह सम्बन्ध भी ठीक हो जाते हैं।
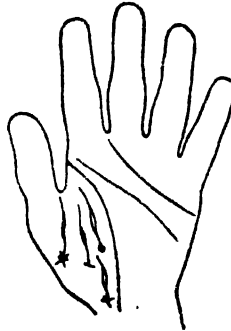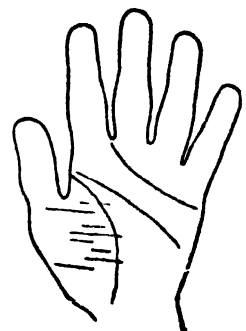
रेखाचित्र-297 *रेखाचित्र-298* *रेखाचित्र-299*

जीवन रेखा की सहगामिनी प्रभावी रेखाओं पर द्वीप का मिलना प्रभाव की दुर्बलता का संकेत है। प्रभावी रेखा के अन्त में नक्षत्रचिह्न, गुणनचिह्न, बिन्दु•अथवा आड़ी रेखा का पाया जाना प्रभाव डालने वाले व्यक्ति की मृत्यु का सूचक होता है (रेखाचित्र-298)। जीवन रेखा से मृत्यु के समय (व्यक्ति की आयु) को जाना जा सकता है।

शुक्र पर्वत पर बनो सपाट रेखाओं से व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले व्यक्तियों की तथा बाधा बनी अथवा घट चुकी घटनाओं की जानकारी मिलती है (रेखाचित्र-299)। साथ चलने वाली रेखाएं बाधक नहीं होतीं। वे अशक्त एवं दोषपूर्ण भले हों, परन्तु फिर भी वे व्यक्ति के विकास में न तो विरोध उत्पन्न करती हैं और न ही बाधक बनती हैं। आड़ी-तिरछी रेखाओं से लोगों के प्रभाव के कारण पनपने वाली बाधाओं का पता चलता है। ये रेखाएं चिन्ता और कठिनाई का कारण बनती हैं। इसीलिए जीवन रेखा को काटने वाली आड़ी-तिरछी रेखाएं 'चिन्ता रेखाएं' कहलाती हैं।

चिन्ता रेखाओं की गहराई और लाल रंगत उनकी तीव्रता को बढ़ा देती है। वे गम्भीर बाधाओं को उपस्थित करती हैं। उनका पतलापन और अविकसित होना कष्टदायक होता है। वस्तुत: जीवन रेखा को काटने वाली चिन्ता रेखाओं के न्यूनाधिक चिन्ताजनक बनने को उनकी गहराई और उनके विस्तार के परिप्रेक्ष्य में ही देखना चाहिए। उनका गहरापन किसी गम्भीर कष्ट का सूचक होता है। शुक्र पर्वत को और जीवन रेखा को सपाट रेखाओं द्वारा ऊपर से नीचे की ओर काटने का अर्थ है—

व्यक्ति का निरन्तर चिन्ताग्रस्त रहना। इसी प्रकार छोटी रेखाएं स्थायी कष्टों को सूचित करती हैं।
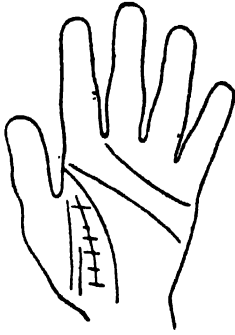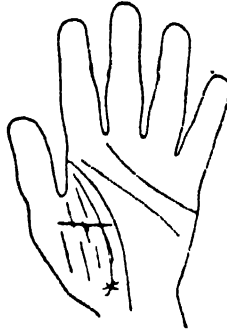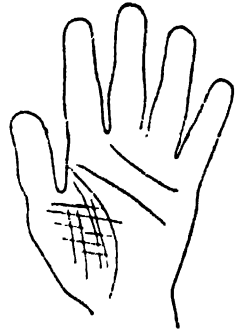
रेखाचित्र-300 *रेखाचित्र-301* *रेखाचित्र-302*

चिन्ता रेखाओं द्वारा किसी विशेष प्रभावी रेखा का बार-बार कटना व्यक्ति के निरन्तर चिन्ताओं-कठिनाइयों से ग्रस्त रहने का संकेत होता है (रेखाचित्र-300)।

प्रथम तो प्रभावी रेखा का प्रबल आड़ी रेखा द्वारा कटने और फिर आगे चलकर द्वीपाकार होने से प्रभावित करने वाले व्यक्ति के मरने अथवा दुर्घटना का शिकार होने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-301)। काटने वाली रेखा का गहरा होना और काटी गयी रेखा का पुन: उभरना माता अथवा पिता की मृत्यु का संकेत है। कटाव का संकेत प्राय: पिता होता है—यह उदाहरणों से सिद्ध हो चुका है। यह भी प्रमाणित हो चुका है कि व्यक्ति के पिता की मृत्यु से अथवा उसके गम्भीर रूप से आहत होने से उसकी पत्नी को ऐसा गहरा आघात पहुंचता है कि वह उससे उभर ही नहीं पाती।

असंख्य छोटी-छोटी रेखाओं द्वारा जीवन रेखा के साथ-साथ चलती अनेक प्रभावी रेखाओं के काटे जाने से व्यक्ति का पारिवारिक जीवन में निरन्तर बाधाओं से घिरे रहने के कारण दुखी होना सूचित होता है (रेखाचित्र-302)।

किसी आड़ी रेखा में द्वीपचिह्न किसी अप्रिय घटना से जुड़ी बाधा होती है, जिसके लिए व्यक्ति का कोई दोष उत्तरदायी नहीं होता, अर्थात् उसके किसी दोष के कारण तो नहीं, परन्तु फिर भी बाधा आती ही है (रेखाचित्र-303)। इस रेखा द्वारा जीवन रेखा के भीतर की प्रभावी रेखाओं को काटना व्यक्ति की शक्ति का अपने सम्बन्धियों के लिए ख़र्च होने का सूचक है। जीवन रेखा का कटना व्यक्ति के जीवन को प्रभावित तो करता है, परन्तु इसे गठिया-जैसे रोग का संकेत समझने की भूल नहीं करनी चाहिए।
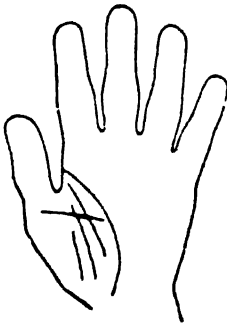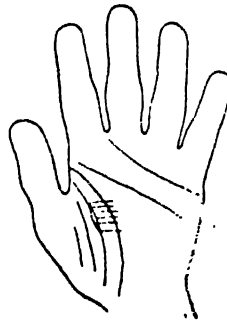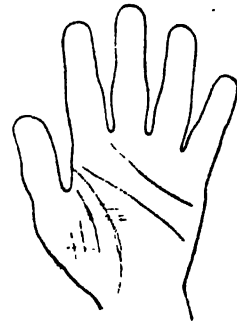
रेखाचित्र-303 *रेखाचित्र-304* *रेखाचित्र-305*

प्रभावी रेखा पर द्वीपचिह्न और उससे निकलती अनेक छोटी रेखाओं द्वारा जीवन रेखा को काटना व्यक्ति के अपने किसी सम्बन्धी की दीन-हीन दशा से चिन्तित रहने का सूचक है (रेखाचित्र-304)। इस स्थल के पश्चात् जीवन रेखा पर द्वीपचिह्न के दीखने से चिन्ताओं के कारण व्यक्ति के स्वास्थ्य का प्रभावित होना सूचित होता है। व्यक्ति को अपने किसी असहाय एवं असमर्थ सम्बन्धी की देखभाल एवं सेवा-शुश्रूषा में अपने स्वास्थ्य की बलि चढ़ानी पड़ती है। व्यक्ति का यह दायित्व-निर्वाह उसके स्वास्थ्य की हानि का कारण बन जाता है (रेखाचित्र-305)।
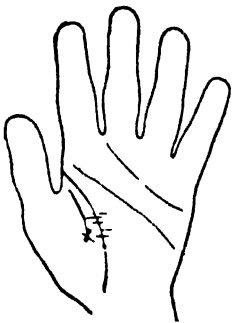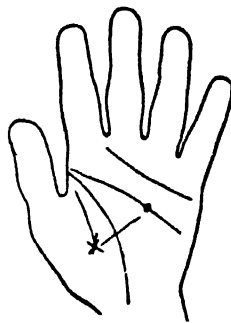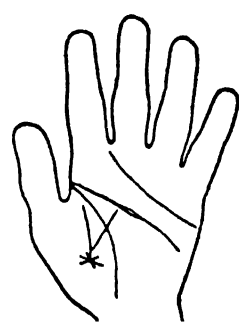
रेखाचित्र-306 *रेखाचित्र-307* *रेखाचित्र-308*

निम्न लक्षणों—(i) चिन्ता रेखाओं द्वारा काटी गयी प्रभावी रेखा का प्रारम्भ में गहरी होना और फिर पतली होते हुए नक्षत्रचिह्न में खो जाना (ii) चिन्ता रेखाओं को जीवन रेखा को काटने मे न बचा पाना और (iii) फिर चिन्ता रेखाओं का बारीक होते-होते बिन्दु में लुप्त हो जाना—से व्यक्ति के किसी रोगग्रस्त सम्बन्धी की मृत्यु का संकेत मिलता है और इस शोक से व्यक्ति किसी गम्भीर रोग का शिकार हो जाता है (रेखाचित्र-306)।

एक बिन्दु पर जीवन रेखा की समाप्ति व्यक्ति के निरन्तर अस्वस्थ रहने का तथा जीवन रेखा का बिन्दु से आगे चमकना उसके स्वास्थ्य-लाभ का सूचक होता है।

निम्न लक्षणों—किसी प्रभावी रेखा की एक नक्षत्रचिह्न में समाप्ति तथा एक चिन्ता रेखा द्वारा इस प्रभावी रेखा को मस्तक रेखा पर विद्यमान बिन्दु से जोड़ने—से व्यक्ति के अपने सम्बन्धी की मृत्यु से मस्तिष्क-ज्वर से आक्रान्त होना सूचित होता है (रेखाचित्र-307)।

प्रभावी रेखा की नक्षत्र में समाप्ति और रेखा द्वारा उसे मस्तक रेखा पर स्थित द्वीप से जोड़ने का अर्थ है—व्यक्ति के सम्बन्धी की लम्बी बीमारी और उसके पश्चात् मृत्यु से व्यक्ति की मनोदशा का क्षीण हो जाना (रेखाचित्र-308)।

प्रभावी रेखा और जीवन रेखा की समीपता का अनुपात व्यक्ति की सम्बन्धी से घनिष्ठता-सामान्यता का सूचक होता है। चिन्ता रेखा का प्रभावी रेखाओं से निकलकर जीवन रेखा तक जाने, किन्तु उसे न काटने से सूचना मिलती है कि व्यक्ति के सम्बन्धी उसके अभ्युदय में सहायक सिद्ध होंगे। इसी के साथ चिन्ता रेखा का प्रभावी रेखा से निकलकर जीवन रेखा की ओर झुकना सम्बन्धियों द्वारा व्यक्ति की उन्नति में बाधा खड़ी करने का संकेत होता है (रेखाचित्र-309)।
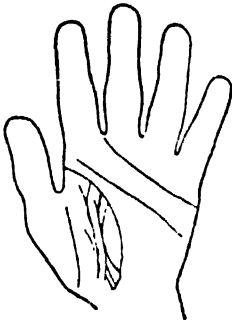
रेखाचित्र-309
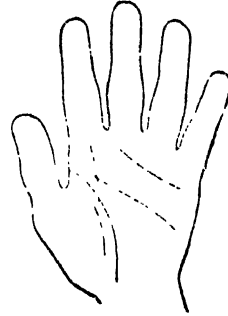
रेखाचित्र-310

प्रभावी रेखा के पति अथवा पत्नी से सम्बन्ध की सूचक होने पर उससे निकलती एक रेखा का बृहस्पति की ओर बढ़ना सम्बन्धी के महत्त्वाकांक्षी होने का संकेत है (रेखाचित्र-310)। इस अवधि में शनि रेखा का सामान्य से अधिक अच्छा होना संकेतित करता है कि महत्त्वाकांक्षी सम्बन्धी न केवल व्यक्ति को उन्नति करने के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित कर रहा है, अपितु इसके लिए पूर्ण सहयोग भी दे रहा है।

विवाह के समय प्रकट एक रेखा का प्रभावी रेखा के आधार बनने से पति

अथवा पत्नी द्वारा अपनी मां की पूरी तरह से उपेक्षा कर देने—पूर्णतः सम्बन्ध तोड़ देने—का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-311)।
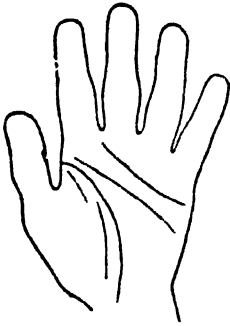
रेखाचित्र-311
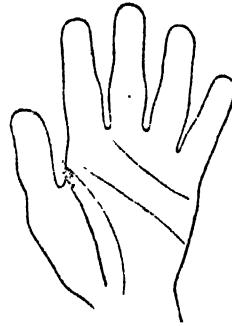
रेखाचित्र-312

विवाह का प्रभाव दिखाने वाली रेखा का पतला-बारीक रूप तथा मातृ-प्रभाव दिखाने वाली रेखा का गहरा-सशक्त रूप पत्नी के अपनी अथवा अपने पति की मां के अधीन होने को सूचित करता है (रेखाचित्र-312)।

प्रभावी रेखाओं से जुड़े सभी मामलों पर उपर्युक्त सामान्य सिद्धान्तों के अतिरिक्त अन्य रेखाओं पर लागू होने वाले सिद्धान्तों को भी लागू करना चाहिए; क्योंकि अन्य कुछ रेखाएं व्यक्ति पर अन्यान्य सम्बन्धियों के प्रभाव की सूचक होती हैं। इस सामान्य तथ्य के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न लोगों के साथ व्यक्ति के सम्बन्ध (सामान्य अथवा घनिष्ठ) की जानकारी के आधार पर उस पर सम्बन्धियों के प्रभाव के सम्बन्ध में भविष्यकथन सम्भव होता है। प्रभावी रेखाओं के दोषों को चिन्ता रेखाओं के तथा अन्यान्य रेखाओं पर स्थित दोषों के साथ मिलान करने पर दोष के कारण को जाना जा सकता है।

प्रभावी रेखाओं के दोषों अथवा परिवर्तनों के कारण जीवन रेखा में आने वाले परिवर्तन से व्यक्ति के जीवन पर प्रभावी व्यक्तियों का अनिष्ट एवं अवाञ्छनीय प्रभाव पड़ना सूचित होता है। जीवन रेखा के स्वरूप से प्रभाव की अनिष्टता के रूप का पता चलता है।

पति पर पत्नी के अथवा पत्नी पर पति के प्रभाव को दर्शाने वाली रेखा को देखने के इच्छुक हस्तरेखाशास्त्री को यह नहीं भूलना चाहिए कि ये रेखाएं स्त्रियों के हाथ में उनकी 18-25 वर्ष की आयु में और पुरुषों के हाथ में उनकी 25-30 वर्ष की आयु में प्रकट होती हैं। इसी आयु में प्रायः विवाह सम्बन्ध स्थिर होते हैं। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रभावी रेखाओं के विवेचन-विश्लेषण में उतावलापन

कभी नहीं दिखाना चाहिए। यहां फूंक-फूंककर पग उठाना ही सही रहता है। वस्तुत: सभी संयोगों के सही विश्लेषण के बिना निष्कर्ष पर पहुंचना सम्भव ही नहीं होता। रेखाओं के अध्ययन के समय सम्भावित त्रुटि की उपेक्षा नहीं करना चाहिए। इस प्रकार की अनेक सम्भावनाओं से जूझना लाभकारी रहता है। सामान्य सिद्धान्तों के निर्भ्रान्त सिद्ध होने पर ही उन्हें प्रभावी रेखाओं पर लागू करना उचित रहता है और फिर भविष्यकथन भी सर्वथा सत्य और तर्कसंगत सिद्ध होता है। *

9

प्रणय रेखाएं

प्रणय रेखाओं का एक दूसरा नाम विवाह रेखाएं हैं। ये बुध पर्वत पर दीखती हैं तथा हाथ के एक ओर से हथेली के भीतर की ओर साथ-साथ चलती है। (रेखाचित्र-313)। कुछ हाथों में तो ऐसी अनेक रेखाएं होती हैं और कुछ में एक भी नहीं होती। प्राचीनकाल से इन रेखाओं को स्त्री-पुरुष के बीच यौन सम्बन्धों की सूचक विवाह रेखाओं के रूप में मानने की परम्परा चली आ रही है। इन रेखाओं से प्राप्त होने वाले संकेतों को हाथ के अन्यान्य लक्षणों से मिलाकर निकाला गया निष्कर्ष सर्वथा सही निकलता है, परन्तु इन रेखाओं को केवल विवाह का संकेत मानने पर निष्कर्षों के भ्रामक एवं ग़लत होने से नहीं बचा जा सकता। कुछ लोगों के विचार में इनका सम्बन्ध केवल दैनिक जीवन के सामान्य व्यवहार से ही है।
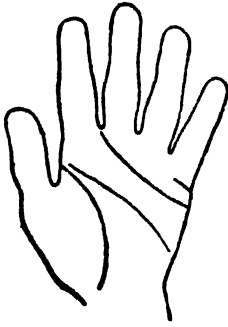
रेखाचित्र-313

हम ऊपर बता चुके हैं कि कुछ हाथों में एक भी विवाह रेखा नहीं होती, तो कुछ हाथ इन रेखाओं से लदे रहते हैं। ऐसे लोगों के हाथों में विवाह सम्बन्धी गहरी रेखाएं होती हैं। प्रणय रेखाओं को विवाह से जोड़ना उचित नहीं; क्योंकि विवाह एक विधिमान्य सम्बन्ध है, परन्तु प्रणय के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता। विवाह-बन्धन में बिना बंधे स्त्री-पुरुष भी गहरा प्रणय सम्बन्ध रखने वाले हो सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों के हाथों में भी विवाह रेखा अवश्य रहती है। यही कारण है कि हम इन रेखाओं को विवाह रेखाएं नाम न देकर प्रणय रेखाएं नाम देना ही अधिक उपयुक्त समझते हैं।

प्रणय रेखाओं के सशक्त रूप ग्रहण करने से पूर्व व्यक्ति किसी से प्रणय करने लगता है। व्यक्ति के जीवन पर प्रेम[illegible] का प्रभाव जितना अधिक गहरा होता है, उसके हाथ में प्रणय रेखाएं उतनी ही अधिक संख्या में प्रकट होती हैं।

विवाह के सम्बन्ध में प्रत्येक व्यक्ति के चिन्तन में भिन्नता के कारण प्रणय

रेखाओं की जांच-परख में व्यक्ति के पर्वत की प्रबलता से पर्याप्त सहायता मिलती है। बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति प्रायः विवाह के लिए उत्सुक रहने वाला तथा शीघ्र विवाह का पक्षधर होता है। अतः ऐसे व्यक्ति के हाथ में प्रणय रेखा शीघ्र प्रकट होती है और इसे 'विवाह रेखा' मानना उचित ही होगा।

शनिप्रधान व्यक्ति विवाह में अरुचि ही नहीं दिखाता, अपितु इस विचार से भी घृणा ही करता है। शनि का प्रभाव जितना अधिक होता है, व्यक्ति के मन में विवाह के प्रति घृणा तथा उपेक्षा उतनी ही अधिक और तीव्र होती है। अच्छी कोटि का शनि होने पर भी व्यक्ति विवाह के प्रति किसी प्रकार की तत्परता नहीं दिखाता। ऐसा व्यक्ति अपने संगी-साथियों से भी प्रेम नहीं करता। उसे विवाह के लिए तैयार करने में किसी का प्रबल प्रभाव डालना आवश्यक होता है। शनिप्रधान व्यक्ति के हाथ में प्रणय रेखा प्रबल तो होती है, परन्तु यह व्यक्ति के मध्यम आयु का होने पर ही प्रकट होती है; क्योंकि इस आयु में ही उसका विवाह होना सम्भव होता है। चन्द्र पर्वत से जुड़े शनिप्रधान व्यक्ति में यौन-वासना तो रहती है, परन्तु वह अपनी यौन-तृप्ति के लिए किसी प्रकार के विवाह-बन्धन में बंधना पसन्द नहीं करता। इसके लिए वह अन्यान्य वैध-अवैध तरीक़ों से ही अपनी सन्तुष्टि में विश्वास करता है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति विवाह के इच्छुक होते हैं और युवावस्था में विवाह-बन्धन में बंधना पसन्द करते हैं, परन्तु उनके विवाह सम्बन्ध प्रायः असफल और अनुपयुक्त ही सिद्ध होते हैं। वस्तुतः सूर्यप्रधान व्यक्ति अपने समान प्रतिभाशाली और व्यवहार-कुशल जीवनसाथी की खोज में रहते हैं, जिसमें उन्हें कभी सफलता नहीं मिल पाती। इस प्रकार सूर्यप्रधान व्यक्तियों के हाथों की प्रणय रेखाओं को भी 'विवाह रेखाएं' मानना ही उपयुक्त है।

बुधप्रधान व्यक्ति विवाह के लिए उत्सुक भी रहते हैं और युवावस्था में विवाह कर भी लेते हैं। अतः इनके हाथ की प्रणय रेखाओं को विवाह रेखाएं कहना उचित ही है। इस प्रकार इन रेखाओं से विवाह सम्बन्ध ही सूचित होता है।

मंगलप्रधान व्यक्ति भी विवाह के लिए उत्सुक रहने वाले होते हैं। अतः उनके हाथों में विद्यमान प्रणय रेखाओं को भी विवाह रेखाओं का नाम देना अनुचित नहीं है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति विवाह के प्रति अनोखे विचार रखते हैं। एक ओर वे विवाह से घृणा करते हैं और दूसरी ओर आयु बीतने पर (बड़ी आयु हो जाने पर) विवाह कर लेते हैं। ऐसे व्यक्तियों की प्रणय रेखा के प्रबल होने पर ही उनका विवाह हो पाता है। वस्तुतः अपने सौन्दर्य और आकर्षण के कारण अपने प्रति लोगों का ध्यान खींचने वाले व्यक्ति कुंवारे रह ही नहीं पाते। उन्हें विवाह-सूत्र में बंधना ही पड़ता है। यही कारण है कि उनके हाथों में प्रणय रेखाएं प्रायः प्रबल और प्रगाढ़ ही मिलती

है। सत्य तो यह है कि चन्द्रप्रधान व्यक्तियों के हाथों में छोटी प्रणय रेखा भी उनके विवाह होने की सूचना देती है।

बुध पर्वत पर विद्यमान प्रणय रेखाओं की संख्या के आधार पर विवाहों की संख्या की भविष्यवाणी प्राय: न केवल असत्य सिद्ध होती है, अपितु हस्तरेखा-विज्ञान की सत्यता के आगे भी प्रश्नचिह्न लगाती है। अत: ऐसी भविष्यवाणी को अवैज्ञानिक और अप्रामाणिक ही माना गया है। सत्य तो यह है कि किसी भी विद्वान् को विवाह के सम्बन्ध में सही भविष्यवणी करने का दावा करना ही नहीं चाहिए; क्योंकि उनके पूर्वजों के विवाह-बन्धनों तथा विवाह-विच्छेदों (तलाक़ों)के सम्बन्ध में किये गये अनेक भविष्यकथन असत्य सिद्ध हुए हैं और इसके फलस्वरूप उन्हें उपहास और अपमान का पात्र बनना पड़ा है। हां, सभी उपलब्ध साधनों का गम्भीर अध्ययन करने के उपरान्त किया गया भविष्यकथन अवश्य सत्य सिद्ध होता है और वक्ता को लज्जित नहीं होना पड़ता। हाथ की जांच-परख किये बिना विवाह के सम्बन्ध में कुछ कहना कोरी डींग हांकना ही कहा जायेगा। इसमें कोई मतभेद नहीं कि व्यक्ति के जीवन को संवारने-बिगाड़ने में विवाह की भूमिका अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। अत: सामान्य जीवन पर विवाह के प्रभाव को आंकने के लिए उपलब्ध सभी साधनों का उपयोग अपेक्षित रहता है। प्रणय रेखाओं का शनि रेखा और सूर्य रेखा के सन्दर्भ में विवेचन उपयुक्त रहता है; क्योंकि ये दोनों रेखाएं प्रणय रेखाओं को अत्यन्त प्रबल रूप में प्रभावित करती हैं।

सर्वप्रथम तो प्रणय रेखाओं की उपस्थिति-अनुपस्थिति को देखना चाहिए। किसी एक भी रेखा के उपस्थित न होने का अर्थ है—व्यक्ति का अपने जीवन में किसी से भी प्रभावित न होना। ऐसा व्यक्ति न केवल शरीर से हृष्ट-पुष्ट होता है, अपितु स्वभाव से भी उग्र होता है। विपरीतलिंगी के प्रति उसका आकर्षण भी प्रबल होता है, किन्तु अपनी इच्छा की पूर्ति होते ही वह कामवासना के प्रति उदासीन हो जाता है। उसकी यह उदासीनता तब तक बनी ही रहती है, जब तक उद्दाम शक्ति उसे यौन-भोग के प्रति उन्मुख करने में समर्थ नहीं हो पाती। ऐसे व्यक्ति प्राय: अपने भावों को वाणी नहीं देते। हाथ में प्रणय रेखा का न होना तथा हृदय रेखा का दोषपूर्ण होना प्रणय का नहीं, अपितु हृदय रोग का ही संकेत देता है। प्रणय रेखा की बहुसंख्या व्यक्ति के साधारण अथवा गम्भीर रूप से हृदय रोग से पीड़ित होने का संकेत है। प्रबल अथवा अशक्त रेखाओं से इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है (रेखाचित्र-314)।

प्रणय रेखाओं का आकार सदैव आड़ी रेखाओं-जैसा होता है और वे हाथ के बाहर की ओर से आरम्भ होती हैं। एक ही प्रणय रेखा का होना व्यक्ति को एक ही जीवनसाथी से प्रगाढ़ प्रेम करने वाला सूचित करता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है

कि प्रणय रेखाओं से मिलने वाली जानकारी एक तो विपरीतलिंगी के विषय में होती है और दूसरे रक्त सम्बन्ध वाले सम्बन्धियों से भिन्न व्यक्तियों के विषय में होती है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि परिवारजनों के प्रति सहज भावनात्मक प्रेम से यह प्रणय भिन्न होता है; क्योंकि एक तो यह लैंगिक होता है और दूसरे आवेग तथा आवेश का परिणाम होता है।
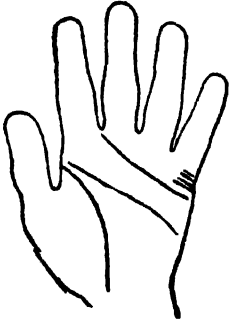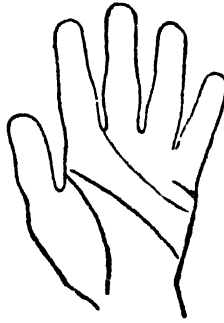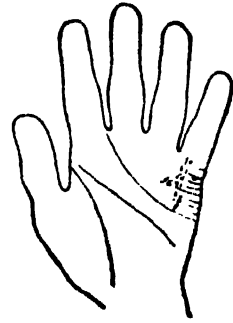
रेखाचित्र-314 *रेखाचित्र-315* *रेखाचित्र-316*

प्रणय रेखा का आरम्भ से ही द्विशाखी होने का अर्थ है—दो भिन्न-भिन्न रेखाओं का मिलकर एक हो जाना तथा दो विद्युत्-धाराओं का संयुक्त रूप में दुगुनी शक्ति के साथ प्रवाहित होना। इससे स्पष्ट सूचित होता है कि प्रणय के विषय में व्यक्ति असाधारण शक्ति का स्वामी है (रेखाचित्र-315)। प्रणय रेखाओं पर आयु निर्धारण की दो शैलियां हैं—(i) प्रणय की आयु का निर्धारण तथा (ii) प्रणय के निभने की अवधि का निर्धारण। प्रथम—प्रणय की आयु का निर्धारण—के लिए हृदय रेखा से निचली और बुध पर्वत की चोटी को ऊपरी चिह्न मानना होता है। मध्यवर्ती क्षेत्र को जीवन के औसत वर्षों में इस तरह से बांटना चाहिए कि पर्वत का मध्यबिन्दु 36 वर्ष की और शिखर 60 वर्ष की आयु को दिखाये। इससे पर्वत के मध्य में पहले दीखती सभी प्रणय रेखाएं 36 वर्ष की आयु से पूर्व की तथा पर्वत-केन्द्र से ऊपर की सभी रेखाएं 36 वर्ष के पश्चात् की होंगी।

यह विधि सामान्य प्रयोजनों के लिए उपयुक्त सिद्ध होती है और इससे विवाह की और विवाह निभने की सही आयु को जाना जा सकेगा। तिथियों को और अधिक सही रूप में जानने के लिए इस मापदण्ड का और अधिक विभाजन करना होगा (रेखाचित्र-316)। प्रणय रेखा की लम्बाई को आरम्भ से अन्त तक नापने पर विवाह के निभने की अवधि का अनुमान लगाया जा सकता है। इसी प्रकार प्रणय की अवधि में घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

विवाह के समय को जानने के लिए अपनाई जाने वाली विधि है—रेखा के

आरम्भ से रेखा की समाप्ति तक के समय की गणना। रेखा के मध्य में 36 वर्ष और अन्त में 60 वर्ष की आयु की कल्पना करनी चाहिए। बीच के वर्षों को जानने के लिए और सही आयु निकालने के लिए रेखा पर बीच-बीच में चिह्न लगाने चाहिए और चिह्नों की वर्षों के रूप में कल्पना करनी चाहिए (रेखाचित्र-317)। वस्तुतः प्रणय रेखा की लम्बाई के अनुरूप ही प्रणय की अवधि बड़ी-छोटी होगी। रेखाओं की अनेकता की स्थिति में उनकी लम्बाई से प्रणय की समय-सीमा का निर्धारण किया जाना चाहिए। प्रत्येक प्रणय-प्रसंग की आयु को उप-विभाजित पर्वत के द्वारा और उसकी अवधि की रेखा की लम्बाई से जाना जा सकता है। इससे इस तथ्य की भी जानकारी हो जाती है कि व्यक्ति का कितने प्रेमपात्रों से और कितनी बार लगाव रहा तथा कितने समय तक वह लगाव चलता रहा। सबसे अधिक लम्बी और सबसे अधिक गहरी रेखा सर्वाधिक प्रगाढ़ रहने वाले प्रणय-प्रसंग का पता देती है (रेखाचित्र-318)।
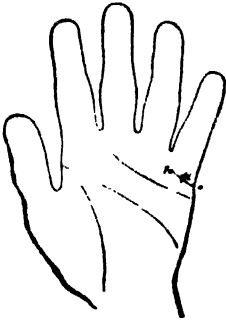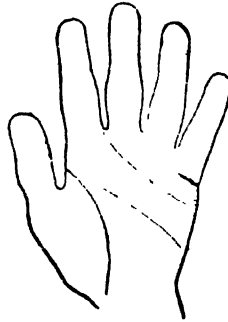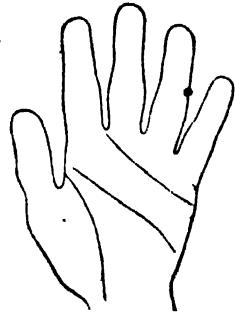
रेखाचित्र-317 *रेखाचित्र-318* *रेखाचित्र-319*

एक समान गहरी दो रेखाओं के एक साथ चलने का अर्थ है—व्यक्ति द्वारा एक ही समय दो प्रेमपात्रों से एक-जैसा सम्बन्ध रखना। (रेखाचित्र-319) उच्चतर अथवा उच्चतम प्रणय रेखा परवर्ती अथवा अन्तिम प्रेम-प्रसंग की तथा निचली सभी रेखाएं पहले के प्रेम-प्रसंगों को सूचित करती हैं।

अनेक रेखाओं में ऊपर वाली रेखा का गहरा होना तथा आरम्भ की रेखाओं में से भी किसी एक रेखा का अन्त में गहरा होना यह संकेत देता है कि व्यक्ति का प्रथम प्रेम-प्रसंग अभी तक चल रहा है, वह पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ है (रेखाचित्र-320)। रेखाओं का संयोजन करके गहनतम रेखाओं से मिलते संकेतों की जानकारी के लिए प्रगाढ़तम आसक्तियों को चुनना चाहिए तथा रेखाओं के स्वरूप से लगाव की समाप्ति के ढंग को समझना चाहिए।

निम्नोक्त लक्षणों से व्यक्ति सच्चे तथा वास्तविक प्रेम के स्थान पर धन एवं

सुख-सुविधा-जैसे किसी प्रलोभन में आकर विवाह करना सूचित होता है—(i) अन्तिम रेखा के पतला-बारीक होने पर भी उसकी लम्बाई तथा अन्य चिह्नों से विवाह की पुष्टि होना तथा (ii) उसके नीचे किसी अन्य अधिक प्रबल रेखा द्वारा समीपता बनाये रखना (रेखाचित्र-321)।
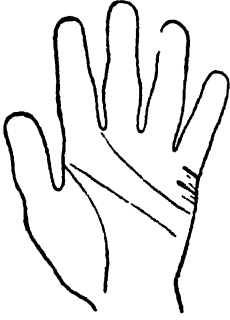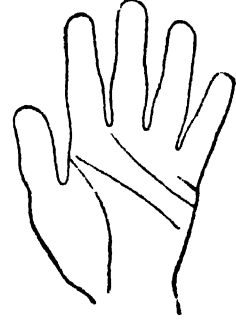
रेखाचित्र-320 *रेखाचित्र-321* *रेखाचित्र-322*

हाथ की अन्य रेखाओं की अपेक्षा पतली प्रणय रेखाओं से संकेत मिलता है कि व्यक्ति अपने प्रेमपात्र के प्रति गहरा लगाव नहीं रखता। वह जिससे विवाह करता है, उससे सम्बन्ध निभाता तो है, परन्तु उसके प्रेम सम्बन्ध में उन्माद अथवा प्रगाढ़ता-जैसी स्थिति का अभाव रहता है। ऐसा व्यक्ति प्रेम करते हुए भी एक प्रकार की दूरी बनाये रखता है। ऐसे लगता है कि जैसे वह प्रेम नहीं कर रहे, अपितु उनसे प्रेम कराया जा रहा है। ऐसा व्यक्ति प्रेम का प्रदर्शन भी पसन्द नहीं करता। हाथ में अनेक प्रणय रेखाओं वाले व्यक्ति प्रेम सम्बन्धों को गम्भीरता से नहीं लेते। वे इसे अपना मनोरंजन मात्र मानते हैं। ऐसा व्यक्ति सुन्दर और आकर्षक होने पर तो बहुतों को निराश करता है। किसी महिला के हाथ में प्रणय रेखाओं का चौड़ा, सतही तथा श्रृंखलाकार होना उसका प्रेम सम्बन्ध में उदासीन और निर्मोही होने का संकेत है। ऐसी स्त्री को अपने प्रेमियों को निराश करने में आनन्द आता है। इन्हीं लक्षणों वाले पुरुष स्वार्थी, निर्मम और क्रूर होते हैं। दोनों प्रणय रेखाओं का सफ़ेद होना तो व्यक्ति की भावशून्यता और निर्ममता को और अधिक बढ़ा देता है। गहरी और स्पष्ट प्रणय रेखाएं प्रेम-प्रसंग के गहरा और लम्बे समय तक चलने वाला होने का संकेत है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति अपने प्रेमपात्र के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले होते हैं। प्रेम की निश्छलता और उन्मत्तता उनके लिए गर्व और गौरव के विषय होते हैं। ऐसी गहरी रेखा के अन्त तक दोषरहित पाये जाने से व्यक्ति का प्रेम में एकनिष्ठ, निश्छल, सच्चा और विश्वासनीय बने रहना सूचित होता है। इसके विपरीत प्रणय रेखा का आरम्भ में गहरा और बाद में पतला होते जाना व्यक्ति के प्रेम सम्बन्ध की उत्कटता

के घटते जाने का सूचक है (रेखाचित्र-322)। आरम्भ में पतली रेखा का बाद में सशक्त-सुदृढ़ होना व्यक्ति के हलके-फुलके सम्बन्ध का धीरे-धीरे मज़बूत होते जाने का संकेत है (रेखाचित्र-323)।
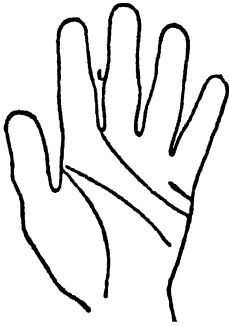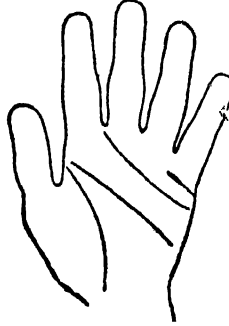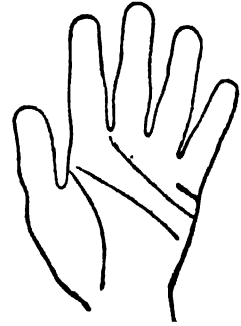
रेखाचित्र-323 *रेखाचित्र-324* *रेखाचित्र-325*

प्रणय रेखा पर द्वीपचिह्न प्रेम सम्बन्ध में कुछ अप्रिय घटने का संकेत है (रेखाचित्र-324)। द्वीपचिह्नों से बनी प्रणय रेखा वाले व्यक्ति का कोई भी प्रेम सम्बन्ध विवाह में परिणत नहीं हो पाता (रेखाचित्र-325)।
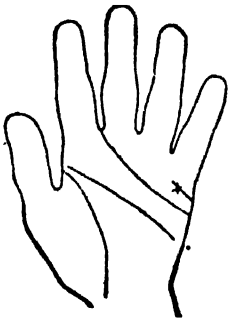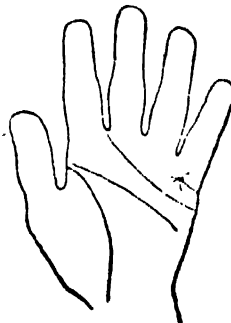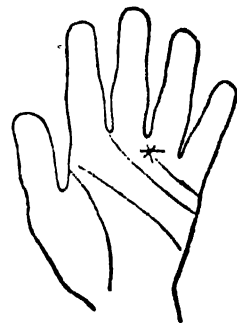
रेखाचित्र-326 *रेखाचित्र-327* *रेखाचित्र-328*

प्रणय रेखा पर गुणनचिह्न प्रेम सम्बन्ध के विकास में गम्भीर बाधा आने का संकेत है (रेखाचित्र-326)। प्रणय रेखा के अन्त में नक्षत्रचिह्न के मिलने का अर्थ है—प्रेम सम्बन्ध का विस्फोट के रूप में अन्त होना (रेखाचित्र-327)। प्रणय रेखा से निकलती किसी शाखा का सूर्य पर्वत-क्षेत्र पर जाने तथा एक नक्षत्र पर समाप्त होने से व्यक्ति का किसी प्रतिभाशाली एवं लब्धप्रतिष्ठ व्यक्ति (स्त्री है, तो पुरुष और पुरुष है, तो स्त्री) से विवाह-सूत्र में बंधने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-328)। प्रणय रेखा का अन्त में द्विशाखी होने का अर्थ है—व्यक्ति के प्रेम का बंट जाना और उसके

फलस्वरूप किसी एक प्रेमपात्र के आकर्षण का घट जाना (रेखाचित्र-329)। प्राचीन हस्तरेखाशास्त्रियों ने तो इसे 'सम्बन्ध-विच्छेद' (तलाक़) का सूचक माना
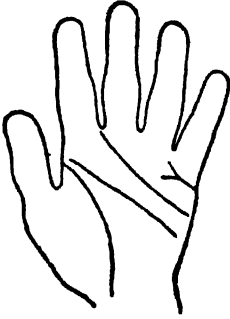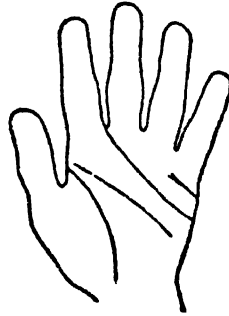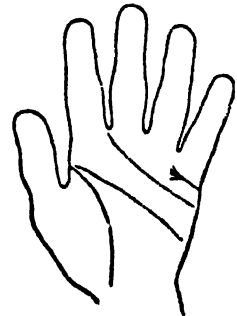
रेखाचित्र-329 *रेखाचित्र-330* *रेखाचित्र-331*

है, जो एक सीमा तक तो ठीक ही लगता है; क्योंकि विवाहित जीवन में किसी तीसरे व्यक्ति के हस्तक्षेप का परिणाम सम्बन्ध-विच्छेद हो तो सकता है, परन्तु सदैव ऐसा ही हो, यह कोई आवश्यक नहीं।

द्विशाखी रेखाओं के मध्य के अन्तराल का कम होना सम्बन्ध-विच्छेद की सम्भावना को तो नकार देता है, हां, पति-पत्नी में आन्तरिक मतभेद अवश्य गहरे हो जाते हैं (रेखाचित्र-330)। रेखा के अन्त में त्रिशूल अथवा गोपुच्छ का होना अनिष्ट मूलक है; क्योंकि इस स्थिति में प्रेम इस प्रकार छितर-बिखर जाता है कि दोनों साथी प्रणय-सुख से वञ्चित रह जाते हैं (रेखाचित्र-331)।
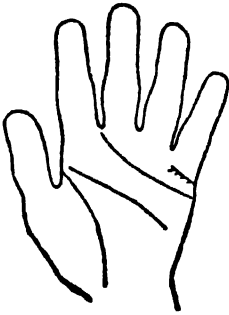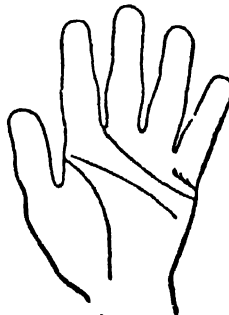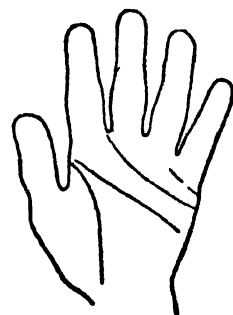
रेखाचित्र-332 ***रेखाचित्र-333*** ***रेखाचित्र-334***

प्रणय रेखा से निकलती कुछ शाखाओं का नीचे की ओर जाना यह संकेत देता है कि व्यक्ति का वैवाहिक जीवन दु:खों-कष्टों और निराशा से परिपूर्ण है (रेखाचित्र-332)। इसके विपरीत प्रणय रेखा से निकलती कुछ शाखाओं का ऊपर जाना व्यक्ति द्वारा उन्नति करने का और वैवाहिक जीवन में सुख भोगने का लक्षण है (रेखाचित्र-

333)। प्रणय रेखा का टूटना तो विवाह सम्बन्ध के टूटने को दिखाता है। यह स्थिति प्रेम की डोर के विच्छिन्न होने की ही है (रेखाचित्र-334)।
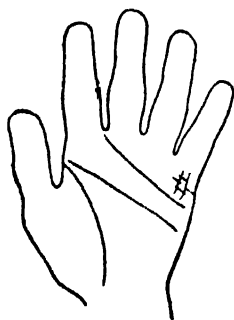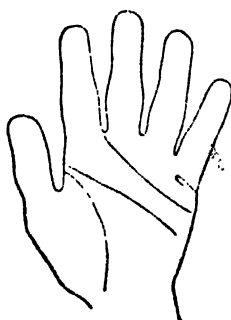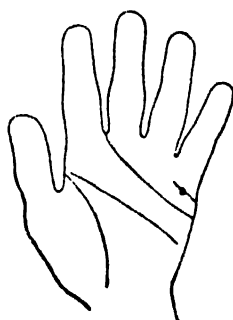
रेखाचित्र-335 *रेखाचित्र-336* *रेखाचित्र-337*

टूटी रेखा वाले स्थान के वर्ग के घेरे में आने का अर्थ है—प्रणय में बाधा आने के कारण व्यक्ति के मन का क्षुब्ध होना, जिसमें सुधार की सम्भावना भी बनी रहती है (रेखाचित्र-335)। प्रणय रेखा का बुध पर्वत पर हुक का रूप ले लेने का अर्थ है—व्यक्ति का प्रणय में न केवल असफल होना, अपितु कभी असफलता को सफलता में बदल ही न पाना (रेखाचित्र-336)। प्रणय रेखा पर एक बिन्दु दीखने को प्रेम के मार्ग की केवल छोटी-मोटी बाधा समझना चाहिए (रेखाचित्र-337)। वस्तुत: प्रणय रेखा के अपने समाप्ति-स्थल में ग्रहण किये जाने वाले रूप से व्यक्ति
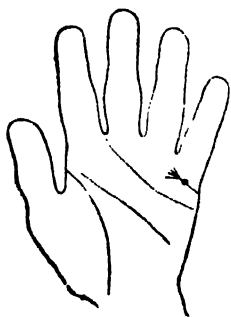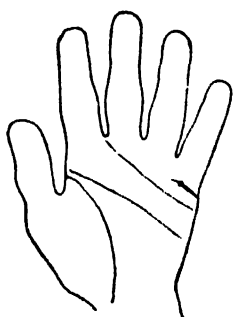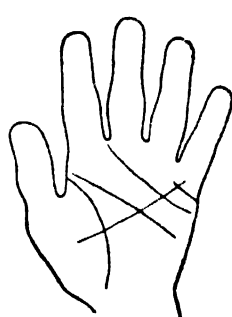
रेखाचित्र-338 *रेखाचित्र-339* *रेखाचित्र-340*

के प्रेम सम्बन्धों की परिणति का अनुमान लगाना चाहिए। प्रणय रेखा का अन्त में द्विशाखी हो जाना अथवा उस पर त्रिशूल या गोपुच्छ का बन जाना प्रेम के नष्ट होने का सूचक है (रेखाचित्र-338)। प्रणय रेखा पर बिन्दु के उभरने के पश्चात् रेखा की क्षीणता व्यक्ति के प्रेम के धीरे-धीरे क्षीण होने और मिटने का संकेत है (रेखाचित्र-339)।

शुक्र पर्वत से निकलती चिन्ता रेखाओं के प्रणय रेखाओं तक जाने और उन्हें काटने का अर्थ है—व्यक्ति के प्रेम सम्बन्ध में सम्बन्धियों का बाधक बनना (रेखाचित्र-340)। काटने वाली चिन्ता रेखा के शुक्र पर्वत पर प्रभावी रेखाओं से निकल कर जाने से पता चलता है कि व्यक्ति के प्रेम सम्बन्ध में बाधा डालने वाला उसका सम्बन्धी उसका कितना निकटवर्ती है।

सघन प्रभावी रेखा से निकलती रेखा द्वारा द्विशाखी प्रणय रेखा को काटने से किसी निकटवर्ती सम्बन्धी द्वारा व्यक्ति के वैवाहिक जीवन में बाधाएं उपस्थित करने की जानकारी मिलती है (रेखाचित्र-341)।
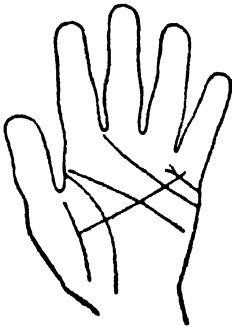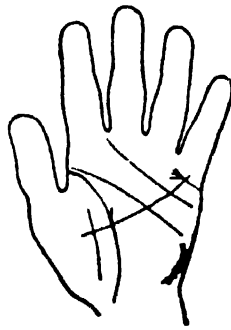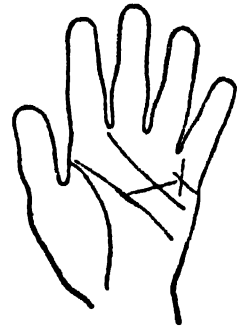
रेखाचित्र-341 *रेखाचित्र-342* *रेखाचित्र-343*

द्विशाखी रेखा से यह भी सूचित होता है कि व्यक्ति अपने सम्बन्धियों द्वारा अपने वैवाहिक जीवन में डाली जा रही बाधाओं के कारण अपने वैवाहिक जीवन का भरपूर आनन्द नहीं उठा पा रहा। प्रणय रेखा के अन्त में गोपुच्छ का होना संकेत करता है कि व्यक्ति के वैवाहिक जीवन में सम्बन्धियों के हस्तक्षेप ने स्थिति को भयंकर बना दिया है (रेखाचित्र-342)।

किसी आड़ी रेखा द्वारा प्रणय रेखा का कटना तथा उस प्रणय रेखा से निकली किसी आकस्मिक रेखा का मस्तिष्क रेखा पर स्थित द्वीप, गुणनचिह्न, छड़ अथवा बिन्दु तक जाना इस बात का संकेत है कि व्यक्ति के वैवाहिक जीवन में सम्बन्धियों के हस्तक्षेप के कारण व्यक्ति के मस्तिष्क के किसी रोग से ग्रस्त होने की सम्भावना बढ़ गयी है (रेखाचित्र-343)। इस प्रकार की आकस्मिक रेखाएं प्राय: बाधाओं से ग्रस्त प्रणय रेखा से निकलती हैं और स्वास्थ्य-विकारों के सूचक पर्वत तक जाती दीखती हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वैवाहिक जीवन में आने वाली समस्या का मूल कारण या तो किसी का हस्तक्षेप या फिर प्रणय रेखा में पाया जाने वाला दोष होता है। प्रणय रेखा में विद्यमान प्रत्येक दोष का सम्बन्ध व्यक्ति के जीवन की

किसी-न-किसी घटना से होता है। दोनों रेखाएं; क्योंकि जीवन में किसी नये व्यक्ति के आने का संकेत देती हैं तथा एक-दूसरे पर निर्भर हैं, अतः प्रणय रेखाओं का शुक्र पर्वत पर विद्यमान रेखाओं के साथ मिलाकर (संयुक्त रूप से) अध्ययन करना उपयुक्त रहता है। विवाह और गृहस्थ-जीवन से सम्बन्धित विषयों पर कुछ भी कहने से पूर्व हस्तरेखाशास्त्री को ख़ूब सोच-विचार करना चाहिए। व्यक्ति के हाथ का अत्यन्त सावधानी से निरीक्षण-परीक्षण करना चाहिए और जब तक व्यक्ति अपने विवाह आदि के सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासा-उत्सुकता प्रकट न करे, तब तक हस्तरेखाशास्त्री को इस विषय में स्वयं कुछ कहने से बचना चाहिए। हां, यदि प्रतिकूल प्रभावों के कारण व्यक्ति के जीवन के नष्ट होने की सम्भावना के संकेत मिलते हों, तो हस्तरेखाशास्त्री का कर्तव्य है कि वह व्यक्ति को डराये तो नहीं, परन्तु उसे सावधान अवश्य कर दे। व्यक्ति द्वारा उपेक्षा दिखाने पर हस्तरेखाशास्त्री को मौन धारण कर लेना चाहिए। दम्भ अथवा अहंकारवश कुछ भी कहते रहना अपने ओछेपन का प्रदर्शन कहलाता है। जिस प्रकार शल्य-चिकित्सक रोगी के लाभ के लिए ही अंगच्छेदन आदि कार्य करता है, कभी अनावश्यक शल्य-क्रिया नहीं करता। उसी प्रकार हस्तरेखाशास्त्री को भी केवल अपने यजमान के हित के लिए ही उसका भविष्यकथन करना चाहिए। डराने तथा धन ऐंठने के लिए ऊलजुलूल कहना न केवल व्यवसाय का अपमान करना है, अपितु स्वयं को उपहास का पात्र बनाना और पाप का भागी बनना भी है। प्रणय रेखाओं के विवेचन में इस सिद्धान्त का पालन करने से हस्तरेखाशास्त्री सम्मान और यश का भागी बनता है। *

10

शनि (भाग्य) रेखा

"व्यक्ति को अपने जीवन में धन, सम्पत्ति और साधन आदि जो कुछ भी वाञ्छनीय प्राप्त होता है, वह सब भाग्य (भाग्य की देन) कहलाता है।"

—डिब्नारायली

विद्युत्-धारा को ग्रहण करने वाली चतुर्थ रेखा भाग्य रेखा अथवा शनि रेखा कहलाती है। सरसरी तौर पर नियति अथवा भाग्य का इस रेखा से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध भले ही स्पष्ट न होता हो, परन्तु गहराई से तथा विभिन्न दृष्टियों से विचार करने पर इस रेखा को भाग्य से जोड़ना सर्वथा न्यायसंगत ही प्रतीत होता है।

शनि रेखा हाथ के मूल से निकलकर ऊपर अंगुलियों की ओर जाती है। स्थापित मान्यता यह है कि विद्युत्-धारा—जिसका दूसरा नाम जीवनी शक्ति है—जीवन रेखा के अन्तिम छोर से मस्तक रेखा में प्रवेश करती है और वहां से लौटने पर शनि रेखा में प्रविष्ट हो जाती है। जीवन के विभिन्न वर्षों में इसकी स्थिति और प्रभाव के सूचक साधन की चर्चा हमने चतुर्थ अध्याय में की है। इस साधन के आधार पर रेखा का सबसे निचला भाग बचपन की अवधि तथा शनि पर्वत वृद्धावस्था की अवधि का सूचक है। शनि रेखा व्यक्ति के स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं और उसके शरीर के गठन आदि के सम्बन्ध में तो कुछ नहीं बताती, परन्तु हां, व्यक्ति को भौतिक सफलता की प्राप्ति के लिए दिशा-निर्देश अवश्य देती है, जिससे व्यक्ति कठिनाइयों का सामना करने तथा बाधाओं को दूर करने और अपनी प्रगति का पथ प्रशस्त करने में सफल हो जाता है। यही कारण है कि प्राचीन हस्तारेखाविदों ने इस रेखा को भाग्य रेखा नाम दिया है। सामान्य जीवन में भी प्राय: यह सुनने को मिलता है कि जिस व्यक्ति के जीवन की गाड़ी पटरी पर ठीक-ठाक चलती मिलती है, उसे 'सौभाग्यशाली' अथवा 'भाग्य का धनी' आदि शब्दों से विभूषित किया जाता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि व्यक्ति की सफलता का श्रेय उसके भाग्य अथवा प्रारब्ध को देते हुए उसकी योग्यता, लगन और परिश्रम-जैसे गुणों को भुलाने की भारी भूल की जाती है, जब कि सत्य यह है कि भाग्य भी उद्यम से ही मिलता है। उत्तम शनि रेखा भी व्यक्ति में उत्तम स्वास्थ्य, स्वच्छ बुद्धि, संकल्पशक्ति, महत्त्वाकांक्षा, अध्यवसाय

तथा लक्ष्य के प्रति निष्ठा-जैसे गुणों की सूचक रेखाओं के होने पर ही अपना प्रभाव दिखाने में, अर्थात् व्यक्ति की जीवन-नैया को पार पहुंचाने में सफल हो पाती है। उपर्युक्त गुणों का सही प्रयोग-उपयोग करने पर ही भाग्य की उज्ज्वलता एवं अनुकूलता को सुनिश्चित माना जा सकता है। वस्तुतः भाग्यशाली माने जाने वाले व्यक्तियों में भी अधिकांश अपनी सफलता का श्रेय एकमात्र भाग्य अथवा संयोग को न देकर अपने विवेक, धैर्य, लगन, महत्त्वाकांक्षा तथा परिश्रम-जैसे गुणों को देते हैं। फिर भी भाग्य, नियति, दैव तथा प्रारब्ध-जैसे शब्दों का अपना महत्त्व एवं मोहक प्रभाव है। भाग्य शब्द के साथ कुछ ऐसा चमत्कार जुड़ा रहता है, जिससे व्यक्ति द्वारा संयोगवश अथवा साधारण परिश्रम से बहुत कुछ अकल्पित पा लिया जाता है। इस मान्यता का दुष्परिणाम यह होता है कि आलसी व्यक्ति परिश्रम की उपेक्षा करने लगते हैं। वे यह मानकर—भाग्य में लिखा होगा तो मिलेगा—कर्म—परिश्रम, विवेक और संघर्ष—से मुंह मोड़ लेते हैं। परिश्रम से जी चुराने वाले व्यक्ति अपनी विफलता का दोष भाग्य के मत्थे मढ़कर उसे कोसने लगते हैं। वे भाग्य में लिखे के स्वतः प्राप्त होने के सपने देखने में अपने जीवन को नष्ट कर डालते हैं। वे अपनी शक्ति-सामर्थ्य का अवमूल्यन करते हुए जादू की छड़ी से रातों-रात करोड़पति बनने के सपने देखने लगते हैं। इसके विपरीत सच्चे कर्मयोगी अपने उद्यम को ही जादू की छड़ी समझते हैं। वे इसी से अपनी स्थिति में सुधार की कल्पना करते हैं। वे अपने हाथ में आये अवसर का सदुपयोग करते हैं और फिर मनोऽभिलषित प्राप्त कर लेते हैं।

भाग्य और पुरुषार्थ में कौन बड़ा—कौन छोटा—यह एक लम्बी और न समाप्त होने वाली बहस है। दोनों के पक्ष-विपक्ष में अनेक तर्क प्रस्तुत किये जा सकते हैं और दोनों के समर्थन में उदाहरण भी ख़ूब मिल जाते हैं, परन्तु निष्कर्ष-रूप में तो यही कहना पड़ता है कि भाग्य भी उनका साथ देता है, जो विवेक, श्रम और अनुभव को सफलता का आधार मानते हैं।

शनि अथवा भाग्य रेखा का अध्ययन करने से पूर्व इसे परिभाषित करना आवश्यक प्रतीत होता है। कार्य-कारण सम्बन्ध पर अछूत यह इस अर्थ में एक विलक्षण रेखा है; क्योंकि इसके माध्यम से महत्त्वपूर्ण रहस्यों का एकदम सही उद्घाटन होता है। इस रेखा को प्रभावित करने वाले सभी कारणों की जानकारी प्राप्त करना भी आवश्यक हो जाता है। शनि रेखा पर जीवन की सबसे अधिक सफल समय की अवधियों को देखा जाता है, जो व्यक्ति के लिए शुभ और कल्याणकारी होती है। इस अवधि में न केवल उसका स्वास्थ्य उत्तम रहता है, अपितु उसमें विवेक, महत्त्वाकांक्षा एवं कार्यक्षमता आदि गुण अपने श्रेष्ठ रूप में विद्यमान रहते हैं। इन गुणों के उपयोग से जहां व्यक्ति लाभान्वित हो सकता है, वहां इनकी उपेक्षा से प्राप्त होने अथवा किये जा सकने वाले लाभों से वञ्चित भी रह सकता है। इस समय

में व्यक्ति का जीवन सुखमय होता है; क्योंकि उसकी सभी शक्तियां पूर्ण और समर्थ होने के साथ उसके वश में होती हैं। इन समयावधियों में वह थोड़े श्रम से बहुत लाभ प्राप्त करने वाला होता है। इससे परम्परागत अन्धविश्वास को आधार बनाकर उसे 'भाग्यशाली' अथवा 'क़िस्मत का धनी' कहा जा सकता है। इस अवधि अथवा अवधियों में भाग्य उसका साथ दे रहा होता है और वह जो चाहता है, वह सब पा लेता है। कुछ समझदार व्यक्ति इन कालावधियों का लाभ उठाते हैं और न केवल अपने लिए सुख-सुविधाओं को सुरक्षित कर लेते हैं, अपितु मान-सम्मान और कीर्ति-लाभ भी प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु कुछ दूसरे लोग अनुकूल अवसर को भाग्य मानकर वर्तमान से सन्तुष्ट रहते हैं, भविष्य की चिन्ता ही नहीं करते। उक्ति प्रचलित है—समय सदा एक समान नहीं रहता—अत: समय बीतने पर उन्हें अधिक परिश्रम करना पड़ता है और फिर भी अभीष्ट लाभ के लिए तरसना पड़ता है। वे अपने अच्छे दिनों को व्यर्थ कर चुके होते हैं और अब उन्हें अपनी मौज-मस्ती का मूल्य चुकाने को विवश होना पड़ता है। वस्तुत: हाथ में आये अवसर को गंवाने वाला व्यक्ति कभी 'मुकद्दर का सिकन्दर' नहीं बन सकता। अच्छे समय में भी आराम को हराम समझने और कठोर श्रम करने वाला व्यक्ति ही बुरे दिनों में संकट को आसानी से झेल लेता है। कार्य-कारण का नियम—परिश्रम ही फल का दाता है—तो सब कहीं एक समान लागू होता है। शनि रेखा भी इसका अपवाद नहीं। इस रेखा को गहराई और सावधानीपूर्वक देखने पर ही इसकी वास्तविकता को समझना सम्भव होता है। हम पहले ही लिख चुके हैं कि यह रेखा चेतना से सर्वथा दूर के रहस्यों का उद्घाटन करती है। वस्तुत: सभी रेखाएं प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का मानचित्र होती हैं—कोई ग़लत कल्पना नहीं है। मानचित्र शब्द का प्रयोग भी इस रूप में किया गया है ताकि व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्यक्ष रूप को जानकर सही दिशा को अपना सके और सफलता प्राप्त कर सके।

शनि रेखा जब प्रबल स्थिति में होती है, तो व्यक्ति को न केवल जीवन को सही समझने-परखने की शक्ति प्रदान करती है, अपितु शनि सम्बन्धी गुणों—मनोबल का विकास एवं उच्चतम रूप—को उत्कर्ष पर पहुंचाने में भी सहायक सिद्ध होती है। शनि पर्वत के गहरा होने पर इस रेखा को प्रबल रेखा मानना उचित होता है। उत्तम रेखा व्यक्ति में जीवन को सन्तुलित बनाये रखने वाले गुणों की स्थिति को वृद्धावस्था में पहुंचने पर उसके सफल रहने की सूचक होती है। शनिप्रधान व्यक्ति जीवन को सफल बनाने वाले गुणों—अध्ययनशीलता, परिश्रम, मितव्ययिता तथा विवेक आदि—से सम्पन्न होता है। शनिप्रधान व्यक्ति धरती के गर्भ में छिपी अमूल्य सम्पदा—स्वर्ण, रजत, कोयला आदि—की खोज में विशेष रुचि लेने वाला एक प्रकार से 'भू-गर्भशास्त्री' होता है। गैस और तेल के कुओं की खोज करने का श्रेय

अधिकतर शनिप्रधान व्यक्तियों को ही है। उन्हें प्रकृति से भी गहरा लगाव होता है। उन्हें 'भाग्य का प्रिय पुत्र' मानना अनुचित नहीं। वस्तुत: प्रकृति की एक विशेषता—जिसके आधार पर मानव-जाति निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रही है—यह है कि उसने प्रत्येक मानव को एक से बढ़कर अथवा अधिक प्रतिभा प्रदान की है। इसीलिए जिस लक्ष्य को एक प्राप्त नहीं कर पाता, उसे दूसरा प्राप्त कर लेता है। इसे 'अनन्त चेतना' नाम देना सर्वथा उपयुक्त ही है। मेरा मानना तो यह है कि शनिप्रधान व्यक्ति की अपेक्षा एक अच्छे सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति अथवा बुधप्रधान व्यक्ति पर भाग्य कहीं अधिक कृपालु रहता है।

प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में शनि रेखा नहीं मिलती। प्राचीन हस्तरेखाशास्त्रियों ने शनि रेखाविहीन हाथों वाले व्यक्तियों को नाकारा, अर्थात् जीवन में कुछ उल्लेखनीय न कर पाने वाला बताया है, परन्तु यह सत्य नहीं है। अनेक सफल एवं ख्यातनामा व्यक्तियों के हाथ शनि रेखाविहीन देखने को मिले हैं। अनेक धन-सम्पन्न व्यक्तियों के हाथों में यह रेखा अविकसित अथवा अल्पविकसित रूप लिये मिली है। ऐसे व्यक्तियों को 'उपेक्षित', 'अनुपयोगी' अथवा निरर्थक व्यक्ति तो नहीं कहा जा सकता। अत: प्राचीन विद्वानों की मान्यता को प्रामाणिक नहीं माना जा सकता। सत्य तो यह है कि शनि रेखाविहीन कुछ व्यक्ति स्वयं अपने भाग्यविधाता सिद्ध हुए हैं। दीन-हीन दशा में, अनाथ-असहाय के रूप में अपना बचपन बिताने वाले ये लोग अपनी कर्तव्यपरायणता, कर्मठता और संघर्षशीलता के बल पर संसार में श्रेष्ठ पुरुषों में अपना स्थान बनाने में सफल रहे हैं। ऐसे व्यक्ति न तो मुंह में सोने का चम्मच लिये उत्पन्न होते हैं और न ही बचपन से विशिष्ट प्रतिभा के धनी होते हैं। वे तो केवल रात-दिन परिश्रम करके अपनी कर्मठता के बल पर संसार में अपने लिए प्रतिष्ठित जगह बना लेते हैं। इनसे व्यक्ति का फलता-फूलता बचपन असमय में कुम्हला जाता है। आरम्भ में गहरी-स्पष्ट शनि रेखा से कष्ट के लिए उत्तरदायी किसी भी कारण से व्यक्ति मुक्त हो चुका है, अर्थात् अब उसे न तो कहीं से कष्ट मिलना है और न ही उसे कष्ट के कारणों की समाप्ति के लिए किसी प्रकार का कोई प्रयत्न करना है। दूसरे शब्दों में शनि रेखा का न होना यह सूचित करता है कि या तो परिस्थितियों ने व्यक्ति को संभाल लिया है या फिर व्यक्ति ने उन पर क़ाबू पा लिया है।

शनि रेखा अपने अनेक उद्गम-स्रोतों में कहीं से भी प्रकट हो सकती है। उसके ये स्रोत सदैव हाथ के मूल में होते हैं, किन्तु जीवन रेखा और चन्द्र रेखा के मध्य में किसी भी स्थान पर हो सकते हैं (रेखाचित्र-344)। यह रेखा कभी-कभार जीवन रेखा के भीतर, तो कभी चन्द्र पर्वत से प्रकट हो सकती है। हां, इतना निश्चित होता है कि शनि रेखा भले ही शनि पर्वत पर पहुंचे अथवा उससे दूर रहे, परन्तु वह सदैव शनि पर्वत की ओर ही उन्मुख रहती है। दूसरी बात यह है कि यह रेखा सदैव

हथेली के बीच से ही गुज़रती है।
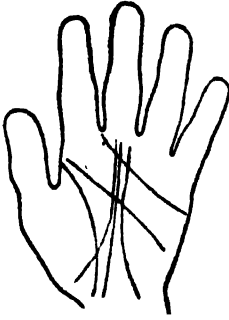
रेखाचित्र-344 *रेखाचित्र-345* *रेखाचित्र-345*
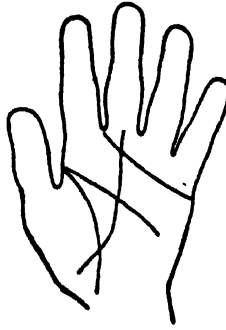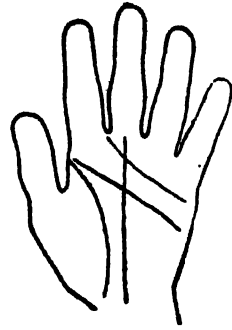
जीवन रेखा के भीतर से निकलती और शनि पर्वत पर चढ़ती शनि रेखा से व्यक्ति की भौतिक सफलता-प्राप्ति का और सम्बन्धियों से सहयोग-सहायता मिलने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-345)। शनि रेखा के हथेली के बीचों-बीच प्रकट होकर शनि पर्वत-क्षेत्र में प्रवेश कर जाने से सूचित होता है कि व्यक्ति अपने प्रयासों से सफलता प्राप्त करने वाला है (रेखाचित्र-346)। इसी प्रकार शनि रेखा के चन्द्र पर्वत से निकलकर शनि पर्वत पर चढ़ने से व्यक्ति को विपरीतलिंगी—स्त्री को पुरुष से और पुरुष को स्त्री से—से सहयोग-सहायता (दिशा-निर्देश अथवा आर्थिक) मिलना सूचित होता है (रेखाचित्र-347)। ऐसे पुरुषों की उन्नति में उनकी पत्नियों का और स्त्रियों की उन्नति में उनके पतियों का बहुत बड़ा योगदान रहता है।
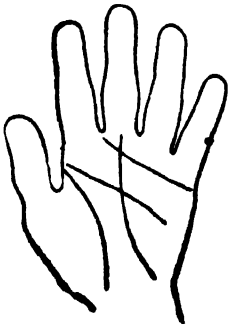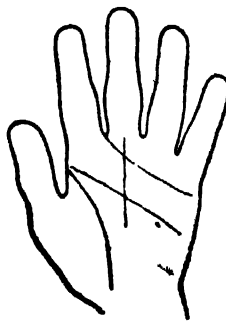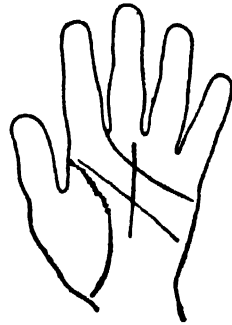
रेखाचित्र-347 *रेखाचित्र-348* *रेखाचित्र-349*

अधिकांश मामलों में तो शनि रेखा इन तीन—जीवन रेखा का भीतरी स्थान, चन्द्र रेखा का भीतरी स्थान तथा दोनों के मध्य का स्थान—स्थानों में से किसी एक स्थान पर प्रकट हो सकती है—होती है। अन्य सभी स्रोत इन्हीं तीन स्रोतों के मिश्रित

रूप हैं। कभी-कभी शनि रेखा निम्न स्थान की अपेक्षा काफ़ी ऊपर से भी प्रकट होती मिलती है (रेखाचित्र-348)। इस स्थिति से व्यक्ति के प्रारम्भिक जीवन में अपने उद्यम से कुछ न कर पाना, अर्थात् उस समय का निष्फल-निरर्थक होना संकेतित होता है। रेखा की यह स्थिति इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि व्यक्ति का जन्म किसी सम्पन्न परिवार में नहीं हुआ और शनि रेखा के उदय-काल से ही उसका अच्छा समय प्रारम्भ होने वाला है। शनि रेखा की अनुपस्थिति व्यक्ति की उन्नति में कुछ लोगों द्वारा बाधा डालने की चेष्टा की सूचक तो नहीं, पुनरपि एक स्पष्ट रेखा विशेष लाभ का निश्चित संकेत अवश्य देती है।

शनि रेखा का हाथ में न होना यह सूचित करता है कि व्यक्ति को अपने कार्य की सिद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ेगा। इसके विपरीत रेखा की उपस्थिति से साधारण प्रयास से अभीष्ट सिद्धि सूचित होती है। शनि रेखा हाथ में जितनी अधिक ऊंचाई से आरम्भ होती है, उतना ही व्यक्ति के जीवन का परवर्ती समय अधिक सुख-सुविधा सम्पन्न होता है। शनि रेखा की न्यूनता-अपूर्णता अकेली नहीं होती, उसके साथ अन्यान्य रेखाचिह्नों की न्यूनता-अपूर्णता भी स्पष्ट देखने को मिलती है। प्रारम्भिक आयु में शनि रेखा की अनुपस्थिति व्यक्ति के स्वास्थ्य के शिथिल रहने का संकेत होती है (रेखाचित्र-349)। इसके कारण व्यक्ति के जीवन के आरम्भिक वर्षों में कुछ न कर पाना भी सूचित होता है। ज्यों ही शनि रेखा आरम्भ होती है, त्यों ही उस पर दीखने वाला चिह्न गिर जाता है, जिसका अर्थ है कि अब उसके स्वास्थ्य के सुधरने और जीवन में अपने श्रम से कुछ उपलब्ध कर पाने का समय आ गया है।

आरम्भ में पतली-बारीक जीवन रेखा का आगे चलकर अधिक गहरा हो जाना शनि रेखा में परिवर्तन लाता है और इसके फलस्वरूप व्यक्ति अपने उद्योग-धन्धे में प्रगति करने लगता है। हस्तरेखाशास्त्री को शनि रेखा के प्रारम्भ का नीचे से और जीवन रेखा के प्रारम्भ का शिखर रेखा से अध्ययन करना चाहिए।

देरी से प्रकट होने वाली शनि रेखा के आरम्भ में दोषपूर्ण होने के साथ-साथ मस्तक रेखा के भी दोषपूर्ण होने का अर्थ है—व्यक्ति के मस्तिष्क की दुर्बलता उसके प्रारम्भिक जीवन को प्रभावित करती है, जिससे वह उन्नति नहीं कर पाता।

यहां यह भी स्मरणीय है कि मस्तक रेखा के स्वस्थ न होने तक शनि रेखा नहीं होती (रेखाचित्र-350)।

मस्तक रेखा की आरम्भ में अशक्तता व बाद में इसके सशक्त होते ही हृदय रेखा का दुर्बल हो जाना और फिर भी जीवन रेखा के पतली बनी रहने से व्यक्ति के प्रथम मस्तिष्क रोग का और पुनः हृदय रोग का शिकार बनना सूचित होता है (रेखाचित्र-351)। इन दोनों रोगों से जूझने-निपटने के उपरान्त ही उसके लिए

उन्नति का द्वार खुल पाता है। शनि रेखा भी ऊंची हो और मस्तक रेखा एवं हृदय रेखा भी दोषरहित हों, फिर भी यदि व्यक्ति का स्वास्थ्य विकृत मिलता है, तो उसके
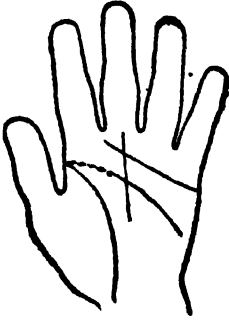
रेखाचित्र-350
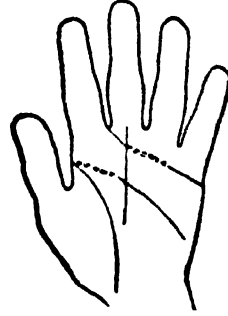
रेखाचित्र-351

कारण को जानने के लिए हाथ की अन्य रेखाओं और पर्वतों पर ध्यान देना चाहिए। शनि रेखा की स्थिति को भी दोनों हाथों में देखना अपेक्षित होता है। शनि रेखा का बायें हाथ में नीचे आरम्भ होना तथा दायें हाथ में उसका ऊंचा रहना यह दर्शाता है कि रेखा की सहज स्थिति तो व्यक्ति के अनुकूल थी, किसी घटना-विशेष के घटित होने से योजना ने विपरीत रूप ले लिया है। इस परिवर्तन को मात्र संयोग नहीं समझना चाहिए; क्योंकि मूलत: यह परिवर्तन व्यक्ति के स्वास्थ्य में गड़बड़ी होने, व्यक्ति द्वारा आलस्य बरतने अथवा परिवारजनों अथवा इष्ट-मित्रों के अवाञ्छनीय व्यवहार एवं प्रभाव के कारण होता है। इसका अर्थ यह है कि हस्तरेखाशास्त्री को शनि रेखा के हाथ के नीचे से निकलने को रोकने के लिए उत्तरदायी प्रतिकूल स्थिति का पता लगाना चाहिए। सामान्य रूप से शनि रेखा के आरम्भ-स्थल से आरम्भ न होने पर इसका कारण माता-पिता के साथ घटी कोई दुर्घटना हो सकती है; क्योंकि रेखा की इस अवधि का सम्बन्ध बचपन से होता है। जीवन के आरम्भ में व्यक्ति द्वारा अपेक्षित सफलता प्राप्त करने का दोष व्यक्ति का अपना नहीं होता। शनि रेखा का दायें हाथ में ऊंचा रहना और शुक्र पर्वत पर पैतृक प्रभाव की सूचक एक रेखा का शीघ्र ही एक नक्षत्र में अन्त होना यह सूचित करता है व्यक्ति के माता अथवा पिता में से किसी एक की मृत्यु हो जाने से उसका बचपन सुखमय नहीं रहा तथा वह अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में कुछ भी उल्लेखनीय प्राप्त नहीं कर सका (रेखाचित्र-352)। यहां इस स्मरणीय है कि शनि रेखा पर मिलने वाले सभी संकेत आर्थिक गतिविधि से सम्बन्ध रखते हैं।

शनि रेखा के स्वरूप पर भी ध्यान देना चाहिए। अन्य रेखाओं के समान गहरी न होने पर यह रेखा अन्य रेखाओं के समान शक्तिशाली भी नहीं होती। इस रेखा का

अत्यन्त गहरा और स्पष्ट रूप व्यक्ति को न केवल उत्कृष्ट गुणों से सम्पन्न बनाता है, अपितु इनके उपयोग से जीवन में सफल रहने का संकेत भी देता है (रेखाचित्र-353)।
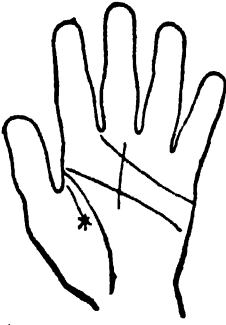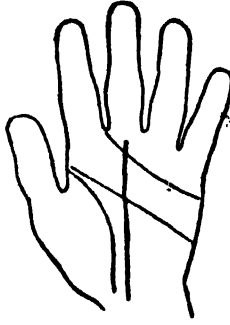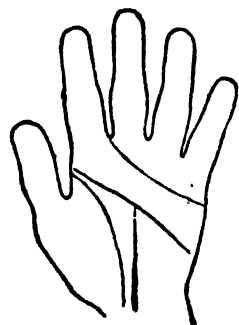
रेखाचित्र-352 *रेखाचित्र-353* *रेखाचित्र-354*

शनि रेखा के गहरा होने तथा शनि पर्वत में ऊपर तक पहुंचने से व्यक्ति की स्थितियों का जीवनपर्यन्त उसके अनुकूल बना रहना सूचित होता है। इसके विपरीत छोटी रेखा यह सूचित करती है कि जितनी अवधि रेखा की लम्बाई के भीतर आती है, उतनी अवधि तक व्यक्ति का समय उसके अनुकूल रहेगा। जीवन के आरम्भ में रेखा की प्रगाढ़ता से सूचित होता है कि व्यक्ति के बचपन का समय ही उसके जीवन का सर्वोत्तम समय रहा है (रेखाचित्र-354)।

ऐसी स्थिति को अच्छा नहीं माना जाता; क्योंकि बहुत थोड़े लोग इतने समझदार होते हैं कि वे इस समय का सही उपयोग कर सकें।
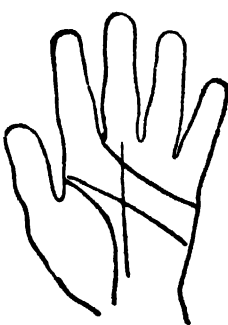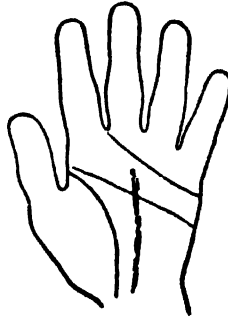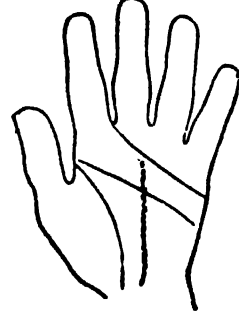
रेखाचित्र-355 *रेखाचित्र-356* *रेखाचित्र-357*

गहरी शनि रेखा को सर्वोत्तम मानना चाहिए। पतली रेखा से व्यक्ति को पैतृक परम्परा से बहुत कुछ मिला होना संकेतित होता है, परन्तु कुछ भी पाने के लिए

गहरी रेखा वाले व्यक्ति की अपेक्षा उसे कहीं अधिक परिश्रम करना पड़ता है। हां, साथ में यह भी है कि दोषपूर्ण रेखा वाले व्यक्तियों की सफलता के मार्ग में आने वाली किसी कठिनाई का पतली रेखा वाले व्यक्ति को कोई सामना नहीं करना पड़ता (रेखाचित्र-355)।

शनि रेखा के न होने से तो इसका चौड़ी-सतही रूप में होना कहीं अधिक अच्छा होता है। केवल शनि रेखा का चौड़ी-सतही होना और दूसरी रेखाओं का स्पष्टता लिये रहना व्यक्ति द्वारा जीवन में निरन्तर संघर्ष करते रहने का संकेत देता है (रेखाचित्र-356)। शृंखलाकार शनि रेखा से व्यक्ति के जीवन का निरन्तर कठिनाइयों से घिरा रहना सूचित होता है। रेखा का पूरी लम्बाई तक शृंखलाकार होने का अर्थ है—व्यक्ति का पग-पग पर कठिनाइयों से जूझना और निराशा का मुख देखना (रेखाचित्र-357)। रेखा के आंशिक रूप से शृंखलाकार होने से रेखा के स्वरूप के शृंखलाकार रहने की अवधि तक व्यक्ति का कठिनाइयों से सामना करना सूचित होता है।

शनि रेखा का रंग रक्तधारा के प्रवाह और शक्ति का परिचय तो कराता है, परन्तु इसका यह रंग अन्य रेखाओं के समान शनि रेखा को प्रभावित करने वाला नहीं होता और न ही व्यक्ति के स्वास्थ्य से इसका कुछ लेना-देना होता है। यही कारण है कि कुछ विद्वान् शनि रेखा के रंग के परीक्षण को कोई महत्त्व ही नहीं देते।

शनि रेखा में मिलने वाले दोष व्यक्ति के जीवन में आने वाली बाधाओं के स्वरूप, संख्या और स्थिति (गम्भीरता, सामान्यता आदि) के ज्ञापक होने के कारण अध्ययन का विषय बनने के योग्य हैं। हाथों के विभिन्न भागों से दोषों के कारणों का पता चल जाता है, जिससे व्यक्ति चाहे, तो इन कारणों का निराकरण करके जीवन में सम्भावित बाधाओं से अपना बचाव कर सकता है। रेखा के आरम्भ में मिलने वाले दोष तो व्यक्ति की बाल्यावस्था से सम्बन्ध रखते हैं, जब वह कुछ भी करने में न समर्थ होता है और न ही उसे इस प्रकार की समझ होती है। इस आयु के ये दोष ख़राब स्वास्थ्य के रूप में देखे जा सकते हैं, जिन पर शनि रेखा के इन दोषों के कारण अथवा पैतृक प्रभाव के कारण नियन्त्रण करने में असमर्थ, अर्थात् रोग-कष्ट भुगतने को व्यक्ति विवश होता है।

व्यक्ति के बचपन से उसके विकास को दुष्प्रभावित करने वाले तथा भावी जीवन को दु:ख-बाधा पूर्ण बनाने वाले कुछ सम्भावित कारण हैं—(i) बचपन में ही माता-पिता का साया सिर से उठ जाना, (ii) माता और पिता के बीच खटपट-मन-मुटाव रहना अथवा माता-पिता को अपने श्रम पर निर्भर रहना। उसे सदैव स्मरण रखना चाहिए कि उसे स्वयं अपनी कठिनाइयों के बीच में से अपने लिए मार्ग बनाना

है और समय से अपनी उपलब्धि के अवसर को बलपूर्वक खींचना है (रेखाचित्र-358)।
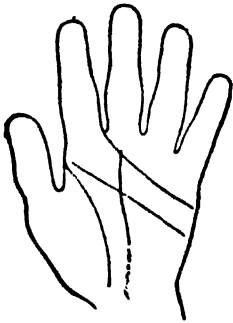
रेखाचित्र-358
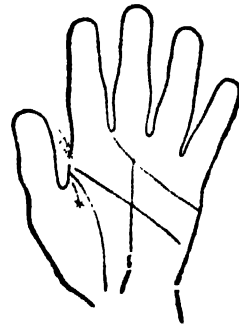
रेखाचित्र-359

शनि रेखा की जीवनावधि में ही व्यक्ति को अपना अभीष्ट पाने के लिए यत्नशील होना चाहिए, अन्यथा शनि रेखा के रुकने पर व्यक्ति को कुछ भी पाने के लिए अपेक्षा और आवश्यकता से कहीं अधिक प्रयास करना होगा।

शनि रेखा के आरम्भ में दीखने वाला तथा व्यक्ति के बचपन की किसी बाधा को दिखाने वाला दोष तो पूर्ववत् ही बना रहता है, उसकी स्थिति और परिणति में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं आता। हां, छोटी प्रभावी रेखा की शुक्र पर्वत पर स्थित एक नक्षत्रचिह्न में समाप्ति और शनि रेखा की शृंखला-जैसी आकृति से व्यक्ति के बचपन पर माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु का गहरा प्रभाव पड़ना सूचित होता है (रेखाचित्र-359)। नक्षत्रचिह्न के जीवन रेखा पर पहुंचने की दूरी से मरने वाले—माता अथवा पिता—की आयु का अनुमान लगाया जा सकता है और शनि रेखा से व्यक्ति के जीवन में सुधार का भी पता लगाया जा सकता है।

निम्नोक्त लक्षणों—(i) छोटी प्रभावी रेखा की नक्षत्रचिह्न में पहुंचते ही समाप्ति तथा (ii) नक्षत्रचिह्न से निकलती चिन्ता रेखा का जीवन रेखा की ऊपरी शाखा को काटना और मस्तक रेखा पर स्थित द्वीपचिह्न पर समाप्ति से व्यक्ति के बचपन में ही उसके माता अथवा पिता की मृत्यु से उसके जीवन में बाधाओं का आना सूचित होता है। यह बाधा ऐसी होती है कि जिससे न केवल व्यक्ति की उन्नति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है, अपितु उसकी कार्यक्षमता के साथ मानसिक शक्ति भी बुरी तरह से प्रभावित होती है (रेखाचित्र-360)।

शनि रेखा में मिलने वाले द्वीपों का सम्बन्ध प्रायः आजीविका में बाधा, दाम्पत्य-जीवन में (पति-पत्नी की एक-दूसरे के प्रति) निष्ठा का अभाव अथवा दोनों अथवा दोनों में से किसी एक की चरित्रहीनता से माना जाता है, परन्तु प्राचीन

हस्तरेखाशास्त्रियों का अनुभव है कि द्वीपचिह्न सदैव किसी समस्या से सम्बन्ध रखने वाले होते हैं। स्त्रियों के सतीत्व को नैतिकता से न जोड़ने वाले देशों में भ्रष्ट—
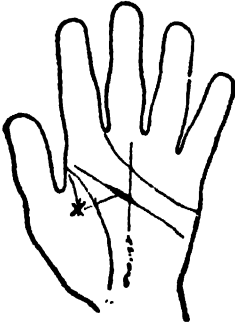
रेखाचित्र-360
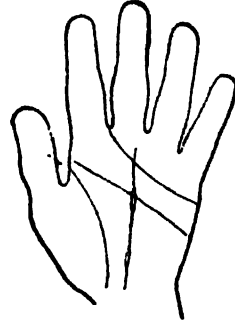
रेखाचित्र-361

आजीविका के लिए शरीर को बेचने वाली—स्त्रियों के हाथों में इन द्वीपचिह्नों को देखकर इन्हें अनैतिकता अथवा चरित्रहीनता का प्रतीक मान लिया गया। इस सम्बन्ध में अभी तक बहुत भ्रान्तियां और ग़लत-सही धारणाएं बनी हुई हैं। निश्चित रूप से कुछ कहना अभी तक सम्भव ही नहीं हो सका (रेखाचित्र-361)। फिर भी इतना तो निश्चित है कि द्वीपचिह्न का सम्बन्ध आर्थिक कष्ट से है और आर्थिक परेशानी द्वीप द्वारा रेखा की लम्बाई के भीतर रहने की अवधि तक बनी रहती है। इस प्रकार आज इस चिह्न को चरित्रहीनता के रूप में नहीं देखा जाता। हज़ारों वित्त-संकट के शिकार व्यक्तियों के हाथों पर ऐसे चिह्नों की जांच-परख के उपरान्त ही यह निष्कर्ष निकाला गया है और जिन चरित्रहीन व्यक्तियों के हाथों में ये चिह्न देखने को मिले, उनकी परिस्थितियों के गहन विवेचन से भी यही पता चला कि उनकी चरित्रहीनता का कारण भी उन पर आया वित्तीय संकट ही है।
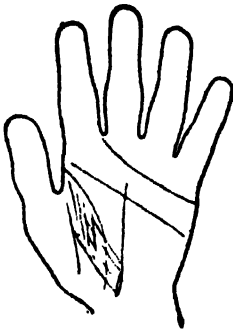
रेखाचित्र-362
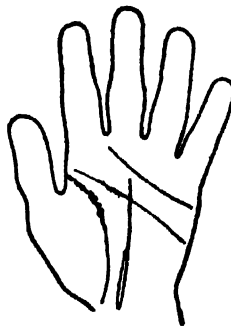
रेखाचित्र-363
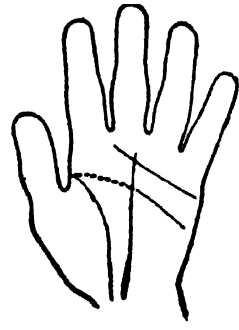
रेखाचित्र-364

शनि रेखा के आरम्भ में द्वीप का मिलना व्यक्ति की आचारनिष्ठा के अभाव का

प्रतीक बन ही नहीं सकता; क्योंकि इतनी छोटी आयु में निष्ठा शब्द से व्यक्ति का परिचय ही नहीं होता। हां, व्यक्ति के माता-पिता की आर्थिक कठिनाई का शिकार स्वयं व्यक्ति को भी बनना पड़ सकता है। शुक्र पर्वत की प्रभावी रेखाओं से निकलती और शनि रेखा में द्वीपचिह्न तक जाती चिन्ता रेखाओं से इस स्थिति का पता चल जाता है (रेखाचित्र-362)।

जीवन रेखा के आरम्भ में चौड़ी अथवा सतही अथवा शृंखलाकार अथवा द्वीपाकार अथवा विखण्डित अथवा विशृंखलित होने के साथ-साथ आगे भी ऐसा ही बना रहने तथा शनि रेखा के आरम्भ में द्वीपचिह्न के दिखाई देने से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति को अपने ख़राब स्वास्थ्य के कारण अपने आरम्भिक जीवन (बचपन, जवानी) में अनेक कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं और यह स्थिति शनि रेखा के न सुधर पाने तक बनी ही रहती है (रेखाचित्र-363)।

मस्तक रेखा का आरम्भ में ही दोषपूर्ण पाया जाना और शनि रेखा के आरम्भ में द्वीपचिह्न के मिलने से व्यक्ति की बुद्धि की कमी के कारण आजीविका के मार्ग में उसके द्वारा बाधाओं का सामना करना सूचित होता है। वस्तुत: स्वास्थ्य में विकृति आने पर जीवन रेखा का तथा हाथ के अन्य भागों का भी प्रभावित-दुर्बल होना स्वाभाविक ही होता है (रेखाचित्र-364)।

किसी छोटी प्रभावी रेखा का शुक्र पर्वत पर एक नक्षत्रचिह्न के साथ प्रकट होना तथा शनि रेखा के आरम्भ में एक द्वीपचिह्न पर समाप्त होना सूचित करता है कि माता अथवा पिता की मृत्यु के कारण व्यक्ति को बचपन में आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है (रेखाचित्र-365)। चिन्ता रेखाओं के इस नक्षत्र से द्वीप की ओर जाने से इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है।
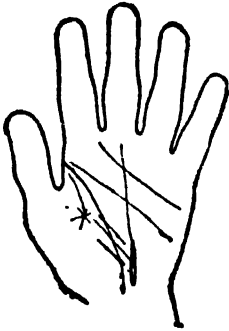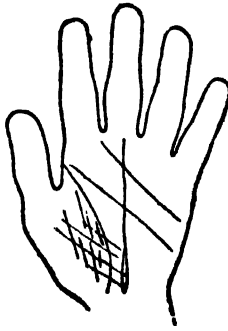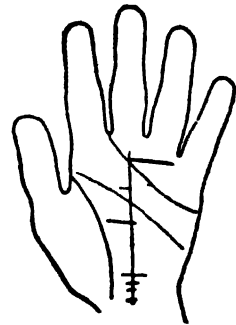
रेखाचित्र-365 *रेखाचित्र-366* *रेखाचित्र-367*

शुक्र पर्वत की प्रभावी रेखाओं से निकलती चिन्ता रेखाओं के शनि रेखा के आरम्भ में स्थित द्वीप तक जाने से सूचित होता है कि व्यक्ति अपने बचपन के संकटों के कारण अपनी प्रगति को अवरुद्ध पाता है (रेखाचित्र-366)।

चिन्ता रेखाओं से जीवन रेखा के कटने को शनि रेखा पर द्वीप के प्रभावी होने का संकेत समझना चाहिए।

हाथ में स्थित विभिन्न संकेतों से शनि रेखा के आरम्भ में बनने वाले द्वीपों की उत्पत्ति के कारण का पता चल जाता है। सामान्यत: इन संकेतों का सम्बन्ध या तो स्वास्थ्य से होता है और या फिर ये वंशानुगत होते हैं। तर्क, अनुमान और अनुभव से वास्तविकता का पता लगाना सम्भव होता है। यहां किसी द्वीप के दीखने पर प्रत्येक रेखा का अध्ययन करके दोषों का पता लगाना चाहिए। शुक्र पर्वत पर प्रभावी रेखाओं का निरीक्षण भी वाञ्छनीय है। बन्धु-बान्धवों की भूमिका को जानने के लिए पर्वतों पर उभरे स्वास्थ्य-विकार-सूचक संकेतों तथा इन दोषों को दर्शाती और द्वीप की ओर जाती आकस्मिक रेखाओं की जांच-परख भी आवश्यक होती है।

शनि रेखा को काटने वाली आड़ी रेखाएं व्यक्ति के जीवन में आने वाली बाधाओं और रुकावटों की सूचक होती हैं (रेखाचित्र-367)। ऐसी प्रत्येक रेखा एक-एक पृथक् बाधा की सूचक है और प्रत्येक रेखा की गहराई के अनुपात से समस्या की गम्भीरता के अनुपात को समझना चाहिए। शनि रेखा को काटकर जाने के स्थान पर लांघकर जाने वाली रेखा के साथ-साथ धुंधली और अस्पष्ट रेखाएं निरन्तर कष्ट देने वाली बाधाओं-हस्तक्षेपों की सूचक होती हैं। शनि रेखा को दो भागों में बांटने वाली ये रेखाएं तो सफलता के मार्ग में गम्भीर बाधा बनने के स्तर तक ख़तरनाक होती हैं।

व्यक्ति की आयु में प्रत्येक बाधा के प्रकट होने के समय को जानने के लिए, शनि रेखा से उसकी गम्भीरता को काटने वाली रेखा की गहराई के कारण को जानने के लिए अन्य रेखाओं और चिह्नों का तथा इसके परिणाम को जानने के लिए, शनि रेखा की समापन-स्थिति का अध्ययन करना चाहिए।
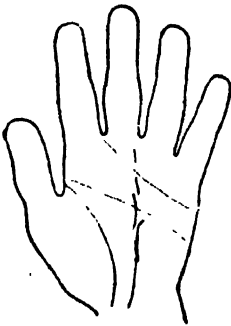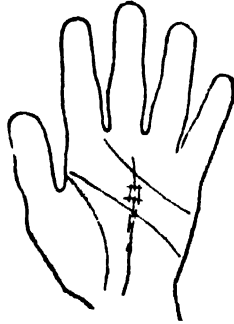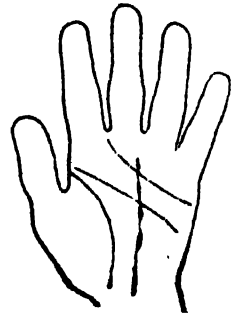
रेखाचित्र-368 *रेखाचित्र-369* *रेखाचित्र-370*

रेखा में विच्छेद सर्वाधिक गम्भीर संकेत होते हैं (रेखाचित्र-368)। किसी

अत्यन्त सशक्त बल से रेखा का टूटना सम्भव होता है और यह टूटन व्यक्ति की आजीविका को एकदम बाधित कर देती है। विच्छेद के कारण रेखा के स्वरूप के बदलने पर व्यक्ति की आजीविका की दिशा भी बदल जाती है। इसी प्रकार रेखा का वहीं पर रुक जाने का अर्थ है—व्यक्ति की आजीविका का पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो जाना।

शनि रेखा के बार-बार टूटने का अर्थ है—व्यक्ति का लगातार असफलता के झटकों का सहना तथा निरन्तर कष्टों को झेलते हुए कठोर श्रम करना। प्रत्येक विच्छेद किसी पृथक् संकट का सूचक होता है। इसकी स्थिति—सामान्य, मध्यम अथवा गम्भीर होना—मात्रा—न्यूनता अथवा अधिकता तथा सुधार की स्थिति और सम्भावना आदि की जानकारी के लिए शनि रेखा का अध्ययन करना चाहिए।

शनि रेखा में कई स्थानों पर विच्छेद और सुधार से संकेत मिलता है कि व्यक्ति अनेक झटके झेलने के उपरान्त अन्ततः अपने संघर्ष में सफलता प्राप्त कर ही लेगा (रेखाचित्र-369)। ऐसे व्यक्ति का संघर्ष जहां निरन्तर चलने वाला होता है, वहां उसकी संकल्पशक्ति भी प्रबल और उत्कट होती है। शनि रेखा के विच्छेदों से निष्कर्ष निकालते समय दोनों हाथों का अध्ययन अपेक्षित होता है।

शनि रेखा में स्थित सभी अवरोध—प्राकृतिक विधान के ही विभिन्न रूपों—व्यक्ति का स्वभाव, व्यक्ति के कर्त्तव्यनिर्धारण में आने वाली न्यूनताओं—त्रुटियों तथा स्वास्थ्य की विकृतियों आदि—और उनके परिणाम होते हैं। अतः उनका भली-भांति विश्लेषण करना आवश्यक है।

अनेक व्यक्तियों के दायें हाथ की अपेक्षा उनके बायें हाथ में शनि रेखा अधिक अच्छी स्थिति में पायी जाती है, जिससे यह सूचित होता है कि हम अपने अनेक संकटों के लिए स्वयं ही उत्तरदायी हैं। शनि रेखा का विषम अथवा ऊबड़-खाबड़ होने के स्थान पर उसका गहरा-पतला होने का अर्थ है—व्यक्ति का सुख-समृद्धि से सम्पन्न होना (रेखाचित्र-370)। ऐसी रेखा वाले व्यक्तियों को अच्छे दिनों की कमाई को बुरे दिनों में गंवाने से बचाने के लिए सदैव सतर्क रहना चाहिए। रेखा के कभी गहरा-पतला होने से और कभी ऊंचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़ होने से यह सूचित होता है कि व्यक्ति अविश्वसनीय एवं परिवर्तनीय स्थितियों से गुज़रता है, जिसका अर्थ है कि एक समय वह अच्छे, तो दूसरे समय बुरे समय को देखता है।

शनि रेखा का लहरदार होना व्यक्ति द्वारा अपनी जीवन दिशा (कारोबार) को बार-बार बदलते रहने का सूचक है (रेखाचित्र-371)। इस रेखा के लहरदार होने से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति को आजीविका के उपार्जन में कठोर श्रम करना और भारी कष्ट उठाना पड़ता है।

जीवन रेखा का आरम्भ-स्थल पर गहरा होना और मस्तक रेखा पर जाकर

उसका रुक जाना सूचित करता है कि व्यक्ति की 30 वर्ष की आयु तक तो उसकी आजीविका ठीक-ठाक चलती है, परन्तु उसके पश्चात् उसके द्वारा लिये गये ग़लत निर्णयों के कारण उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है (रेखाचित्र-372)। ऐसे व्यक्ति को किसी दैवी चमत्कार की आशा न करके प्रसन्न रहकर क्रूर काल के हाथ से अवसर छीनने होते हैं। उन्हें अपने श्रम और निष्ठा पर भरोसा होता है। वे मानकर चलते हैं कि जब कठोर श्रम किया जायेगा, तो फल का मिलना निश्चित ही है। उसे कौन रोक सकता है? यही कारण है कि वे न तो अभाव का रोना रोते हैं और न कठिनाइयों से घबराते हैं और न ही कठोर श्रम से जी चुराते हैं। यही कारण है कि वे अन्ततः सफलता को हस्तगत कर ही लेते हैं। वस्तुतः शनि रेखा से रहित व्यक्तियों की सफ़लता का रहस्य श्रम पर उनका दृढ़ विश्वास होता है। वे भाग्य पर नहीं, कर्म में आस्था रखते हैं।
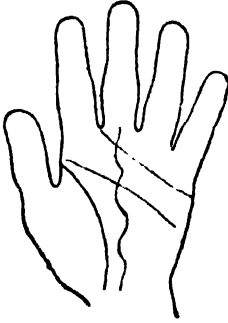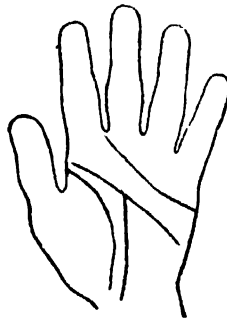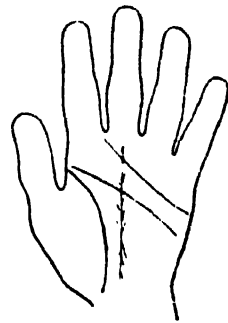
रेखाचित्र-371 *रेखाचित्र-372* *रेखाचित्र-373*

कुछ शनि रेखाओं में से निकलती छोटी-छोटी पतली रेखाएं ऊपर अथवा नीचे की ओर जाती हैं (रेखाचित्र-373)। ऊपर की ओर जाने वाली रेखाएं व्यक्ति के जीवन को ऊपर की ओर ले जाने वाली व अपनी स्थिति से रेखा की शक्ति को बढ़ाने वाली होती हैं। ये रेखाएं अपने स्थान वाले भाग को आशा-आकांक्षा से भरपूर कर देती हैं, जिसका अर्थ व्यक्ति के लिए यह समय सर्वाधिक अनुकूल सफलता लाने वाला एवं भाग्यशाली होता है।

इसके विपरीत शनि रेखा से निकलती रेखाओं का नीचे की ओर जाने से इस अवधि का व्यक्ति के लिए कष्टकर और कठिनाइयों से भरा होना सूचित होता है, जिससे व्यक्ति के लिए प्रगति कर पाना कठिन होता है और वह इससे निरन्तर निराश एवं कुण्ठाग्रस्त रहता है। रेखाओं के ऊर्ध्वमुखी रहने पर व्यक्ति की शारीरिक शक्तियों का उत्कृष्ट रूप में और अधोमुखी होने पर निकृष्ट रूप में मिलना पाया जाता है।

शनि रेखा पर शाखाओं के अधोमुखी होने के साथ-साथ जीवन रेखा में द्वीप-चिह्नों के पाये जाने से व्यक्ति के स्वास्थ्य के क्षीण होने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-374)। शनि रेखा पर अधोमुखी रेखाओं के दीखने के समय मस्तक रेखा अथवा हृदय रेखा पर एक द्वीपचिह्न दीखने का अर्थ है—व्यक्ति का मस्तिष्क रोग अथवा हृदय रोग से पीड़ित होना। जिस रेखा पर द्वीपचिह्न होगा, व्यक्ति का वही अंग—मस्तिष्क अथवा हृदय—प्रभावित होगा, अर्थात् व्यक्ति उस अंग की विकृति (मस्तिष्क-विकार अथवा हृदय-विकार) का शिकार होगा (रेखाचित्र-375)।
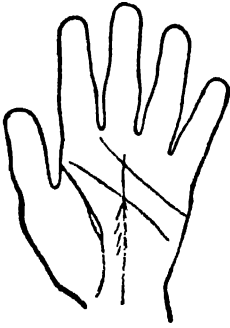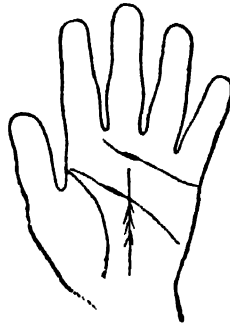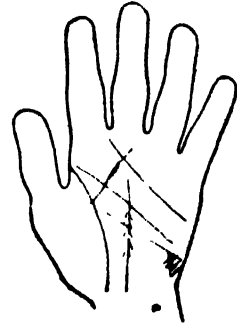
रेखाचित्र-374 *रेखाचित्र-375* *रेखाचित्र-376*

शनि और चन्द्र पर्वतों के मध्य में सन्धिवात के लक्षणों का और शनि रेखा पर अधोमुखी रेखाओं के दिखाई देने से संकेत मिलता है कि व्यक्ति सन्धिवात अथवा गठिया रोग से पीड़ित है। इस रोग की स्थिति में जीवन रेखा भी सामान्यत: दोषग्रस्त पायी जाती है (रेखाचित्र-376)। अधोमुखी शाखाओं द्वारा निर्दिष्ट अवधि में स्वास्थ्य-विकार के कारणों से हाथ के अन्यान्य भागों में प्रकट होने वाले दोषों को जाना जा सकता है। शनि रेखा पर शाखाओं के ऊर्ध्वमुखी होने को व्यक्ति के अनुकूल—प्रगति की ओर ले जाने वाला—समय आने का संकेत समझना चाहिए। इसके विपरीत अधोमुखी शाखाएं सदैव किसी-न-किसी विकृति की सूचक होती हैं। अत: हस्तरेखावेत्ताओं को इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। शनि के ऊपर से गुज़रती शाखाओं के साथ शुक्र पर्वत से निकलती चिन्ता रेखाओं द्वारा जीवन रेखा को काटने का अर्थ है—व्यक्ति की प्रगति में बार-बार आने वाली बाधाओं से उसके जीवन का असफल एवं दु:खमय होना (रेखाचित्र-377)। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस प्रकार बार-बार आने वाली बाधाएं उसके अनुकूल हुए समय के प्रभाव को समग्रत: समाप्त तो नहीं कर पातीं, पुनरपि व्यक्ति को पटकनी तो देती ही रहती हैं, जिससे व्यक्ति बुरी तरह से परेशान हो जाता है।

अनेक व्यक्तियों के हाथों में दोनों रेखाएं—शुक्र पर्वत से निकली रेखाएं तथा

अन्य भागों से निकली आकस्मिक रेखाएं—शनि रेखा को काटकर आपस में जुड़ती हुई पायी जाती हैं (रेखाचित्र-378)। रेखाओं से भरे हाथों में यह स्थिति प्रायः ही देखने को मिलती है। प्रत्येक घटना अथवा रोग का व्यक्ति के जीवन पर कुछ-न-कुछ प्रभाव पड़ना सुनिश्चित है। कुछ घटनाओं का प्रभाव निस्सन्देह व्यक्ति के लिए हानिकारक होता है, तो कुछ घटनाएं व्यक्ति के अभ्युदय में सहायक और उसके सामर्थ्य में वृद्धि करने वाली भी होती हैं।
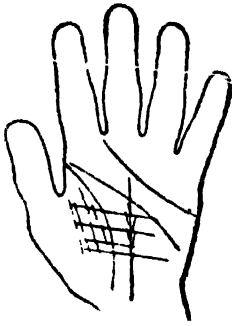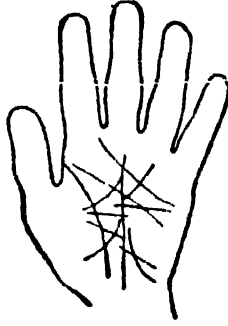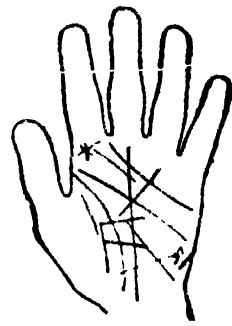
रेखाचित्र-377 *रेखाचित्र-378* *रेखाचित्र-379*

सामान्य सिद्धान्त यह है—शनि रेखा को काटने वाली सभी रेखाएं व्यक्ति की शक्ति को क्षीण करने वाली होती हैं। ये रेखाएं शनि रेखा को जहां जहां काटती हैं, व्यक्ति को उस आयु में अपनी प्रगति के मार्ग में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। (रेखाचित्र -379)। इसके विपरीत रेखाएं शनि रेखा को सुदृढ़ और सशक्त बनाती हैं। इस प्रकार हाथ के सभी भागों से निकलती कुछ रेखाएं व्यक्ति की उन्नति में बाधक हैं, तो कुछ रेखाएं साधक भी हैं। इस अन्तर—कौन-सी रेखाएं अनुकूल हैं और कौन-सी प्रतिकूल—को समझने के लिए रेखाओं के आरम्भ होने के स्थान का परीक्षण करना चाहिए।

बृहस्पति पर्वत पर स्थित किसी एक नक्षत्र से निकलती किसी एक आकस्मिक रेखा द्वारा शनि रेखा को काटने से व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा को गहरा आघात लगना सूचित होता है। व्यक्ति कतिपय महत्त्वपूर्ण एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों से सम्पर्क साधने के प्रयास में कुछ ऐसी मूर्खता कर बैठता है कि उसे लेने के देने पड़ जाते हैं (रेखाचित्र-380)।

आकस्मिक रेखा के शनि रेखा पर स्थित द्वीप से मिलने पर सूचित होता है कि व्यक्ति प्रथम एवं अग्रणी रहने की अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए पानी की तरह पैसा लुटाता है और फिर आर्थिक तंगी का शिकार हो जाता है (रेखाचित्र-381)। निकृष्ट बुधप्रधान व्यक्ति के हाथ में पर्वत का जालदार होना तथा बुध पर्वत

से निकली आकस्मिक रेखा द्वारा मुड़ी हुई अंगुली और बुध के बड़े तृतीय पर्व के साथ शनि रेखा को काटना इस बात का संकेत है कि व्यक्ति परले दरजे का झूठा और
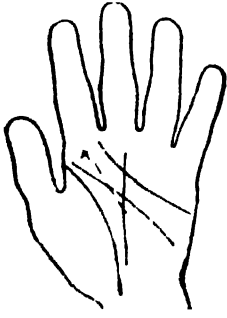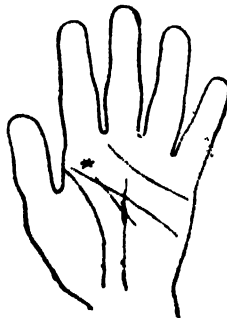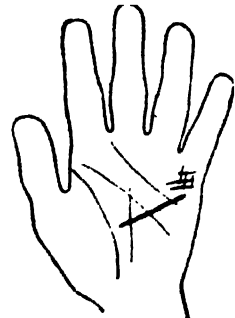
रेखाचित्र-380 *रेखाचित्र-381* *रेखाचित्र-382*

बेईमान होता है। अपने इन्हीं दुर्गुणों से ही वह संकट-ग्रस्त होता है (रेखाचित्र-382)। व्यक्ति के प्रकार की जानकारी जहां इस प्रकार के तथ्यों को जानने में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होती है, वहां शनि रेखा के अन्त से काट के परिणाम का अनुमान भी हो जाता है।
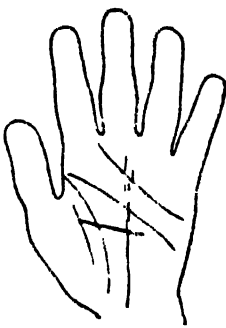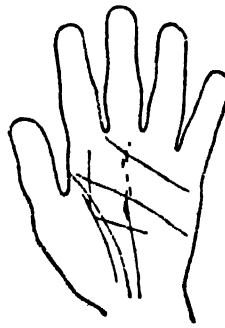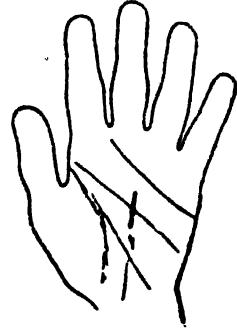
रेखाचित्र-383 *रेखाचित्र-384* *रेखाचित्र-385*

शुक्र पर्वत पर किसी प्रभावी रेखा से निकलती किसी रेखा द्वारा शनि रेखा को काटना और फिर शनि रेखा का टूट जाना तथा शेष मार्ग में उसका इसी टूटी हुई स्थिति में रहना संकेतित करता है कि व्यक्ति पर किसी व्यक्ति का पड़ने वाला अथवा पड़ रहा प्रभाव अनिष्टमूलक है (रेखाचित्र-383)। इस प्रभाव से व्यक्ति का कोई हित होने वाला नहीं है। पति अथवा पत्नी की ऐसी प्रभावी रेखा की सही पहचान कर लेने पर और इससे एक आकस्मिक रेखा को बृहस्पति पर्वत की ओर जाता देखने पर हस्तरेखाशास्त्री पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता है कि पति को पत्नी की

अथवा पत्नी को पति की महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए सामर्थ्य से अधिक ख़र्च करने को बाध्य होना पड़ रहा है। शनि रेखा के उसके आगे पूरे मार्ग में दोषपूर्ण रहने से संकेत मिलता है कि व्यक्ति की कभी विपत्तियों से निकल पाने की कोई सम्भावना ही नहीं है (रेखाचित्र-384)।

दोषपूर्ण जीवन रेखा से निकलने वाली चिन्ता रेखाओं के कारण व्यक्ति उन्नति नहीं कर पाता (रेखाचित्र-385)।
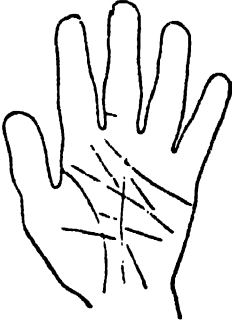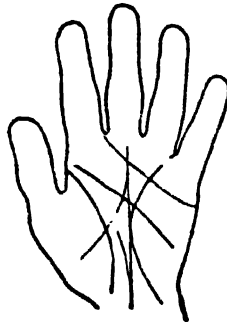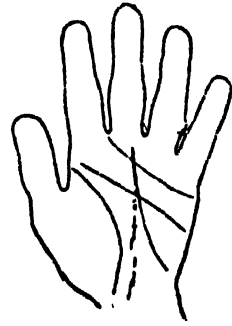
रेखाचित्र-386 *रेखाचित्र-387* *रेखाचित्र-388*

शनि रेखा को काटने वाली आकस्मिक रेखाएं अपने संयोजन-सम्मिश्रण से अनेक रूप धारण कर लेती हैं। कुछ हाथों में शनि रेखा को काटने वाली ऐसी रेखाओं में से प्रत्येक रेखा किसी निम्न स्रोत से आने वाली बाधा का प्रतीक होती है। अत: काटने वाली प्रत्येक रेखा की पृथक् रूप से जांच करनी चाहिए। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि बहुत-सारी आकस्मिक रेखाएं शनि रेखा की ओर जाती अवश्य हैं, परन्तु उसे छूती नहीं हैं (रेखाचित्र-386)। इन रेखाओं को उनके स्रोत के अनुसार व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने में असफल रहने वाली घटनाओं का प्रतीक समझना चाहिए। ये रेखाएं अपने साथ किसी संकट की सम्भावना को अवश्य लिये रहती हैं, परन्तु शनि रेखा को न काटने तक ये किसी ख़तरे का कारण नहीं बनती।

शनि रेखा में जाकर विलीन हो जाने वाली कुछ रेखाएं व्यक्ति के जीवन में घर कर चुकी और उसके जीवन का अंग बन चुकी घटनाओं अथवा प्रभावों की सूचक होती हैं। ये रेखाएं शनि रेखा को नहीं काटतीं। अत: व्यक्ति के जीवन में बाधक भी नहीं बनतीं (रेखाचित्र-387)।

शनि रेखा का किसी और प्रकार से पतला अथवा दोषपूर्ण होना तथा प्रभावी रेखाओं का गहरी-प्रबल होना यह बताता है कि यह समय व्यक्ति की समृद्धि को बढ़ाने वाला और कठिनाइयों से पार ले जाने वाला है। शनि रेखा का आरम्भ में

शृंखलाकार व अन्यत्र दोषपूर्ण होना, एक आकस्मिक रेखा का आकर उसमें मिलना और फिर शनि रेखा का गहरी हो जाना सूचित करता है कि व्यक्ति अपने पर पड़ने वाले प्रभाव से लाभान्वित हुआ है और उसकी स्थिति सुधरी है। हां, चन्द्र पर्वत से आती इस रेखा को बाहरी रेखा समझना चाहिए (रेखाचित्र-388)।

शुक्र पर्वत से आती ऐसी रेखा से व्यक्ति का किसी समीपवर्ती सम्बन्धी से प्रभावित होना सूचित होता है (रेखाचित्र-389)।
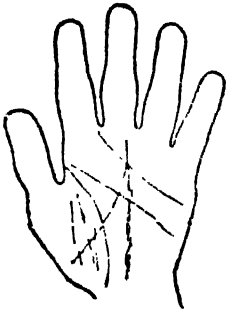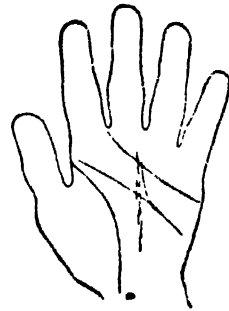
रेखाचित्र-389 *रेखाचित्र-390* *रेखाचित्र-391*

आकस्मिक रेखाओं के शनि रेखा में जाकर मिलने वाले स्थान से निर्दिष्ट आयु में इनका अच्छा प्रभाव पड़ता है। शनि रेखा की परवर्ती स्थिति से व्यक्ति को प्रभाव से प्राप्त शक्ति का पता चलता है।

किसी आकस्मिक रेखा के प्रारम्भ से ही दोषपूर्ण शनि रेखा में विलीन होने के उपरान्त शनि रेखा के क्षीण होने से उत्पन्न प्रभाव अनिष्ट-मूलक होता है, परन्तु इसके विपरीत शनि रेखा का गहरा हो जाना प्रभाव के अत्यधिक लाभकारी होने का सूचक है। शनि रेखा को स्पर्श किये बिना ही उसके साथ-साथ चलती आकस्मिक रेखाएं व्यक्ति की आजीविका पर भारी प्रभाव डालती हैं। वे न केवल व्यक्ति की सहायता करती हैं, अपितु उसे सहारा देकर सहायक रेखाओं का कार्य भी करती हैं (रेखाचित्र-390)। इन रेखाओं के उद्गम-स्थल से, इनकी प्रकृति से तथा शनि रेखा पर पड़ने वाले इनके प्रभाव से इनकी सहायता करने की शक्ति मालूम हो जाती है।

विशृंखलित शनि रेखा के साथ-साथ चलती मस्तक रेखा से निकलने वाली ...कस्मिक रेखा कठिन परिस्थितियों में व्यक्ति की निर्णय लेने की शक्ति का ...र्यजनक रूप से विकास करती है (रेखाचित्र-391)। इन सभी अवस्थाओं में ... दोषों के कारणों का और पुनः सुधार के संकेतों को ढूंढ़ना चाहिए।

...र्ण शनि रेखा के साथ-साथ चलती किसी आकस्मिक रेखा का समतल,

उत्तम एवं ऊर्ध्व मंगल पर्वत क्षेत्र से निकलना सूचित करता है कि पर्वत की प्रतिरोधक शक्ति व्यक्ति को असफलताओं से निराश एवं कुण्ठित नहीं होने देगी। व्यक्ति अपने दृढ़संकल्प से सभी उपस्थित-सम्भावित कठिनाइयों पर विजय पाने में सफल होगा (रेखाचित्र-392)।
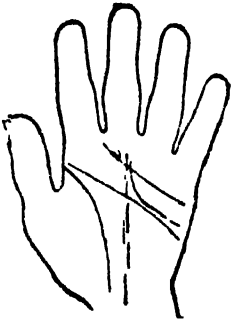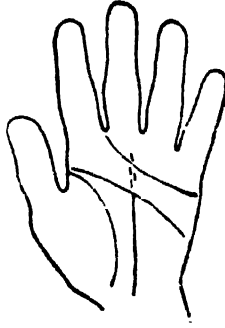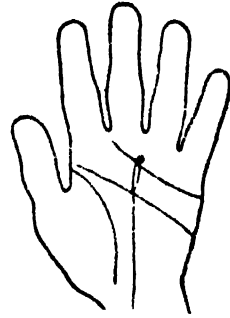
रेखाचित्र-392 *रेखाचित्र-393* *रेखाचित्र-394*

अधिकांश हाथों में शनि रेखा मे सर्वाधिक दोष दिखाने वाले दो स्थान होते हैं। प्रथम, व्यक्ति के बचपन की घटनाओं का सूचक प्रारम्भिक स्थल। इस अवधि में इससे व्यक्ति के जीवन के प्रारम्भ होने की जानकारी मिलती है। शनि रेखा का गहरा व सशक्त रूप व्यक्ति के जीवन के प्रारम्भ का कठिनाइयों से रहित होने का संकेत देता है। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्राय: देखने में आया है कि सुख-सुविधा में बचपन बिताने वाले व्यक्तियों को बाद में कष्ट उठाने पड़ते हैं। कष्ट सहने के अभ्यस्त न होने के कारण ये लोग थोड़े-से कष्ट से ही विचलित हो जाते हैं। वस्तुत: प्रत्येक व्यक्ति को यह स्मरण रखना चाहिए कि सब दिन एक समान नहीं होते। सुख-दु:ख का चक्र तो चलता ही रहता है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को थोड़ा-बहुत कष्ट सहने के लिए तैयार ही नहीं रहना चाहिए, अपितु अभ्यस्त भी होना चाहिए। आरम्भ में दोषपूर्ण शनि रेखा लिये रहने वाले व्यक्ति बचपन से कष्ट झेलने और बचाव करने के आदी होने के कारण प्राय: बाद में संभल जाते हैं और अपना बचाव करना भी सीख जाते हैं। कठिनाइयों वाला दूसरा समय, व्यक्ति की 30-45 वर्ष की आयु का है। अधिकांश हाथों में मस्तक रेखा और हृदय रेखा के बीच की दूरी से इसे मापा जा सकता है। व्यवसायियों और उद्योग-धन्धा करने वालों के लिए यह समय विशेष महत्त्व लिये रहता है। माता-पिता अथवा सम्बन्धियों द्वारा व्यक्ति की उचित-अनुचित ढंग से बचपन में की गयी देखभाल की जानकारी उसके हाथों से मिल जाती है। हाथ बता देते हैं कि इससे पूर्व व्यक्ति को किस प्रकार का पथ-प्रदर्शन मिला है। व्यक्ति को दूसरों से सहायता की अपेक्षा जितनी घटती जाती है,

उसका आत्मविश्वास उतना अधिक बढ़ता जाता है। वह अपने ऊपर और अपने चिन्तन पर अधिकाधिक भरोसा करने लगता है। अच्छे विचारों वाले व्यक्ति तो सफलता के शिखर पर पहुंच जाते हैं, परन्तु सुलझे विचार न रखने वाले और दूसरों के अनुभव पर निर्भर रहने वालों को इसका मूल्य चुकाने को विवश होना पड़ता है। मस्तक रेखा और हृदय रेखा के मध्यवर्ती अन्तराल से निर्दिष्ट होने वाले जीवनकाल में शनि रेखा सर्वाधिक दोषपूर्ण रहती है। बाल्यावस्था और 25 वर्ष की आयु की अवधि में शनि रेखा प्राय: गहरी होती है। 30-45 की अवधि में बहुत कम हाथों में शनि रेखा निर्दोष मिलती है (रेखाचित्र-393)। बाद में यह रेखा अपने आप स्पष्ट-निर्दोष हो जाती है और 45 वर्ष के पश्चात् तो प्राय: लुप्त हो जाती है। 30-45 वर्षों की अवधि में शनि रेखा में विद्यमान दोष रेखा के अनुपात में अनर्थकारी होते हैं। शनि रेखा मस्तक रेखा के समीप आते ही पतली हो जाती है। यदि गहरी-सशक्त रहती है, तो उसमें कटाव-जैसे कई दोष प्रकट हो जाते हैं।

मस्तक रेखा और हृदय रेखा का मध्यवर्ती द्वीपों से भरा स्थान पूर्ण अवधि में व्यक्ति के आर्थिक कठिनाइयों से जूझते रहने का संकेत देता है (रेखाचित्र-394)।
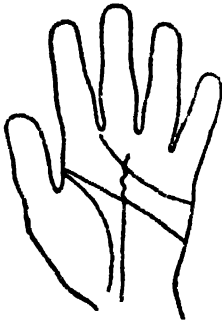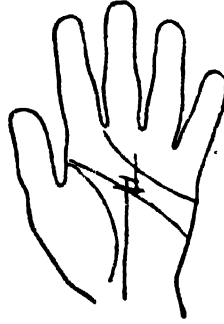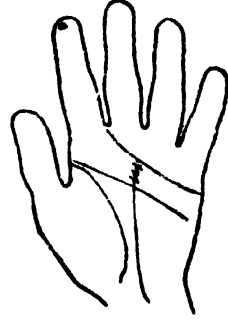
रेखाचित्र-395 *रेखाचित्र-396* *रेखाचित्र-397*

इस अवधि में शनि रेखा का लहरदार हो जाना व्यक्ति द्वारा जीवनवृत्ति (नौकरी, व्यापार तथा उद्योग) को बदलना सूचित करता है (रेखाचित्र-395)। रेखा के इस भाग में आये विच्छेद का किसी चिह्न द्वारा सुधार तथा इसकी एक भुजा का आगे बढ़ना जारी रहने से व्यक्ति द्वारा निर्दिष्ट आयु में गम्भीर निराशा का सफलतापूर्वक सामना करना सूचित होता है (रेखाचित्र-396)।

मस्तक रेखा और हृदय रेखा के मध्य में स्थित शनि रेखा का गुणनचिह्नों से ढका होने का अर्थ है—व्यक्ति द्वारा बार-बार असफलताओं का मुंह देखना और उनसे जूझना। इस अवधि में इस रेखा के आगे बढ़ने से व्यक्ति के इन असफलताओं से निपटने में समर्थ होने का और इसके विपरीत रेखा का आगे न बढ़ना व्यक्ति के

असफल रहने का सूचक है (रेखाचित्र-397)।

शनि रेखा के इस भाग का आड़ी रेखाओं द्वारा कटा होना व्यक्ति के काम-धन्धे में रुकावटें आने का संकेत है (रेखाचित्र-398)। शनि रेखा का इन आड़ी रेखाओं को काटकर आगे बढ़ना व्यक्ति के कठिनाइयों से पार जाने का तथा आड़ी रेखाओं द्वारा शनि रेखा का काटा जाना व्यक्ति के लिए कठिनाइयों से पार जाना श्रमसाध्य होने का सूचक है।
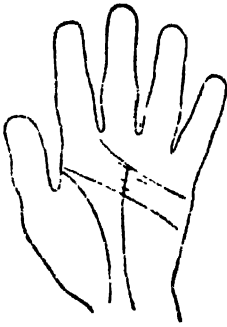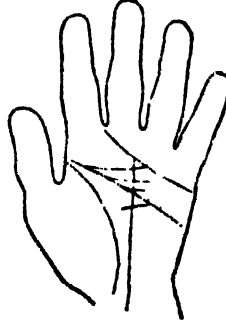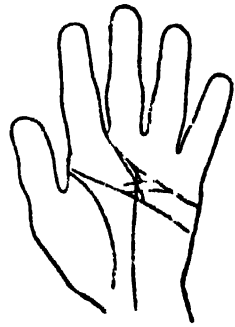
रेखाचित्र-398 *रेखाचित्र-399* *रेखाचित्र-400*

शनि रेखा के इस भाग के मस्तक रेखा से निकलती आकस्मिक रेखाओं द्वारा कटना व्यक्ति के निर्णय लेने में त्रुटियों के कारण कठिनाइयों का सामना करना सूचित होता है (रेखाचित्र-399)।

इस अवधि में हृदय रेखा से निकली आकस्मिक रेखा द्वारा शनि रेखा के कटने से व्यक्ति का भावुक होना और उसकी इस भावुकता का उसके कारोबार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना सूचित होता है (रेखाचित्र-400)।
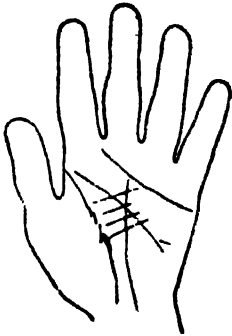
रेखाचित्र-401 *रेखाचित्र-402* *रेखाचित्र-40*
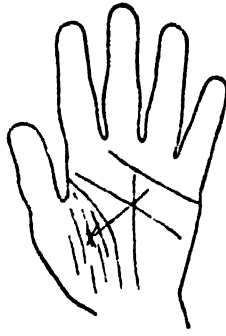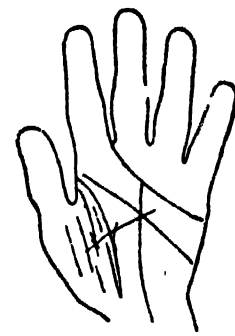
व्यक्ति की तीस से पैंतालीस वर्ष की आयु की अवधि में दोषपूर्ण जीवन रेखा

से निकली आकस्मिक रेखाओं के द्वारा शनि रेखा को काटने का अर्थ है—धन कमाने की प्रक्रिया में व्यक्ति के स्वास्थ्य के बिगड़ने के कारण उसकी उन्नति अवरुद्ध हो गयी है (रेखाचित्र-401)। इसी प्रकार किसी प्रभावी रेखा की शुक्र पर्वत पर स्थित नक्षत्रचिह्न में समाप्ति और उससे निकलती एक चिन्ता रेखा द्वारा मस्तक रेखा और जीवन रेखा के बीच शनि रेखा को काटने पर इस अवधि में व्यक्ति के सम्बन्धी की मृत्यु के कारण उसके कार्य-व्यापार में व्यवधान पड़ना सूचित होता है (रेखाचित्र-402)।

चिन्ता रेखा द्वारा जीवन रेखा से ऊपर को निकलती एक रेखा को काटने पर किसी सम्बन्धी की मृत्यु के कारण व्यक्ति की उन्नति का बाधित हो जाना सूचित होता है (रेखाचित्र-403)।
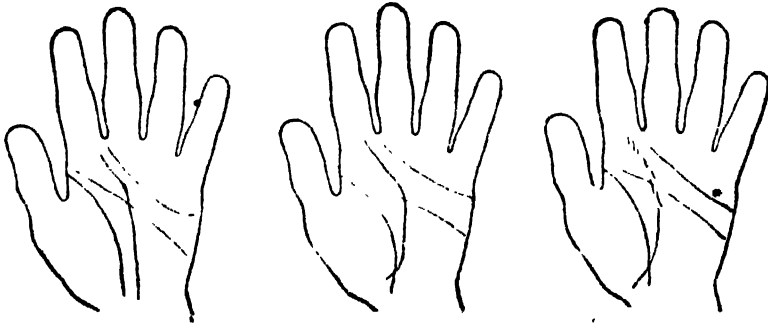
रेखाचित्र-404 *रेखाचित्र-405* *रेखाचित्र-406*

यहां यह उल्लेखनीय है कि शनि रेखा के किसी भी भाग के दोषों को प्रकट होने की आयु के सन्दर्भ में ही देखना अभीष्ट होता है। सभी रेखाएं अपने सभी दोषों को बाल्यकाल अथवा विकासकाल में प्रकट नहीं करती। अधिकांशत: इन दोनों कालावधियों में शनि रेखा के दोषपूर्ण पाये जाने के कारण इन पर बल दिया जा रहा है। रेखा के किसी एक भाग पर सभी सहायक रेखाओं का एक-जैसा ही प्रभाव पड़ता है।

हाथ के मूल भाग से निकलती और विभिन्न पर्वतों की ओर जाती किसी भी रेखा को शनि रेखा मानने की परम्परा का श्रेय समाप्ति-स्थल वाले पर्वत के गुणों को ही प्राप्त है। बृहस्पति पर्वत तक इस रेखा के चले जाने को अपवाद ही मानना चाहिए। शनि रेखा का हाथ के मध्य से होकर सामान्य दिशा में जाना और बृहस्पति पर्वत पर समाप्त होना सूचित करता है कि व्यक्ति की सफलता का रहस्य उसकी महत्त्वाकांक्षा है (रेखाचित्र-404)।

गहरी शनि रेखा का जीवन रेखा के भीतर से प्रकट होना और बृहस्पति पर्वत

पर जाकर समाप्त होने का अर्थ है—व्यक्ति की सफलता में उसकी महत्त्वाकांक्षा और सम्बन्धियों का सहयोग है (रेखाचित्र-405)।

जीवन रेखा के भीतर से प्रस्फुटित शनि रेखा का कुछ दूर तक गहरी रहकर फिर दोषपूर्ण हो जाने का अर्थ है—व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा और बन्धु-बान्धवों का सहयोग कुछ अंशों तक तो प्रभावी रहता है, परन्तु लक्ष्य प्राप्त नहीं करा सकता (रेखाचित्र-406)।

असफलता का कारण उसके प्रारम्भ के स्थल पर ही विद्यमान रहता है। इन कारणों में प्रमुख हैं—स्वास्थ्य का बिगड़ना, मनोबल का गिरना, प्रतिकूल वातावरण, तथा रोग-विशेष का आक्रमण आदि। शनि रेखा का इस रूप में दीखना, एक चिन्ता रेखा का जीवन रेखा से ऊपर की ओर निकलती रेखा को काटते हुए हाथ के पार निकल जाना और फिर आगे चलकर एक द्विशाखी प्रणय रेखा को काटना संकेतित करता है कि ग़लत विवाह के कारण व्यक्ति की प्रगति प्रभावित हुई है (रेखाचित्र-407)।
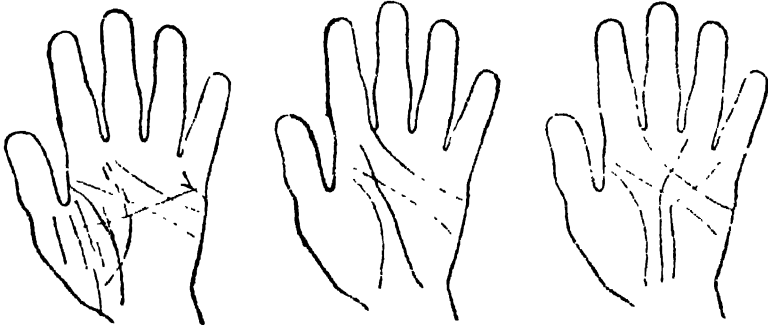
रेखाचित्र-407 *रेखाचित्र-408* *रेखाचित्र-409*

इस प्रकार आकस्मिक रेखाओं से किसी सम्बन्धी का वियोग, स्वास्थ्य की गड़बड़ी और बाहरी प्रभाव के संकेत मिलते हैं। ये रेखाएं समस्या की उत्पत्ति- स्थल से निकलकर शनि रेखा को काटती हुई जाती हैं। भले ही ये आकस्मिक रेखाएं शनि रेखा से प्रचण्ड दोषों का सम्बन्ध न बनायें, परन्तु यह तो निश्चित है कि यह दोष समस्या के कारण होते हैं। चन्द्र पर्वत से निकलती और बृहस्पति पर्वत तक पहुंचती शनि रेखा के स्पष्ट और गहरी बने रहने से व्यक्ति की सफलता का रहस्य उसकी अपनी महत्त्वाकांक्षा और किसी महिला के सहयोग से सूचित होता है (रेखाचित्र-408)। व्यक्ति के विवाहित होने पर सहयोग देने वाली पत्नी भी हो सकती है। शनि रेखा के किसी भाग में दोष के मिलने का अर्थ है कि महिला का सहयोग मिलने पर भी संकट का टलना सम्भव नहीं हो पा रहा है।

हाथ के मूल में उदित और सूर्य अथवा बुध पर्वत तक जाती किसी रेखा को शनि रेखा न मानकर पर्वत-विशेष की ओर उन्मुख रेखा को उस पर्वत की रेखा ही समझना चाहिए। हां, ऊपरी मंगल की ओर उन्मुख प्रत्येक रेखा अवश्य बुध रेखा हो सकती है। इस प्रकार हाथ के केन्द्र में होकर जाती रेखाओं को ही केवल शनि रेखा मानना चाहिए, जो आगे चलकर और पर्वतों की ओर मुड़ती हैं। जिस पर्वत की ओर ये रेखाएं मुड़ती हैं, उस पर्वत पर इनका प्रभाव समझना चाहिए (रेखाचित्र-409)।

शनि रेखा की ऊर्ध्व मंगल पर समाप्ति से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के उत्साही होने के कारण उसे नेतृत्व के गुण और प्रतिरोधक शक्तियां प्राप्त हुई हैं (रेखाचित्र-410)।
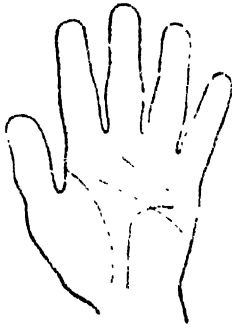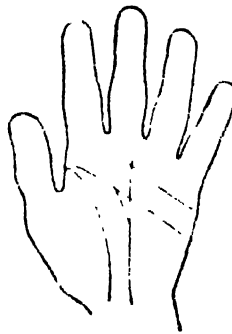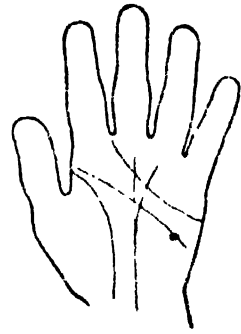
रेखाचित्र-410 रेखाचित्र-411 रेखाचित्र-412

पर्वतों की विशालता और विकसित स्थिति से इन लक्षणों की पक्की पुष्टि हो जाती है। शनि रेखा के सामान्य दिशा में जाने से, परन्तु उससे निकली किसी अन्य शाखा के बृहस्पति पर्वत की ओर जाने से व्यक्ति के महत्त्वाकांक्षी, नेतृत्वगुण-सम्पन्न तथा अग्रणी रहने की प्रवृत्ति के कारण उसे अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त होती है। यह रेखा प्रायः राजनीतिज्ञों, राजनेताओं तथा राजपुरुषों के हाथों में देखने को मिलती है (रेखाचित्र-411)।

शनि रेखा के तो शनि पर्वत की ओर न जाने, परन्तु उसकी एक शाखा के सूर्य पर्वत की ओर जाने से व्यक्ति को कला, अभिनय अथवा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सफलता के क्षेत्र का निर्णय व्यक्ति की सूर्य वाली अंगुली के प्रभावी पर्व से सुनिश्चित होती है (रेखाचित्र-412)।

शनि रेखा की एक शाखा के बृहस्पति पर्वत की ओर जाने और एक रेखा के सूर्य पर्वत पर जाने से व्यक्ति द्वारा भविष्य में प्रचुर धन-सम्पत्ति तथा अतुल ख्याति प्राप्त करना सूचित होता है। वस्तुतः इस रेखा के कारण व्यक्ति में महत्त्वाकांक्षा, बृहस्पति के गुण, शनि की बुद्धिमत्ता, सूर्य की प्रतिभा के अतिरिक्त व्यवसाय और

कला की योग्यता आदि सभी संयुक्त रूप में व्यक्ति को धन-सम्पन्न बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं (रेखाचित्र-413)।
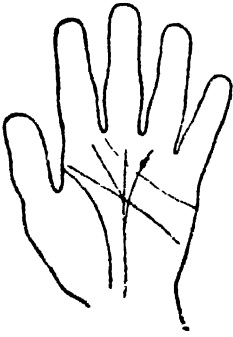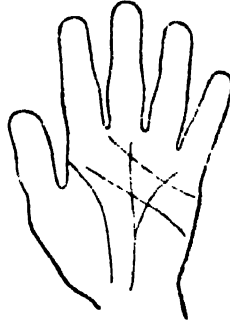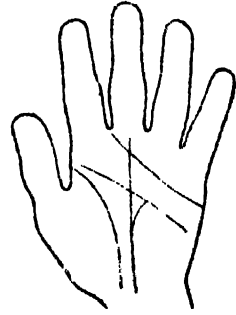
रेखाचित्र-413 *रेखाचित्र-414* *रेखाचित्र-415*

उपर्युक्त रूप से अधिक शुभ लक्षणों का उत्तम सम्मिश्रण तो कदाचित् सम्भव ही नहीं। शनि रेखा की एक शाखा का बुध पर्वत तक जाना व्यक्ति के चतुर-चालाक तथा व्यवसाय-कुशल होने का सूचक है। ऐसे व्यक्ति का न केवल दृष्टिकोण वैज्ञानिक होगा, अपितु उसमें अभिव्यक्ति-कौशल भी अपने विकसित रूप में मिलेगा। ये सभी तत्त्व व्यक्ति को सफल व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करने में सहायक सिद्ध होते हैं (रेखाचित्र-414)।

शनि रेखा की किसी शाखा का ऊपर उठकर मस्तक रेखा को काटे बिना उससे जुड़ने पर व्यक्ति द्वारा अपने विवेक से उत्तम जीवन बिताने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-415)।

शनि रेखा की समाप्ति का रूप व्यक्ति की जीविका के रूप—उद्योग, व्यापार तथा नौकरी आदि—का परिचय कराता है। अधिकांश हाथों में शनि रेखा पर्वत तक न पहुंचकर उसके नीचे ही कहीं समाप्त हो जाती है और यह व्यक्ति द्वारा अपने श्रम से अधिकाधिक प्राप्ति के सामर्थ्य की कालावधि को संकेतित करती है। वृद्धावस्था में इसके लोक को एक सहज प्रक्रिया मानना चाहिए; क्योंकि इस अवस्था में रोगों के अथवा शारीरिक सामर्थ्य के अभाव के कारण व्यक्ति आजीविका का उपार्जन कर ही नहीं पाता। किसी पर्वत पर किसी रेखा के अभाव को किसी शक्ति के व्यक्ति के विरुद्ध होने का संकेत नहीं समझना चाहिए। आरम्भ में रेखा की स्पष्टता जीवन की पूर्व आयु में किये गये कठोर श्रम का फल वृद्धावस्था में मिलना इंगित करती है। कुछ पर्वतों पर एक गहरी रेखा का मिलना वृद्धावस्था में सुखी-सम्पन्न रहने का पक्का संकेत होता है। व्यक्ति के यौवन में अथवा वृद्धावस्था में रेखा की समाप्ति का अर्थ व्यक्ति की प्रगति की समाप्ति है। हां, वह चाहे, तो अपनी इच्छानुसार अपने भविष्य का निर्माण कर सकता है। किसी गहरी रेखा का कुछ समय (20-25 वर्ष)

तक चलना व्यक्ति के लिए उतने समय का सर्वोत्तम होना सूचित करता है। तदुपरान्त तो व्यक्ति की प्रगति और संकल्पशक्ति और उसके परिश्रम पर निर्भर करती है।

कुछ समय तक गहरी रहने के उपरान्त लहरदार बनकर रेखा की समाप्ति से व्यक्ति की परवर्ती आयु में आजीविका की अनिश्चितता और वृद्धावस्था में चिन्ताग्रस्तता सूचित होती है (रेखाचित्र-416)।
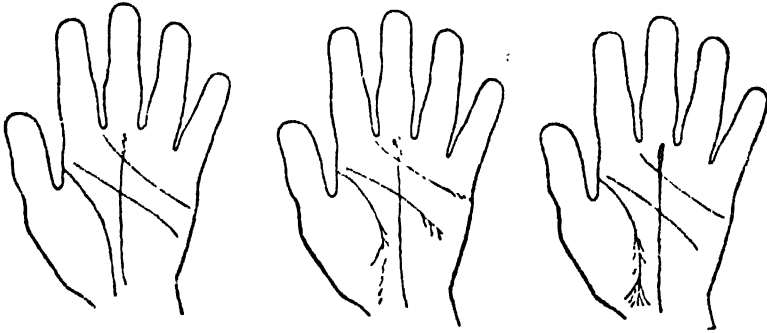
रेखाचित्र-416 *रेखाचित्र-417* *रेखाचित्र-418*

पर्वत पर दोषपूर्ण रेखाओं की समाप्ति से व्यक्ति की वृद्धावस्था में निर्धनता अथवा धन-हानि के संकेत को पक्का भले न माना जाये, परन्तु इतना तो निश्चित है कि ऐसा व्यक्ति कुछ ऐसी समस्याओं से घिरा रहता है कि चिन्ता उसकी जीवनसंगिनी बन जाती है और इससे उसकी आजीविका भी बुरी तरह प्रभावित होती है। हां, शनि रेखा के सम्पूर्ण मार्ग में गहरा रहने को निर्धनता आने का संकेत नहीं समझना चाहिए।

शनि रेखा कुछ समय तक तो गहरी रहे, फिर बीच-बीच में टूट जाये या आड़ी रेखाएं उसे काट दें अथवा गुणनचिह्न या कुछ बिन्दु प्रकट हो जायें, तो उसे व्यक्ति के वृद्धावस्था में संकटों, विरोधों तथा बाधाओं का सामना करने का संकेत समझना चाहिए। शनि रेखा का पर्वत पर टूटने और इस आयु में जीवन रेखा के, मस्तक रेखा के तथा हृदय रेखा के भी दोषपूर्ण होने से व्यक्ति के वृद्धावस्था में स्वास्थ्य-विकार तथा रोगों से कष्टपूर्ण जीवन बिताना संकेतित होता है (रेखाचित्र-417)।

शनि रेखा की एक द्वीप में जाकर समाप्ति तथा जीवन रेखा पर अधोमुखी शाखाओं के साथ अन्त में एक लम्बे-से गोपुच्छ का होना सूचित करता है कि बुढ़ापे में व्यक्ति का न केवल स्वास्थ्य ढीला रहता है, अपितु उसे आर्थिक कठिनाई के कारण भी दुखी होना पड़ता है (रेखाचित्र-418)।

शनि पर्वत पर आड़ी रेखाओं द्वारा शनि रेखा को काटने का अर्थ है— वृद्धावस्था में व्यक्ति का निरन्तर कष्टों, हानियों, विपत्तियों तथा मुक़दमों से जूझते

रहना (रेखाचित्र-419)। आड़ी रेखाएं एक तो हलकी हों और दूसरे शनि रेखा को काटती भी न हों, तो व्यक्ति के कष्टों-चिन्ताओं से घिरा रहना सूचित होता है। शनि पर्वत पर रेखा में गुणनचिह्नों के होने से तो व्यक्ति के बुढ़ापे में घोर विपदाओं को सहना एक प्रकार से उसका 'भाग्य का मारा' सूचित होता है (रेखाचित्र-420)।
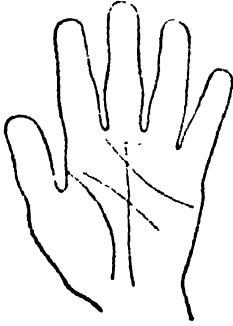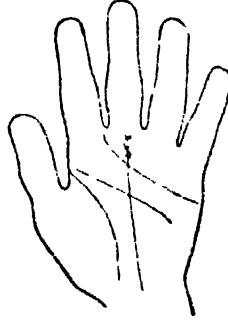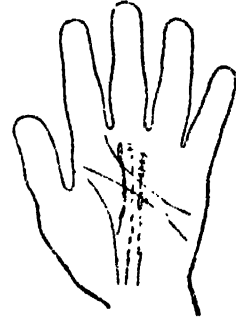
रेखाचित्र-419 *रेखाचित्र-420* *रेखाचित्र-421*

उपर्युक्त सभी समापन शनि पर्वत पर पहुंचती शनि रेखा से सम्बन्ध रखते हैं और इनके सभी लक्षण बुढ़ापे में प्रकट होते हैं। वैसे किसी अन्य आयु में समाप्त होने वाली रेखा भी यही सूचित करती है। पूरे समय दोषपूर्ण रहने वाली शनि रेखा के अन्त में उपर्युक्त चिह्नों में से किसी एक चिह्न में समाप्ति से सूचित होता है कि व्यक्ति सम्पत्ति के नाम पर ऐसा कुछ नहीं छोड़ता, जिसे उसकी सन्तान कुछ भी महत्त्व द सके। ऐसी दोषपूर्ण रेखाओं के विभिन्न लक्षणों को रेखाचित्र 421 मे समझना चाहिए।

हमने यहां व्यक्ति के बचपन से बुढ़ापे तक शनि रेखा के विभिन्न रूपों का विवेचन प्रस्तुत किया है और इसी सन्दर्भ में हमने यह बताने का प्रयास किया है कि यह रेखा किस प्रकार व्यक्ति की सफलता-असफलता और उसके कारणों से सम्बन्ध रखती है। यह सब लिखने का अर्थ व्यक्ति को पहले से सतर्क करना है, ताकि वह जानकारी होने पर सुधार के उपाय कर सके और न करने पर जानकारी न रखने की शिकायत न कर सके। वैसे हम जानते हैं कि बहुत कम लोग निर्दिष्ट सर्वाधिक फलदायी कालावधियों का लाभ उठाते हैं, परन्तु हमें पूर्ण विश्वास है कि यहां इस अध्याय में निरूपित नियमों की पूरी जानकारी प्राप्त करने और परीक्षण से प्राप्त परिणामों-निष्कर्षों को हाथ पर लागू करने से जिज्ञासु व्यक्ति अपने जीवन के सर्वाधिक अच्छे समय की जानकारी प्राप्त करके, अभीष्ट लाभ प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य बना सकता है। इसी सन्दर्भ में ही हम शनि रेखा के विवेचन की सार्थकता समझते हैं। हमारा मत है कि यह अध्ययन मानव-जाति के लिए शुभ और कल्याणकारी सिद्ध होगा।

*

11

सूर्य रेखा

हथेली पर चन्द्र पर्वत के ऊपर से प्रारम्भ होती और सूर्य पर्वत की ओर जाती खड़ी-सीधी रेखा का नाम 'सूर्य रेखा' है। यह कभी सूर्य पर्वत पर जाकर, तो कभी वहां पहुंचने से पूर्व ही समाप्त हो जाती है (रेखाचित्र-422)। इसका एक दूसरा नाम 'प्रतिभा रेखा' भी है। यश, धन और प्रसिद्धि आदि वाञ्छनीय उपलब्धियों का सम्बन्ध इसी रेखा से है।

यह एक विचित्र संयोग है कि अन्यान्य सभी रेखाओं की अपेक्षा इस रेखा के सम्बन्ध में सर्वाधिक भ्रान्तियां फैली हुई हैं और इसकी ग़लत व्याख्या के कारण हस्तरेखाशास्त्रियों को बार-बार अपमान तथा लज्जा का पात्र बनना पड़ता है। किसी व्यक्ति के हाथ में अच्छी सूर्य रेखा को देखते ही उसे कला, साहित्य, संगीत और अभिनय के क्षेत्र में विशेष निपुणता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला घोषित करने की एक परम्परा चली आ रही है, भले ही ऐसे व्यक्ति ने इन सबका नाम तक न सुना हो अथवा इनके सम्बन्ध में उसकी जानकारी शून्य से अधिक न हो। किसी भले हस्तरेखाविद् ने जब कुछ कुशल एवं सन्तुष्ट गृहणियों की हथेली को देखकर उन्हें बताया कि उनके माता-पिता के रूढ़िवादी दृष्टिकोण के कारण उनकी कलात्मक प्रतिभा अथवा अभिनयक्षमता दबकर रह गयी, तो उन महिलाओं के मन में अपने माता-पिता के प्रति रोष-आक्रोश का तथा भाग्य के प्रति शिकायत का उमड़ना स्वाभाविक था। हस्तरेखाविदों द्वारा भोली-भाली सन्तुष्ट महिलाओं को—"संसार आपकी प्रतिभा का लाभ उठाने से वञ्चित रह गया। आप तो विश्व की विभूति सिद्ध हो सकती थीं"—आदि वाक्यों से उत्तेजित करना उनके सुखी जीवन में आग लगाने-जैसा और उनके पारिवारिक सम्बन्धों में विशृंखलन पैदा करने-जैसा कार्य कितना निन्दनीय है, इसे समझाने की आवश्यकता नहीं। संगीत शब्द से अपरिचित लोगों की हथेली में उत्तम सूर्य रेखा देखकर उनके उत्तम संगीतकार बनने पर दोनों—व्यक्ति और भविष्यवक्ता—का आश्चर्यचकित होना सचमुच एक विचित्र तथ्य है।

वस्तुतः इस स्थिति के लिए सामान्य अथवा विशिष्ट हस्तरेखाविदों को दोषी ठहराना उचित नहीं; क्योंकि उनके इस विश्लेषण के अविश्वसनीय, मिथ्या एवं

भ्रामक सिद्ध होने पर तो कतिपय हस्तरेखाविदों ने इस रेखा का उपयोग करना ही छोड़ दिया। यह कहना उचित ही होगा कि इस रेखा के सम्बन्ध में भ्रान्तियों के चलते इसका उपयोग न करना ही विवेकसंगत निर्णय है।
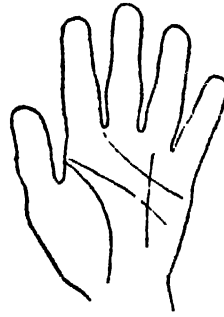
रेखाचित्र-422

सूर्य पर्वत की ओर जाने वाली यह रेखा सूर्य सम्बन्धी गुणों का प्रतिनिधित्व करती है। सूर्यप्रधान व्यक्ति के विलक्षण प्रतिभाशाली होने से इस रेखा को कला, कौशल और प्रतिभा का प्रतीक माना गया है। सूर्यप्रधान व्यक्ति जहां कुशाग्र बुद्धि होता है, वहां कला के क्षेत्र में वह एक साथ दोनों—धन और सम्मान—को प्राप्त करता है।

सूर्यप्रधान व्यक्ति का व्यक्तित्त्व बहुमुखी होता है। सूर्यप्रधान व्यक्तियों में तीनों—उत्तम, मध्यम और अधम—प्रकार मिलते हैं। ये लोग सभी क्षेत्रों—मानसिक, भौतिक तथा व्यावहारिक—में प्रगति करते हुए मिलते हैं। वे जिस भी क्षेत्र को अपनाते हैं, उसमें अपनी प्रतिभा से दूसरों को चमत्कृत कर देते हैं और सम्मान तथा कीर्ति के सच्चे अधिकारी बनते हैं। भौतिक क्षेत्र को अपनाने वाले व्यक्ति की उत्तम सूर्य रेखा उसे महान् एवं सफल कलाकार न बनाकर भौतिक साधनों और आर्थिक मामलों से जुड़े व्यवसायों—घुड़दौड़, घुड़दौड़ के घोड़ों के स्वामी अथवा कभी-कभी सफल क़साई—बनाने वाली होती है। अतः सूर्य रेखा की उत्तमता को सदैव कला के अथवा कला से जुड़े क्षेत्र में ही व्यक्ति की सफलता और मान-सम्मान पाने तक सीमित करना भ्रान्तियों को बढ़ावा देना है। कला का क्षेत्र भी प्रतिभा रेखा का एक क्षेत्र तो है, परन्तु एकमात्र क्षेत्र नहीं है। इसका अर्थ है कि सूर्यप्रधान व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकता है। अब इस रेखा के आधार पर भविष्यकथन करने से पूर्व व्यक्ति के सम्बन्ध में समग्र जानकारी का प्राप्त करना ही उपयुक्त रहता है।

प्रत्येक व्यक्ति को रेखा के सांचे में ढालने को और उसके आधार पर भविष्यकथन

की चेष्टा को बलात्कार की संज्ञा ही दी जायेगी और फिर इससे अभीष्ट परिणाम की आशा की ही नहीं जा सकती। इस रेखा के लिए सर्वोत्तम नाम है—सामर्थ्य रेखा। यह नाम गुण के अनुरूप होने से सर्वथा उपयुक्त ही होगा। इस नाम के आधार पर यह रेखा किसी महान् कार्य को सम्पन्न करने की भावना अथवा सम्भावना लिये रहती है। यह व्यक्ति की योग्यता को उपयोगी व्यवसायों में लगाती है और उसे सफलता प्रदान करती है। एक उत्तम सूर्य रेखा व्यक्ति में मित्र बनाने की, धन कमाने की, यश प्राप्त करने की तथा सुविधापूर्वक प्रतिष्ठा अर्जित करने की क्षमता का होना व्यक्त करती है। व्यक्ति की इस योग्यता के सम्बन्ध में भविष्यकथन करते समय व्यक्ति के विकसित लोक का भी अध्ययन करना चाहिए। इसी से व्यक्ति की प्रतिभा को भली प्रकार समझा जा सकता है। उत्तम सूर्य रेखा प्राय: दुर्लभ होती है और जिस के भी हाथ में होती है, वह निश्चित रूप से उत्कृष्ट स्थिति पर पहुंचने वाला विशिष्ट प्रतिभाशाली व्यक्ति होता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि कुछ व्यक्तियों के हाथों में सूर्य रेखा होती ही नहीं है।

हाथ में उत्तम सूर्य रेखा का होना व्यक्ति के असाधारण रूप से विशिष्ट प्रतिभाशाली होने का सूचक है। हाथ के अन्य भागों का उत्तम होना तो व्यक्ति को अपवाद रूप में सौभाग्शाली—नाम तथा धन कमाने वाला—सिद्ध करता है। हस्तरेखाशास्त्र के नियमों-सिद्धान्तों के सन्दर्भ में सूर्य रेखा का विवेचन-विश्लेषण उपयोगी रहता है। सूर्य रेखा के प्रभाव के विनाशक हैं—शिथिल हाथ, दुर्बल-निढाल अंगूठा, विकृत मस्तक रेखा, निकृष्ट मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र पर्वत तथा इस प्रकार की अन्यान्य न्यूनताएं।

सूर्य रेखा के आकलन में इन सब तथ्यों और इनके कारणों पर विचार करना आवश्यक होता है।

सूर्य रेखा की अनुपस्थिति का अर्थ व्यक्ति का जीवन में सफल न रहना कदापि नहीं। जिस प्रकार हमने शनि रेखारहित व्यक्तियों के सम्बन्ध में लिखा है कि अपने दृढ़ संकल्प और कठोर श्रम से वे अपने भविष्य को अपनी इच्छा के अनुरूप ढाल सकते हैं, वही तथ्य सूर्य रेखाविहीन व्यक्तियों पर भी लागू होता है। वे भी अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने का गौरव प्राप्त कर सकते हैं। सूर्य रेखाविहीन व्यक्तियों द्वारा उत्तम सूर्य रेखा वाले व्यक्तियों से कहीं अधिक बड़ी उपलब्धियां प्राप्त करने के बहुत सारे उदाहरण मिलते हैं। उत्तम सूर्य रेखा वाले अनेक हाथों के परीक्षण और व्यावहारिक निरीक्षण से यह तथ्य भी सामने आया है कि ऐसे व्यक्ति किसी उद्योग अथवा व्यवसाय-विशेष की अपेक्षा अपनी प्रतिभा पर अधिक भरोसा करने वाले होते हैं। अपने इसी आत्मविश्वास के कारण अपेक्षाकृत कम प्रतिभाशाली व्यक्ति विशिष्ट प्रतिभाशाली व्यक्तियों को भी पीछे छोड़ जाते हैं। इस प्रकार यह

निस्संकोच कहा जा सकता है कि उत्तम सूर्य रेखा वाले प्रतिभाशाली व्यक्तियों का कर्म-शक्ति से जुड़ना सोने पर सुहागा-जैसा ही समझना चाहिए। जहां हमने ऊपर स्पष्ट किया है कि सूर्य रेखा की विहीनता असफलता का लक्षण नहीं, वहां यह भी जोड़ देना चाहिए कि इस रेखा की उपस्थिति से सफलता का सुगम और सुनिश्चित होना सूचित होता है। यहां सफलता का अर्थ व्यक्ति द्वारा अपनाये गये अपने कार्य-व्यापार तथा उद्योग-धन्धे को उन्नति के चरम शिखर पर पहुंचाना होगा। व्यक्ति के कार्यक्षेत्र के सम्बन्ध में कुछ कहने से पूर्व हाथ के तीनों लोकों और तीनों पर्वों पर विचार करना अपेक्षित होता है।

सूर्य रेखा का स्वास्थ्य से कुछ लेना-देना नहीं होता। व्यक्ति का शिथिल स्वास्थ्य सूर्य रेखा को प्रभावित तो कर सकता है, परन्तु यह रेखा स्वास्थ्य सम्बन्धी किसी प्रकार का कोई संकेत कदापि नहीं देती।
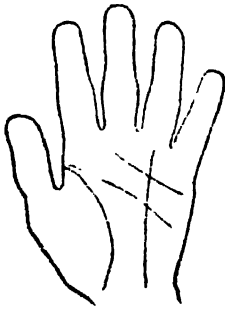
रेखाचित्र-423

रेखाचित्र-424

रेखा की लम्बाई से इसके प्रभाव की सीमा निर्धारित होती है। रेखा जितनी अधिक लम्बी होगी, प्रभाव उतना ही अधिक होगा और इसके विपरीत रेखा जितनी छोटी होगी, प्रभाव उतना ही कम पड़ेगा। कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रभाव के अनुरूप ही रेखा का महत्त्व होता है। कलाई से पर्वत तक जाने वाली सूर्य रेखा से व्यक्ति के जीवनपर्यन्त प्रतिभा का उत्कृष्टतम प्रदर्शन करते रहने का संकेत मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन—धन-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा आदि बहुत कुछ पाने—में सफल रहता है (रेखाचित्र-423)। नीचे से आरम्भ होने वाली और थोड़ी ही दूरी तक चलने वाली रेखा संकेत देती है कि व्यक्ति में प्रतिभा की तो कोई कमी नहीं, परन्तु सूर्य रेखा उसे आगे बढ़ा पाने में समर्थ नहीं (रेखाचित्र-424)।

ऊपर ही ऊपर को जाती और मस्तक रेखा तथा हृदय रेखा के मध्य के अन्तराल को भरने वाली सूर्य रेखा से संकेत मिलता है कि व्यक्ति के जीवन के विकासकाल में उसकी प्रतिभा सक्रिय रहेगी, यहां तक कि किसी भी प्रकार के

संकट को पार करने में उसकी सहायक सिद्ध होगी (रेखाचित्र-425)।
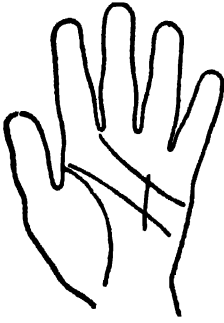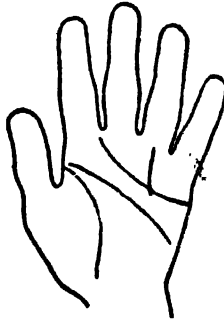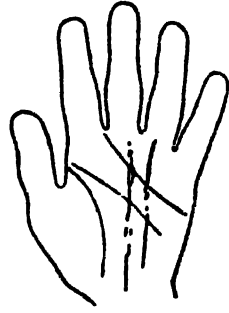
रेखाचित्र-425 *रेखाचित्र-426* *रेखाचित्र-427*

सूर्य पर्वत पर चढ़ती सूर्य रेखा व्यक्ति के सूर्य गुणों से सम्पन्न होने का संकेत देती है, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति जिस भी क्षेत्र में पांव रखेगा, सफलता वहीं उसके चरण चूमेगी (रेखाचित्र-426)।

शनि रेखा और सूर्य रेखा प्रायः अन्योऽन्याश्रित होती हैं। अनेक हाथों में एक रेखा प्रबल और दूसरी दुर्बल पायी जाती है। इस प्रकार दोनों रेखाएं सहायक रेखाओं के रूप में एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं, एक-दूसरे की सहायता करती हैं और यहां तक कि एक के द्वारा की गयी क्षति की पूर्ति भी करती हैं (रेखाचित्र-427)।
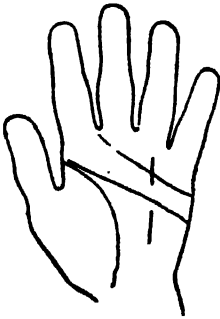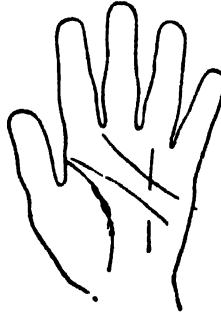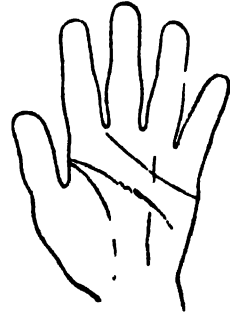
रेखाचित्र-428 *रेखाचित्र-429* *रेखाचित्र-430*

उत्तम सूर्य रेखा से शनि रेखा की अनुपस्थिति से होने वाली कमी पूरी हो जाती है। सूर्य रेखा की प्रथम विद्यमानता, पुनः लोप होना और फिर दोबारा दीखने लगने का अर्थ है—रेखा में आने वाले अन्तराल की अवधि में व्यक्ति की प्रतिभा कभी व्यक्त, तो कभी अव्यक्त रूप लेती रहती है, अर्थात् कभी वह चमकने लगता है, तो कभी एकदम चर्चा से बाहर हो जाता है (रेखाचित्र-428)।

चतुर्थ अध्याय में निर्दिष्ट माप के आधार पर इस अन्तराल की समय-सीमा को समझना चाहिए। रेखा के लोप का कारण-विशेष भी हो सकता है। प्राय: देखा जाता है कि स्वास्थ्य में ख़राबी के कारण अच्छी-से-अच्छी प्रतिभा भी धरी-की-धरी रह जाती है। इस प्रकार रेखा को विच्छिन्न देखकर अन्य रेखाओं और पर्वतों से कारणों के संकेतक दोषों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। इस अवधि में जीवन रेखा में किसी दोष के मिलने से यही सूचित होता है कि व्यक्ति का स्वास्थ्य ही उसकी प्रतिभा के विकास में बाधा बना हुआ है (रेखाचित्र-429)।

सूर्य रेखा के विलोप होने और मस्तक रेखा के दोषपूर्ण होने का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी मानसिक दुर्बलता के कारण अपने कार्य-व्यापार में अपेक्षित ध्यान न दे पाने के कारण सफल नहीं हो पा रहा है (रेखाचित्र-430)।

सूर्य रेखा में अन्तराल से जुड़े अथवा न जुड़े दोषों के कारण हाथ के अन्य भागों पर दीखती आकस्मिक रेखाओं से यह संकेत मिल जाता है कि किस कारण से व्यक्ति की उत्कृष्टतम प्रतिभा के उजागर न हो पाने से उसकी उन्नति धरी-की-धरी रह गयी।
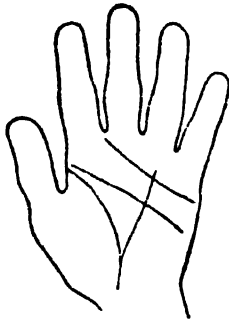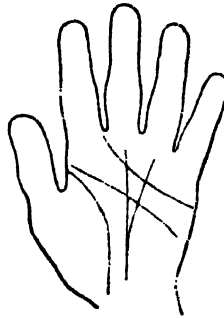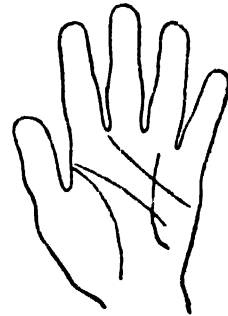
रेखाचित्र-431 *रेखाचित्र-432* *रेखाचित्र-433*

सूर्य पर्वत और सूर्य की अंगुली के ठीक नीचे से निकलती सूर्य रेखा ही वास्तविक एवं स्पष्ट सूर्य रेखा होती है। जीवन रेखा से निकलकर सूर्य पर्वत पर समाप्त हो जाने वाली रेखा सूर्य रेखा-जैसा प्रभाव अवश्य देती है, परन्तु वह वास्तव में सूर्य रेखा न होकर 'आकस्मिक रेखा' ही होती है। इससे सूर्य रेखा द्वारा संकेतित शुभ एवं मंगलकारी दशाओं से सम्बन्ध रखने वाले गुणों से व्यक्ति के सफल होने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-431)।

पूरी तरह सूर्य पर्वत के नीचे रहने वाली रेखा को एकमात्र सूर्य रेखा मानना चाहिए, न कि रेखाचित्र-431-जैसी रेखा को। वह तो वास्तव में एक आकस्मिक रेखा ही होती है। आकस्मिक रेखा को सूर्य रेखा मान लेने से गड़बड़ी पैदा हो जाती

है। इसी प्रकार व्यक्ति की वृत्ति की सफलता में सहायक शनि पर्वत से निकलती और सूर्य पर्वत पर समाप्त होती रेखा को भी सूर्य रेखा मानने की ग़लती नहीं करनी चाहिए, अपितु उसे उसके सही रूप में शनि रेखा मानना ही उचित है (रेखाचित्र-432)।

हाथ के समीप चन्द्र पर्वत के शिखर से आरम्भ होती सूर्य रेखा व्यक्ति की कल्पनाशक्ति की प्रखरता की अभिव्यक्ति की प्रचुर क्षमता का संकेत देती है। इसके अतिरिक्त इससे यह भी सूचित होता है कि उसके मस्तिष्कलोक के प्रबलतम होने के कारण उसका लेखक के रूप में सफलता पाना निश्चित है (रेखाचित्र-433)।

अंगुलियों के नुकीले अग्रभाग और चिकनी अंगुलियां व्यक्ति को व्यावसायिक बनाती हैं। गठीली और वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति को ऐतिहासिक परीगाथाओं पर कथा-साहित्य की रचना करने वाला संकेतित करती हैं। मंगल पर्वत की विशालता व्यक्ति को युद्ध और शौर्यपरक साहित्य की रचना करने वाला तथा चन्द्र पर्वत की विशालता उसे मानवीय संवेदनाओं से ओत-प्रोत साहित्य लिखने वाला सूचित करती है। चन्द्र पर्वत की विशालता वाले लेखक की रचनाएं पाठकों को द्रवित करने, उनके नेत्रों को अश्रुपूर्ण करने तथा उन्हें अत्यन्त भावुक बनाने वाली होती हैं।

शनि पर्वत की उच्चता रखने वाला व्यक्ति वैज्ञानिक विषयों—भौतिकी, रसायन आदि—तथा इतिहास से सम्बन्धित विषयों पर ग्रन्थ-रचना करता है। ऐसा व्यक्ति अनोखी तथा विस्मयोत्पादक कहानियों के लेखन में भी सफलता प्राप्त कर सकता है। हस्तरेखाशास्त्री तो व्यक्ति के हाथ की रेखाओं का अध्ययन करके आसानी से इस सबका पता लगा सकता है। वह ऐसी सफलता दिलाने वाली रेखा को देखकर और उसे आधार बनाकर व्यक्ति को बहुत कुछ बतला सकता है। अच्छे ऊपरी मंगल से निकलती सूर्य रेखा वाला व्यक्ति अपने शान्त, संयत और त्यागपूर्ण स्वभाव तथा व्यवहार से अपनी निराशा पर नियन्त्रण रखने और अपनी उपलब्धि—कार्य-सिद्धि एवं मान-प्रतिष्ठा—को सुनिश्चित करने में सफल हो जाता है। व्यक्ति को जिस कार्यक्षेत्र से सफलता मिल सकती है, उसे उसी कार्यक्षेत्र का चुनाव करना चाहिए। इस दिशा में व्यक्ति का पथ-प्रदर्शन करके हस्तरेखाशास्त्र उसकी बड़ी भारी सहायता कर सकता है; क्योंकि उपयुक्त दिशा-निर्देश मिलने पर व्यक्ति भटकने से बच जाता है। उसमें सफलता का विश्वास उत्पन्न हो जाता है और वह अपनी सभी शक्तियों को केन्द्रित करके अभीष्ट प्राप्त कर लेता है (रेखाचित्र-434)।

सूर्य रेखा की दिशा का सूर्य पर्वत की ओर होना आवश्यक है; क्योंकि इसी से उसमें पर्वत-प्रकार के गुणों का प्रभाव आता है तथा नाम की सार्थकता—'यथा नाम तथा गुण:'—एवं उपयुक्तता सिद्ध होती है। आकस्मिक रेखाओं को समझने की ग़लती के कारण ही सूर्य रेखा का विवेचन दोषपूर्ण हो जाता है। इस ग़लती से बचने

का उपाय सूर्य रेखा की ठीक पहचान है, जो इस प्रकार से है—(i) भले ही हाथ में आगे बढ़ती सूर्य रेखा थोड़ी-सी मुड़ जाये, (ii) भले ही आगे बढ़ती वह किसी स्थान पर रुक जाये, (iii) भले ही वह शाखाओं को बनाये, (iv) भले ही आकस्मिक रेखाएं सूर्य रेखा के साथ मिलकर उसे काट दें अथवा उसकी शक्ति में वृद्धि कर दें—इतनी विभिन्नताएं होने पर भी प्रमुख रूप से सूर्य रेखा को चन्द्र पर्वत से सूर्य पर्वत की ओर
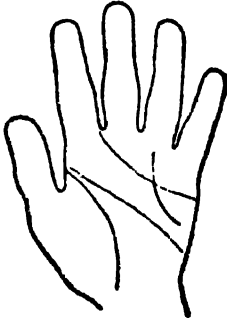
रेखाचित्र-434
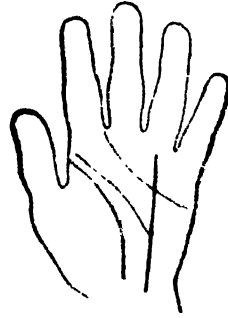
रेखाचित्र-435

जाना चाहिए। यही उसकी सामान्य दिशा है और यही उसकी प्रमुख पहचान है। इस परिभाषा पर खरी न उतरने वाली किसी रेखा को अन्य कोई भी नाम दिया जा सकता है, परन्तु उसे 'सूर्य रेखा' मानने की ग़लती तो कदापि नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने पर ही न केवल सभी रेखाओं को उनके सही रूप में और सही अर्थ में जानना सम्भव हो पाता है, अपितु सूर्य रेखा को ग़लत अर्थ में लेने से बचा जा सकता है।

सूर्य रेखा को ग़लत समझने का प्रमुख कारण है—इसका अत्यन्त प्रभावी होना और हस्तरेखविशेषज्ञों द्वारा इस रेखा के सन्दर्भ में व्यक्ति की विशिष्टताओं को अतिरञ्जित करने के लोभ का संवरण न कर पाना। प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रशंसा सुनने का भूखा होता है और इस भूख की तृप्ति करने वाले व्यक्ति का उदार होना स्वाभाविक है। हस्तरेखाशास्त्री व्यक्ति की इस सहज दुर्बलता का लाभ उठाने से नहीं चूकते। यदि देखा जाये, तो व्यवसाय की दृष्टि से चूकना भी नहीं चाहिए। हस्तरेखाशास्त्री के लिए किसी भी व्यक्ति के हाथ की परख करते हुए अत्यन्त गम्भीरता से उसे 'प्रतिभाशाली,' 'स्वच्छ-हृदय' तथा 'दूसरों का हित करने पर भी उनसे प्रशंसा न पाना' जैसी बातें कहना अत्यन्त ही सरल होता है। विद्वान् हस्तरेखाशास्त्री से सम्मोहित व्यक्ति की तात्कालिक प्रतिक्रिया यही होती है—मैं भी अपने सम्बन्ध में सोचता तो यही था, परन्तु मुझे विश्वास नहीं होता था। आप सत्य कहते हैं, मैं दूसरों के लिए कितना भी बलिदान क्यों न करूं, परन्तु कोई मुझे ठीक से समझता ही नहीं, आदि। वास्तव में ऐसी मधुर-लुभावनी बातें करने वाले हस्तरेखाविद् अपने

ग्राहकों में अत्यन्त लोकप्रिय होते हैं और वे भी अपनी कुटिलता से बहुत समय तक लोगों को भ्रमित करने में सफल रहते हैं। ऐसे लोग ही सूर्य रेखा के नाम पर तरह-तरह की बातें करते हैं। इस तरह की ग़लतफहमियों से सावधान रहने के लिए ही हमने सूर्य रेखा की स्थूल पहचान यह बतायी है—चन्द्र और सूर्य पर्वतों की मध्यवर्ती रेखा ही सूर्य रेखा है।

सूर्य रेखा अपनी उपस्थिति से व्यक्ति में अपने गुणों की तीव्रता को और शक्ति की प्रचण्डता को दिखाती है। गहरी और स्पष्ट सूर्य रेखा सर्वोत्तम मानी जाती है (रेखाचित्र-435)। इस मान्यता का आधार यह है कि यह जीवन में सफलता व मान-प्रतिष्ठा दिलाने के अतिरिक्त प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक व्यवसाय एवं प्रत्येक गतिविधि में सर्जक शक्ति प्रदान करने वाली सिद्ध होती है।

ऐसी रेखा वाला व्यक्ति कला के बाह्य रूप अथवा प्रदर्शन मात्र तक सीमिन न रहकर उच्चकोटि की कलाकृतियों की रचना द्वारा अपनी विकसित एवं विलक्षण सर्जक शक्ति का परिचय देता है। ऐसा व्यक्ति कला-प्रेम और कलाकार के अन्तर को उजागर करने वाला, अर्थात् अपने भीतर के कलाकार को प्रकाश में लाने वाला होता है।

सूर्य रेखा के गहरी-लम्बी होने के साथ सूर्य की अंगुली के प्रथम पर्व के भी लम्बा होने पर व्यक्ति कला के क्षेत्र में अतिविशिष्टता प्राप्त करने वाला होता है। अनेक लब्धप्रतिष्ठ महिला-पुरुष कलाकारों के हाथों में ऐसा संयोजन—गहरी-लम्बी सूर्य रेखा के साथ सूर्य की अंगुली के प्रथम पर्व का भी लम्बा होना—देखने को मिलता है।

सूर्य की अंगुली के प्रथम पर्व के सुविकसित और द्वितीय पर्व के लम्बा होने पर व्यक्ति अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन केवल कला के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु व्यवसाय-जगत् में प्रतिष्ठित होकर धन और यश दोनों कमाता है। वह कवि, अभिनेता, चित्रकार, गायक अथवा संगीतकार आदि कुछ भी हो सकता है, परन्तु वह अपने क्षेत्र में शीर्षस्थ होता है।

सूर्य रेखा के गहरी होने पर भी सूर्य की अंगुली के तृतीय पर्व के सर्वाधिक लम्बा तथा विशेष रूप से मोटा होने से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति कलाकार नहीं। वह प्राचीन एवं श्रेष्ठ कलाकृतियों की अपेक्षा सस्ती भड़काऊ कलाकृतियों में रुचि लेने वाला होता है। उसे भड़कीले रंग और भड़कीले वस्त्र अच्छे लगते हैं और वह सभी स्थानों और अवसरों पर कला के नाम पर अपनी भौंडी रुचि का भौंडा प्रदर्शन ही करता है। ऐसा व्यक्ति केवल धन को महत्त्व देने वाला होने से भद्र पुरुषों में मूर्ख ही समझा जाता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गहरी-स्पष्ट सूर्य रेखा अंगुली के

तीन पर्वों की विभिन्न स्थिति के अनुसार प्रभाव रखने वाली होती है।

सूर्य रेखा का पतलापन (बारीक होना) व्यक्ति की शक्ति, गुणवत्ता और महत्ता में न्यूनता लाने वाला होता है (रेखाचित्र-436)। पतली रेखा में गहरी रेखा—जैसी सर्जनात्मक क्षमता नहीं होती। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति के कलाकार होने पर उसे अन्यान्य कलाकारों की कलाकृतियों से अधिक प्रेरणा मिलेगी और उसके किसी भी लोक—मानसिक, व्यावसायिक अथवा भौतिक—के प्रभावी होने पर भी उसे अपेक्षित धन और यश प्राप्त नहीं हो सकेगा।
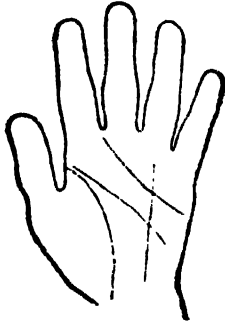
रेखाचित्र-436
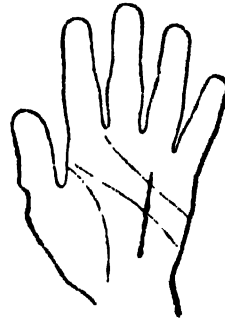
रेखाचित्र-437

सूर्य रेखा के चौड़ी-सतही होने पर व्यक्ति को सूर्य सम्बन्धी शक्ति नाममात्र की ही मिलती है (रेखाचित्र-437)। ऐसा व्यक्ति सौन्दर्य-प्रेमी, सुन्दर वस्तुओं व कलाकारों में रुचि रखने वाला, थोड़ा चञ्चल और निरंकुश प्रकृति का तो होगा, परन्तु किसी कलाकृति का सर्जन करने में समर्थ कदापि नहीं होगा। हाथ के अविकसित होने पर वह व्यक्ति दिखावटी और भड़कीली वस्तुओं में अधिक रुचि लेने वाला होगा। उत्तम कोटि के हाथों वाला व्यक्ति उत्तम वेशभूषा धारण करने वाला, रंगों में सामञ्जस्य चाहने वाला और घर को सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाने-संवारने में विश्वास रखने वाला होगा। ऐसा व्यक्ति कला एवं साहित्य के क्षेत्र में कुछ नये प्रयोगों से अपने को प्रकाश में लाने वाला हो सकता है। साहित्य और कला के क्षेत्र में नक़लची अथवा चोर प्रवृत्ति के व्यक्ति इसी वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले होते हैं।

सूर्य रेखा के शृंखलाकार होने का अर्थ है—व्यक्ति में कलात्मक प्रतिभा का नितान्त अभाव (रेखाचित्र-438)। ऐसा व्यक्ति कलात्मक विषयों में अपनी विशिष्टता का दम्भ तो कर सकता है, परन्तु वह कभी सत्य नहीं होता। ऐसे व्यक्ति अपनी रिक्तता और अल्पता अथवा क्षुद्रता को स्वीकार करने को उद्यत ही नहीं होते। वस्तुत: वे अपनी थोड़ी डींगों से ही दूसरों को प्रभावित करने में विश्वास रखते हैं। इस प्रकार सभी रेखाओं को व्यक्ति के कार्यक्षेत्र के सन्दर्भ में लागू करना और उसके

दोषों का सम्बन्ध प्रभावी लोक और उस क्षेत्र की गतिविधियों से जोड़ना चाहिए।

सूर्य रेखा के रंग का कोई विशेष महत्त्व नहीं; क्योंकि इसे व्यक्ति के स्वास्थ्य से कुछ लेना-देना नहीं होता। पुनरपि सफ़ेद तथा पीले रंग वाली सूर्य रेखा की अपेक्षा लाल-गुलाबी रंग वाली रेखा की शक्ति कहीं अधिक होती है।
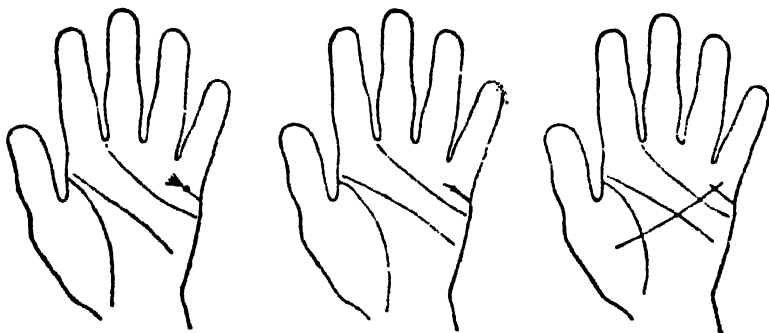
रेखाचित्र-438 *रेखाचित्र-439* *रेखाचित्र-440*

सूर्य रेखा की निरन्तरता के विनाशक और क्रिया के सञ्चालन में बाधक बनने वाले दोष विशेष चिह्नों के रूप में दिखाई देते हैं। गहरी होने के साथ पतली सूर्य रेखा व्यक्ति के कभी सफल, तो कभी असफल रहने की सूचक होती है। यहां स्थिरता, समानता अथवा एकरूपता कभी नहीं बनी रहती (रेखाचित्र-439)। ऐसे व्यक्ति धन और मान-सम्मान की प्राप्ति के लिए सचेष्ट तो रहते हैं, परन्तु सफलता न मिलने पर श्रम से मुंह मोड़ लेते हैं। कुछ समय पश्चात् वे पुनः अपना उत्साह दिखाते हैं, परन्तु शीघ्र ही पुनः ठण्डे पड़ जाते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रतिभाशाली तो होते हैं, परन्तु अपने उत्साह को स्थायी रूप देने में सर्वथा असमर्थ रहने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्तियों द्वारा उत्साह दिखाये जाने पर उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए; क्योंकि उन्हें पासा पलटते देर नहीं लगती। वस्तुतः सूर्य पर्वत पर पहुंचने और प्रबल रहने वाली सूर्य रेखा ही धन-सम्मान और सफलता-प्राप्ति का निश्चित संकेत देती है। जीवन की परिवर्तनशीलता में अन्ततः व्यक्ति के प्रयास ही उसे लक्ष्य-प्राप्ति के निकट ले जाते हैं। भाग्य भी तो परिश्रमी व्यक्ति का ही साथ देता है।

सूर्य रेखा के लहरदार स्वरूप से व्यक्ति की आजीविका का अस्थिर तथा अनिश्चित रहना संकेतित होता है (रेखाचित्र-440)। ऐसा व्यक्ति चतुर व अपने निर्धारित कार्य को निपटाने में योग्य-समर्थ तो होगा, परन्तु अपने कार्य-व्यवहार में अनियमित, अस्थिर और अविश्वसनीय होने के कारण कुछ भी पाने में असफल रहने वाला होगा। इस प्रकार ऐसा व्यक्ति प्रतिभाशाली होने पर अपनी वृत्तियों को एकाग्र एवं केन्द्रित न कर पाने के कारण एक दिशा में अपने प्रयत्नों को जारी नहीं

रख पाता। प्रयत्नों के बिखर जाने से वह सफलता प्राप्त कर ही नहीं पाता। ऐसा व्यक्ति यों तो भटकाव के कारण कभी कुछ उल्लेखनीय प्राप्त नहीं करता, परन्तु कभी-कभी विलक्षण संयोग से कुछ चमत्कार करने में सफल हो भी जाता है।

सूर्य पर्वत पर प्रबल सूर्य रेखा व्यक्ति को पूर्ण शक्ति के साथ निश्चित दिशा में ले जाने वाली होती है। उसके प्रसिद्ध पर्यटक, सनकी और मनमौजी बनने के साथ-साथ किसी क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करने की सम्भावना अवश्य बनी रहती है।
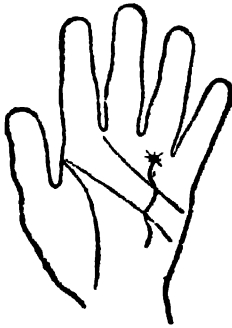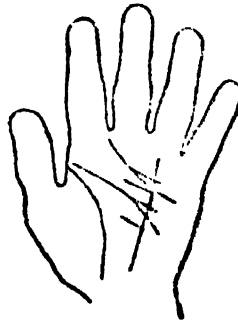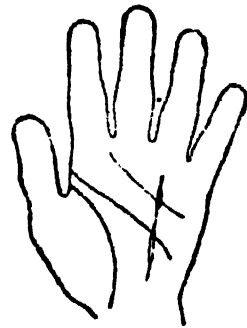
रेखाचित्र-441 *रेखाचित्र-442* *रेखाचित्र-443*

किसी नक्षत्रचिह्न में सूर्य रेखा की समाप्ति व्यक्ति के जीवन के शानदार अन्त का संकेत है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवनकाल में इतनी अधिक प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका होता है कि संसार उसके अन्त पर आंसू बहाने को विवश हो जाता है। एक अनियमित प्रभावशाली व्यक्ति रेखा की इस प्रकार की समाप्ति के प्रभाव से अन्ततः अपने कार्य में बहुत बड़ी सफलता प्राप्त कर लेता है (रेखाचित्र-441)।

हस्तरेखाशास्त्र में निर्दिष्ट सिद्धान्तों से ही सफलता की दिशा का ज्ञान अथवा अनुमान लगाना चाहिए। सूर्य रेखा में द्वीप का चिह्न सफलता में गम्भीर रुकावट का संकेत है। गहरी सूर्य रेखा में द्वीपों की उपस्थिति से सम्पत्ति-सफलता आदि पाने के मार्ग में अनेक बाधाओं का आना सूचित होता है। इन बाधाओं से व्यक्ति को लाभ के स्थान पर हानि भी उठानी पड़ सकती है (रेखाचित्र-442)। व्यक्ति अपने द्वारा निर्धारित क्षेत्र में प्रसिद्धि की इच्छा करेगा, परन्तु उसे विफलता और निराशा का सामना करना पड़ेगा।

सूर्य की अंगुली का शनि की अंगुली जितनी अथवा उससे अधिक लम्बी होना व्यक्ति के गोताख़ोर बनने की प्रवृत्ति को दिखाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी साहसिकता से उद्योग-धन्धों—विशेषतः शेयर बाज़ार—में तहलका मचा देता है। ऐसे व्यक्ति की जीवन रेखा और मस्तक रेखा के एक-दूसरे बहुत दूर होने का अर्थ है—ऐसा व्यक्ति दुस्साहस और छलांगें भरने के स्तर तक आत्मविश्वास से भरा होता

है। सूर्य रेखा में द्वीपचिह्न का होना व्यक्ति का धन और सम्मान के खोने के भय से आक्रान्त रहने का सूचक है। इस संयोजन—सूर्य की अंगुली का शनि की अंगुली जितनी अथवा उससे भी अधिक लम्बी होना, जीवन रेखा और मस्तक रेखा की एक-दूसरे से दूरी तथा सूर्य रेखा में द्वीपचिह्न—से सूर्य की अंगुली के तृतीय पर्व का लम्बा होना तथा व्यक्ति का एक साधारण जुआरी होना संकेतित होता है।

बुध की अंगुली का टेढ़ा-ऐंठा हुआ होना, हृदय रेखा का पतला अथवा अनुपस्थित होना तथा हाथ के घटियापन से संकेत मिलता है कि व्यक्ति धूर्त, ठग, धोखेबाज़ तथा सूर्य रेखा से प्राप्त तीव्र बुद्धि का दुष्ट, अधम तथा निकृष्टतम कार्यों में प्रयोग करने वाला है। अच्छे हाथ में तृतीय पर्व का लम्बा-मोटा होना ख़तरनाक होता है। सूर्य रेखा को काटती रेखाओं से व्यक्ति की सफलता में निरन्तर बाधाओं का संकेत ही मिलता है (रेखाचित्र-443)। इस तथ्य को आकस्मिक रेखाओं, पर्वतों, प्रभावी रेखाओं अथवा अन्यान्य संकेतों से पहचाना जा सकता है। सूर्य रेखा द्वारा बाधा-रूपी इन रेखाओं को काटने का अर्थ है—व्यक्ति द्वारा सभी बाधाओं को पार कर लेना।
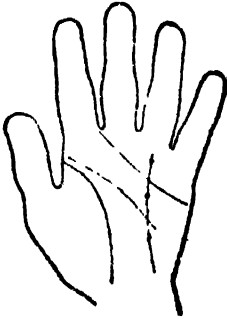
रेखाचित्र-444

रेखाचित्र-445

सूर्य रेखा के अन्य रेखाओं द्वारा कटने से व्यक्ति की जीविका का बाधित होना सूचित होता है। सूर्य रेखा के ऊपर से अत्यन्त महीन-बारीक रेखाएं व्यक्ति के कष्टप्रद हस्तक्षेपों के कारण चिन्ताग्रस्त रहने की सूचक हैं। सूर्य रेखा पर बिन्दु व्यक्ति के सम्मान को आघात पहुंचना सूचित करते हैं (रेखाचित्र-444)। हां, छोटे बिन्दु विरोधियों की असफल चेष्टाओं के और बड़े बिन्दु वास्तविक हानि पहुंचने के संकेत होते हैं।

सूर्य रेखा में स्थान-स्थान पर कटाव अथवा अन्तराल (कटती रेखा की दूरी) भी व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति एवं प्रगति में बाधा के सूचक हैं (रेखाचित्र-445)। ये बाधाएं रेखा की महत्ता एवं उपयोगिता को समाप्त करने वाली होती हैं,

जिससे मिलने वाले लाभ और हितसाधक प्रभाव जाते रहते हैं। ऐसी रेखा से व्यक्ति का कला-प्रेमी होना, परन्तु साथ ही सर्जरी के क्षेत्र में कुछ योगदान न दे पाना सूचित होता है। हां, धन-सम्पन्न होने पर व्यक्ति कला को संरक्षण देने वाला अवश्य होता है। प्रभावी व्यवसाय-जगत् वाले व्यक्ति सर्जन के क्षेत्र में थोड़ी-बहुत सफलता अवश्य प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु कुछ महंगी सिद्ध होने वाली ग़लतियां भी कर बैठते हैं। इस प्रकार रेखा के लाभकारी प्रभाव भी उलटे पड़ जाते हैं।

विच्छेदों से भरी रेखा वाला व्यक्ति सामान्य स्थिति से ऊपर नहीं उठ पाता। विच्छेदों के दीखने पर बाधाओं को पार करने में और स्थितियों को अनुकूल बनाने में सहायक बनने वाले सुधार-चिह्नों की खोज अवश्य करनी चाहिए; क्योंकि सुधारक होने के कारण अनेक मिश्रित रूपों में मिलने वाले इन चिह्नों का चौड़ी-सतही सूर्य रेखा-जैसा ही प्रभाव होता है।
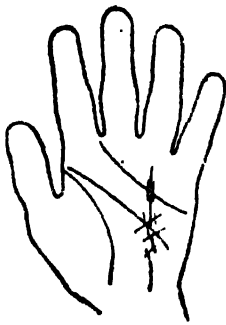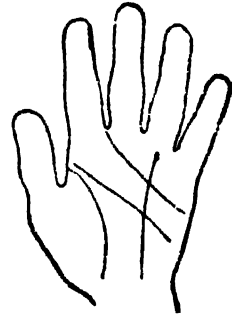
रेखाचित्र-446 *रेखाचित्र-447* *रेखाचित्र-448*

सूर्य रेखा की समाप्ति रेखा के परिणाम की सूचक होती है (रेखाचित्र-446)। आरम्भ में गहरी सूर्य रेखा का आगे चलकर पतला होना और अन्ततः लुप्त हो जाना सूचित करता है कि रेखा के गहरी रहने तक व्यक्ति के जीवन का समय सर्वोत्तम होगा और कम गहरी के होने के अनुपात में उसकी धन कमाने की शक्ति घटती जाती है, जिससे उसके जीवन का अन्त सामान्य रह जाता है, अर्थात् वह इस समय कुछ भी न उल्लेखनीय प्राप्त कर पाता है और न ही प्राप्त करने में समर्थ होता है (रेखाचित्र-447)।

सूर्य रेखा की किसी बिन्दुचिह्न में समाप्ति से व्यक्ति के सुख-सुविधापूर्ण एवं सम्पन्न जीवन जीने के उपरान्त अन्त में अपने मान-सम्मान को खो बैठने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-448)।

अपने अन्त में नक्षत्रचिह्नित सूर्य रेखा व्यक्ति की गौरवपूर्ण सफलता की सूचक है (रेखाचित्र-449)। वस्तुतः उत्तम रेखा की समाप्ति पर सूर्य पर्वत पर

विद्यमान रहने वाला नक्षत्रचिह्न विद्युत्-प्रकाश के समान ही सारे संयोजन को ज्योतिर्मय कर देता है। ऐसे व्यक्ति के मस्तिष्कलोक की प्रबलता तो उसे ललित कलाओं—कवित्व, लेखन, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीतकला, अभिनय, नृत्य तथा वाद्य-वादन आदि में विशिष्टता, प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। अभिनय, गायन और वादन से जुड़े बर्नहार्ट, वार्डिका, मोजेल्क, कैथरोन तथा किण्डर-जैसे प्रतिभाशाली विश्वविख्यात महान् कलाकारों के हाथों में यह चिह्न देखने को मिला है।
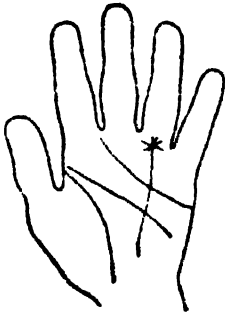
रेखाचित्र-449 रेखाचित्र-450 रेखाचित्र-451

व्यवहार जगत् से सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति तो बड़ी आसानी और शीघ्रता से (बिना विशेष श्रम किये) धनोपार्जन करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति जिस किसी कार्य में हाथ डालता हैं, सर्वत्र सफल रहता है। वस्तुत: सफलता तो उसकी क्रीतदासी-जैसी होती है। अत: उसके प्रत्येक श्रम का लाभप्रद होना सुनिश्चित रहता है। अंगुली के प्रबल तृतीय पर्व वाले व्यक्ति के व्यवहार-जगत् के अधिक परिष्कृत न होने पर भी उसे धन कमाने में सफलता मिलती है।

दो नक्षत्रचिह्न वाली सूर्य रेखा तो व्यक्ति के ऐसा विलक्षण प्रतिभाशाली होने की सूचक है कि लोगों को दांतों तले अंगुली दबानी पड़ जाती है (रेखाचित्र-450)। बर्नहाट के हाथ में सूर्य रेखा पर दो नक्षत्रचिह्न थे। इन दो चिह्नों में प्रथम चिह्न प्रसिद्धि मिलने वाली आयु का सूचक है, तो दूसरा नक्षत्र इस तथ्य का सूचक है कि व्यक्ति को प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा के साथ समृद्धि आदि जीवनपर्यन्त मिलते रहेंगे और बने रहेंगे। एक नक्षत्र आरम्भ में और एक ही नक्षत्र अन्त में लिये रहने वाली सूर्य रेखा से सूचित होता है कि व्यक्ति जीवनपर्यन्त दूसरों को अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने में सफल रहता है (रेखाचित्र-451)।

किसी गहरी रेखा में जाकर सूर्य रेखा की समाप्ति के कारण व्यक्ति को जीवन के अन्त में किसी असाध्य एवं दुर्निवार बाधा का सामना करना पड़ता है (रेखाचित्र-452)। सूर्य रेखा का गहरी रेखा में समाप्त होना व्यक्ति की उन्नति में निश्चित रूप

से बाधा उत्पन्न करता है। हां, कारणों की पहचान के लिए इस चिह्न के साथ शनि रेखा तथा अन्यान्य रेखाओं की भी ध्यानपूर्वक जांच-परख करनी चाहिए।
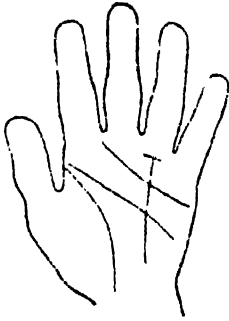
रेखाचित्र-452 रेखाचित्र-453 रेखाचित्र-454

इस चिह्न—गहराई में समाप्ति—के साथ 50 वर्ष की आयु के आसपास तथा उसके आगे भी जीवन रेखा थी। दोषपूर्ण स्थिति का मिलना और रेखा के अन्त में अन्यान्य दोषों—गोपुच्छ, द्विशाखा, द्वीप, नक्षत्र तथा गुणनचिह्न आदि—का मिलना व्यक्ति के उस आयु में अस्वस्थ रहने का और कभी ठीक न हो पाने का तथा इसके फलस्वरूप अपनी योजनाओं को कार्यरूप न दे पाने का सूचक होता है (रेखाचित्र-453)।

व्यक्ति की 50 वर्ष की आयु में उसकी मस्तक रेखा में एक द्वीप का और एक नक्षत्रचिह्न का अथवा दोनों चिह्नों का दीखना उसकी मानसिक शक्तियों के क्षीण होने और उसके फलस्वरूप प्रगति के रुकने और सफलता के न मिलने का संकेत होता है (रेखाचित्र-454)।
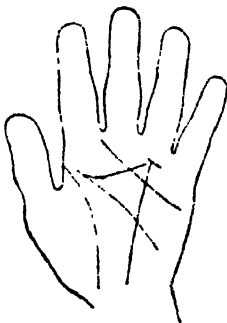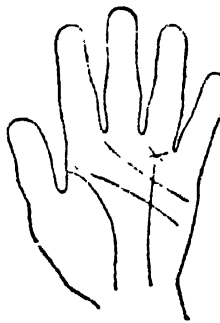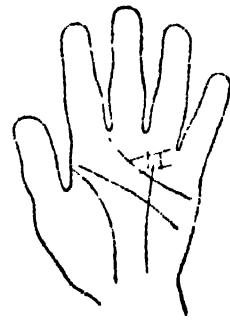
रेखाचित्र-455 रेखाचित्र-456 रेखाचित्र-457

मस्तक रेखा से निकलती किसी ऊर्ध्वगामी रेखा का सूर्य पर्वत पर एक आड़ी

रेखा में जा मिलना गणित की ग़लती से व्यक्ति की प्रगति रुकना व कभी ठीक ही न हो पाना सूचित होता है (रेखाचित्र-455)। इससे व्यक्ति द्वारा प्रारम्भिक आयु में किये गये विनिवेशों के डूब जाने अथवा हानिकारक सिद्ध होने के संकेत भी मिलते हैं। सूर्य रेखा के अन्त में गुणनचिह्न तो और भी अधिक अनिष्टमूलक होते हैं; क्योंकि इस स्थिति में व्यक्ति के मान-सम्मान को कलंक लगता है (रेखाचित्र-456)। यह चिह्न व्यक्ति की निर्णय-शक्ति को दुष्प्रभावित करता है, जिससे व्यक्ति अपने जीवन में ऐसी भयंकर भूलें कर बैठता है, जिन्हें सुधारना सम्भव ही नहीं होता। सिवा पछताने और रोने-बिलखने के वह कुछ भी नहीं कर पाता।

उत्तम सूर्य रेखा के अन्त में तथा इन चिह्नों की स्थिति पर विचार करने के पश्चात् यह कहना अनुचित न होगा कि अस्पष्ट और दोषपूर्ण सूर्य रेखा पर इन चिह्नों का मिलना रेखा की गुणवत्ता को और तदनुरूप परिणाम को हीन बनाने वाला ही होता है।

सूर्य रेखा के अन्त में वर्गचिह्न सभी प्रकार के अनिष्टों से बचाने वाला होता है और इसका प्रभाव केवल जीवन की सान्ध्य वेला में ही नहीं, अपितु पूरे जीवन-भर बना रहता है (रेखाचित्र-457)। सूर्य रेखा की समाप्ति पर पाये जाने वाले सभी चिह्नों पर तो यह तथ्य लागू नहीं होता, परन्तु वर्गचिह्न को सर्वथा अपवाद ही समझना चाहिए। रेखा के अन्त में भी मिलने वाले अशुभ चिह्नों को वर्गचिह्न द्वारा अपने घेरे में ले लेने पर हानि की सम्भावना बहुत बड़ी सीमा तक घट जाती है।
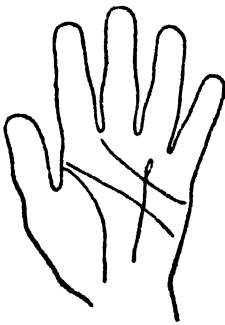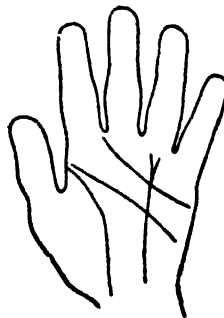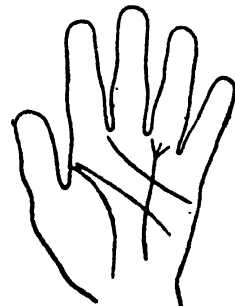
रेखाचित्र-458 *रेखाचित्र-459* *रेखाचित्र-460*

हां, सूर्य रेखा के अन्त में द्वीपचिह्न सर्वथा अनिष्टकारी होता है (रेखाचित्र-458)। उत्तमोत्तम सूर्य रेखा के अन्त में मिलने वाला यह चिह्न व्यक्ति के जीवन के अन्तिम दिनों में धन और प्रतिष्ठा से हाथ धोने का संकेत होता है।

सूर्य रेखा का अन्त में द्विशाखी हो जाना व्यक्ति की प्रतिभा के किसी एक दिशा में केन्द्रित न होकर उसके बिखराव का और इस कारण प्रयासों के अपेक्षित सफल

न होने का सूचक होता है (रेखाचित्र-459)। सूर्य रेखा के अन्त में त्रिशूलचिह्न भी नक्षत्रचिह्न के समान शुभ होता है (रेखाचित्र-460)। यह इस तथ्य का सूचक है कि व्यक्ति अपने मनोयोग और श्रम से धन और प्रतिष्ठा पाने में सफल होगा।
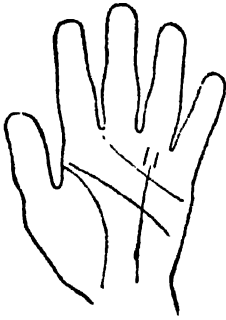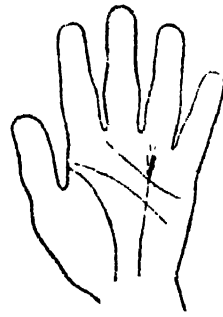
रेखाचित्र-461 *रेखाचित्र-462* *रेखाचित्र-463*

सूर्य पर्वत पर सूर्य रेखा के दोनों ओर एक-एक समानान्तर रेखा पहले से ही अच्छे संकेतों को सशक्त और सुनिश्चित बना देती है (रेखाचित्र-461)। जहां सूर्य रेखा अपने आप में अत्यन्त लाभकारी और उपयोगी होती है, वहां दोनों ओर प्रबल सहायक रेखाओं की स्थिति तो सोने में सुहागे का कार्य करती है। व्यक्ति बड़ी-से-बड़ी सफलता को सुविधापूर्वक पाने में सफल रहता है। यही कारण है कि प्राचीन हस्तरेखाशास्त्री इन रेखाओं को प्रतिभा रेखाएं नाम देते हैं। सूर्य रेखा के सूर्य पर्वत पर जाने से और पर्वत पर अनेक रेखाओं के मिलने से व्यक्ति द्वारा अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन करने का तथा इस विविधता के कारण कुछ उल्लेखनीय प्राप्त न कर पाने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-462)।

सूर्य रेखा के अन्त में गोपुच्छ का मिलना व्यक्ति द्वारा अपनी प्रतिभा और प्रयासों का इतनी अधिक दिशाओं में बिखरा देना व कुछ भी परिणाम न मिलने का संकेत होता है (रेखाचित्र-463)। ऐसा व्यक्ति विशिष्ट प्रतिभाशाली होते हुए भी विविधता-प्रेमी होने के कारण एकाग्रता के अभाव का शिकार होकर सर्वत्र असफल ही रहता है।

द्विशाखी सूर्य रेखा के अन्त में एक रेखा का शनि पर्वत की ओर और दूसरी रेखा का बुध पर्वत की ओर जाने से सूचित होता है कि व्यक्ति तीनों—सूर्य, शनि और बुध के गुणों—विवेक, प्रतिभा और व्यावहारिक सूझ-बूझ—से सम्पन्न होने के कारण ख़ूब धन-सम्पत्ति और मान-सम्मान कमाने वाला होगा (रेखाचित्र-464)।

सूर्य रेखा के ऊपर की ओर निकली शाखाएं अथवा पतली रेखाएं सूर्य रेखा के उत्तम प्रभाव में वृद्धि करने वाली तथा व्यक्ति की सफलता को और भी अधिक

सुनिश्चित करने वाली होती हैं। इस स्थिति में व्यक्ति जीवन में आने वाली सभी कठिनाइयों को पार करता हुआ निरन्तर आगे-ही-आगे बढ़ता जाता है, परन्तु सूर्य रेखा के नीचे को निकलती रेखाएं व्यक्ति के अधिक और निरन्तर परिश्रम के उपरान्त ही सफल होने की सूचक होती हैं (रेखाचित्र-465)। यह व्यक्ति पर उठकर चढ़ाई चढ़ने का और कभी-कभी इस भार के बहुत भारी पड़ने का संकेत है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति अपनी कठिनाइयों पर आसानी से क़ाबू नहीं पा सकेगा। इस प्रकार की रेखा के ऊपर की ओर निकलने वाली शाखाओं से व्यक्ति के जीवन का समृद्ध होना सूचित नहीं होता। सूर्य रेखाओं से निकलती और दूसरी रेखाओं, चिह्नों अथवा पर्वतों से जाकर मिलती रेखाओं में से प्रत्येक रेखा एक विशेष अर्थ लिये रहती है, जिसे उसके समाप्ति-स्थल से पढ़ा जा सकता है।
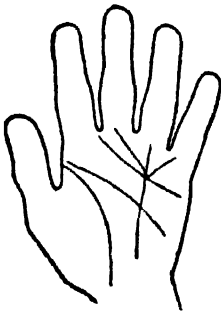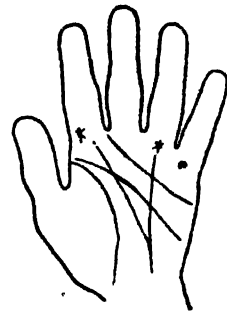
रेखाचित्र-464 *रेखाचित्र-465* *रेखाचित्र-466*

बृहस्पति पर्वत की ओर जाती सूर्य रेखा की एक ऊपर जाने वाली शाखा से संकेत मिलता है कि व्यक्ति प्रतिभाशाली होने के साथ-साथ महत्त्वाकांक्षी और नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न भी है। इस योग से धन-सम्पत्ति की प्राप्ति तो सन्दिग्ध हो सकती है, परन्तु प्रसिद्धि का मिलना तो सर्वथा सुनिश्चित ही रहता है। इस योग के साथ बृहस्पति पर्वत पर एक नक्षत्रचिह्न का होना महत्त्वाकांक्षा के सफल रहने का संकेत देता है। इसके साथ ही साथ सूर्य पर्वत पर भी नक्षत्रचिह्न का दीखना प्रमिद्धि-प्राप्ति को सुनिश्चितता का संकेत देता है (रेखाचित्र-466)। हस्तरेखाशास्त्र में निर्दिष्ट लक्षणों का अध्ययन करके तदनुरूप परिणाम सुनिश्चित करना चाहिए।

हाथों की कोमलता, शुक्र पर्वत की विशालता और अंगुलियों के अग्रभागों का नुकीलापन व्यक्ति के संगीतकार होने का सूचक है। ऐसा व्यक्ति हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक संगीत का प्रेमी होता है। इन लक्षणों के साथ विशाल चन्द्र पर्वत के जुड़ने से व्यक्ति शास्त्रीय संगीत में रुचि लेने वाला होता है। अंगुलियों की वर्गाकार बनावट वाला व्यक्ति ताल, लय व मात्रा का मर्मज्ञ विद्वान् एवं उत्कृष्ट गीतों का रचनाकार

होता है। अंगुलियों के चमचाकार अग्रभागों वाला व्यक्ति संगीत की प्रस्तुति में और अभिनय-कला में विशिष्टता प्राप्त करने वाला होगा। वर्गाकार अंगुलियां और चमचाकार अग्रभागों वाला व्यक्ति दोनों—निर्देशन तथा अभिनय—क्षेत्रों में सफल रहने वाला होगा। व्यावहारिक जगत् के प्रधान होने पर व्यक्ति प्रचुर धन कमाने वाला, अपने समुदाय का नेतृत्व प्रदान करने वाला तथा यश-कीर्ति प्राप्त करने वाला होता है

निम्न लोक की प्रधानता व्यक्ति को धन तो देती है, परन्तु उसका व्यक्तित्व तुच्छ होता है। उसकी बातचीत का ढंग, पहनावा, खान-पान, रहन-सहन तथा व्यवहार सब कुछ घटिया ही होता है।

सूर्य रेखा से निकलती किसी शाखा के शनि पर्वत की ओर जाने का अर्थ है—व्यक्ति सौम्य, सदाचारी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाला तथा शनि के सन्तुलनकारी गुणों से सम्पन्न होने से सफलता प्राप्त करने वाला होता है। इस संयोजन के साथ ही मस्तिष्कलोक का प्रभावी होना व्यक्ति के मन्त्र-तन्त्र, भौतिकी-रसायन तथा गणित आदि में विशेष दक्ष होना सूचित करता है। इसके साथ ही चिकनी अंगुलियों वाला व्यक्ति तो इन क्षेत्रों में अद्भुत दक्षता, विशिष्टता और नेतृत्व का परिचय देने वाला होता है। अंगुलियों के गठीले जोड़ों वाला व्यक्ति तर्कशील और यथार्थी होता है। वर्गाकार अंगुलियां यथार्थता के तथा चमचाकार अग्रभाग मौलिकता के संकेत हैं। सूर्य और शनि से प्रभावित ऐसा व्यक्ति रूढ़िवादी न होकर स्वतन्त्र दृष्टिकोण रखने वाला होता है और उसकी मानसिक शक्तियां उसे यश, प्रसिद्धि और सफलता प्रदान करने में सहायक सिद्ध होती हैं।

रेखाचित्र-467 *रेखाचित्र-468* *रेखाचित्र-469*

शनि पर्वत को जाती शाखा के नक्षत्र से चिह्नित होने पर उस पर्वत की विशेषताएं व्यक्ति को सफलता प्रदान करने वाली होती हैं। इसके साथ सूर्य पर्वत का भी एक नक्षत्र से चिह्नित होना सफलता की पुष्टि कर देता है (रेखाचित्र-467)। व्यावहारिकलोक की प्रभविष्णुता व्यक्ति को अपने प्रयासों से धन-सम्पत्ति और

यश-प्रसिद्धि दिलाने वाली होती है। निचले लोक की प्रबलता व्यक्ति को कंजूसी के स्तर तक मितव्ययी बनाने वाली होती है। अंगूठे की कठोरता से तो कृपणता पुष्ट हो जाती है। इस चिह्न के साथ हाथ का घटियापन व्यक्ति को चरम सीमा तक नीच बनाने वाला होता है।

रेखाओं के अन्त में गुणनचिह्नों, आड़ी रेखाओं, बिन्दुओं तथा इस प्रकार के अन्यान्य दोषों की उपस्थिति व्यक्ति की सफलता को सन्दिग्ध बना देती है। ऐसा व्यक्ति तो अपने मान-सम्मान की रक्षा करने में भी असमर्थ रहता है। इन पर्वतों पर इन रेखाओं की सहायक रेखाओं की उपस्थिति व्यक्ति को बहुत बड़ी सफलता दिलाने वाली होती है (रेखाचित्र-468)।

सूर्य रेखा का पर्वतों तक न पहुंचना और पर्वतों पर अनेक सीधी-खड़ी रेखाओं का दीखना व्यक्ति द्वारा अत्यधिक प्रयास करने पर भी अन्तिम लक्ष्य तक न पहुंच पाने का संकेत है (रेखाचित्र-469)।

सूर्य रेखा से निकली किसी शाखा के बुध पर्वत तक जाने से उस पर्वत के गुण व्यक्ति की सहायता करने वाले होते हैं। व्यक्ति चतुर, विवेकशील और व्यवसाय-पटु होता है। उसकी न केवल सोच वैज्ञानिक होती है, अपितु वह अभिव्यक्ति-कला में भी कुशल होता है। सूर्यप्रधान प्रतिभा लिये रहने वाला ऐसा व्यक्ति किसी क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता एवं ख्याति प्राप्त करता है। मस्तिष्कलोक के प्रभावी होने पर सूर्य अथवा बुधप्रधान व्यक्ति धाराप्रवाह बोलने की अद्‌भुत क्षमता लिये रहने वाला, अत्यन्त सफल वक्ता एवं लेखक होता है। अंगुलियों और उनके छोरों के वर्गाकार होने पर ऐसा व्यक्ति सामान्य सोच के विषयों का चयन करता है, तो नुकीले-पैने अग्रभागों वाला व्यक्ति कलात्मक एवं आदर्श विषयों पर चिन्तन-मनन करता है। चमचाकार अग्रभागों वाला व्यक्ति न केवल चिन्तन में, अपितु अभिव्यक्ति में भी मौलिकता अपनाता है। चिकनी अंगुलियों वाला व्यक्ति तो चिन्तन के क्षेत्र से दूसरों के लिए प्रेरणा और आदर्श सिद्ध होता है। गांठदार अंगुलियों वाला व्यक्ति प्रत्येक विषय को पहले से भली प्रकार तैयार करता है और प्रत्येक प्रश्न का उत्तर उसकी जिह्वा पर विराजमान रहता है। लम्बी अंगुलियों वाला व्यक्ति अपने वक्तव्य को ब्योरेवार प्रस्तुत करता है, तो छोटी अंगुलियों वाला व्यक्ति शीघ्र निष्कर्ष पर पहुंच जाता है। लचीले हाथों वाला व्यक्ति काम करने में रुचि लेने वाला और कुछ प्राप्त करने में सफल रहने वाला होता है। हां, कोमल हाथों वाला व्यक्ति अपने चिन्तन के अनुरूप करने में समर्थ नहीं रहता। बुध की अंगुली के द्वितीय पर्व के लम्बा होने पर व्यक्ति सफल चिकित्सक अथवा वकील बनता है। बुध पर्वत पर खड़ी रेखाओं का होना व्यक्ति को विधि एवं न्याय से विशिष्टता प्राप्त करने वाला और मुक़दमों को सुलझाने में समर्थ बताता है (रेखाचित्र-470)। ऐसा व्यक्ति सरल, परिश्रमी तथा

अनुसन्धान में रुचि लेने वाला होता है। इस प्रकार के मामलों में हस्तरेखाशास्त्र के सभी संकेतों के उपयोग से भी अभीष्ट परिणाम की प्राप्ति होती है।

रेखाचित्र-470 में उदाहरण के रूप में निर्दिष्ट हाथ में बुध की अंगुली के सर्वाधिक लम्बे तृतीय पर्व वाला व्यक्ति उद्योग-धन्धे को समर्पित, कुशल, तीव्र-बुद्धि, आक्रामक और कभी पराजय स्वीकार न करने वाला होता है। उसमें लोगों को समझाने और उनसे निपटने की विलक्षण क्षमता होती है। कहीं से अथवा किसी से उद्योग-धन्धे या व्यवसाय का प्रस्ताव आने पर उसमें अच्छाई-बुराई की अथवा लाभ-हानि को समझने-परखने की पूरी योग्यता होती है।

अंगुलियों के अग्रभाग का चमचाकार रूप, व्यक्ति की मौलिकता का वर्गाकार रूप, उसकी नियम-व्यवस्था-प्रियता का, लोचदार रूप कार्य करने और सफल होने की योग्यता का और अंगूठे का बड़ा होना उसकी शक्तियों के प्रयोग की दृढ़ता का प्रतीक होगा। इस प्रकार का संयोग सफलता और धन-सम्पत्ति प्राप्ति का सूचक है।
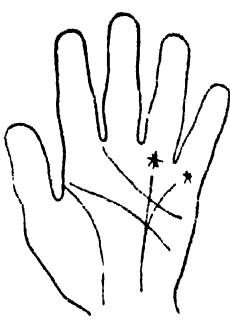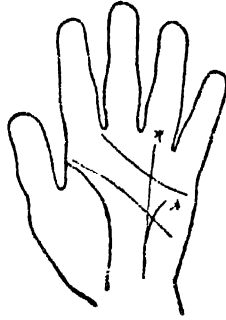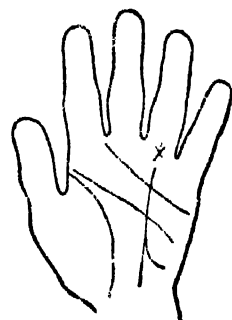
रेखाचित्र-470 *रेखाचित्र-471* *रेखाचित्र-472*

सूर्य पर्वत और बुध पर्वत पर नक्षत्रचिह्नों की उपस्थिति सफलता की सम्भावना में वृद्धि करने वाली होती है, परन्तु इन दोनों पर्वतों पर गुणनचिह्नों, बिन्दुओं, आड़ी रेखाओं तथा इस प्रकार के अन्यान्य दोषों के होने पर व्यक्ति महंगी पड़ने वाली गलतियां करने वाला होता है। इन पर्वतों पर नक्षत्रचिह्न के साथ ही बुध की अंगुली का टेढ़ा अथवा ऐंठा हुआ अथवा दोनों प्रकार का होना सूचित करता है कि व्यक्ति किन्हीं उत्कृष्टतम कार्यों के लिए अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करने वाला होता है। सूर्य रेखा से निकलती किसी शाखा के मंगल पर्वत की ओर जाने पर सूर्यप्रधान व्यक्ति में मंगल की उत्कृष्ट विशेषताएं जुड़ जाती हैं। (रेखाचित्र-471), जिससे उसमें आत्मनिर्भरता, आशावादिता, दृढ़संकल्प, आत्मविश्वास तथा स्थिर चिन्तन-जैसे गुण आ जाते हैं और वह इन गुणों का सही और पूर्ण उपयोग करने में समर्थ हो जाता है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिजीवी होने पर अपने गुणों का उपयोग अपनी मानसिक

शक्तियों को सुदृढ़ करने में लगाता है। भौतिक जगत् से जुड़ा व्यक्ति अपने गुणों का उपयोग व्यवसाय-धन्धे में करता है तथा सिपाही होने पर ऐसा व्यक्ति अपने इन्हीं गुणों से योद्धा के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

सूर्य पर्वत और मंगल पर्वत पर दोषों—गुणनचिह्न, बिन्दु तथा आड़ी रेखाएं आदि—का दीखना व्यक्ति द्वारा घोर संकटों के सामना करने का सूचक है। हां, मंगल पर्वत पर रेखा के साथ सहायक रेखाओं की उपस्थिति अतिरिक्त प्रसिद्धि दिलाने वाली होती है।

सूर्य रेखा से निकली एक शाखा के चन्द्र पर्वत पर जाने से व्यक्ति की कल्पनाशक्ति की प्रखरता द्योतित होती है। उसमें शब्दों को रंगीन दृश्यों में बदलने की कला तथा विचारों को उत्तम अभिव्यक्ति देने की शैली अपने विकसित रूप में होती है। ऐसा व्यक्ति एक सफल एवं उच्चकोटि का लेखक बन जाता है (रेखाचित्र-472)। संगीतज्ञ के लक्षणों वाला हाथ केवल शास्त्रीय संगीत में विदग्ध होता है। चिकनी अंगुलियों और नुकीले अग्रभागों वाला व्यक्ति उत्कृष्ट कोटि का लेखक होता है। ऐसा व्यक्ति कल्पना पर आधारित प्रेमाख्यानों तथा प्रेम-प्रधान मुक्तक काव्यों की रचना में सिद्धहस्त होता है। गांठदार अंगुलियां वाला व्यक्ति गद्य-लेखन में निपुण होगा, परन्तु उसका गद्य भी पद्यात्मक प्रवाहपूर्ण होगा।

सूर्य रेखा की स्थिति के अन्त में नक्षत्रचिह्न की उपस्थिति व्यक्ति को इन क्षेत्रों में ख्याति-प्राप्त होने का संकेत देती है। इसके विपरीत रेखा के अन्त में गुणनचिह्न, बड़ी रेखाएं, बिन्दु तथा इस प्रकार के अन्यान्य दोषों की उपस्थिति इस तथ्य की सूचक है कि व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा के लिए भयंकर गलतियां करने वाला होगा।
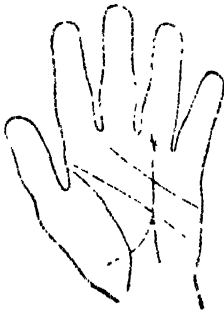
रेखाचित्र-473 *रेखाचित्र-474* *रेखाचित्र-475*

सूर्य रेखा से निकलती किसी रेखा का प्रबल शुक्र पर्वत की ओर जाना व्यक्ति के सुमधुर मादक संगीत का प्रेमी होना सूचित करता है (रेखाचित्र-473)। वाद्य-संगीतकार के रूप में उसकी अनुभूति उदात्त और अभिव्यक्ति उत्कृष्ट होगी। वर्गाकार

अंगुलियां लय, ताल और छन्द में निपुणता की, चमचाकार अंगुलियां संगीत की तकनीक में कुशलता की, वर्गाकार अंगुलियां और चमचाकार अग्रभाग तीनों—लय, ताल और तकनीक—में विशिष्टता की सूचक होती हैं।

इस संयोग वाले व्यक्ति के हाथ की कोमलता अथवा शिथिलता उसके संगीत सुनने की रुचि तक सीमित तथा संगीत में निपुणता पाने की योग्यता के अभाव की सूचक है। सूर्य पर्वत पर नक्षत्रचिह्न का दीखना व्यक्ति को महान् संगीतकार के रूप में प्रतिष्ठा दिलाता है। रेखा पर अथवा रेखा के अन्त में गुणनचिह्नों, आड़ी रेखाओं, बिन्दुओं तथा अन्यान्य दोषों की उपस्थिति को व्यक्ति के संगीत की रुचि में मार्ग की बाधाएं ही समझनी चाहिए।

सूर्य रेखा से निकलती और मस्तक रेखा में मिलती कोई शाखा व्यक्ति के अपनी मानसिक शक्तियों से सहायता पाने का संकेत देती है (रेखाचित्र-474)। मस्तक रेखा की प्रबलता और प्रभविष्णुता व्यक्ति की सफलता के पीछे उसके सशक्त मस्तिष्क के योगदान का संकेत देती है। इसी से वह विवेक और आत्मसंयम को अपनाने में समर्थ हो पाता है। मस्तक रेखा की शाखा के निकलने वाले स्थान पर प्रकट त्रिकोणचिह्न व्यक्ति को असाधारण मानसिक शक्ति का स्वामी होना बताता है।

किसी रेखा के हृदय रेखा से निकलकर सूर्य रेखा में मिलने से हृदय के उत्तम भावों से सहयोग मिलता है (रेखाचित्र-475)। प्रेम, करुणा, सहानुभूति तथा ममता आदि उत्तम गुणों से मित्रों के हृदय को वश में किया जाता है और वश में आये मित्र व्यक्ति के हित-संरक्षण एवं संवर्द्धन में सहायक होते हैं।
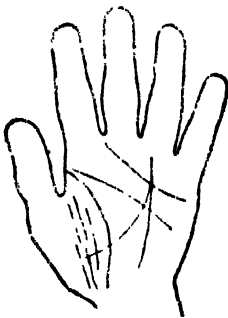
रेखाचित्र-476
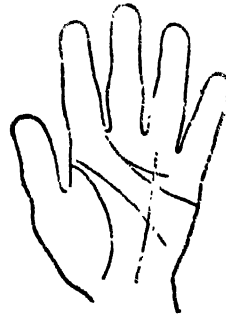
रेखाचित्र-477

शुक्र पर्वत से निकली और सूर्य रेखा के साथ विद्यमान प्रभावी रेखाएं व्यक्ति को सम्बन्धियों से सहायता-प्राप्ति का संकेत देती हैं (रेखाचित्र-476)। कुछ विद्वान् इस सहायता को आर्थिक सहायता तक सीमित मानते हैं, परन्तु यह उचित नहीं। प्रेरणा, परामर्श, प्रोत्साहन, पथ-प्रदर्शन और सिफ़ारिश आदि को भी इसी में सम्मिलित

मानना चाहिए।

हृदय रेखा से निकली किसी रेखा द्वारा सूर्य रेखा को काटने का अर्थ है— प्रेम-भावनाओं से व्यक्ति की सफलता में रुकावटें पैदा होना (रेखाचित्र-477)।

हस्तरेखाशास्त्री को सूर्य रेखा को आधार बनाकर और व्यक्ति के सन्दर्भ में सामञ्जस्य बिठाते हुए तथा हाथ की पूरी-की-पूरी रूपरेखा की विविध पक्षों से व्याख्या करते हुए महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक निष्कर्ष निकालने चाहिए। यह स्मरणीय तथ्य है कि उत्तम सूर्य रेखा उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक होती है। विवेचन की त्रुटियों के कारण इस सत्य की उपेक्षा को दुर्भाग्य ही माना जाना चाहिए। यहां यह भी स्मरणीय तथ्य है कि सूर्य रेखा केवल कला तक ही सीमित नहीं होती, अपितु जीवन के प्रत्येक व्यवसाय से सम्बन्ध रखती है। अत: केवल कला के क्षेत्र में इसका उपयोग भ्रान्तिमूलक ही सिद्ध होता है। सूर्य रेखा का एक नाम 'क्षमता रेखा' है, जो इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका उपयोग किया जा सकता है। हां, व्यक्ति-विशेष के सन्दर्भ में कौन-सा क्षेत्र अधिक उपयुक्त रहेगा—इसका अनुमान हस्तरेखाशास्त्र में निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार ही लगाना चाहिए। रेखा के अन्त से प्रारम्भ तक स्थिति, स्वरूप में आये भेद, परिवर्तन, दोष तथा आकस्मिक रेखाओं का मिलना, अलग होना, साथ-साथ चलना तथा काटना आदि की जांच-परख के साथ इनके साधक-बाधक प्रभावों का अध्ययन करने के उपरान्त ही सूर्य रेखा का यथार्थ और उपयुक्त विश्लेषण-विवेचन किया जा सकता है। इन तथ्यों पर ध्यान दिये बिना किसी निष्कर्ष पर न पहुंचा जा सकता है और न ही इसे न्यायसंगत कहा जा सकता है। *

12

बुध रेखा

बुध रेखा चन्द्र पर्वत से आरम्भ होती है और बुध पर्वत के किनारे पर ऊपर की ओर चली जाती है (रेखाचित्र-478)। इसके दो अन्य नाम हैं—'स्वास्थ्य रेखा' तथा 'यकृत रेखा'। इन दोनों नामों का आधार है—इस रेखा का पाचन-तन्त्र तथा यकृत-क्रिया से जुड़ा हुआ होना। यह रेखा इन दोनों के सम्बन्ध में न केवल महत्त्वपूर्ण सूचनाएं देती है, अपितु शरीर के इन भागों में आयी अव्यवस्था से उत्पन्न रोगों की जानकारी भी देती है। हाथ के अन्य भागों में दीखते अशुभ लक्षणों का दायित्व भी दुर्बल बुध रेखा पर डाला जाता है। बुध रेखा का सही अध्ययन हाथ के विवेचन को शुद्धता प्रदान करता है।
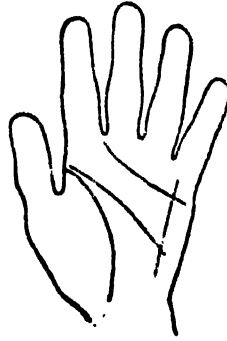
रेखाचित्र-478

जीवन रेखा, शनि रेखा और सूर्य रेखा का संयोजन लिये रहने वाली बुध रेखा पर अवस्थित सभी चिह्न समान रूप से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हैं। शरीर को स्वस्थ बनाये रखने में पाचन-तन्त्र का सन्तुलन तथा पित्त का उचित स्राव-निष्कासन अपनी एक विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। इन दोनों अंगों से सम्बन्धित बुध रेखा का जीवन के विविध क्षेत्रों में व्यक्ति की सफलता-विफलता को प्रभावित करना स्वाभाविक ही है। चिकित्साशास्त्र के अनुसार पाचन-तन्त्र के व्यवस्थित तथा पित्त-प्रवाह के सामान्य रहने पर किसी रोग के जन्म लेने का प्रश्न ही नहीं उठता। किसी रोग से

आक्रान्त व्यक्ति के उस रोग का उपचार करने से पूर्व चिकित्सक सर्वप्रथम उसकी पाचन-क्रिया के विकार और पित्त की आपूर्ति के दोष को नियन्त्रित करने की ओर ध्यान देता है। इन दोनों के ठीक होते ही सभी रोग अपने आप ठीक हो जाते हैं। पित्त-दोषग्रस्त व्यक्ति आपराधिक वृत्ति के होते हैं। अन्य लोग जहां कभी किसी उत्तेजना अथवा दबाव के कारण अपराध-कर्म में प्रवृत्त होते हैं, वहां शनि और बुध प्रकार के निकृष्ट कोटि के लोग स्वभाववश ही अपराध के मार्ग पर चलना अधिक पसन्द करते हैं। अत: स्पष्ट है कि पित्त की अनियमितता घातक परिणाम लिये रहती है। मानव-चरित्र के अध्ययन मे इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है।

व्यवसाय की सफलता मे बुध रेखा उपयोगी मार्गदर्शक बनती है। किसी भी कार्य-व्यापार एव उद्योग-धन्धे में सफलता के लिए विवेक और समझदारी की आवश्यकता होती है। इसके लिए व्यक्ति के मस्तिष्क का स्वस्थ, शान्त और संयत होना आवश्यक है। मस्तिष्क ही नहीं, अपितु शरीर का कोई भी अंग अपने स्वास्थ्य के लिए पाचन-क्रिया और यकृत के सुचारु रूप से कार्य करने पर निर्भर है। अच्छे स्वास्थ्य के साथ अच्छे बुधप्रधान गुणों का संयोग 'सोने पर सुहागा' की उक्ति को सार्थक करने वाला होता है। इस प्रकार बुध रेखा पाचन-क्रिया के अवयवों और यकृत की दशा की सूचक होती है। इसके अतिरिक्त यह बुधप्रधान व्यक्ति के शक्ति-सामर्थ्य में वृद्धि करती है। इससे स्पष्ट है कि व्यक्ति की किसी भी व्यवसाय में सफलता-असफलता का अनुमान लगाने में बुध रेखा का विशेष योगदान रहता है।

बुध रेखा का स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उपयोग करते समय व्यक्ति की कोटि पर ध्यान देना आवश्यक है। बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति के हाथ में अजीर्ण अथवा पित्त-दोष के लक्षणों की उपस्थिति संकट गहराने का संकेत है; क्योंकि अपच से सिर चकराने लगता है और रोग की विषमता तो रक्ताघात भी ला सकती है। इस प्रकार बुध रेखा से स्वास्थ्य-विकारों से जुड़े संकट की जानकारी पाने में सहायता मिलती है। आमाशय और यकृत का शरीर और मन पर निश्चित रूप से गहरा प्रभाव पड़ता है। अत: बुध रेखा मस्तक रेखा के दोषों को जानने में सहायक बनती है। हृदय की गड़बड़ी का प्रमुख कारण अपच ही होता है। यही कारण है कि हृदय रेखा के दोषपूर्ण होने पर बुध रेखा में उसका संकेत मिल जाता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि अच्छे-से-अच्छा जीवन भी स्वास्थ्य की ख़राबी से नष्ट हो जाता है। इस दृष्टि से शनि और सूर्य रेखाओं में मिलने वाले दोषों के कारणों की जानकारी देने वाली बुध रेखा का विशेष महत्त्व है। बुध रेखा द्वारा निर्दिष्ट दोषों का प्रभाव पूरे हाथों पर भी दृष्टिगोचर होता है। अत: किसी भी विषम-जटिल समस्या को सुलझाते समय बुध रेखा का परीक्षण सही निर्णय पर पहुंचने में सहायक सिद्ध होता है।

बुध रेखा सभी व्यक्तियों के हाथों में नहीं पायी जाती। एक मोटे अनुमान के

अनुसार लगभग पचास प्रतिशत व्यक्तियों के हाथ इस रेखा से रहित होते हैं। बहुत थोड़े हाथों में यह रेखा पूरी और स्पष्ट होती है और ऐसे लोगों का स्वास्थ्य एकदम उत्तम होता है। बुध रेखा की अनुपस्थिति अशुभ संकेत तो कदापि नहीं; क्योंकि इस रेखा को न रखने वालों का भी स्वास्थ्य उत्तम पाया जाता है। वस्तुतः रेखा के दोषपूर्ण होने से तो उसका न होना ही अच्छा है। जिस प्रकार शनि रेखारहित व्यक्ति अपना मार्ग आप ही बनाता है, उसी प्रकार बुध रेखारहित व्यक्ति के भी उदर और यकृत का सही रूप में कार्य करना सूचित होता है। इन्हें ठीक रखने अथवा बिगाड़ने का दायित्व स्वयं उसी के ऊपर है। सामान्यतः यह पाया गया है कि बुध रेखारहित हाथ में अतिरिक्त रेखाएं भी नहीं मिलतीं। रेखाओं का कम पाया जाना व्यक्ति को कम अधीर, कम विचलित और कम घबराने वाला सूचित करता है। घबराहट, अधीरता अथवा उत्तेजना यकृत के लिए अवांछनीय होते हैं तथा इनसे कार्यक्षमता प्रभावित होती है। इस प्रकार अधीरता, उत्तेजना तथा घबराहट का अभाव अथवा इनकी न्यूनता स्वास्थ्य के लिए अनुकूल स्थिति है। जब तक बुध रेखारहित व्यक्ति अपने स्वास्थ्य की रक्षा के प्रति सतर्क रहता है, तब तक उसे अपच और जिगर रोग आदि से ग्रस्त होने का कोई खतरा नहीं रहता।

बुध रेखा निकलनी तो चन्द्र पर्वत से चाहिए, परन्तु ऐसा विरला ही होता है। अधिकांश हाथों में तो यह रेखा शनि अथवा जीवन रेखा की ओर जाती है और हाथ के मध्यबिन्दु में यह रेखा शनि रेखा और जीवन रेखा के पास अथवा मूल से मंगल
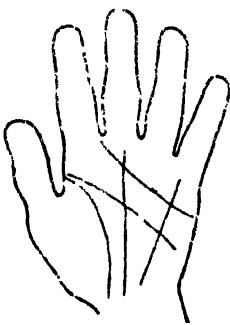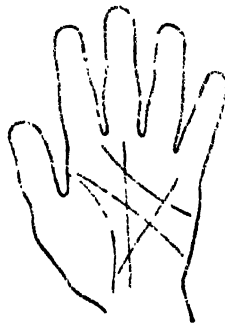
रेखाचित्र-479 रेखाचित्र-480 रेखाचित्र-481

क्षेत्र में प्रकट होती है। बुध रेखा का शनि रेखा और जीवन रेखा के बीच से निकलने की अपेक्षा शनि रेखा और हथेली के किनारे के मध्य से निकलना अधिक अच्छा होता है (रेखाचित्र-479-480)। जीवन रेखा से बुध रेखा का निकलना तो अत्यन्त ही अशुभ माना जाता है (रेखाचित्र-481)।

बुध रेखा का जीवन रेखा को स्पर्श न करना व्यवसाय में सफलता मिलने का

अच्छा संकेत समझना चाहिए। इसके साथ ही यदि ऐसा संयोजन—जीवन रेखा से निकलती शाखाओं का बुध रेखा के ऊपर या नीचे जाना अथवा आकस्मिक रेखा का बुध रेखा से न जुड़ना—और अधिक अच्छा होता है। जीवन रेखा से न निकलती अथवा उसे न छूती बुध रेखा बुध रेखा न कहलाकर एक सामान्य रेखा ही कहलाती है, अर्थात् बुध रेखा का जीवन रेखा के सम्पर्क में रहना आवश्यक है।

बुध रेखा का स्वरूप भी अपना एक महत्त्व रखता है। गहरी बुध रेखा से पाचन-क्रिया तथा यकृत-क्रिया का स्वस्थ होना, इसके फलस्वरूप व्यक्ति का उत्तम शक्ति से सम्पन्न, उत्कृष्ट शारीरिक गठन वाला, स्वच्छ एवं विवेकपूर्ण मस्तिष्क तथा प्रखर स्मरणशक्ति वाला होना सूचित होता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये सभी गुण व्यक्ति को उसके व्यवसाय में सफलता-प्राप्ति में सहायक सिद्ध होते हैं।

जीवन रेखा के पतली, बारीक, शृंखलाकार अथवा इस प्रकार के अन्यान्य विवरण वाली होने तथा बुध रेखा के गहरी-सशक्त होने पर जीवन रेखा पर सशक्त मंगल रेखा के अनुकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसी रेखा कभी-कभार तो जीवन रेखा का कार्य भी करती है (रेखाचित्र-482)। विकृत स्वास्थ्य एवं दोषपूर्ण जीवन रेखा वाले व्यक्ति को ऐसी बुध रेखा सहारा देने वाली सिद्ध होती है।
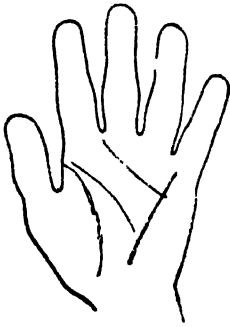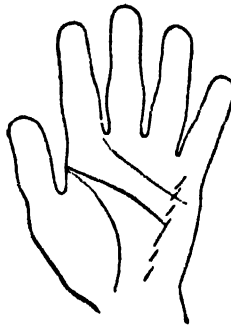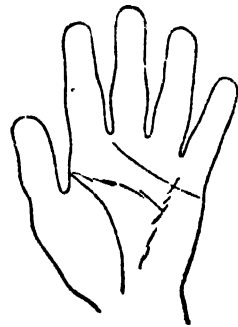
रेखाचित्र-482 *रेखाचित्र-483* *रेखाचित्र-484*

मस्तिष्क के स्वस्थ एवं प्रभावी रूप से कार्यशील होने के लिए पाचन-क्रिया के तथा पित्त-निस्सरण के उत्तम होने के सिवा और कुछ भी अपेक्षित नहीं होता। इन दोनों—अपच और यकृत-दोष—के कारण व्यक्ति का जीवन निराशा तथा अवसाद से ग्रस्त हो जाता है। अवसादग्रस्त व्यक्ति के मस्तिष्क से सही कार्य करने की अपेक्षा ही नहीं की जा सकती। पाचन-क्रिया और यकृत-क्रिया के सही होते ही मस्तिष्क स्वस्थ एवं स्वच्छ हो जाता है और व्यक्ति सभी पदार्थों को उनके सही परिप्रेक्ष्य में देखने लगता है। इस प्रकार बुध रेखा व्यक्ति की मानसिक क्षमता में वृद्धि करने वाली और सन्तुलन को स्थिर रखने वाली होती है। निकृष्ट बुध रेखा मस्तिष्क के लिए

हानिकारक होती है। अत: मस्तिष्क की विकृति का सारा दोष इसी के मत्थे मढ़ा जाता है (रेखाचित्र-483-484)।

अजीर्ण अथवा उदर-विकार के कारण कभी-कभी हृदय गति भी प्रभावित हो जाती है। हृदय रेखा के साथ बुध रेखा में भी किसी विकार के दीखने पर व्यक्ति को पुराना हृदय रोगी समझना चाहिए (रेखाचित्र-485)।
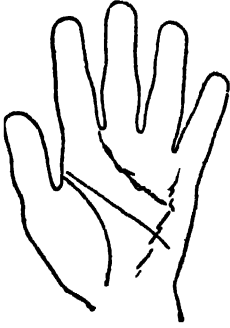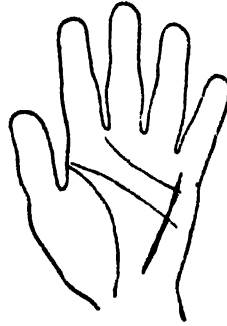
रेखाचित्र-485 *रेखाचित्र-486* *रेखाचित्र-487*

चिकित्सा-विज्ञान के अनुसार उदर-दोष की निवृत्ति हृदय की गड़बड़ी को टालने में सहायक सिद्ध होती है। हृदय रेखा की संरचना को देखते समय नाख़ूनों की गड़बड़ी से उदर-विकार को देखा-जांचा जा सकता है। नाख़ूनों के तथा त्वचा के रंग से हृदय रोग की गम्भीरता के निश्चय में भले ही अनिश्चितता आ जाये, परन्तु बुध रेखा की गहराई तो व्यक्ति के बढ़िया पाचनशक्ति का और स्वस्थ यकृत-क्रिया का निश्चित संकेत देती है। ऐसा व्यक्ति कभी हृदय रोग से आक्रान्त हो ही नहीं सकता। प्रबल जीवन रेखा, प्रबल मस्तक रेखा और प्रबल हृदय रेखा के साथ मंगल रेखा वाले हाथ में गहरी बुध रेखा यह निश्चित संकेत देती है कि ऐसा व्यक्ति सदैव स्वस्थ रहेगा। यहां तक कि एक दिन के लिए भी किसी साधारण-से रोग का भी शिकार कभी नहीं होगा। रेखाओं के ऐसे संयोजन के साथ ही हाथ की संगति का खुरदरा, अत्यधिक कठोर और लचकहीन होना यह दर्शाता है कि व्यक्ति का न केवल स्वास्थ्य उत्तम होगा, अपितु वह अत्यधिक शक्तिशाली, अनियमित खान-पान वाला और उग्र स्वभाव का भी होगा। शराबी-कबाबी और बलात्कार करने वाले व्यक्ति इसी श्रेणी के होते हैं। ऐसे व्यक्ति को ख़ूब परिश्रम करना चाहिए; क्योंकि इसी से उसके शरीर के थकने से उसकी वृत्ति विषयोन्मुख नहीं होती। इस संयोजन के साथ लाल रंग के बालों वाला व्यक्ति तो अत्यन्त उग्र, प्रचण्ड, अतिवादी और आवेगशील होता है। बालों का काला रंग व्यक्ति की चञ्चल प्रकृति का द्योतक होता है।

बारीक बुध रेखा स्वास्थ्य की उत्तमता की तथा यकृत-क्रिया के सही होने की सूचक होती है। अतः ऐसा व्यक्ति उत्तम स्वास्थ्य और सही यकृत-क्रिया के कारण अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने वाला होता है। यहां यह स्मरणीय है कि केवल बुध रेखा की बारीकी शेष संयोजन के परिणाम को अन्यथा नहीं कर देती। वस्तुतः बारीक बुध रेखा तो यकृत-क्रिया के सही प्रवर्तन का एक निश्चित संकेत होती है (रेखाचित्र-486)। हां, यह बात सत्य है कि बारीक रेखा से गहरी रेखा जैसा सही प्रदर्शन कभी नहीं समझा जाता, परन्तु फिर भी सुसंस्कृत व्यक्ति के लिए बारीक बुध रेखा पर्याप्त अच्छी मानी जाती है। हस्तरेखाशास्त्री के लिए बुध रेखा का आकलन करते समय सभी रेखाओं के अनुपात को ध्यान में रखना आवश्यक है, ताकि उसे सन्तुलन की सामान्यता-असामान्यता की सही जानकारी मिल सके। सतही-चौड़ी बुध रेखा से व्यक्ति की पाचन-शक्ति काफी दमदार नहीं होती, थोड़ी-सी बदपरहेजी भी उसे पेट की गड़बड़ी का शिकार बना देती है।

अनियमित यकृत-क्रिया का अर्थ पित्त के निस्सरण में अव्यवस्था होता है और इसके कारण व्यक्ति समय-असमय अचानक गम्भीर शिरोवेदना, पेट की जलन तथा हृदय की धड़कन में वृद्धि-जैसे रोगों से ग्रस्त होने लगता है। जब तक उपर्युक्त रोग नहीं उभरते, उस समय तक व्यक्ति अपने आपको स्वस्थ अनुभव करने लगता है, किन्तु हस्तरेखाशास्त्री को चाहिए कि ऐसी (सतही-चौड़ी) बुध रेखा वाले व्यक्ति को खान-पान और स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहने की चेतावनी दे। ऐसे व्यक्ति भले ही रोगी न कहे जायें, परन्तु उन्हें पूर्णतः स्वस्थ भी नहीं कहा जा सकता; क्योंकि उदर-विकार से दुर्बल बनी जीवनी शक्ति व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा और कार्यक्षमता को बुरी तरह प्रभावित करती है। बुध रेखा के शृंखलाकार होने को जिगर और पेट के विकारों का पक्का प्रमाण समझना चाहिए (रेखाचित्र-487)। हां, द्वीपचिह्न और शृंखला की पहचान में भूल नहीं करनी चाहिए। छोटे कुन्दों वाली शृंखलाकार बुध रेखा वाला व्यक्ति पित्त-नलिका, पित्त-अश्मरी, सूत्रण-जैसे रोगों के अतिरिक्त यकृत-रचना सम्बन्धी अन्यान्य कतिपय गम्भीर एवं घातक समस्याओं से भी पीड़ित हो सकता है।

शृंखलाकार रेखा को निकृष्टतम रेखा माना जाता है और ऐसी रेखा वाला व्यक्ति न केवल जिगर के रोग से ग्रस्त रहता है, अपितु मानसिक जड़ता और विषाद का शिकार भी रहता है। वह न केवल असफल, निराशावादी, संशयशील तथा सदैव चिन्ताग्रस्त रहने वाला होता है, अपितु अपने परिवारजनों और इष्ट-मित्रों के लिए भार स्वरूप भी होता है। उसमें सुखी जीवन और सफल व्यवसाय के लिए अपेक्षित गुणों—आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चय, कठोर श्रम तथा उद्यमशीलता आदि—का नितान्त अभाव रहता है। यही कारण है कि हस्तरेखाशास्त्र में शृंखलाकार बुध रेखा को

व्यावसायिक असफलता का प्रतीक समझने की परम्परा रही है। बुध रेखा की लम्बाई के अनुपात से रेखा की उपयोगिता और शक्ति में वृद्धि का अनुमान लगाया जाता है।

हाथ के मूल से बुध पर्वत तक जाती लम्बी बुध रेखा से व्यक्ति का पूरा जीवन प्रभावित रहता है। लम्बी व उत्तम बुध रेखा व्यक्ति के आजीवन पूर्ण स्वस्थ एवं व्यवसाय में सफल रहने की सूचक है।

इसके विपरीत दोषपूर्ण रेखा व्यक्ति के स्वास्थ्य में गड़बड़ रहने और व्यवसाय में सफलता के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहने का संकेत है। रेखा की लम्बाई और विभिन्न कालों में इसके स्वरूप के आधार पर व्यक्ति के जीवन में सफलता के वर्षों को बताना सम्भव होता है।

रेखाचित्र-488

रेखाचित्र-489

आरम्भ में गहरी और फिर बारीक होना, उसके उपरान्त पुनः गहरी और पुनः बारीक होना, अर्थात् इस क्रम का चलना सूचित करता है कि व्यक्ति स्वास्थ्य-अस्वास्थ्य के हिंडोले में झूलता रहेगा। कभी उसके स्वस्थ, तो कभी अस्वस्थ होने का सिलसिला चलता रहेगा। हां, रेखा के बारीक होने के वर्षों में उसे स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहने के लिए चेतावनी दी जा सकती है। रेखा के अन्त का ठीक होना विपत्ति के टाले जा सकने का संकेत होता है (रेखाचित्र-488)।

उद्गम-स्रोत के आगे जाती बुध रेखा का आरम्भ में गहरा और बाद में शृंखलाकार होना यह सूचित करता है कि व्यक्ति का स्वास्थ्य आरम्भ में तो ठीक-ठाक रहेगा, किन्तु बाद में जिगर की गम्भीर समस्या और उदर की गड़बड़ी उसे न केवल अस्वस्थ कर देगी, अपितु उसकी उन्नति को भी दुष्प्रभावित कर देगी। रेखा द्वारा व्यक्ति की आयु और कालावधि की पूर्व-सूचना प्राप्त की जा सकती है (रेखाचित्र 489)।

बुध रेखा के शृंखलाकार होने के साथ जीवन रेखा की दोषपूर्णता स्थिति के

और अधिक गम्भीर होने की सूचक है (रेखाचित्र-490)
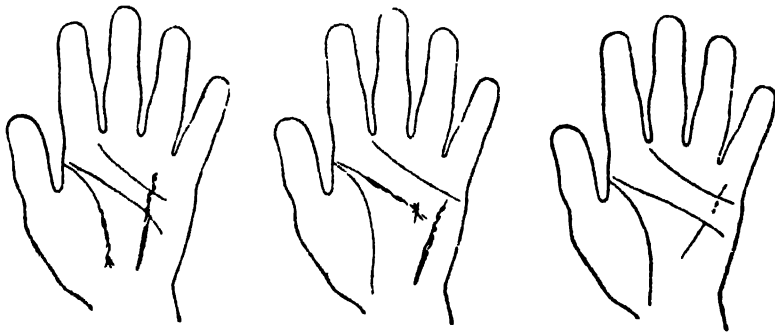
रेखाचित्र-490 *रेखाचित्र-491* *रेखाचित्र-492*

बुध रेखा की बनावट में शृंखला के प्रारम्भ के उपरान्त मस्तक रेखा में द्वीपचिह्न-जैसे किसी दोष का दीखना यकृत रोग से व्यक्ति की मानसिक शक्ति के दुष्प्रभावित होने का संकेत समझना चाहिए। इस संयोजन के साथ मस्तक रेखा में अथवा उसके निकट नक्षत्रचिह्न की उपस्थिति व्यक्ति के पागलपन के शिकार होने की सम्भावना उजागर होती है (रेखाचित्र-491)।

बुध रेखा का मस्तक रेखा तक जाना और समाप्त होना अथवा दोषपूर्ण हो जाना और साथ ही हृदय रेखा से आरम्भ होकर बुध पर्वत पर चढ़ जाने का यह अर्थ लेना चाहिए कि बुध रेखा के उत्तम गुण कभी भी व्यक्ति का साथ छोड़ सकते हैं। अतः उसे जो भी करना है, वह सब 30 वर्ष की आयु का होते-होते निपटा लेना चाहिए (रेखाचित्र-492)।

किसी भी व्यक्ति के जीवन के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वर्ष होते हैं—मस्तक रेखा और हृदय रेखा के मध्यवर्ती। इसका कारण है कि इस अवधि में व्यक्ति बुध रेखा की सहायता प्राप्त नहीं कर पाता। हृदय रेखा से आगे बढ़ती और फिर पर्वत पर चढ़ती यह रेखा स्पष्ट संकेत देती है कि सावधानी बरतने पर व्यक्ति स्वयं को संभालने में समर्थ हो जाता है। रेखा के समीप अथवा उसके अन्त में दोषों—आड़ी रेखाएं, गुणनचिह्न, बिन्दु तथा द्वीप आदि—का दीखना व्यक्ति के स्वस्थ न हो पाने का सूचक है। रेखा के उत्तम भाग तथा अधम (दोषपूर्ण) भाग की जांच-परख के लिए उसकी लम्बाई, उसके उद्गम-स्रोत तथा उसके स्वरूप में आने वाले परिवर्तन भी विचारणीय होते हैं। इससे व्यक्ति की पाचन-क्रिया तथा यकृत-क्रिया के अच्छे-बुरे होने पर उनसे उसके जीवन पर पड़ने वाले अच्छे-बुरे प्रभाव की तथा उसके जीवन में आने वाले परिवर्तनों की पूरी-पूरी जानकारी मिल जाती है। इस सन्दर्भ में उसके व्यवसाय-धन्धे पर पड़ने वाले प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में उसकी आर्थिक सम्पन्नता-विपन्नता का अनुमान लगाना भी सम्भव हो पाता है।

शनि अथवा सूर्य रेखा की अनुपस्थिति में बुध रेखा ही उनका कार्य-भार संभालती है, अर्थात् व्यक्ति के कला-विज्ञान तथा भाग्य को जानकारी कराती है। यहां यह उल्लेखनीय है कि यदा-कदा बुध रेखा किसी आकस्मिक रेखा के समान छोटे आकार की होती है और तब यह आकस्मिक रेखा ही कहलाती है। कुछ हाथों में इस रेखा का या तो अभाव और या फिर दोषपूर्ण रूप पाया जाता है। इससे कभी-कभी आकस्मिक रेखा को बुध रेखा मानने का भ्रम उत्पन्न हो जाता है। बुध रेखा की प्रथम सही पहचान है—सूर्य पर्वत अथवा किसी अन्य पर्वत के स्थान पर केवल बुध पर्वत की ओर जाने वाली रेखा ही बुध रेखा है। स्मरणीय यह है कि रेखा का पर्वत तक पहुंचना आवश्यक नहीं, केवल दिशा का सही होना आवश्यक है।

इसकी दूसरी पहचान है—इसके स्वरूप और लम्बाई का मुख्य रेखा के अनुरूप होना आवश्यक है, अर्थात् यह आकस्मिक रेखा कदापि नहीं लगनी चाहिए।

बुध रेखा अपने रंग से अपनी शक्ति एवं गुणवत्ता का परिचय देती है। अपच और यकृत-विकार की स्थिति में इसका रंग सामान्य रूप से पीला होता है। पीलापन रुग्णता तथा पित्त-दोषग्रस्तता का पक्का प्रमाण माना गया है। व्यक्ति का प्रकार अथवा उसकी कोटि भी रेखा को प्रभावित करती है। यही कारण है कि व्यक्ति के अपच और यकृत-दोषग्रस्त होने पर भी इस रेखा का रंग सदैव पीला नहीं होता। इसके अतिरिक्त बृहस्पति, सूर्य, मंगल तथा शुक्रप्रधान व्यक्तियों के पित्त-विकारग्रस्त होने पर भी उनके हाथों का रंग पीला न होकर लाल-गुलाबी अथवा नीला होता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इन उत्साही व्यक्तियों की बुध रेखा भी दोषपूर्ण होती है, तथापि ये लोग व्यायाम आदि करने तथा प्रसन्नचित्त रहने के कारण बुध रेखा के दुष्प्रभावों—अपच और यकृत-विकार—पर नियन्त्रण पाने में सफल हो जाते हैं। एक अन्य विचारणीय तथ्य यह है कि शनि, बुध और चन्द्रप्रधान व्यक्तियों के हाथों का रंग सामान्यत: पीला ही होता है। शनिप्रधान व्यक्ति में पित्त-विकार की मात्रा कम पायी जाने पर भी उसके हाथों का रंग पीला हो सकता है। इसके विपरीत बुधप्रधान व्यक्ति में पित्त-दोष की अधिकता के कारण उसके हाथों का रंग जैतूनी—हरे रंग का—हो जाता है। चन्द्रप्रधान व्यक्ति के हाथों का रंग पीला-सफ़ेद होता है। शनिप्रधान व्यक्ति की बुध रेखा के अच्छी न होने पर व्यक्ति निराश, कुण्ठित, अवसन्न और कलहप्रिय होता है। वस्तुत: शनिप्रधान व्यक्ति के हाथ में दोषपूर्ण बुध रेखा एक अशुभ संकेत ही माना जाता है। उत्साही एवं जीवट वाले व्यक्तियों के हाथ की बुध रेखा का पीलापन उसके दोषों के बढ़ जाने का संकेत है, जिससे रेखा का सहज गुलाबी रंग पीला पड़ जाता है और व्यक्ति पित्त के विष से बुरी तरह ग्रस्त हो जाता है।

बुध रेखा के रंग की जांच-परख करते समय व्यक्ति के प्रकार पर ध्यान देना

आवश्यक होता है। उसके स्वाभाविक रंग को दृष्टि में रखकर पित्त-दोष के प्रभाव की मात्रा का अनुमान लगाया जा सकता है। बुध रेखा से किसी प्रकार के संकेत न मिलने पर भी व्यक्ति के हाथ के पीलेपन को उसके अजीर्ण और यकृत-दोष से ग्रस्त होने का निश्चित संकेत समझना चाहिए।

सभी प्राणी किसी एक-न-एक रोग के शिकार अवश्य होते हैं। ऐसा व्यक्ति शायद ही कोई होगा, जिसने कभी कोई रोग भोगा ही न हो। इसीलिए सभी हाथों में बुध रेखा न्यूनाधिक रूप से दोषपूर्ण पायी जाती है। सर्वथा निर्दोष बुध रेखा तो किसी भी हाथ में नहीं मिलती। लहरदार बुध रेखा पुराने पित्त-विकार की सूचक है (रेखाचित्र -493)। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति निरन्तर यकृत की विभिन्न समस्याओं के अतिरिक्त पित्त-ज्वर और मलेरिया रोगों से जूझने को विवश रहता है। उसके जिगर का बढ़ना और पीलिया के प्रकोप का शिकार होना सामान्य स्थिति है। पित्त-दोष, गठिया व जोड़ों के दर्द आदि को भी पनपाता है। रेखा को लहरदार देखकर गठिया की सम्भावना का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।
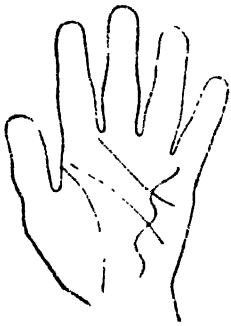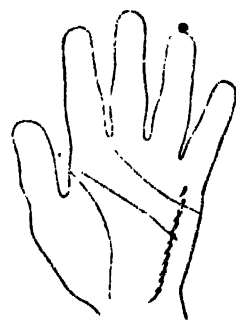
रेखाचित्र-493 रेखाचित्र-494 रेखाचित्र-495

शनिप्रधान व्यक्ति की लहरदार बुध रेखा व्यक्ति को पित्त के गम्भीर रोगों का शिकार बनाती है। अन्य प्रकारों के व्यक्तियों की लहरदार बुध रेखा भी उनके स्वास्थ्य -विकार के पीछे पित्त-प्रकोप की प्रमुखता को बताती है। बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति की लहरदार बुध रेखा उसे गठिया रोग से ग्रस्त और शनिप्रधान व्यक्ति की लहरदार बुध रेखा उसे पित्त विकार से पनपने वाले ज्वरों—गठिया, सन्धिवात और स्नायुरोग आदि—से पीड़ित, सूर्यप्रधान व्यक्ति की लहरदार बुध रेखा उसे हृदय रोग का शिकार, बुधप्रधान व्यक्ति की लहरदार बुध रेखा उसे अपच, स्नायु-विकार और यकृत विकरों से ग्रस्त, मंगलप्रधान व्यक्ति की लहरदार बुध रेखा उसे आन्त्र-शोथ से पीड़ित, चन्द्रप्रधान व्यक्ति की लहरदार बुध रेखा उसे गठिया तथा सन्धिवात से ग्रस्त और शुक्रप्रधान व्यक्ति की लहरदार बुध रेखा उसे पित्त-दोष से उत्पन्न होने वाले ज्वरों से गम्भीर रूप से ग्रस्त होना उजागर करती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि लहरदार बुध रेखा के कारण व्यक्ति का व्यवसाय, उद्योग-धन्धा सब चौपट हो जाता है, यहां तक कि उसका जीवन भी अनिश्चित हो जाता है। उसे पग-पग पर अनेक कठिनाइयों का समाना करना पड़ता है। इसी प्रकार ऊंची-नीची अथवा ऊबड़-खाबड़ बुध रेखा भी उदर-विकार तथा यकृत-विकार का निश्चित संकेत देती है (रेखाचित्र-494)। स्वास्थ्य ठीक न रहने पर किसी व्यक्ति से किसी कार्य को सुचारु रूप से करने की आशा भी कैसे की जा सकती है। जब व्यक्ति निरन्तर अजीर्ण और यकृत-विकार का शिकार रहेगा, तो उसे अपना जीवन ही भार-रूप ही लगेगा। उसमें उत्साह, स्फूर्ति और श्रम की खोज तो आत्मप्रवञ्चना ही होगी।

खण्ड-खण्ड रूप में जुड़ती और सीढ़ी का रूप लेती बुध रेखा तो उदर-विकार की चरम गम्भीरता की सूचक होती है (रेखाचित्र-495)। ऐसा व्यक्ति प्रायः अजीर्णता, जठराग्नि की मन्दता, अंतड़ियों में ऐंठन, सूजन तथा श्वास-कास आदि रोगों का गम्भीर रूप से शिकार होता है।
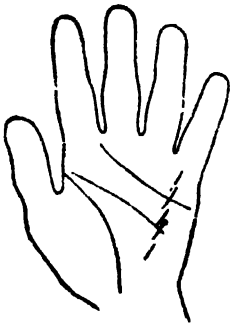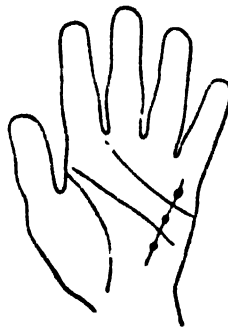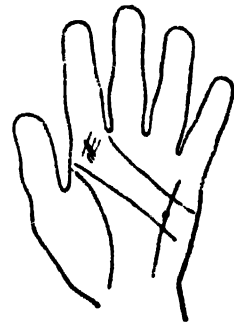
रेखाचित्र-496 *रेखाचित्र-497* *रेखाचित्र-498*

सीढ़ी का रूप धारण करती रेखा के मार्ग में बहुत गहरे रंग के बिन्दु का मिलना इस चिह्न के प्रकट होने की आयु में व्यक्ति के गम्भीर रूप से उदर रोग से पीड़ित हो चुकना सूचित होता है (रेखाचित्र-496)।

बुध रेखा पर उभरते बिन्दुचिह्न व्यक्ति के निर्दिष्ट आयु में गम्भीर रूप से पित्त-विकार से अथवा उदर-विकार से पीड़ित रहने का संकेत देते हैं (रेखाचित्र-497)। बिन्दुचिह्नों का लाल रंग ज्वर का और सफ़ेद रंग किसी पुराने रोग का सूचक है। बुध रेखा पर किसी बिन्दु के दीखने पर किसी आकस्मिक रेखा द्वारा किसी अन्य रेखा अथवा पर्वत पर किसी स्वास्थ्य-दोष को इंगित तो नहीं कर रही—इस तथ्य पर विचार करना चाहिए। यदि ऐसा कुछ नहीं मिलने पर रेखाओं-पर्वतों पर चिह्नों की खोज करके उन्हें बुध रेखा पर उभरे चिह्नों से मिलाकर देखना चाहिए।

बृहस्पति पर्वत पर मिलते स्वास्थ्य सम्बन्धी दोषों का कारण व्यक्ति की जन्मजात, उदर सम्बन्धी समस्या होती है (रेखाचित्र-498)। बृहस्पति की अंगुली का तृतीय पर्व बड़ा-पूरा होना व्यक्ति द्वारा अपने पेट के प्रति सावधान न रहने का पक्का संकेत होता है। बृहस्पति की अंगुली के तृतीय पर्व के आरम्भिक स्थिति में शिथिल मिलने से एक संकेत तो यह मिलता है कि व्यक्ति अपच-अजीर्ण विकार के कारण सादा भोजन करने को विवश है। दूसरा संकेत यह मिलता है कि व्यक्ति किसी पुराने रोग से छुटकारा नहीं पा सकता।
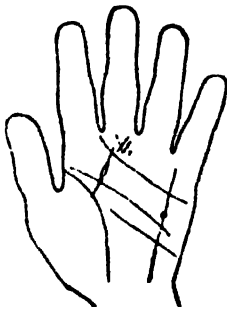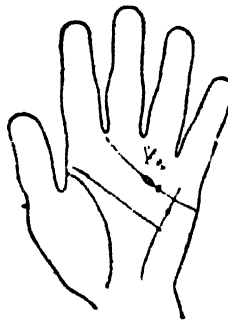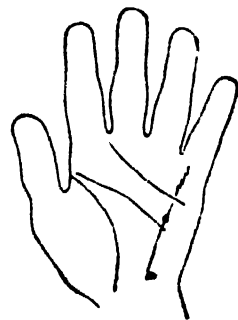
रेखाचित्र-499 *रेखाचित्र-500* *रेखाचित्र-501*

बुध रेखा में लाल रंग के बिन्दुओं का होना और शनि पर्वत पर स्वास्थ्य-दोष का मिलना पित्त-ज्वर के गम्भीर दौरे के सूचक हैं (रेखाचित्र-499)। बिन्दु के रंग के फीकेपन अथवा पीलेपन को गठिया अथवा सन्धिवात का संकेत समझना चाहिए।

शनि पर्वत से किसी आकस्मिक रेखा का जीवन रेखा की ओर जाना तथा चन्द्र पर्वत के मध्य से एक अन्य आकस्मिक रेखा का जीवन रेखा की ओर जाना इस स्थिति के समर्थक चिह्न हैं। सूर्य पर्वत के नीचे हृदय रेखा में किसी द्वीपचिह्न का, रेखा में विच्छेद का अथवा बिन्दु का तथा बुध रेखा पर भी बिन्दु का दीखना संकेत देता है कि व्यक्ति पाचन-तन्त्र की भयंकर विकृति के कारण गम्भीर हृदय रोग का शिकार हो सकता है। सूर्य पर्वत पर नीलवर्ण जाल तथा हृदय रोग-सूचक नाख़ून रोग के पुराना होने अथवा न होने की सूचना देते हैं (रेखाचित्र-500)।

बुध रेखा पर एक बिन्दुचिह्न का होना, रेखा का बुध पर्वत पर टूटना अथवा दोषपूर्ण होना यह संकेत देता है कि बुध रेखा में स्थित बिन्दु से सूचित आयु में व्यक्ति गम्भीर रूप से पित्त-ज्वर अथवा आमाशय का शिकार हो चुका है (रेखाचित्र-501)। इसी प्रकार बुध रेखा में बिन्दु के साथ-साथ ऊर्ध्व मंगल पर्वत के निचले भाग (तृतीय लोक) में स्थित जालचिह्न अथवा आड़ी रेखाओं से व्यक्ति के बुध रेखा में बिन्दुचिह्न के स्थान द्वारा निर्दिष्ट आयु में आन्त्रशोथ अथवा अंतड़ियों के अन्य किसी गम्भीर रोग से पीड़ित हो चुकना सूचित होता है (रेखाचित्र-502)।
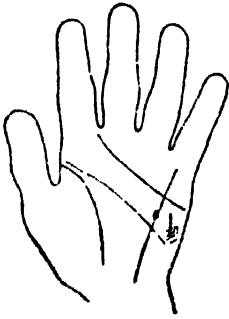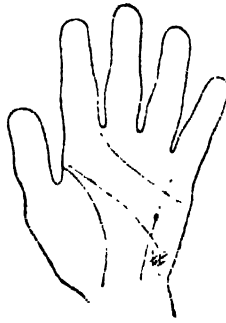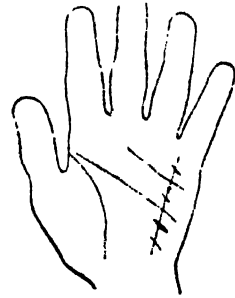
रेखाचित्र-502 *रेखाचित्र-503* *रेखाचित्र-504*

बुध रेखा में बिन्दुचिह्न के साथ चन्द्र पर्वत के मध्य तृतीय भाग का जालीदार होना व्यक्ति का बुध रेखा में बिन्दु द्वारा निर्दिष्ट आयु में गठिया अथवा सन्धिवात-जैसे ज्वर से आक्रान्त हो चुकना सूचित होता है। चन्द्र पर्वत के ऊपरी तृतीय क्षेत्र का जालदार होना भी मंगल पर्वत के निम्न भाग में पाये जाने वाले लक्षणों के अनुरूप अंतड़ियों की ख़राबी का सूचक होता है (रेखाचित्र-503)।

बुध रेखा को काटती आड़ी रेखाएं व्यक्ति के हाथ में बनने की आयु में उसके रोगग्रस्त होने की सूचक होती हैं (रेखाचित्र-504)। ये रेखाएं बुध रेखा के ऊपर जाने वाली रेखाओं-जैसी महीन, गहरी, छड़ीनुमा और बुध रेखा के दो टुकड़े कर डालने वाली हो सकती हैं। बुध रेखा को काटने की मात्रा के अनुपात में ही रोगों की विषमता का अनुमान लगाया जाता है। बुध रेखा को केवल क्षुब्ध करने तक सीमित ये बारीक-महीन रेखाएं पित्त-जैसे रोग से उत्पन्न होने वाले सिरदर्द की सूचक होती हैं। इसके विपरीत बुध रेखा की गहराई तक काटने पर ये गम्भीर रोगों का संकेत देती हैं। इस स्थिति में कारणों को जानने के लिए रेखाओं तथा पर्वतों की एक समान जांच-परख करने की आवश्यकता होती है।

बुध रेखा के केवल एक-दो आड़ी रेखाओं द्वारा कटने से व्यक्ति की अपनी अच्छाइयों-बुराइयों के कारण गम्भीर रोगों से ग्रस्त होने का संकेत मिलता है, परन्तु पूरी लम्बाई की अवधि में बुध रेखा का आड़ी रेखाओं से निरन्तर कटना और उन रेखाओं का गहरा होना व्यक्ति के निरन्तर अस्वस्थ रहने का तथा रेखाओं का महीन होना उसका सिरदर्द से पीड़ित रहने का संकेत होता है। महीन रेखाओं द्वारा बुध रेखा के कटने के समान ही मस्तक रेखा भी महीन रेखाओं से कटती देखी जाती है और यह कटाव स्नायविक अथवा पित्त से उत्पन्न शिरोवेदना का संकेत होता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इसका कारण पाचन-क्रिया और यकृत-क्रिया में विकार का आना है (रेखाचित्र-505)। आड़ी रेखाओं के बाद इस प्रकार का चिह्न

मस्तक रेखा को पहुंची क्षति का, अर्थात् शिरोवेदना से मस्तक शक्ति के क्षीण हो जाने का संकेत है। इस स्थिति में हस्तरेखाशास्त्री को तत्काल बुध रेखा के प्रत्येक रूप, भेद और दोष के अध्ययन के साथ ही साथ मस्तक रेखा का परीक्षण भी करना चाहिए।
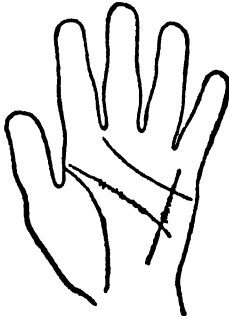
रेखाचित्र-505
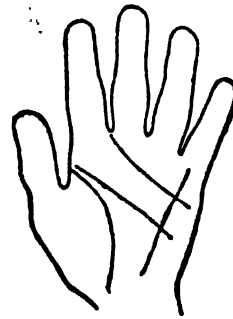
रेखाचित्र-506

बुध रेखा में द्वीपचिह्न अपनी स्थितिकाल तक व्यक्ति के स्वास्थ्य के ठीक न रहने का संकेत है (रेखाचित्र-506)। इस अस्वस्थता का कारण उदर तथा यकृत की गड़बड़ी ही होती है। स्वास्थ्य की खराबी का अर्थ है—मस्तिष्क, हृदय अथवा शरीर के किसी अन्य प्रमुख अंग का विकारग्रस्त होना। सही कारण को जानने के लिए पर्वतों व रेखाओं की जांच-परख करनी चाहिए।

बुध रेखा में द्वीप की स्थिति केवल स्वास्थ्य को प्रभावित करने, अर्थात् उदर-विकार और जिगर की गड़बड़ी तक सीमित नहीं रहती, अपितु वह तो अन्यान्य रोगों को भी पनपाता है। जिस प्रकार जीवन रेखा में विद्यमान द्वीप स्वास्थ्य के लिए भयंकर ख़तरे का संकेत होता है, ठीक यही स्थिति बुध रेखा में द्वीपचिह्न की भी है, अर्थात् वह स्वास्थ्य के पूर्णत: क्षीण होने का संकेत है।

बुध रेखा के पूरे मार्ग में दो-तीन अथवा अधिक अण्डाकार द्वीपचिह्न गला और फेफड़ों के गम्भीर रोगों के संकेत होते हैं (रेखाचित्र-507)। यहां यह स्मरणीय है कि द्वीपचिह्न सदैव कोई सटीक आकार नहीं लिये रहते और वे भले ही पूर्ण हों अथवा अपूर्ण, किन्तु उनसे प्राप्त संकेत एकदम सही होते हैं। इन चिह्नों के दीखते ही तत्काल नाख़ूनों को देखना चाहिए कि वे कुण्ड का आकार लिये हुए तो नहीं हैं या फिर ऊपरी मंगल पर्वत पर जाल का चिह्न अथवा आड़ी रेखाओं से बनी आकृति तो नहीं है। इन चिह्नों के अस्तित्व को समस्याओं का प्रतीक समझना चाहिए और इस तथ्य को पहचानना-समझना चाहिए। इसके अतिरिक्त बृहस्पति पर्वत पर भी द्वीपचिह्न के दीखने पर व्यक्ति को क्षय रोग, श्वासनली में शोथ, निमोनिया, गले अथवा फेफड़े

के रोगों के आक्रमण से बचने के लिए सतर्क हो जाना चाहिए; क्योंकि प्राय: ये चिह्न रोगों के विकास में सहायक होते हैं (रेखाचित्र-508)।
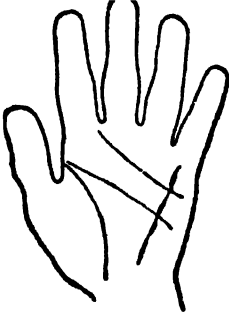
रेखाचित्र-507
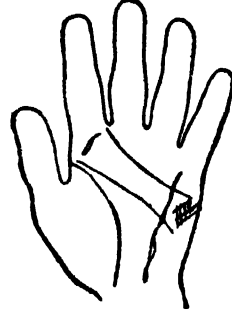
रेखाचित्र-508

गले के कैंसर से पीड़ित रोगी के बृहस्पति पर्वत पर इस द्वीपचिह्न को देखकर मुझे इस संकेत की तथ्यता में विश्वास हो गया है।

द्वीपचिह्नयुक्त बुध रेखा कभी इस आधार पर आर्थिक दिवालियेपन का संकेत मानी जाती थी कि ऐसे व्यक्ति अपने क्षीण स्वास्थ्य और दुर्बल मानसिकता के कारण चाहकर भी व्यवसाय अथवा उद्योग-धन्धे के लिए अपेक्षित परिश्रम नहीं कर पाते, जिससे सफलता उनसे कोसों दूर रहती है। इस तर्क में पर्याप्त बल होते हुए भी बहुत सारे ऐसी बुध रेखाओं की आर्थिक सम्पन्नता तथा व्यावसायिक सफलता ने इस निष्कर्ष के आगे प्रश्नचिह्न लगा दिया है। हो सकता है कि कुछ व्यवसाय अधिक श्रम की अपेक्षा रखते हों और ऐसी बुध रेखा वाले व्यक्ति अपने दुर्बल स्वास्थ्य के कारण न्याय न कर पाते हों, पुनरपि इसे सर्वमान्य सिद्धान्त के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।
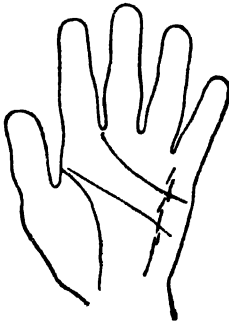
रेखाचित्र-509
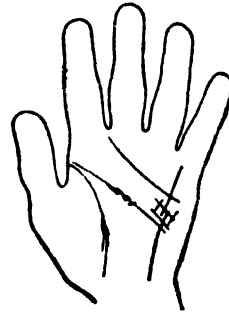
रेखाचित्र-510

बुध की टूटी हुई रेखा टूटने के समय व्यक्ति के स्वास्थ्य की क्षति और

फलस्वरूप व्यावसायिक प्रगति में बाधा का संकेत देती है (रेखाचित्र-509)। केवल एक-दो स्थानों पर रेखा के टूटने और आगे ठीक पाये जाने पर तत्काल टूटने के कारणों का पता लगाना चाहिए। रेखा का आरम्भ से अन्त तक बीच-बीच में टूटा होने का अर्थ है—व्यक्ति की पाचन-शक्ति व पेट का अत्यन्त ही क्षीण होना। इस टूटने का प्रभाव भी सीढ़ीदार रेखा के प्रभाव-जैसा नहीं होता। टूटी हुई रेखाओं में सुधारचिह्नों के दीखने पर वर्गचिह्नों को लाभकारी ही समझना चाहिए। वर्ग द्वारा रेखा में हुए गम्भीर विच्छेद को चारों ओर से घेर लेना व्यक्ति के जीवन में आये अथवा आने वाले ख़तरे के टलने का सूचक है (रेखाचित्र-510)। विच्छेद के अनेक सम्भावित कारणों को मस्तक रेखा अथवा पर्वतों पर स्वास्थ्य सम्बन्धी दोषों के संकेतों के रूप में अथवा जीवन रेखा में गम्भीर संकट के सूचक संकेतों के रूप में देखना चाहिए। रेखा के विच्छेदों के सुधार में सहायक रेखाओं का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है। रेखा में विद्युत्-धारा के प्रवाह में सहायक होने वाले चिह्न लाभकारी भी
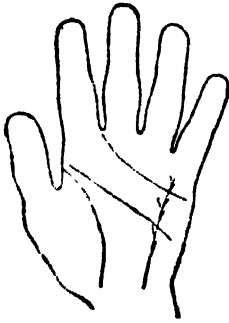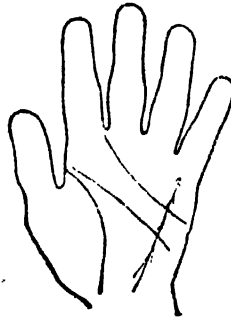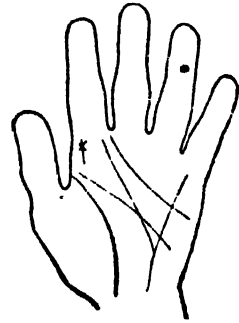
रेखाचित्र-511 *रेखाचित्र-512* *रेखाचित्र-513*

होते हैं। बुध रेखा का बुध पर्वत पर गहराई तक जाना और उससे शाखाओं का निकलना व्यक्ति के स्वास्थ्य के एकदम उत्कृष्ट रहने का और उसे व्यवसाय में निश्चित सफलता का एक पक्का संकेत है (रेखाचित्र-511)। किसी गहरी रेखा से नीचे की ओर जाती हुई शाखाएं यह संकेत देती हैं कि व्यक्ति को सफलता मिलना तो निश्चित है, परन्तु इसके लिए उसे अत्यधिक कठिन-कठोर श्रम करना पड़ेगा (रेखाचित्र-512)।

बुध रेखा को छोड़कर बृहस्पति पर्वत की ओर जाती हुई एक शाखा संकेत देती है कि व्यक्ति अपने गुणों—महत्त्वाकांक्षा, लोगों को नेतृत्व करने की क्षमता तथा लोगों पर अपना नियन्त्रण बनाये रखने की शक्ति—से अपने जीवन तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने वाला है। बृहस्पति पर्वत पर एक नक्षत्रचिह्न के दिखाई देने से व्यक्ति को अपने प्रभावशाली मित्रों और परिचितों से भरपूर सहायता का मिलते

रहना सूचित होता है (रेखाचित्र-513)।
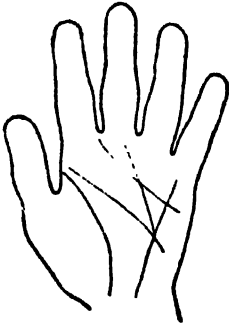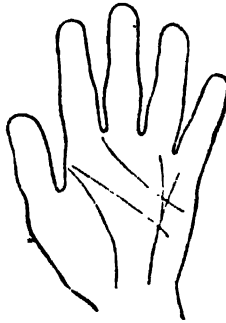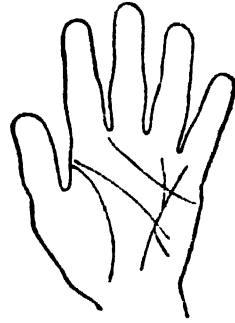
रेखाचित्र-514 *रेखाचित्र-515* *रेखाचित्र-516*

बुध रेखा से निकलती और शनि पर्वत की ओर जाती हुई एक शाखा व्यक्ति को उसके निजी गुणों—गम्भीर प्रकृति, विवेकशीलता, मितव्ययिता, गुण-दोष की परख, समझदारी, चिन्तनशीलता, धैर्य एवं परिश्रम करने की प्रवृत्ति आदि—के कारण सफल रहने वाला सिद्ध करती है। बैंक-व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए यह एक शुभ संकेत है (रेखाचित्र-514)। एक शाखा का प्रबल बुध रेखा से निकलना और सूर्य पर्वत की ओर चला जाना सूचित करता है कि व्यक्ति की सफलता के पीछे उसके व्यक्तित्त्व की श्रेष्ठता—सूझबूझ, व्यवसाय की गहरी पैठ, कुशाग्र बुद्धि, उत्तम व्यवहार तथा ऊंच-नीच की अच्छी पहचान—का ही हाथ है (रेखाचित्र-515)। व्यापारी वर्ग के लिए इसे एक उत्तम संकेत माना जाता है। इस संयोग के साथ लम्बी बुध रेखा व्यक्ति के आगे चलकर उन्नति करने का संकेत देती है। शाखा की रेखाओं से व्यक्ति की उन्नति में सहायक लोगों की जानकारी मिलती है। ऐसे सभी मामलों में बुध की अंगुली के पर्वों के आधार पर व्यक्ति के उचित लोक की जानकारी प्राप्त की जाती है। तृतीय पर्व की प्रबलता व्यवसाय में सफलता दिलाने वाली, द्वितीय पर्व की प्रबलता विज्ञान अथवा व्यवसाय-जगत् में सफलता दिलाने वाली तथा प्रथम पर्व की प्रबलता व्यक्ति को वक्ता अथवा लेखक के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने वाली होती है (रेखाचित्र-516)।

किसी शाखा का बुध रेखा से ऊपर की ओर निकलना और मस्तक रेखा में जा मिलना व्यक्ति द्वारा अपनी मानसिक शक्तियों के बल पर सफल रहना संकेतित होता है (रेखाचित्र-517)। गहरी-सशक्त मस्तक रेखा वाले व्यक्ति विज्ञान अथवा साहित्य के क्षेत्र में मान्यता प्राप्त करते हैं। इस संयोग के साथ त्रिकोण के चिह्न का मिलना व्यक्ति की विलक्षण प्रतिभा तथा कुशाग्र बुद्धि का सूचक होता है। बुधप्रधान व्यक्ति के सफलताप्रद स्वास्थ्य सम्बन्धी निजी बिशेषताओं और रुचियों को लिये रहने के

कारण बुध रेखा की समाप्ति के रूप में ही उसका जीविका सम्बन्धी अनुमान लगाना सम्भव होता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि बुध रेखा की समाप्ति को समझने के लिए पर्याप्त सावधानी की आवश्यकता होती है; क्योंकि रेखा पर अनेक चिह्नों के विद्यमान रहने के कारण किसी को भी बुध रेखा की समाप्ति का संकेत समझने की ग़लती हो सकती है। निम्नोक्त लक्षणों—(i) पर्वत पर समाप्त होने वाली बुध रेखा को काटने वाली सहायक रेखाओं की अधिक संख्या, (ii) सहायक रेखाओं में से किसी एक रेखा का गहरा होना तथा (iii) बुध रेखा का गहराई से कटना—से व्यक्ति का किसी के प्रति गहरा अनुराग होता है और वही उसके हितों में बाधक सिद्ध होता है (रेखाचित्र-518)।
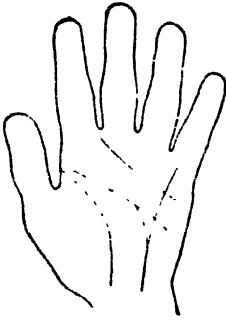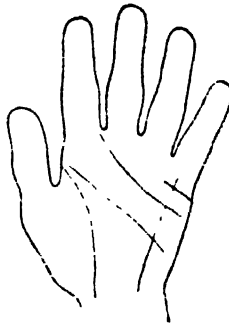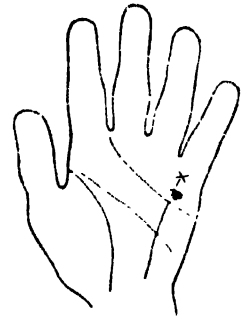
रेखाचित्र-517 *रेखाचित्र-518* *रेखाचित्र-519*

किसी एक छड़-जैसी बुध रेखा अथवा गुणनचिह्न के रूप में बुध रेखा का अन्त होने से व्यक्ति की उन्नति के अवरुद्ध होने का संकेत मिलता है। इस स्थिति के साथ ही हाथ का घटिया होना, अंगुलियों का टेढ़ा होना तथा हृदय रेखा का बारीक तथा अनुपस्थित होना यह सूचित करता है कि निकृष्ट कोटि के बुधप्रधान व्यक्ति का छल-कपटपूर्ण व्यवहार ही उसकी सफलता को सन्दिग्ध बनाने का कारण बनता है (रेखाचित्र-519)। रेखा के अन्त में जालचिह्न की उपस्थिति को व्यक्ति के ख़राब स्वास्थ्य अथवा छलपूर्ण व्यवहार के कारण जीवन और व्यवसाय में सर्वथा विफलता का मुंह देखने वाला समझना चाहिए (रेखाचित्र-520)। इस संयोजन के साथ सूर्य पर्वत पर बिन्दु का दीखना व्यक्ति द्वारा अपनी मान-प्रतिष्ठा की खोज सूचित करता है। रेखा के अन्त में नक्षत्रचिह्न की उपस्थिति से व्यक्ति केवल अंगुली के पर्वों से संकेतित क्षेत्रों में ही उन्नति कर पाता है। सूर्य और शनि की रेखाओं की उत्तमता से इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है। बुध रेखा का अन्त में द्विशाखी हो जाना व्यक्ति की प्रतिभा के विभिन्न क्षेत्रों में बंट जाने का और इससे पूर्ण एकाग्रता तथा तन्मयता से सुलभ होने वाली सफलता से वञ्चित रह जाने का सूचक है (रेखाचित्र-521)।

रेखाचित्र-520

रेखाचित्र-521
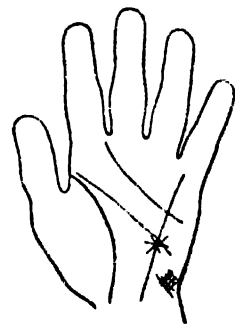
रेखाचित्र-522

बुध रेखा के अन्त में गोपुच्छ का मिलना व्यक्ति के प्रतिभा के तितर-बितर हो जाने का और इससे फिर कुछ भी उल्लेखनीय प्राप्त न कर पाने का संकेत मिलता है। स्त्री के हाथ में मस्तक रेखा को काटती बुध रेखा वाले स्थान पर नक्षत्रचिह्न की उपस्थिति पागलपन की स्थिति तक जा सकने वाले गम्भीर स्त्री रोग को दर्शाती है। पुरुष के हाथ में उत्तम बुध रेखा पर नक्षत्रचिह्न का होना उसे अतिरिक्त प्रतिभा-सम्पन्न दर्शाती है, परन्तु चिह्न उन्नत हो और रेखा दोषपूर्ण हो, तो व्यक्ति पागलपन के स्तर तक जाने वाले मानसिक रोग का शिकार हो सकता है। महिला के हाथ में चन्द्र पर्वत के निचले तृतीय भाग का जालीदार अथवा आड़ी रेखाओं से घिरा होना उसका गम्भीर प्रकृति के स्त्री रोग का शिकार होना सूचित होता है (रेखाचित्र-522)। ऐसी महिलाएं सन्तान को जन्म देने में भारी कष्ट को अनुभव करती हैं। महिला की जीवन रेखा का अंगूठे के निकट होकर चलना और शुक्र पर्वत के क्षेत्र को सीमित कर देना महिला के सन्तानहीन रहने की सम्भावना को द्योतित करता है।

किसी महिला से विवाह सम्बन्ध स्थिर करने से पूर्व इस प्रकार के संकेत पर विचार करना बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है। सामान्यतया ऐसी महिला अधीर, अस्थिर-चित्त तथा अतिसंवेदनशील होती है। वह कभी खिन्न-उदास, तो कभी प्रसन्नचित्त हो उठती है। उसकी खिन्नता-प्रसन्नता का यह क्रम चलता ही रहता है। ऐसी महिलाओं के प्रति विनम्रता, उदारता और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार ही अपेक्षित होता है। उनकी अपने रोगों को बढ़ा-चढ़ाकर बताने तथा निरर्थक ही रोगों की कल्पना करने की प्रकृति बन जाती है और कभी-कभी रोग न होने पर भी वे रोग से होने वाली पीड़ा को अनुभव करती प्रतीत होती है। यह स्थिति उन्माद, मिरगी अथवा हिस्टीरिया (दौरे पड़ना)- जैसे रोगों का भ्रम उत्पन्न करती है। ऐसी महिलाएं अपना मानसिक सन्तुलन स्थिर नहीं रख पातीं। नक्षत्रचिह्न का पूरी तरह से रेखा पर न होना भी यही प्रभाव दिखाता है।

इस अध्याय में वैसे तो अनेक संकेत उद्धृत किये गये हैं, परन्तु संकेतों पर लागू होने वाले सामान्य सिद्धान्त वही हैं। बुध रेखा में किसी प्रकार के दोष अन्य रेखाओं में पाये जाने वाले दोष जितने बुरे नहीं होते। इसी प्रकार द्वीपचिह्नों वाली सीधी-गहरी रेखा की अपेक्षा द्वीपों से भरी लहरदार रेखा कहीं अधिक अशुभ होती है। यदि किसी एक रेखा में भिन्न-भिन्न दोष दिखाई दें, तो उनके भिन्न-भिन्न कारणों का अध्ययन करना चाहिए।

बुध रेखा के सम्बन्ध में अन्तिम परिणाम निकालने से पूर्व जीवन रेखा, मस्तक रेखा, हृदय रेखा तथा सूर्य रेखा की स्थिति की व उनके आपसी तालमेल की तथा प्रभाव आदि की समीक्षा करनी चाहिए। व्यक्ति के प्रकार पर भी ध्यान देना चाहिए। समस्त संयोगों के विश्लेषण के उपरान्त ही अन्तिम निष्कर्ष निकालना चाहिए। जीवन रेखा तथा मस्तक रेखा के सम्बन्ध में इस तथ्य का विशेष महत्त्व है। अतः बुध रेखा पर जीवन रेखा और मस्तक रेखा के साथ ही विचार करना और परिणाम निकालना ठीक रहता है। यह रेखा क्या सूचित करती है। इसके रूप में कौन-कौन से परिवर्तन आये हैं। इसमें कौन-कौन से दोष हैं और किस दोष का क्या अर्थ और महत्त्व है आदि प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए रेखा के उद्गम-स्थान से समाप्ति-स्थान तक की जांच-परख करनी चाहिए। सभी तत्त्वों, बिन्दुओं और चिह्नों को ध्यान में रखकर इनसे प्राप्त जानकारी से बुध रेखा द्वारा पुष्ट किये जाने वाले प्रमाण जुटाना सम्भव हो जाता है। *

13

शुक्र मेखला

छोटी रेखाएं अथवा उनका समूह गौण रेखाएं कहलाता है। ये रेखाएं सभी हाथों में नहीं होती, जिन भी हाथों में होतीं हैं, उनका उद्‌गम-स्थल एक ही रहता है। इन रेखाओं की यह प्रकृति ही इन्हें आकस्मिक रेखाओं से भिन्न करती है। इनके गौण या कम महत्त्वपूर्ण होने से इनके न केवल नियम एक-जैसे होते हैं, अपितु इनकी व्याख्या भी एक-जैसी ही होती है, परन्तु यह सब अत्यन्त विश्वसनीय और नितान्त प्रामाणिक होता है।

प्रथम गौण रेखा है—शुक्र मेखला। यह बृहस्पति और शनि की अंगुलियों के बीच में से निकलकर, शनि तथा सूर्य पर्वतों को पार करती हुई सूर्य तथा बुध की अंगुलियों के मध्य में पहुंचकर समाप्त हो जाती है (रेखाचित्र-523)।
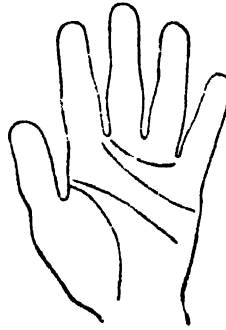
रेखाचित्र-523

शुक्र मेखला का उपर्युक्त मार्ग निश्चित नहीं। कभी-कभी यह बृहस्पति पर्वत से निकलकर बुध पर्वत के ऊपर तक चढ़ जाती है, तो कभी उसके किनारे पर जाकर ही समाप्त हो जाती है। अंशत: यह हृदय रेखा की सहायक रेखा के रूप में भी काम करती है। जिन हाथों में हृदय रेखा नहीं होती, वहां यह उसका स्थान भी ले लेती है। प्रबल हृदय रेखा वाले हाथ में शुक्र मेखला हृदय रेखा की सहायक बनकर हृदय से जुड़े गुणों—प्रेम, अनुराग एवं स्नेह आदि—की प्रबलता को भी सूचित

करती है। यही कारण है कि इसका एक अन्य नाम 'प्रणय मेखला' भी है। व्यक्ति की अनुरक्ति-आसक्ति की प्रतीक इस रेखा को पहले लम्पटता, स्वच्छन्दता और व्यभिचार आदि दुर्गुणों को जन्म देने और बढ़ाने वाली माना जाता था। हस्तरेखा की लगभग सभी पुरानी पुस्तकों में 'शुक्र मेखला' की व्याख्या इसी रूप में देखने को मिलती है, परन्तु कुछ प्रबुद्ध लेखकों ने इस व्याख्या से अपनी असहमति प्रकट की है, जो सत्य भी है। आज स्थिति यह है कि बहुत सारे हस्तरेखाविद् विशुद्ध जानकारी न रखने के कारण इसके आधार पर भविष्यकथन से कतराते हैं और इधर उनके आधे-अधूरे ज्ञान के आधार पर किये गये भविष्यकथन ग़लत सिद्ध हुए हैं। वस्तुत: सामान्य परिकल्पना का आश्रय लेकर तथा सम्बद्ध व्यक्ति की सभी स्थितियों का अध्ययन करके इस समस्या से निपटा जा सकता है। इस विषय में ईसापूर्व चौथी शताब्दी से बीसवीं शताब्दी (लगभग चौबीस सौ वर्षों) में मानव-स्वभाव में आये परिवर्तनों तथा सभ्यता के विकास के विभिन्न सोपानों को भी अध्ययन का विषय बनाना चाहिए। समय निरन्तर परिवर्तनशील है। आज की स्थिति कल की स्थिति जैसी न है और न ही हो सकती है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखने पर यह स्पष्ट हो जायेगा कि शुक्र मेखला मूलत: प्रचण्ड उत्तेजना की प्रतीक है, न कि व्यभिचार-लम्पटता आदि दुष्प्रवृत्तियों की सूचक है। हां, शुक्र मेखला से सूचित प्रचण्डता प्राय: स्त्रियों में उन्माद (हिस्टीरिया) का रूप अवश्य ले लेती है। शुक्र मेखला व्यक्ति की स्नायविक उत्तेजना को भी बढ़ा देती है।

शुक्र मेखला वाले हाथों में हथेली को पार करके अलग-अलग दिशाओं में चली गयी असंख्या रेखाएं मिलती हैं। हाथ की यह स्थिति अधीर-विकल मन:-स्थिति को समझने का पर्याप्त संकेत है।

हम पहले लिख चुके हैं कि प्राणवायु बृहस्पति की अंगुली से प्रविष्ट होती है, जहां से पहले वह जीवन रेखा में और फिर मस्तक रेखा में जाती है। वहां से लौटते हुए यह शनि, सूर्य और बुध रेखाओं में विलीन हो जाती है। इन्हीं सहज मार्गों से वह शरीर से बाहर निकलती है। इस मार्ग में किसी बाधा के न आने पर प्राणवायु (विद्युत्-धारा) का प्रवाह सामान्य रहता है। शुक्र मेखला इस धारा के एक भाग को सामान्य मार्ग से हटा देती है। फलत: प्रवाहित धारा मस्तक रेखा से लौटने पर शनि, सूर्य और बुध रेखाओं से होती हुई शरीर से बाहर निकलने को प्रवृत्त होती है, तो यह शुक्र मेखला उसमें अवरोध उत्पन्न करती है, जिससे विद्युत्-धारा का अंगुलियों के छोरों से बाहर निकलना कठिन हो जाता है। अत: वह फिर बाहर निकलने के स्थान पर फैल जाती है। इस प्रकार सारी धारा का रुका हुआ प्रवाह दूसरी ओर मुड़कर फैल जाता है तथा अपने लिए नया मार्ग बनाने लगता है। इस प्रवाह के विभिन्न दिशाओं में फैलने से हथेली में कई रेखाएं बन जाती हैं। बाहर निकलने का प्रयास

करती विद्युत्-धारा मनमाने ऊबड़-खाबड़ मार्ग बना लेती है, जिससे हाथ की सभी कोशिकाएं प्रभावित होती हैं। नसों में आयी उत्तेजना व्यक्ति को अधीर-विकल बना देती है। इस प्रकार शुक्र मेखला विद्युत्-धारा के प्रवाह को प्रभावित करके तन्त्रिका-तन्त्र को सुचारु रूप से क्रियाशील बना देती है।

इस स्थूल जानकारी के आधार पर ही व्यक्ति की इस रेखा का परीक्षण करना चाहिए। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि शुक्र मेखला पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के हाथों में अधिक पायी जाती है। हृष्ट-पुष्ट एवं भारी-भरकम शरीर वाले व्यक्ति की अपेक्षा सुकुमार, सामान्य शरीर वाले और यौवन की दहलीज़ पर पैर बढ़ाते व्यक्ति में शुक्र मेखला द्वारा उत्पन्न हुई उत्तेजना के फलस्वरूप आने वाली अधीरता-विकलता कहीं अधिक परिमाण में और अधिक स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। सुकुमार युवक शीघ्र ही अत्यधिक उत्तेजित हो जाता है और साधारण से अपमान अथवा उपेक्षा को भी सहन नहीं कर पाता और दुःख अनुभव करने लगता है। यदि अपनी व्यस्तता के कारण व्यक्ति के सगे-सम्बन्धी तथा इष्ट-मित्र उसे पर्याप्त समय नहीं दे पाते, तो वह उन्हें अपने प्रति किसी प्रकार का लगाव न रखने वाला मानने लगेगा। वह अपने को अकेला अनुभव करेगा तथा सदैव निराशा से ग्रस्त रहेगा। स्थिति यहां तक पहुंच जाती है कि वह अपने प्रियजनों के अपने प्रति व्यवहार पर भी सन्देह और शंका प्रकट करने लगता है। वह किसी भी प्रकार के दुःख, कष्ट न होने पर भी अपने को दुखी मानने लगता है। उसका यह निराशावादी एवं अवसादपूर्ण दृष्टिकोण उसे अन्ततः हिस्टीरिया का रोगी बनाकर छोड़ता है।

बहुत कम रेखाओं वाले हाथों के स्वामी एवं शान्त स्वभाव के व्यक्ति शीघ्र उत्तेजित न होने से उन्मत्तता से ग्रस्त नहीं होते, परन्तु शीघ्र उत्तेजित होने वाले भावुक व्यक्तियों के हिस्टीरिया रोग का शिकार होना आवश्यक एवं निश्चित ही होता है। हाथ का घटिया, कामुक लक्षणों वाला होने पर, शुक्र पर्वत का ऊंचा उठा हुआ और लाल होने पर तथा हाथ की बनावट का सामान्य पशु के हाथ की बनावट-जैसी होने पर शुक्र मेखला अपनी उपस्थिति से व्यक्ति की कामुकता को बढ़ाने वाली होती है। मेखला दोनों—उत्तेजना और विकलता—को बढ़ाती है। दोनों में किसका परिमाण अधिक है और किसका कम—इसे जानने के लिए सर्वप्रथम व्यक्ति का परीक्षण और पुनः रेखा के प्रभाव को उस पर लागू करना चाहिए।

निम्नोक्त लक्षणों—(i) शुक्र पर्वत का सपाट-शिथिल होना, (ii) जीवन रेखा का अंगूठे के निकट से जाना, (iii) जीवन रेखा के रंग का सफ़ेद होना, (iv) अंगुलियों के तृतीय पर्व का कमर-जैसा होना तथा (v) हृदय रेखा का बारीक होना ही शुक्र मेखला की उत्तेजना-कामुकता को बढ़ाने वाला नहीं होता; क्योंकि व्यक्ति का शारीरिक गठन और उसकी मानसिकता इस सम्भावना की पुष्टि नहीं करते। ऐसा

व्यक्ति अत्यधिक विकलता का शिकार ही हो सकता है और इस विकलता की अधिकता हिस्टीरिया का रूप ले सकती है। इसके विपरीत निम्नोक्त लक्षणों—(i) शुक्र मेखला और शुक्र पर्वत का बड़ा, उठा हुआ और जालदार होना, (ii) अंगुलियों के तृतीय पर्वों का मोटा होना, (iii) अंगुलियों के प्रथम पर्वों का छोटा होना, (iv) जीवन रेखा का सीधे हथेली में जाना (v) हृदय रेखा का लाल और गहरा होना, (vi) मंगल पर्वत का पूर्ण होना, (vii) हाथों का रंग लाल होना तथा (viii) हाथों पर उगे बालों के रंग का लाल होना—से प्रचण्ड कामुकता उजागर होती है। इन लक्षणों को अधीरता, उत्तेजना और हिस्टीरिया के संकेत समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। इन लक्षणों वाला व्यक्ति शराबी, कबाबी और परस्त्रीगामी होता है। इन लक्षणों वाले हाथ पर विद्यमान शुक्र मेखला का परम्परागत अर्थ लेना सर्वथा उचित ही है। वस्तुत: ऐसा व्यक्ति इतना अधिक कामुक होता है कि अपनी वासना की पूर्त्ति के लिए उसे पशुवत् व्यवहार करने में कोई संकोच नहीं होता। इस प्रकार व्यक्ति के प्रकार तथा उसकी हथेली और शरीर के अन्य लक्षणों के संयोग के आधार पर ही शुक्र मेखला की व्याख्या करनी चाहिए।

शुक्र मेखला वाले हाथों को इस रेखा से एक ख़तरा—शीघ्र अंकुश लगाये जा सकने पर अस्थायी अन्यथा स्थायी—यह होता है कि इनकी सन्तानें यौवन की अवस्था आने पर अपनी उत्तेजक प्रकृति के कारण हस्तमैथुन जैसे दुर्व्यसन का शिकार हो जाती हैं। यह बात अलग है कि विपरीतलिंगी से सम्पर्क-सम्बन्ध होने पर यह आदत छूट जाती है, परन्तु प्रारम्भ में तो शुक्र मेखला, यौन-भोग की विकलता और उत्तेजित वासना को जगाती है। हां, दुर्बल प्रकृति के लोगों में यह उत्तेजना उनकी मानसिक स्थिति के कारण से भी होती है; क्योंकि ऐसे दुर्बल लोगों का मस्तिष्क तो उत्तेजित होता है, परन्तु उनके शरीर में काम-भोग की ऊष्मा अथवा ऊर्जा का अभाव होता है। फलत: वे स्वप्न में ही अपनी वासना की तृप्ति करते हैं और स्वप्नदोष के शिकार होते रहते हैं। वस्तुत: ऐसे लोग सम्भोग के वास्तविक सुख की अपेक्षा कल्पना में ही सुख का अनुभव करने लगते हैं। अत: युवा होने पर और कामेच्छा जाग्रत होने पर वे हस्तमैथुन का आश्रय लेते हैं।

निम्नोक्त लक्षणों—(i) चन्द्र पर्वत के निचले तृतीय भाग का अधिक विकसित होना, (ii) हाथ पतला और सुन्दर-कोमल होना, (iii) शुक्र पर्वत का सपाट होना, (iv) शुक्र मेखला की उपस्थिति, (v) अंगुलियों के तृतीय पर्वों के कटि के आकार का होना, (vi) मंगल पर्वत के क्षेत्र का अपूर्ण अथवा त्रुटिपूर्ण होना तथा हृदय रेखा का बारीक होना—वाला व्यक्ति हस्तमैथुन का आदी होता है (रेखाचित्र-524)। उसकी यह आदत शीघ्र छूटती भी नहीं। वस्तुत: ऐसे लोग अपनी शारीरिक ऊष्मा में कमी के कारण वास्तविक सम्भोग के स्थान पर हस्तमैथुन को ही अधिक पसन्द

करते हैं। वे ऐसे लज्जाशील और संकोची होते हैं कि विपरीतलिंगी से प्रणय-निवेदन कर ही नहीं पाते। इतना ही नहीं, वे तो विपरीतलिंगी के सम्पर्क से ही कतराते हैं।
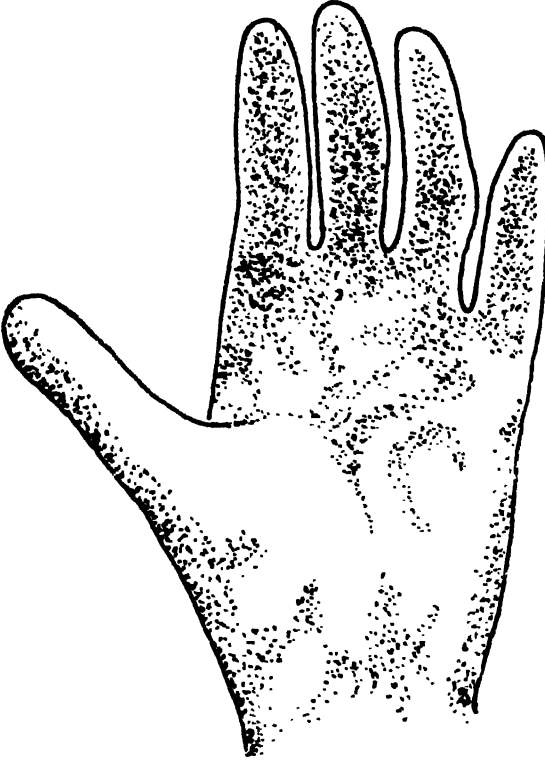
रेखाचित्र-524

ऐसे व्यक्ति अधिकांशतः शनिप्रधान होते हैं। ऐसे हाथ को हाथ में लेने पर और हथेली को उलटा करने पर बिना कुछ कहे व्यक्ति पर गहरी नज़र डालते ही उसकी हथेली पसीने से भीग जाती है। जितनी देर हथेली को हाथ में रखा जायेगा, उतनी देर पसीना निकलता रहेगा। वस्तुतः ऐसे लोग हस्तमैथुन के व्यसन में ग्रस्त होने से इनकार भी नहीं करते हैं। बच्चों में पायी जाने वाली इस गन्दी आदत से बच्चों को मुक्ति दिलाने का उपाय माता-पिता का खुलकर बातचीत करना और इस बुराई के परिणाम बताना है।

शुक्र मेखला अपने स्वरूप में गहरापन लिये रहती है और इस रेखा वाले व्यक्ति थोड़े-बहुत बेचैन, परन्तु उत्तेजित अधिक होते हैं। इसीलिए इस रेखा को हिस्टीरिया की अपेक्षा पशु प्रवृत्ति की प्रचण्ड कामुकता का प्रतीक माना जाता है।

कभी-कभार यह मेखला टूटे रेखाखण्डों से बनी हुई मिलती है (रेखाचित्र-

525)। ऐसी रेखा व्यक्ति में अस्थिरता, अधीरता, विकलता—हिस्टीरिया के स्तर तक—और संकोच की भावना में वृद्धि करने वाली होती है। ऐसे व्यक्ति एक बार दुर्व्यसनों का शिकार होने पर उनसे कभी मुक्त नहीं हो पाते।
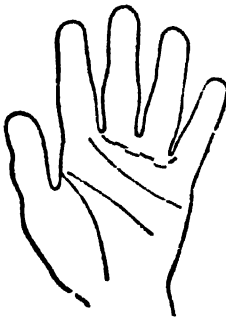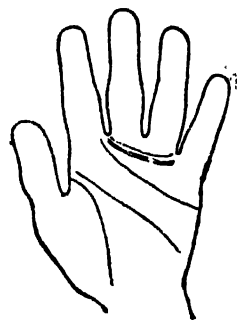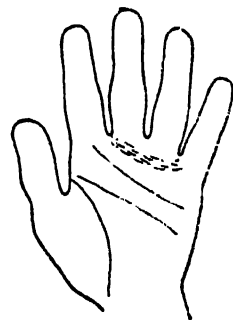
रेखाचित्र-525 *रेखाचित्र-526* *रेखाचित्र-527*

दोहरी-तिहरी रेखाओं से बनी शुक्र मेखला स्वास्थ्य एवं स्वभाव के सम्बन्ध में प्राप्त संकेतों की दोहरी पुष्टि करने वाली होती है (रेखाचित्र-526)।

विभिन्न विशृंखलित रेखाओं से बनी मेखला का शेष हाथ से निकलना तथा उत्तेजना का संकेत लिये रहना हिस्टीरिया की आशंका की प्रबलता का संकेत है। इस स्थिति में अधीरता के सूचक लक्षण प्रचण्ड रूप धारण कर लेते हैं (रेखाचित्र-527)।
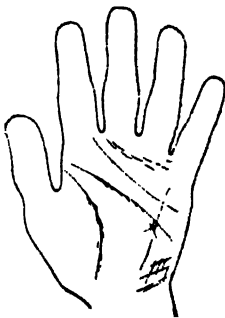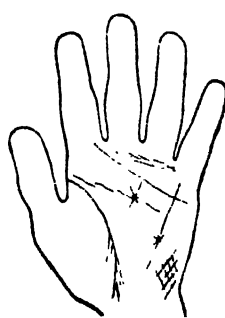
रेखाचित्र-528 *रेखाचित्र-529* *रेखाचित्र-530*

इन चिह्नों के साथ-साथ स्त्री रोगों के लक्षणों की उपस्थिति से व्यक्ति का बुरी तरह से कष्टग्रस्त रहना सूचित होता है। ऐसी महिला निरन्तर अधीरता, अस्थिरता, असन्तोष और विकलता से ग्रस्त रहती है (रेखाचित्र-528)। ऐसी महिलाओं को विशेषज्ञ चिकित्सक ही कष्टों से निवृत्ति दिला पाता है। सामान्य चिकित्सक के लिए

तो इनके रोग को खोज पाना ही सम्भव नहीं होता। देखने में तो यह आता है कि इस चिह्न वाली महिलाओं की जीवन रेखा और मस्तक रेखा भी प्रायः अत्यन्त दोषपूर्ण होती हैं।

मस्तक रेखा में द्वीप, बिन्दु, क्रास अथवा नक्षत्र का मिलना व्यक्ति के पागलपन का शिकार होने का निश्चित संकेत होने से अशुभ लक्षण समझना चाहिए (रेखाचित्र-529)। विकृत शुक्र मेखला से उत्पन्न उत्तेजना तो व्यक्ति के जीवन की प्रत्येक गतिविधि पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। यही कारण है कि इस स्थिति में शनि रेखा और सूर्य रेखा में भी दोष उत्पन्न हो जाते हैं, जिनका कारण या तो कामुकता होती है या फिर स्वास्थ्य की विकृति। मुख्य रेखाओं की जांच--परख से दोनों में से उत्तरदायी कारण की जानकारी प्राप्त हो जाती है। वैसे तो शुक्र मेखला के साथ अन्य चिह्नों और रेखाओं के अनेक संयोग बनते हैं, परन्तु भूमिका केवल शुक्र रेखा की ही महत्त्वपूर्ण होती है।

(i) मस्तक रेखा का नीचे झुकते हुए चन्द्र पर्वत में प्रवेश करना, (ii) मस्तक रेखा पर अथवा उसके अन्त के समीप एक नक्षत्रचिह्न, बिन्दु, गुणनचिह्न अथवा द्वीप का होना, (iii) शुक्र मेखला का खण्डित होना तथा (iv) हाथ में अनेक रेखाओं का होने-से व्यक्ति की प्रचण्ड उत्तेजना और अतिशय कल्पनाशीलता के कारण उसका पागल होना निश्चित है (रेखाचित्र-530)। ऐसे व्यक्ति के सनकी और अनियन्त्रित होने के कारण किसी के लिए भी उसका साथ निभाना एक कठिन समस्या का रूप ले लेता है।
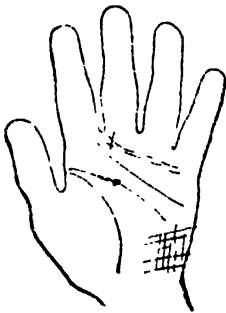
रेखाचित्र-531
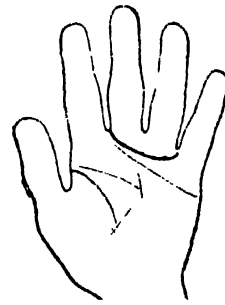
रेखाचित्र-532

निम्नोक्त लक्षणों—(i) शनि पर्वत पर क्रासचिह्न, (ii) शुक्र मेखला विशृंखलित, (iii) शनि के नीचे मस्तक रेखा में बिन्दु अथवा द्वीपचिह्न (iv) चन्द्र पर्वत पर जाल तथा (v) भुरभुरे अथवा धारीदार नाख़ून—से व्यक्ति के पक्षाघात से ग्रस्त होने की पूरी सम्भावना सूचित होती है (रेखाचित्र-531)।

निम्नोक्त लक्षणों—(i) हाथ का भारी होना, (ii) अंगुलियों का मोटा तथा लाल रंग की होना, (iii) शुक्र मेखला का गहरा होना तथा (iv) जीवन रेखा का और मस्तक रेखा का छोटा होना एवं इन दोनों के अन्त में दोषचिह्न होना—से जीवन रेखा की आयु के समाप्त होने वाले बिन्दु पर व्यक्ति की मृत्यु का संकेत मिलता है। ऐसा व्यक्ति प्राय: असंयमी और दुर्व्यसनी होता है और यही उसकी अकालमृत्यु के कारण बनते हैं (रेखाचित्र-532)।
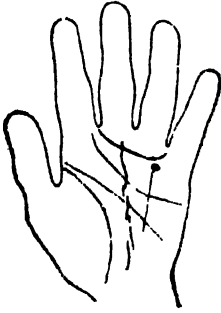
रेखाचित्र-533

रेखाचित्र-534

निम्नोक्त लक्षणों—(i) हाथ की बनावट का कामुकता-सूचक होना, (ii) शुक्र मेखला द्वारा दोषपूर्ण शनि रेखा का गहरा कटना तथा (iii) सूर्य रेखा अथवा सूर्य पर्वत के अन्त में एक बिन्दु—से सूचित होता है कि व्यक्ति जीवन में अत्यधिक अनियमित होता है और इससे वह ही चौपट नहीं होता, अपितु उसकी प्रतिष्ठा भी मिट्टी में मिल जाती है (रेखाचित्र-533)।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि विशृंखलित शुक्र मेखला व्यक्ति की अधीरता की द्योतक होती है और इस मेखला की गहरी रेखा से उसका कार्यकारी पक्ष उजागर होता है। निम्नोक्त लक्षणों—(i) गहरी शुक्र मेखला का प्रणय रेखा को काटना, (ii) हृदय रेखा से निकली रेखाओं का नीचे की ओर जाना, (iii) मस्तक रेखा के अन्तिम भाग का दोषपूर्ण होना और नक्षत्रचिह्न में समाप्त होना तथा (iv) एक खड़ी रेखा द्वारा शनि रेखा का काटकर रोक लिया जाना—व्यक्ति के दुराचारी-व्यभिचारी होने के कारण उसके वैवाहिक जीवन के बिगड़ने की और भयंकर विपत्ति आने की प्रबल सम्भावना का सूचक है। इससे व्यक्ति का मनोबल गिर जाता है और उसे उन्मादग्रस्त होकर नारकीय जीवन जीना पड़ता है (रेखाचित्र-538)।

शुक्र मेखला सभी प्रकार के हाथों में मिलती है। कुछ उत्तम प्रकृति के पुरुषों-स्त्रियों के हाथों में भी यह मिलती है और इसने उनके व्यवसाय तथा कार्य-व्यापार पर किसी प्रकार का कोई दुष्प्रभाव नहीं डाला। कहने का अभिप्राय यह है कि शुक्र

मेखला व्यक्ति को अतिरिक्त ऊष्मा तो देती है, पर इसके साथ ही उसे समर्थ और संयमशील बनाने में सहायक भी होती है। इतने पर भी इसके अप्रिय परिणामों से बचना सरल नहीं होता।

शुक्र मेखला का सही अर्थ जानने के लिए व्यक्ति के हाथ के प्रकार, पर्वतों की स्थिति तथा अन्य संयोगों की जांच-परख आवश्यक होती है। समग्र और निर्दोष अध्ययन किये बिना व्यक्ति को कामुक बताना अनुचित ही होता है। किसी अभाव-ग्रस्त, दरिद्र, भयभीत और शीतल प्रकृति के व्यक्ति के हाथ में शुक्र मेखला देखकर उसे अपव्ययी बताना इस विद्या का उपहास करना होगा; क्योंकि ऐसे व्यक्ति के लिए तो 'व्यय' शब्द भी दुर्व्यसन हो सकता है। वस्तुतः शुक्र मेखला वाले अधिकांश व्यक्ति तो अभावपीड़ित ही होते हैं। अतः शुक्र मेखला पर विचार करते समय अधिक सतर्क-सजग और विवेकशील तथा निष्पक्ष रहने की बड़ी भारी आवश्यकता है। इसके विवेचन में निजी मन्तव्य को आड़े नहीं आने देना चाहिए। वस्तुतः दूसरों में दोष देखने की प्रवृत्ति वालों को जहां शुक्र मेखला सदैव कामुकतावर्द्धक लगेगी, वहां निष्पक्ष दृष्टि व्यक्ति के प्रति करुणा और सहानुभूति को भी जागृत करेगी।

*

14
गौण रेखाएं

1. मंगल रेखा

मंगल रेखा निचले मंगल पर्वत से निकलती है और जीवन रेखा के भीतर की ओर तथा उसके अत्यन्त समीप समानान्तर चलती है (रेखाचित्र-535)। यह वास्तव में सहायक रेखा ही होती है। जीवन रेखा से जुड़ी तथा उसके एकदम निकट विद्यमान यह रेखा बड़ी ही शक्तिशाली होती है। इस रेखा का यह नाम इसके मंगल पर्वत से उद्‌गम होने के कारण ही है। यह अपने प्रभाव से सहायता रेखा को समर्थ-सशक्त बनाती है तथा गहरी जीवन रेखा से भी अधिक शारीरिक दृढ़ता प्रदान करती है।
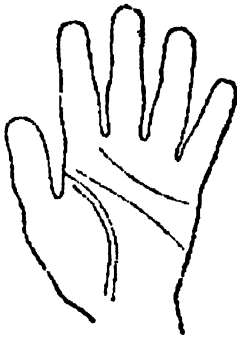
रेखाचित्र-535

जीवन रेखा से सम्बन्धित किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले मंगल रेखा और प्रधान पर्वत प्रकार पर विचार करना चाहिए। ऐसा व्यक्ति सूक्ष्म (पतली) चौड़ी-सतही अथवा शृंखलाकार रेखा तथा मंगल रेखा रखने के कारण जन्मजात कोमल (नाजुक) होता है, परन्तु उसकी जीवनी शक्ति उसकी दुर्बलता को गम्भीर नहीं बनने देती। गहरी जीवन रेखा और सबल मंगल रेखा वाला व्यक्ति प्रचण्ड जीवनी शक्ति तथा विलक्षण सहनशक्ति रखने के साथ-साथ प्रबल आक्रामक शक्ति लिये होता है। उसकी यह शक्ति उसे इतना अधिक सक्रिय रखती है कि वह न केवल किसी कार्य को अधूरा नहीं छोड़ता, अपितु अपनी अतिरिक्त शक्ति के उपयोग के लिए निरन्तर कुछ नया करने की खोज में लगा रहता है।

बृहस्पतिप्रधान व्यक्ति इस संयोजन में भोजन-भट्ट (पेटू) होता है। उसके हाथों का रंग होने पर तो व्यक्ति शराबी-कबाबी, मौज-मस्ती करने वाला तथा शोर-शराबा मचाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति इतना अधिक ऊधम मचता है कि कोई उसके समान शक्तिशाली व्यक्ति ही उसका साथ निभा पाता है। इस संयोजन वाला मंगलप्रधान व्यक्ति भी बहुत पेटू और लड़ाका होता है। उसमें कष्ट-पीड़ा को सहने की भी अद्‌भुत शक्ति होती है। यही कारण है कि ऐसे व्यक्ति अच्छे सैनिक सिद्ध होते हैं। यदि इन्हें अपनी अतिरिक्त शक्ति के उपयोग का अवसर नहीं मिलता, तो ये अपनी

शक्ति को उपद्रव, विवाद, कलह और मदिरा-सेवन आदि में खर्च करते हैं। श्रमसाध्य कार्य में न जुटने पर ऐसे व्यक्ति मदिरा सेवन जैसे दुर्व्यसनों में ग्रस्त हो जाते हैं। हाथों के बालों का लाल होना इस तथ्य की पुष्टि करने वाला संकेत है। जीवन रेखा के बराबर लम्बी मंगल रेखा व्यक्ति में जीवनी शक्ति के जीवनपर्यन्त बनी रहने का संकेत देती है, परन्तु मंगल रेखा का जीवन रेखा के कुछ भाग तक तो साथ चलना और फिर विलीन हो जाना, यह संकेत देता है कि व्यक्ति जीवन रेखा द्वारा निर्दिष्ट आयु तक ही बल-शक्ति सम्पन्न बना रहता है।
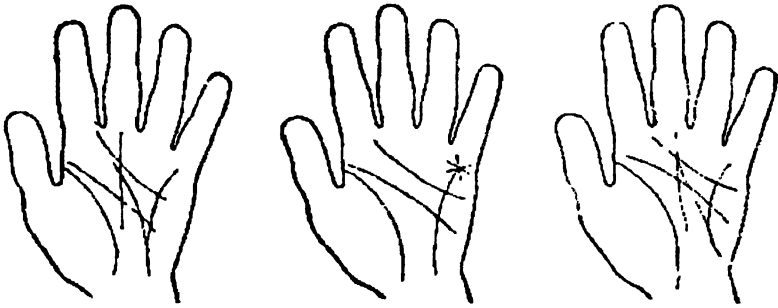
रेखाचित्र-536 *रेखाचित्र-537* *रेखाचित्र-538*

मंगल रेखा का जीवन रेखा के दूषित स्थान से आगे जाने का अर्थ है–व्यक्ति के उपस्थित संकट का मन्द पड़ जाना, अर्थात् मंगल रेखा द्वारा जीवन रेखा को शक्ति-सहयोग प्रदान करना (रेखाचित्र-536)।

मंगल रेखा से निकलकर जीवन रेखा को पार करती रेखाएं यह व्यक्त करती हैं कि व्यक्ति जीवन में उन्नति करने की निरन्तर चेष्टा कर रहा है। वस्तुतः मंगल रेखा व्यक्ति की शारीरिक ऊर्जा में लगातार वृद्धि करने वाली ही होती है। (रेखाचित्र-537)। इसी प्रकार मंगल रेखा से निकलती और शनि रेखा में मिलती रेखा अथवा रेखाएं व्यक्ति के मनोबल को बढ़ाने वाली होती हैं (रेखाचित्र-538)।

मंगल रेखा से निकल कर शनि रेखा में मिल जाने वाली रेखा व्यक्ति की उन्नति को अधिक सुनिश्चित करने वाली होती है (रेखाचित्र-539)। मंगल रेखा से निकलकर किसी रेखा के मस्तक रेखा को काटने से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति के निरन्तर कार्यरत रहने से उसकी जीवनी शक्ति की बहुत क्षति हुई है और अब उसे इसकी पूर्ति की आवश्यकता है (रेखाचित्र-540)। वस्तुतः ऐसा व्यक्ति इतना अधिक शक्ति-सम्पन्न होता है कि उसे अपनी सामर्थ्य का अत्यधिक उपयोग करने का पता नहीं रहता, फिर भी मस्तिष्क से शक्ति-क्षरण का संकेत मिल जाता है।

निम्नोक्त लक्षणों–(i) हाथ का कामुक लक्षणों से युक्त होना, (ii) मूल में बढ़ा हाथ तथा (iii) विशाल शुक्र पर्वत से व्यक्ति के अत्यन्त विषयासक्त तथा यौनवासना
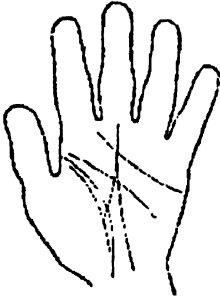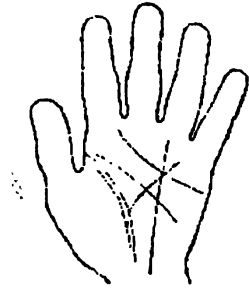
रेखाचित्र-539 *रेखाचित्र-540* *रेखाचित्र-541*

की तृप्ति के अवसरों की खोज में लगा रहने वाला सूचित होता है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रचण्ड यौनशक्ति वाला तथा सम्भोग-तृप्ति में नैतिकता और सदाचार की नितान्त उपेक्षा करने वाला होता है। इस संयोजन के साथ हाथ में सशक्त मंगल रेखा और उससे निकलती एक रेखा का सूर्य रेखा को अथवा शनि रेखा को काटना यह सूचित करता है कि व्यक्ति की अत्यधिक कामुकता का उसकी उन्नति में आड़े आना निश्चित ही है (रेखाचित्र-541)।
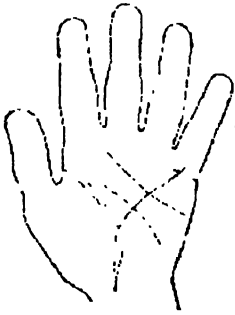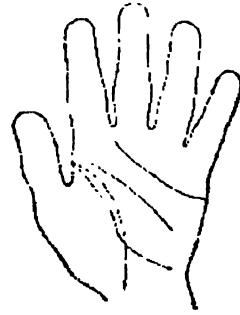
रेखाचित्र-542 *रेखाचित्र-543*

सूर्य रेखा के अन्त में किसी बिन्दु, गुणनचिह्न अथवा आड़ी रेखा की उपस्थिति व्यक्ति की प्रतिष्ठा के नष्ट होने का संकेत है। ऐसे व्यक्ति के हाथ में सशक्त मंगल रेखा से निकलकर प्रणय रेखा को काटने वाली होने से व्यक्ति की निष्ठा के अभाव के कारण उसके वैवाहिक जीवन का असफल रहना सूचित होता है। प्रणय रेखा का अन्त में द्विशाखी हो जाना तो वैवाहिक जीवन के बर्बाद हो जाने का संकेत है (रेखाचित्र-542)।

हाथ के मूल को पार करती मंगल रेखा की चन्द्र पर्वत पर समाप्ति से व्यक्ति के जीवन-भर पर्याप्त जीवनी शक्ति से सम्पन्न रहने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-543)। चन्द्रप्रधान मदिरासेवी प्रायः अत्यधिक व्यग्र और अशान्त होते हैं

और इसी कारण उनके हाथों में यह चिह्न प्राय: ही देखने को मिलता है। चन्द्रप्रधान व्यक्ति अपनी कुछ शक्ति को विभिन्न स्थानों की यात्रा-पर्यटन में खपाते हैं और शेष ऊर्जा को जुआ, शराब और स्त्रीसेवन में बरबाद कर देते हैं।

मंगल रेखा की गुणनचिह्न, बिन्दु, रेखा अथवा नक्षत्रचिह्न में समाप्ति का अर्थ है—असंयम और अतिमैथुन के कारण व्यक्ति की अचानक मृत्यु। जीवन रेखा के अन्त में क्रास अथवा नक्षत्रचिह्न का मिलना इस सम्भावना को और अधिक पुष्ट करता है। मस्तक रेखा का आधे मार्ग में दोषपूर्ण हो जाने से व्यक्ति के कार्य करने की तीव्र गति के कारण उसके मस्तिष्क का श्रान्त-क्लान्त होना सूचित होता है। नक्षत्रचिह्न में मस्तक रेखा की समाप्ति व्यक्ति के उस आयु में पागल होने का संकेत है। जीवन रेखा की अपेक्षा मंगल रेखा का अधिक गहरा होना व्यक्ति की भीतरी क्षमता का शारीरिक गठन से कहीं अधिक बढ़ी-चढ़ी होना है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि ऐसे चिह्न के साथ अतिरिक्त बल जीवन रेखा से बढ़-चढ़कर रहेगा। हस्तरेखाशास्त्री को जीवन रेखा की जांच-परख करते समय मंगल रेखा के अध्ययन में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। उसे यह ज्ञात होना चाहिए कि जीवन रेखा से अधिक पतली एवं बारीक मंगल रेखा मात्र एक सहायक रेखा होती है और इसका कार्य केवल शरीर को सुदृढ़ बनाना तथा जीवन-दशा में सुधार लाना होता है।

सामान्यत: शुभ एवं मंगलकारी मंगल रेखा व्यक्ति के असंयम के कारण अन्यथा-विनाशकारी सिद्ध हो सकती है। सही विवेक से ही इसे आंकना ठीक रहता है। व्यक्ति की कोटि के सन्दर्भ में ही इसकी व्याख्या सही रहती है।

जीवन रेखा का जीवन के अन्त तक एक समान रहना और उसी अनुपात में मंगल रेखा द्वारा उसे शक्ति देते रहना यह सूचित करता है कि व्यक्ति की जीवनवृत्ति स्थिर और संयम रूप से चलती है, उसका स्वास्थ्य ठीक रहता है तथा जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसमें पर्याप्त जीवनी शक्ति विद्यमान रहती है। वह शालीनता और शान्ति का जीवन जीता है तथा जीवन के अन्त तक लोगों से स्नेह और सम्मान पाता रहता है। ग्लेडस्टन के हाथ में ऐसी ही मंगल रेखा थी।

भारत के सन्दर्भ में यदि अध्ययन किया जाता, तो जवाहरलाल नेहरू के हाथ में ऐसी रेखा का मिलना निश्चित था।

2. बृहस्पति मेखला

बृहस्पति और शनि की अंगुलियों के मध्य से निकलकर नीचे की ओर जाने वाली, बृहस्पति पर्वत की घेराबन्दी करके जीवन रेखा के उद्गम स्थल के समीप पहुंचने वाली तथा वहां समाप्त हो जाने वाली रेखा बृहस्पति मेखला कहलाती है, जो अपने आकार में छोटी होती है (रेखाचित्र-544)।

इस रेखा वाले व्यक्ति तन्त्र-विद्या तथा मन्त्र-विद्या के अध्ययन में विशेष रुचि रखने वाले होते हैं। हस्तरेखाशास्त्र में निर्दिष्ट अन्य संकेतों के रहने पर तो ये इन विद्याओं में पारंगत भी हो जाते हैं। बहुत रेखाओं से भरे हाथों में ही प्राय: यह रेखा मिलती है और इसके चतुष्कोण में एक रहस्यपूर्ण गुणनचिह्न भी प्राय: देखने को

मिलता है। गुह्य विद्याओं के तथा मनोविज्ञान के अध्ययन में रुचि रखने वाले अनेक व्यक्तियों के हाथों मे यह चिह्न देखने को मिला है। इस चिह्न के साथ हाथ का रेखाओं से भरा होना सूचित करता है कि व्यक्ति प्रभावी और संवेदनशील है। ऐसे व्यक्ति सदैव नई विद्याओं की जानकारी पाने में रुचि रखने वाले होते हैं।
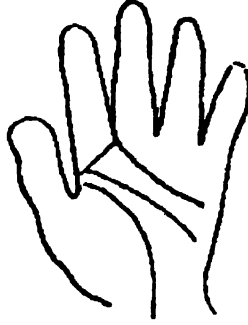
रेखाचित्र-544

यह स्मरणीय है कि बृहस्पति मेखला रखने वाले व्यक्ति का गुह्यविद्या में दक्षता पाने-न पाने से तो कोई सम्बन्ध नहीं, परन्तु हां, यह इस दिशा में व्यक्ति को प्रवृत्त-प्रेरित अवश्य करती है। अतः सम्बद्ध व्यक्ति तान्त्रिक शक्तियों के सम्बन्ध में जानकारी रखता है अथवा नहीं, यह जानने के लिए हस्तरेखाशास्त्री को अपने विवेक तथा अन्य सहायक तत्वों की जांच-परख करनी चाहिए। वस्तुतः कल्पनाशील, कामचोर, पढ़ने-पढ़ाने से विमुख और अशक्त व्यक्ति तन्त्र-विद्या के सीखने में न तो रुचि रखते हैं और न ही इस क्षेत्र में कुछ प्रगति कर पाते हैं। ऐसे लोग यदि गुह्यविद्या में कुशल होने का दावा करते हैं, तो इन्हें विशेषज्ञ के स्थान पर पाखण्डी ही समझना चाहिए।

अंगुलियों के वर्गाकार, चमचाकर अग्रभागों तथा गांठदार जोड़ों वाले कठिन श्रम और निरन्तर साधना के बल पर मनोविज्ञान के क्षेत्र में अधिकारी विद्वान बन सकते हैं। परिश्रमी छात्रों के लिए बृहस्पति मेखला के होने को वरदान समझना चाहिए। हां, इस रेखा के प्रभाव को समग्र रूप में समझने के लिए व्यक्ति की कोटि और उसके प्रकार के अतिरिक्त अन्य रेखाओं के संयोग का अध्ययन परीक्षण भी वाञ्छनीय होता है।

3. शनि मेखला

बृहस्पति और शनि की अंगुलियों से निकलने वाली, शनि पर्वत को घेरने वाली तथा शनि तथा सूर्य की अंगुली के मध्य में पहुंच कर समाप्त हो जाने वाली रेखा शनि मेखला कहलाती है (रेखाचित्र-545)। शनि पर्वत को कभी-कभार केवल एक ही रेखा अन्यथा प्रायः अनेक रेखाएं पार करके जाती ही रहती हैं।

रेखाचित्र-545
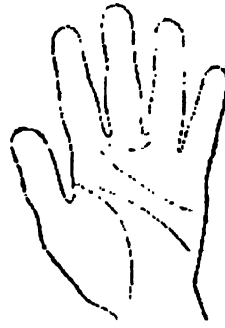
रेखाचित्र-546

शनि रेखा को पार करती हुई रेखाओं से कभी-कभी वृत्त पूरा नहीं बन पाता, परन्तु फिर भी इन रेखाओं का अन्तिम छोर इन्हें अपूर्ण शनि मेखला का अंश होने की पुष्टि कर देता है (रेखाचित्र-546)। यह रेखा व्यक्ति के एक कार्य को अधूरा छोड़कर दूसरे कार्य में प्रवृत्त हो जाने का संकेत देती है। स्पष्ट है कि ऐसा व्यक्ति किसी भी एक कार्य में बहुत समय तक टिक नहीं पाता। उद्देश्य के प्रति अडिग एवं समर्पित न रहने का परिणाम विफलता के रूप में सामने आता है। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से यह रेखा विफलता की सूचक नहीं होती, तथापि इस रेखा वाले व्यक्ति प्राय: आजीविका के विषय में निरन्तर भटकते तथा सफलता-असफलता से जूझते पाये जाते हैं। मुझे सुधारगृहों में बन्दी-रूप में रखे गये लोगों के हाथों में भी यह रेखा देखने को मिली है। वस्तुत: शनि मेखला से घिरा शनि पर्वत विद्युत्-धारा के प्रवाह में बाधक बनता है, जिससे व्यक्ति सदैव गम्भीर, निराश, खिन्न, उदास, उत्तेजित तथा तनावग्रस्त रहता है। इस स्थिति में व्यक्ति के उत्तम गुण-धीरता, बुद्धिमत्ता, विवेक तथा सहनशीलता आदि या तो दब जाते हैं या फिर लुप्त हो जाते हैं। इसके फलस्वरूप व्यक्ति संयम और सन्तुलन खो बैठता है और वह घृणित कार्यों को करने में भी संकोच नहीं करता। ऐसे व्यक्ति किसी लक्ष्य पर न टिक पाने के कारण सदैव दिशाहीन होकर भटकते पाए जाते हैं। उनका जीवन असफल प्रयासों की लम्बी कहानी होता है।

निम्नोक्त लक्षणों-(i) अपूर्ण ऊपरी मंगल पर्वत, (ii) छोटा अंगूठा, (iii) दोषपूर्ण बुध रेखा तथा (iv) उस पर द्वीप अथवा नक्षत्र का चिह्न-से व्यक्ति का निराशा और कुण्ठा से पागल हो जाना संकेतित होता है। यहां तक कि वह आत्महत्या भी कर सकता है। शनि मेखला के लिए निम्नोक्त लक्षण नितान्त अशुभ होते हैं-(i) शिथिल-मोल हाथ, (ii) अस्थिर मस्तक रेखा, (iii) अशक्त अंगूठा तथा (iv) निकृष्ट मंगल पर्वत अथवा विशाल चन्द्र पर्वत।

निम्नोक्त लक्षणों-मस्तिष्क का ढलवां होकर चन्द्र पर्वत तक चला जाना तथा चन्द्र पर्वत का विशाल अथवा जालदार अथवा दोनों होना-से व्यक्ति कल्पनाजीवी, मनमौजी, चञ्चल, अस्थिर प्रकृति तथा कुछ न कर पाने वाला सिद्ध होता है।

शनि मेखला के साथ दोषपूर्ण शनि रेखा से यह संकेत मिलता है कि किसी निश्चित उद्देश्य पर टिक न पाने के कारण व्यक्ति की आजीविका अनिश्चित हो गई है और उसका भविष्य अन्धकारमय बन गया है। ऐसे व्यक्तियों की सूर्य रेखा भी इसी प्रकार प्रभावित रहती है। किसी बाधा अथवा संकट का संकेत मिलते ही शनि मेखला अपना कार्य करने लग जाती है। मस्तक रेखा का विश्रृंखलित अथवा द्वीपचिह्नित होना और साथ ही शनि मेखला का होना व्यक्ति की चञ्चलता में बढ़ोतरी करने वाले होते हैं। यह संयोग दोषपूर्ण शनि रेखा के साथ जुड़ते ही विघ्न-बाधाओं को उजागर कर देता है। इससे सूर्य रेखा भी प्रभावित होती है।

चन्द्रप्रधान व्यक्ति प्रायः अस्थिरवृत्ति होते हैं, शनि मेखला उसकी चञ्चलता को अत्यधिक बढ़ा देती है। फलतः उनके लिए स्थायी सफलता स्वप्न बनकर रह जाती है। शनि मेखला का पूर्ण वृत्ताकार न बनकर टूट जाना, पूर्ण वृत्ताकार मेखला के समान चिह्न अशुभ नहीं होता; क्योंकि इस स्थिति में विद्युत्-धारा के प्रवाह के लिए कुछ-न-कुछ मार्ग बचा रह जाता है इस प्रकार शनि पर्वत भी इतना दोषयुक्त नहीं होता। मेखला के अपूर्ण होने पर उसका दोष भी व्यक्ति को कुछ न कुछ भुगतना ही पड़ता है। अतः हस्तरेखाशास्त्री को ऐसे व्यक्ति के सम्बन्ध में किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व सभी तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक हो जाता है।

शनि पर्वत पर एक-दूसरे को काटती दो रेखाओं से बनी शनि मेखला भी इस पर्वत पर किसी बड़े गुणनचिह्न की उपस्थिति जैसा प्रभाव लिये रहती है। आत्महत्या करने वाले व्यक्तियों के हाथों में ऐसी शनि मेखला प्रायः ही देखने को मिलती है (रेखाचित्र-547)।

रेखाचित्र-547

हाथ में शनि मेखला की उपस्थिति को व्यक्ति के लिए गम्भीर संकट की चेतावनी समझना चाहिए। इसके पश्चात् विनाश से बचाव करने वाले और संकट से पार लगाने वाले साधनों की खोज करनी चाहिए। इसके साथ ही व्यक्ति के प्रकार के के सन्दर्भ में हस्तरेखा के सिद्धान्तों को लागू करना चाहिए। आसन्न संकट को टालने के लिए व्यक्ति की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने वाले उपायों पर विचार करना चाहिए। हस्तरेखाशास्त्री को विदित होना चाहिए कि अंगूठे पर सशक्त इच्छापर्व का होना तथा उत्तम मस्तक रेखा का साथ मिलना शनि के दुष्प्रभाव के निवारण में अत्यन्त सार्थक सिद्ध होता है। हस्तरेखाशास्त्री को इसी सन्दर्भ में व्यक्ति पर शनि मेखला के पड़ने वाले प्रभाव की तथा उस प्रभाव के निवारण के उपाय की जानकारी देकर अपने यजमान का हित-साधन करना चाहिए।

4. मणिबन्ध और यात्रा रेखाएं

कंगन के आकार वाली और हाथ की कलाई पर मिलने वाली रेखाएं मणिबन्ध कहलाती हैं। (रेखाचित्र-548)। ये रेखाएं संख्या में कभी एक, तो कभी तीन होती हैं। इनमें प्रथम रेखा के सिवा शेष दो रेखाओं का कोई उपयोग नहीं होता। प्राचीन हस्तरेखाशास्त्रीय परम्परा के अनुसार प्रत्येक मणिबन्ध व्यक्ति की आयु में 30 वर्ष के जुड़ जाने का संकेत है, परन्तु आज तक इस मान्यता की पुष्टि में प्रमाण उपलब्ध नहीं हुए। इसी प्रकार मणिबन्ध पर दिखने वाले चिह्नों के सम्बन्ध में भी प्रचलित धारणाओं की पुष्टि नहीं हो सकी है। अत: हम इन सब धारणाओं के उल्लेख की कोई आवश्यकता नहीं समझते।
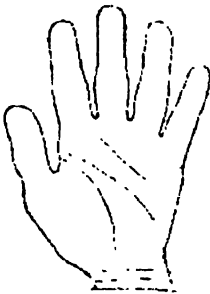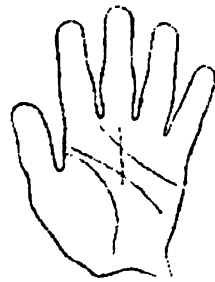
रेखाचित्र-548 *रेखाचित्र-549* *रेखाचित्र-550*

मणिबन्ध की प्रथम रेखा का गहरा होना संकेत देता है कि व्यक्ति का शरीर सुदृढ़ और सुगठित है। गहरी जीवन रेखा के साथ साफ-सुथरी और सुस्पष्ट मणिबन्ध रेखा को व्यक्ति में अतिरिक्त शक्ति होने का प्रतीक समझना चाहिए। इसके विपरीत मणिबन्ध रेखा की बनावट का दोषपूर्ण, शृंखलाकार, चौड़ी-सतही होना व्यक्ति में अपेक्षित शारीरिक शक्ति के अभाव का सूचक है। मणिबन्ध रेखाओं से निकलती

छोटी-छोटी शाखाओं से सूचित होता है कि व्यक्ति में जीवन में उन्नति करने की प्रबल इच्छा है। उसमें परिश्रम करने की प्रवृत्ति है तथा असफल होने पर सुधार की विलक्षण क्षमता है।

बहुत ऊंची उठकर चन्द्र पर्वत में प्रवेश करती लम्बी शाखाएं 'यात्रा रेखाएं' कहलाती हैं। ये व्यक्ति में यात्रा-पर्यटन की इच्छा को जागृत करके उसे आकुल-व्याकुल करती हैं। चन्द्रप्रधान व्यक्ति यात्रा रेखाओं से विशेष प्रभावित होते हैं। वे किसी भी मूल्य पर हाथ में आये यात्रा के अवसर को खोना नहीं चाहते। इसी सन्दर्भ में यात्रा रेखाओं का सफल अधययन करना चाहिए। यहां यह भी स्मरणयीय है कि यात्रा रेखाएं अपनी लम्बाई से व्यक्ति में यात्रा की अधीरता की मात्रा को तथा यात्रा की लम्बाई को सूचित करती हैं।

यात्रा रेखाओं के दिखने पर यात्रा के प्रकार की जानकारी होने पर उनका सही उपयोग किया जा सकता है। हम ऊपर लिख चुके हैं कि चन्द्र प्रधान व्यक्ति यात्रा के लिए सर्वाधिक उत्सुक रहते हैं। दूसरा क्रम बुध प्रधान व्यक्तियों का है। मंगल प्रधान, बृहस्पति प्रधान और सूर्य प्रधान व्यक्तियां को पर्यटन अच्छा अवश्य लगता है, परन्तु उनकी यात्राएं व्यवसायपरक होती हैं। वे आर्थिक समृद्धि के लिए ही घर से बाहर निकलते हैं। शनि प्रधान व्यक्ति ज्ञान की खोज में और शुक्र प्रधान व्यक्ति केवल मनोरंजन के लिए यात्राओं में रुचि लेते हैं।

यात्रा रेखाओं के साथ अंगुलियों के अग्रभागों के चमचाकार होने से उपर्युक्त तथ्यों की पुष्टि हो जाती है। कोमल हाथों वाले व्यक्तियों की यात्रा का उद्देश्य केवल मन को संतुष्टि होता है। जीवन रेखा से निकली और यात्रा रेखा की ओर गयी शाखा से व्यक्ति द्वारा व्यवसाय से विमुख हो जाना संकेतित होता है। वह व्यवसाय-धन्धे को छोड़कर पठन-पाठन में प्रवृत्त हो गया और फिर ऐसी धुन जगी कि ज्ञान की खोज में अलख जगाने लग पड़ा। ऐसे व्यक्ति अधिक यात्रा के शौकीन नहीं होते (रेखाचित्र-549)। यात्रा रेखाओं की पहली रेखा के मणिबन्ध रेखा से निकलने के कारण इन्हें मणिबन्ध रेखाओं का अंग समझना सर्वथा उपयुक्त ही है।

बीचों-बीच निकलती मणिबन्ध रेखा व्यक्ति के उदर से सम्बन्ध रखने वाले भीतरी अंगों की शोचनीय स्थिति को उजागर करती है। यह महिलाओं के प्रजनन अंगों की दुर्बलता और इस कारण प्रसवकाल में होने वाले कष्टों को उजागर करती है (रेखाचित्र-550)। फूली हुई मणिबन्ध रेखा निचले चन्द्र पर्वत से अथवा बुध रेखा से मिलने वाले स्त्री रोग के संकेत की पुष्टि करती है। विवाह के सफल-असफल रहने की सम्भावना पर विचार करते समय इन संकेतों का विशेष महत्व होता है। महिलाओं के सम्बन्ध में यह बांझपन का निश्चित संकेत न होते हुए भी विकृत परिणाम दिखाने वाले दोषपूर्ण अंग होने का सूचक अवश्य है।

5. अन्तर्ज्ञान रेखा

हाथ के किनारे के निकट मिलने वाली यह रेखा चन्द्र पर्वत पर उदय होती है और मंगल पर्वत के क्षेत्र की ओर घूमती हुई बुध पर्वत पर अथवा उसके समीप जाकर समाप्त होती है (रेखाचित्र-551)। इसकी स्थिति बुध रेखा-जैसी ही होती है, परन्तु इसकी पहचान इसकी घुमावदार रचना से होती है। वास्तव में यह बुध रेखा ही होती है।

गहरी और सुस्पष्ट यह रेखा व्यक्ति की क्षमता में वृद्धि करती है। इसका बुध रेखा नाम बुध सम्बन्धी बुद्धिमत्ता और विवेक का परिचायक है। इस रेखा वाले व्यक्ति अपने विचारों का स्पष्टीकरण तो प्रस्तुत नहीं कर सकते, परन्तु उनके विचार निश्चित रूप से सत्य ही सिद्ध होते हैं। यह बात अलग है कि वे न तो अपनी धारणाओं का विश्लेषण कर सकते हैं और न ही उनका आधार बता सकते हैं। फिर भी सत्य की कसौटी पर वे खरी उतरती हैं। उनमें लोगों को परखने की विलक्षण क्षमता होती है। वे उपयोगी-अनुपयोगी, विश्वसनीय-अविश्वसनीय तथा साथ निभाने, न निभाने वालों की पहचान में अपना सानी नहीं रखते। ऐसे कुछ लोग तो न अपनी क्षमताओं से परिचित होते हैं और न ही अपनी मान्यताओं को तर्कसंगत सिद्ध कर पाते हैं, परन्तु फिर भी वे जो कहते हैं, वह उनकी सच्ची अनुभूति होती है।
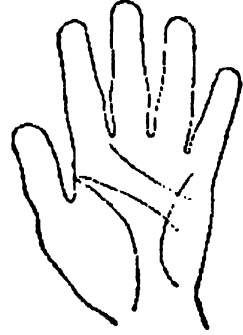
रेखाचित्र-551

अपनी क्षमताओं से अपरिचित ऐसे व्यक्ति अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं कर पाते। अतः वे दूसरों के सम्बन्ध में सोचते हैं। वे अपनी धारणाओं को तो कोरी कल्पनाएं मानकर उन्हें गम्भीरता से ले ही नहीं पाते। दूसरों के सम्बन्ध में सोचते-सोचते वे अपनी कुछ धारणा बनाते-मिटाते रहते हैं। कभी किसी को ईमानदार और सच्चा आदमी मानते हैं, तो क्षण-भर में ही वे अपनी धारणा को बदलकर सोचने लगते हैं कि मैं उसके विषय में ऐसा निश्चित रूप से कैसे कह सकता हूं। क्या पता, मेरे सामने प्रभाव डालने के लिये वह नाटक कर रहा हो। इस प्रकार, उनके विचार निश्चित रूप नहीं ले पाते। हां, इस चिन्तन के फलस्वरूप उनमें व्यक्ति के वर्गीकरण करने की योग्यता विकसित हो जाती है। प्रेतात्माओं का आह्वान करने का दावा करने वालों के हाथों में यह चिह्न पाया जाता है (रेखाचित्र-552)। उनके अनुसार उनकी प्रेरणाएं उनके सामने साकार रूप ले लेती हैं। बुलाई गयी आत्माओं की छवि स्वतः ही उनके मन में उभर आती है। अन्तःदृश्यों पर उनका विश्वास न हो, पर कल्पनाओं को साकार रूप देने वाला होता है और अपने इन रूपों की संख्या वे अपनी इच्छानुसार निरन्तर बढ़ाते रहते हैं।
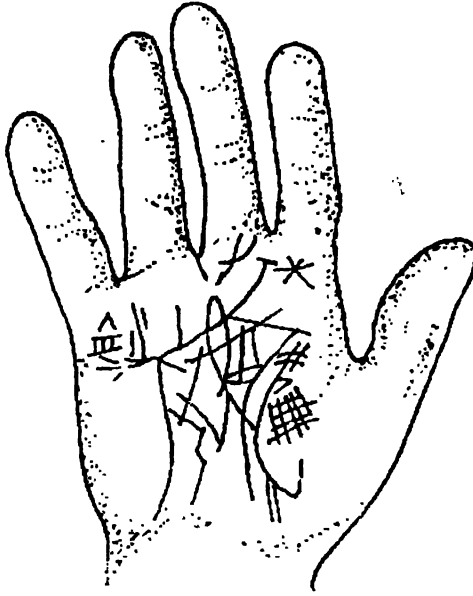
रेखाचित्र-552

वस्तुत: अन्त:प्रज्ञा एक व्यक्ति से प्राप्त छवि को दूसरे व्यक्ति तक सम्प्रेष्य बनाती है। यही कारण है कि अन्तर्ज्ञान रेखा वाले हाथों में इन छवियों को प्राप्त करने की सर्वाधिक सामर्थ्य होती है। अन्तर्ज्ञान रेखायुक्त हाथ के वर्गाकार, कठोर तथा कम रेखाओं वाला होने पर व्यक्ति अपने अन्त:करण में स्फूर्त होने वाले विचारों को 'मूर्खतापूर्ण' कहकर उन्हें नकारने वाला होगा। निम्नोक्त लक्षणों वाला व्यक्ति 'अतीन्द्रिय संवेदी' इन्द्रियों की पहुंच से परे के तथ्यों को प्रत्यक्ष देखने वाला होता है– (i) अंगुलियों का लम्बा होना, (ii) अंगुलियों के अग्रभागों का पैना-नुकीला होना, (iii) चन्द्र पर्वत का पूर्ण विकसित होना, (iv) मस्तक रेखा का ढलवां होना, (v) अंगूठे के छोर का पैना होना तथा (vi) एक अन्तर्ज्ञान रेखा का होना। ऐसा व्यक्ति विचित्र विचारों और स्वप्नों का दृष्टा होगा। निकट भविष्य में आने वाले संकटों के दृश्य उसके नेत्रों के समक्ष प्रत्यक्ष रूप धारण कर रहे होंगे। शकुनों में विश्वास करने वाला यह व्यक्ति चिह्नों-प्रतीकों को देखेगा। सामान्य व्यक्ति जिस प्रकार निद्रा में लीन होने पर स्वप्न देखते हैं, वह जागते हुए प्रत्यक्ष होने वाली घटनाओं को पहले से ही स्वप्नों के रूप में देख लेगा। ऐसा व्यक्ति अतिसंवेदनशील होने के साथ अधीर भी होता है। अत: वह शीघ्र ही विकल और थक जाने वाला होता है।

ऐसे व्यक्तियों के हाथों को देखकर इनके तन्त्र-विद्या में निपुण होने का भ्रम अवश्य उत्पन्न होता है, परन्तु वास्तव में कल्पनालोक एवं स्वप्न-जगत् में खोये रहने वाले ये लोग पढ़ने-लिखने-जैसे किसी भी श्रम साध्य कार्य को नहीं कर पाते।

अपवादों को छोड़कर इस श्रेणी के लोग किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। वस्तुत: सफलता के लिए अपेक्षित सूझ-बूझ और सतत साधना की प्रवृत्ति का इनमें नितान्त अभाव ही होता है।
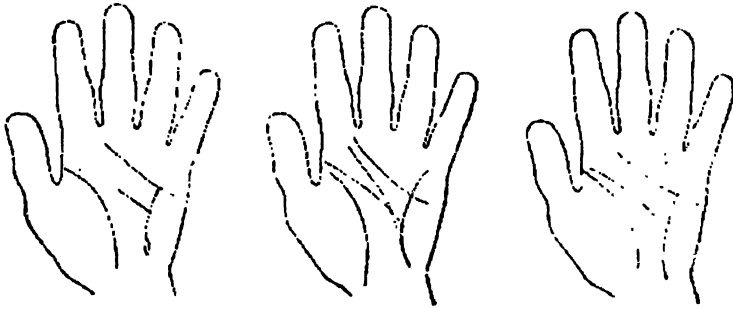
रेखाचित्र-553 *रेखाचित्र-554* *रेखाचित्र-555*

गहरी अन्तर्ज्ञान रेखा अन्तर्दृष्टि की अधिकतम मात्रा को तथा विशृंखलित एवं दोषपूर्ण रेखा सीमित मात्रा को उजागर करती है। रेखा में द्वीप चिह्न की स्थिति अन्तर्दृष्टि की सफलता को घटा देती है तथा अन्तर्ज्ञान रेखा के आरम्भ में द्वीप चिह्न से व्यक्ति के नींद में घूमने के रोग से ग्रस्त होना सूचित होता है (रेखाचित्र-553)। मस्तक रेखा का चन्द्र पर्वत पर नीचे तक जाना तथा अन्तर्ज्ञान रेखा द्वारा उसे काटे जाने से व्यक्ति की अन्तर्ज्ञान दृष्टि को अत्यधिक महत्व देने की प्रवृत्ति के कारण उसकी मानसिक शक्तियों का क्षतिग्रस्त होना सूचित होता है।

अन्तर्ज्ञान रेखा से निकलकर एक शाखा के बृहस्पति पर्वत पर जाने से व्यक्ति की अन्तर्ज्ञान और अन्तर्दृष्टि से कुछ महत्वपूर्ण करने की इच्छा रखना सूचित होता है। ऐसे व्यक्ति प्राय: सफल तान्त्रिक होते हैं (रेखाचित्र-554)। अन्तर्ज्ञान रेखा से निकलती एक शाखा के सूर्य पर्वत पर जाने से व्यक्ति द्वारा अपनी आन्तरिक शक्तियों से यश-लाभ करना सूचित होता है (रेखाचित्र-555)।

इसी प्रकार अन्तर्ज्ञान रेखा से निकलती किसी रेखा द्वारा शनि रेखा को काटने से व्यक्ति में अन्तर्दर्शी क्षमताएं होने पर भी उसकी उन्नति में बाधा पड़ना सूचित होता है (रेखाचित्र-556)।

ऐसे सभी विषयों में क्षमताओं का प्रयोग एक माध्यम अथवा तत्त्वदर्शन के रूप में ही किया जाता है।

अन्तर्ज्ञान रेखा द्वारा अपने अन्त में नक्षत्र चिह्न लिये रहने से व्यक्ति का अपनी शक्तियों के प्रयोग से लाभान्वित होना निश्चित है (रेखाचित्र-557)। बुध पर्वत के पूर्ण विकसित होने पर तो व्यक्ति के वारे-न्यारे हो जाते हैं। वह अपनी शक्तियों के उपयोग से लाभ ही लाभ कमाता है। पूर्ण विकसित बुध पर्वत व्यक्ति को धन-लाभ भी कराता है, अथवा करा सकता है। बुध पर्वत के समुचित विकसित न होने पर ऐसा व्यक्ति धन कमाने के लिए हाथ की सफाई, लोगों की आंखों में धूल झोंकना, को

अपनाने वाला होता है। अन्तर्ज्ञान रेखा पर गुणन चिह्न की उपस्थिति इस निष्कर्ष की पुष्टि करती है। ऐसे व्यक्ति छली-कपटी और भाग्यवादी होने के साथ बहुत ही चतुर और धूर्त होते हैं। अन्तर्ज्ञान रेखा से निकलती किसी रेखा के शनि रेखा में मिलने से व्यक्ति की योग्यताओं का उसकी आजीविका के अर्जन में सहायक सिद्ध होना सूचित होता है (रेखाचित्र-558)।
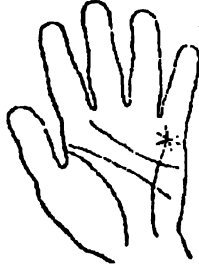
रेखाचित्र-556 *रेखाचित्र-557* *रेखाचित्र-558*

सामान्य रूप से अन्तर्ज्ञान रेखा सहज बुद्धि वाले किसी भी व्यक्ति के लिए सहायक सिद्ध होती है। हां, अत्यधिक आत्मविश्वास के कारण अपना सन्तुलन खो बैठने वाले और इससे ऊट-पटांग निर्णय लेने वाले व्यक्तियों की बात अलग है। उनके लिए अवश्य यह रेखा विपरीत परिणाम देने वाली होती है। अत: हस्तरेखाशास्त्री को समग्र अध्ययन के आधार पर ही इस रेखा के प्रीााव के सम्बन्ध में उपस्थित यजमान को बतलाना चाहिए।

6. वासना-रेखा

कभी-कभार दिखने वाली 'वासना रेखा' बुध रेखा की सहायक रेखा के रूप में ही जानी-पहचानी जाती है (रेखाचित्र-559)। अपनी सामान्य स्थिति में यह रेखा चन्द्र पर्वत के मूल से तिरछी उदय होकर हाथ के किनारे पर उच्च चन्द्र पर्वत के निचले भाग में पहुंचते ही समाप्त हो जाती है।

दोनों—सशक्त बुध रेखा और वासना रेखा—आपस में मिलकर व्यक्ति को उत्तम स्वास्थ्य एवं उत्कृष्ट जीवनी शक्ति प्रदान करती हैं। ऐसा व्यक्ति अपनी शक्ति के अजस्र स्रोत के कुछ भाग को अपनी कामुकता की वृद्धि में खर्च कर देता है। व्यक्ति के हाथों की बनावट से तथा हाथों के रूप-रंग से कामुक प्रवृत्ति का संकेत मिलने पर इस सम्भावना को सत्य समझना चाहिए। यदि कामुक प्रवृत्ति के संकेत नहीं मिलते, तो सम्बद्ध व्यक्ति के हाथों को कोटि द्वारा संकेतित मामलों में अपनी शक्ति को खर्च करने वाला समझना चाहिए। रेखा की आकृति का तिरछा होना तथा उसका हाथ में उच्चतम बिन्दु तक न जाना व्यक्ति के निचले लोक में रहकर कार्य करने का संकेत देता है।

वासना रेखा के गहरे और सुस्पष्ट रूप को व्यक्ति के किसी दिशा में पतन का पक्का प्रमाण समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति सदा गन्दा-दोषपूर्ण चिन्तन ही करता रहता

है। इस चिह्न का न होना उसके लोभी-लालची होने और पतन के गर्त में गिरने का पक्का प्रमाण होता है। कोमल एवं विलासप्रिय हाथ तथा सुस्पष्ट वासना रेखा रखने वाला व्यक्ति लोक-लाज, मर्यादा, सम्मान-प्रतिष्ठा तथा हानि-लाभ आदि सब कुछ को ताक रखकर भोग-विलास में डूबा रहने वाला होता है।
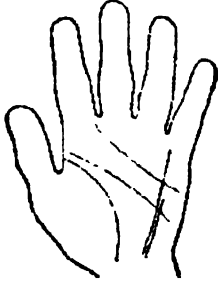
रेखाचित्र-559
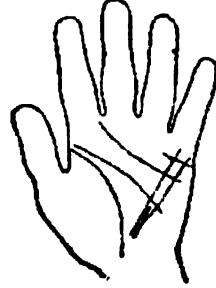
रेखाचित्र-560

हस्तरेखाशास्त्री को व्यक्ति के हाथ में वासना रेखा को देखते ही सर्वप्रथम उसकी रुचियों की पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए और फिर पूरी-पूरी सावधानी बरतते हुए उसके विलासी होने अथवा न होने का निष्कर्ष निकालना चाहिए। उसके कामुक, विलासी और विषयासक्त होने का संकेत मिलने पर यह निश्चित समझना चाहिए कि यह रेखा व्यक्ति की आजीविका के लिए अशुभ एवं अनिष्टकारी है। इस रेखा के साथ मस्तक रेखा का दोषपूर्ण होना व्यक्ति के अत्यधिक विलासी होने से उसके मस्तिष्क का बुरी तरह प्रभावित होना सूचित होता है। वासना रेखा वाले व्यक्ति की द्वीप चिह्नयुक्त शनि रेखा से व्यक्ति की विलासप्रियता के कारण उसका आर्थिक संकट से ग्रस्त होना सूचित होता है। इसके अतिरिक्त ऐसे व्यक्ति के हाथ में एक बिन्दुयुक्त अथवा एक गुणन चिह्नयुक्त सूर्य रेखा का अथवा सूर्य पर्वत का होना व्यक्ति की सिलारिता के कारण उसकी प्रतिष्ठा का खतरे में पड़ना सूचित करता है।

एक आकस्मिक रेखा का गहरी वासना रेखा से निकलना तथा द्विशाखी प्रणय रेखा को काटने से व्यक्ति के वैवाहिक जीवन का चौपट होना सूचित होता है। वस्तुत: भ्रमर-वृत्ति के कारण अपने जीवनसाथी के प्रति निष्ठा का अभाव (बेवफ़ाई) उसके साथी को तनाव में डाल देता है और उससे धीरे-धीरे विमुख कर देती हैं। इससे दोनों का प्रणय प्रगाढ़ रूप ले ही नहीं पाता (रेखाचित्र-560)।

आकस्मिक रेखा का वासना रेखा से निकलकर ऊपर की ओर जाने और सूर्य रेखा को काटने से व्यक्ति की कामुकता और विलासिता से उसकी सफलता का चौपट होना सूचित होता है। शनि रेखा के कटने पर यही परिणाम–सफलता का बुरी तरह प्रभावित होना–निकलता है (रेखाचित्र-561)।

वासना रेखा से निकलती आकस्मिक रेखा के जीवन रेखा को पार कर जाने से व्यक्ति की विषयासक्ति से उसके स्वास्थ्य का दुष्प्रभावित होना, अर्थात् व्यक्ति का क्षीण और रुग्ण होना सूचित होता है (रेखाचित्र-562)। काटने वाली किस भी रेखा

के पश्चात् जीवन रेखा के दोषपूर्ण हो जाने अथवा किसी भी रूप में क्षतिग्रस्त हो जाने का अर्थ है–व्यक्ति के घोर विलासी होने के कारण जीवन भर उसका अस्वस्थ–दुर्बल और रोगी बना रहना।

रेखाचित्र-561 *रेखाचित्र-562* *रेखाचित्र-563*

आड़ी रेखाओं के वासना रेखा से निकलने और बुध रेखा को काटने से व्यक्ति के न केवल स्वास्थ्य के विकृत होने का, अपितु उसकी प्रगति के द्वार भी बन्द होने का संकेत मिलता है (रेखाचित्र-563)।

किसी आकस्मिक रेखा का वासना रेखा से निकलकर जीवन रेखा में अवस्थित बिन्दु चिह्न में जा मिलने से सूचित होता है कि व्यक्ति बिन्दु द्वारा निर्दिष्ट आयु में किसी गम्भीर रोग से ग्रस्त होकर दु:खी जीवन बितायेगा (रेखाचित्र-564)।

अनगिनत रेखाओं द्वारा वासना रेखा से निकलकर मस्तक रेखा को पार कर जाने से व्यक्ति की अति कामुकता के कारण उसके मस्तिष्क का दुर्बल, क्षतिग्रस्त एवं निरन्तर सिरदर्द से पीड़ित होने का कारण भी होता है।
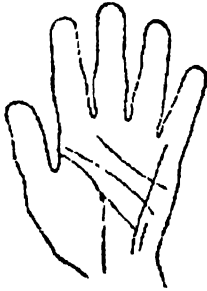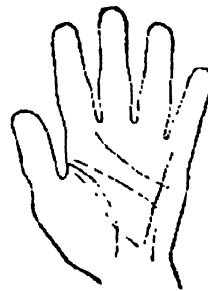
रेखाचित्र-564 *रेखाचित्र-565* *रेखाचित्र-566*

इन रेखाओं द्वारा मस्तक रेखा के कटने के उपरान्त किसी बिन्दु चिह्न का अथवा किसी गहरी छड़नुमा रेखा का अथवा विच्छेद का अथवा गुणन चिह्न का दिखना यह संकेत देता है कि व्यक्ति गहन मस्तिष्क-ज्वर से पीड़ित है (रेखाचित्र-565)। इन सभी लक्षणों के साथ-साथ मस्तक रेखा में किसी नक्षत्र-चिह्न के दिखने पर व्यक्ति के अति कामुकता के कारण पागल हो जाने की सम्भावना उजागर होती है।

निम्नोक्त लक्षण वाले व्यक्ति के भयंकर रूप से दुराचारी एवं भ्रष्ट चरित्र होने का निश्चित संकेत देते हैं–(i) सशक्त मंगल रेखा के साथ वासना रेखा का भी स्पष्ट

रूप लिये रहना, (ii) सभी रेखाओं का गहरा-लाल होना, (iii) शुक्र पर्वत का विशाल होना, (iv) अंगुलियों के तृतीय पर्वों का मोटा होना तथा (v) अंगुलियों के प्रथम पर्वों का छोटा होना।

इन लक्षणों के साथ मोटे अथवा कुन्दाकार अंगूठे वाला व्यक्ति अपनी कामुकता की पूर्ति तथा अपने निकृष्ट कृत्यों को छिपाने के लिए कैसे भी जघन्य अपराध-हत्या, आगजनी, डकैती, लूट-मार तथा रक्तपात आदि-करने में अणुमात्र भी संकोच नहीं करता।

हाथ का ऐसा-पशुओं जैसा न होने, परन्तु मंगल रेखा का चन्द्र पर्वत को पार कर जाने तथा वासना रेखा के विद्यमान रहने से व्यक्ति का निश्चित रूप से व्यसन के रूप में मदिरासेवी तथा अनियन्त्रित विलासी प्रवृत्ति का होना सूचित होता है (रेखाचित्र-566)। हां, बुध रेखा की सहायक रेखा के रूप में वासना रेखा की उपस्थिति द्वारा व्यक्ति की मनोवृत्ति में परिवर्तन की सम्भावना, अर्थात् मदिरासेवन तथा कामुकता पर नियन्त्रण के विचार का आना सम्भव सूचित होता है। वासना रेखा के साथ लहरदार बुध रेखा को देखकर पित्त-प्रकोप से विचारों का उत्पन्न होना नहीं समझना चाहिए; क्योंकि इस रेखा की अनुपस्थिति में भी इन विकारों को पनपता देखा जाता है।

वासना रेखा के साथ विशृंखलित बुध रेखा को किसी गम्भीर उदर रोग का संकेत नहीं समझना चाहिए। वासना रेखा का बुध रेखा के साथ दूर तक जाने का अर्थ है—इस रेखा की शक्ति का उस अवधि तक बुध रेखा का साथ निभाना। बुध पर्वत पर जाती बुध रेखा व्यक्ति के उत्तम स्वास्थ्य और व्यावसायिक सफलता की सूचक होती है। इस रेखा के साथ वासना रेखा के चलने से इस तथ्य की दुगुनी पुष्टि हो जाती है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वासना रेखा दो—उत्कृष्ट तथा निकृष्ट—पक्ष लिय रहती है। व्यक्ति पर इस रेखा के दोनों पक्षों में से किसी एक पक्ष के प्रभाव के निर्णय के लिए हस्तरेखाशास्त्र के सिद्धान्तों का पूरा विवेचन अपेक्षित रहता है।

जहां पशु-जैसे घटिया हाथ में सशक्त वासना रेखा व्यक्ति के विलासी तथा असंयमी होने की और इसके फलस्वरूप उसके संकटग्रस्त होने की सूचना देती है, वहीं उत्तम हाथों तथा परिष्कृत विचारों वाले व्यक्ति में इसकी उपस्थिति शुभ और अच्छे परिणामों की सूचक होती है।

इस सारे विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हस्तरेखाशास्त्र में सत्यनिष्ठा, विवेक, सूझ-बूझ और ईमानदारी जैसे गुणों की बहुत मान्यता है। इन्हीं गुणों के आधार पर किसी भी रेखा की व्याख्या करने का विधान है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन सिद्धान्तों का पालन करने पर हस्तरेखाशास्त्री द्वारा निकाला गया कोई भी निष्कर्ष असत्य नहीं हो सकता।

इस प्रकार प्रकृति के विधान को उसके सही ढंग और सही परिप्रेक्ष्य में समझने वाला हस्तरेखाशास्त्री व्यक्ति के हाथ में उकेरी रेखाओं के आधार पर उसके भाग्य और भविष्य को भली प्रकार जान सकता है और फिर व्यक्ति के लिए उपयोगी मार्ग को ग्रहण करने का उसे सुझाव दे सकता है। हस्तरेखाशास्त्री अपने यजमान को यह भी बता सकता है कि वह किन व्यसनों में ग्रस्त होने के कारण जीवन में असफल रहा है। इसके साथ ही वह उसे उन व्यसनों से मुक्त होने का परामर्श व सुखी-सफल जीवन जीने का आश्वासन दे सकता है। इस प्रकार हस्तरेखाशास्त्री खिन्न, विपन्न एवं निराश लोगों के जीवन में आशा एवं विश्वास का सञ्चार करके अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकता है।

***

Dynamic's Precious Series For Everyone's Life

Name of The Book	Author	Price
Dynamic Spiritual Life Series		
.... असम्भव क्रान्ति	ओशो	60.00
.... सत्य की खोज	ओशो	60.00
.... अन्तर्यात्रा	ओशो	60.00
.... चेतना का सूर्य	ओशो	60.00
.... आनन्द गंगा	ओशो	60.00
.... क्या ईश्वर मर गया है?	ओशो	60.00
.... क्रान्ति बीज	ओशो	60.00
.... शून्य की नाव	ओशो	60.00
.... जीवन ही है प्रभु	ओशो	60.00
.... महावीर या महाविनाश	ओशो	60.00
.... The Divine Song Shreemad Bhagwat Geeta	R.S. Gupta	100.00
.... योग दर्शन	सत्यार्थ सूत्र	50.00
.... श्री शिव पुराण की महिमा	पं० नवीन सेमवाल	50.00
.... चाणक्य नीति	आचार्य चाणक्य	50.00
.... श्रीमद्भागवत पुराण	प. नवीन सेमवाल	50.00
.... अनमोल सूक्तियां	पराग पुष्प	50.00
.... अमृतवाणी	पराग पुष्प	50.00
.... प्रेरक प्रसंग	पराग पुष्प	50.00
.... ज्ञान का सागर	पराग पुष्प	50.00
.... Non-Violence and its Philosophy*	Ravindra Kumar	50.00
Dynamic Personality Development Series		
.... प्रभावशाली व्यक्तित्व	पुष्पेन्द्र कुमार	100.00
.... बदलिये किस्मत *	पुष्पेन्द्र कुमार	60.00
.... How to Impress Others*	Pushpendra Kumar	125.00

Dynamic's Precious Series

For Everyone's Life

Name of The Book	Author	Price
Dynamic Religious Series		
........मनु स्मृति*	महर्षि मनु	180.00
........छान्दोग्य उपनिषद्*	सत्यार्थ सूत्र	60.00
........वेदान्त दर्शन*	सत्यार्थ सूत्र	60.00
........सांख्य दर्शन*	सत्यार्थ सूत्र	60.00
........न्याय दर्शन*	सत्यार्थ सूत्र	50.00
........नारद स्मृति*	रामचन्द्र वर्मा	90.00
........याज्ञवल्क्य स्मृति*	रामचन्द्र वर्मा	100.00
........पाराशर स्मृति*	रामचन्द्र वर्मा	50.00
........योग वासिष्ठ*	रामचन्द्र वर्मा	100.00
........बृहत कर्म काण्ड रत्नाकर*	राजबली पाण्डेय	100.00
Dynamic Personality Series		
........सरदार पटेल : व्यक्तित्व के अनछुए पहलू*	डा. रवीन्द्र कुमार	50.00
Dynamic Sports Series		
........क्रिकेट वर्ल्ड कप*	यशपाल सिंह	50.00
........खेलों के नियम*	गंगेश गुंजन	50.00
Dynamic Cookery Series		
........स्वादिष्ट सूप-सलाद	अंजू गर्ग	50.00
........स्वादिष्ट व्यंजन	अंजू गर्ग	50.00
........स्वादिष्ट दालें एवं सब्जियां	अंजू गर्ग	50.00
........स्वीट डिश एवं पेय पदार्थ	अंजू गर्ग	50.00
........स्वादिष्ट स्नैक्स*	अंजू गर्ग	50.00

Name of The Book	Author	Price
Dynamic Life Style Series		
.... कामकाजी महिलाएं	डा० रेखा अरोड़ा	50.00
.... The way of living	J.N. Kapur	50.00
.... हमारे नैतिक मूल्य	जे०एन० कपूर	50.00
.... Anxiety-A Journey from Upanishads	Dr. Amit Verma	50.00
.... Psychological Solutions for Everyday Problems	Dr. Prakash Veereshwar	70.00
.... घर परिवार सुखी कैसे बनाएँ*	डा. महेन्द्र मित्तल	70.00
.... सुखमय दाम्पत्य जीवन*	डा. मोनिका जैन	60.00
.... इंटीरियर डेकोरेशन*	एस. के. रस्तौगी	150.00
.... Successful living*	B. N. Pathak	100.00
.... शुभ विवाह*	डा. मोनिका जैन	80.00
Dynamic Health Care Series		
.... बेबी केयर	प्रतिभा आर्य	50.00
.... लेडीज ब्यूटी केयर	प्रतिभा आर्य	50.00
.... हेयर केयर	डॉ० मोनिका जैन	50.00
.... लेडीज हैल्थ केयर	डॉ० मोनिका जैन	70.00
.... आज की आम बीमारियां	डॉ० मोनिका जैन	80.00
.... चाइल्ड केयर*	ज्योति आर्य	50.00
.... स्वस्थ रहिये*	डा. मोनिका जैन	50.00
.... स्किन केयर*	प्रतिभा आर्य	60.00
Dynamic Management Series		
.... Great Presentation*	Sanjeev Shukla	100.00
.... Aim, Act and Achieve*	Sunil Ranjan	100.00
Dynamic Self Improvement Series		
.... डायनेमिक मैमेरी पॉवर	पुष्पेन्द्र कुमार	50.00

Dynamic's Precious Series For Everyone's Life

Name of The Book	Author	Price
Dynamic Career Series		
.... कैरियर के नये आयाम	पुष्पेन्द्र कुमार	70.00
.... कैरियर के हजार सवाल	पुष्पेन्द्र कुमार	70.00
.... विदेशों में कैरियर के अवसर	पुष्पेन्द्र कुमार	60.00
.... युवतियों के लिए स्मार्ट कैरियर्स*	डा. मोनिका जैन	60.00
.... Career Excellence*	Col Aditya Parida	100.00
.... Career - A Turning Point*	Pushpendra Kumar	70.00
.... Interview (A Meeting of Two Minds)*	A. K. Gandhi	100.00
Dynamic Pleasure Series		
.... सर्वश्रेष्ठ नज़्में	पराग पुष्प	50.00
.... सर्वश्रेष्ठ गज़लें	पराग पुष्प	50.00
.... सर्वश्रेष्ठ शेर	पराग पुष्प	50.00
.... शेर-ओ-शायरी	पराग पुष्प	50.00
.... हास्यमेव जयते	पराग पुष्प	50.00
.... पॉपुलर कलाम*	पॉपुलर मेरठी	70.00
.... पहली बारिश*	डॉ. नवाज़ देवबन्दी	100.00
.... जीवन सार*	पुष्पेन्द्र कुमार	50.00
.... The Essence of Life*	Pushpendra Kumar	50.00
Dynamic Literature Series		
.... कौटिल्य अर्थ शास्त्र*	आचार्य कौटिल्य	225.00
.... घर-बाहर*	रवीन्द्र नाथ टैगोर	60.00
.... नौका डूबी*	रवीन्द्र नाथ टैगोर	60.00
.... आँख की किरकिरी*	रवीन्द्र नाथ टैगार	60.00

Dynamic's Precious Series For Everyone's Life

Name of The Book	Author	Price
Dynamic Children Choice Series		
.... सर्वश्रेष्ठ बालगीत	पुष्पेन्द्र कुमार	50.00
.... बच्चों की सर्वश्रेष्ठ कहानियां	पुष्पेन्द्र कुमार	50.00
.... Why Devils have Horns*	Folk Tales-1	30.00
.... The Mustached Man*	Folk Tales-2	30.00
.... The Magic Hubble-Bubble*	Folk Tales-3	30.00
.... The Talking Tree*	Folk Tales-4	30.00
.... Paoli Tales*	Folk Tales-5	30.00
.... Vikram and Baital*	Indian Classics-1	30.00
.... Tenali Rama*	Indian Classics-2	30.00
.... Akbar Birbal*	Indian Classics-3	30.00
.... Ramayana*	Indian Classics-4	30.00
.... Panchatantra*	Indian Classics-5	30.00
.... Little Red Riding Hood*	Fairy Tales-1	30.00
.... Cinderella*	Fairy Tales-2	30.00
.... The Emperor's New Clothes*	Fairy Tales-3	30.00
.... Snow White and the Seven Dwarfs*	Fairy Tales-4	30.00
.... Gulliver's Travels*	Fairy Tales-5	30.00
.... Horns on the King's Head *	Fancy Tales-1	30.00
.... Tree on the Shoulder*	Fancy Tales-2	30.00
.... Snake in the pit*	Fancy Tales-3	30.00
.... One-Eyed Groom*	Fancy Tales-4	30.00
.... The Lion Goes Young*	Fancy Tales-5	30.00
.... *Sindbad the Sailor (First Voyage)**	*Arabian Nights -1*	*30.00*
.... Sindbad the Sailor (Second Voyage)*	Arabian Nights-2	30.00
.... Sindbad the Sailor (Third Voyage)*	Arabian Nights-3	30.00
.... Sindbad the Sailor (Fourth Voyage)*	Arabian Nights-4	30.00
.... Sindbad the Sailor (Fifth Voyage)*	Arabian Nights-5	30.00
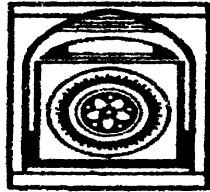
* हमारे नवीनतम प्रकाशन

पुस्तक के बारे में

प्रस्तुत पुस्तक विश्वविख्यात एवं अनुभवी हस्तरेखाविद् विलियम जी. बेनहम की पुस्तक दि लाज आफ साइन्टिफिक हैण्ड रीडिंग का प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद है, जिसमें लेखक ने गहन परीक्षण, निरीक्षण एवं अन्वेषण के आधार पर अपने अनुभवों को अत्यधिक स्पष्ट, सरल एवं बोधगम्य बनाने का प्रयास किया है। विषय में पूर्ण प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए उन्होंनें शरीर- विज्ञान का भी गहन अध्ययन किया तथा अनेक चिकित्सालयों एवं सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं, अनाथालयों तथा कारागृहों में रहने वाले लोगों के हाथों का अध्ययन करने के साथ-साथ समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों से मिलकर भी प्रामाणिक एवं व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की। अतः यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि इस पुस्तक का अध्ययन करके पाठक हस्तरेखा शास्त्र के सम्बन्ध में प्रचलित अनास्था व उपेक्षा को दूर करके व इसकी व्यावहारिकता से लाभ उठा कर मानव का सही मार्गदर्शन कर सकता है। पुस्तक में अनेक रेखाचित्र पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

"विश्व के प्रायः सभी लब्धप्रतिष्ठ मनीषियों का सदैव यह प्रयास रहा है कि मनुष्य अपने आप को, अपने भीतर छिपी शक्तियों और दुर्बलताओं को, अपने भीतर बैठे अत्यन्त प्रचण्ड एवं भयंकर दानव को तथा उस पर सरलता से विजय पाने की अपनी प्रबलतम् इच्छा को पहचाने।"

डॉ. सैमुअल जानसन

ISBN 81-7933-038-9
9 788179 330388

डायनेमिक पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लि०